करने के लिये हमारे पास अनेक पत्र रोगियो और चिकित्सकों के आये थे इस लिये हमने इस विषय की पुस्तक लिखने का बिचार किया था एक समय बाबू किशनलाल जी मालिक बम्बई भूषण प्रेस से बातें हुई थी उन्होने छपा कर इस पुस्तक को हमें प्रकाशनार्थ दी इसका मूल अंग्रेजी पुस्तक में लिखी हुई है। यह उसका अनुवाद है।

इसमें मूत्र नली के प्रदाह व उत्तेजना से हुआ शुक्रमेह, हस्त मैथुन, स्वप्न दोष, के अतिरिक्त इन्द्रिय चालना एवं शुक्रमेह के अन्यान्य कारण अश्मरी, और क्रम के कारण, शुक्र मेह विवाहिता अवस्था में अतिरिक्त स्त्री सहवास, अस्वाभाविक रेतः स्खलन का परिणाम, सर्वाङ्ग दोषज शुक्र मेह, श्वास यन्त्र हृदय और अन्यान्य स्थानो के ऊपर शुक्रमेह का प्रभाव, ध्वज भङ्ग का कारण चिकित्सा विस्तार से लिखी गई है साथ ही ताडित चिकित्सा का भी समावेश कर पुस्तक और भी उपयोगी बना दी गई है। मूल्य ॥) आठ आना।

४-दोषधातु विज्ञान (सचित्र)

लेखक—श्रीमान् प० मुरारीलाल शर्मा वैद्यराज

इस पुस्तक में दोष क्या है वे कैसे उत्पन्न होते हैं। इनका नाम दोष क्यों कोप करते हैं किस कारण से दूषित होने से क्या २ हानियां करते हैं बिना कुपित होने पर चिकित्सक को किस प्रकार चिकित्सा करनी चाहिए आदि २ तथा धातुए भी विस्तार रूप से वर्णित हैं।

इसमें खूबी यह है कि कठिन और गहन विषय होने पर भी लेखक ने बड़ी सीधी सादी और सरल भाषा में लिखा है। पुस्तक वैद्यक के विद्यार्थियों को अवश्य पढ़नी एवं मनन करनी चाहिये। मूल्य ॥=) दस आना।

५-बालबोधोदय (सचित्र)

इस पुस्तक को कानपुर प्रांतीय श्रीमान् प० महासुख शर्मा के सुपुत्र श्रीमान् काशीनाथ जी चतुर्वेदी महोदय ने आयुर्वेद के विद्यार्थियों के हित के लिये संस्कृत पद्यों में बनाई थी पर संस्कृत मात्र होने से अल्पमेधावी विद्यार्थियों को लाभ दायक न हो सकी इस लिये श्रीमान् प० रघुवर दयालजी भट्ट काव्यतीर्थ भिषग्रत्न आयुर्वेद मार्तण्ड मन्त्री युक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन ने इसकी विस्तृत कुमारव्याख्या नामक व्याख्या की और हिंदी भाषा भी इस लिये अब यह पुस्तक प्रत्येक विद्यार्थी को उपयोगी हो गई है। इसमें प्रत्येक रोग पर एक २ पद्य लिखा है और उसी एक पद्य में ही रोग की प्रधान औषधि का वर्णन बडी खूबी के साथ कर दिया है पुस्तक प्रत्येक वैद्य एवं विद्यार्थी को रखनी चाहिये। मूल्य।=) छै आना।

६—सूर्य्यरश्मिचिकित्सा।

ले० वैद्य बांकेलाल गुप्त सम्पादक धन्वन्तरि छपाई सफाई चित्ताकर्षक अनेक दर्शनीय चित्र

सूर्य्य रश्मि चिकित्सा को अंग्रेजी में क्रोमोपैथी कहते हैं और अंग्रेज इस चिकित्सा के आविष्करता अमेरिका के डाक्टरों को मानते हैं पर नहीं यह चिकित्सा अति प्राचीन है और हमारे शास्त्रों

१—कामिनी कर्ण धार (सचित्र)

लेखक श्री० पं० महावीर प्रसाद जी मालवीय "वीर" वैद्य शिरोमणि भूतपूर्व सम्पादक मनोरमा

इस पुस्तक की उपयोगिता नाम से प्रगट है। इसके सुप्रसिद्ध लेखक ने इस पुस्तक को लिख वैद्य मंडली एवं स्त्री समाज का विशेष हित साधन किया है स्त्री रोग सम्बन्धी सब ही बातों का वर्णन सरल और सुन्दर भाषा में किया है साथ ही परिशिष्ट लगा कर लेखक ने स्त्रियों के पढ़ने समझने और स्वय चिकित्सा करने योग्य बना दिया है।

लज्जावश जो स्त्रियां अपने रोग का हाल प्रकट नहीं करतीं और वह दिन प्रति दिन रोग को भयकर बना लेती हैं उनके लिये यह पुस्तक बड़े ही काम की है। क्यों कि इस में उन सब रोगों का वर्णन है जो प्रायः स्त्रियों को हुआ करते हैं विशेषता यह है कि आपके प्रायः सब ही प्रयोग लेखक के अनुभूत और शीघ्र लाभ देने वाले हैं।

इसमें प्रदर रोग, सोम रोग, बालिका प्रदर योनिरोग, गर्भ काल रोग गर्भ विकृति से होने वाले रोग जैसे मूढ़ गर्भ, नाल छेदन के समय की असावधानी का भयंकर परिणाम, प्रसूत रोग, मकल रोग स्तन रोग योषापस्मार आदि रोगों का निदान कारण लक्षण चिकित्सा विस्तार के साथ लिखी है। साथ ही विषय को स्पष्ट करने के हेतु भावपूर्ण रङ्गीन और सादे चित्र दे सोने में सुगन्ध वाली कहावत चरितार्थ की गई है। साथ ही पुस्तक प्रत्येक वैद्य एवं गृहस्थियों के संग्रह करने योग्य है मू० १।=) एक रुपया छै आना।

२—बालरोग चिकित्सा (सचित्र)

ले० श्री० पं० महावीर प्रसादजी मालवीय "वीर,, वैद्य शिरोमणि, भूतपूर्व सम्पादक मनोरमा।

भारत वर्ष में बालकों की मृत्यु संख्या पर जब दृष्टि डाली जाती है तब बड़ा खेद होता है बालक के उत्पन्न होने से उसका पिता बड़ी बड़ी आशाए करने लगता है किन्तु उनके पालन-पोषण की विधि न जानने से एवं नित्य प्रति होने वाले रोगों से रक्षा न करने से वह अपनी आशा से ही नहीं किंतु बच्चे से हाथ धो बैठता है।

इस पुस्तक में दूषित दुग्ध पान के लक्षण दुग्ध शुद्धि के लिये स्तन रोग चिकित्सा, घृत पान उबटन और स्नान औषधि मात्रा उपवीर्य और ओषधियां बालरोग का परिज्ञान, बालोपयोगी नियम अन्नप्राशन पारिगर्भिक रोग, मृत्यु का लक्षण तथा बालकों के समस्त रोगों का वर्णन निदान लक्षण और उनकी परीक्षित चिकित्सा लिखी गई है। पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ के पढ़ने और ग्रहण करने योग्य है। मूल्य ॥।=) चौदह आना।

३—धातु दौर्बल्य।

(लेखक—श्रीमान डाक्टर एल० ई० इस्लाम ए० एम० एम० डी० अमेरिका के शिकागो कालेज के आचार्य)

इस पुस्तक का विषय पाठक नाम से ही जान गये होंगे इस विषय पर पुस्तक प्रकाशित

में यहां तक कि वेदों में भी इसका उल्लेख मिलता है। इस चिकित्सा में सूर्य की किरणों से ही रोगियों के समस्त रोग दूर करने का विधान है। हमने पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी है। इसको पढ़ पाठक देखें कि सूर्य्य कितना शक्तिशाली है और उसकी किरणें हमारे शरीरको कितनी लाभदायक हैं और उनके द्वारा रोग किस प्रकार बात कीबात में दूर किये जासक्ते हैं जो सुकुमार स्त्री पुरुष औषधि सेवन से डरते हैं उनके लिये मानों अमृत ही मिलगया।

पुस्तक अपने विषयकी पहलीही है और हमने इस पुस्तक की छपाई बड़ी ही चित्ताकर्षक कराई है तथा साथ ही अनेक रङ्गीन चित्र भी दिये गये हैं तिसपर भी पुस्तक का मू०सिर्फ ॥।)बारह आना है

७ भारतीय भोजन।

ले०श्री ०पं०हरिनारायणजी शर्मा वैद्यराज प्रधान अध्यापक बी०एन०मेहता स०वि० छपाई सफाई चित्ताकर्षक५पांच दर्शनीय चित्र

इस पुस्तक में चरक सुश्रुत प्रभृति ग्रन्थोंके आधार एवं आधुनिक डाक्टरी सिम्मतियों का सामंजस करते हुए मनुष्य के सात्विक आहारका समय,अजीर्ण भोजन, विधि, मात्रा, भोजन में हसना, बोलना, मानसिक विचार, तरल औरशुष्क भोजन, पहले और पीछे खाने वाली चीज़ जिह्वा स्वाद, स्त्री के साथ भोजन, पेट भरना, भोजन का पात्र,भोजन में जल पानकी व्यवस्था, भोजनोपरांत कार्य,मौसमों के पृथक् २ भोजन आदि अनेक विषयों पर बड़ी विद्वता और खोज के साथ प्रकाश डाला है। परिशिष्ठ मे चीजों के पकने का समय भोजन की परीक्षा, पकाना, उपवास भोजन और शरीर के साथ प्रभृति गहन विषयों पर सरल भाषा में विवेचन किया है। इसके अनुकूल भोजन व्यवस्था रहने से रोगों का डर निःसन्देह जाता रहेगा। लेखनशैली रोचक और पुस्तक प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिये उपादेय है। मू०॥।)बारह आ०

८ प्लेग।

औपसर्गिक सन्निपात।

ले०स्व०ला०राधावल्लभजी वैद्यराज।

भारतवर्ष से अभी इस दुष्ट रोग का काला मुह नहीं हुआ प्लेग के ऊपर छोटी२पुस्तकें प्रकाशित हुई परन्तु उनमें शास्त्रीय विवेचन पूरी रीति से नहीं है। सर्व साधारण और वैद्यों को इसके विषय में पूरीजानकारी चाहिये। यह पुस्तक वैद्य और आरोग्यकांक्षी पुरुषों को एक बार अवश्य पढ़नी चाहिये। इसमें प्लेग का इतिहास, प्लेग का आयुर्वेदीय और डाक्टरी मतानुसार विचार का तत्व से सम्बन्ध प्लेग और धर्म संक्रामक रोगों के कारण प्लेगप्रतिबन्धक उपाय प्लेग चिकित्साआदि विषय विस्तार से वर्णन किये गये हैं मू०।) चार आना

९ मरणोन्मुखी आर्य्य चिकित्सा।

देखो! दखो!! कहीं मर न जावे!!!

ले—ला०राधावल्लभजी वैद्यराज।

आयुर्वेदीय चिकित्सा मरने को तैयार है। प्राण सिसक रहे हैं मृत्यु शय्या बिछाई जारही है क्योंकि उनके पुत्र बूढ़ी माता की परवाह नहीं करते क्या मरजाने दें। भारतवासी वैद्यो? पूछो अपने मनसे इस निबंध में आयुर्वेदीय चिकित्सा की जो दुर्दशा है उसको ओजस्विनी भाषा में वर्णन है।

इसमें साहित्य पठन पाठन, ज्ञानोपार्जन, कर्तव्य निरूपण सामियो सम्पादन पृतिष्ठा स्थापन शक्ति संगठन शीर्षक विचार पूर्ण लेखहैं इस निबंध के पढ़ने से अपनी सच्ची अवस्था मालूम होगी बार२ पछताना होगा मिथ्या अभिमान के कान पकड़े जांयगे एक बार पढ़के देखिये तो सही मूल्य केवल ।) चार आ०

१० परीक्षित प्रयोग ।

इसमें स्व०लाला नारायणदासजी तथा राधावल्लभजी वैद्यराज सम्पादक आरोग्यसिंधु तथा वैद्य बांकेलाल गुप्त सम्पादक धन्वन्तरि के अनेक बार परीक्षित प्रयोगों का वर्णन् किया गया है एक २ प्रयोग हज़ारो रुपये का काम देने वाला है जिनको परीक्षित प्रयोगों की तलाश रहती है । उनके तथा नवीन वैद्यों के बड़े काम की पुस्तक है छपाई सफाई देखने योग्य है । मू० ।=) छै आना

११ पंचकर्म विवेचन ।

ले०—स्व०लाला राधावल्लभजी वैद्यराज

पञ्चकर्म द्वारा चिकित्सा करने की प्रणाली वैद्य लोग भूलगये बहुत थोड़े वैद्य ऐसे मिलते हैं जिन्हें इनका अभ्यास है बड़े पश्चाताप का विषय है कि हम अपने ऋषियों के ज्ञानभण्डार को आँख मींचकर देखते हैं। और डाक्टर लोग हमारी ही विद्याके तिलका पहाड़ बनाकर दिखातेहैं। डाक्टर कुहनी की जलकी चिकित्सा जिसे नवीन विद्या बतलाते हैं हमारे पञ्चकर्म का ही भेद है ।

अब वैद्यों को इस चिकित्सा पद्धति पर ध्यान देना चाहिए यह पुस्तक इसी विषय पर लिखीगई है आज तक इस विषय को सविस्तार वर्णन् करने वाली नए ढङ्ग से गहन विषय पर प्रकाश डालने वालीदूसरी पुस्तक नहीं छपी पाठक इसे पढ़कर पंचकर्म का तात्विक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे इस में स्नेहन स्वेदन,वमन, विरेचन, वस्ती आदि पद्धतियो का पूरा २ वर्णन् है । १२५ पृष्ठकी पुस्तक का मू०केवल ।=) छै आना

१२ रसायन संहिता ।

भाषाटीका सचित्र ।

आयुर्वेदीय साहित्य के अमोल रत्न अपनी अलौकिक प्रतिभा के साथ अन्धकार के आवरण से आच्छन्न है आयुर्वेद प्रेमियो ऋषि महर्षियो की अमूल्य रचना कबतक प्रकाशमें न आवेगी । अनेक प्राचीन ग्रंथोंका नाम मात्रही आज सुनने में आता है। अनेक अमूल्य पुस्तक यत्र तत्र पड़ी हुई हैं। जिनके प्रकाशन की बड़ी आवश्यकता है।

प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसाही अमूल्य रत्नहै। अनुभवी और विचार शील लेखक महोदयने हिमालय पर्यटन में परिश्रम से इसकी खोजकी है उन्हीं केप्रशंसनीय प्रयत्नसे यह पुस्तकरत्न वैद्य समुदाय की सेवा में उपस्थित कर सके हैं उसमें अनेक अव्यर्थ प्रयोग औषधियों के सत्व प्रस्तुत विधि धातु उपधातुका शोधन मारण प्रभृति अनेकविषय दिये गये हैं इसके प्रकाशन में श्रम और अर्थ व्यय कियाहै इसकी सफलता गुणग्राही साहित्य प्रेमियों पर निर्भरहै।आयुर्वेद प्रेमियों? आइये अपना कर्तव्य पालन कीजिये इस ग्रंथरत्न को अपनाइये घर २ प्रचार कर लाभ उठाइये। मू०।।।=) चौदह आना

१३ दशमूल ।

ले०—बाबू रूपलालजी वैद्य काशी निवासी

छपाई सफाई चित्ताकर्षक? ग्यारह रङ्गीन चित्रों युक्त। दशमूल किसको कहते हैं किन २ औषधियों से बनता है उन औषधियों की आकृति कैसी है यह विरले ही जानते हैं इस पुस्तक में दशमूल की दशों औषधियों का सचित्र वर्णन है।

साथ ही उनके गुणों का भी वर्णन है तथा दशमूल पांच मूल से बनने वाले अनेक प्रयोगों की विधि भी दी गई है पुस्तक एंटिक पेपर पर छापी गई है मूल्य ॥) आठ आना।

१४—क्षयादर्श

अर्थात। क्षयरोग और उसकी चिकित्सा।

लेखक प० हरिशंकर जी शर्मा वैद्यराज।

सम्पादक—स्व०ला० राधावल्लभ जी वैद्य

क्षय एक भयंकर रोग है लाखों नवयुवक प्रति दिन क्षय से मृत्यु शय्या पर जाते हैं। जिन युवाओं से बड़ी २ आशाएं होती हैं जिनके सौरभ के प्यासे अनगिनती मकरन्द गुंजारते रहते हैं वे ही युवा इस दुष्ट रोग से हमारी शुभ आशाओं को धूल में मिला चल देते हैं जिस रोग क चिकित्सा करने में वैद्यों के छक्के छूटते हैं जिसके कारण आयुर्वेदीय साहित्य ढूढ़ने में बड़े २ डाक्टर चक्कर में पड़ जाते हैं उसी रोग पर स्वतन्त्र विवेचन हो नवीन और प्राचीन मतों का मिलान किया गया तथा सविस्तार चिकित्सा लिखी गई है इस पुस्तक में क्षय रोग की भयंकरता क्षयरोग क्या है, क्षय रोग और कीटाणु क्षयरोग और नई सभ्यता, क्षयरोग और वीर्य्य नाश क्षयरोग का आयुर्वेदोक्त विचार क्षय के भेद क्षय रोग पर डाक्टरों के विचार तथा खण्डन मण्डन क्षयरोग की चिकित्सा, स्वास्थ्य गृहों की आवश्यकता उत्तम वायुजल आदि से क्षय रोगों के स्वास्थ्य लाभ प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रयोग वर्णन साध्यासाध्य विचार आदि सम्बन्धी सब ही विचारणीय विषयों का वर्णन दिया गया है इसके पढ़ने से क्षय सम्बन्धी सबही बातें जानी जाती हैं वैद्य लोग इसके द्वारा क्षयरोग की चिकित्सा प्रणाली सरल रीति में समझ जाते हैं वैद्य हकीम तथा सर्व साधारण सब ही इसे पढ़ लाभ उठावेंगे। मूल्य प्रति पुस्तक ॥।) बारह आना।

१५—कुचिमार तन्त्र।

भाषा टीका

श्रीमद् कुचिमार मुनि प्रणीत

प्रस्तुत पुस्तक प्राचीन अत्यन्त गोपनीय है इसमें इन्द्रिय वृद्धि, स्थूल करण, कामोद्दीपन लेप वशीकरण, वाजीकरण, द्रावण स्तम्भन, संकोचन केशपतन, गर्भाधान आनन्द प्रमय आदि अनेक विषयों का विवेचन भले प्रकार किया गया है इसकी भाषा टीका और सुगम भाषा वैद्यशास्त्री प० राम प्रसाद जी मिश्र ने की है। छपाई सफाई चित्ताकर्षक है। मू० ।=) छै आना।

१६—तिल्ली।

लेखक—लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज।

जो लोग समाचार पत्र पढ़ते रहते हैं। उन्होंने अदालती फैसले के दृष्टान्त में पढ़ा होगा तिल्ली फट गई या डाक्टर बर्मन के नोटिस में प्लीहा की दवा पढ़ी होगी वह तिल्ली क्या है। शरीर में किस जगह है इसका नाम क्या है इसकी कौन शक्तियां है, इन शक्तियों के बिगड़ने से कौन से रोग पैदा होते हैं, इनका पूरा वर्णन इस पुस्तक में है यकृत और तिल्ली की मुसलमानी पुस्तक में अच्छा वर्णन है उसही शैली का आशय लेकर इस निबंध को आयुर्वेदीयमत से लिखा है तिल्ली के रोगों की विस्तार पूर्वक चिकित्सा भी है। बड़ी अच्छी पुस्तक के दाम ।) चार आना।

वेदों में वैद्यक ज्ञान।

(लेखक—स्व० लाला राधावल्लभजी वैद्यराज)

वेद हिंदुओं के जीवन, ईश्वरीय ज्ञान अखिल विद्याओं के भण्डार और अनादि है। इस बात को धर्म परायण हिंदू का एक सामान्य बच्चा

भी कहदेगा वेद में हमारे चिकित्सा सम्बन्धी अनेक मंत्र हैं जिनसे अनेक वैधक विषयों का पूरा पता चलता है। विद्वान् वैद्यों को ऐसे विषयों के देखने की सदैव अभिलाषा लगी रहती है। हमने उन की इच्छा पूर्ति के लिये इस निबंध को लिखा है इसमें ऋग्वेद और अथर्ववेदसे अनेक मंत्र उधृत कर उन का पदार्थ और वितृत भावार्थ दिया गया है। इसे पढ़ जो अज्ञानी वेदों को किसानों के गीत बतलाते हैं उन का दिमाग ठिकाने आजावेगा। वैद्यों कोइस के देखने से अपनी विद्या की प्राचीनता काअनुभव होगा सरस्वती, वैद्य कल्पतरु सुधानिधि, आर्य-मित्र,बङ्गवासी आदि सहयोगियोंने इस की प्रशंसा की है वैद्यों को घर में एक २ पुस्तक अवश्य रखनी चाहिये मूल्य ≡) तीन आना

ओज क्या है।

(कविराज नरेन्द्रनाथ मिश्र लाहौर लि०)

ओज क्या पदार्थ है। ओज की क्षय वृद्धि लक्षण इसपुस्तक में विस्तार से लिखे हैं। पश्चिमीय डाक्टरों के मत का भी समावेश है तीनों मतोंका ऐक्य भाव दिखाया गया है पुस्तक समझने और मनन करने योग्य है। कीमत ~) आना प्रति।

सचित्र! सचित्र!! (अस्थियां)

१९–शरीर रचना।

(ले०कविराज हेमराज वैद्य विशारद एम०ए० एम)

आयुर्वेदीय सहित्य मेंशारीरिक विषयक पुस्तकों की नितांत् कमी है पश्चिमीय डाक्टरों ने हमारे ही शास्त्रों का सहाराले शारीरिक ज्ञान में बड़ी उन्नति की है आज हमको उनके सामने लज्जा ग्रस्त शिर नवाना पड़ता है जब तक हिंदी भाषा में नये ढङ्ग की और नवीन ज्ञानयुक्त इस विषय की पुस्तकें प्रकाशित नहीं होंगी और वैद्य महोदय उनका मनन और ज्ञानोपार्जनन करेंगे तब तक डाक्टरोंके सामने हमको इस विषय में लज्जित ही होना पड़ेगा हमने अपने वैद्योंके लाभार्थ ऐसी पुस्तकों को छापना आरम्भ करदिया है शरीर रचना सबंधी यह पहली पुस्तक है। इस में हड्डियों का प्राचीन और नवीनमत से वर्णन है अस्थियोंके भेद प्रत्येक अंग की अलग २ और सम्पूर्ण शरीर की अस्थि गणना और नामवर्णितहैं। आयुर्वेदीयमतसे क्यों अधिक हड्डियां मानी जाती हैं डाक्टर लोगों के मत से वास्तवमें कितनी हड्डियां हैं इसका निश्चय किया गया है वैद्यों को अवश्य देखना चाहिये। की० ॥)

२०–चन्द्रोदय।

(ले० लाला राधावल्लभजी वैद्यराज)

आयुर्वेद चिकित्सा में सर्व प्रधान औषधि चन्द्रोदय अर्थात् मकरध्वज है जिस प्रकार चन्द्रमा अंधकार का नाश करता है उसी प्रकार चन्द्रोदय से सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है विशेष कर कामोत्तेजक, पौष्टिक, वीर्यवर्द्धक, क्लीवत्व नाशक है आसन्न मृत्यु रोगी को आयुर्वेदीय चिकित्सक इस को ही सेवन करा आरोग्य कर कीर्ति लाभ करते हैं ऐसोमहौषधि प्रत्येक वैद्य और गृहस्थों के यहां रहनी चाहिए, किंतु जैसी श्रेष्ठ औषधि है वैसा ही इस का बनाना भी कठिनहै भारतवर्ष में बहुत कम वैद्य ऐसे हैं जो मकरध्वज (चन्द्रोदय) बनाते हैं वह इस की कीमत इतनी अधिक रखते हैं कि गरीब वैद्य और सर्व साधारण इतने दाम देकर नहीं खरीद सकते हमने इस अभाव को मिटाने को ही इस पुस्तक की रचना की है। इस में पारद शुद्ध गन्धक शुद्धस्वर्ण शुद्ध गंधक जारण, चन्द्रोदय बनाने की विधि, भट्टी बनाने को

की विधि चन्द्रोदय के भिन्न २ रोगो में भिन्न २ अनुपान आदि चन्द्रोदय सम्बन्धी सब ही बातों का विस्तार पूर्वक वर्णन है। कीमत ।) आना

२१ नाड़ी सिद्धांत।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के ज्ञाताओं ने नाड़ी ज्ञान के लिये यन्त्र का आविष्कार किया है और उसके द्वारा नाड़ी परीक्षा की विधि लिखी है हमने उनके सिद्धांत को इस पुस्तक में लिखा है डाक्टरी में प्रेक्टिस आफ मेडीसन तथा अन्यजो पुस्तक हैं उनसे ही समुचित है। प्राचीन सिद्धांत का भी कहीं २ समावेश किया है। इससे वैद्य अच्छी प्रकार जान सकते हैं कि नाड़ी क्या वस्तु है। नाड़ी से क्या २ ज्ञान प्राप्त होते हैं। नाड़ी और हृदय का क्या सम्बन्ध है। नाड़ी कौन २ से स्थान की देखी जाती हैं नाड़ी बन्द होनेकाकारण अवस्थानुसार, रोगानुसार नाड़ी की गति,सख्या हृदय गति और नाड़ी की गति का भेद श्वास और नाड़ी गति आदि अनेक विषय चित्रों द्वारा सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। मूल्य ।=) छै आना

आरोग्य सिन्धु की फाइल मूल्य २) रु०भुवनमोहनी उपन्यास ६ भागों में समाप्त प्रत्येक भाग का दाम ।=) हिंदी अंग्रेजी शिक्षक मू०१)रु० दुग्ध ।–) मनुष्य का आहार १) रु०

२२ रोग परिचय।

यहपुस्तक श्रीमान् प०हरिनारायणजी शर्मा वैद्य काव्यतीर्थ द्वारा लिखित है पुस्तक में माधव निदान में कहा हुआ निदान पञ्चक का विस्तार पूर्वक सरल भाषा में वर्णन है इससे विद्यार्थी एवं वैद्य निदान की विशेष; बातें मालूम कर सकेंगे। आयुर्वेद में निदान ही एक वस्तु; है;। उसकी बारीकियां जानना प्रत्येक वैद्य का कर्तव्य है। मू० ॥) आठ आना।

२३ प्राकृत ज्वर।

(ले० स्व० ला० राधावल्लभ जी, वैद्यराज)

प्राकृत ज्वर को फस्ली बुखार या मलेरिया फीवर कहते हैं। डाक्टर लोग इसके विषय में बड़ी बड़ी बातें मारते हैं और वैद्य लोग अपने घर की सच्ची बातें भी नहीं जानते यह निर्भय इस विषय पर पहिली ही पुस्तक है. इस में प्रकृति का भाव रोगों की सम्प्राप्ति, उपायाजन, मलेरिया ज्वर आयुर्वेद मत से मलेरिया पैदा होती है या नहीं क्यूनायन से हानियां आयुर्वेदीय चिकित्सा आदि विषय बड़े भाव पूर्ण लिखे गये हैं। इसे पढ़ कर वैद्य लोग ऐसे विषयों का पूर्ण २ ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे जिसके कारण भारत वासी अनेक कष्ट पाते हैं।, सरकार, भी जिसमें चिन्तित है डाक्टर भी अपने मस्तिष्कों को इसमें लड़ाया करते हैं। कीमत ।) चार आना पृष्ठ संख्या ३०

२४ दोषविज्ञान।

(ले० स्वर्गीय ला० राधावल्लभ जी वैद्यराज)

वैद्यक में दोषों का वर्णन बड़े विस्तार से है। दोषों की विषमता रोग और समानताही आरोग्यता है। इस पुस्तक में दोषों का बड़े विस्तार से वर्णन किया है दोषों का सञ्चय प्रकोप प्रसर स्थान क्षय व्यक्ति भेद आदि विषय सरलता से लिखे गये हैं विद्यार्थियों को इसे पढ़ा देने से वेदोष सम्बन्धी कठिन विषयों को बड़ी अच्छी तरह समझ जाते हैं इस किताब की अनेक विज्ञजनों ने प्रशंसा की है कीमत =)॥ ढाई आना पृष्ठ संख्या ५०

३४ वैद्यराज जीकी जीवनी (सचित्र)

इसमें स्वर्गीय लाला राधाबल्लभजी वैद्यराज सम्पादक आरोग्यसिंधु, संस्थापक श्री धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ का जीवन चरित्र है और इसे लिखा है श्रीमान बाबू मिश्रीलालजी वकील, एल० एल० बी० ने, जीवनी बड़े अच्छे ढंग से लिखी गई है जिसके पढ़ने से निरुत्साही, आलसी, पुरुष भी, उद्योगी और परिश्रमी तथा विद्वान हो सकता है। पढ़ने के साथ ही अपना चरित्र उसी ढङ्ग से बनाने की प्रबल इच्छा हो जाती है। मूल्य सिर्फ =) तीन आना।

३५ आयुर्वेद में दार्शनिक तत्व

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट हो जाता है। जो विद्वान यह समझते हैं कि वैद्यों के लिये दर्शन शास्त्र पढ़ना निरर्थक है और वह अपने विद्यार्थी को पढ़ाते भी नहीं और न वैद्यक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में ही इस विषय को रखते हैं उन्हें एक बार इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। यह गुरुकुल के साहित्य परिषद में पढ़ने को श्रीमान प्रोफेसर पण्डित देवराज जी विद्या वाचस्पति महोदय ने लिखा है पुस्तक प्रत्येक विद्वान वैद्य को पढ़नी चाहिये। मूल्य ।) चार आना।

३६ स्वप्न प्रमेह चिकित्सा
अर्थात्
धन्वन्तरि का विशेषांक
(सचित्र)

धन्वन्तरि के तीसरे वर्ष का यह विशेषांक है। इसमें स्वप्न प्रमेह पर अनेक विद्वानों के अनुभव पूर्ण लेख हैं। जिनमें स्वप्न प्रमेह का कारण, निदान, लक्षण और अनुभूत चिकित्सा बड़े विस्तार से और सचित्र वर्णित है। वैद्यक, डाक्टरी, होमियोपैथिक और क्रामोपैथी से स्वप्न प्रमेह को दूर करने के अनेक उपाय लिखे गये हैं, साथ ही योग की क्रिया से बिना औषधि के स्वप्न प्रमेह को दूर करने का अद्भुत और अचूक उपाय लिखा गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि हिन्दी ही नहीं अन्य किसी भाषा में भी ऐसी सर्वाङ्ग पूर्ण स्वप्न प्रमेह पर पुस्तक नहीं। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आना।

३७ मलावरोध चिकित्सा
अर्थात्
धन्वन्तरि का विशेषांक
(सचित्र)

धन्वन्तरि के ४ थे वर्ष का यह विशेषाँक है इसमें मलावरोध पर अनेक विद्वानोंके सार गर्भित और विवेचना पूर्ण लेख हैं जिनको विद्वान वैद्यों ने अत्याधिक पसन्द किये हैं और पत्र सम्पादकों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है हिंदी भाषा में— मलावरोध पर ऐसी सर्वाङ्ग सुन्दर पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई। पुस्तक में कारण, निदान लक्षण और परीक्षित चिकित्सा क्रम सचित्र और विस्तृत छपा है। अनेक प्रयोग ऐसे हैं जिन्हें पिता पुत्र से और गुरु शिष्य से छिपाते हैं साथ ही मनोरञ्जन और शिक्षाप्रद तथा सचित्र प्रहसन भी छपा है। पुस्तक प्रत्येक वैद्य, डाक्टर और हकीमों के अतिरिक्त सर्व साधारण के पढ़ने और संग्रह करने योग्य है मूल्य १॥) एक रुपया आठ आना।

३८ आरोग्यसिंधु की फायल

आरोग्यसिंधु स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज संस्थापक धन्वन्तरि कार्यालय के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता था और यह अपने समय में सर्वोत्तम वैद्यक पत्र था जिसकी प्रशंसा विद्वान वैद्य, वैद्यराजों के अतिरिक्त पत्र सम्पादकों ने मुक्त कंठ से की थी। जिसमें वेदों में वैद्यक ज्ञान, ज्वर और लंघन मलेरिया और क्यूनाईन, शरीर रचना, क्षयरोग, रसायन औषधियों से आयु वृद्धि, भूतविद्या मोती ज्वर और उसकी चिकित्सा, शीतज्वरकी चिकित्सा आदि उपयोगी विषयों पर विवेचना पूर्ण लेख हैं मूल्य सजिल्द २) दो रुपये।

३९ धन्वन्तरि की फायल

(४ थे वर्ष की)

धन्वन्तरि इस समय कैसा निकल रहा है और उसे वैद्य, वैद्यकपत्रों में सर्व श्रेष्ठ कैसे मानते हैं? उसमें कैसे २ उपयोगी और विवेचना पूर्ण लेख रहते हैं? अनुभूत प्रयोग कैसे मार्के के होते हैं? इन सबका उत्तर यह फायल है मगाकर देखिये और उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर स्वयं पढ़कर दीजिये। हमतो सिर्फ यही- कहेंगे कि ६५० पृष्ठ के सजिल्द बड़े पोथे जिसमें ३ विशेषांक और अनेक रङ्गीन और सादे चित्र हैं। हम सिर्फ ४) रुपे में देते हैं। एकबार अवश्य देखिये।

४० धन्वन्तरि की फायल

(३ रे वर्ष की)

यह फायल सिर्फ ३—४ ही हैं शेष और सब हाथों हाथ बिकगई। मूल्य सजिल्द २, दोरुपे

नोट—फायलों के मूल्य में उपहार की पुस्तकें शामिल नहीं हैं

वैद्यक पत्रों में सर्व श्रेष्ठ

सरस्वती माधुरी के आकार प्रकार का

सचित्र मासिक पत्र

धन्वन्तरि

धन्वन्तरि कैसा पत्र है? लेख कैसे मार्कें के होते हैं? दवाई स्तम्भ कितने उपयोगी हैं? चित्र कैसे रहते हैं? वैद्य, हकीम, और डाक्टरों के अतिरिक्त गृहस्थियों को कितना उपयोगी है? आदि सब बातो का उत्तर यह आपके हाथ वाला अङ्क स्वय दे रहा है हमें इसकी प्रशंसा में कुछ नहीं कहना क्यों कि स्वयं ग्राहक और पत्र सम्पादक प्रशंसा के पुल बांध रहे हैं। मूल्य ४) चार रुपे।

पता—वैद्य बांकेलाल गुप्त धन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ (अलीगढ)

विषय सूची

चित्र सूची



हिस्टेरिया रोगिणी की आवेश के समय की अवस्था



[illegible]यात वाथ प्रामुञ्चतद्राप । मन्त्र्यवानात् ।
प्राति ग्तं जहि तस्तायुर्दैस्त्रादित्यति मकृणुतंकनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं-१० अ०१७ सू०११६

भाग ५] जनवरी, फ़रवरी सन् १९२८ [अङ्क १, २

[illegible]

उबारहु अधम—उधारक—नाथ
रोग ग्रसित अति कष्ट परो हौं, भयो दुखन को साथ। टेक। उबा०
रोग भयङ्कर स्वामि भयो है, कम्पत पैर अरु हाथ।
गिरत परत मोहि चलन परत है फूटत कबहुँ माथ ॥ उबा० ॥
धन्वन्तरि ? प्रभु । मेरे तुम्ही, मै हूँ स्वामि अनाथ।
तनिक विनय मम कान करीजै, दीजिये मेरो साथ ॥ २ ॥
उबारहु पतित—उधारक—नाथ ?

श्री ब्रजबिहारी माथुर "बवरा" एम, आइ, एम ए, कविरत्न

* एक हिस्टीरिया रोगिणी की विनय।



हिस्टेरिया रोगिणी की आवेश के समय की दशा



जुजुरुषो नासत्यात वाव्र प्रामुञ्चतद्रापि मवच्च्यवानात् ।
प्राति रतं जहि तस्तायुर्दस्त्रादित्पति मकृणुतं कनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं-१.० अ०१७ सू०११६

भाग ५] जनवरी, फरवरी सन् १९२८ [अङ्क १,२

प्रार्थना*

उधारहु अधम—उधारक—नाथ
रोग ग्रसित अति कष्ट परौ हौ, भयौ दुखन कौ साथ । टेक । उधा०
रोग भयङ्कर स्वामि भयो है, कम्पत पैर अरु हाथ ।
गिरत परत मोहिं चलन परत है फूटत कबहुं माथ ॥ उधा० ॥
धन्वन्तरि ! प्रभु ! मेरे तुम्हीं, मैं हूं स्वामि अनाथ ।
तनिक विनय मम कान करीजै, दीजिये मेरौ साथ ॥ २ ॥
उधारहु पतित—उधारक—नाथ ?

श्री अनन्तविहारी माथुर "अवन्त" एम,आइ,एम ए, कविरत्न

* एक हिन्दारिया रागिणी की विनय ।

धन्वन्तरि का पाँचवाँ वर्ष।



दीन बन्धु, करुणावत्सल, दयानिधि भगवान् श्री धन्वन्तरि महाराज की असीम कृपा से "धन्वन्तरि" अपनी चार वर्ष की आयु व्यतीत कर पञ्चम वर्ष में नवीन २ आशाओं और आकाँक्षाओंके साथ पदार्पण करता है। सर्व शक्तिमान परमेश्वर इस की उच्चाकांक्षाओं की पूर्ति में सहायक हो।

धन्वन्तरि ४ थे वर्ष में कैसा निकला? लेख कविता, रोग विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, अनुभूत प्रयोग, निबन्ध कैसे २ प्रकाशित हुये? उनकी लेखन शैली कैसी रही? चित्र कितने और भाव पूर्ण थे? मेटर कितना अधिक था? उपहार की पुस्तकें कैसी थी? छपाई सफाई कैसी थी? आदि आदि प्रश्नों का उत्तर पाठक एवं ग्राहक स्वयं ही विचार लें। हम अपनी तरफ से कुछ उत्तर न लिख सिर्फ यही लिखते हैं कि अधिकांश ग्राहकों एवं मित्रों का यही कहना (लिखना) है कि धन्वन्तरि वर्त्तमान वैद्यक पत्रों में सर्व श्रेष्ठ है। इसके विशेषाङ्क भी वैद्य समाज ने आशा से अधिक अपनाये हैं प्रवेषाङ्क जो कि प्रति वर्ष एक ही विषय पर निकलता है उससे तो वैद्य मंडल एवं ग्राहक अत्याधिक प्रसन्न हैं और वह अङ्क तो पुस्तकों की भांति वैद्य समाज संग्रह कर रहा है। फिर भी धन्वन्तरि हमारे विचारों एवं मन को सन्तुष्ट न कर सका और हमें तो खेद बना ही रहा कि हम धन्वन्तरि को सर्वाङ्ग पूर्ण न निकाल सके।

धन्वन्तरि ने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है तथा यह वैद्य समाजका आदर पात्र हुआ है उस सबका श्रेय हमारे कृपालु, विद्वान लेखकों को है। कारण उन्होंने अपने अमूल्य समय को धन्वन्तरि के लिये लेख लिखने में व्यतीत किया है। उनकी कृपासे धन्वन्तरि वैद्य मंडल में प्रसिद्ध हुआ है और आयुर्वेद का हित एवं पाठकों का उपकार हुआ है। हम उन्हें किन शब्दों में धन्यवाद दें और किस प्रकार उन्हें सन्मानित करें समझ में नहीं आता। हम उनके आभारी हैं और हृदय से धन्यवाद देते हैं और प्रार्थना कर आशा करते हैं कि वह पूर्ववत कृपा दृष्टि बनाये रक्खेंगे तथा अपने २ महत्व पूर्ण लेख भेज धन्वन्तरि को अपनाते रहेंगे।

धन्वन्तरि अब की पांचवे वर्ष में ४ थे वर्ष से विशेष उत्तम ढङ्ग से प्रकाशित होगा लेख, चित्र कागज, छपाई सब ही उत्तम रहेगी। वनस्पति विज्ञान स्तम्भ में प्रति मास १ बूटी का चित्र भी रहेगा साथ ही रङ्गीन और सादे चित्र भी रहेंगे तथा विशेषांक भी प्रतिचौथे मास प्रकाशित होंगे तथा वह पूर्व विशेषांकों से बहुत बड़े चढ़े होंगे। जिन्हें देख ग्राहक और पाठक मुग्ध हो जायगे। पृष्ठ संख्या इस वर्ष ६२५ दी जा सकी है पर अब की वर्ष और भी अधिक रहेगी।

अब की वर्ष विशेषाङ्क पदक श्रीमान् बा० गणपति चन्द्र जी केला को मिला उनके लेख को ग्राहकों ने अत्याधिक पसन्द किया। अब पांचवे वर्ष में १ स्वर्णपदक और दो रौप्यपदक उन लेखकों

को प्रदान किये जायगे । जिनका सर्वोत्तम लेख " प्रवेशाङ्क ,, में होगा उन्हे एक स्वर्ण पदक मिलेगा । और जिनका सर्वोत्तम प्रयोग "प्रयोगांक,, में प्रकाशित होगा उन्हें एक रौप्य पदक मिलेगा और जिनका सर्वोत्तम लेख " शेष अङ्कों ,, में होगा उन्हें वर्षान्त में एक रौप्य-पदक दिया जायगा " सम्मेलनाङ्क ,, के सर्वोत्तम निवन्ध, पर जो पदकें दिये जायगे वह सम्मेलन द्वारा ही मिलेंगे। इनकी घोषणा भी सम्मेलन द्वारा ही होगी।

धन्वन्तरि ४ थे वर्ष, समय पर प्रकाशित हुआ फिर भी ग्राहक जरा रुष्ठ से रहे, कारण धन्वन्तरि प्रति मास के अखीर पर प्रकाशित होता था और वह दूसरे मास ग्राहकों को मिलता था पर अब उनकी यह शिकायत भी दूर कर दी गई है और इस लिये ही जनवरी फरवरी का संयुक्त अङ्क कर दिया है कि धन्वन्तरि प्रति मास के भीतर ही ग्राहकों के पास पहुंच जाय आशा है कि पाठकों एवं ग्राहकों ने जो धन्वन्तरि की उन्नति देख प्रशंसा की है वह इस नियम से और भी प्रसन्न होंगे ।

जिन ग्राहकों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ग्राहक बना हमें उत्साहित किया है उन्हें हम धन्यवाद देते हैं साथ ही उनकी कृपा से हम पांचवे वर्ष धन्वन्तरि प्रकाशित करने में समर्थ हुए हैं और उत्साह के साथ। यह उनकी ही कृपा का फल है कि अब की धन्वन्तरि ४ थे वर्ष से बढ़ चढ़ कर निकलेगा विशेषांक भी बढ़े चढ़े होंगे। आशा है कि वह सदैव की भांति अब भी हमारी सहायता कर आयुर्वेद प्रचार में हाथ बटावेंगे।

—सम्पादक

धन्वन्तरि के ग्राहकों से अपील ।



सर्व शक्तिमान परमेश्वर की असीम कृपा से हमें यह सूचित करते हुए परम हर्ष होता है कि आज हमारा धन्वन्तरि अपने जीवन में चार वर्ष व्यतीत करके पांचवें वर्ष में पदार्पण करता है पिछले चार वर्षों में जो कुछ आयुर्वेद के प्रचार स्वरूप में सेवा कर चुका है वह देश का वैद्य मण्डल एवं शिक्षित समुदाय अवश्य जानता है कैसे प्रभावोत्पादक वैज्ञानिक लेख तथा अनेक रङ्गीन सादे चित्र निवन्ध संग्रह उत्तम औषध अनुभूत प्रयोग वनस्पति विज्ञान प्रश्नोत्तरादि विषयों पर बराबर लेखमाला चलती रही है उससे देश का कितना उपकार हुआ है-यदि पाठक स्वयं विचार कर सकते है । हमें यह तो पाठकों के सन्देश से अवश्य निश्चय होगया है कि पत्र के सञ्चालन करते रहने की बड़ी आवश्यकता है साथ ही यह सब कुछ होने पर हमें सन्तोष नहीं है । क्यों कि हमारा ध्येय आंतरिक (विचार) और विशेष महत्वकांक्षाये है कि इसे हम सर्वाङ्ग सुंदर और सर्वोपयोगी एवं अपने ढङ्ग का अद्वितीय बनावें परन्तु यह तभी हो सकता है जब जरा आपकी भी प्रेम दृष्टि इधर होजाय । आप पत्र की लागत का विचार करके देखें कि हमें प्रति वर्ष कितना घाटा सहना पड़ता

है हम इस घाटे को प्रेमी पाठकों की भविष्य प्रतिज्ञा के ऊपर ही सहन करते चले आरहे हैं इस लिये पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं कि जब मनुष्य भारी बोझ से दबने लगता है तो वह किसी न किसी दिन अवश्यही नीचे को बैठ जाता है। कैसा भी चपल मनुष्य क्यों न हो घाटे का काम तो बन्द कर देना ही पड़ता है। हमें आद्यावधि धन्वन्तरि प्रकाशन को कई सहस्र रुपयों का घाटा सहन करना पड़ा है—यद्यपि पाठकों की सेवा में कई बार प्रार्थना भी की गई परन्तु वह अरण्यरोदन नहीं हुई आप समय २ पर अपने मित्रों सम्बन्धियों को सदैव उनके दिन अनुदिन के लिए सम्मति दिया करते हैं तथा अनेक प्रकार के अपव्यय से उनकी रक्षा करते हैं जिससे उनका धन सदुपयोग में व्यय हो—ऐसी दशा में अधिक नहीं यदि एक २ ग्राहक भी नया बनादें तो अनयास ग्राहकों की संख्या दूनी हो सकती है—और हमारी सुधार सम्बन्धी सभी इच्छाएं बलवती होकर सहज में ही पूर्ण हो सकती हैं ऐसा कराने में पाठकों को जरा भी कष्ट न होगा और हमें आर्थिक सहायता प्राप्त हो सकेगी। हमारा उत्साह बढ़ जायगा जिससे हम पत्र को और भी सर्वाङ्ग सुंदर बनाने के प्रयत्न में संलग्न हो जायगे। पत्र अपने विशेष महत्व से आयुर्वेदकीरक्षा करेगा। जिससे पाठकों की दी हुई सहायता के बदले में विशेष पुण्य प्राप्त हो सकेगा अब हम विशेष न कहकर इस आशा की प्रतिक्षा करेंगे कि पाठकगण ! कितनी प्रेम दृष्टि धन्वन्तरि पर रखते हुए हमारे निवेदन का स्मरण कर अपने कर्तव्यका पालन करेंगे और धन्यवादके भागीहोंगे।

विनीत —मैनेजर

उद्बोधन ।

स्वारथ सयाने सबै हसत विराने लोग, कोल ज्यों दुहत तुम्हें मधु मक्षिका बनाय
पैतृ की सुखद शुभ सम्पति गुणनि भरी, खोई जात पीछे पछितैहौ पुनि हाहा खाय ॥
आनि घिन चित्त जोपै इष्ट तुच्छ मानि तजो कायर कपूत बनि देशद्रोहता अघाय।
जन्म भूमि जननी की लाज रखिबे को वीर, करेंगे सहाय फिर कौन से सपूत आय ॥१
हम हैं हमारे प्रियबन्धु वनितादि मित्र, सुवन सुशील सब सम्पति हमारी है।
हम औ हमारही के बीच दिन रैन बसि, अजौ निज अन्य वस्तु चित ते उतारी है।
प्रति वर्ष भूरि धन जात है विराने देश है रही अनेक भांति भारत खुआरी है।
औषधि विदेशी अपनाओ विबुधर्म वीर, यही मातृभूमि की सुसेवकी तिहारी है ।३
त्यागी वेद पथ के विरागी सन्त मानेजात, औघड मसानी पोच सिद्ध पद पायोहै
परधन प्रमदापहारी ते सयाने नर वृथा बकवादी जन वकता कहायो है ॥
आश्रम बरन धर्म हीनता की बाढ़ निंत, दुराचार दम्भ दीह लोक मन भायो है।
सबै रीति नीति जग उलटी लखात वीर, कठिन कराल कलिकाल अब आयो है।

ले० प० महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य 'वीर'



उन्माद हिस्टीरिया (hysteria)

(लेखक कविराज हेमराज विशारद वैद्य— एम—ए—एम लाहौर)

परमात्मा की अपार महिमा की खोजना बड़े २ ऋषि महर्षि तथा योगी लोग अपनी आत्मिक शक्ति द्वारा करते चले आये हैं सृष्टि के आरम्भ काल से आज तक नूतन से नूतन तथा विचित्र ईश्वरीय शक्तियों का प्रकाश संसार में प्रति दिन हो रहा है, विज्ञान की अन्वेशना करने वाले विद्वान लोग जब किसी विचित्र विज्ञानिक भाव का प्रकाश होना देखते हैं गद् २ प्रसन्न हो जाते हैं इसी साधारण नियम का राज्य विज्ञानिक जगत में सदैव बना रहा है।

भिन्न २ देशों में काल की विभेदता से और नूतन अन्वेशण होते आये हैं वे उस समय की मनुष्य स्थिति के अनुसार प्रकाशित होकर मनुष्य जाति के उपकार के लिये अपनी निज शैली का अवलम्बन करते हुए स्थिर चले आये हैं। किसी किसी काल में धर्मान्ध पक्षपाती शक्ति शाली लोगों ने उन महान उपकारी आर्यों को निज मूर्खता के कारण हानि पहुंचाई है, विनष्टविशेष विज्ञानिकभण्डार के आभीभूत विद्वान लोगसाम्प्रातिक शैली को उद्घाटित करके उच्च ग्रीवा होते हैं कई बार निज अभिमानता से पूर्व स्थित विज्ञान को तुच्छता की दृष्टि से देखते हैं जो आदरणीय नहीं हैं।

शारीरिक विज्ञान सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य जाति की रक्षा के प्रकार को निज ज्योति से प्रकाशित करता चला आया है इस प्रकाश से

प्रकाशितदिव्य ज्योतिसे युक्त दिव्य वैद्य धन्वन्तरि चरक, ,वाग्भट्ट आदि ने अपनी २ आयोजनाओं को समय २ पर प्रकाशित किया है, इन की प्रकाशित दिव्य शक्ति मय आयोजनायें अपने पूर्ण अथवा अपूर्ण रूप से संसार में उपस्थित हैं ।

इन महर्षियों की कुशाग्र बुद्धियों ने उस महान् विज्ञान के भण्डार दिव्य शक्ति प्रभुमें निरोध करके जिस दिव्यविज्ञान को उपलब्ध किया उसी अमृत के कुम्भ को संसार में बांट दिया वह आयुर्वेद विज्ञान अपनी उपस्थित शैली से विभूषितव प्रज्वलित हो रहा है । इस दिव्य प्रकाश की उपस्थिति में वैस्टर्न Western शारीरिक विज्ञान अपने प्रकाश व वर्णन शैली से विभूषित होता हुआ निज पूर्णता के सिंहनाद की गरजना कर रहा है । राज्य सहाय प्रभाव से बलशाली होते हुए जो जिस प्रकार से यह विज्ञान वर्णन करता है वहही सर्वाङ्ग पूर्णभावसे देखा जाता है वास्तव में जहां तक हमारा अनुभव है वर्णन शैली में कुछर भेदके अतिरिक्त तथा तत्वाभाव युक्त विस्तार के सिवाय कोई भी विशिष्टता दिखाई नहीं देती अब हम इस सिद्धान्त को चित्त में धारण करके नूतन शारीरिक विज्ञान पर आलोचना करते हैं तो अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है, और महर्षिगण की दिव्य शक्तियों का प्रभाव हृदय पर सुदृढता से अंकित होता है ।

पाठक गण

आज आप के सम्मुख हमें कुछ हिस्टेरिया Hysteria रोग पर वर्णन करना है यह शब्द आयुर्वेद का नहीं किंतु यूनानी भाषा का है इसका अर्थ गर्भाशय है नूतन अन्वेषकों ने इस रोग को कुछ गर्भाशय सम्बन्धित समझा है इस लिये इस रोग को गर्भाशय के रोगों में गणना करते रहे हैं परन्तु अब कुछ कालसे इसको नर्वज़ डिजीज Nervesdisease ज्ञान तन्तुका रोग स्वीकार करने लगे हैं ।

यूनानी चिकित्सा वाले इस रोग को इक्तनाक उलरेहम कहते हैं इक्तनाक का शब्दार्थ गला घोंटनाव प्रसिद्धार्थ श्वास घुटना या बन्द हो जाना है इस रोग में श्वास घुटना है जो गर्भाशय रोग के कारण होता है और गर्भाशय भी कुछ संकुचित सा हो जाता है ।

जिस शैली से इस रोग का वर्णन पाया जाता है उस शैली को छोड़ कर लाक्षणिक रूप में इसका सम्पूर्ण वर्णन हमारे आयुर्वेद में पूर्ण ही उपस्थित है, आयुर्वेदज्ञ विद्वान उन्माद अपस्मार, मूर्च्छा (सन्यास) अपतन्त्र व अपतानिक वात आदि रोगों में न्यूनाधिक लक्षण हिस्टेरिया Hysteria के पायेंगे, कई विद्वानों ने इसका नाम योषापस्मार रक्खा है जो शास्त्र प्रमाणाभाव से सर्व मान्य नहीं है, हमने शास्त्र प्रतिपादित उन्माद आदि रोगोंके लक्षणों को भली प्रकार विचार कर उन्मादरोग के ही लक्षणों को आतिक, पैत्तिकव कफिजादि लक्षणों के भेद को छोड कर हिस्टेरिया Hysteria रोग के बहुत कुछ सामान्य रूप पाया है इसी आधार पर ३० वर्ष से इस रोग की विशेष तथा चिकित्सा करते हैं ।

हिस्टेरिया के लक्षण व सम्प्राप्ति

यह रोग बहुधा स्त्रियों को ही होता है परन्तु गर्भाशयके दोषों को छोड़कर शेष लक्षण पुरुषों

में भी वैसे ही पाये जाते हैं।

मदयन्ति उद्गता दोषायस्मादुन्मार्ग मनःश्रिताः।
मानसोऽयमतो व्याधि रुन्माद इति कीर्तितः ॥
। सुश्रुत ।

अथ दोष (निज कारणों से उत्पन्न होकर उन्माद को प्राप्त होकर न ष्ट मार्ग को गमन करते हैं तब रोगी बेसुध हो जाता है अर्थात् मस्तिष्क (दिमाग—ब्रेन Brain) को प्राप्त होकर रोगी मूर्च्छा अवस्था को प्राप्त होता है इसी हेतु से यह मानसिक व्याधि का नाम उन्माद है।

नूतन अन्वेषण के अनुसार नर्वीज डिज़ीज़ Nerves Disease मानसिक रोग होनेसे न केवल स्त्री मात्र का ही रोग है प्रत्युत मनुष्य मात्र का रोग है।

उन्माद रोग की चिकित्सा के आधार पर अबतक सैकड़ों पुरुषों, बालकों व स्त्रियों को निरोग कर चुके हैं तब यह निज अनुभाविक ज्ञान सर्वोत्तम ज्ञान है।

वैरल्य सत्वस्य मलाः प्रदुष्टा,
बुद्धेर्निवासं हृदयं प्रदुष्य।
स्रोतांसि अधिष्ठन्न मनोवहानि,
प्रमोह यन्तीह नरस्यचेतः ॥
(चरक)

इन सब कारणों से अल्पसत्व (शारीरिक व मानसिक निर्बलता युक्त मनुष्य) मनुष्य के दोष प्रदुष्ट होकर बुद्धि और हृदय कोदूषित करते हैं (ब्रेन Brain व हार्ट Heart को दूषित करदेतेहैं) इन दोनों के स्रोतों को आच्छादित करके अर्थात् मस्तिष्क (ब्रेन Brain) की ज्ञान तंतुओं (Sensary Nerves) की गति का निरोध कर देतेहैं व हृदय के छिद्रों के कर्म में विपरीतता (पलपीटेशन आफहार्ट Palpitation of heart) उत्पन्न कर देते हैंजिस से मनुष्य मूर्च्छा को प्राप्त होता है हिस्टेरिया रोग की रुग्ना स्त्रियों को मूर्च्छा काल में बहुधा देखा है इन की जहां प्राय शून्य अवस्था होती है वहां हृदय की गति बहुत ही धड़कन युक्त होजातीहै जो पास बैठे वैद्य को सुनाई देती है कई केसों में हृदय की गति इतनी धीमी हो जाती है जो मृत प्राय रोगियों के तुल्य पाई जाती है,

विरुद्धदुष्टाशुचिभोजनानि प्रधर्षणं देवगुरुद्विजानाम्
उन्मादहेतुर्भय हर्षपूर्वो मनोविघातो विषमाश्चेष्टाः
(चरक)

प्रकृति व ऋतु के विरुद्ध अनेक प्रकार के तीक्ष्ण पदार्थों व मसालों से बना हुआ (चाय - काफी आदि से विशेषतयायुक्त । दुष्ट व अपवित्र (जला सड़ा, कच्चा, विरुद्ध पदार्थों के सम्मेलन से अपवित्र नीच के हाथ का या उस के घर व पात्र का बना पका पदार्थ) भोजनों के सेवन से, विद्वान् पूजनीयवृद्धजन व सर्व पवित्र गुणोंसे संपन्नब्राह्मण क्षत्री, वैश्य आदि के प्रधर्षण (दुष्ट कर्म करने, आज्ञा न मानने देश, जाति व धर्म को हानि पहुंचाने ब्रह्मचर्य का नाश करने से डराया व धमकाया जाना) अनेक प्रकार के भय और अत्यन्त खुशी के प्राप्त होने पर मानसिक वृत्तियों का विचलित होना,विषम चेष्टाओं को करना अर्थात् कर्तव्य कार्यों के विरुद्ध अनेक प्रकार की चेष्टाओं को करते रहना महर्षि चरकके ॥ विषमा श्चेष्टाः ॥ पद में बहुत भारी गौरव भरा है निरभ्रान्त ज्ञानयुक्त त्रिकालज्ञ पवित्र बुद्धियुक्त महर्षियों के वाक्यों में से ऐसे गूढ तत्त्व पाये जाते हैं जो भूत भविष्यत् कालों में भी देखे जाते हैं, उनके वर्तमान काल में ये जानें क्या

२ विषम चेष्टायें थीं परन्तु आज कल अधो लिखित विषमचेष्टायें प्रत्यक्ष रूप में उन्मादरोग (हिस्टेरिया Hysteia) में पाई जाती हैं जो इस रोग का कारणः—

(१) विशेष कर स्त्रियों को १२ वर्ष की आयु में कहीं २ इस से अधिक आयु में भी देखा गया है लड़कों वयुवा पुरुषों का भी हमने इस रोग में ग्रस्त पाया है, यह रोग मस्तिष्क (दिमागी) का है अधिक परिश्रम करने, चाय, काफी, कोको आदि रुक्षता करने वाले पदार्थों के अधिक सेवन से निद्रा का आना, अनेक प्रकार के कार्यों की दिन रात चिन्ता करने से पुत्र• कलत्र स्त्री तथा धनादि के वियोग के कारण दुःखी रहने से कुमारी वन्ध्या व अधिक काम भोग की इच्छा रखने वाली स्त्रियों को वृद्धा तथा वेश्या स्त्रियोंकी अपेक्षा यह रोग अधिक होता है ऋतु के अनेक प्रकार के दोषों के कारण, भोग विलास का अधिक तर जीवन व्यतीत करने ग्राम की रहने वाली स्त्रियों की अपेक्षा नगरों में रहने, स्त्रियों को काम काज न करने अधिकतर आलस्य वश पड़े रहने से, माता पिता व पति के बहुत स्नेह करनेसे यह रोग बहुधा उत्पन्न होता है हास्यविलास व विरह के भावों से भावित उपन्यासों बनावटी कथाओं के पढ़ने में लीन रहने से, सुदृढ़ प्रकृति वाली स्त्रियोंकी अपेक्षा सुकुमारी मृदु निर्बल हृदय वाली कन्या व स्त्रियों को यह रोग अधिकतर होता है, गृष्ठिता (कवज़) पेट में अफड़ा रहना, मदाग्नि, शिर पीडा, क्रोध का अधिक करना इत्यादि कारणोंके अतिरिक्त यह रोग पैत्रिक भी है माता को होने से कन्याओं में भी देखा जाता है गर्भाशय का निज स्थान से विचलित हो जाना-खड़िया मट्टी, स्लेटपैंनसलमुलतानी मट्टीके खाने से निर्बल रहना, प्यारे के विरोह से दुःखी होना॥

(२) मो होद्वेगौ स्वतः श्रोत्रे गात्राणाम पतपणम्
आत्योत्साहोऽरुचि श्चान्ने स्वप्ने कलुष भोजनम्
वायुनात्मथनं चापि भ्रमश्चंक्रमतस्तथा
यस्य स्यादचिरेणैव मुन्मादं सोऽधिगच्छति
(सुश्रुत)

हाव भाव (अनेक प्रकार केनखरो श्रृङ्गार का करना कभी २ मुर्च्छावत वेग का होना, कानों में नाद ध्वनिका होते रहना सम्पूर्ण शरीर के गात्र का पुष्ट होना या क्षय होते जाना हर काम के करने में बहुत तेजी का दिखाना (बिना किसी प्रकार के भय के कठिनतर कार्यों के करने में प्रवृत होना) खाने पीने में अरुचि का होना, स्वप्नावस्था में भ्रष्ट पदार्थ (मलमूत्र) का भक्षण करना, वात के वेग की अधिकता से उन्मथन होना अर्थात शरीर व हृदय का संकुचितसा होते जाना, शिर में चक्रोंका अधिक होना या चक्रों का क्रम से वृद्धि को प्राप्त होना जिनमें इत्यादि लक्षण पाये जायें उन्हें शीघ्र ही उन्माद रोग (हिस्टेरिया Hysteria) होजाता है।

समुद् भ्रमं बुद्धि मनः स्मृतीना मुन्मादम् (चरक)

बुद्धि, मन व स्मृतिका ठिकाने न रहना ही उन्माद है, उपरोक्त कारणों से जब रोग का अंश शरीर में वृद्धि को प्राप्त होता जाता है तब मनुष्य की स्थिर चेतना अवस्था को प्रकाशित करने वाले ये तीनों स्फुट लक्षण अपनी स्वाभाविक शक्तियों को त्यागने लगते हैं जिससे इस रोग का निश्चय सा होने लगता है इस अवस्था में अधोलिखित लक्षण भली प्रकार से प्रकाशित हो जाते हैं:—

धीविभ्रमःसत्वपरिप्लवश्च पर्य्याकुलादृष्टिरधीरताच अबद्धवाक्यत्वंहृदयंचशून्यं सामान्यमुन्मादस्य- लिङ्गम (चरक)

बुद्धि विभ्रम (कभी निश्चयात्मिक ज्ञान का न होना) हर एक वार्ता में स शित रहना, मित्रों में शत्रुभाव, पिता पुत्र व पति आदि पर अविश्वास, भोजनादि में विष का स शय करना, हितकर बातों को भी हानिकारक जानना इत्यादि। सत्व परिप्लव अर्थात् चित्त की चांचल्यता, अनेक प्रकार के स कल्प विकल्पों में पड़े रहने से कभी तो अपने आप को बहुत भारी मनुष्य जानते हुए प्रसन्न होना और कभी तुच्छ समझते हुए शोकातुरता को प्राप्त होना ऐसे ही मनमें अनेक प्रकार के बनाव बिगाड़ बनाते रहना।

दृष्टि का आकुलसा रहना कभीइधर कभी उधर देखना कभी देर तक एकओर देखतेरहना, स्थरता से अनुकूलता पूर्वक बहुत कम देखना।

कभी धीरता का न होना, निरोत्साह का सदा बने रहना,वार्तालाप में अबद्धता का होना बातें करते हुए बीच में कुछ और का और कह जाना,या शब्दोंका स्पष्ट न निकलना अथवा भिन्नर वाक्यता से वार्तालाप करना, कईवार मुख में ही कुछ अस्पष्टसा बोलते रहना।

हृदय शून्यता का होना आपने आपको ऐसे समझना जैसे शरीर में हृदय है ही नहीं (दिल का बैठते जाना) ये उन्माद के सामान्य लक्षण हैं।

इन्हीं के अनुकूल विस्तार से जो लक्षण उन्माद रोगी में पाये जाते हैं उनका कुछ वर्णन किया जाता है:—

(३) आजकल के शारीरिक विज्ञानियों ने इस रोग की खोजना करते हुए इसको अनेक लक्षणों से युक्त पाया है प्रत्येक रोगी में एक से लक्षण नहीं पाये जाते किन्तु, बहुधा यह पाया गया है,कि रोग के आवेश से प्रथम रोगी की कटि, शिर व शरीर के भिन्नर भागों में पीड़ा होने लगती है हृदय में धड़कन होती है उदर में गुल्म सा फिरता है जो ऊपर कण्ठ तक आकर श्वास को रोकता है रुग्ना हाथ पांव मारती है, मुखकी- काँति रक्तवर्ण हो जाती है चिल्लाती व बक- वाद करती है, हंसती है कभी रोती तथा कभी बे सुध हो जाती है।

रुक्षच्छाविःपरुषवाग्धमनी ततोवाश्वासातुरः कृशतनुःस्फुरितांगसांधिः अस्फोटयन्पठतिगायति नृत्यशीलोविक्रोशति भ्रमति।
(सुश्रुत)

महर्षि धन्वन्तरि प्रतिपादित वातिक उन्माद के लक्षणों में यह स्पष्ट बताया:—

मुखकी कांति रुक्ष (खुश्क) होजाती है दमके घुटने से कठोर शब्द मुख से निकलते हैं, शरीर अकड़ जाता है, श्वास बहुत रुक २ कर कपोत शब्द वत् निकलता है शरीर दुर्बल हो जाता है टांगों व भुजाओं को घुमा २ कर भूमि या चारपाई पर मारती है, अस्पष्टता से पाठ करना कभी गायन करने लग जाना, कभी सहसा नाचने लगना, दूसरोंकोगालियें देना, विना कारण घूमते रहना इत्यादि,

इस रोग की मूर्च्छा में अत्यन्त बेसुधता नहीं होती प्रत्यक्ष में तो रोगी मूर्च्छित दिखाई

देता है किन्तु भीतर में इसे सुध होती है, पास के लोग कुछ वार्तालाप करें तो सुनता व समझता है वेग के समय हाथ पाँव मारता है जैसे अपस्मार का रोगी मारता है अपस्मार के रोगी के मुख से झाग जाती है और मुख पीतता युक्त हो जाता है जो उन्माद रोग में नहीं होते,, गला घुटने के समय पुनः २ उगलियों से उसे साफ करने की चेष्टा करते हैं जब कुछ वेग में न्यूनता होती है तो बहुत थकावट शिर पीड़ा, ग्रीवास्तम्भ, उदर वात व उद्गारों की अधिकता होजाती है और मूत्र पुनः २ आने लगता है।

ऐसे भी देखा गया है:-

रुग्ना सहसा चिल्लाकर रोने लगती है, खिलखिलाकर हसती है वात गुल्म के कठ तक पहुंचते ही वेसुध होकर धरती पर गिर पड़ती है, छाती को पीटती और ग्रीवा को पीछे की ओर झुका देती है जिस से ग्रीवा आगे की ओर ऊंची हो जाती है हाथ पांव में खेंच होकर अकड़ जाते हैं, शरीर की भिन्न २ प्रकार से अनेक प्रकार की आकृतियें बन जाती हैं, कइयों में इतना अधिक बल रोग के वेग से उत्पन्न होता है जिसके कारण रोगी को दो २ तीन २ मनुष्य कठिनता से सभाल सकते हैं, कभी उठना,बैठनाहांथ पावका मारना नेत्र पलकों को विचित्रता से चलाना नासिकाओं का फूल जाना,दांतो का दृढता से मिचजाना, चीखने चिल्लानेकेसमय मुखाकृति कईवार बहुत भयानक हो जाती है- शिर के केश नोचने व कपड़ों कोफाड देना, शिर को कठोर वस्तु से टकराना पास बैठे लोगों को काटने के लिये भागना, श्वास का गभीर शीतल व टूटकर ऊर्ध्वता से आना, हृदय की धड़कन बहुत शीघ्र व बड़े शब्द से होनी धमनी की गति का चचल हो जाना, मुखरक्त व गले की शिराओं का फूल जाना हाथ पांव शीतल हो जाने शरीर काम्पने लगजाता है, कईवार बिलकुल चुप हो जाना, कईवार वमन होकर सो जाना। जब रोगके वेग की निवृत्ति हो जाती है तो कई स्त्रियें कहती हैं हमें कोई सुध नहीं थी परन्तु वह सब बात सुनती व देखती हैं। कइयों का मूत्र बन्द हो जाता है, दो २ तीन २ दिन तक वेसुध पड़े रहने से खाना तक नहीं मांगती, घरवाले चारपाई पर डाल रखते हैं जब होश होता है तो खाना मागती हैं, कई कुत्तो की प्रकार भौंकती व बकवाद करती रहती है।

(४) वैद्य महोदय गण।

इस रोग की विचित्र गति है जिसको विशेष रूप से वेही महोदय जानते हैं जो इस रोग की चिकित्सा विशेष तया करते हैं क्यों कि उन्हें भिन्न २ प्रकार के रोगियों को देखने का अवसर प्राप्त होता है, एक बार के वेग से दूसरे बारके वेग तक भिन्न २ प्रकार के अन्तर देखे गये हैं, वहकुछ मिटों से लेकर कई घन्टो व कई दिनो तक का होता है,

एकबार हमें एक रुग्ना दिखाई गई जो आठ दस दिन से इस रोग के आक्रमण से ग्रस्त थी दो तीन घन्टो के अन्तर के पश्चात् पांच मिट के लिये उसे सुध आजाती थी जिस में घर वाले उसे शीघ्रता से कुछ खिला पिला दिया करते थे इसके पश्चात्‌वहपुन:वेहोशहो जातीथीकई डाक्टोर नेयत्न किये, कई मिसमेरेजम वालो ने अपने अमल

किये परन्तु उसकी अवस्था में भेद नहीं आता था।

जब हम उसे देखने गये तो उसे हमारे सनमुख चैतन्यनता आई। वह राम २ करने लगी थोड़े काल में पुनः मूर्छित होगई हमने उसे एक तीक्ष्ण नस्य दी जिस से पांचमिनट में चैतन्य हो गई जो पुनः बेसुध नहीं हुई।

कई ऐसी रुग्ना भी देखी हैं जिन्हें रात्रि को सोते हुए आवेश (फिटके Fit) होता था और सोते २ ही स्वयं छूट जाता था कइयों को तो ऐसे विचित्र प्रकार के फिटस Fits होते हैं जिन्हें अनुभवी वैद्य के अतिरिक्त दूसरा कभी नहीं जान सकता, कई स्त्रियों को ऐसे मृदु आवेश देखे गये हैं जिनसे बेहोशी नहीं होती कभी शिर में चक्र कभी नेत्रों में मस्ती सी प्रतीत होती है कभी हाथ पांव में ऐंठनसा होता है जिसे वैद्य लोग निर्बलता जानकर कई २ वर्षों तक चिकित्सा करते रहते हैं जिससे लाभ कुछ नहीं होता। भिन्न २ प्रकार की इच्छाएं भिन्न २ प्रकार से बुद्धि का प्रकाश करती हैं जो अनुचित प्रतीतहोती हैं, बहुत हठी हो जाती हैं जब इन सेरोगकीअवस्था प्रश्नो द्वारा पूछी जाये तो उसे बहुत विस्तार पूर्वक असंबद्धसा वर्णन करती हैं। कई विशेष प्रकार की पीड़ा व कई अधरंग का होना अर्द्ध नेत्रों का फटना प्रकाशित करती हैं। कइयों को अधरङ्ग की प्रकार इस रोग का प्रभाव होता है और टांग व पाँव को घसीट कर चलने लगती हैं, परन्तु यह अवस्था युवा स्त्रियों मेंथोड़े कालतक ही रहती है, जब २ गर्भावस्था हो तब २ उन्माद के वेग आने और आसन्न प्रसूता व प्रसूता को बहुत ही शीघ्र आवेश (फिटस Fits) आने कभी २ तो बालक प्रसव के ठीक उस समय आवेश होता है जब बच्चा योनि से बाहिर आरहा है उस समय बहुत ही कठिनता प्राप्त होती है यदि समय पर ठीक चिकित्सा न की जाय तो बालक वहां अटक जाता है। एक स्त्री की चिकित्सा ऐसे काल में की थी जब आधा बच्चा भीतर और आधा योनि से बाहिर था।

(५) कई नूतन वैद्य अथवा जिन पुराने वैद्यों ने इस रोग के भिन्न २ प्रकार के रोगी नहीं देखे वे तो इस रोग के भयानक रोगियों को देखकर भयभीत हो जाते हैं वे भूत राक्षस, गन्धर्व आदि का आवेश जानकर रोगी की चिकित्सा न करके पूजा, पाठ, धागा, तावीज मंत्र जन्त्रों का आदेश करते हैं।

हमारे प्यारे विद्वद् वैद्य पाठक महाशयों ! हमारे अनुभव में सैकड़ों ऐसे रोगी आये जिनको मूर्खता से झूठी कपोल कल्पना में डालकर खराब कया गया था हमने इन के भ्रमात्मिक आसेबों को चन्द मिटों में भगा दिया और उन यन्त्र मंत्रों को जलवा दिया। एक समय एक युवा कन्या को देखा जिसे वैद्यों ने असाध्य रुग्नाजान कर छोड़ दियाथा और एक प्रसिद्ध डाक्टर जी की चिकित्सा हो रही थी। इसकी अवस्था यह थी वेग के समय बिलकुल धनुष वात की प्रकार अकड़ जाती पृष्ठ व शटेड़ा हो जाता हाथ पीछे को ओर फिर जाते मुख खुल जाता नेत्र बाहिर निकल आते, जिस से उसकी भयानकता डरावनी शकल ऐसी विचित्रहो जाती थी जिसको देखकर डाकनी, शाकनी आदि को मानने वाले लोग तो पास से भाग जाते थे, बल्कि

माता पिता तक उसे अकेली एक कमरे में छोड़ कर दूसरी ओरहो जाते थे जब उसे होशआता और मुख आदि की आकृति ठीक होतीतब उसके पास आते। हमारी सम्मति में भूत, राक्षस, गन्धर्व आदि मनुष्यों के भेदों से अतिरिक्त अन्य जातियें मानने वाले वैद्य लोग इस रोग की भयानक अवस्था में निर्भयता से कभी भी चिकित्सा नहीं कर सकते प्रत्युत स्वयं कई प्रकार के हृदय रोगो में फंस जाते हैं और रात्रि को सोते २ ऐसे बड़बड़ा उठते हैं जिस से मुहल्ले भर में बेचैनी फैल जाती है जो शोक का विषय होता है।

(६) ज्ञानेन्द्रिय की ज्ञान शक्ति बढ़ जाती है, जैसे शरीर पर सूक्ष्म तर कपड़ा सहन न होना, नेत्रो का प्रकाश से घबराना, थोड़ी सी ऊंची आवाज को भी सहन न करना, किसी प्रकार की गन्ध को भी न चाहना, कई बार तो देखाहैकिशिर में ऐसी तीव्र पीड़ा होती है जैसे कोई जोर२ से कील गाड़ रहा है साथ ही पृष्ठ वंश मे ऐसी भयानक पीडा का होना देखा गया है जैसे कोई इस वंश के कसेरुको को कुल्हाड़े से काट रहा हो,स्तनो के नीचे,औरकूल्हो में घुटनो मेंभीबहुधा पीड़ा होती है. इनके कारण बहुत काल तक चारपाई पर पडी रहती हैं और चल फिर नही सकती कोई बीस वर्ष की वार्ता है कि हमें एक स्त्री की चिकित्सा के लिये श्रीनगर काश्मीर जाना पड़ा हमें तब बुलाया गया जब वहां के एक सुयोग्य डाक्टर साहिब ने अपनी सब प्रकार की चिकित्सायें करके अपने आपको असफल कार्य्य पाकर यह कहा कि अब इस के ब्रेन Brain का अपरेशन किया जायगा (कनपटी के पास यन्त्र द्वारा अस्थि में छिद्र करके मार फिया आदि की मालिश करते हैं) इसमें यदि मृत्यु हो जाय तो हम उत्तर दाई नहीं होंगे, जब हम पहुंचे तो पता लगा कि कभी कई दिनों से नहीं सोई दिन रात रोती चिल्लाती व हस २ कर तालियें बजाती रहती है शिर में तीव्रतर पीड़ा होती है और सब सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष में देख कर हमने चिकित्सा आरम्भ की जिससे ईश्वर की अपार कृपा से वह एक सप्ताह में निरोग हो गई,

(७) उदर में भयानक पीड़ा होती है जो समस्त उदर में न्यूनाधिक दबाने से सब स्थान में पाई जाती है अगर ज्वर साथ हो जाय तो जिह्वा बहुत मल युक्त रहती है कई अपनी योनि व शरीर के दूसरे विभागों में पीड़ा बताया करती हैं गला पड़ जाता है अवाज ठीक प्रकार से नहीं निकलती विचित्रता यह है कि ऐसे २ उपद्रव कई वार थोडी सी चिकित्सा के करने से स्वल्प काल में ही दूर हो जाते हैं, उद्गार (डकार) हिचकी व पुनः २ मूर्च्छा का होना, मूत्र का रुक जाना अर्थात् मूत्राशय की गति शून्य हो जाती है, श्वास का शीघ्र २ खैंचकर आना और कास का पुनः २ उठना इत्यादि अनेक प्रकार से इस रोग का उद्घाटन होता है जैसे हम पहले बता चुके हैं यह रोग अनेक प्रकार का है क्यों कि कई प्रकार के रोगों को जब उनके निदान के अनुसार चिकित्सा करने से दूर नहीं कर सकते तो हमें सन्देह होता है कि यह रोग सम्भव है उन्मादिज हो जब इस भाव को लेकर चिकित्सा की जाती है तो बहुधा ईश्वर कृपा से सफलता प्राप्त होती है। इस लिये वैद्य की अधीरता रोगी को बहुत हानि पहुचाती है वैद्य का कर्तव्य है कि धीर, वीर व निर्भय होकर इस रोग

की चिकित्सा में प्रवृत्त हो पागल पन (इनसैनिटी Insanity) के कई रोगियों को जो कई २ बार पागल खानों में डाले गये थे जिनके लक्षण वहुधा उन्माद रोग के साथ मिलते है इसकी चिकित्सा, व हिस्टेरिया की चिकित्सा एक ही प्रकार से कर के सफलता प्राप्त किया करते हैं।

(८) कई युवा अवस्था की स्त्रियों को तबतक रोगका बहुत जोर रहा जब तक उनको संतान नहीं हुई सतान होते ही, रोग की निवृति तत्काल विना किसी प्रकार की चिकित्सा के होगई यह हो रोग गर्भ से पूर्व या गर्भावस्था में इतना भयानक होना है जो किसी भी यत्न या चिकित्सा से दूर नहीं होता, यह नियम भी साधारण नहीं है क्यों कि देखा गया है कि कई २ सतानों के होने पर भी हिस्टेरिया Hysteria अपना वेग बराबर करता है और आवेश (फिटस Fits) होते रहते हैं, इस का कोई विशेष नियम नहीं है, कुमारियो, विवाहिताओं, बिना सतान अथवा स तान वालियों को छोटे लडकों, युवा पुरुषो को गर्भाशय के रोगों से और किसी प्रकार के स्त्री रोग के बिना भी यह रोग देखा गया है।

अपस्मार रोग के लक्षण विशेषतया इससे मिलते है. मूर्च्छा सन्यास और अपतन्त्रिक व अप तानिक वातादि रोगों के लक्षणों में से तो केवल मात्र मूर्च्छा विशेष तया मिलती है और भी कई बातें परस्पर मिलती जुलती हैं हमने उन्माद रोग की चिकित्सा के अतिरिक्त अन्य रोगो की चिकित्साओं को हिस्टेरिया रोग में सेवन करवा कर परीक्षा किया है। हमें उन्माद रोग या शिर रोग के योगों से ही सफलता हुई है इस हेतु से यह उन्माद रोग ही है जो स्त्री, पुरुष, वाल, युवा आदि सब को निज कारणों से होता है।

कई बार अपस्मार रोग के लक्षण विशेष तया पाये जाते हैं परन्तु अपस्मार रोग में हम उन्माद रोगकी चिकित्सा से सफल नहीं होने हाँ कभी २ कुछ दिनो तक अपस्मार के आवेश (फिटसFits) रुक तो जाते है परन्तु कुछ दिनों के पीछे इस के वेग पुनः वैसे ही शीघ्र २ आने लगते हैं जिससे निश्चय होता है कि उन्माद में अपस्मार का भ्रम कदापि नहीं होना चाहिये।

अपस्मार व उन्माद के प्रधान भेद

(अपस्मार एपीलपसी Epilepsy)
(उन्माद हिस्टेरिया Hysteria)

(१) स्मृतेरपगमंप्राहुरप स्मारम
(चरक)

स्मृति (याद्दाश्त व चैतन्यता) के दूर होने को अपस्मार कहते है।

मूर्च्छा प्रमूढ़ता (सुश्रुत)

मूर्च्छा (बेसुधता) प्रमूढता कोई होश न रहना अर्थात् किसी की आवाज़ को न सुनना व न उत्तर देना, वेग की निवृत्ति के पश्चात् रोगी या रुग्ना को कुछ स्मरण न होना।

(२) दंत खादं वमनफेनं विवृताक्षः पतेत् क्षितौ।
अल्प कालान्तरंच पिपुनः संज्ञांलभतेसः
(सुश्रुत)

दांतों का कटकटाना मुख से झाग का आना, नेत्रों का फट जाना धरती भूमि पर गिर

जाना और थोड़े से काल के पीछे पुनः चैतन्य हो जाना, मुख की कान्ति नील वर्ण कीहोजातीहै नेत्र उभरे से और च चल होते हैं जिव्हा दातों से कट जाती नेत्रों की (पिदण्ल) पुतली प्रकाश का सहन नहीं करती।

(३) हृत्कम्पः शून्यतास्वेदो ध्यानं मूर्च्छाप्रमूढ़ता।
निद्रा नाशश्चतस्मिंस्तु भविष्यति भवत्यथ
(सुश्रुत)

हृदय कम्पना (पलपीटेशन आफ हार्ट Palpitation सत्ता हीनता से शरीर का शून्य सा हो जाना, पसीने का बहुत आना, जिसओर ध्यान का लगना उस ओर लगे हीरहना मूर्च्छा का होना, बुद्धि का बिगड़ जाना निद्रानष्ट हो जाना इन लक्षणों से अपस्मार होता है या भविष्य में हो जाता है और मुख का एक भाग दूसरे की अपेक्षा अधिक खराब हो जाता है।

(४) क्षणिकत्वात्तथैवच (सुश्रुत)

यह रोग स्वभाव से ही थोड़े काल रहता है

प्रलापः कूजनं क्लेशः प्रत्येकं तुभवादिह
(सुश्रुत)

बकवाद, कपोतवत शब्द करना व क्लेश ये प्रत्येक होते हैं, न रोती व न हंसती हैं।रोग के अन्त में गाढ़ निद्रा आती हैं, स्मरण शक्ति न्यून हो जाती है शिर पीड़ा बहुत होती है।

(५) मनसो दोषैरुन्मार्गगैर्मदः (वाग्भट्ट)

मानसिक दोषोंकी उलटे मार्गसे गतिहोनेसेजो मद होता है वह उन्माद है अर्थात् मद जो प्रत्यक्ष में पे सुधता होती है परन्तु इस अवस्था में पास के बैठे मनुष्यों की आवाज़ सुनाई देती है हाँ इस का उत्तर नहीं दिया जा सकता, रोगीकी यह अवस्था तत्काल ही नहीं होती।

(२) चेष्टा वैषम्यात् (वाग्भट्ट)

भिन्न २ प्रकार की चेष्टाएं होने से अर्थात् मुख का रक्त वर्ण होना, नेत्र बन्द, नेत्र पलकों की पुनः २ चेष्टा होनी, दांत मिच जाने परन्तु पीसने नहीं, जिव्हा का न कटना, प्रकाश का प्रभाव नेत्रों पर भली प्रकार होना

(३) समूढ़ चेता न सुखं न दुःखं
नाचार धर्म्मौ कुत एव शान्तिम्
विन्दत्य पास्त स्मृति बुधिसंज्ञं
भ्रमत्यथं चेत इतस्ततश्च (चरक)

चित की चैतन्यता नष्ट होने से सुख दुःख काज्ञान नहीं रहतानहीं। आचार अनाचार व धर्म्म अधर्म्मकाभी ज्ञानन रहनेसे कहींभी शांतिकी प्राप्ति नहीं होती और स्मृति, बुद्धि तथा संज्ञा भी स्थिर नहीं रहती और यह इधर उधर घूमता है।

मुख की कांति व आकृति में कभी विभेदता नहीं होती और कभी २ कांति नष्ट होकर मुख भयानकसा हो जाता है।

(४) नृत्य गीत वागङ्ग विक्षेपन रोदनानि
प्रहास नृत्य प्रधानम् (चरक)

मद के समय नाचना गीत गाना, हाथ पांव को इधर उधर उठाकर फेंकना, और कई बार रोना।

कइयों में हंसना व नाचना प्रधान तया होता है।

(५) वेगका आवेश दूर होने पर चैतन्यता

परिणाम

जिन को एकवार इस रोग का आवेश हो जाता है उनकी मुक्ति इस रोग से बहुत कठिनता से होती है विशेष कर उस अवस्था में जब यह रोग पैत्रिक हो या कन्या बहुत लाड़ प्यार से पाली हुई हो, हां यदि आभ्यान्तरिक रोगों (यूट्रस डज़ीज़ Utrns Diseases के कारण हो तो इसको चिकित्सा मुख्यतया कर्तव्य है। गर्भवती को इस रोग के कारण वमन बहुत होते हैं कई वार गर्भपात हो जाता है या मृत बालक उत्पन्न होता है यदि जीवित रहेतो उसे पैत्रिक उन्मादहो जाता है। गृष्ठता (कवज) रहती है, गन्दे व भयानक विचार उत्पन्न होते रहते हैंपुरुष बहुधा उलट पलट बातें करते हैं, मनमें आईहुईबातों को बुद्धि हीनता की प्रकार गायन करता है, कभी हंसता है कभी रोता है या बिलकुल चुप रहता है, नेत्रो में रक्त वर्णता विशेष रूप से रहती है, कई वार शरीर का बल व इन्द्रियों का बल बहुत ही नष्ट हो जाता है मुख की कांति नष्ट हो जाती है रोगी कभी बहुत ही बल शाली हो जाता है और कभी मृत प्राय: होता है अन्त में मुख का वर्ण कृष्ण हो जाता है, शिर में पीडा तीव्र होती है, निद्रा कई२ रात्रि तक नहीं आती इत्यादि स्थूल रूप में उन्माद रोग के परिणाम होते हैं।

चिकित्सा

यह रोग कष्ट साध्य है कई वार असाध्य अवस्था को भी प्राप्त हो जाता है इस की चिकित्सा सुयोग्य विद्वान अनुभवी वैद्य ही कर सकता है इस रोग के भयानक प्रकारों को देख कर और धीरता व वीरता से चिकित्सा करना प्रत्येक वैद्य का काम नहीं है क्यों कि रोगी कई वार गालियं देते हैं मुख पर थूक देते हैं, नाड़ी देखने के समय वैद्य के हाथको ऐसे जोरसे पकड लेतेहैं किउसका छुड़ाना साधारण पुरुष का काम नहीं है, हमने कई बार मुख पर चपाटिकायें खाई हैं इस लिये वैद्य महोदय गण हमारे बहुत दीर्घ काल के अनुभूत चिकित्सा प्रकार को अवलम्बन करके धीरता से काम लेंना कि भली प्रकार से सफलता प्राप्त हो।

प्रिय पाठक वर्ग !

हम आपको निष्कपटता से अपने उस चिकित्सा प्रकार को बताना चाहते हैं जिसके हस्तगत होने से आपअवश्य ही सौ में से नवे रोगियों को निरोग्यता प्राप्त करवा कर यश के भागी होंगे, और उन डाक्टर महाशयों के सन्मुख मान पूर्वक गौर्वता से उच्च ग्रीवा कर सकेंगे जो आयुर्वेदिक चिकित्सा को घृणा की दृष्टि से देखते हुए बहुधा घृणासे कहा करतेहैं वैद्य लोग अशिक्षित(अनट्रेन्ड Untramed) होते हैं व इनकी कोई योग्यता (क्वालीफिकेशन Qualification) नहीं होती इस में सन्देह नहीं सर्व साधारण अशिक्षित वैद्यो के विषय में तो इनका कहना कुछ ठीक है परन्तु प्रत्येक सुयोग्य वैद्य के विषय में ऐसी सम्मति बनाना अनुचित है, हमारी अनुभूत चिकित्सा के सहारे जब जिन्हें उनके मुकाबले पर सफलता प्राप्त होगी उनके गौरव व योग्यता को उन्हें अवश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा।

उन्मादेषु च सर्वेषु कुर्याच्चित्तप्रसादनम् ।
मृदु पूर्वा मदुष्येवं क्रियां विद्वान प्रयोजयेत् ॥
(सुश्रुत)

सब प्रकार के उन्मादों (हिस्टेरिया Hystérya) में रोगी को प्रसन्न करने की चिकित्सा करनी चाहिये, मद (जिसमें सर्वथा बेहोशी न हो) में विद्वान वैद्य ऐसे उत्तम प्रकार से हलकी चिकित्सा करें जिससे रोगी सहज से ही शीघ्र तर निरोग हो जाय ।

महर्षि धन्वन्तरि जी ने "प्रसादनम्—कुर्यात्" पद कह कर बताया है कि उन २ बातों को विशेष कर किया जाय जिनसे उन्माद रोगी प्रसन्न रहे, भय, शोक व मोह आदि का प्रभाव उस पर कभी न डाला जाय, अच्छा खाना पीना—खुले वायु व धूप वाले मकान में रखना सदा हंसाने उत्साह बढ़ाने वाली बात चीत उससे की जाय उत्तम २ सुन्दर भजन सुनावे जिससे वह समझे मुझे कोई रोग नहीं, नित्य सैर करवायें उत्तम २ स्वच्छ बहुस्वाद भोजन दें देशाटन करवायें शरीर पर घृत का या खश २ के तेल की मालिश नित्य करवाई जाय शिर को बल देने वाली चीजें अधिक खाने को दें जैसे बादाम, पिस्ता, चार मगज धनियां, [illegible] आदि, शिर दही से नित्य धुलाया कर [illegible] रोगन बादाम रोगन खशखास रोगन, मिला कर मालिश किया करे, रात्रि को बहुत काल तक जागना नहीं चाहिये सहज २ से जब [illegible] सके सैर करवाया करें शीतल काल में [illegible] रहने का कमरा बहुधा गरम रखना. [illegible] ([illegible]) की बात चीत इसके पास न हुआ करे ऐसे ही उपन्यास कदापि न पढ़ने दिये जावें ।

चोरैर्नरेन्द्र पुरुषैररि भिस्तथान्यै
र्वित्रासितस्य धन बांधव संक्षयाद्वा ।
गाढं क्षते मनसि च प्रियया रिरंसो
जायते चोत्कट तरो मनसो विकारः
(सुश्रुत)

चोरों, राज पुरुषों तथा शत्रुओं वा और प्रकार के लोगों ने जिसको (स्त्री हो या पुरुष) बहुत त्रास दिया हो अथवा जिस का धन, माता, पिता स्त्री पति पुत्र व अन्य बांधवादि को नाश होने से मन को अत्यन्त ही क्षोभ प्राप्त हुआ हो, प्यारी सहवास के लिये जिस के चित्त में बहुत ही भारी शोक की ठस लगी हो इन को प्रेम, चतुराई व डर आदि से समझा कर इन उपरोक्त कारणों से छुडाने का यत्न करना जिस २ कारण से उन्माद रोग की प्राप्ति हुई हो उस २ कारण का परिहार विद्वान वैद्य या बांधव गण निज बुद्धिमता से करें ।

इष्ट द्रव्य विनाशात् तुमनो यस्योपहन्यते ।
तस्य तत्सदृश प्राप्ति शान्त्या श्वासैः शमनं नयेत्
(चरक)

प्रिय व हितकर पदार्थ के विनाश होने से जिसकी मानसिक अवस्था बिगड़ गई हो अर्थात् जिसकी बुद्धि ठिकाने न रही हो उसको वैसी ही वस्तु देकर अथवा शांति पहुंचाने वाले उत्तम २ वाक्यों को सुना कर जिससे उसके चित्त में से वह शोक दूर हो जाय और वह शांति को प्राप्त हो ऐसा यत्न करना चाहिये।

यदि किसी रोगी का मूत्र बंद होजायतो ऐसा यत्न करें, जिससे मूत्र खुलजाय,ऐसे उपाय जिनके करने से बिना औषधी सेवन करे ही निरोगता प्राप्त हो, ऐसा यत्न करना चाहिये।

नोट— नियम पूर्वक चिकित्सा द्वारा जब तक दोषो को दूर न किया जाय तब तक रोग पूर्ण रूप में निर्मूल नहीं होता। उपरोक्त उपायों से कुछ २ शांति कुछ काल तक तो अवश्य हो जाया करती है इस लिए आवश्यकता के अनुसार इन उपचारो का करना वैद्य की सम्मति पर है

मंद संज्ञा रोग मे मूर्छा अवस्था

जब मूर्छा अवस्था हो और हाथ पांव मारने लगे उस समय किसी प्रकार का भय या चिंता नहीं करनी चाहिये। बहुत जल्दी रुग्ना को उठाकर किसी वायु वाले स्वच्छ कमरेमें डालदें उठातेसमय इसको किसी प्रकार का अघात नहीं पहुंचना चाहिये, इसके गले की कमीज के बटन खोलदें, अगर और कोई बन्धन गले में हो तो उसे ढीला करदें, अधिक प्रेम करने वालों या त्रास को प्रगट करने वालों को पास नहीं आने देना चाहिये इसके सिर को कुछ ऊंचा करदें, मुखपर शीतल जल का प्रसेक करें अथवा ऊंचे स्थान से जल की धार बांध कर इस प्रकार से डाले जिससे मुख व नासिका में जल भरजाय जिससे घबड़ाकर मुख खोलदे और उठकर बैठजाय, मुख में नमक डालने से भी मूर्छा छूट जाती है अथवा नीचे लिखा योग तैयार करवाकर सुंघावे।

१ नौसादर ५ तोला
२ श्वेत चन्दन का चूर्ण १ तोला
३ धनियां शुष्क १ तोला
४ मुश्क काफूर ३ माशा
५ अंगूरी शिरका (बहुत तीव्र) २० तोला

सब वस्तुओं को कूटकर शिरके में मिला दे और डाट वाली शीशी में रक्खें मूर्छा अवस्था में शीशी को खूब हिलाकर नाकके पास लेजाकर डाट खोलदें ताकि नासिका द्वारा इसकी गंध भीतर भली प्रकार से जावे इससे बहुधा मूर्छा छूटजाती है और चैतन्यता आजाती है। कई बार इससे कुछ भी नही होता तब तीक्ष्ण नस्य देनी पड़ती है। मूर्छा अवस्था में कई बार पिण्डलियों पर बिलायती राई (मस्टर Muster) ५ तोला सिगरफ रूमी हिंगुल १ तोला, दोनों तीक्ष्ण सिरका में घोटकर लेप करना, कई बार राई को जल में डालकर और अग्नि पर जोर देकर स्वेदन करना पड़ता है, अगर दांत बहुत जोर से मिच जायें जो नासिका के बंद करने पर भी न खुलें तो एक कुक्कुट अण्ड का पीत द्रव्य (मुरगी के अण्डा की जरदी) और घृत एक तोला सैन्धा नमक तीन माशा मिलाकर मुख के हनु विभाग पर मलना इस से दन्त बंद खुल जायगा और पुनः २ दंत का मिचना बंद हो जायगा। कई बार वस्ति भी करनी पड़ती है (वस्ती का प्रकार आगे लिखेंगे) रुग्ना को अकेली डालदें और उसके पास खड़े होकर कोई हितकर शब्दो का उच्चारण न करे, कई अवसरों पर बहुत शीतल जल (बरफ) को योनि में वस्ति करनी या बरफ की पेडु पर टकोड़ करनी पडती है इससे मूर्छा छूट जातीहै। हींग का सुंघाना या हींग युक्त किसी योग की नस्य अथवा लेपन मस्तक पर करना, चरकस्थ नीचे लिखित योगों का आवश्यकता के अनुसार सेवन भी इस अवस्था में हितकर है:—

अञ्जनोत्सादना लेपान्नावनादीश्चयेजयेत्
शिरीषो मधुकं हिंगु लशुनं तगरं वचाम्
(चरक)

बीज शिरस, मुलेठी, हींग, लहसुन, तगर और बच, कुट इनको बकरी के मूत्र में घिसकर नस्वार देनी व अञ्जन करना या लेप करना इससे मूर्छा छूट जाती है:—

मूर्छा के अन्तर में नीचे लिखा घृत देते रहने से दूसरी बार मूर्छा का आवेश होने का भय बहुत ही थोड़ा रहता है:—

हिंगुसौवर्चला व्योषैर्द्विपलांशैर्घृताढकम्
चतुर्गुणे गवां मूत्रे सिद्ध मुन्माद नाशनम्
(चरक)

हींग, संचर नोन, त्रिकुटा, अलग अलग दो २ पल और घृत एक आढ़क और चार गुणां गो मूत्र डालकर सिद्ध किया हुआ घृत सेवन करने से उन्माद दूर होता है।

कई बार उदर को जोर से दबाया जाय या मैनफलादि से वमन करवाया जाय तो मूर्छा छूट जाती है, ऐसी ही और कई प्रकार के भय या त्रास आदि से भी मूर्छा छूट जाती है। इस रोग से ऐसी बेसुधता नहीं होती जो कोई खबर न रहे इसलिये भय, त्रास, आदि की खबर रहने से झट होश में आजाती है।

विप्रकृष्ट लक्षणोंके होनेपर चिकित्सा

विप्रकृष्ट लक्षणों में प्रधानतया बहुतसी रुग्णा स्त्रियों में ये पाये जाते हैं। योनि व गर्भाशय के विकार (२) तीव्र शिर पीड़ा व पुनः २ मूर्छा का होना (३) उदर में पीड़ा, गुरुता व गुल्म का नीचे से उठकर ऊपर की ओर जाना और गले को रोक देना तथा मूर्छित होजाना (४) हृदय की निर्बलता व कम्प का जोर से होना,

इन लक्षणों के उपस्थित होने पर हम बहुधा चिकित्सा इस क्रम से किया करते हैं अगर मूर्छा की तीव्रता हो और अंतर का अवकाश प्राप्त न हो तो पहले मूर्छा आदि की चिकित्सा प्रथम करते हैं अन्यथा यानिज रोगों की चिकित्सा प्रथम कर दिया करते हैं, यह हमारा सैंकड़ो बार का अनुभव है कि इन दोनों प्रकारो को अवश्य ही करना पड़ता है रोगी की अवस्था के अनुसार जो प्रथम अनुकूल हो उसे अवश्य ही प्रथम किया जाता है इसलिये उपरोक्त चार प्रकारों का जैसे लिखा है उसी क्रम से यहां इनकी चिकित्सा का वर्णन करते हैं आप लोग जैसे चाहें हमारी अनुभूत चिकित्सा को रोगी की अवस्था के अनुसार करके उसे निरोग्यता लाभ करवायें;

(१) योनि व गर्भाशय के विकार—

ये कई प्रकार के होते हैं जिनसे स्त्रियों को हिस्टेरिया रोग होजाता है परन्तु विशेषकर ऋतुरोध या ऋतुस्राव की अधिकता, कारण होते हैं कई २ केसों में योनिदाह योनिव्रण या योनि कन्द भी हिस्टेरिया को उत्पन्न करते हैं, ऋतुरोध के कई कारण होते हैं। यदि इनको विस्तार से वर्णन करें तो लेख बहुत बड़ा हो जायगा, स्थूल रूप में वात की वृद्धि या कफादिक दोषों की अधिकता से ऋतुरोध होता है जो ऋतुकाल में खुले स्थान पर बहुत से जल में स्नान करने (विशेष कर प्रथम ऋतु में) से अथवा ऋतु काल शीतता प्रधान वस्तुओं के अधिक सेवन से ये दोष होते हैं:—

गर्भाशय में वात के दूषित होजाने से शोथ होजाती है, मुख बन्द होजाता है, जब वात दोष बहुत अधिकता से होजाय तो गर्भाशय सूख जाता है, यह शोथ जब गर्भाशय के पृष्ठ भाग में अधिक होजाय तो गुदा वाली रैकटम Ractum

में भी साथ ही हो जाती है, इससे ऋतुकाल में बहुत तीव्र पीडा होती है शौच के समय गुदावली में भी पीडा होती है, यह नीचे को ओर ढिलमी सी लगती है जिससे हर समय शौचाला या पाखाना आने की हाजित प्रतीत होती रहती है, और पेडु को अगर ऊपर से दबावें तो भी, पीडा अनुभव करती है जिससे बहुत ही व्याकुलता रहने के कारण निर्बलता होजाती है और वायु की अधिकता से अन्तडियो में वेग बढ़ जाने से गुल्म होजाता है या इससे अन्तड़ियो में वुखारात धूम की प्रकार बढ़कर उठते रहते हैं गर्भाशय के मुख का बन्द होजाना या शुष्क होजाना अथवा गर्भाशय की ग्रीवा का इधर उधर टलजाना इत्यादि दोषों को दाया के द्वारा निश्चय कर लेना चाहिये

(नोट) हमारे पास भी बहुत योग्य अनुभवी दाया हैं। जिनसे हम रोग का निश्चय प्रथम कर लिया करते हैं ऐसे ही आप भी करलिया करें तो बहुत सफलता प्राप्त होगी।

हम इन दोषों की निवृत्ति के लिये दोनों प्रकार की चिकित्सा करते हैं एक तो दाया द्वारा योनि में औषधियां रखवा कर दूसरे क्वाथ आदि देकर, हम जिन योगों को प्रधानतयावर्ती करते हैं वे एक २ दो २ नीचे लिखते हैं आप हमारी विधि से तय्यार करवाकर काममें लावें, हमारे बहुत से योग निज रचित हैं और बहुत से शास्त्रीय हैं हमारे बहुत से वैद्य महोदय गण बहुधा शास्त्रीय योगों के अतिरिक्त योगों को काम में लाना अपनी रचना के विरुद्ध समझा करते हैं जो उनकी अधिकता पाई जाती है इसलिए इस हठ को छोड़ हमारे स्वरचित अथवा प्राप्त सिद्ध योगों को अवश्य ही वर्तकर यश के भागी बनें।

यह हमारा कई समय का अनुभव है कि जब तक आभ्यन्तरिक चिकित्सा द्वारा गर्भाशय को शुद्ध न करलें और उन दोषों को न निकलादें जिनके कारण शिराओं के मुख बन्द होकर ऋतु रोध होजाना है तब तक खाने या पीने की औषधियां विशेष लाभ नहीं करतीं इसलिये हम प्रथम अन्दर रखवाने वाले कुछ योग लिखते हैं;

(पिचु या फाये)

(क) वातिक शोथ में—

कामाचो (मकोय) का रस ५ तो० मधु१ तो० कूजा मिश्री (खाण्डको पकाकर मट्टी के प्यालों में डालकर जो बनाई जाती है) १ तो० साफ की हुई पुरानी रुई २ तोला इन सब पदार्थों को मिला पिचुसा बनाकर योनिमें रखना कई बार इसमें ग्लैसरीन सादी १ तो० मिला दिया करते हैं यदि शोथ अधिक हो तो इस सब मिले हुए पदार्थों के तीन भाग करके एक भाग गर्भाशय के दाएं और एक बांयें तथा एक भाग गर्भाशय की ग्रीवा के सन्मुख रखना ऐसे ही सात या चोदह दिन तक रखना इससे सब शोथ दूर हो जायगी।

(ख) अगर योनि में और गुदा में वायु की पुनः२ उत्पत्ति होती हो और इससे शमन आते हों तो एक प्याज व ५ तोला घृत में जलाना जब सब जल जाय तब घृत को छान लेना इसमें साफ की हुई पुरानी रुई मिलाकर चार पिचु (फाये) बनावे तीन तो योनि में गर्भाशय की गरदन के दांए, बांये व सन्मुख रखने और एक गुदा की ओर रखना ऐसेही सात दिन तक करना औषधी रखवा कर तीन घन्टा तक लेटे रहना इन दोनों योगो के सेवनसे वातिक शब्द युक्त शोथ दूर होजाती है।

(ग) पैत्तिक शोथ हरि:—

कूंजा की मिश्री १तो०सौंफ१ तो० वनफशा १ तोला, ग्लैसरीन १ तो० साफ पुरानी रुई १ या २ तो० इन को मिलाकर चाहे एक फोहा सा बना कर योनि में रखें या तीन पिचु फाये बनाकर उपरोक्त प्रकार से योनि के अंदर रखवायें ऐसा ही सात या चौदा रोज़ तक करें औषधी रखवाकर कुछ काल लेटी रहे इससे पैत्तिक शोथ दूर होजाता है।

(घ) सर्व शोथ हरि:—

तबाशीर, छोटी इलायची, सौवर्चलवण शतपुष्पा, यवक्षार, शोराकलमी, इन्द्रयव, द्राक्षा सब एक २ तोला, वायविडङ्ग, १० तोला मिश्री कूजा २० तोला, सबको बारीक पीसकर मधु व साफ की हुई पुरानी रुई इतने परिमाण में मिलालें जिससे भली प्रकार से पिचु बनजाय (आधी-अङ्गुल लम्बी छुहाड़े की आकृति की तथा वैसी ही मोटी वर्त्तियें) बनावे ऋतु काल से ७ दिन पीछे या १५ दिन पीछे रुग्ना की योनि में गर्भाशय की ग्रीवा के दायें बायें व सन्मुख एक २ ग्लैसरीन या गरम किये हुए घृत में डुबोकर रखनी, अगर गुदा की ओर भी शोथ हो तो एक पीछे भी रखवानी। जिस स्त्री की योनि में स्थान थोड़ा हो या छोटी आयु की हो तो इन वर्त्तियों को न दबाकर चपटा करलेना इनके रखवानेके पीछे स्त्री दो तीन घन्टे तक लेटी रहे इसके पीछे उठकर ऊपर नीचे बहुत ही सहज २ से जावे आवे जब तक यह औषधि सेवन कीजाय बोझा नहीं उठाना तांगे आदि में नहीं सवार होना, रेलवे का सफ़र नहीं करना, पुरुष सहवास से बची रहना, दूध, दही, चावल, आलू, अरद आदि वातक ठण्डी चीज़ों का सेवन नहीं करना, बैंगन, करेला मेंथी, पालक मूंग, मोठकी दाल, चने इनकीभाजी तरकारी बनवाकर घृत व स्याह जीरा व स्याह मिरच डाल कर रोटी के साथ खावे घृत अधिक खाना सात रोज तक इस औषधी का सेवन करवाना और यह पथ्य भी सात रोज तक रखना इसके पीछे नीचे का योग अवश्य ही सात रोज तक सेवन करवाया जाता है अन्यथा गर्भाशय ढिलकर बाहर निकल आता है।

इस औषधी के अन्दर रखवाने से गर्भाशय शुद्ध होजाता है। भीतर से गन्दा जल कच्चा रुधिर व गाढ़ा लैहसदार बहुतसा द्रवपदार्थ निकलता है कई बार इस जले द्रव से योनि के ओष्ठ फूल जाते हैं छोटी २ फुंसियें निकल आती हैं अगर औषधि सेवन के समय ओष्ठों पर घृत या ग्लैसरीन लगाई जाय तो यहदोष नहीं होता स्त्री योनि के मुख पर कपड़े की गद्दी साफ़ व खुश्क हर समय रखे।

(ङ) योनिरोग हरि:—

प्रथम (घ) की औषधि सेवन करवाने से गर्भाशय बहुत ही नरम होजाता है, इस औषधि के भीतर रखवाने से अन्दर खुश्क होजाता है और नरमी दूर होजातीहै, माजु, तज, फूल सुपारी, सुपारी नरम, दृढ़ सुपारी, इलायची श्वेत, बड़ी इलायची, मांई, कमरकस, कचूर, हरड़, नन्ही हरड़, फिटकिरी फूल धावा, गुलनार, नस्पाल, फूलगुलाब, सब तुल्य लेकर कूट कपड़ छान कर, मल २ के बारीक सफेद तीन छोटे २ टुकड़ों में छै २ माशे औषधि को ढीली २ धागे से बांध कर तीन पोटलियां बनाकर (घ) की प्रकार दाया से अन्दर रखवानी ७ दिन तक अगर (घ) की औषधि गुदाकी ओर-

रखवाई हो तो यह औषधि ३ माशा, मक्खन ६ माशे और साफ पुरानी रुई इतनी जिसका छुहारे के तुल्य एक पिचु (फाया) बनजाय बनाकर गुदा में रखवाना यह पिचु ४ दिन से अधिक नहीं रखवाना है, इन दिनों में रुग्ना सब कुछ खा, पी सकती है और घर से बाहर जाना व मकान के ऊपर नीचे जाने आने में कोई रुकावट नहीं है, इन दोनों औषधियों के १४ दिन सेवन करवाने से स्त्री के कई योनि रोग व गर्भाशय के रोग दूर हो जाते हैं जिनका विशेष वर्णन् फिर कभी लिखेंगे। प्रसंगानुसार इसका अधिकतर लाभ यह होगा कि योनि और व गर्भाशय की सब शोथ दूर हो जायगी जो हिस्टेरिया का कारण है, वैद्य महोदय गण! इन औषधियों के सेवन करवाने में आलस्य न करें क्योंकि बहुधा वैद्य महाशय ऐसी २ औषधियों के तय्यार करवाने में संकोच करते हैं जो ठीक नहीं है हम ३० वर्ष से इनको सेवन करवा रहे हैं।

(च) नल पीड़ा हरः—

कई स्त्रियें कई कारणों से जब यह १४ दिन की चिकित्सा न करवा सकें तो नीचे लिखे तीन योग सेवन करवाये जाने से पीड़ा दूर हो जायगी

(१) कुचला, सोंठ, कृष्णजीरी तीनों तुल्य लेकर कूट गोमूत्र में पकाकर पेडु पर लेप करें। कुछ देरी के पीछे पुराणी रुई से सेंकना आध घण्टा तक।

(२) अहिफेन आधी रत्ती, कपूर १ रत्ती इसकी एक मात्रा बनाकर तीन २ घण्टा पीछे चार मात्रायें नीचे लिखे क्वाथ से दें।

(३) बनफशा १॥ तोला, सौंफ ९ माशा वायविडङ्ग ९ माशा, द्राक्षा (मुनक्का) ९ माशा, फूल-गुलाब ६ माशा इनको अर्धकूट कर जल ४० तोला में क्वाथ करना जब चतुर्थभाग जल रहजाय नीचे उतार मसल व छानकर उपरोक्त गोली के साथ देना ये तीनों योग तीन से सात दिन तक सेवन करवाने से नल पीड़ा जाती रहती है।

प्रदर रोग भी हिस्टेरिया का भारी कारण है इसलिये इसके भी दो तीन सिद्ध योग दिये जाते हैं।

(छ) प्रदर रोग हरः—

प्रदरारि रसः

रसं गन्धं सीसं मृतमितिसमंस्तैस्तुरसजम्
समानं सर्वैस्यात्तुलितमपि लोध्रं वृष रसैः
दिनं पिष्टं नाम्ना प्रदर रिपुरेषोऽपहरति
द्विवल्ल क्षौद्रेण प्रदर मतिदुःखसाध्यमपि च ॥
(रहस्य)

पारद, गंधक, मृत सीसक, सब तुल्य सबके तुल्य रसाञ्जन (रसौत) और इन सबके तुल्य लोध सबको विधि पूर्वक तय्यार कर बांसे के रस में एक दिन खरल करले (हम अडूसा के रस में ८ दिन खरल करवाते हैं) यह प्रदर रिपु नाम वाला रस २ रत्ति मात्रा में मधु के साथ देने से दुःखसाध्य प्रदर को भी दूर करता है।

इस रस को हम नीचे लिखे क्वाथ से रोग की अवस्था के अनुसार आठ से चालीस रोज तक दिया करते हैं। रुग्ना को चने, मूंग, शलगम, मूली, गाजर आदि की भाजी तरकारी से रोटी देते हैं। लाल मरिच तैल व खटाई अथवा ऊष्णता प्रधान वस्तुएं नहीं खाने देनी, चाय, पान व

तमाकू भी सेवन नहीं करते, दर्चीनी या बौस्वे के एक दो केले कच्ची मिश्री के साथ खिलाना—सैर या घरका काम खूब करवाना, चरखा कातना इत्यादि

दार्वी रसाञ्जनं मुस्तंभल्लातः श्रीफलं वृषः
कैरातश्च पिबेदेषां क्वाथं शीतं समाक्षिकम्
जयेद् सशूलं प्रदरं पीत श्वेतासितारुणम्

(रहस्य)

हल्दी, रसौत, नागरमोथा, भिलावा, बेलगिरि, चिरायता, अडूसा (सब एक २ माशा) ये सब तुल्य इनका क्वाथ शीत करके पीना इससे पीड़ा सहित पीत—श्वेत व कृष्ण वर्ण का प्रदर दूर होता है. दिन में दो या तीन समय चार २ अथवा पीछे देना ।

अन्दर रखने की पोटली

माजु (-सत माजु अर्थात् टैनिक एसिड) ५ तोला । कपूर ५ तोला कच्छप पृष्ठास्थि की भस्म ५ तोला। मुश्क काफूर १ तोला । इन सबको कपड़े में छानकर मात्रा ३ माशा को मक्खन १ तोला में मिलाकर योनि में लगाना या तीन २ मासा की ढीली २ पोटलियां तीन बनाकर अन्दर रखना पांच से सात दिन तक अगर बहुत खुश्की (रूक्ष) होजाय तो इन पोटलियों को मक्खन में तर करके रखना इससे योनिदाह व सर्व प्रकार के प्रदर दूर होते हैं ।

(नोट) गर्भाशय के दूषित होने या योनि रोगों के कारण जो प्रधानतया होते हैं उनकी बहुत सामान्य रूप में चिकित्सा लिखी गई है । इनके अतिरिक्त और जो भी ऐसे २ कारण हों उन्हें दूर करना वैद्य का मुख्य कार्य्य है, हम विस्तार के भय से छोड़ते हैं ।

(२) तीव्र शिर पीड़ा व पुनः २ मूर्च्छा का होना

इन दोनों प्रकार के प्रत्यक्ष लक्षणों में मस्तिष्क विशेष कर रोग ग्रस्त होता है (दिमाग भेजा Brain) को दोषों से शुद्ध करना अत्यावश्यक है इसके शुद्ध होने से ही हिस्टेरिया, अपस्मार, सन्यास व मूर्च्छादि दूर होते हैं. हम नीचे कुछ योग ऐसे लिखते हैं, जो भिन्न २ प्रकार से सेवन करवाये जाने पर मस्तिष्क को शुद्ध करते हैं अर्थात् उन्माद (हिस्टेरिया Hysteria) अवश्य ही इनसे दूर होता है:—

हम यह चिकित्सा विशेष कर छे प्रकार से किया करते हैं जैसे (क) रस (ख) क्वाथ (ग) नस्य (घ) अञ्जन (ङ) विरेचन (च) बस्ति पांच प्रकार तो अवश्य ही करते हैं अगर विरेचन क्रिया से लाभ न हो अथवा भली प्रकार से दोषों की निवृति न हो तो बस्ति कर्म्म करवाया करते हैं, हम इन सब प्रकार की क्रियाओं के करने में जो २ योग जैसे २ सेवन करवाते हैं उनमें से प्रधान २ योग नीचे लिखते हैं आप लोग भी वैसे ही करके जगत् का उपकार कीजिये:—

(क) हिस्टेरिया नाशक रस ।

(१) सूतं गंध शिला तुल्यं स्वर्ण बीजं विचूर्णयेत्
भावयेद् उग्र गंधायाः क्वाथेन मुनिशः पृथक्
ब्राह्मीरेशन सप्तैव भावयित्वा विचूर्णयेत्
रसः संजायते नूनमुन्माद गज केशरी
अस्य भाषः सर्सापिष्को लीढोहंतिहठादुग्दम्
उन्मादाख्यमपस्मारं भूतोन्मादमपिज्वरम् ।

(रहस्य)

पारद, गंधक, मनसिल व धतूर बीज सब तुल्य लेकर चूर्ण बनाना पुनः बच और ब्राह्मी के

रस की अलग २ सात भावनायें विद्वान देकर चूर्ण करे तो उन्मादगज केशरी रस तय्यार होता है इसकी एक माशा की मात्रा घृत (१ तोला) में मिलाकर चाटनी जिससे रोग दूर होता है उन्माद अपस्मार और भूतोन्माद ज्वर।

(नोट) यह रस अथवा और जो रस नीचे लिखे जायेंगे इनके सेवन काल में जिन २ क्वाथों का सेवन करवाना है ये सब इकट्ठे अपने स्थान पर लिखेंगे।

(२) हिंगुलश्च विषंटंकं जाति कोष फलं तथा
मरिचं पिप्पली चैव कस्तूरीच समांशका

शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध विष, सुहागा, जायफल, जावित्री, मरिच, पीपल, व कस्तूरी सबको तुल्य ब्राह्मी के स्वरस या क्वाथ में तीन भावनाएं देकर मात्रा १ रत्ती प्रातः सायं, ब्राह्मी स्वरस १ तोला मरिच ५ दाना में मिलाकर देनी या ब्राह्मी ६ माशा मरिच ७ दाने कूट जल से घोटकर रससे देनी, घृत, मक्खन दूध खाने को बहुत देना।

(३) मृतं लौहं मृतं वंगं मृतकंमृतमभ्रकम्
शुद्ध सूतश्च गंधश्च माक्षिकं हिङ्गुलं विषम्
जाति फलं लवंगं च त्वगेला नागकेशरम्
उन्मत्तस्य वीजस्य मरिचं हारिन नेत्रकम्
सर्वद्रव्यं क्षिपत् खल्ले लोह दण्डे नमर्दयेत्
शक्रासनस्य स्वरसै भावयेत् एकाविंशतिम्
गुञ्जा मात्रा प्रदातव्यार्द्र कस्प रसैयुना
तदर्द्धंबालक वृद्ध पुपथ्यं देयं यथोचितम्
पञ्च कासान् क्षयं श्वासंराजयक्ष्माणमेवच
सन्निपात कंठरोगमभि न्यासम चेतनम्
उन्मादे श्वरो हंति काल नाथे न भाषितः
(रहस्य)

लोहभस्म, वंगभस्म, ताम्रभस्म, अभ्रक भस्मशुद्ध पारद व गंधक, शुद्ध स्वर्ण माक्षिक, शिंगरफ, विष जायफल, लोंग, दालचीनी, व नागकेशर, धतूर बीज, मरिच, नख इन सबको तुल्य, लेकर लोह खरल में लोह दण्ड से भांग के स्वरस से २१ बार भावनायें देना एक रत्ती की मात्रा अद्रक के रस से देनी, और बालक व वृद्धों को आधी रत्ती मात्रा देनी पथ्य जैसे अनुकूल हो वैसा देना इस के सेवन से पांच प्रकार की खांसी, क्षय रोग, श्वास, राजयक्ष्मा सन्निपात, कंठ रोग, अभिन्यास (मूर्च्छा युक्त घोर ज्वर) अचेतनता इत्यादि रोगों को यह उन्मादेश्वर रस दूर करता है जो कालनाथ का कहा हुआ है।

(४) शुद्धं सूतं विषं गन्धं दरदं टंकनं शिवा
त्र्यूषणं सैन्धवं जाति फल किकर. हाटकम्
पारसीक यवानीच जीरकं चाजमोदकम्
भृंग्याश्वगन्धा श्रीपुष्पं समभागं विचूर्णयेत्
भावना तृतयंदद्यात्भृङ्गराज रसेनच
नागवल्ली रसेनैव तथार्द्रक रसैस्त्रिधा
ततःशुष्कं विधातव्यं यथारोगंप्रयोजयेत्
सामं निरामं विज्ञाय दद्यात गुञ्जा चतुष्टयम्
महाबालेऽपतंत्रे च सर्व मात्रेषु शून्यताम्
(रहस्य)

शुद्ध पारद, विष, व गंधक हिंगुल, सुहागा हरड़, त्रिकुटा, सेंधा, जायफल, अकरकरा, स्वर्ण भस्म. खुरासानीअजवायन, कृष्ण जीरा, अजवायण, भारङ्गी, अश्व गन्ध, लवंग, सब तुल्य का चूरण कर जल भंगरा, पान, अदरक, के स्वरस की तीन तीन भावनायें देनी खुश्क करके जैसे रोग के लिये उचित हो सेवन करवायें।

बलाबल को जानकर, चार रत्ती मात्रा देनी इससे घोर अपतन्त्रिक वात रोग और सम्पूर्ण अचेतना करने वाले रोगों का नाश होता है।

(५) चन्द्रोदय मकरध्वज आधी रत्ती, अभ्रकभस्म चौथाई रत्ती यशदभस्म चौथाई रत्ती कस्तूरी १ चावल इन सबकी एक मात्रा बनानी, जटामासी ३ माशा को पावभर जल में क्वाथ कर चौथाई भाग रहनेपर उसके साथ देनी, रोगी की अवस्था के अनुसार दिन में तीन चार समय तीन २ या चार चार घन्टा पीछे ७ से १४ या इससे भी अधिक दिन तक देनी।

(रहस्य)

(६) स्वर्ण भस्म, ताम्र भस्म, रजित भस्म, नागभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, गन्धक रूप्य माक्षिक भस्म मनशिल सब तुल्य लेकर नीबू के रस में ७ दिन खरल कर मात्रा १ रत्ती की वच चूर्ण १ माशा में मिला कर रोग की अवस्था के अनुसार दिनमें एक या दो समय प्रातःसायंकाल ७ से २१ दिन तक देनी, मुरब्बा गाजर वर्क चांदी यथा योग्य देने।

(रहस्य)

(७) कस्तूरी, गन्धक, जायफल, इलायची, लवंग, मनसिल नागकेशर, बहेड़ा, पारद सब तुल्य जल से खरल कर मात्रा २ रत्ती, ७ से १४ दिन तक देनी, उदर वाताधिक्यता में अधिक लाभ कारी है।

(रहस्य)

(८) एक यूनानी योग—

मोती भस्म (अर्क गुलाब में खरल किये हुए) मूंगाभस्म, कहरवा शमई, दरोनज अकरबी, अबरेशम खाम, नरकचूर, सुर्ख बहमन सफेद बहमन, सब छः २ माशा, छरीला, बालछड़ इलायची खुर्द का दाना, धमासा, दारचीनी जुन्दबदस्तर सब तीन ३ माशा, केसर, मस्तगी रूमी, चन्दन, सुर्ख चन्दन, तबाशीर धनियां, छः २ माशा, अम्बर ३ माशा, कस्तूरी १॥ माशा, मिश्री १६ तोला, शहद १६ तोला इनकी विधि पूर्वक मह- जून तय्यार करवा कर चीनी के पात्र में रखनी, खुराक मिकदार ३ माशा, रोज देनी अर्क गाजवां से, यह योग बहुत उत्तम है इन नामों से सब प- दार्थ यूनानी पंसारियों से मिल जाते हैं आप अपने अवलेह की तरह तय्यार करवा कर सेवन कर वायें ॥

(रहस्य)

(९) तीव्र शिर पीड़ा युक्त हिस्टेरिया पर—

पलं सूतं पलं गन्धं पलं लौहं पलं रवेः
गुग्गुलोःपल चत्वारि तदर्द्धं त्रिफलारजः
यष्टिमधुकणाशुंठी गोक्षुरं कृमिनाशनम्
तोलकं दशमूलं च प्रत्येकं परिकल्पयेत्
क्वाथेन दशमूल्याश्च यथास्वं परिभावयेत्
घृतयोगेन कर्त्तव्या माषैकप्रमितावटी ।
दणी दुग्धन वासेव्या मधुनापयसाथवा
वातिकं पैत्तिकं चैवश्लैष्मिकं सान्निपातिकं
शिरोऽर्तिनाशयेत्याशु वज्रं मुक्तं निवासुरम्
शिरो वज्ररसो नाम चन्द्रनाथेनभाषितः ॥

(रसराज)

पारद एक पल, गन्धक १ पल लोहा भस्म १ पल, अभ्रक भस्म १ पल गुगुलु (त्रिफला चूर्ण २ पल) १० तोला मुलेठी, पीपल सोंठ, गोखुरू, वायविडंग, औरदशमूल प्रत्येक एक२तोला इन सब को दशमूल के क्वाथ से भावना देनी और घृत मिला कर एक २ माशा की गोली बनानी घृत व मधु में मिला कर बकरी (अजा) के दुध केसाथ सेवन करना इस से वातिक, पैतिक व कफिक और सन्निपातिक शिर पीड़ा को दूर करता है इस को हम बहुधा नीचे लिखे क्वाथ के साथ दिया करते हैं :—

ताम्रंदुरा लभा : क्वाथैः पीनंतुघृत संयुतम्
निवारयेद् भ्रमिः शीघ्रंतां यथाशंभु भाषितम् ॥

(रहस्य)

रक्त चन्दन व धमासा (तीन २ से छै २ माशे)तककन का क्वाथ घृत मिला कर देने सेभ्रम दूर होता है ; जल पाव भर में दोनों वस्तुओं को अधकूट कर के क्वाथ करना जब चौथाई भाग जल रह जाय छान कर घृत १ तोला मिलाकर पुनः एक बार अग्नि पर जोश देना पीछे इसके साथ उपरोक्त गोली देनी तीन २ घंटा पीछे या चार २ घन्टा पीछे तीन चार वार दिन में देनी उपरोक्त गोली ग्रीष्म ऋतु में तो छागी दूध से बहुधा देते हैं परन्तु शीत ऋतु में तो इस क्वाथ से लाभ पहुंचता है क्वाथ हरबार ताजा बनाया जाता है, कई स्त्रियें गोली को मधु व घृत में मिला कर नहीं चाहती हैं तो उन्हें छागी दूध यागाय के दुध अथवा इस क्वाथ से दिया करते हैं ॥

---

१० रक्त पैत्तिक शिर पीड़ा हरलेप

आमला, सिंघाड़ा-हाऊ बेर-कमल फूल-पद्माक-चन्दन-दूर्वा खस, बाल छड़ ,नीम इन सब को बारीक कर जल से घोट कर माथे पर लेप करना ७ से १४ दिन तक, (रहस्य)

कफिक शिर पीड़ा हरः-

निर्गुण्डी, तगर, पाषाण भेद, नागकेशर, इलायची, अगर देवदारु, बाल छड़, राई, एरण्डी मूल कूटकर अङ्गूरी सिरका में घोट कर माथे पर ७ से १४ दिन तक लेप करना ॥ (रहस्य)

क्वाथ

ब्राह्मीरसास्यात सवचःसकुष्ठः
सशंखपुष्पः ससुवर्णचूर्णः ।
उन्मादादिना मुनमद मानसानाम्
पस्मृतौ भूतहताकनांच ॥

(रहस्य)

ब्राह्मी का रस (याबुषिक ब्राह्मी) बच , मीठी कूठ (कुष्ठ) शङ्खावली व रक्त चन्दन सब तीन २ माशा जल २० तोला, चौथे भाग रहने पर दिन में दो समय वा अधिक देना उन्मादअपस्मार व भूतोन्माद सब दूर होते हैं ।

(नोट) उपरोक्त रसों में से कोई एक रस जो आप लोग रुग्णाके अनुकूल समझें इस क्वाथ के साथ दिन में दो तीन बार चार २ या छे २घन्टा पीछे दें, इससे अवश्य ही लाभ होता है, हम बहुधा इसी क्वाथ का सेवन करवाया करते है जो बहुत ही सिद्धि निश्चित हुआ है ।

ब्राह्मी कूष्मां डीफल षडग्रन्था,
शंखपुष्पिकार स्वरसाः ।
उन्माद हरा दृष्टाः पृथगेते,
कुष्ठ मधु मिश्राः ॥ (रहस्य)

ब्राह्मी, पेठा, वच, ष्पीशंखपु इनके अलग २ रस में (या क्वाथ में) कुष्ट व शहद मिला कर देने से उन्माद का नाश होता है इन सबको या एक २ का रस लेना रस १ तोला हो मधु ६ माशा व कुष्ठ ३ माशा मिला कर स्वरस देना हो तो २ तोला लेना कुष्ठ ३ माशा शहद १ तोला मिलाकर देना दिन में दो या तीन समय इसके साथ एक २ माशा उपरोक्त रसों में से देनी ७ से१४दिन तक।

(नोट)क्वाथ के ये दोनों योग सिद्ध हैं इनके सेवन करवाने से विक्षिप्तता तक दूर होजाती है, मात्रा न्यूनाधिक आप स्वयं कर सकते हैं।

नस्य

(१) नकछिकनी १४ तोला, फूल गुलाब २ तोला, मुश्ककाफूर १ तोला इनको कपड़े में छानकर नस्य देनी उन्मादके वेग कालमें औरसूर्य्यावर्त व अर्ध शिरसि में सूर्य्य से पहले देनी इससे नासिका द्वारा जल बहुत गिरेगा दिनमें२ तीन समय देनी जब तक रोग की पूर्ण रूप से निवृत्तिनहो नित्य देना। (रहस्य)

(२) जूने का चमरा जला हुआ १ तोला, कस्तूरी १ रत्ती, मरिच १ माशा, केसर १ माशा इनको अर्क दूध में खरल कर आधी रत्ती की नस्य देनी,इससे मूर्च्छा, उन्माद, अपस्मार दूर होते हैं, दिन में एक दो बार देनी ७ से १४ दिन तक इससे अधिक काल भी। (रहस्य)

(३) समुद्रफल व नकछिकनी दोनों तुल्य कूट कपड़ा में छानकर नस्य देनी दिन में दो बार १४ दिन तक। (रहस्य)

(४) पीपल वच या मनसिल और चन्दन अलग अलग अथवा मिलाकर कपड़छान कर ७ से १४ या २१ दिन तक देनी। (रह०)

नोट—ये चारो प्रकार की नस्यें सिद्ध हैं इनमें से कोई एक प्रथम सेवन करवायें हम इनको वेग काल (बेहोशी) में कांच या टीन की फूकनी द्वारा दिया करते हैं।



इस फूंकनी के मुख में दो रत्ती के लग-भग नस्य का पदार्थ डालकर फूंक दिया करें, मूर्च्छावस्था में जब यह नस्य दी जाती है रुग्णा बहुत ही उछलती है हाथ पांव चारपाई पर मारती है एक दो मिनट में चैतन्य होजाती है जब हाथ पांव मारने लगे तब उसे छोड़दे रोकें नहीं, घर वालों को भी उस समय समझा देवे उस अवस्था को देखकर घबरायें नहीं इससे खूब छींकें आती हैं, नासिका द्वारा बहुत मल निकलता है अगर छींक न आवे तो हम रोग को असाध्य या कष्ट साध्य अनुमान किया करते हैं. बहुधा इन नस्यों के देने से छींके आजाया करती हैं अगर न आवें तो हतोत्साह नहीं होना दो तीन दिन पीछे आने लगेंगी।

फूंकनी को जब नासिका में प्रविष्ट करें तब मुखारी फूंकने वाले स्थान को उंगली से बन्द रक्खें नासिका में प्रविष्ट करते ही उंगली उठा कर जल्दी से मुख द्वारा फूंक दें, अगर उंगली से बन्द नहीं करेंगे और पहले ही मुख द्वारा फूंकने लगेंगे तो वह औषधी रुग्णा के श्वास से आपके मुख में आजायगी क्यों कि उसे उस समय श्वास जोर से चलता है,

घर के मूर्ख लोग ऐसी अवस्थामें डाकनी, शाकनी व भूतादि के आवेश का अन्यथा विचार बनाए हुए होते हैं उन्हें आप पृथक ही बतादें कि देखो हम सब आवेशों को निकालते हैं नस्य देते ही चैतन्यता आने पर सब चकित होंगे, एक मन्त्री जो डाकनी शाकनी, आदि को बहुत काल से निकाला करता है वह हमारी यह नस्य लेजाता है और इसी से कार्य सिद्धि करके सिद्ध देवता बनजाता है और खूब लूटा करता है।

अञ्जन

(१) सोंठ, मरिच, पीपल, हींग, सैंधा, वच कुटकी, सरसों, करञ्जुआ, श्वेत सरसों, सब तुल्य लेकर कूट गोमूत्र में खरल कर बत्तिया बनानी खुश्क होने पर नेत्रों में आञ्जनी या मूर्च्छा काल में जल से घिसकर श्लाका से नेत्रों में डालना इससे नेत्रों से जल जाता है और मूर्च्छा छूट जाती है जब तक रस आदि का सेवन करवाया जाय तबतक इन अञ्जनों को नेत्रों में डाला जाना चाहिये।

(२) मनसिल, सैंधा, कुटकी, वच, सरसों, हींग, श्वेत जीरा करञ्जुआ, सोंठ, मरिच, पीपल, काफूर, कपोत का मल तुल्य लेकर गोमूत्र में खरल कर बत्तियाँ बनानी छाया में शुष्क कर मधु या दूध में घिस कर प्रातः सायं आंजनी विशेष कर मूर्च्छा काल में इससे सब प्रकार की मूर्च्छाएं दूर होती हैं व चातुर्थिक ज्वर।

विरेचन

सनायपत्र ५० तोला, मुलेठी २० तोला, सोंफ २० तोला, गन्धक आमलासार १० तोला, खांड १०० तोला, कूट कर मात्रा ६ माशा, रात्रि को गरम दूध से देनी दूध में बदाम रोगन ६ माशा डाल दिया करना ६१ रोज देते रहना।

इसके सेवन से नित्य प्रातः शौच खुल कर होता है कई बार इससे दो२ तीन२ बार शौच होता है इसका कोई भय नहीं है हिस्टेरिया वाली के उदर में मल बहुत होता है उसको यह चूर्ण सहज २ से कर देता है इसमें उदर में कुछ २ पीड़ा रहती है ऐसी अवस्था में अर्क गोलाब ३ भाग

व अर्क सौंफ १ भाग मिला कर थोड़ा २ गरम फ-रके देना. कोई इसको बमन कर देती हैं उनको इस में और खांड़ मिला कर दो २ रत्ती देनी अर्थात् ६ माशा एक बार मुख में नहीं डालनी उसी को दो २ रत्ती करके उसी समय खानी पीछे दूध भी घूंट २ करके देना या दूध एक घंटा पीछे घूंट २ करके देना।

वस्ति(पिचकारी)

जब विरेचनों से चाहे मृदु विरेचन हो या तीक्ष्ण उदर को भली प्रकार से साफ न करें तो नीचे लिखे वस्ति कर्म्म करवायें इनसे अन्तड़ियें साफ होंगी न केवल अन्तड़ियें ही साफ होंगी बल्कि मस्तिष्क साफ हो जायगा जिससे हिस्टेरिया दिन प्रति दिन नष्ट होता जायगा।

(१) त्रिफला छिलका ३ तोला, बचा १ तोला, त्रिवी (निसोत)१ तोला, यवक्षार १तोला सेंधा १ तोला, गोमूत्र २० तोला, जल १ सेर क्वाथ करना पौन भाग रहने पर गोमूत्र मिला कर घृत २॥ तोला डाल कर वस्ति यन्त्र द्वारा नियम पूर्वक वस्ति नित्य प्रातः एक वार सात दिन तक।

(२) त्रिफला छिलका ३ तोला, यवक्षार १ तोला, मधु २॥ तोला घृत या अरण्डी का तेल २॥ तोला; गोमूत्र २० तोला, जल ६० तोला इनको विधि पूर्वक तैयार करके वस्ति कर्म्म करनी सात दिन तक॥

(नोट) इनके करने से बहुत २ से उदर के अन्दर से जला हुआ कीचर की प्रकार मल निकलने लग जाता है कभी २ रुग्ना के पेट में तीव्र पीड़ा होने लग जाती है जिससे घर के लोग और अनभिज्ञ वैद्य घबरा जाता है घबराना नहीं धीर्य्य से इस पीड़ा को शांत करने का यत्न करना पीड़ा शांत हो जायगी स्तम्भिक क्रिया कोई भी ऐसी अवस्था में नहीं करनी चाहिये।

(२) वस्ति करने पर भी यदि गुल्म शांत न हो तो नीचे लिखा योग सेवनकर घायें या वस्ति कर्म्म के दिनों में ही साथ २ देते जायें गुल्म दूर होता जायगा और हिस्टेरिया भी शांत हो जायगा।

(३) हींग (अधभुनी) १ तोला, अकीक भस्म १ तोला, शृंग भस्म २ तोला, स्वर्ण भस्म ४ माशा, कस्तूरी नैपाली ४ माशा इनको लहसुन के रस में खरल करना मात्रा २ रत्ती की बनानी दिन में तीन बार तुलसी पत्र रस से देनी १५दिन तक इससे वात गुल्म हृदय काम्प (पलपीटेशन आफ हार्ट Palpitation of heart दूर हो जाते हैं

(रहस्य)

अशुचिन्यन्न पानानि तदीह्चावचानिच।
प्रासादा च्छाखिनोऽस्त्राणी सेवितोन्माद वांश्च

(रहस्य)

अपवित्र अन्न जल, नदी, ऊंचे नीचे मार्ग (पहाड़ चरवाई) ऊंचा मकान, वृक्षा रोहन, शस्त्र अस्त्र आदि इनसे सदा उन्मादो की रक्षा करते रहना यह वैद्य का मुख्य कर्तव्य है। ‡

‡ लेखक महोदय ने अपने ३० वर्ष के ज्ञान को वैद्य समाज के समक्ष निष्कपट भाव से रक्खा है पाठक उससे समुचित लाभ उठावेंगे और लेखक को धन्यवाद देंगे

—सम्पादक।

"कामिनी करुण क्रन्दन"

षट्पदी

लेखक—श्री० गिरजादत्त पाठक वैद्य शास्त्र तीर्थ आयुर्वेदोपाध्याय

शक्ति शील ! भगवान ! भक्ति सों विनय सुनाऊं,
अपने दुख की बात नाथ ! केहि आगे गाऊं ।
अशरण—शरण पुनीत तुही करुणावरुणालय ,
तुमहिं अछत हो रही हाय ! रोगों से घायल ॥
बूडति हूं मॅझधार मधि दुखदवारि हा! हा!! दुसह ।
दुख सागर सों पार करि धाइ धरहु प्रभु हाथ यह ॥ १ ॥
विरुदावलि तुव बड़ी क्षुद्र मैं हूं इक नारी,
ताहू पै हूं नाथ ! अनाथा दुख है भारी ।
सभी चिकित्सा आज जगत की न्यारी न्यारी ,
थकी उन्हें अनुमानि जान जाती है प्यारी ॥
लो उबारि अब बांह गहि अन्त आश है आपकी ,
कैसी हू सन्तान हो दया चहति मां बाप की ॥ २ ॥
तुमही हो मम पिता , दया तेरी है माता ,
तुव यश उदधि अगाध सकल निगमागम गाता ।
यह कलि काल कराल लिये है कर कर वाला ,
है उसकी हो रही लक्ष्य भारत की बाला ॥
अहो दयामय ! प्रकट हो रक्षा कीजे तुरत ही ,
भारत जन से हृदय गत करुण क्रन्दन सुननहीं ॥ ३ ॥
डाक्टर , वैद्य , हकीम सभी विस्मित हैं होते ,
लक्षण विविध विचित्र ज्ञान सब के हैं खोते ।

अपतन्त्रक- अपतान- अपस्मारादिक जेत ,
हृद्रद--वातोन्माद आदि लक्षण हैं तेत ॥
मिलते है एकत्र हो निश्चित नही निदान है ,
अबला के इस व्याधि में सब का अर्द्धज्ञान है ॥ ४ ॥
गर्भाशय की विकृति; कही कोई बतलाता ,
रजो रोध का दोष कहीं कोई ठहराता ।
भूत प्रेत आवेश कहीं पाखण्ड कहीं है ,
दम्पति का संयोग अभी तक हुआ नही है ॥
मूर्च्छा, स्मृति विभ्रंश की अनुमति होती है कहीं,
हाय ! चिकित्सक जगत में दिव्यौषधि मिलती नही ॥ ५ ॥
आयुर्वेद अगाध ज्ञान का उदधि सही है ,
पर उसके अनुयायि वर्ग से शून्य मही है ।
व्याधि हारिणी क्रिया चिकित्सा है कहलाती ,
वह " योषा पस्मार ,, नाम सुनतहि अकुलाती ॥
रोगी जनका हाथ धरि कर देगे आरोग्य हम ,
विज्ञ वैद्य वैसे सुजन ! मिलते है इस काल कम ॥ ६ ॥
अब आशा है दया सिन्धु "धन्वन्तरि,, आकर ,
नारि जाति का दुःख हरेंगे दया दिखाकर ,
नव्य व्याधि निदान ज्ञान पद्धति सिखला कर ,
सदुपदेश दे भिषगवर्ग को विज्ञ बना कर ॥
वैद्यक वल्ली को सहज सुधा सींचि पनपायेंगे ,
गिरे चिकित्सक वर्ग को कर धरि वेग उठायेंगे ॥ ७ ॥

हिस्टेरिया (HYSTERIA)

लेखक—श्रीमान् पं० कृष्णप्रसादजी त्रिवेदी, बी० ए० आयुर्वेदाचार्य्य



हिस्टेरिया रोग को हमयोषापस्मार, गर्भाशयोन्माद, योषितोन्माद, इत्यादि कई नामों से पुकारते हैं।

इस रोग में रोगी को कभी २ कम्प होकर अथवा न होकर भी एकदम बेहोशी होती है। रोगी के मस्तिष्क (भेजे) में, या अन्य इन्द्रियों में किसी प्रकार की विकृति न होते हुए भी यह रोग हो जाता है।

इस रोग में, जो शरीर में झटके लगते हैं वे प्रायः उसी झटके कम्प या (Convulsion) के समान होते हैं जो प्रायः मस्तिष्क ग्रंथि, या (मस्तिष्क विद्रधि) होने से, या मूत्र, पिंड, दाह के कारण, अथवा कभी २ पांडु रोग में भी होते हुए दिखाई पड़ते हैं। शरीर के किसी भी भागकी रचना में प्रायःकोई विकृत न होने हुए, केवल व्यापार या क्रियामें जिनमें अपस्मार(Repilepcy सदृश विकृत होती है, ऐसे उन्मादादि कतिपय रोग हैं, उन्ही में से यह एक रोग है।

पुरुषों की अपेक्षा, प्रायःस्त्रियों में ही यह रोग अधिकता से पाया जाता है। इस रोग का प्रारम्भ काल बाल्यावस्था या तरुणावस्था है। इस रोग की जड़ एक बार जम जाने पर, फिर उसका समूल नाश होना जरा टेढ़ी खीर है।

कारण—इसरोग का विप्रकृष्ट कारण प्रायः आनुषगिक होता है कइयों को यह वारसान हक्क की तरह भी प्राप्त होता है। यह सुरासेवन, अति मैथुन, मुष्टि मैथुन, आदि अनाचारों के कारणभी होता है। निम्नोक्त निमित्त या सन्निकृष्ट कारणों से भी यह रोग जड़ जमा लेता है:—भयङ्कर भीति, मानसिक,चिंता,अस्वस्थता,वातनाड़ियों(Nerves) में किसी प्रकार की जखम भयङ्करज्वर, नासापुट—पार्श्व ग्रंथि, दंतविकृति, कृमिरोग इत्यादि।

इस रोग के लघु और महान् ऐसे दो भेद कर सकते हैं। लघु 'हिस्टेरिया' में केवल बेहोशी होतीहै भली चङ्गी अवस्था में, बोलते २ एक दम बेहोश होजाता है। वरांने, प्रलाप करने लगता है फिर थोड़ी देर के बाद होश में आजाता है। कभी कभी बेहोश न होते हुये भी, अंट संट प्रलाप करने लगता है। उस समय कई श्रद्धालु समझते हैं कि देव या देवी उसके आंग में आई है। महा 'हिस्टेरिया' में, शरीर कंपायमान होता है, और बेहोशी आती है। कभी २ इसकी प्रथमावस्था में हाथ, पांव, मुख, जिह्वा में झिनझिनी सी वेदना मालूम देती है, नेत्रों के सामने अंधेरी सी आती है या कई प्रकार के रंग दिखाई देते हैं।

इस रोगी के मानसिक स्थिति में विलक्षण फेरफार होजाता है। कुछ दिनों तक तन्द्रा सी स्थिति या अर्द्धोन्माद (Half-Madness) की हालत कायम रहती है। कभी २ इसी स्थिति में

यह ऐसे कुकर्म कर बैठता है कि उसे ही फिर स्व-कर्म पर पश्चात्ताप, लज्जा या अत्यंत घृणा होती है। जिसके कारण उसका रोग और भी, अधिक ज़ोर पकड़ता है। कहते हैं एक स्त्री ने अपनी इसी मानसिक स्थिति में, अपने बच्चे को मार डाला था। एक न्यायाधीश ने अदालत में ही सब के सामने पेशाब करदिया था। हमने कई स्त्रियों को इस हालत में रास्ते में सबके सामने देख २ कर हंसते हुए, भागते हुये, तथा कुवाच्य कहते हुये, देखा है।

ध्यान रहे, देखादेखी या किसी कारण विशेषसे कई तरुण स्त्रियां इस प्रकार का ढोंग भी करती हैं। बेहोशी का बहाना कर जब नीचे गिरती हैं तब बड़ी हुश्यारी से गिरती हैं। ढोंग करने के श्रम से चेहरा उनका लाल होजाता है, किंतु काला नहीं होता। श्रम के कारण उन्हें प्रस्वेद (पसीना) भी निकलता है। उनके ढोंग को जानने का यह तरीका ख्याल में रखना आवश्यक है —

ढोंगी स्त्री की नेत्रों की कनीनिका विस्तृत नहीं रहती, प्रकाश में बारीक और अंधेरे में बड़ी होती हैं। कनीनिका में स्पर्श करते ही वह आंखें मींच लेती है। यदि पलकों को खोलने का प्रयत्न किया जाय तो वह और भी दृढता के साथमींच लेती हैं। नस्य सुंघाने से उसे छींक आती हैं, और शरीर में टोंचने से अङ्गों को हिलाती है।

उपचार—रोगी को आहार सूक्ष्म, हलका, तथा पौष्टिक देना चाहिए। साफ हवा और प्रकाश में रोगी को रखना उचित है मांसाहार न करावे। रात्रि में भोजन के बाद ही सोना नहीं चाहिये। चहा, काफी आदि उत्तेजक पदार्थ न देवे, कोठा साफ रक्खे व्यायाम अधिक न करें।

हिस्टेरियो अथवा उन्माद ये विकार जब तीव्रता को प्राप्त होजाते हैं, तब तीव्रता—शामक, या क्षोभ नाशक औषधियों (जैसे खुरासानी अज-वानादि) का प्रयोग किया जाता है। किंतु इन प्रयोगों से रोग समूल नष्ट नहीं होता।

हिस्टेरिया, अपस्मार, उन्माद इन विकारों की उत्पत्ति प्रायः एक ही स्थान से होती है। हिस्टेरिया या अपस्मार स्मृति अथवा स्मृतिजन्य केन्द्र (मस्तिष्क) का विकार है और उन्माद केवल मनका विकार है। जब मानसिक अथवा स्मृति जन्य केन्द्र की विकृति के कारण, समस्त शारीरिक-ज्ञानतंतु तीव्र क्षुब्ध हो जाते हैं, तब शामक या क्षोभनाशक उपचारों से तात्कालिक शान्ति तो प्राप्त हो जाती है; किंतु मन या मस्तिष्क की क्षुब्ध होने की प्रवृत्ति उक्त उपचारों द्वारा नष्ट नहीं होती यह प्रवृत्ति जब तक नष्ट नहीं की जाती तब तक रोग समूल नष्ट नहीं हो सकता।

यह एक सर्व साधारण बात है कि जो बलवान एवं सशक्त होता है, उसेको मानसिक शक्ति एव मस्तिष्क भी सशक्त होताहै सहसा विकृत नहीं होता। अंग्रेजी कहावत प्रसिद्ध है–Sound miud in a sound body अर्थात् सुदृढ़मनुष्य (या स्त्री) का मन प्रशांत एवं बलवान रहा करता है? जो कमजोर होते है उनका मस्तिष्क भी कमजोर होता है। इस में कहना ही क्या है? इस सिद्धांत का अनुभव हिस्टीरिया या अपस्मार और उन्माद-रोगों में हम प्रायः नित्य पाते हैं। हम देखते हैं कि ये विकार तरुण, सुकुमार प्रकृति तथा अनाचार प्रवृत्ति के स्त्री पुरुषों को ही, विशेषतः सताते हैं। अब यह बात विचारणीय है कि उक्त प्रकार के नाजुक उच्छृंखल मनो वृत्ति के रोगी का रोग केवल क्षोभ नाशक उपचारों से कैसे दूर हो सकता है। प्रत्युत देखा गया कि ऐसे उपचारों से मन या मस्तिष्क

एक शांत होकर फिर विचित्रता में उद्वेग को प्राप्त होजाता एवं रोग अत्यधिक तीव्र दशा को प्राप्त होता है। हम देखते हैं कि जैसे २ इस रोग का वेग बढ़ता जाता है वैसे२ वैद्यगण प्रायः केवल शोथ नाशक उपचार करते जाते हैं। जिसका अप्रत्यक्ष परिणाम यह होता है कि रोगी का मस्तिष्क तथा अन्यान्य ज्ञान तंतुओं की शक्ति न्यून होती जाती है। जैसे २ यह शक्ति न्यून होती जाती है तैसे २ रोग का मूल कारण जोर पकड़ता जाता है, और रोग तीव्र दशा को पहुंच जाता है। इस प्रकार यह चक्र क्रम कतिपय वर्षों तक चलता रहता है। अंत में रोगी मरणासन्न होजाता है।

अस्तु पाठक! जान गये होंगे कि उक्त उपचार कोई उचित चिकित्सा नहीं। अच्छा अब आइये, इस रोग की वास्तविक चिकित्सा का अनुसंधान करें।

इस रोग का उपचार हमें ऐसा करना चाहिये जिसमें मन एवं मस्तिष्क की क्षीण हुई शक्ति का प्रादुर्भाव हो। हमारा अनुभव है कि अभ्रक भस्म में यह शक्ति है कि वह शरीर में तरल से तरल तर परमाणुओं को निर्माण कर क्षीण हुए परमाणुओं की पूर्ति करता है। अतएव अभ्रक का सेवन यथा विधि करने से मन एवं मस्तिष्क के क्षीण हुए तरल सूक्ष्म भाग कुछ काल के पश्चात् अर्थात् धीरे २ बलवान होते जाते हैं। शेष ज्ञान तन्तु भी सशक्त बनते जाते हैं। फिर वे अल्प कारणों से कदापि क्षुब्ध नहीं होते।

अभ्रक भस्म की मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक केवल गौ दुग्ध और शक्कर के साथ देवे। सुवर्ण भस्म या रौप्य (चांदी) भस्म के साथ भी इसकी योजना लाभ दायक होती है। इस पर इन चीजों को न खाय—अम्ल (खटाई) ककड़ी, करेला, माठा, तेल आदि पदार्थ।

अभ्रक भस्म—सहस्रपुटी हो तो बहुत अच्छा! तरुण स्त्रीको ऋतु प्राप्ति के पूर्व या पश्चात् कभी २ जो उन्माद या हिस्टेरिया होजाता है, उसका मुख्य कारण, प्रायः गर्भाशयान्तर्गत् विकृति अथवा—मानसिक दुर्बलता है। अब प्रश्न यह है कि उसमें मानसिक दुर्बलता का क्या कारण? इसका कारण शरीर में रसादि धातुओं की विकृत उत्पत्ति, या मिथ्याहार विहार है।

केवल लक्षणों के अनुसार चिकित्सा करने से रोग कदापि समूल नाश नहीं होता। इन लक्षणों की जड़ विकृत धातुत्पत्ति को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा करने से निश्चय लाभ होता है सहस्र पुटी अभ्रक भस्म में विकृत धातुओं को सुधारने की शक्ति है। अतएव इसी का उपयोग करना श्रेयस्कर है।

<u>सूत शेखरः</u>—स्त्रियों को मासिक धर्म के समय, अथवा कभी २ गर्भपात होजाने पर जो एक प्रकार की उन्मादावस्था उत्पन्न होती है। वह भी "हिस्टीरिया" ही है। क्यों कि इसमें भी Hysterics या Fitsमूर्च्छा, लहरें वगैरा आया करतीहैं किंतु रोगी एकदम बेहोश नहीं होता। उनके गुह्य मार्ग से रक्तस्राव होने लगता है। पेट में तथा गर्भाशय में अत्यंत वेदना भी होती है। और कभी२ कै या वमन भी होते हैं ऐसी स्थिति में सूतशेखर का उपयोग परम लाभदायक है अर्थात् वात,पित्त जन्य इस रोग पर विशेषतः सूतशेखर अच्छा कार्य करता है।

---

*सूतशेखर और सहस्र पुटी अभ्रक धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ अलीगढ़ से अत्युत्तम प्राप्त हो सकता है। हमने उनका अनुभव किया है। लेखक।

इस रोग पर रौप्य भस्म का भी प्रयोग लाभ दायक है। रौप्य ज्ञानतन्तु (Nerves) की क्षुब्धता को शमन कारक है। जिस प्रकार ताम्र भस्म अपना प्रभाव यकृत तथा तत्सम्बन्धी विकारों पर, अच्छा जमाता है., उसी प्रकार रौप्य भस्म का प्रभाव मस्तिष्क मूत्र पिंड, गर्भाशय आदि जनित विकारों पर अच्छा होता है।

पाश्चात्य डाक्टर इस रोग पर प्रायः पोट्याशियम ब्रोमाईड २० से ३० ग्रेन जल के साथ, दिन में ३ बार देते हैं। पोटाशियम , सोडियम, और अमोनियम इन तीनों का ब्रोमाइड मिश्रण ३० ग्रेन देने से लाभ होता है, किन्तु औषधि का सेवन बहुत काल तक करते रहना चाहिये।

ब्रोमाईड अधिक प्रमाण में देने से, सुस्ती आती है, हाथ पाँव निर्बल होकर ठण्डे पड़ जाते हैं। अतएव ३० ग्रेन से अधिक इसकी मात्राकदापि न देवे। ब्रोमाइड के साथ सोडियम ग्लिसरोफासफेट सम भाग मिश्रण कर देते हैं।

अथवा उसके साथ कुचले का अर्क २० से ३० बूंद मिला कर देते हैं। इसके देने से शरीर पर फुन्सियां या चट्टे न हो एतदर्थ उक्त मिश्रण में २।३ बूंद लायकर आर्सनिक (सोमल) मिला देते हैं। ब्रोमाइड के सेवन काल में निमक से सख्त परहेज रखना चाहिये। बीच में ब्रोमाइड के साथ बेला डोना, जिंक सल्फेट या आक्साईड, अन्टिपायरीन, इत्यादि औषधियां भी देने में आती हैं।

एक महाशय का प्रयोग इस रोग पर, किसी पत्र में छपा था, हमने उसका अनुभव लिखा है। प्रथम त्रिफलादि अनुलोमन द्रव्यों से रोगी का मल शुद्ध करे। तीव्र विरेचन न देवे। पश्चात् रज की शुद्धि के लिये द्राक्षारिष्ट का सेवन करावे। प्रात साय छोटी हरड़ ६ मासा, जवाखार ४ रत्ती पीपल १ मासे इनका महीन चूर्ण उष्ण जल के साथ सेवन करावे। यह एक मात्रा का प्रमाण हुआ। पैरों में गर्म तेल (सरसों का तेल) की मालिश करावे। मूर्च्छावस्था में हींग और कपूर सुंघावे।

योषापस्मार-हिस्टेरिया

लेखक—श्रीमान् वैद्याचार्य्य पं० महावीर प्रसाद जी मालवीय "वीर"



हिस्टेरिया रोग का विस्तृत वर्णन हम कामिनी कर्णधार नामक पुस्तक में कर चुके हैं। सब से बड़ी शंका तो इस रोग के नाम करण में विद्यमान है जिसका अब तक कोई सन्तोष जनक समाधान ही नहीं हो सका है। आयुर्वेदज्ञ विद्वान इस सम्बन्ध में भिन्न भिन्न नामो लेख करते दिखाई देते हैं अतएव निश्चित रूप से कोई भी बात स्वीकार करने योग्य नहीं है।

हिस्टेरिया शब्द यूनानी भाषा का है, इस रोग को पहले यूनानी हकीम लोग इख़्तनाकुल—रेहम कहते थे। उक्त भाषा में गर्भाशय को रेहम कहते हैं और इस पूरे शब्द का अर्थ हुआ गर्भाशय का गला घोटने वाला। इसी सिद्धान्त के अनुसार यूनानी चिकित्सक इसको गर्भाशय का रोग मान कर चिकित्सा करते थे। परन्तु कुछ काल से उन्हों ने अपने इस विचार को भ्रम मूलक अनुमान कर लिया है इसी से अब वे इसे—नर्वस डिजीज या वात रोग मानने लगे हैं वास्तव में जब यह रोग स्त्री और पुरुष दोनों को हो सकता है तब इसकी उत्पत्ति केवल गर्भाशय की विकृति से अनुमान करना बहुत बड़ी भूल है हां—इतना अवश्य होता है कि पुरुषों की अपेक्षा यह रोग स्त्रियों को अधिक होता है।

पाश्चात्य चिकित्सक इस रोग के सम्बन्ध में कैसा विचार रखते हैं यह जानने के निमित्त हम कुछ अनुभवी डाक्टरों के सिद्धांत पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं। डाक्टर स्काट का मत है कि मनोवृत्ति, विवेकबल, चिंता, अनुभव की शक्ति, पेशी सञ्चालन, स्पर्शानुभव सम्बन्धी क्रिया वैलक्षण्य और संयुक्त नाड़ी चक्र के विशेष क्रिया विकार को हिस्टेरिया कहते हैं। डाक्टर न्यूमान लेंड लिखते हैं कि यह रोग अधिक तर स्त्रियों को होता है और इसमें मनोवृत्ति तथा कार्य स्वायत्त नहीं रहता। वे इसको दो भागों में विभक्त करते हैं। प्रथम हिस्टिरो एपिलेप्सी अर्थात् अपस्मार के समान आक्षेप युक्त प्रबल हिस्टेरिया और दूसरी हिस्टेरिया माइनर (सामान्य आक्षेप युक्त मृदु हिस्टेरिया जिसमें सम्मोह नहीं होता) है। इन दोनों आक्षेपों को डाक्टर महाशय ने वात व्याधि के अन्तर्गत माना है। हिस्टेरिया माइनर के वेग का वर्णन डाक्टर जेरोयर्टसन वाक्स इस प्रकार करते हैं कि रोगी ऐसी चेष्टा करता है मानो उसने किसी जीव विशेष का रक्त पान कर लिया है और उसको वमन द्वारा इस लिये बाहर निकालना चाहता है जिससे उसके कुटुम्बियों के हृदय में भय का सञ्चार हो। अपने मुख में कोई रङ्ग मिलाकर लोगों को धोखे मे डालने के लिये दिखाता है कि मेरे मूत्र का रङ्ग बदल गया है। वह रोगी अपने चिकित्सक तथा पूज्य पुरुषों पर मिथ्या दोषारोपण और पाप मय कर्मों का आरोप करने में कुछ भी नहीं हिचकिचाता। सारांश यह कि हिस्टेरिया का रोगी झूठ बोल कर अपने को निर्दोष बनाने

और अधर्म करने का प्रयत्न करता है।

आयुर्वेदीय विद्वानों के मतसे भी अधिकांश यह रोग सभ्य जाति की स्त्रियों को ही होना कहा जाता है। अविवाहिता, वयः प्र सा युवती, विधवा, सधवा, सन्तान वती और सन्तान विहीना सभी स्त्रियां इस रोगसे आक्रांत होतीहैं। इसके लक्षणों का प्रादुर्भाव प्रायः ऋतु धर्म के समय होता है। कारण वश विषय वासना की इच्छा की पूर्ति न होने और बार बार मनोवेग के रोकने पर निराश एवम् दुःख से उठी हुई लहरें हृदय पर भीषण प्रभाव डालती हैं। जिससे कामिनी मदनोन्मादित होकर मन ही मन उत्पीड़ित होती है। ऐसी दशा में किसी बाहरी कारण के अकस्मात् प्रभाव पड़ जाने से हिस्टेरिया रोग उत्पन्न होता है। धन क्षय, प्रिय वियोग, भय, मनोभिघात और शोक आदि से भी इस रोग की उत्पत्ति होती है। अजीर्ण, नाड़ी चक्र की विकृति, योनिरोग तथा रक्त सचालन में अवरोधादि भी रोगोत्पादन के सन्निकृष्ट कारण होते हैं। बंग देशीय कविराज विनोदलाल सेन ने अपने 'आयुर्वेद विज्ञान' में इस रोग का नाम योषापस्मार लिखा है। इस नाम करण का कारण दिखाते हुए उन्होंने कहा है—"योषिता मेवबाहुल्याद् यस्तएव भवेद्गदः। अपस्मार प्रकृतिकस्तेनास्यैषाभिधा मता" इसकी प्रकृति अपस्मार के सदृश है इस लिये इस का नाम योषापस्मार है।

यद्यपि आयुर्वेदीय, अंग्रेजी और यूनानी चिकित्सकों के अधिक मत से प्रकट है कि यह रोग स्त्रियों को ही होता है। परन्तु ऐसा नहीं है, क्यों कि पुरुषों को भी होते देखा है कानपुर के भूत पूर्व डिप्टी कलक्टर और वर्तमान के जिला मजिस्ट्रेट बाबू रूपनारायण के ज्येष्ठ पुत्र को तेरह वर्ष की अवस्था में हिस्टेरिया रोग होगया और लगातार चार पांच वर्ष तक बना रहा। अनेक प्रकार की डाक्टरी चिकित्सा हुई, किंतु लाभ कुछ नहीं हुआ अन्त को इसी रोग से स्वर्गवासी हो गया। प्रयाग फूलपुर के तहसीलदार बाबू मुरलीधर के एक प्रिय बालक को पन्द्रह वर्ष की अवस्था में यह रोग उत्पन्न होकर सात वर्ष पर्यंत बना रहा। उन्नाव, प्रयाग, और लखनऊ आदि नगरों के कतिपय अनुभव शील प्रसिद्ध डाक्टरों और हकीमो के इलाज हुए पर लाभ कुछ नहीं हुआ। अप्रेल १९१३ में कार्य वश मैं फूलपुर गया था उन दिनों उस युवक को प्रति दिन एक वा दो बार फिट आता था। शीत काल में दस बारह दिन का अन्तर पड़ता था। उक्त तहसीलदार महाशय ने मुझे बुलाकर रोगी की चिकित्सा करने के लिये विशेष आग्रह प्रकट किया रोग को कष्ट साध्य जानते हुए भी हमने ईश्वर का नाम लेकर और औषधियों के प्रभाव पर दृढ़ भरोसा करके चिकित्सा आरम्भ की, उससे आशातीत लाभ दिखाई दिया। दूसरे ही दिन से सदा के लिये फिट आना बन्द होगया जिसकी चर्चा अन्यत्र इसी निबंध में की गई है।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से यह रोग स्त्री पुरुष दोनों ही को होना सिद्ध होता है। ऐसी अवस्था में इसका 'योषापस्मार' नाम युक्ति संगत नहीं प्रतीत होता। परंतु जब तक वैद्य सम्मेलन और वैद्य समाज का यह मत भेद दूर होकर कोई निश्चित् आयुर्वेदिक नाम करण नहीं होता है तब तक पूर्व परिपाटी का अनुसरण करते हुए हमें भी इस रोग को "योषापस्मार" के ही

नाम से प्रसिद्ध करने को बाध्य होना पड़ा है। इसके अतिरिक्त हमारे वैद्यराजों में अधिक मतभेद पाया जाता है। कोई अपतंत्रक–अपतानक, कोई उन्माद और कोई कोई इसको सन्यास रोग कहते हैं। यदि उपर्युक्त रोगों के और हिस्टेरिया के लक्षणों से तुलनात्मक विवेचना की जाय तो इसका ठीक २ निदान किसी से भी नहीं मिलता।

सुधानिधि पत्र के सम्पादक वैद्यवर प० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल ने अंग्रेजी आयर्वेदिक और यूनानी चिकित्सकों के मत मतांतर की लम्बी आलोचना करते हुए हिस्टीरिया रोग को वात व्याधि के अन्तर्गत अपतंत्रक रोग सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। आपका कथन है कि अपतन्त्रक और अपतानक दोनों एक ही रोग हैं। इन दोनों रोगों के मिश्रित लक्षण ग्रन्थांतरों में इस प्रकार वर्णित हैं कि अपने कारणों से कुपित हुई वायु पक्वाशय से ऊर्ध्वगामी होकर हृदय, मस्तक और कनपाटियों को पीड़ित करती हुई शरीर को धनुष के समान नवाकर कपाती और व्याकुल कर देती है। ऊंचा श्वास चलता है और गले से कबूतर के रव समान शब्द निकलता है। आंखें कभी खुली और कभी बन्द रहती हैं। ज्योति मन्द पड़जाती है और रोगी मूर्छा से बेसुध होजाता है। ये लक्षण हिस्टेरिया से अवश्य मिलते हैं, किंतु तलपना, रोना, हसना इत्यादि इसमें नहीं होता। इसका निराकरण शुक्लजी ने इस तर्क से किया है कि रोगी का कण्ठ रुक जाता है, श्वासावरोध की पीड़ा से वह जितना भी चीखे उतना थोड़ा ही है। जब वायु हृदय में पहुंचाती है तब चेतना शक्ति में भेद पड़ जाता है। उस समय रोगी की अवस्था बदल जाती है। उसके मन में जैसा भाव वर्तमान रहता है वैसा ही प्रकट करता है। हंसना रोना, चीखना, मन का भेद बतला देना जो कुछ भी कहो सब हो सकता है।

अपस्मार वाले रोगी के मुख से झाग निकलता है, किंतु हिस्टेरिया में वैसा नहीं होता हिस्टेरिया और मृगी रोग के लक्षणों में बहुत कुछ साम्यता पाई जाती है इसी से आयुर्वेदिक विद्वानों ने इसका नाम करण योषापस्मार किया है। किंतु यह नाम आधुनिक और कल्पित है, क्योंकि ऋषिप्रोक्त आर्ष ग्रन्थों में नहीं पाया जाता सुश्रतोक्त उन्माद के लक्षण भी हिस्टेरिया से मिलते जुलते हैं—"मदयत्युद्धतादोषा यस्मा उन्मार्गमाश्रिताः। मनसोऽयमतो व्याधिरुन्माद इति कीर्तितः" जब बढ़े हुए दोष विपरीत मार्ग से ऊर्ध्वगामी होकर मस्तिष्क को प्राप्त होते हैं तब मद (बेहोशी) उत्पन्न करते हैं वह मानसिक रोग उन्माद कहलाता है। फिर भी उन्माद और हिस्टेरिया के वेग में बहुत अंतर है प्रथम तो उन्माद का रोगी आक्षेप होने पर पतित नहीं होता, शीघ्र शीघ्र चेतनता लाभ नहीं करता और हिस्टेरिया का रोगी मूर्छित होजाता है तथा वेग के निकल जाने पर चैतन्य दिखाई देता है। दूसरे उन्माद के प्रकरणमें इस बात का उल्लेख नहीं है कि यह रोग स्त्रियों ही को होता है, पुरुषों को नहीं।

यदि इसको सन्यास कहाजाय तब भी संदेह की निवृत्ति नहीं होती। महात्मा सुश्रुत लिखते हैं—"सन्यस्त संक्षोभृश दुश्चिकित्स्योऽय स्तदा बुद्धिमता मनुष्यः" सन्यसका रोगी अधिकांश चिकित्सा०के योग्य नहीं होता। दोषों के अत्यन्त कुपित होने से वह चेतना लाभ नहीं का

ता प्रायः मृत्यु को प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सन्यास का रोगी हिलता—डोलता नहीं और न जल्पना ही करता है। वह अचेतन अवस्थामें काठ के समान पड़ा रहता है। हिस्टेरिया में इसके विपरीत लक्षण प्रकट होते हैं यद्यपि यह रोग वात व्याधि के अन्तर्गत है, इसमें सन्देह नहीं। परंतु नाम करण युक्ति संगत न होने के कारण स्वीकार योग्य नहीं जान पड़ता। अब हम इस विवाद का निर्णय विद्वान् वैद्यराजों के विचार पर निर्भर करके हिस्टेरिया के कुछ विशेष लक्षणों और इसकी चिकित्सा का वर्णन करते हैं।

इस रोग में दो प्रकार के असाधारण लक्षण होते हैं। पहली आक्षेप विहीन अवस्था और दूसरी आक्षेपिक अवस्था। आक्षेप विहीन अवस्था में साधारण ज्ञान विज्ञान और विवेकशक्ति का अभाव होजाता है प्रायः रोगी मिथ्या प्रलाप करने लगता है उसको शीतोष्ण का परिज्ञान नहीं रहता और शरीर के किसी स्थान में स्पर्श करने से वेदना का अनुभव होता है। वेग निकल जाने पर रोगी थोड़ी देर में चैतन्य होजाता है। आक्षेपिक अवस्था में मूर्छित होने के पूर्व रोगी को वेग आने का ज्ञान होजाता है। बहुतों का श्वास खिंचकर आने लगता है, आँखें चढ़कर लालीरङ्ग की होजाती हैं और जंभाई आती हैं। निरर्थक चीखना, रोना, हँसना तथा शरीर को इतस्ततः सञ्चलन करना इत्यादि होता है। रोगी को यह ज्ञात पड़ता है मानों गले में गेंद के समान कोई गोली वस्तु नीचे से आकर अटक गयी है। जब तक वह मूर्छित नहीं होजाता तबतक उसके चारों ओर क्या हो रहा सब जानता रहता है, परंतु कोई स्पष्ट वाक्य मुख से बाहर नहीं निकाल सकता। हाथ की मुठ्ठियां बंध जाती हैं हाथ पांव और सारा शरीर ऐंठने लगता है। आंखों से सुझाई नहीं पड़ता। हृदय धड़कता है और मस्तक में तीव्र पीड़ा होती है। बहुतों के वेग के समय जितने अंग टढ़े होजाते हैं वेग के शांत होने पर भी वे सहसा सीधे नहीं होते। यदि आक्षेप के समय सभाल करने वाले लोग पास में न हों तो रोगी का शरीर भग्न होजाय। मूर्छित होजाने पर रोगी चुपचाप शांत पड़ा रहता है। इसका वेग पांच सात मिनट रहकर निकल जाता है किंतु किसी के आठ दश घंटे तक बना रहता है। साधारण वेग में चेतना शीघ्र आजाती है पर प्रबल आक्षेप में विलंब से होश होता है कमर में पीड़ा, निर्बलता और शिर में पीड़ा आदि दो तीन दिन तक रहती है इसके वेग को अंग्रेज़ी में फिट कहते हैं।

इस वेग के लक्षण सब रोगियों के एक समान नहीं होते, उनमें भिन्नता पाई जाती है कोई हाथ पांव फटकारते हुए गला फाड़ २ कर रोने चीखने लगता है तो कोई बिना किसी शब्द के स्तब्ध होकर धरती पर गिर पड़ता है। किसी को नोचने खसोटने की धुन सवार होजाती है और कोई भय भीत होकर भूत प्रेतों की लीला का अनुभव कर दुखी होता है। किसी को ऐसा प्रतीत होने लगता है कि मांसाहारी जीव मेरा पेट फाड़कर अथवा हृदय में घुसकर उदरस्थ अवयवों को खाये डालते हैं कोई गाली बकने लगता है और कोई अपने तथा दूसरों के शरीर का वस्त्र नोच खसोट कर फेंकता है। कोई गृह वस्तुओं को तोड़ फोड़ कर बड़ा उपद्रव मचाता है जिससे घरवाले हैरान होजाते हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के लक्षणों का कारण यह जान पड़ताहै कि

सुख, दुःख प्रसन्नता और खेद आदि के अनुभव करने का कार्य मस्तिष्क भिन्न २ विभागों में सम्पादन करता है अतएव जिस अंश पर रोगोत्पादक शक्ति का प्रभाव पड़ता है, वही उत्तेजित हो उठते हैं।

यद्यपि हिस्टेरिया रोग कष्टसाध्य होता है तोभी इसका वेग समय पर आकर/ आपही आप दूर हो जाता है इससे आक्षेप से अधिक घबराने की बात नहीं है उस समय रोगी के गले के बटन आदि खोल देना चाहिए और वेग को शांत करने के लिये पांव के तलुवों पर गरम जल की धार देना नौसादर को पानीमें घोल साफ वस्त्र भिगो उसकी गद्दी बना माथे पर रखना और आंखों में पिपरमेंन्ट के सत्व का अञ्जन करना लाभकारी है। दांत लगगये हों तो नकछिकनी और तमाखू के पत्तों का चूर्ण सुंघानेसे छींकें आकर दांत खुलजाते हैं।

केशरादि वटी, मस्तिष्क विनोद तैल और महालाक्षादि तैल इन्हीं तीनों औषधियों के यथोचित उपयोग से हमने हिस्टेरिया ग्रस्त फूलपुर के नवयुवकों को आरोग्य किया था तथा और भी कितने ही अनुभूत योगों का वर्णन कामिनी कर्णधार में किया गया है जिसको पाठकगणउक्त पुस्तक में अवलोकन कर सकते हैं, उसके अतिरिक्त कुछ नवीन योग यहां दिये जाते हैं।

अभी थोड़े दिनकी बात है, ग्रीष्म काल में एक स्त्री रसोई बनारहीथी, उसी समय उसने भर पेट ठण्डा पानी पीलिया। दो मिनट भी नहीं बीतने पाया कि वह खूब जोर से चिल्लाकर रोने लगी। जिन सम्बन्धियों का नाम लेकर हाय? हाय?? करती थी वे सब सामने खड़े आश्वासन दे रहे थे पर उसको रोने के सिवा किसी की बात कान से नहीं सुन पड़ती थी। इसी प्रकार वह अठारह घंटे लगातार रोती चिल्लाती रही। पीछे मैं चिकित्सार्थ बुलाया गया। अपामार्ग की पत्ती का स्वरस निकाल गरमाकर उसमें मधु मिला एक मात्रा मकरध्वज उसको दिया गया जिससे पांचही मिनट में उसका रोना बन्द होगया। इसी प्रकार तीनदिन की चिकित्सा से वह स्वस्थ हो गई। दूसरी स्त्री बलनपुर से हमारे पास लाई गयी थी जो छै सात दिन से रोती चिल्लाती थी। मकरध्वज—सञ्जीवनी वटी उपर्युक्त अनुपान के साथ सेवन कराने पर तीसरे दिन संज्ञा प्राप्त हुई और पाँचवे दिन पूर्ण स्वस्थ होगई।

रीठे को कागजी नीबू के रस अथवा पानी के साथ तीन चार रत्ती घिसकर नाक में फूंक देने से मस्तिष्क तक पहुंचते ही स्त्री होश में आजाती है। रोगिणी स्त्री के पास रीठे का धूआँ सुलगाना लाभदायक है और पुरुषों के अपस्मार के रोग में शांति मिलती है।

कुम्कुमादि चूर्ण—केशर ३ माशे, सनाय ६ माशे कूठ बच, ब्राह्मी और शंखाहुली एक २ तोला। सब कपड़छान बनालो। मात्रा चार माशे पर्य्यन्त शीतल जल के साथ दोनों समय सेवन करने से योषापस्मार उन्माद और मृगी रोग का निष्कासन होता है।

ब्राह्मीवटी—केशर, चाँदीभस्म, मकरध्वज, मोती भस्म शतपुटित अभ्रक भस्म और सुवर्णमाक्षिक भस्म तीन २ माशे, श्वेत बच ६ माशे, कूठ, ब्राह्मी की पत्ती और शङ्खाहुली एक २ तोला सब औषधियों को महीन पीस अश्वों के साथ ब्राह्मी के ताजे रस में तीन दिन खरल करके चना बराबर गोली बना छाया में सुखाले। शीतल जलके साथ एक २ गोली दोनों समय सेवन कराने से उन्माद, मृगी और योषापस्मार रोग दूर होता है। नष्ट हुई स्मरणशक्ति पुनःउत्पन्न होती है।

हिस्टेरिया (योषापस्मार)

(लेखक—पं० सत्येश्वरानन्द शर्म्मा, लखेड़ा-आयुर्वेद-विशारद ।

इस रोग के विषय में विशेष २ मत भेद विद्यमान हैं कोई २ चिकित्सक इसको वायु रोग के अन्तर्गत मानते हैं और कोई कोई इसको आयुर्वेदीय किसी भी रोग के अंतर्गत मानना उचित नहीं समझते, बल्कि उनकी समझ में यह रोग ताउन की तरह एक स्वतंत्र रूप में यूरोपकी चिकित्सा विधि के भारत में प्रचलन के साथ २ उसी के द्वारा मालूम किया गया है, इस लिये इसको नवाविष्कृत स्वतन्त्र रोग मानना ही उचित है। परंतु अधिकांश में विद्वान् वैद्यों का समुदाय इसको अपस्मार रोग के अंतर्गत स्वीकार करते है। इसीलिए इसका एक स्वतंत्र नाम "योषापस्मार" दिया गया है।

जिनको अक्सर इस रोग की चिकित्सा करने का अवसर मिला होगा। उनको मालूम हुआ होगा। कि इस रोग के अधिकांश कारण अपस्मार रोग के समान मनको बिगाड़ने वाले हुआ करते हैं। रोगिणी की रोगावस्था के लक्षणों के प्रति विशेष मनोयोग पूर्वक विचार करने से भी रोगिणी की अवसन्नता, वाक्शक्ति रोध तथा अनिश्चित कार्य्यपरम्परा आदि को देखकर इस विधान में कुछभी सन्देह नहीं रहजाता, कि यह अपस्मार ही का रूपांतर मात्र है। परंतु इस रोग के कुछ विशेष लक्षण—यथा समान वायु के रुक जाने के कारण उसका अन्त्रों तथा उसके निकट वर्ति यन्त्रों पर ऊपर की तरफ जो जोर से दबाव पड़ने के कारण बीच २ में एक विशेष प्रकार का शूल होगा और इसी के कारण गले और छाती के जकड़ जाने से सांस का बहुत धीमे और कष्ट के साथ निकलना, गले का रुकजाना और जोर से दंदियां पड़जाना आदि जो सिर्फ स्त्रियों में ही हुआ करते हैं, पुरुषों में बहुत ही कम होते हैं या नहीं होते। इसी लिये इस रोग का एक स्वतन्त्र नाम "योषापस्मार" निर्धारित किया गया है।

रोगाक्रमण की अवस्था—यह बात हम पहले ही बता आये हैं, कि यह रोग स्त्रियों में ही अधिक हुआ करता है, पुरुषों में बहुत कम होते दिखाई देता है। यह रोग प्रायः जवानी में ही हुआ करता है अर्थात् १२ वर्ष से ४० वर्ष तक की आयु तक होते देखा गया है। कभी कभी ५० वर्ष की आयु में भी इसके होने की सम्भावना रहती है। बहुत सी स्त्रियां बहुत दिन तक इस रोग को भोग कर संतान का सुख देखने के अनन्तर उनका यह रोग स्वयं ही निवृत्त हो जाता है। देखा गया है, कि जिन बालिकाओं का लालन पालन विलास के साथ होता है, और इसी से उनके निम्न भाग में अधिक मेद बढ़जाने के कारण उससे रजःप्रवर्तक अङ्गों के शिथिल पड़जाने से रक्त के अस्वाभाविक

विकृत भाग के अधिक परिमाण में रक्त में मिश्रित रहने के कारण उनके हृत्पिण्ड आदि दूषित प्रभाव पड़ने से यह रोग होते देखा गया है।

योषापस्मार के कारण—स्त्रियों के ऋतु ठीक २ न आने से या गर्भाशय की किसी प्रकार की विकृति से पति का प्रेम पाने की लालसा पूर्ण न होने या पति के अकारण तिरस्कार करने से अथवा घर गृहस्थी में सास ननद आदि के असह्य बुरे कटाक्षों के कारण हमेश दुश्चिन्ता में मग्न रहना पति के सहवास सुख से वञ्चित रहना, युवावस्था आरम्भ होने के पहिले विधवा होजाने के कारण अधिक मानसिक दुःख भोगना। पुरुष सहवास की उत्कट आकाँक्षा को जन्माने वाले अश्लील नाटक देखने या किस्से कहानियां पढ़ना तथा मदोन्मत्त स्त्री पुरुषों के सहवास सुख सम्बन्धि आचरण देखने या बात चीत सुनने से अत्यधिक मानसिक उत्तेजना उपस्थित होने पर उसके अनुसार काम करने का सुभीता न मिलने से, शारीरिक परिश्रम बिलकुल न करना तथा रात दिन विषयोपभोग की चिंता में लिप्त रहने से अम्लपित्त रोग के चिरस्थायी होजाने पर, कोष्ठबद्धता कब्ज की शिकायत बनी रहने से, मलमूत्र आदि के वेग को बल पूर्वक रोके रहने से, मेद धातु के अधिक बढ़जाने के कारण स्त्री जननेन्द्रिय के शिथिल पड़ जाने से तथा इसी प्रकार के और २ हृदय और मस्तिष्क की क्रियाओं में विकृति उत्पन्न करने वाले कारणों का अधिक उपयोग करना इसरोग के प्रधान मूल कारण हुआ करते हैं।

योषापस्मारका दौरा पड़ने का समय—अपस्मार (मृगी) रोगकी तरह इस रोगका दौरा ७-१५-२० दिन या मास दो मास या इससे भी न्यूनाधिक दिनों में पड़ते देखागया है। कभी २ दिन रात्रि में २ बार या एकदिन में २—३ बार तक तथा कभी२ दो २ साल के अनंतर से पड़ते देखा गया है।

रोग को पुराना पड़जाने पर यह ठीक निश्चित नहीं बताया जा सकता, कि दौरा कब पड़ेगा, परंतु रोग के आरम्भ में मेघोदय (आसमान पर बदली चढ़ने) के समय जिस दिन सब से अधिक शीत पड़े या अधिक गर्मी पड़े उस दिन तथा अधिकांश स्त्रियों को ऋतुकाल में या अधिक मानसिक उद्वेग तथा दुश्चिन्ताओं से दुःखित होने पर दौरा पड़ते देखा गया है।

दौरा पड़ने के साथ२ लक्षणा वलि का विकाशः—इस रोग के आरम्भ होने के सबसे पहिले छाति में थोड़ा २ दर्द मालूम होता है, जम्भाई आती है, और मनमें थोड़ा २ करके जैसे २ ग्लानि व तन्द्रा होती जाती है, वैसे ही वैसे क्रमशः चैतन्य शक्ति कम होते२ एकाएक रोगिणी मूर्छित होजाती है। इस मूर्छित अवस्था में आत्मानुभव शक्ति बिल्कुल लुप्त नहीं होती और यह अचेतन अवस्था कभी २ थोड़ी देर तक और कभी २ बहुत देर तक हुआ करती है।

यद्यपि किसी २ को दौरा पड़ते ही एकदम सारे के सारे लक्षण उपस्थित होजाते हैं। किंतु साधारणतः दौरा पड़ने के आरम्भ में सबसे पहिले दूषित वायू (बुखारात) के शिर की तरफ भार पड़ने से शिर में बोझसा मालूम देता है।

मस्तिष्क के कोण प्रांतों में (शंख कास्थि के ऊपर के भाग) में बड़े वेग से धमनी सञ्चारद्वारा रक्त प्रवाह उपस्थित होता है। फिर उसके साथ २ छाती तथा उसके आभ्यन्तर स्थित कोमल यन्त्र

(हृत्पिण्ड, फुफ्फुस तथा आमाशय) में रुकी हुई वायु का दबाव पड़ने से गला रुक जाता है। जिससे बोलने की चेष्टा करने पर भी रोगिणी कुछ बोल नहीं सकती। यहां तक कि उस समय उसके मुंह में थोड़ासा जल डाला जाय तो वह भी गले से नीचे नहीं उतरता। कभी सांस जोरर से चलने लगता है और कभी बिल्कुल धीमा पड़जाता है। इसी प्रकार हृत्पिण्ड और नाड़ी की गति कभी जोर २ से और बीच २ में बिलकुल मृदु होजाती है। आमाशय अथवा तन्निकटस्थ अन्त्रों से रुके हुए वायू के दबाव से बीच २ में अधिक शूल उपस्थित होता है। जिसके कारण रोगिणी बीच २ में छटपटाती है और एक अव्यक्त चीत्कार शब्द करती है। इस बेबसी में उसको यत्किंचित् संज्ञा होते हुए भी वह हाथ पांव को इधर उधर मारती है और उसके शरीर में पहिने हुए वस्त्र उघाड़े हो जाते हैं। कभी २ दौरे के समय रोगी को बड़े वेग से कम्प होता है और वह अपने चारो तरफ बड़े गौर से आंखें फाड़ फाड़ कर देखती है। इस अवस्था में उसके जबाड़े निष्क्रिय जैसे होकर उसकी दंदिया पड़ जाती है और किसी २ युवती के हाथ पांव तक मुड़ जाते हैं।

दौरे के समय के विशेष लक्षण:— दौरा पड़ने के समय सब रोगिणियों को ही या हर समय इस प्रकार की बेहोशी होती हो, यह बात नहीं है, बल्कि बहुतों में विविध प्रकार के मनोविकार या बुद्धि भ्रंश हो जाया करती है, यथा—बिना किसी सबब के खुश होना या दुःखित होना। जब हंसने का कोई विशेष कारण न हो उस समय खिल खिला के हंसना और जब हंसी खुशी की यथार्थ बात हो रही हो या खुशी मनाने का समय हो उस समय दुःखित जैसे मुंह बिगाड़ कर बैठे रहना। बिना किसी सबब के विलाप करना, बेजा बात (अनाप सनाप जो कुछ मन में आवे) कहना, अपने सम्बन्धि या दोस्तों को झूठा ही दोष देना, और वह भी इतना, कि मानों उन्होंने कोई बहुत बड़ा अपराध किया हो, अथवा रोगिणी के मन में ऐसा विचार उठना, कि लोग मेरे ऊपर बहुत नाराज हुए हैं। इसके लिए जो कोई सामने मिले उससे बड़ी नम्रता पूर्वक क्षमा प्रार्थना करना आदि भ्रम के लक्षण दिखाई देते है। कभी २ रोगिणी में ऐसी कठोरता दिखाई देती है, कि जिससे लोग यह खयाल कर विशेष भय भीत हो जाते हैं, कि रोगणी को भूत पिशाच की परछांई पड़ गई है। इस रोग में कोई २ रोगिणी तो जोर जोर से हाथ पांव पटकती है और कोई २ बिल्कुल निश्चल होकर अचेतन दशा में पड़ी रहती है।

दौरा छूटने के बाद के लक्षण:— इस रोग का दौरा छूटने के बाद भी रोगिणी में एक विशेष प्रकारका पागलपन जैसेदिखाई देताहै। वह किसी एक विशेष आवश्यक काम में मन को स्थिर नहींकर सक्ती परन्तु अनावश्यक मामूलीकाम में एकाग्र होकर लग जाती है। उसको कभी २ पेट में कोई गोल सी चीज नीचे की तरफ से ऊपर को उठती हुई जैसे मालूम देती है। उसकी स्पर्श शक्ति बहुत प्रबल हो जाती है, यहां तक कि उसके शरीर पर थोड़ा सा किसी मृदु चीज का स्पर्श लगते ही वह चौंक उठती है। वह उजाला और जोर के शब्द को नहीं सह सक्ता और शरीर में कभी एक और कभी किसी दूसरे भाग में दर्द बतातो है। इस रोग में किसी २ को पुरुष सहवास की इच्छा बहुत प्रबल हो जाती है।

प्रारम्भिक चिकित्सा —दौरा पड़ते ही रोगिणी को होश में लाने के लिये सब से पहिले "चूना, नौसादर' और कपूर" मिला कर भरी हुई बोतल को सुंघाना या सुगन्धित कोई और नस्य सुंघाना चाहिए। यदि रोगिणी के शिर में अधिक रक्तसञ्चार होनेके कारण उसका मस्तिष्क अधिक उष्ण हो, तो सबसे पहिले "महा चन्दनादि तैल" या इसी प्रकार का ठंडा, सुरभित, स्नायुओं को बल देने वाला तैल उसके मस्तिष्क कनपटियां और शिर पर खूब तर कर के मलकर ऊपर से गुलाब जल छिड़क कर मलना चाहिए फिर इसके बाद पूर्वोक्त के अनुसार कोई सा भी नस्य सुंघाना अधिक लाभ दायक देखा गया है।

पेट में शूल का वेग अधिक हो या पेट में गोला जैसे नीचे से ऊपर की तरफ उठता हुआ विकल कर रहा हो, तो उस के ऊपर गरम पानी की बोतल का सेक अथवा तार्पिनके तेलको होले २ पेट के ऊपर मलना चाहिए।

रोगिणी के जबाड़े निष्क्रिय होकर ज़ोर से ददियां पड़ गई हों, तो दोनों जबाड़ों के प्रांत भाग पर कोई सा भी तैल (प्रसारणि तैल या महानारायण तैल) मर्दन करने के अनन्तर रोगिणी की नासिका को और से बन्द कर रखना चाहिए। इस प्रकार करने से अतिशीघ्र ही बिना किसी कष्ट के उस का मुख खुल जाता है। यदि इस प्रकार करने से भी रोगिणी होश में न आवे तो "महानारायण तैल आदि को गले से नीचे सारे शरीर में मला कर रोगिणी को खूब गरम पानीसे भरे हुए टब में कमर तक बैठा देना चाहिए और उस के शिर तथा मुख पर गुलाब, या केवड़े के अर्क के छींटे अथवा इनके न मिलने पर शीतल जल के छींटे मारना चाहिए। इस क्रिया से अतिशीघ्र ही रोगिणी को रोगमुक्त होते देखा गया है। परन्तु यह बात ध्यान में रखनी चाहिए, कि इस क्रिया को निर्वात स्थान में करना चाहिए। रोगिणी को गरम जल के टब से निकालने के बाद अच्छी तरह सूखे अंगोछे से उस के अंगों को पोंछ कर फिर तेल मलकर कपड़ा पहिनाने के अनन्तर खुली वायु में लाना चाहिए।

बहुत सी रोगिणियों को हींग की धुनी सुंघाने से तथा घी में भुनी हुई हींग २ रत्ती मात्रामें सौंफ के अर्क या चारों अर्क के साथ खिलाने से रोग मुक्त होते देखा गया है। यह प्रयोग अधिक मेदस्विनी तथा रजोदोष (माहवारी के कम आने) के कारण हुए योषापस्मार रोग में विशेष गुण दायक सिद्ध हुआ है। "आमोद वटी" या "आमोद बिन्दु" नामक औषधियां इस रोग पर जादू का जैसे असर रखती हैं।

विशेष अनुभूत लाक्षणिक चिकित्सा :— यह रोग विशेषतः "वात कफ" धातु प्रधानदेखा गया है। इस लिए इस रोग में ऐसी औषधियां व्यवहार करना चाहिए। जो अधिक उष्ण न हों; पर वात कफ को प्रतिस्थ करने वाली हों व्यवहार करना चाहिए। यदि रोगिणी मेदस्वि हो, तो "महानारायण तैल" "त्रिशति प्रसारणी तैल" आदि को उस के सारे शरीर पर मालिश करना चाहिए और भीतरसे सेवन करने के लिए "कृष्णा-चतुर्मुख रस" "योगराज गुग्गल" "बृहत् पूर्णचन्द्र रस" या "अग्नितुण्डि वटी" आदि पौष्टिक, मेदनाशक, वातकफ नाशक तथा पित्त को न बढ़ाने वाली औषधियां व्यवहार करना चाहिए।

दुर्बल शरीर वाली रोगिणियों को "ब्राह्मीघृत" "पैशाचिक घृत" "सुपारि पाक" आदि सेवन कराना चाहिए; तथा बाहर से शरीर पर

मलने के लिए "लक्ष्मी विलास तैल" महा चन्दनादि तैल, हिमसागर तैल आदि व्यवहार करना चाहिये।

स्मरण रहे इन तेलों को शिर पर रख कर रात करके नहाना और सारे शरीर पर भी तथा रोगिणी यदि कमजोर न हो, तो उसको अवस्था के अनुसार (तैल मलने के अनन्तर) ईष दुष्ण या शीतल जल से स्नान कराना चाहिए। विशेष करके रोग का दौरा छूटने के अनन्तर पैरों पर तेल मलाकर उष्ण जल का सेंक करा देने से उसकी तबीयत स्थिर होजाती है।

यदि रोगिणी को ऋतु बिल्कुल ही न आते हों या कम आते हों तो उसको "कासीसादि वटी" अजमोदादि वटी तथा इसी प्रकार के अन्य रजः प्रवर्त्तक कषाय चूर्ण आदि व्यवहार कराने चाहिये। ऊपर लिखे तैल अवस्था के अनुसार अवश्यमेव मलाने चाहिये।

विशेष उद्वेग या शोक जन्य रोग हो, तो यथा सम्भव मस्तिष्क को स्थिर रखने वाली तथा पुष्ट करने वाली पूर्वोक्त औषधियां सेवन कराने के साथ २ रोगिणी के मनोविनोद तथा प्रफुल्लता के लिए मनोहर धार्मिक कथा उपाख्यान आदि सुनाने चाहिये और उसको अलब्ध वस्तु की प्राप्ती के लिए ढाढस दिलाना चाहिये। देखा गया है, कि इस प्रकार रोगिणी के चित्त को प्रकृतिस्थ करने का कौशल प्रयोग करने से उसका रोग शीघ्र ही समूल चला जाता है।

कभी २ रोग के पुराने पड़ जाने पर विशेष प्रकार के वात रोग, हाथ पैरों का जुड जाना आदि) होते हुए देखने में आये हैं। विशेष करके उन रोगिणियों को जिनको डाक्टरी चिकित्सा के समय अधिक पैरुपीन या पेरुपीन घटित औषधियां व्यवहार कीगई हों उनको स्नायुगत वात[illegible] रोग अधिक होते देखे गये हैं। ऐसी अव[illegible] होने पर स्निग्ध, उष्ण, वात [illegible] [illegible] प्रयोगों से लाभ [illegible] [illegible] में से किसी एक वात नाशक तैल का मर्दन व्यवहार करने के साथ [illegible] स्वेद आदि स्वेद भी व्यवहार करने चाहिये।

यदि रोगिणी को अधिक कब्ज हो, तो सबसे पहिले कष्टाकुण मृदु विरेचन [illegible] प्रकार निर्बलता और ग्लानि न करने वाली औषधि व्यवहार करनी चाहिये। यहां तक कि यदि कब्ज की शिकायत नित्य प्रति की हो और कोष्ठ आदि कठिन हो तब भी एक दिन में जिससे ५-१० जुल्लाब लाकर रोगिणी अधिक दुर्बल होजावे, ऐसी तीव्र विरेचक औषधि व्यवहार न करनी चाहिये। विशेषतः जयपाल घटित विरेचन अन्ततः अधिक मात्रा में कभी भी न देने चाहिये। बल्कि ऐसी "सारक" औषधि अवस्था के अनुसार नित्य रात्रि को सोते समय खिलाना चाहिये, कि जिसके सेवन से प्रातः काल २—१ दस्त साफ आजावें या कमसे कम पाखाना साफ खुलकर होजावे।

इसके लिए भोजन के अनन्तर अवस्था के अनुसार २॥तो० मात्रामें समान भाग सौंफका अर्क या शीतल जल मिलाकर द्राक्षाम्लवत्या समयारिष्ट व्यवहार करना विशेष लाभ प्रद सिद्ध हुआ है।

पथ्यः—इस रोग में लघु पाक, पौष्टिक पथ्य व्यवहार कराने चाहिये।

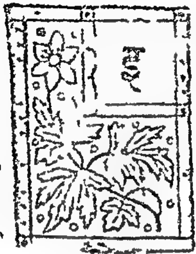
विशेष पथ्यों में से हमारी अनुवादित "सरल आयुर्वेद शिक्षा" में बताये हुए गोधूममण्ड मुनक्के की खीर और दूध सूजी आदि व्यवहार करना चाहिये। ×

+ इस लेख का सर्वाधिकार लेखक की लिखित "सरल आयुर्वेद शिक्षा" के लिये रक्षित है

— लेखक

योषा हृन्मोह

लेखक—श्रीमान् पण्डित हरिशङ्कर जी शर्म्मा वैद्यराज प्रोफेसर बनवारीलाल पाठशाला देहली



स लेख में निम्न लिखिति विषयोल्लेखन से क्रमशः विचार किया जायगा ।

(१) पूर्व वक्तव्य ।

(२ नामकरण, अपस्मारादि नामों का निराकरण ।

(३) निदान पञ्चक तथा विशेष वक्तव्य ।

(४) चिकित्सा ।

(पूर्व वक्तव्य)

हिस्टेरिया नाम से सुप्रख्यात व्याधि के नाम करण पर निदानादि प्रदर्शन करते हुए विचार करने में आज हम प्रवृत्त हुए हैं, नाम करण, प्रमाण सत्तात्मक वस्तु का होता है, प्रमाणत्रय से बाह्य संसार की अनन्त वस्तुओं में से कोई वस्तु नहीं हो सकती, अनन्त नाम रूप विषयात्मक जगत में नाना विधि अनन्त नाम रूप कल्पनायें दृग्गोचर होती हैं, जिनका यथातथ्य सर्वात्मक ज्ञान अनन्त सृष्टि के स्रष्टा सर्वज्ञ को है, किंवा ज्ञान चक्षु, तपश्चन, ऋषियों पर वे ज्ञान विज्ञान आविर्भूत होते हैं, उन अनन्त विषयों का सर्व साधारण को ज्ञान कराने के लिये वैदिक विभाग विनिर्मित है उसी वैदिक विभाग में आयुर्वेद का विषय समुपदिष्ट है ऋग्वेदोपवेद आयुर्वेद का विज्ञान कराने के लिये सदाश्रयीभूत ब्रह्म संहिता, अश्विनी कुमारसंहिता, अग्निवेशसंहिता, भेलसंहिता, जतुकर्ण संहिता, सुश्रुत संहिता, निमिसंहितादि अष्टाङ्गप्रतिपादक अनेक संहिताओं का निर्माण हो चुका है, दैव दुर्विपाक से हम भाग्य अभागियों को अग्निवेश संहिता, सुश्रुत संहितादि दो तीन संहिताओं के ध्वंसावशेष भाग प्रत्यक्ष देखने में आरहे हैं, उन ही संहिताओं से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर के आयुर्वेदीय चिकित्सक काय चिकित्सादि मुख्य अङ्गों में अन्य पैथियों को अपने विज्ञान से चकित कर रहे हैं। जिन मूल तत्वों पर पिण्ड और ब्रह्माण्ड की समता, विषमता निर्भर है, उन मूल तत्वों का यथावत् पूर्ण विज्ञान अन्य वैद्यक पैथियों को अभी तक अप्राप्त है, मूल तत्वों का ठीक २ विज्ञान न होने से जिनके चिकित्सा शास्त्र के वैज्ञानिक सिद्धान्त सर्वदा उलटते पुलटते रहते हैं और किसी

१—इस लेख में अवकाश न होने पर भी शीघ्रता से शास्त्र और शास्त्राधार युक्त युक्ति बल को लक्ष्य करते हुए हिस्टेरिया रोग पर विचार कर दिया है, नवीन सा विषय होने के कारण त्रुटियां बहुत होंगी, पाठक शास्त्र युक्ति पुरस्सर संशोधन लिखेंगे तो सानुग्रह स्वीकार करते हुए यह लेख भी शुद्ध कर दिया जायगा कृपया अपनी २ सम्मति इस लेख पर अवश्य भेजें ।

यथार्थ अन्तिम विनिर्णय पर न पहुंचने से लोक की हानि के कर्ता होते हैं। आयुर्वेद में स्वास्थ्या स्वास्थ्य सम्बन्धी इन मूल तत्वों पर गम्भीर गवेशणा से विज्ञान मय विचार प्रदर्शन कर दिया है. संसार में अनेक देश, उनका जल वायु, फिर उनमें भूत, भविष्यत, वर्तमान काल से होने वाले नाना प्रकार के रोग प्राणियों के कर्म भेदों की असख्यता से होने वाले आकार प्रकार भेद मद अनेक रोग होकर सख्या तीत होते हैं, परं दोष दूष्यादि के संसर्ग से भी नाना विधि रोग हो जाते हैं यथाः—

स एवापरि सख्येया भिद्यमाना भवन्ति हि
रुजा वर्ण समुत्थान स्थान संस्थान नामभिः
(च० सू० स्था०)

संसर्गाद्रस रुधिरादि भिस्तथैषां,
दोषांस्तु क्षय समता विवृद्धि भेदैः।
आनन्त्य तर तम योगतश्च यातान्,
जानीयादवहित मानसो यथा स्वम्।
(वा० सू० स्था०)

इस प्रकार अनेक कारणों से रोगों की अनन्तता होती है, अनन्त रोगों का अनन्त निदान, लक्षण, चिकित्सादि लिखने के लिये अनन्त पुस्तकों की आवश्यकता उपस्थित हो सकती है, और उन के पढ़ने के लिये अनन्त काल अपेक्षित हो सकता है, पर यह ज्ञान परिपाटी प्रशंसनीय नहीं हो सकती, संसार के चिकित्सा शास्त्र में ऐसी कोई पुस्तक नहीं है और न हो सकती है जिस में अनन्त रोगों का अनन्त प्रकार से वर्णन कर दिया गया हो। मूल तत्व से अनभिज्ञ पुरुष वृक्ष के असख्य पत्रों पर पानी छिड़कता हुआ अपने असली अभीष्ट वृक्ष परिपोषणकी सिद्धि को नहीं पहुंच सकता और जिसने यह जान लिया है कि वृक्ष का मूल ही एक तत्व है । है कि जहां जल परिषेचन करने से अनेक शाखा प्रशा०ा और असख्यात पत्र हरे भरे प्रफुल्लित रह सकेंगे, वही वृक्ष की रक्षा करने में पूर्ण समर्थ हो सकेगा, इस लिये आवश्यकता हुई कि स्वास्थ्या स्वास्थ्यके अनन्त शाखा प्रशाखामय आकारवान् वृक्ष मूल क्या २ है जिन के द्वारा यह पिण्ड और ब्रह्माण्ड का वट वृक्ष आरोग्य रह सकेगा और उन भूत तत्वों में किस प्रकार की विकृतिहोने से उभयाण्ड विकृत हो जाते हैं, आयुर्वेद के ग्रन्थों में इन मूल तत्वों की गम्भीर गवेषणा से अन्वेषणा कर के वात पित्त, श्लेष्मा नाम से बताया है इनको ही त्रिधातु त्रिदोषादि नामों से पुकारते हैं । स्वास्थ्या स्वास्थ्य सम्बन्धी यावन्मात्र कल्पना जो कुछ भी हो सकती है वह इन तीन तत्वों का अतिक्रमण नहीं कर सकती, इन तीन तत्वों के गर्भ में वे सब अनन्त कल्पनायें अर्ण नाभि के गर्भ में सूत्र समान सन्निविष्ट हैं, सिद्धान्त यह है कि अनन्ताकारों के मूल रूप दोषत्रय का विज्ञान कर लेने से स्वास्थ्यता और रोग सम्बन्धी असंख्यात जटिल समस्यायें सहज में ही हल हो जाती हैं जैसा कहा है यथा—

तत्र व्याधयोऽपरि सख्येया भवन्त्यति बहुत्वात्, दोषास्तु खलु परि सख्येया भवन्त्यति बहुत्वात्
(च० वि० स्था०)

अर्थात्—संसार में व्याधियां इतनी अधिक हैं कि उन की गिनती नहीं हो सकती, दोषो की गिनती हो सकती है क्यों कि वे बहुत नहीं हैं

शारीरिक दोषों के लिये दोषत्रय का ज्ञान जिस प्रकार आवश्यक है मानसिक स्वस्थता और रोगों के लिये उसी प्रकार गुण त्रय (सत्व, रज, तम,) का ज्ञान आवश्यक होता है, आ-



हिस्टीरिया प्रहसन

र्यों ने निर्दिष्ट किया है :—

वायुः पित्तं कफश्चेति शारीरो दोष संग्रहः।
मानसः पुनरुद्दिष्टो रजश्च तम एव च ॥ १ ॥

सर्वधातु संकर विभिन्नताधि,
विकार संधा बहवः शरीरे।
मते पृथक् पित्त कफानिलेभ्यः,
आगन्तव स्त्वेव ततो विशिष्टाः॥२॥(च०सू०स्था०)

दोषत्रय का ज्ञान विज्ञानमय विवेचन आयुर्वेदीय संहिताओं में सरलता से साधारण ज्ञान से ही सर्व साधारण के समझने योग्य बड़ी सरलता और उत्तम शैलीसे किया है, जिस के द्वारा त्रिदोष ज्ञान हो जाने से अनन्त पदार्थ विवेचन हो कर अनायासेन स्वस्थता, रोग विज्ञान, चिकित्सादि का साधन क्रम सुलभता से सिद्ध हो जाता है,

दोषों के द्वारा,रुजा, वर्ण समुत्थानसंस्थादि नानाविधि भेदों से होने वाले व्याधियों का स्थूल रूप से नामोल्लेख, लिङ्गनोल्लेख, लिंगोल्लेखादि विकारक व्यवस्था विज्ञान भी दिखा दिया है।

यथा ज्वर संग्रहणी आदि नाना स्थानों में नाना विधि भेदों से होने वाले अनेक प्रधान २ रोग । अपरिसंख्येयत्व में व्यवहार की सिद्धि नहीं हो सकती अतःव्यवस्था करना आवश्यक समझ कर स्थूल रूप से विकार संग्रह का परिगणन भी दिखा दिया है। और आगे के लिये रोग के नाम निर्देश करने का मार्ग भी खोल दिया है, क्यों कि सम्पूर्ण रोगों का नामकरण शास्त्र में कर दिया हो ऐसी बात नहीं है, हां मूल तत्व दोषत्रय का वर्णन ऐसा कर दिया है कि उनके द्वारा रोग का निश्चय बड़ी सुगमता से वैद्य कर लेवे और पूर्व नाम करण परिपाटी को लक्ष्य करते हुए रोग का नूतन नाम निर्देश करता हुआ लोक में भी उसे प्रख्यात कर देवे। शास्त्र ने स्पष्ट कहा है:—

विकार नामा कुशलो न जिह्रीयात्कदाचन।
न हि सर्वं विकाराणां नामतोऽस्ति ध्रुवास्थितिः॥

नवीन विकार को देख नाम न जान कर वैद्य लज्जित न होवे, किंतु दोषानुसार कल्पना करता हुआ निर्दिष्ट मार्ग से चिकित्सा में प्रवृत्त होजावे।

वस्तुतः हिस्टेरिया रोग के विषय में भी आज यद्यपि वैद्यगण दोषज्ञान से उसकी साङ्गोपाङ्ग चिकित्सा में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हुए कीर्तिता आदि प्राप्त कर रहे हैं पर उसके नाम करण के विषय में अनेक मत भेद हैं जो कि आक्षेपक, अपतन्त्रक, योषापस्मार, उन्मादादि नामों से सम्बोधित हैं। आज उसी हिस्टेरिया रोग के सम्बन्ध में यथा बुद्धि बलोदय निम्न लिखित विचार निर्दिष्ट हैं।

(नामकरण तथा अपस्मारादि नामोंका निराकरण)

मोहनाद् हृदयस्यायं योषा हृन्मोह उच्यते।
हृत्पीडनादसौ व्याधिः योषोत्पीडकः स्मृतः॥१॥
अपतन्त्रक लिंगानि, दृश्यन्ते व्याधि पीड़िते
तज्जातेरपि जन्मत्वात् स्मृतो योषापतन्त्रकः॥२॥

हृदय को मोहन (बेहोश) करने से योषा हृन्मोह रोग;

(२) हृदय को पीडन (दबाने) करने से योषोत्पीडन रोग,

(३) अपतन्त्रक के लक्षण मिलने से (तथा कुछ और भी विभिन्नता होने से) तथा उसका जाति में जन्म होने के कारण योषापतन्त्रक रोग इन तीन नामों से इस व्याधि को हमने निर्दिष्ट किया है जिस प्रकार रोगों का राजा अकेला राज रोग, राजयक्ष्मा, शोष, क्षय नामों से पुकारा

जाता है उसी प्रकार हिस्टेरिया रोग के योषा हृन्मोह, याषोत्पीडन, योषापतन्त्रक नाम हमने रखने समुचित समझे हैं, तीनों ही नाम सार्थक तथा कारण पुरस्सर हैं।

(विशेष वक्तव्य) योषामोह नाम रखने से भी काम चल सकता, परन्तु इस रोग में प्रधान चेतना स्थान हृदय पर आक्रमण मुख्यत्वेन होता है अतः इस विषय द्योतना के लिये योषा हृन्मोह नाम रक्खा गया है, अपतन्त्रक नाम से भी किसी अंश में काम निकाला जा सकता था, परन्तु अपतन्त्रक गत लक्षण इस रोग में मिलने पर भी उन अन्य आश्चर्य युक्त लक्षणों की सुस्पष्टत्वेन प्रतीति नहीं होती थी, अतः योषापतन्त्रक नाम देना ही योग्य समझा।—

यद्यपि योषा शब्द छोड़ कर हृन्मोह, हृत्पीडन अपतन्त्रक नाम देकर व्यवहार सिद्ध होने में कोई हानि नहीं होती क्यों कि अपने यहां दोषवश से सब ही विवेचना पूर्णतया हो जाती है, पर वर्तमान समय में यह रोग स्त्रियों में ही अधिकतया विचित्र २ विविध रूपों से हो रहा है, तथा गर्भाशय का सम्बन्ध भी इसी रोग से सम्बद्ध है क्यों कि अपान वायु के काम करने के प्रधान स्थान पक्वाशय, गर्भाशय, मूत्राशय आदि हैं इन हेतुओं से नाम कारण के साथ में योषा शब्द देना उचित समझा है और यह रोग भी मुख्यतया अपान. वायु के सम्बन्ध से ही उत्पन्न होता है।

जिन बालकों को या पुरुषों को यही रोग होता है वहां केवल हृन्मोह, अपतन्त्र नाम से भी व्यवहार चल सकेगा, अथवा " छत्रिणो गच्छन्ति ,, इस न्याय से शेष हृन्मोहादि नाम से निर्दिष्ट कर लीजिये। हृन्मोह—रोग अच्छी प्रकार से वात व्याधियों में चरक संहिता में यह दिया गया है। अतएव हृन्मोह शब्द सर्वथा उपयुक्त है। हृत्पीडन शब्द में पीडन का अर्थ दाबना समझिये, पीडा शब्द में वेदना मात्र का ग्रहण होने से यहां दाबने की पीडा अभिहित है, इस रोग में वायु का गोला स्वस्थान (पक्वाशय, गर्भाशयादि) से उठ कर हृदयादि को घोंटना चाहता है गले को पकड़ कर दबाता है, गले में अटकता है, यह अनेक रोगियों में प्रत्यक्ष देखा गया है।

हिस्टेरिया रोग अपस्मार रोग की जाति में नहीं है अपस्मार में उत्तम प्रवेश फेनोद्गमादि चिन्ह भली भांति होते हैं, पर इस रोग में अपस्मारवत् चिन्ह नहीं होते, इस में हृदयादि को वायु का गोला अच्छादनसा करता है, " हृदयं चेतना स्थानमुक्तं सुश्रुत देहिनाम् ,, हाँ चेतना स्थान हृदय पर आक्रमण होते हुए विसंज्ञत्वादि अन्य अनेक चिह्न देखने में आते हैं अतः यह रोग अपस्मार जाति से भिन्न जाति का है फेनोद्गमादि का तो कभी दर्शन भी नहीं होता इस रोग में स्मृति भी देखी गयी है हृदय के पीडन की तारतम्यता पर स्मृति की सत्ता हो जाया करती है। पर अपस्मार में स्मृति का नाश सर्वथा हो जाता है। किसी रोगी में भी स्मृति सत्ता नहीं होती।

हां एक बात विशेष स्पष्टता से यहां पर कहनी है कि अपस्मार में भी हृदय दोषावृत होता है और इस रोग में भी हृदय दोषावृत होता है तो पुनः इसे अपस्मार की जाति में क्यों न रक्खें, और हमारा भी एक बार यही विचार हुआ कि हम इस रोग को योषापस्मार नाम देवें जैसा कि कुछ काल से नाम करण चला आता है पर यह बात समझ में नहीं आयी, कारण, अपस्मार में—

स्मृतेरपगमं प्राहुरपस्मारं भिषग्विदः
तमः प्रवेशं बीभत्स चेष्टं धी सत्व संप्लवात्
(चरक० चि०)

अर्थात् अपस्मार में दो लक्षण मुख्यता से होते हैं (१) तमः प्रवेश (२) बीभत्स चेष्टा (फेनोद्गमादि)

पर हिस्टेरिया रोग में बीभत्स चेष्टा का तो सर्वथाभाव है जो कि अपस्मार का प्रधानलिङ्ग है जो जिस का प्रधान लिङ्ग है वही उस में न रहे तो उस को जाति में उसे कैसे बैठाल देना चाहिये, लोक में भी प्रत्यक्ष देख लीजिये, विवाहादि व्यवहार-सहभोजादि में जाति विशिष्टत्व का पर्यालोचन होता है. रहा तमः प्रवेश, उस की सत्ता कितने ही अंशों में दोनों रोगों में विद्यमान होती है परहिस्टेरिया में अङ्गोन्नमन, हास्य, कूजन रोदनादि प्रधान तया देखने में आते हैं जिन का कि अपस्मार में सर्वथा अभाव है वात व्याधि में जिन का पूर्णतया समावेश है अतः इसे अपस्मार की जाति में रखना सर्वथा अनुपयुक्त है। यह रोग वात व्याधि की पंक्ति में आसन देने योग्य है।

इस रोग में मूर्च्छा तो देखने में आती है अतः इस रोग को मूर्च्छा की जाति में रखने में क्या हानि है, मूर्च्छा पित्तप्रधान रोग है यह वात प्रधान रोग है, मूर्च्छा में तमः प्रवेश है पर इस में रजो गुण सहित वायु का आक्रमण है मूर्च्छा के सम्पूर्ण रोगियों में चेतना का सर्वथा अभाव होता है इस रोग के बहुत से रोगियों में चेतना का अंश विद्यमान भी रहता है मूर्च्छा शोणित मद्यादि के योग से भी होती है पर यह रोग शोणित मद्यादि से नहीं होता, इत्यादि अनेक भेदक लक्षण हैं अतः यह रोग मूर्च्छा रोग से भिन्न है।

कोई लोग तैरलय स्वस्त्यमलाःमगुरुणा इत्यादि प्रमाणों के आधार से कामाग्न्योन्माद में अथवा अमानुषोपसर्ग भौतिकोन्मादादि में इस रोग को मानने की चेष्टा करते हैं पर उन्माद रोग प्रधान तया मानस व्याधि है इस व्याधि में हृदय से सम्बन्ध है, उन्माद रोगी का असम्बद्ध प्रलाप कैसा होता है देखने वाले जानते होंगे, पर इस रोग में वैसा असम्बद्ध प्रलाप नहीं, उन्माद में मन की विकृत तरङ्गों से रोगी की दशा का चित्र दूसरी भांति का है इस रोग में रोगी की दशा का चित्र उस से भिन्न दूसरी भांति का होता है इत्यादि कारणों से यह रोग उन्माद की जाति में समावेश करने योग्य नहीं है, किन्हीं का मत सङ्कर व्याधि से सम्बन्ध रखने में है पर इस का आरम्भिक रूप केवल एक वात व्याधि से सम्बन्ध रखता है एक तृष्णा वा वमन वा शूल कई व्याधियों में दृष्टिगत होनेपर भी अपनी आरम्भक प्रधान व्याधि के बोधक होते हैं न कि व्याधि सङ्कर के बोधक। किन्हीं का मत आक्षेपक वात से है पर अपतन्त्रक वा हृन्मोह भी वात व्याधि ही है तथा अपतन्त्रक, आक्षेपक से भिन्न नहीं, बल्कि आक्षेपक की अपेक्षा अपतन्त्रक के लिङ्ग इस व्याधि में अधिक मिलते हैं अतः आक्षेपक की अपेक्षा अपतन्त्रक नाम देना अधिक समुचित है।

कौकस डिक्शनरी में हिस्टेरिया शब्द का अर्थ स्त्रियों का रोग, वात गुल्म, गले का घुटना, गश, उन्माद, मूर्च्छादि सात अर्थ लिखे हैं यह इन की भिन्न २ विवेचना कोई नहीं, उन्माद और मूर्च्छा में कितना महान् अन्तर है यदि ऐसे ही अर्थ जैसे हमने सुने हैं वैसे उसमें है तो बड़ा आश्चर्य है? कोई ऐलोपेथिक ही इन बातों पर पूरा प्रकाश

गा जावेगा, हाँ अनेक पश्चिमी पैथिक डाक्टरों का हिस्टेरिया के सम्बन्ध में यह मत अवश्य है कि यह रोग स्त्रियों को अनेक रूपों से होता है जिन का वर्णन करना असम्भव है, सो यथार्थ में ठीक ही है भगवान वायु के गुण कर्मकी विचित्रताका क्या ठिकाना, उनके प्रभाव से अनेकता होती ही है। यूनानी लोग इख्तिना कुर रहम, इख्तिनाकुर गुल्म नाम से व्याधि को प्रकट करते हैं। जिनका अर्थ गर्भ का गला घोटना, गले का घोटना अर्थ होता है। इसकी व्यवस्था भी किसी अंश में अपने यहां से टक्कर खाती ही है। तथा डिस्पनरी के कई अर्थोंसे भी इस रोगका सम्बन्ध मिलता है, जो कि अपनेनिदान से भी किन्हीं भागों में तुलना करेगा।

निदान

प्रकृत्या कोमला नार्यः, प्रकृत्या कोऽपने रताः ।
तन्मनः कोमल वासी, शीघ्र मेवाभिहन्यते ॥१॥
कलि कालज दोषेण, फैशन प्रियतांगता: ।
अल्पे वयसि कामिन्यो, ब्रह्म चर्य विरोधिकाः ॥२॥
सुखी चिंता भयो द्वेग, शोक काल प्रजागरैः ।
धातु क्षयेन साश्चर्यं, आवेनाकल्मिषेन च ॥३॥
मैथुनाति प्रसङ्गेन, कामेच्छा रोधनेन च ।
गर्भाशयादि दोषेण, जष्ट मैथुन तुष्टितः ॥४॥
विष्टम्भेन अजीर्णेन, मलानां सञ्चयेन च ।
वात प्रकोपनै र्विविधैः, प्रत्ययैश्चिन्न दर्शनैः ॥५॥
अहिता शुचि वृत्तेन, अथवा पूर्व कर्मणा ।
योषा[१] हृन्मोह नामाय, नारीणा मुप जायते ॥६॥

(विशेष वक्तव्य)

क्रोध भी पित्त का प्रकोप कर उदान, व्यान, समान वायु का सहायक होकर ऐसे रोगों में सकारणता को प्राप्त हो सकता है यथा ।

(१) व्याने पित्तावृते दाहो गात्र विक्षेपणं क्लमः दृतगमनो पृथङ्कस्याऽपि शूल शोथौ कफाश्रितः ॥

(२) कफ पित्ताश्रितो वायु र्गौरवेण छेदकः इत्यादि ।

(३) एषेव प्राणोऽयं मूर्च्छा स्युः समाने पित्त संवृते।

(४) उदाने पित्त युक्ते तु दाहो मूर्च्छा भ्रमः क्लमः

प्रकार भेद से इस प्रकार क्रुद्धपित्त वात व्याधि में मूलत्व को प्राप्त हो जायेगा ।

(पूर्वरूप)

अव्यक्त लक्षणं तेषां पूर्व रूप मितिस्मृतम् ।

वात व्याधि के पूर्वरूप का यही लक्षण है उन के रूप के लक्षणों का अव्यक्त अर्थात् प्रकट न होना अर्थात् दूसरी व्याधियों के तुल्य पूर्व रूप दिखाकर वात व्याधि का जन्म नहीं होता, किंतु वात व्याधि रोग रूप में ही अपने लक्षणों को स्पष्ट प्रकट कर अपने रूप के लिङ्ग दिखा देता है, हिस्टेरिया रोग का भी यही समाचार है कि रूप दिखाता जाता है और प्रकट होता जाता है। अतः इस के पूर्व रूप के लिंग तुरन्त तथा निर्दिष्ट नहीं हो सकते। यह रोग वात व्याधियों के रोगों में ही परिगणित है ।

१—क—योषापतन्त्रको व्याधि र्नारीणामुप जायते (इति पाठः नाम भेदेन)

ख—योषोत्पीडको व्याधि र्नारीणामुप जायते (इत्यादि पाठः नाम भेदेन)

(रूप)

१

हृत्पीड़ा जृम्भणं मोहः, अङ्गमर्दो गलग्रहः।
गच्छे कूर्च्चे प्रतीयेत, गुल्म रूपः समीरणः॥ १ ॥
स्तब्धा दृष्टि विजानीयात्, कथने नैव ईशता।
प्रायः सामान्य लिंगानि, सर्वासु लभवन्ति हि॥२॥
काचिद्धसति साश्चर्य, काचिच्चैव प्ररोदिति।
काचिद्भिया प्रपीडेत,काचिच्छ्र श्यावभाषिता॥३॥
हसनं वा रोदनं कृत्वा, काचिदेव प्रमुह्यति।
गात्राण्यङ्गानि कस्याश्चि त्खल्ली वातान्मुह्यानिच॥४॥
किं कष्ट मेति पृच्छ्यमाना, कण्ठे हस्तौ ददाति हो।
नैव वक्तु समर्थास्मि, विद्धि रोगं मदीयकम्॥५॥
चीत्कारं कुरुते काचित्, सीत्कारं चैवकाचन।
निमीलिताक्षा निश्चेष्टा, काचिन्नैव प्रकूजति॥६॥
एवं विधानि लिंगानि, विचित्राणि बहू च।
योषा हृन्मोहके रोगे, जायन्ते वायु कोपनः॥ ७ ॥

वायु रूर्ध्वं व्रजेत्स्थाना त्कुपितो हृदय शिरः।
शंखौ च पीडयत्यंगा न्याक्षि पेन्नमयेच्च सः॥ १ ॥
निमीलिताक्षो निश्चेष्टः स्तब्धा क्षो वापि कूजति।
निरुच्छ्वासो ऽथवा कृच्छ्रादुच्छ्वसेन्नष्ट चेतनः॥२॥
स्वस्थः स्यात्हृदये मुक्ते आवृतेतु प्रमुह्यति
कफान्वितेन वातेन ज्ञेय स्त्वपतन्त्रकः॥ ३ ॥

(सु० नि० स्था०)

मोह, हृदय का दाब लेना, अंग मर्द, गलग्रह वायु के गोले का नीचे से ऊपर को आना, स्तब्ध दृष्टि, बोलने में असमर्थतादि सामान्य चिन्ह रोगिणी में देखे जाते हैं और कभी कोई आश्चर्य से हसती है कभी कोई रोती है, कोई डर से पीडित होरही है, कोई हसती हुई, कोई रोती हुई बेहोश हो जाती है, किसी के अंग खल्लीवात के समान मुड़ गये हैं, कोई वैद्य जी के यह पूछने पर क्या तकलीफ है गले पर हाथ रख देती है कोई चीत्कार कोई सीसीकार करती है कोई निमीलिताक्ष निश्चेष्ट बेहोश गिरी पड़ी है, इस प्रकार अनेक विचित्र रूप स्त्रियों की दशा के इस रोग में हो जाते हैं।

अपने स्थान (पक्वाशय गर्भाशयादि) से प्रकुपित वायु ऊपर को जाकर हृदय; शिर, शंख स्थान को पीडित अर्थात् मसोसता घोटना हुआ हस्त पादादि अंगों को कपाता हुआ गिरादे तथा नवाद, नेत्र मुदे हो जावें, चेष्टा रहित हो जावें, या नेत्र ठिठराये से जकड़ जावें, कपोत का सा कूजन करे, श्वास न आवे या कष्ट से श्वास लेवे, चेतना नष्ट हो जावे, कफ युक्त वायु से जब हृदय युक्त हो जावे तो रोगी अच्छी तरह स्वस्थ अर्थात् होश में हो जावे और जब वायु हृदय को आच्छादित करले तब बेहोश हो जावे, यह अपतन्त्रक वायु कहलाता है।

(विशेष वक्तव्य) ऊपर पहले रूप में कहे हुए लक्षण तथा अपतन्त्रक वात के लक्षण हिस्टेरिया के रोगियों में अच्छी तरह देखने में आते हैं, वायु के गोले का ऊपर को जाना, हृदयादि को पीड़ित करना, स्तब्ध या खुले से नेत्र हो जाना, खल्ली वात का हो जाना, चेतना का नष्ट हो जाना, हंसना, रोना, डरना, आदि २

वायु के ऊर्ध्व गमन से चेतना के प्रधान स्थानों पर वायु का आच्छादन जितने अंशों वाला

१—पीडा शब्द से दबाने मसोसने की पीड़ा का ग्रहण है।

षा जैसी शक्ति वाला होता है चेतना का भी स्वरूप वैसे ही ढङ्ग को लेकर होता है अर्थात् वायु ने अधिक दबा दिया, मसोस दिया तो चेतना का अधिक अभाव होगा अर्थात् बेहोशी अधिक बढ़ जावेगी, यदि साधारण तथा चेतना स्थानों को दबाया तो बेहोशी साधारण दर्जे की होगी अर्थात् कुछ चेतना कुछ अचेतना या कभी चेतना का दर्शन कभी अचेतना का दर्शन, आभासादि होंगे, इस प्रकार यह बात हृदय, शिर, गले आदिक सब ही स्थानों पर घटा लीजिये, गले के विषय में इतनी बात और भी कहनी होगी, वायु का ऊर्ध्व गमन होकर कभी सब से पहले वायु पिण्ड का गोला (आँधी के बघूला की भाँति, चक्रवात के तुल्य) गले को ही आकर मसोसने लगे, हृदय पर थोड़ा आक्रमण करे। इत्यादि २

डरना, हसना, रोना, तथा अन्य विचित्र २ भावों के होने का हेतु यह है, स्त्री के हृदय में अथवा मन में जैसे २ भाव होंगे उन भावों के ही अनुकूल रोग की आक्रमणावस्था में हास्य, रोदन भीरुतादि के भाव वैसे २ ही स्वरूप में प्रकट होंगे पर इन सबका मूल हृदय की चेतनता के तारतम्येन होने वाले ह्रास हैं, अधिक अचेत हुई अर्थात् वायु ने हृदय को अधिक दबाया तो कोई भाव प्रकट नहीं होंगे। मूर्च्छता अधिक होगी वायु ने साधारणतया हृदय को दबाया तो हास्य रोदन, भीरुता, उदासीनता, गम्भीरता, तटस्थतादि के नाना भाव रोगिणी के यदृच्छानुकूल होंगे

वात पिण्ड के कण्ठ में आजाने से बोलने में असमर्थता होती है और यदि कुछ वात पिण्ड हटने लगता है तो कुछ बोलने की ओर प्रवृत्ति हो जाती है।

रोगावस्था में वेग के लक्षण जो ऊपर दिखाये गये हैं होते हैं। वेग के हटने पर पूर्ववत् स्वस्थता हो जाती है, पर इस महान रोग के होने के कारण विषमाग्नि, क्षीणता, रजो दोष, प्रदर आदि २ रोग-प्रकृति, देह आकारादि भेदों से जैसी २ जैसी जो होंगी उनको वो रोग सताते रहेंगे।

(उपशय)

देखा गया है रोगिणी लशुनादि दाननाशक चेतनोत्पादक पदार्थों के सुंघाने से ही तत्काल चैतन्य होजाती है कोई कुछ काल में चैतन्य होती है। वातघ्न पदार्थों का उपयोग ही इसमें हित पड़ता है, जल के परिषेचन करने से चैतन्यता होती है कोई यहां सन्देह करते हैं कि यह पित्तोपचार होगया, इसके विषय में यह है कि कोई जल त्रिदोषघ्न होता है कोई वातादि का वर्द्धक, जो जल त्रिदोषघ्न है, उनका उपयोग वात का शमन ही करता है वात की वृद्धि नहीं करता, अतः केवल पित्त की शान्ति के लिये ही जलका उपयोग मानना यह भूल है, तथा शास्त्रन. निराधार बात है, इसके अतिरिक्त जल का प्रभाव यह विचित्र है कि हृदयादि में गत वायु के विबन्ध को नष्ट करता है तथा यह हृद्य है। पर वात जलों का उपयोग इस चिकित्सा में नहीं करना चाहिये सूत्र रूप से कुछ शास्त्र के वचन लिखते हैं विशेष जानकारी के लिये शास्त्र में जल का अधिकार देखिये अथा—

जल के गुण ।

(१) पानीयं श्रम नाशनं क्लम हरं मूर्च्छापिपासापहम्
तन्द्राच्छर्दि विबन्ध—हृत् बलकरं निद्रा हरं तर्पणम्
हृद्यं गुप्त इत्यादि ········पीयूषवज्जीवनम् ॥
(२) धारं त्रिदोषघ्नम्
(३) करकाम्बु जल रूक्ष पित्त हृत्कफ वातकृत्

(४) कोष्णं पयो यदि स्वादु त्रिदोषघ्नं हित लघु
तत्क्षार कफ वातघ्न दीपन पित्त कृत्परम् ॥
इत्यादि २

जल जीवन स्वरूप, अमृत स्वरूप, हृद्य, त्रिदोषघ्न है केवल पित्त को शांत करने वाला मानना भ्रान्ति है, जल के अनेक भेद हैं कोई वात शामक, कोई वात वर्द्धक, कोइ त्रिदोषघ्न कोई त्रिदोष होता है। अतः जल परिषेचन विबन्ध घ्न आदि गुण युक्त होने से वात व्याधि में उपशय है इसी प्रकार अनेक उपयोगों से औषध अन्न विहार, वातघ्नादि गुण युक्त हैं, वेइस रोग में सात्म्य देखे गये हैं, अतः उपशय परीक्षा से यह रोग मात्र व्याधि गत प्रकृत सिद्ध है। हां पित्तादि सयोग जैसा होजाता है उसे हम दिखा चुके हैं।

सम्प्राप्ति

पूर्वोक्तैश्च विविधैः पश्च गर्भाशयादिषु ।
हेतुभि र्दूषितोऽपानः स्वस्थानेष्वति कोपितः ॥१॥
व्यानादिना स्वतन्त्रोवा गत्वोर्ध्वमति वेगतः ।
हृत्कण्ठादीन्प्रपाड्य च रोगोत्पत्तिं करोति सः ॥२॥
ततः सर्वाणि लिङ्गानि निर्दिष्टानिभवन्तिच।
वात व्याधौ यथा श्लेष्मा पित्त च अनुवर्तते।
योषा हृन्मोह के व्याधौ तादृशमेव निबोधताम् ॥३॥

(विशेष वक्तव्य) हिस्टेरिया रोग की सम्प्राप्ति सुश्रुत के "वायुरूर्ध्वं व्रजेत्स्थानात्कुपितो हृदयं शिरः" इत्यादि वचन से स्पष्टतया ध्वनित है, तथा इसी आधार अन्य ग्रन्थों में भी पाई जाती है इसी मूल भेद को लक्ष्य करते हुए यहां उक्त बात पद्यों में लिखी गई हैं जो कि हिस्टेरिया रोगियों में भली भांति पाई जाती हैं एक बात अधिकतया सुस्पष्टत्वेन कहदेनी यहां और भी अपेक्षित है कि गर्भाशयके दूषित सम्बन्ध से दूषित वायु का होना और हिस्टेरिया जैसे विकार को अधिकतर उत्पन्न कर देना यह भी यथार्थ में युक्ति सिद्ध और शास्त्र सिद्ध अवश्य है चरक चिकित्सा स्थान में कहा है यथा—

गति प्रसारणाक्षेप निमेषादि क्रिया सदा
देह व्याप्नोति सर्वं तु व्यानः शीघ्र गतिर्नृणाम् ॥१॥
वृषणौ बस्ति मेढ्रञ्च नाभ्युरु वङ्क्षणौ गुदम्
अपान स्थान यत्रस्थः शुक्रमूत्र शकृत्क्रियः ॥ २ ॥
सृजत्यर्तव गर्भौच युक्ता स्थान स्थिताश्चते
स्वकर्म कुर्वते देहो धार्यते तैरनामयः ॥ ३ ॥
विमार्गस्था ह्ययुक्ता वा रोगैः स्वस्थान कर्मजैः
शरीरं पीडयन्त्येते प्राणानाशु हरन्ति वा ॥ ४ ॥
इत्यादि—

इन वचनों से स्पष्ट है आर्तव और गर्भ के कार्यों का कर्ता धर्ता विधाता अपान वायु है, वही गर्भाशय आर्तव दोष, अति मैथुनादि दोष, वीर्य दोषो से विषमय अपान वायु को कुपित करने वाला होजाता है। अपान की स्वस्थाता में कोई विकार नहीं होता और वही अपान अन्यत्र कुपित होने पर विमार्गगामी होकर अनेक रोगों का उत्पादक होजाता है। हृदय कण्ठादि को दाब लेने की पीड़ा से हिस्टेरिया रोग को भी पैदा कर देता है।

(साध्यासाध्य और प्रकृत वायु)

साध्यासाध्य लक्षण और प्रक्षितिङ्गत वायु का विज्ञान वात व्याधि अधिकार वत् जानिये।

चिकित्सा (वेगावस्था)

रोग की वेगावस्था में कुछ काल की प्रतीक्षा चेतना के लिये अवश्य कर्तव्य है जिससे दोष के वेग की शक्ति नष्ट होकर स्वयं वेग शांत हो जावे, क्यो कि गते वेगे भवेत्स्वास्थ्यसर्वेष्वाक्षेप

कादिषु यदि अधिक समय (कमसे कम आधा घण्टा) बीत जावे तो चेतना के लिये निम्न प्रयोगों का उपयोग करे।

(१) मरिचादि नस्य (भाव प्रकाश पास व्याधि अधिकारोक्त)

(२) लशुन नस्य (केवल लशुन सुंघायें)

(३) प्याज नस्य (केवल प्याज का सुंघाना)

(४) जल परिषेचन

(५) हृदय मस्तिष्कादि पर नारायण तैल चन्दनादि तैल, शत—धौत घृतादि का मर्दन इत्यादि २ अनेक प्रयोग नस्य, मर्दन, अञ्जनादि के करें।

रोगावस्था में मुख्य बात यही ध्यान करने योग्य होती है कि किसी प्रकार से रोगीको चेतना प्राप्त होजावे, शास्त्र में लिखाहै।

अथापतन्त्रकेणार्त मातुरं नाप तर्पये।
निरूह वस्ति वमन सेवयेन्न कदाचनः ॥ १ ॥
श्वसनाः कफ वाताभ्यां रुद्धास्तस्य विमोक्षयेत्।
तीक्ष्णैः प्रधमनैः सज्ञांतासु मुक्तासु विन्दती ॥ २ ॥

अर्थात् अपतन्त्रक से पीड़ित आतुर का अप तर्पण व निरूह वस्ति, वमन कभी न सेवन करावे।

श्वासवह मार्ग कफ वायु से रुद्ध हो जाते हैं अतः तीक्ष्ण प्रधमन नस्यों के द्वारा उन मार्गों को खोल देवे, शीघ्र चैतन्यता प्राप्त हो जाती है।

इसके अतिरिक्त जिन शोकादि कारणों से इसे रोग हुआ है। नस्यादि चिकित्सा में उनका भी ध्यान यथा सम्भव रक्खे, जिसमें उनके भी विरुद्ध क्रिया नहीं जावे,पर प्रधान बात इस वेगावस्था में यही है कि नस्यादि प्रयोगों से श्वास मार्ग शुद्ध हो जावे और हृदय में चैतन्यता का संचार होवे।

इस रोग में नस्य कर्म ही प्रधान कर्म है, अतः इसके अन्य विधानों को चरकादि वा शार्ङ्गधर सहितादि ग्रन्थों से अच्छी तरह जान लेवे। तत्काल अभीष्ट सिद्धि का यही उपाय है। कभी २ नस्यौषध प्रधमन करने पर भी चैतन्यता में विलम्ब देखने में आता है, तो विश्राम देता हुआ पुनः प्रधमन नस्यादि चिकित्सा में प्रवृत्त होकर रोगी को चैतन्य कर लेवे।

(वेग रहिता वस्था)

जब रोगी सामान्य तया यथा प्राप्त पूर्व स्वस्था वस्था में चैतन्य स्वस्थ हो जावे, तो उस के अन्य मन्दाग्नि, धातु क्षयादि शारीरिक विकार तथा शोक भय आश्चर्यादि मानसिक रोगों तथा उनके कारणों को तलाश करता हुआ चिकित्सा में प्रवृत्त होवे, अर्थात् मुख्य रोग की चिकित्सा के साथ अन्य शारीरिक मानसिक रोगों की चिकित्सा करने का भी पूर्ण ध्यान रक्खे। तथा मानसिक शोकादि के हेतुओं के दूर करने का भी भली भांति प्रयत्न करे। और शास्त्र निर्दिष्ट तत्तत् रोगाधिकारोक्त योगों का प्रयोग करता रहे, इस प्रधान रोग को दूर करने के लिये जो २ विलक्षण प्रयोग चिकित्सा कर्म में लाने योग्य हैं उनमें से कुछ योग नीचे लिखे जाते हैं। रोगी की दशा देखयथानुमान प्रयोग करे।

(१) रस सिंदूर, मल्ल सिंदूर; ताम्र सिंदूरादि प्रयोग (रसायन सार ग्रन्थ में देखो)

(२) ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, सहस्रपुटी आदि भस्म वर्ग (रस ग्रन्थो में देखो)

(३) योगेन्द्र रस (भै०र० वा० व्या०अ०)

(४) चतुर्मुख (भै० र० वा० व्या०अ०)

(५) चिंतामणि चतुर्मुख (भै० र० वा० व्या० अ०) इत्यादि रस प्रयोग।

(६) दशमूलारिष्ट, बलारिष्ट सारस्वतारिष्ट अश्वगंधारिष्ट आदि २ अरिष्ट प्रयोग (भै० र०)

(७) नारायण तैल, बलातैलादि, तैल मर्दन प्रयोग तथा ब्राह्मी घृतादि । (भै० र०)

(८) कल्याण चूर्ण, हरीतक्यादि योग अमर सुंदरी वटी लशुन प्रयोगादि (भा० प्र०)

(९) दशमूल क्वाथादि, वच, ब्राह्मी प्रयोग

(१०) मरिचादि नस्य (भा० प्र०)

इत्यादि शतशः प्रयोग शास्त्र में निर्दिष्ट हैं रोगी के दोष दूष्य बलादिक दशा देखता हुआ चिकित्सा में प्रवृत्त होवे, मिथ्या हार मिथ्या विहार की देख भाल में भी पूर्ण सावधानी करे, तथा जिन कारणों से यह रोग हुआ है उनको दूर कर देवे । इस प्रकार सम्यक् ज्ञान पूर्वक जो इस महा रोग की चिकित्सा में प्रवृत्त होगा । वही रोगी का रोग दूर कर अभीष्ट सफलता प्राप्त करेगा ।

निवेदन

शीघ्रता और समयाभाव होते हुए भी इस रोग का निवेदन जो मेरी तुच्छ बुद्धि में आया है। वह आपकी सेवा में निवेदन कर दिया है । आप विद्वान हैं जो कुछ और भी बतावेंगे, वह भी सम्मिलित कर दिया जायगा ।

शमिति। वै० हरिशङ्कर शर्म्मा
पौष शु० ७ स० १९८४ वि०

हिस्टेरिया HYSTERIA

लेखक—प्रोफेसर डा० बालकराम शुक्ल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य, आयुर्विज्ञानाचार्य शास्त्राचार्य एम.बी.एस.



नाम परिचय- सबसे पहिले हिस्टेरिया शब्द का अर्थ जानना आवश्यकीय है। अतः उस का शाब्दिक अर्थ प्रतिपादन किया जाता है। ग्रीकभाषा में हिस्टेरिया शब्द का अर्थ (Hysteria womb) गर्भाशय है। प्राथमिक पाश्चात्य चिकित्सकों ने इस का नाम हिस्टेरियाइटिस रक्खा था। परन्तु इस का लघु नाम हिस्टेरिया प्रचलित हुआ। जिस का अर्थ गर्भाशयिक प्रदाह है। इस के अनन्तर आरबीय वैद्यों ने इस रोग का नाम इख्तिनाक उल रहम. रक्खा था। इस का अर्थ गर्भाशय का मुख बन्द हो जाना है किन्तु वर्तमान कालिक हिस्टेरिया रोग सर्वांश में प्राचीन सिद्धान्त के अनुकूल नहीं देखा जाता है। अतः ऐसा स्वीकार किया जाता है कि यह एक जाति का वायु रोग है। (Allspecie of nerves of motion) जो वर्तमान काल में जननेन्द्रिय के विकार से उत्पन्न हो कर शनैः २ ज्ञान, कर्म, धर्म केन्द्र को नष्ट कर देती है इस अर्थ से स्त्री के अतिरिक्त पुरुष, बालकों के उत्पन्न हुआ हिस्टेरिया रोग भी गृहीत हो सकता है।

॥ हिस्टेरिया विषयक प्राच्य।
पाश्चात्यतुलनात्मक सिद्धान्त ॥

निरुक्ति—चित्त वृत्ति, विवेक शक्ति, चिन्ता व कल्पना शक्ति के, और लज्जात्मक, चैतन्यक क्रिया के वैलक्षण्य संयुक्त स्नायु विधान के विशेष क्रिया विकार को हिस्टेरिया कहते हैं।

युवती स्त्रियों के यह रोग अधिक देखी जाती है। और अधिक तर इसका सम्बन्ध जननेन्द्रिय के साथ जुड़ा जाता है कोई २ निम्नप्रकार विवेचना करते हैं कि डिम्बाशय (Ovary) की उग्रता से इसकी उत्पत्ति होती है। और कोई २ कहते हैं कि डिम्बाशय की शीघ्र वृद्धि होने से हिस्टेरिया की उत्पत्ति होती है।

लक्षण तत्व Symptomatology

कभी २ रोगी अत्यन्त हंसता है और कभी कभी रोने लगता है और कभी २ दीर्घ निश्वास लेता है, अथवा मध्य २ में हास्य व क्रन्दन करता करता है। रोगी को श्वासावरोध का बोध होता है कि गले के मध्य में गोलाकार पदार्थ अटक गया है। इसको ग्लोबस हिस्टेरिकस गुल्म वायुगोला कहते हैं।

कोई २ कहते हैं कि पक्वाशय (Dyspepsia से आध्मान Flatulance उत्पन्न होकर गले की नाली में उत्थित होता है। और किसी २ चिकित्सक का सिद्धांत है कि फेरिंक्स Pharynx कण्ठ के आक्षेप से इसकी उत्पत्ति होती है। रोगी पक्षाघात में ज्ञान शून्य नहीं होता है। उसके चारों तरफ क्या होता है यह ज्ञान रहता है किंतु वार्तालाप नहीं कर सकता है। जिह्वा दंशित हो जाती है अथवा नहीं भी होती है; रोगी अपने शरीर में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंचाता है रोगी पृथ्वी पर गिरजाता है और हाथ पैर को

पेशी Muscles बल पूर्वक आक्षिप्त होजाती हैं। और आक्षेप शेष रहने पर रोगी चैतन्य होजाता है। अधिक मात्रा में फीके वर्ण का प्रस्राव होता है और प्रस्राव का आपेक्षिक भार Specific gravity अत्यन्त हल्का होजाता है फलतः हिस्टेरिया के सम्पूर्ण लक्षण पांच श्रेणियों में विभक्त किये जाते हैं।

(१) मानसिक लक्षण
(२) वेदना सम्बन्धीय लक्षण
(३) पेशिक सञ्चालन सम्बन्धीय लक्षण
(४) रक्त सञ्चालन सम्बन्धीय लक्षण
(५) विविध आभ्यन्तरिक सम्बन्धीय लक्षण

(१) मानसिक लक्षणों का वर्णन

मानसिक वृत्ति बढ़ जाती है किंतु वह विवेक की अधीनता त्याग कर देती है। रोगी का मानसिक वक्रचालनिनीत असमञ्जस व ह्रास अनव होता है। करुण रसोद्दीपक वर्णन को सुनने से रोगी निरन्तर रुदन करने लगता है हास्य जनक व आमोद-कारक कथा से सामान्य भाव से स्थिर रहता है। साधारण ज्ञान व, विवेचना शक्ति का लोप हो जाता है और उसके समवेदना प्रकाश करता है, वह इच्छा व वासना उसकी अतिशय बलवती होती है।

२—वेदना सम्बन्धीय लक्षण

शरीरके विविध स्थानोंमें यन्त्रणा व धावले के तुल्य वेदना होती है। साधारणतः वाम भाग की पर्शुकाओं के मध्य में (इन्टर कोस्टल) स्नायुशूल के तुल्य वेदना होती है। इसको कशेरुका की मज्जा की पीड़ा जानना बड़ी भूल है। जानु आदि किसी सन्धि में वेदना आबद्ध होकर तरुण (साइनो वाइटिस)कफ जन्य सन्धिक प्रदाह की यातना के तुल्य विषम यातना उपस्थित करता है। मस्तिष्क वेदना बहुत होने पर मस्तिष्क में (Tumor) अर्बुद के लक्षण लक्षित होते हैं

आपगेष्ट्रिक (आमशयिद्वार) इलियेक (जघन फलक) प्रदेश में दबाने से वेदना होती है सर्वाङ्ग में चैतन्य का लोप नहीं देखा जाता है। केवल एक भाग में विशेष कर वाम भाग में स्पर्शानुभव का लोप होजाता है और देखा होता है कि पेशी के मध्य में सूची चुभोने से वेदना नहीं होती है। यान्त्रिक पीड़ा जनित वेदना से और हिस्टेरिया जनित वेदना में यही प्रभेद होता है कि हिस्टेरिया जनित वेदना एक स्थान में स्थायी नहीं होती है और वेदना का प्रकाश व उपशमन का कोई निर्दिष्ट नियम नहीं देखा जाता है।

(३)पेशिक संचालन सम्बन्धीय लक्षण

आक्षेप, फ्लुगाक्षेप, पक्षाघात आदि प्रधानतः देखे जाते हैं श्वास, प्रश्वास, यन्त्र सम्बन्धीय विविध पेशियों में आक्षेप उपस्थित होता है। रोगी के सम्बन्धी सन्निकट में आकर रोगी की अवस्था में सहानुभूति प्रकट करते हैं। उस समय क्षण २ में तीक्ष्ण कण्ठ से उक्त कार्य्य प्रकटित हो जाता है और हास्य क्रन्दन, हिक्का, श्वास आदि उपस्थित हो जाते हैं। यदि इससे भिन्न किसी अङ्ग में देखा हो पक्षाघात या विराम के सहित आक्षेप देखा जावे तो कभी २ क्लोरो फार्म Chlorofarm के श्वास प्रयोग से भी उसकी शक्ति नहीं देखी जाती है और हिस्टेरिया के अनेकांश में मृगी के तुल्य फुनाक्षेप देखा जाता है परन्तु हिस्टेरिया और मृगी में बहुत भेद है वह नीचे लिखा जाता है।

मृगी ।

सम्पूर्ण चैतन्य का हठ पूर्वक लोप हो जाता है।

नील वर्ण युक्त मुख मण्डल मुख के मध्य से फेन युक्त लाला निकलती है। अक्षि पल्लव अर्धोन्मीलित और अक्षि गोलक विघूर्णित रहता है परस्पर दांत में दांत का घर्षण, जिह्वा दशन होता है। आलोक प्रयोग करने पर कनीनिका की उत्तेजना नहीं होती है।

मुख मण्डल विकृत होजाता है रोगी कुछ अनुभव करता है ऐसा जाना नहीं जाता है। अरा एपिलेप्टिक AuraEpileptce अपस्मारेक पूर्व सूचक दर्शन एक तरफ आक्षेप दूसरी तरफ में बलकारक द्रुताक्षेप होता है।

साधारणतया रोग का वेग स्वल्प स्थायी होता है।

प्रति रोगावेश के बाद गम्भीर अर्ध अचैतन्य के तुल्य निद्रा, शिर में पीड़ा, व बुद्धि की वृत्ति में जड़ता उपस्थित होती है।

रोग का वेग प्रायः रात्रि में होता है जरायवीय विकार के साथ कोई सम्बन्ध देखा जाता नहीं है।

हिस्टेरिया

क्रमशः आंशिक अचैतन्यता होती है।

आरक्त मुख मण्डल अथवा उसका वर्ण वैलक्षण्यता को न प्राप्त होवे मुद्रित हुए नेत्र, स्थिर हुए अक्षि गोलक और दन्त घर्षण व जिह्वा दशन प्रभृति दिखलाई नहीं पड़ते हैं।

मुख का भाव विकृत नहीं होता है। रोगी दीर्घ निश्वास ग्रहण करता है। हास्य, व क्रन्दन करता है ग्लोबस हिस्टेरिकस होजाता है।

पर्याय शील द्रुताक्षेप होता है।

रोग का वेग साधारणतः अपेक्षा कृत दीर्घ स्थायी होता है।

रोगावेश के अनन्तर निद्रा नहीं आती है और रोगी में निस्तेज रूक्षता लक्षित होती है।

प्रायः रोग का वेग रात्रि में नहीं होता है जरायवीय पीड़ा के साथ और मासिक धातु के साथ विशेष सम्बन्ध लक्षित होता है।

उपरोक्त भेदों के वर्णन से यह स्पष्ट तया प्रतीत होगया है कि हिस्टेरिया और मृगी में बहुत भेद होता है। अतः बहुत से चिकित्सक हिस्टेरिया का नाम योषापस्मार रखते हैं। यह सर्वतो भावेन असङ्गत प्रतीत होता है कारण यह है कि योषापस्मार का अर्थ, युवती स्त्री के उत्पन्न हुआ मृगी रोग है और दूसरा भी कारण यह है कि पूर्वोक्त हेतुओं से यह रोग बच्चों व, पुरुषों को भी होता है इसमें पाश्चात्य चिकित्सकों की भी सम्मति है। उनका कथन है कि पुरुष इस व्याधि से बचे नहीं हैं। गत कुछ वर्षों से पुरुषों के यह रोग अधिक देखा जाता है और बारह वर्ष से कम आयु वाले बच्चों पर इस रोग का प्रभाव अल्प मात्रा में होता है परन्तु कभी २ पांच

अथवा छ वर्ष वाले बच्चों में भी हिस्टेरिया के लक्षण पाये जाते हैं। अतः तरुण स्त्री के उत्पन्न हुए मृगी रोग को जो हिस्टेरिया नाम से कहना चाहते हैं उनका प्रयास प्रायः व्यर्थ ही प्रतीत होता है।

रोग की अनिश्चयावस्था में मूत्र धारण की क्षमता नहीं होती है। रोगोपशम की अवस्था में प्रचुर परिमाण से परिष्कृत स्राव होता है। शरीर का कोई अङ्ग, पक्षाघात से ग्रस्त हो सकता है। प्रायः अधो भाग के अर्धाङ्ग में पक्षाघात होता है। सम्पूर्ण पेशियों की पुष्टि में वैलक्षण्यता नहीं होती है।

रक्त संचालन सम्बन्धीय लक्षण

कभी२ नाड़ी अनुभव करने के योग्य होती है। हृदयकीक्रिया बन्द होनेपर मृत्यु के लक्षण प्रकाशित होते हैं। रोगी निर्वाक व, अचेतन होकर पड़ा रहता है। बाद में इस अवस्था के उपशमन होने पर गम्भीर दीर्घ श्वास आने लगता है।

आभ्यन्तरिक यन्त्र सम्बन्धीय लक्षण

प्रायःवमन लक्षित होताहै। अन्त्र के मध्यमें वायु उत्पन्न होकर शब्द युक्त आध्मान रहता है। और अनेक स्थल में मूत्र कृच्छ्र भी देखा जाता है। हिस्टेरिया रोग में कभी २ शरीर का उत्ताप अधिक मात्रा में बढ़ा हुआ देखा जाता है। इसका दैहिक उत्ताप वाम कक्षा में आश्चर्य मयी वृद्धि पाता है। किन्तु दक्षिण कक्षा का उत्ताप उस समय में २१० और मुख के मध्य में १०२ तापांश प्रायः होता है।

रोग विनिश्चय

हिस्टेरिया पीड़ित रोगी सब प्रकार के रोगों का अनुकरण कर सकता है। अर्थात् इसके सब लक्षण इतने भिन्न प्रकार से प्रकाशित हो सकते हैं। कि रोग का निर्णय करना अतीव दुरुह हो जाता है। अतः रोग का निर्णय चिकित्सक की विशेष विवेचना के ऊपर निर्भर रहता है। सामान्यतः प्रथित औपद्रविक रोगों का वर्णन किया जाता है।

हिस्टेरिया जनित उन्माद रोग

आतुर के प्राथमिक इतिहास पर इस रोग का निर्णय निर्भर है। इसमें स्थानिक स्पर्श का लोप, स्पर्शाधिक्य, पक्षाघात ग्लोबस हिस्टेरिकस आदि के साथ रोगी की मानसिक अवस्था, क्लोरोसिस (हरितरक्त) रजःवैलक्षण्य, जरायु, डिम्बाशय सम्बन्धी लक्षण देख कर निर्णय किया जा सकता है। यह रोग प्रधानतः स्त्रियों के होता है विशेष कर युवती स्त्रियां इस रोग से अधिकतर पीड़ित रहती हैं। जिस समय कि यौवनावस्था में विविध शारीरिक एवं अभूत पूर्व कार्य भाव को ग्रहण करते हैं उस काल में यह रोग अधिक होता है।

और शिक्षा के दोष से भी मन में विकृत भाव उत्पन्न होकर नाना प्रकार के मानसिक विकार उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसे रोगी गम्भीर स्वभाव वाले मौनावलम्बन करने वाले पाये जाते हैं। और जो व्यक्ति ग्रन्थों के पढ़ने में निरन्तर व्यस्त रहते हैं। अर्थात् जिनका नाम पुस्तक के कीड़े

स्वाध्यायी कहने लगते हैं। और जिन के जीवन का बल विद्यागार व, अध्ययन से ही अतिवाहित होता है। और स्वास्थ्य जनक क्रीड़ा भूमि, निर्मल मन्द सुगन्ध पवन, व, आमोद प्रमोद का जो उप-भोग नहीं करते हैं, और मनोवेग के उद्दीपक विष-यों का अध्ययन करते हैं। और जाग्रत स्वप्न में जो दिन पात कर के ससार क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। उनकी आकांक्षा, व, लालसा की सीमा अनिर्दिष्ट होती है। वे सम्पूर्ण व्यक्ति दुराकांक्षा से पीड़ित होकर शीघ्र ही विमार्ग गामी हो जाते हैं और उ-द्विग्न चित्त होकर हिस्टेरिया जन्य उन्माद रोग हो जाता है। अधिकतर इन रोगियों में स्नायवीयवश वर्तिता देखी जाती है। हिस्टेरिया रोग जिस तरह नाना रूप से प्रकाशित होता है। उसी भाँति हि-स्टेरिया जनित उन्माद रोग नाना रूप से धारण करता है। किसी २ स्थल में सामान्य हिस्टेरिया ग्रस्त रोगी के तुल्य आरोग्य आहार में इच्छा की अ-तिशय प्रवृत्ति देखी जाती है और ईट. सूची छु-रिका, पत्थर आलपीन आदि अपने मुख में रोगी प्रविष्ट कर लेता है। अथवा कोई २ इन सम्पूर्ण व-स्तुओं कोयोनि, व, सरलान्त्र में प्रविष्ट करता हुआ देखा जाता है। स्त्रियों में यह उन्मत्तता अधिकतर प्रेमोन्माद का आकार धारण करती है। साधारण तः उन्माद के आक्रमण की प्रथम अवस्था में हिस्टे रिया के सब लक्षण प्रकाशित होते हैं। हिस्टेरिया जनित विमर्षोन्माद में रोगी आत्म हत्या का सद प्रदर्शन करता है। और कभी २ आत्म हत्या की चेष्टा करता है। यह कल्पना करता है, कि मनुष्य उस के चरित्र में दोषारोपण करते हैं। इस को नि-र्जन स्थान में विमर्ष ता होता है, सहज में रो-ने लगता है। कभी २ इस को हस्तमैथुन का दुर्दम अभ्यास उत्पन्न हो जाता है, और किसी २ स्थल में देखा जाता है, कि जब तक अत्यन्त दुर्बल न-हीं हो जाता है। तब तक भोजन किया पदार्थ प-क्वाशय से वमन द्वारा निकाल देता है। और अनेक स्थल में रोग विषयम हो जाता है, कोई २ कुछभी आहार नहीं करते हैं, उन के मुख में जल प्रविष्ट करके गले के मध्य में आहार प्रवेश किया जाता है इस रोग ग्रस्त व्यक्ति के अनेक लक्षण दिखाई देते हैं।

हिस्टेरिया जनित मृगी रोग Hystero Apilepsy इस नाम से हिस्टेरिया मृगी रोग का सम्मेलन जाना जाता है, किन्तु प्रकृत पक्ष में यह पूर्ण परिवर्तित अवस्था को प्राप्त हिस्टेरिया रोग है। पूर्वोक्त दोनों रोगों का सम्मेलन नहीं है, इसमें धनुष्टकार के तुल्य वक्रता उपस्थित होती है, रो-गी के गुल्फ, व, मस्तक के ऊपर भार देने से स-मस्त देह उन्नत, व, नाना प्रकार से कुञ्चित, वक्री भूत, व, विकृत होजाता है हाथ की अंगुलियाँ स-ङ्कुचित हो जाती हैं और पैर की भी अंगुलियाँ स-ङ्कुचित हो जाती हैं। और मुख मण्डल का भाव विकृत हो जाता है, कभी २ सुख व्यञ्जक, व, आ-नन्दाप्लुत चिन्ह दिखाई पड़ते हैं। बल पूर्वक रोगी सम्मुख, व, पीछे को शरीर फेंकता है, इस के बाद रोगी बकने लगता है। असंगत, व, असलग्न, व, ग्राम्य तथा वार्ता में संलग्न रहता है, यह वेग मि-निटों से लेकर कई घंटा तक स्थायी रहता है, आं-शिक संज्ञा लुप्त हो जाती है। इस रोग को चार काल में विभक्त करते हैं।

(१) मृगी संयुक्त लक्षण काल, (२) सम-स्त देह की विकृत, व, सचालन संयुक्त काल (३) मनोवेग संयुक्त काल (४) प्रलाप काल, रोग के आक्रमण में श्वास, प्रश्वास अनियमित, वाक्य विच्छिन्न,, व,प्रतिरुद्ध हो जाता है। रोग आक्रमण के

आरम्भ होने पर रोगी स्वयं आक्रमण का अनुभव करके उस के प्रतिरोध की चेष्टा करता है। उदर प्रदेश उन्नत हो जाता है, विराम के सहित चर्वण क्रिया के तुल्य मुख सञ्चालन लक्षित होता है। नासापुट प्रसारित, सम्मुख कपाल का चर्म सङ्कुचित व, अक्षिपल्लव कम्पित हो जाता है। स्थिरदृष्टि, कनीनिकाप्रसारित, व, अक्षिगोलक ऊपर की तरफ को आकृष्ट हो जाता है। इस प्रकार रोगाक्रमण के बाद मृगी के तुल्य सम्पूर्ण लक्षण प्रकाशित होते हैं समस्त शरीर दृढ़, व, कठिन ऊर्ध्व शाखा दृढ़, व, विघूर्णित होती है रोगी के दोनों पैर इधर उधर झुक जाते हैं। चरण तल होकर टेढ़े पैर ईक्वीनो-वेराइस् की अवस्था को प्राप्त हो जाता है। श्वास क्रिया में गलग्रहणता हो जाती है उदर प्रदेश का सञ्चालन बन्द होजाता है। नाड़ी कठिन होजाती है, कभी इस अवस्था में मुख के अन्दर से फेन निकलता है मस्तक एक तरफ को वक्र होजाता है। इसके बाद कुछ मण्डल शान्त हो जाता है। और पुनः मस्तक स्वाभाविक अवस्था में आजाता है. मुख मण्डल की सम्पूर्ण पेशियों में विराम के साथ पुनराक्षेप उपस्थित हो जाता है। नियत रूप में अथवा धीरे २ अक्षिपुट उन्मीलित व मुद्रित होजाता है और दोनों शाखायें विराम के सहित पुनराक्षेप के द्वारा व धनुष्टङ्कार के तुल्य आक्षेप से आक्रान्त होजाती हैं इसके अन्दर मुख मण्डल स्वेद से अभिषिक्त होजाता है मुख से फेन का निकलना रुक जाता है। शब्द के ९ दिन श्वास प्रश्वास शीघ्र ही निकलता है अन्त शेष में श्वास, प्रश्वास नियमित हो जाता है। मलाशयः करने में सञ्चालन और श्वास प्रश्वास में उदर देश की उन्नति व अवनति देखी जाती है।

रोग का द्वितीय काल दो भागों में विभक्त है। ये एक स्थल में एक २ प्रकाशित हो सकते हैं। प्रथमप्रकार में रोगी हाथ पैर इधर उधर सञ्चालित करता है पार्श्व अपार्श्व को हिला डुला सकता है अथवा तकिया के ऊपर आघात करता है और इस सञ्चालन के वर्तमान रहने पर मुख में विवर्णता नहीं दिखाई देती है। द्वितीय प्रकार में रोगी मुख फैलाकर जिह्वा को बाहिर निकालता है और कण्ठ से ताड़कर चीत्कार करता है पैर के ऊपर भार देने से देह धनुष के तुल्य टेढ़ा होजाता है बाहु एक बार मुख को ढँकता है और दूसरी बार निचोड़ देता है। कुछ काल के बाद रोगी बार २ उठता बैठता है। बाद को शय्या पर पड़ा रहता है। हाथ २ बाहु विस्तारित व सङ्कुचित करता है। किसी २ स्थल में असम्पूर्ण प्राय वाम उपस्थित होजाता है चक्षु गोलक ऊपर की तरफ आकृष्ट होजाता है और हस्त, पाद, ग्रीवादि व धनुष्टङ्कार के तुल्य आक्षेप प्रकट होजाते हैं। इसके अनन्तर प्रलापावस्था में पड़ता दिखता है और उसके मुख का भाव स्फूर्ति युक्त व आनन्द प्रकाशक होजाता है। रोगी कल्पित व्यक्ति का लक्ष्य करके उसके अनुसरण करना चाहता है। इस रोग के आरम्भ के पहिले अनेक प्रकार के हिस्टेरिया के लक्षण प्रकाशित होते हैं।

भावी फल (Prognosis)

हिस्टेरिया रोग में रोगियों के जीवन की कोई आशंका नहीं रहती है। अधिकतर कुछ दिन रोग भोग करके पश्चात् स्वयं ही रोग अच्छा हो जाता है, किसी स्थल में विवाह के पश्चात् अथवा

सन्तान प्रसव के अनन्तर रोग का उपशम होजाता है। और कहीं २ पर सन्तान प्रसव के बाद रोगका आरम्भ होता है।

हिस्टेरिया का साम्यभाव।

प्रायः अपतन्त्रक नामक वायु रोग से देखा जाता है उस के अधो लिखित लक्षण होते हैं।

निज कारणों से कुपित हुआ वायु अपने स्थान से ऊपर को गमन करता हुआ, शिर, व, शङ्खस्थान में वेदना पैदा करता है। और रोगी अङ्गों को इधर उधर फेंकता है। शरीर को धनुष के तुल्य टेढा कर लेता है। नेत्र बन्द कर लेता है, चेष्टा रहित हो जाता है, अथवा नेत्र जकड़ जाते हैं। कभी २ कबूतर की तरह शब्द करता है। श्वासावरोध हो जाता है, अथवा बड़ी कठिनाई से श्वास लेता है। चेतना नष्ट प्राय मालूम होती है, कुपित वायु जब हृदय से हट जाता है। तब रोगी स्वस्थ हो जाता है,हृदयके आवृत होनेपर मोहयुक्त होजाता है, कफान्वित वायु से अपतन्त्रक रोग होता है

वायुरूर्ध्वं व्रजेत् स्थानात्कुपितो हृदयंशिरः
शंखौच पीड़यत्यङ्गान्या क्षिपेन्नमयेच्चतः
निमीलिताक्षोनिश्चेष्टस्तब्धाक्षो वा प्रकूजति
निरुच्छ्वासोऽथवाकृच्छ्रादुच्छ्वसेत् नष्ट चेतनः
स्वस्थः स्याद्धृदये मुक्ते, चावृतेतुप्रमुह्यति
कफान्वितेन वातेनज्ञेय पत्यो(?)ऽपतन्त्रकः॥

पूर्वोक्त सब लक्षण हिस्टेरिया में मिलते हैं। यथा गले में श्वासावरोध होने के कारण गोलाकार मालूम होना, रोगी अपने पैरों को अन्दर सकुचित करता है।श्वासावरोध होने से गले में विशेष प्रकार का शब्द होता है. और पाश्चात्य चिकित्सक हिस्टेरिया के दो भेद मानते हैं। उसी भांति इसके भीदोभेद होतेहैं। अपतन्त्रक,तथा अपतानक अधिकतर अपतन्त्र का सादृश्य मिलता है।इति

चिकित्सा सिद्धान्त (Therapeutics)

रोग के आक्रमणमें अगके वस्त्रोंको शिथिल कर देना चाहिये, और मस्तक, मुख पर शीतल जल का परिषेक करे। अथवा शिर पर बरफ रक्खे। अथवा, अजवाइन का सत्, कपूर,पिपरमेंट,दालचीनी का तेल, लवंग का तेल, बादाम का तेल, काजू का तेल इनको सम भाग लेकर कांच की शीशी में रक्खे, और शीशी को हिलादेवे। पुनः इस तेल को शिर पर मालिश करे, और सुंघावे,इस से तात्कालिक लाभ पाया जाता है। अथवा बेलिरिगम Belirigm, व, हिङ्गु, कपूर के जल के साथ प्रयोग करे और आक्षेप निवारकनिम्न लिखित योगों का प्रयोग करना चाहिये। यथा—

टिञ्चर सम्बल	१ ड्राम
स्पिरिट इथोरिस	१ ,,
परिस्रुत जल	२ औंस

तरुण व्यक्तियों के लिये१ औंस की मात्रा में व्यवहार करे। बालकों के लिये १। अथवा २ ड्राम व्यवहार करे। यह हिस्टेरिया जन्य आक्षेपको दूर करता है।

रोगाक्रमण के पहले वल कारक औषधि के प्रयोग से व जलवायु के परिवर्तन से पुनराक्रमण की सम्भावना का ह्रास होता है अतएव रोगिया की अवस्था जानकर उसके विकार का संशोधन करी विधि पूर्वक उपसर्ग की चिकित्सा करे। स्वर लोप होने पर विद्युत आदिसे प्रतीकार करे। पेशी के दृढ आकुञ्चनमेंमर्दन तीव्रता व.क्लोरोफार्म का व्यवहार करें।

वेदना व, आक्षेप संयुक्त सम्पूर्ण लक्षणों के निवारण करने के लिये विशेष कर ग्लोबस हिस्टेरिकस्,क्रन्दन वेग,हृद् कम्पन प्रभृति वर्तमान होने पर टिचर (अरिष्ट) इगनेशिया १ मिनिम से ३ मिनिम मात्रा में प्रयोग करना लाभदायक है।

शीत बाध, मानसिक उद्वेग, वा मूर्च्छा के लक्षणों को शान्त करने के लिये कस्तूरी का प्रयोग करें ।

जरायवीय उत्तेजना जनितरोग होने पर और कोरिया Chorea के तुल्य आक्षेप, मुख मण्डल की रक्तता, और मस्तक के पश्चात् भाग में भार बोध होने पर टिंचर सिमिसिफ्यूगरेसिमोसा ५ मिनिम मात्रा में देवे ।

रोग का वेग, हृदयाध्मान, अजीर्ण होनेपर अधोलिखित व्यवस्था करें ।

स्पिरिट (सुरा) ईथर को १ औंस टिंचर वेलेरियनी एमोनियेट १ औंस एकत्र मिलाकर जब तक सब लक्षण शांत न हो जावें तब तक १ ड्राम (१-४ माशा) मात्रा जल मे मिला कर देवे । इस रोग में रोगी को मानसिक चिकित्सा सब से प्रधान है । अध्यापक शार्को महोदय का सिद्धान्त है । कि डिम्बाशय प्रदेश में लगातार प्रयोग करने पर इस रोग का दूसरा दौरा दूर होता है डाक्टर लुइटले की प्रसिद्ध वटी नीचे लिखी जाती है । जिङ्क वेलेरियन २६ ग्रेन कुइनाइन वेलेरियन २६ ग्रेन फेरिवेलिरियन २६ ग्रेन एक्सट्राक्ट (सार) एलोज एकोथा जल २२ ग्रेन मिलाकर २४ वटी बनावे । और आहार के बाद एक २ वटी करके दिन में तीन बार देना चाहिए ।

हिस्टेरिजनित उन्माद रोग में विशेष कर चरकोक्त कल्याणक घृत देवें । अथवा ब्राह्मी घृत प्रयोग करें । उपरोक्त प्रयोग देने के प्रथम स्नेह स्वेद, विरेचनादि रोगी को करादेवे विशेष चिकित्सा हिस्टेरिया के तुल्य ही है। इसी भांति हिस्टेरिया जनित मृगी रोग की करें । मूल व्याधि की चिकित्सा करने से उपद्रविक व्याधि स्वयं शांति होजाती है ।

योषापस्मार हिस्टेरिया

लेखक—श्रीमान् कविराज आयुर्वेद भूषण पं० धर्मदत्तजी विद्यालङ्कार, सिद्धान्तालङ्कार



योषापस्मार का कारणः—जिस मनुष्य पर परिस्थितियों का प्रभाव शीघ्र ही होजाता है उसे निर्बल कहाजाता है। उदाहरणतः यदि थोड़े ऋतुपरिवर्तन या किंचित् अपथ्य से ही कोई रोगग्रस्त होजाय तो उसे निर्बल कहा जाता है। यदि थोड़ी शीतवायु के स्पर्श से प्रतिश्याय होजाय तो नासिका को, यदि थोड़े अपथ्य से अजीर्ण होजाय तो पेट को निर्बल समझा जाता है। इसी प्रकार जिनके चित्त पर परिस्थितियों तथा घटनाओं का शीघ्र प्रभाव हो जाता है उनको भी निर्बल कहा जाता है। जो व्यक्ति थोड़े से कारण से भयशील होजाते, क्रोध-घृणा-प्रेम-भक्ति आदि के प्रवाहों में बह जाते हैं। वे भी निर्बल चित्त कहाते हैं। यह भी देखा जाता है कि जो मनुष्य एक प्रकार के बाह्य प्रभाव से शीघ्र प्रभावित होजाता है दूसरे प्रकार के अत्यन्त प्रबल प्रभाव से भी प्रभावित नहीं होता। उदाहरणतः कोई व्यक्ति थोड़े से भय के कारण से तो प्रभावित होजाता परन्तु क्रोध या चिन्ता के प्रबल कारण से भी प्रभावित नहीं होता परन्तु थोड़े से भी भक्ति या प्रेमके कारण से अत्यन्त प्रभावित होजाता है। इस प्रकार मानसिक भावों से शीघ्र प्रभावित होने वाले व्यक्तियों में योषापस्मार या हिस्टेरिया का रोग पाया जाता है। जैसे साधारण रोग शारीरिक निर्बलता का द्योतक है वैसेही यह रोग किसी अंश में चित्त की निर्बलता का द्योतक है।

ऐसे निर्बल चित्त वाले व्यक्ति के मन पर भय—निराशा—चिंता—प्रेम—भक्ति या अन्यकिसी घटना का तीव्र आघात पहुंचता है तो वह उसे सहन न कर सकने के कारण मूर्छित सा होजाता है यह इस रोग का पहला वेग होता है पीछे से वह घटना तो भूलसी जाती है परन्तु मनुष्य के चित्त की अज्ञात तह में उस घटना का आघात बना रहता है जब कोई ऐसी घटना हो कि जिससे चित्त पर पड़ा हुआ वह आघात मनुष्य को स्मरण होजाय तो वह तत्काल मूर्छित होजाता है। और सब कुछ भूल जाता है उस आघात के स्मरण से उत्पन्न होने वाले दुःख से बच जाता है यही कारण है कि हिस्टेरिया के रोगी को मूर्छित होने में कोई आराम मिलता है और इसीलिए हिस्टेरिया रोगी और रोगियों के समान इस रोग से मुक्त होनेके लिये कोई विशेष चेष्टा नहीं करते।

यदि पूरी छान बीन करके हुए रोगी को भूत काल का स्मरण कराते हुए पूछा जाय कि पहिले पहल रोग का आक्रमण कब हुआ था और किन अवस्थाओं में हुआ था तो उस मानसिक भाव का पता लगाया जा सकता है जिस से उसे यह रोग उत्पन्न हुआ। उदाहरणतः एक बीमारसे पूछा गया

कि जब उसे हिस्टेरिया का वेग हुआ तो उस से पहले वह क्या कर रहा था। उसने कहा वह चुप चाप बैठा था सहसा वेग आरम्भ हो गया फिर पूछने पर उस ने कहा कि वह आग (Fire) की तरफ देख रहा था। और पूछने पर उसने कहा कि आग (Fire) पर देखते २ उसे लड़ाई के फायर (Fire) शब्द का स्मरण आगया इस विकार के आने के पीछे उसे पता नहीं क्या हुआ पूछने पर पता लगा कि पहले जब वह फौज में नौकर था तब एक बार फायर का हुक्म होने पर गोलों की आवाज़ सुन कर भय भीत होकर मूर्छित हो गया था जो उस के लिये हिस्टेरिया का पहला आक्रमण था जो स्पष्ट है कि मन पर भय के तीव्र आघात से उत्पन्न हुआ था।

जिनका चित्त इतना निर्बल हो कि मानसिक भावों से तीव्रता से क्षुब्ध हो जाए उन में हिस्टेरिया रोग पाया जाता है। प्रायः स्त्रियों का चित्त निर्बल होता और भय चिन्ता आदि के भावों से शीघ्र ही क्षुब्ध हो जाता है इस लिये यह स्त्रियोंमें अधिक पाया जाता है और पुरुषों में स्त्रियों की अपेक्षया बहुत कम। इस रोग में शारीरिक विकार कुछभी नहीं होता केवल मनुष्य की बुद्धि में ऐसा विकार हो जाता है कि जिससे मूर्च्छा अचेतनता आक्षेप कम्प आदि लक्षण उत्पन्न होजाते हैं।

परन्तु प्रश्न हो सकता है कि केवल मानसिक विकार के कारण ऐसे तीव्र लक्षण उत्पन्न नहीं हो सकते केवल अतीत कालिक किसी घटना के कारण मन में उत्पन्न हुए आघात के स्मरण मात्र से ही ये तीव्र लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं यह समझ में नहीं आता कोई न कोई शारीरिक विकार या निर्बलता भी इस रोग के उत्पन्न करने में सहायक होती है। परन्तु ऐसी शङ्का करने वाले भूलजाते हैं कि कभी २ मानसिक भावों का शरीर पर बड़ा तीव्र प्रभाव होता है। उदाहरणतः जब किसी व्यक्ति के मन पर भय का तीव्र आघात पड़ता है तो उसका समस्त शरीर पसीना २ हो जाता—शरीर में आक्षेप होजाते बाकलङ्ग होजाना मलमूत्र निकल जाते हैं, चिन्ता के वेग से बाल श्वेत होजाते या गिरजाते हैं, शिरः शूल होजाता निद्रा नष्ट होजाती है क्षुधा नष्ट होजाती है शोक से अतीसार हो जाता, घृणा या जुगुप्सा के आघात से शीघ्र वमन होजाती है। इस प्रकार जब मानसिक वेगों के कारण शरीर में ऐसे तीव्र लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं तो इसमें क्या सन्देह होसकता है कि हिस्टेरिया रोग के लक्षण किसी शारीरिक रोग के परिणाम नहीं होते किन्तु मानसिक रोग के परिणाम होते और रोगी की अपनी कल्पना से ही उत्पन्न किये हुए होते हैं।

योषापस्मार के वेगः—

योषापस्मार के वेग कई प्रकार के होते हैं। कुछतो साधारण होते जिन्हें साधारण योषापस्मार कहते हैं। कुछ बहुत अंश में अपस्मार सदृश होते हैं। इन्हें अपस्मार सदृश योषापस्मार कहते हैं। कुछ उन्माद रोग के सदृश होते हैं इन्हें उन्माद सदृश योषापस्मार कहते हैं।

साधारण योषापस्मार के वेग के समय पहले रोगी के कोष्ठ प्रदेश पर बेचैनी सी होती है जो कुछ क्षण से कुछ मिनटों तक रहती है उसके पीछे वेग आरम्भ होता है, रोगी नीचे गिर पड़ता है परन्तु ऐसी जगह और ऐसी रीति से गिरता है कि उसे चोट नहीं लगती न ओष्ठ जिह्वा

आदि ही करती है। रोगी नीचे लेटा रहता है उसका शरीर अकड़ा रहता है, मुट्ठी बन्द रहती है, श्वास शीघ्र २ लेता है, बोलना बन्द होजाता है आंखें तीव्रता से बन्द रहती हैं। यदि उन्हें खोलने का यत्न करें तो रोगी उन्हें और बन्द करलेता है चिकित्सक समझता है कि रोगी बहाना करता है परन्तु वास्तव में वह बहाना नहीं करता आंखों को बलात्कार से खोलने से वे स्वदमेव प्रबलता से बन्द होती हैं। यदि रोगी की पलकें उलटाकर देखें तो पुतली ऊपर की तरफ फिरी हुई मालूम होती है जिससे पुतली का देखना कठिन होता है यदि नेत्र गोलक पर अङ्गुलि के सिरे से छुआजाय तो रोगी आंख मींचता है जिससे पता लगता है कि मूर्छा में भी रोगी की संज्ञा नष्ट नहीं होती। रोगी इस अवस्था में ५ मिनट से १ घण्टा तक रहता है।

अपस्मार सदृश योषापस्मार:—

कभी २ इस रोग का वेग अपस्मार रोग के वेग के सदृश होता है रोगी नीचे गिरने पर अपस्मारी के सदृश हाथ पांव मारता या धड़को ऊपर नीचे छटपटाता है अपने चेहरे से तीव्र मानसिक प्रसन्नता—शोक—भय आदि के भावों को प्रकट करता तथा अचेतनता में बहुत कुछ करदेता होता है। वेग १—२ मिनटों से घण्टे तक रहता है।

उन्माद सदृश योषापस्मार:—

कभी २ रोगी नीचे गिरने के पीछे विचित्र प्रलाप करता है जैसे कोई दूसरा व्यक्ति हो ऐसे भाषण करता है विचित्र मायामय दृश्य देखता है कोई प्राणियों को देखता है उन से डर कर भागता है कोई ईश्वर के मूर्ति मान रूपों को देखता है कोई अपने जीवन की पुरानी घटनाओं के चित्र साक्षात्कार करता है उनको वेग सदनुकूल भावों को चेहरे से प्रकट करता है रोगी वास्तव में कुछ काल के लिये अपनी बनाई हुई दुनियां में रहता है यह स्वप्नमयी मूर्छावस्था कुछ घन्टों से अधिक नहीं रहती।

रोगी को वेग के पीछे वेग के समय की कोई बात स्मरण नहीं रहती।

योषापस्मार के लक्षण:—

संज्ञा नाश तथा चेष्टा नाश:—सर्वांग में आधे अंग में या किसी एक अङ्ग में या अंग के किसी एक भाग में पूर्ण या अपूर्ण संज्ञानाश अथवा चेष्टा नाश हो जाना इस रोग का प्रधान लक्षण है उदाहरणतः किसीकी बाहु कोनी तक या टांग गोड़ों तक चेष्टा हीन हो जाती पूरी बाहु या आधा अङ्ग संज्ञा हीन हो जाता है किसी की एक आंख या दोनों आंखोंसे दीखना बन्दहो जाताहै किसी के एक कानया दोनोंकान बधिरहो जातेहैं घ्राणशक्ति तो प्रायः सदा बन्द हो जाती है या बहुत मन्द होजाती है जिह्वा की स्वाद शक्ति या नासिका की घ्राण शक्ति भी किसी किसी की मन्द हो जाती है किसी किसी की निम्न शाखायें संज्ञाहीन तथा चेष्टा हीन हो जाती हैं इस अवस्था में यातो टांगें शिथिल होती या अकड़ी रहती हैं।

परन्तु यह लक्षण वास्तविक तथा स्थायी नहीं होते क्यों कि ये खास नाड़ियों की दिशा में नहीं होते वास्तविक संज्ञानाश या चेष्टानाश नाड़ियों की दिशा में होता है। उदाहरणतः किसी को पेट पर तो संज्ञानाश हो जाता किंतु पीठ पर नहीं होता बाहु पर कोनी तक तो हाथ सो जाता परन्तु ऊपर बाहु ठीक रहती है, वास्तविक संज्ञानाश इस प्रकार का कभी नहीं होता जागृत अवस्था में

रोगी जिस अङ्ग को अर्धाङ्ग से ग्रस्त कहता है। निद्रावस्था में वह उसी अङ्ग को हिला जुला लेता है। यदि इन अङ्गों में सुई चुभोई जाय या बिजली के यन्त्र से बिजली की धारा गुजारी जाय तो वह अपने अङ्ग को हिला लेता है इसी प्रकार जिनकी आंख अन्धी या कान बहरे हो जाते हैं। इनमें वास्तव में य अङ्ग तो विषय का ठीक २ ग्रहण करते हैं परन्तु उनका मन या मस्तिष्क विषय को ग्रहण करना बन्द कर देता है या उस अङ्ग के लिये मन की स्मृति नष्ट हो जाती है जिससे इस रोग को भी योषा—अपस्मार कहते हैं। इसी लिये इस रोग में शारीरिक विकार कोई नहीं होता केवल मन ही कारण होता है जिससे वह स्पर्शन—दर्शन—श्रवण आदि में से किसी विषय को ग्रहण करना बन्द कर देता है। वेग के पीछे ये लक्षण भी लुप्त हो जाते हैं किसी किसी में ये लक्षण देर तक बने रहते हैं।

योषापस्मार के लक्षण प्रायः कर मानसिक होते हैं इसका यह अभिप्रायः नहीं कि कृत्रिम या बनावटी होते हैं वास्तव में अस्थायी तौर से ये लक्षण उत्पन्न हो ही जाते हैं क्यों कि जिस रोग में संज्ञा नाश तथा चेष्टा नाश हो गई है यदि उस के पांव की तली को खुजलाया जाय तो पांव की अंगुलियें नीचे को नहीं मुड़तीं साधारण रोग में ऐसा करने से पांव की अंगुलियां अवश्य नीचे को मुड़ जाती हैं। इसी प्रकार जिस रोगी को वाक्स्तंभ हो गया है यदि उसके गले में अंगुलि डाल कर छुआ जाय या किसी प्रकार की खुजली की जाय तो उसके गले में किसी प्रकार का क्षोभ नहीं होता साधारणतः गले में क्षोभ अवश्य होता है इस से मालूम होता है कि ये लक्षण बनावटी नहीं होते परन्तु मन के विकार से कुछ काल से शरीर में उत्पन्न हो जाते हैं।

आक्षेप कम्प तथा संकोचः—आदि लक्षण भी होते हैं। कोई कोई रोगी गिर कर हाथ पांव मारते या धड़ को ऊपर नीचे छट पटाते हैं। कईयां के बाहुओं या जंघाओं में नियमित तौर से कम्प होते हैं। कइयों में अंगुली अंगूठे हाथ पांव आदि मुड़ जाते या अकड़ जाते हैं। किसी का एक अंग अकड़ा रहता है किसी में ढीला होकर लटका रहता है। किसी में गले के अकड़े रहने से निगलना कठिन हो जाता है और खाना असम्भव हो जाता है कभी २ आंतें ऐसी अकड़ जाती हैं कि तीव्र मल बन्ध हो जाता और किसी औषधि से लाभ नहीं होता। परन्तु जब रोगी निद्रावस्था में होता है तो ये आक्षेपादि लक्षण लुप्त हो जाते हैं।

अन्य लक्षणः—

किसी २ रोगी को पीठ स्कन्ध शिर हृदय या दूसरे किसी अंग में शूल मालूम होती है यदि उस स्थान को दबाया जाय तो शूल बढ़ जाती है किसी रोगी को तीव्र वमन अरुचि आदि लक्षण होते हैं।

मानसिक लक्षणः—

हिस्टेरिया रोगी का मन अति निर्बल और नाजुक होता है जिससे साधारण कारणों से भी क्षुब्ध हो उठता है इनमें क्रोध और चिड़ चिड़े पन के वेग शीघ्र आजाते हैं किसी का मन इतना निर्बल होता है कि उनको जो लक्षण सुझाया जाय वही लक्षण उत्पन्न हो जाता है यदि कहा जाय

अमुक स्थल पर दर्द होती है तो उनको वहीं दर्द होने लग जाती है यदि कहा जाय अमुक स्थल में अगुलि स्पर्श मालूम होता है या नहीं उन्हें वहां स्पर्श की प्रतीति होनी बन्द हो जाती है किसी को निद्रा नहीं आती यदि थोड़ा सा रङ्गदार पानी दवाई तौर पर पिला दिया जाय या शुद्ध जल को सूची वेध यन्त्र द्वारा त्वचा के नीचे डाल दिया जाय तो उन्हें शीघ्र निद्रा आ जाती है। इन रोगियों के सामने जो विचार रखा जाय उसका उन पर तीव्र प्रभाव पड़ता है उस पर छान बीन कर के अपने लिये निश्चय करने की शक्ति इनमें नहीं होती। कई रोगी वो सदा अपनी दुःख कथा सुनाते रहते हैं और दूसरों की सहानुभूति प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं यदि कोई सहानुभूति न दिखाये तो अपने दुःख को और बढ़ाके सुनाते हैं जिससे उनके साथ सहानुभूति उत्पन्न हो जाय। वे दुःख की कथा इस लिये नहीं सुनाते कि उनका इलाज किया जाय प्रत्युत इसलिये कि सहानुभूति दिखाई जाय रोग के इलाज की कोई बड़ी अभिलाषा उनके मन में नहीं होती।

इस प्रकार यह पता लगता है कि यह रोग शारीरिक नहीं अपितु मानसिक है रोगी की मनकी कल्पना के अनुसार ही लक्षण उत्पन्न होते हैं। यद्यपि कोनी तक भी बाहु भुजा से पृथक् नहीं परन्तु तो रोगी को वह पृथक् दिखाई देती है इस लिये मानसिक कल्पना से वह हिस्सा तो मर जाता और ऊपर की बाहु ठीक रहती है बाहु का वह भाग वास्तव में मरा नहीं होता परन्तु मानसिक अवस्था का उस पर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि कुछ काल के लिये मृतवत् हो जाता है मन के तीव्र प्रभाव से ऐसा हो सकता है कि शरीर का कोई भाग सर्वथा क्षीण-निर्जीव हो जाय मन के प्रभाव से नाड़ी और हृदय की गति मन्द हो जाती या लुप्त हो जाती है तब इस में क्या आश्चर्य है कि मन के कारण से हिस्टेरिया रोग उत्पन्न हो जाय। यह कहना भी असत्य है कि हिस्टेरिया रोगी जान कर के कृत्रिम लक्षण दिखा कर दूसरों को वञ्चना करता है यदि कोई मनुष्य हिस्टेरिया रोगी के समान वास्तव में छल करे तो उन आक्षेप कम्प आदि को २-४ मिनट से अधिक नहीं कर सकता क्योंकि इनसे वह अत्यन्त अधिक थक जाय जबकि हिस्टेरिया रोगी घण्टों तक इसी तरह पड़ा रहता है।

भेदक लक्षण:—

इस योषापस्मार रोगका अपस्मार से भेद करना कठिन होता है परन्तु इसके भेदक लक्षण निम्न लिखित हैं।

१—अपस्मार रोग में दौरों के प्रारम्भ होते ही रोगी की एक चीख निकलती है। यह चीख स्वयं एक होती तथा रोगी के किसी प्रयत्न के बिना ही अकस्मात् निकलती है। अपस्मार में इसके विपरीत रोगी अपने प्रयत्न से चीखता हुआ मालूम होता है तथा एकसे अधिक बार चीखता है।

२—अपस्मार में रोगी को गिर कर चोट भी लग जाती है परन्तु योषापस्मारी को गिरकर चोट कभी नहीं लगती वह ऐसे गिरता है कि उसे चोट न लगे।

३—अपस्मार का वेग रोगी को दिन—रात—एकान्त किसी समय भी आ सकता है परन्तु योषापस्मार का वेग सोते हुए या एकान्त में कभी नहीं आता जब तक रोगी को यह पता न हो कि उसके पास कोई है उसे वेग नहीं आता।

४—अपस्मार की मूर्छा गहरी होती है। यदि उसके नेत्र गोलक को अंगुलि से छुआ जाय तो वह आंख नहीं झपकाता। योषापस्मार में मूर्छा इतनी गहरी नहीं होती, यदि सुई से चुभोया जाय तो वह अङ्ग को हिला लेता है।

५—अपस्मार में रोगी का रङ्ग नीला हो जाता है। मुख में दांतों के भिचजाने से जीभ-गाल या ओठ कटजाते हैं जिससे खून निकलने लगता है मुख से झाग भी निकलती है। योषापस्मार में रङ्ग फीका, पीला, या लाल होता है। मुख से खून या झाग वगैरह नहीं निकलते।

६—अपस्मार में मलमूत्र आदि भी कभी २ निकल जाते हैं, योषापस्मार में कभी नहीं निकलते कभी २ स्त्रियां या कोई २ पुरुष वञ्चना के उद्देश्य से कृत्रिम योषापस्मार का रूप धारण कर लेते हैं इस कृत्रिम योषापस्मार से वास्तविक योषापस्मार का भेद करना कभी २ कठिन होता है परन्तु इन दोनों प्रकार के रोगियों के बर्ताव में इतना भारी भेद होता है कि चतुर चिकित्सक के लिए भेद करना कुछ कठिन नहीं।

योषापस्मार की चिकित्सा

वेग के समय रोगी की मूर्छा हटाने के लिए मुखपर जलकी छीटें डालते हैं। नस्य सुंघाते हैं या हलकी बिजली की धारा उसके अंग में गुजारते हैं इससे उसे चेतना आती है।

परन्तु इस मानसिक रोग की वास्तविक चिकित्सा मानसिक ही होनी चाहिये। इसके चित्त पर यह प्रबलता से अङ्कित करने की आवश्यकता है कि उसे वास्तवमें कोई रोग नहीं है जो है वह केवल उसकी कल्पना से उत्पन्न हुआ है। परन्तु रोगी को ऐसा कहने से कोई प्रयोजन सिद्ध न होगा उलटा रोगी का जो अपने को वास्तव में रोगी समझता है चिकित्सक पर से विश्वास उठ जायगा। जबतक चिकित्सक रोगी का विश्वास अपने ऊपर पूरी तौर से स्थापित न करले तबतक ऐसा कहने से उसपर कोई प्रभाव न होगा। इस लिए इस रोग की चिकित्सा के समय चिकित्सक के धैर्य और दृढ़ विश्वासिता की परीक्षा होती है जिसमें इन दोनों में से एक गुण भी कम है वह चिकित्सा में सफल नहीं होगा। धैर्य की आवश्यकता इसलिए है कि रोग की चिकित्सा में शीघ्र सफलता नहीं होती दूसरा जबतक चिकित्सक को दृढ़ विश्वास न होगा कि वह रोगी को पूरी तौर से अच्छा कर सकता है वह चिकित्सा न कर सकेगा।

यह मानसिक चिकित्सा एक तो जाग्रत अवस्था में और दूसरी निद्रावस्था में कीजाती है जाग्रत अवस्था में यह चिकित्सा निम्नलिखित विधि से कीजाती है।

रोगी को समीप बिठाकर उसकी सब शिकायतें भली प्रकार सुनें उसकी एक २ शिकायत को कागज़ पर नोट करलें। उसके मुख आमाशय—यकृत—आन्त्र—मूत्राशय —गर्भाशय आदि सम्बन्धी जितनी शिकायतें हों सुनकर नोट करलें। फिर मानसिक निर्बलता सम्बन्धी लक्षणों को एक २ करके पूछें उसके स्वभाव में भय तो नहीं है किसी प्रकार की चिंता तो नहीं स्मृतिशक्ति बलवती है या निर्बल है उसके अन्दर चित्त को एकाग्र करने की कितनी सामर्थ्य है इससे उसकी मानसिक विशेष निर्बलता का पता लगजायगा फिर उसके मुख—फुफ्फुस—हृदय—नाड़ी आदि भिन्न २ अङ्गों की पूरी २ परीक्षा करें जिससे जहां

अपने मनमें यह सन्देह न रहे कि रोगी को कोई रोग है या नहीं वहां रोगी कोभी दृढ़ निश्चय होजाय कि उसकी जितनी अच्छी परीक्षा हो सकती थी करलीगई है । उसके मल—मूत्र—थूक आदि की भी यथावत् परीक्षा करनी चाहिए इस सारी परीक्षा से यदि कोई व्याधि पता लगे तो उसे रोगी से छिपाना न चाहिये उसे कह देना चाहिये कि उसकी अमुक शिकायत ठीक है इसके बताने से कोई हानि नहीं प्रत्युत इस से रोगी का विश्वास चिकित्सक पर बढ़ता है। उस शिकायत की उचित चिकित्सा निर्धारित करनी चाहिये । यदि परीक्षा से पता लगे कि वास्तव में उसे कोई रोग नहीं है तो स्पष्ट कहदेना चाहिए । सारी देख भाल से यही पता लगता है कि उसके शरीर में कोई भी रोग नहीं है उसका शरीर बिलकुल स्वस्थ है । अब उसके चित पर यह अङ्कित करने का समय है कि उसके रोग का एक मात्र कारण उसका मन है उसे समझाना चाहिए कि मन के कारण शरीर में तीव्र परिवर्तन उत्पन्न होजाते हैं जैसे अति चिंतासे बाल श्वेत होजाते हैं र गफीका होजाता क्षुधा नष्ट होजाती है अति भय के वेग से वाणी बन्द होजाती, पसीना आजाता, मलमूत्र निकल जाते हैं इसी प्रकार मन की झूठी कल्पनासे ही उसका सारा रोग उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार नियम से प्रति दिन कुछ दिन तक रोगी के मन पर ये भाव अङ्कित करते रहना चाहिये। इससे उसके मनकी निर्वलता हटती और कुछ काल में उसकी अवस्था में परिवर्तन आने लगता हैं।

रोगी को निद्रावस्था में लाकर प्रभाव डालने की विधि अपेक्षया कठिन और अभ्यास साध्य है।

रोगी को प्रारम्भ में ही समझा देना चाहिए कि इस चिकित्सा से उसे कोई हानि नहीं होगी प्रत्युत आशातीत लाभ होगा। अपने ऊपर उसका विश्वास जमाने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए । अगले दिन रोगी को एक अंधेरे से कमरे में आराम से एक आराम कुर्सी पर या बिस्तरे पर लिटा देना चाहिए उसकी आंखे बन्द करा और चित्तको स्वस्थ कराकर हाथोंकी उंगलियोंसे जैसे किसी को सुलाया जाता है सुलाना चाहिए इसमें कुछ काल पीछे रोगी आधी निद्रावस्था में आजाता है फिर चिकित्सक अपने मनको बलवान करके दृढ़ निश्चय पूर्वक निर्निमेष नेत्र हो कर उसके चित्त पर यह अङ्कित करना आरम्भ करता है कि उसे कोई रोग नहीं है और वह बिलकुल स्वस्थ और नीरोग है यदि हिस्टेरिया के कारण उसका कोई अंग निर्बल होतो ऊपरी तरफ निर्देश करके कहना चाहिए कि वह अब उस अंग को अच्छी तरह हिला जुला सकता है और उठने पर इस अंग से पूरी तरह से काम ले सकेगा। आधे-या एक घण्टे तक इस प्रकार उसके चित्त पर बलवान प्रभाव डाले जाते हैं। इसके पीछे उठने पर रोगी में अधिक आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ २ प्रतीत होता है। इस प्रक्रिया को कई बार दोहराना भी आवश्यक है। केवल वाणी से भी काम चल सकता है परन्तु साथ २ हाथों से या बिजली की हलकी धारा उसके निर्बल अंगों में से गुजारने से रोगी पर और भी अधिक प्रभाव पड़ता है । ऐसे सभी उपाय करने चाहिये जिससे रोगी के चित्त पर अधिकाधिक प्रभाव पड़े। इससे रोगी की अवस्था में बड़ा परिवर्तन आजाता है।

जब रोगी की अवस्था कुछ अच्छी होजाय तो उसके रोगके वास्तविक कारणका पता लगाना

चाहिये उससे पूछना चाहिये कि पहले पहल रोग कब हुआ जब रोगी बताये कि अमुक वर्ष में पहले पहल हुआ था तो उस और भूत काल की याद दिलानी चाहिये क्योंकि प्रायः रोगियों को भूल जाता है कि पहलेपहल रोग कब हुआ था जब रोगी निश्चय से कहे कि सब से पहले यह रोग अमुक समय पर हुआ था तो उसकी उस समय की सब अवस्थाओं का पता लगाना चाहिये तो रोगी को किसी मानसिक भाव का स्मरण आयेगा कि जिसके कारण उसे पहले पहल रोग हुआ किसी भय—वा चिंता आदि की बात से प्रायः यह रोग आरम्भ होता है जब रोगी कह सके कि अमुक मानसिक भाव से पहले पहल रोग हुआतो उसे उस मानसिक भाव की निर्बलता समझानी चाहिये जिससे उसका यह निश्चय होजाय कि अमुक बात ऐसी थी ही नहीं कि जिससे मनमें भय लाया जाय या जिस पर कुछ भी चिंता की जाय। इससे रोगीके मन पर हुआ आघात अच्छा होजाता है।

इस मानसिक चिकित्सा के अतिरिक्त इस रोग में अपस्मारोक्त औषधियों से भी बहुत कुछ लाभ होता है। ब्राह्मी के घृत या अरिष्ट आदि नियम से पिलाने चाहिये भोजन में पेठा—हिङ्गु-गौ घृत-पुराना घृत खिलाना चाहिये। त्रिफला, आमलकी, द्राक्षा आदिकोई बल्य औषधि जिससे आंतें भी स्वच्छ रहें देते रहना चाहिये। रोगी के लिये साधारण पौष्टिक औषधियां तथा उपचार करना चाहिये।

हिस्टेरिया योषितापस्मार

(ले० कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त भिषग्रत्न)

भ्रश्यते स स्मृति भ्रंश । आत्रेय



स्टेरिया यह एक मानसिक (प्रज्ञापराध जन्य वातिक) विकार है। इस रोगके कारण मानसिक वृत्तियों को पूर्ण उन्नति नहीं होती। जिसके कारण अनेक क्रियायें (ज्ञान क्रिया सम्बन्धि) साधारणत: एक समय २ पर विकृत होजाती है। यह विकार दर्द, शून्यता, स्तम्भनाश (पैरलेसिस) आदि साधारण अपतन्त्रक चेहरे का या शरीर की आकृति वर्णता, स्पन्दन, मूत्रावरोध, एवं अन्य कई विकार होते हैं। यह विकार एक ही व्यक्ति में समय २ पर होते हैं। इन विकारों का साधारणतः हिस्टेरिया के प्रभाव जन्य माना जाता है। दूसरे शब्दों में हिस्टेरिया का लक्षण कहा जाता है। दूसरे "हिस्टेरिया" इस शब्द को मानसिक वृत्तियों की उस साधारण अवस्था को नाम देते हैं जिसके कारण यह विकार होते हैं, जिस व्यक्ति में यह लक्षण एक बार होजाते हैं उसे हिस्टीरीकल संज्ञा देदी जाती है और समझा लिया जाता है कि उसमें आगे भी आक्रमण होंगे।

हिस्टेरिया

इस रोग का अनुवाद आर्य चिकित्सा में कई विभिन्न शब्दो द्वारा किया जाता है। कुछ विद्वान इसको अपस्मार करके ही पहिचानते हैं दूसरे योषितापस्मार (स्त्रियो को होने से) और तीसरे अपतन्त्रक नाम देते हैं।

भगवान आत्रेय के अनुसार यह प्रज्ञापराध जन्य रोग है। कारण—

तत्व ज्ञाने स्मृतिर्यस्य रजो मोहा वृतात्मनः।
भ्रश्यते स स्मृति भ्रंशः स्मर्त्तव्य हि स्मृतोऽस्थितम्।
धीधृति स्मृति विभ्रष्ट कर्मयत्कुरुतेऽशुभम्।
प्रज्ञापराधं त विद्यात् सर्व दोष प्रकोपणम्॥
प्रज्ञापराध जानीयात्मनसो गोचर हितन्॥

आत्रेय

देखिये लक्षण।

हृत्कम्पः शून्यता स्वेदो ध्यान मूर्च्छा प्रमूढता।
निद्रा नाशश्च तस्मिंस्तु भविष्यति भवत्यथ॥

सुश्रुत

मस्तिष्क की उन्नत रचनाओं (क्रियायों) के विकार का यह एक भाग है। अर्थात् मानसिक वृत्तियां (स्मृति, बुद्धि, प्रज्ञा,) एवं इनकी सहायक उपवृत्तियां भी विकृत होजाती हैं

इस रोग को "हिस्टीरिया" नाम दिया जाने का एक मुख्य कारण है। प्राचीन लोगों का विचार था कि यह रोग गर्भाशय की विकृति के कारण होता है। उन लोगों का विचार था कि गर्भाशय एक स्थान से दूसरे स्थान में घूमता फिरता है। जिससे यह लक्षण होते है परन्तु पहिली गवेषणाओं ने यह साबित कर दिया कि जिस प्रकार स्त्रियों में यह रोग होता है उसी प्रकार पुरुषों में भी देखा जाता है।

आयुर्वेद की दृष्टि से अपस्मार से भिन्न यह कोई रोग नहीं। जिसका मुख्य कारण वात प्रकोप है. वात प्रकोप के कारण दोष कुपित होकर संज्ञावह स्रोतसों को अवरोध कर लेता है। जिससे स्मृति का विनाश होजाता है।

कारण

यह प्रायः मुख्य करके स्त्रियों का रोग है। इसका आक्रमण प्रायः मुख्य करके यौवनारम्भ के समय होता है। अर्थात् १५ वर्ष से आरम्भ होता है और जबतक आर्तव (गर्भ धारण करने के लिये योग्य होती है) काल रहता है उस समय तक (५० वर्ष की आयु तक) के बीच में होता है। इस आयु के बाद एवं छोटी लडकीयों में प्रायः बहुत कम देखने में आता है। युवा पुरुष बहुत कम आक्रमित होते हैं। छोटे बच्चे कभार आक्रमित हो जाते हैं।

"हैरेडिटि" इस रोग में आवश्यक भाग लेती है। हिस्टेरिया, जहां हिस्टेरिया के रूप में हिस्टोरीकल स्वभाव के माता पिता से उतरता है, वहां मद्यपी, पागल, उन्माद रोगी अथवा अन्य मानसिक विकार वाले माता पिता से सन्तान में हिस्टेरिया के रूप में आता है। इससे स्पष्ट है कि हिस्टेरिया मानसिक विकार है।*

इसके अतिरिक्त हिस्टेरिया रोग का सम्बन्ध आचरण सम्बन्धी शिक्षा से भी है। यदि बचपन में ही उसे जब तरंगे मस्तिष्क में पहुंच जाती है।

---

* देखिये विवाह और रोग पुस्तक मनुस्मृति में अपस्मार रोग से ग्रस्त घराने में विवाह करने से मना किया है। "क्षय्यामयाव्यपस्मारी श्वित्री—"

से दर्द मालूम करता है। विशेषतः मेरुदण्ड डिका प्रणाली वाम कुक्षि स्तन्य भाग के नीचे शिर की मूर्धा पर कईबार जिधर दबाते हैं उससे उल्टी ओर दर्द बताता है। कईबार शून्यता भी होजाती है। संज्ञानाश प्रायमध्य रेखा के एक ही ओर होता है दृष्टि भी दूषित होजाती है, जीभ का स्वाद बदल जाता है। मीठे को कड़वा,और कड़वे को मीठा समझता है घ्राणशक्ति में भी परिवर्तन आजाता है

(ग) क्रिया सम्बन्धी लक्षण—श्वास में काठिन्यता अनुभव करता है। बिना ही एबडक्टर पेरेलिसीस" के एबडेक्टर पैरालिसीस का रोगी भ्रम करता है फेरिंक्स (गालखव) की मांस पेशियो के पक्षाघात के कारण निगरण में काठिन्य अनुभव करता है कई बार आंख में प्टोसीस भी होजाता है। पक्षाघात एक अंग का, अर्धांगका, अधोभाग का अथवा सम्पूर्ण शरीर का होजाता है। रोगी समझता है कि वह अंग को नहीं उठा सकता। यदि कोई उसकी भुजा ऊपर उठा देवे तो वह उसे सहारा देकर खड़ी रखती है,या आधे रास्ते तक पक्षाघात की भांति गिरने देता है। यदि रोगी का ध्यान दूसरी ओर हटादिया जावे तो उसके निरर्थक अंग को सुगमतासे हिला सकते हैं। मांस पेशियों का पोषण उनकी वैद्युतिक शक्ति स्वस्थ होती है। "नीजक" स्वस्थ होता परन्तु कईयों में नीजक बढ़ जाता है। अधोभाग के पक्षाघात में रोगी बिस्तर पर अपने अंगों को घुमा सकता है परन्तु खड़ा नहीं होसकता। मूत्र और विष्ठा का कभी अवरोध नहीं होता। हमें प्लीजीया में टांगें भुजाओं की अपेक्षा खराब होती हैं। पक्षाघात होसकता है परन्तु सदा एनेस्थी सया के साथ नहीं।

(१) टोनिक कन्ट्रैक्सन—(शक्ति जन्य संकुचन)-देर तक शरीर के एक या अनेक मांस पेशियों में बलवत संकुचन होते हैं यह संकुचन रोग के आक्रमण से स्वस्थ होने के बाद भी आते रहते हैं। यह आघात या उत्तेजक कारण से फिर जागृत होजाते हैं। भुजा और टांगें दोनो प्रभावित होती हैं। भुजामें कोहनी पर मुड़जाती हैं। और दोनों बाजु समीप में आजाते हैं। पांव तन जाते हैं यदि अङ्गों की दशा बदलने का प्रयत्न किया जावे तब अङ्ग विरोध में बल लगाते प्रतीत होते हैं। साधारण नींद में भी यह ढीले नहीं होते। क्लोरोफार्म से पूर्ण संज्ञा नाश करने से अङ्ग ढीले हो जाते हैं। चारो हाथ पाव का तनाव कठिन है। जबाड़ी का बन्द होना भी हिस्टीरीकल आक्षेप का एक भेद है। उस समय शून्यता संज्ञानाश भी होजाता है। तनाव कई दिन या महीने तक भी रहता है पीछे सहसा शांत होजाता है।

(२) क्लोनिक कन्ट्रैक्सन—यह ट्रैमर या रीमीकल रूप में होते हैं। हाथों का हिलाना ग्रीवा को घुमाना प्रायः होता है। हाथ पांव पीटता है, सारे कोष्ट की गति तैरने के समान होता है यह प्रायः कारिया से मिलता है।

हिस्टैरिकल फिट—विक्षेप उत्पन्न करने वाले उत्तेजक कारणो से जहां पर यह आक्रमण आरम्भ होताहै वहां आधी रातकोभी हो जाताहै। आक्रमण से पूर्व रुग्णको प्रतीत होता है कि एक गोला गले में आरहा है। श्वास रुकता प्रतीत होताहै इस के साथ भ्रम, स्पन्द, चिल्लाना, अट्टहास, होता है। रोगी भूमि, कुर्सी सोफा आदि पर गिर

पड़ता है। हाथ पाँव तन जाते हैं। शरीर आगे की ओर झुका (Opisthoronus) हो जाता है * शिर और एड़ी ही भूमि को छू रही होती है बीच से पीठ ऊंची हो जाती है। भुजायें तनी होती हैं या समकोण पर शरीर के पार्श्व में मुड़ी होती हैं। अङ्गुलियां जकड़ी होतीं हैं, शिर को रोगी फर्श पर बार २ मारता है यहां तक कि रक्त बहने लगता है। अंगों को इधर उधर फैंकता है दांत भींचे होते हैं। आंखें बन्द होता है खोलने में बाधा करता है, यदि खोल दी जायें तो ऊपर की ओर घूम जाती हैं। चेहरा लाल होता है, मृगी के समान फीका नहीं होता। मुख लाल स्राव होता है, जीभ प्रायः नहीं कटती। रोगी की संज्ञा लोप नहीं होती। उसे ज्ञान होता है, परन्तु वह प्रश्नों का उत्तर नहीं देता। लड़ाई की क्रियायें समाप्त होने के बाद (जो कि कुछ मिनटों के बाद समाप्त हो जाती हैं) रोगी चिन्तित व्यक्ति की भांति शान्त गम्भीरावस्था में हो जाता है। उस की आंखें बन्द होती हैं। शांत या प्रलाप करता है दोस्तों से कोई अपील नहीं करता। इसके पश्चात फिर आक्षेप आरम्भ होते हैं। इस प्रकार यह परिवर्तन (शान्तावस्था आक्षेप) क्रमशः दो या तीन घण्टे तक चलते रहते हैं।

---

*स्नायु प्रतान मनिलो यदाक्षिपति वेगवान्।
विष्टब्धाक्षः स्तब्ध हनु सम्पपार्श्वः कफवमन्॥
आभ्यन्तर धनुरिव यदा नमति मानवः
तदो सोऽभ्यन्तरायाम कुरुते मारुतोबली ॥
बाह्य स्नायु प्रतानस्थो बाह्यायामं करोतिच ॥

सुश्रुत

प्रायः स्वस्थता शीघ्र हो जाती है। क्रियायें बन्द हो जाती हैं, रोगी आंखें खोल देता है। अपने चारों ओर भटकती आंखों से देखता है कि वह क्या कर रहा है अपने पूर्व के अनुभवों को स्मरण करके चिल्लाता है। आक्रमण के बाद भी कई दिनों तक शिर दर्द बनी रहती है। दूसरा आक्रमण शीघ्र नहीं होता। रोगी कहता है कि जो कुछ उसके साथ बोला है, उसके विषय में वह कुछ नहीं जानता।

इसके अतिरिक्त इस रोग का आक्रमण एक विशेष रूप में होता है। जिसको हिस्टेरिया मेजर—या हिस्टेरियो ऐपेलेपटिक नाम एक फ्रांस के विद्वान ने दिया है। इस आक्रमण में रोगी की स्वस्थता—आचरण में भी भेद आ जाता है। उस की प्रवृत्तियां निराशावादि (मैलं कोलिक) की भांति हो जाती हैं। शरीर की क्रियाओं में भी परिवर्तन आ जाता है। यथा—जीभ चलाना, अपचन हिक्का जृम्भा, स्पन्दन आदि पेशियों की निर्बलता अस्थिरता, सुई चुभने की प्रतीति, और अन्त में ज्ञान तन्तुओं के विकार जैसे—शून्यता, अतिस्पर्श ज्ञान हो जाता है। आक्रमण चार भागों में स्वयं विभक्त है। यथा—

(क) अपस्मारिक समय
(ख) सङ्कोच और तीव्र क्रियायें (आयाम)
(ग) उत्तेजक स्थिति
(घ) प्रलापावस्था (उन्मत्तावस्था)

प्रथमा वस्था में संज्ञानाश के साथ शक्ति जन्य अवस्था (मृगी की भांति) होती है। यह २ से ५ मिनट तक रह कर शांत हो जाती है। द्वितीयावस्था आयाम की होती है। रोगी अपनी एड़ी

और शिर के भार टिका होता है, उसकी पीठ बिस्तर से उठी होती है। फिर वह सपाट (पीठ के भार) बिस्तर पर गिर पड़ता है। यह क्रिया कई बार होती है। अङ्गों का तीव्र वेग बल आकुंचन एवं विकास होता है। इसके बाद तृतीयावस्था आरम्भ होती है। रोगी एक घड़ी में शोकातुर तो दूसरी घड़ी में खिल खिलाता है कभी रोता है कभी अट्टहास करता है। प्रसन्नता दिखाने के लिये कोष्ठ को फैला कर टांगो और भुजाओं को शरीर के समकोण में ले आता है। इसके पश्चात् रोगी चतुर्थावस्था उन्मत्तावस्था में आजाता है। जिसमें से धीरे २ छूटता है।

(घ) आशय सम्बन्धि लक्षण—अन्न प्रणाली के आक्षेपों के कारण निगरण में काठिन्य होता है। यदि रचना सम्बन्धी बाधा से भेद करने के लिये नाड़िका यन्त्र प्रवेश किया जाये तो उसमें भी बाधा होती है। वमन, आमाशय शूल, आध्मान मुख्य रूप से होते हैं। अरुचि, हल्लास इसका मुख्य लक्षण है। देर तक भोजन को इन्कार कर देती है। जो कन्यायें प्रायः उपवास रखने की अभिरुचि वाली होती है वह प्रायः इस रोग से ग्रस्त होने वाली होती है। शरीर में किसी पार्श्व में दर्द होती है। श्वास विशेष रूप से तीव्र होता है। फुफ्फुस के बिना किसी लक्षण के यह ७० से ६०तक पहुंच जाता है। सोने पर श्वास २०से १८ आजाता है हिस्टेरिया रोगी को कास भी साधारणतः होता है। हिस्टेरिया के आक्रमण के पीछे रोगी जो मूत्र प्रवाह करता है वह पीला, पतला, मिनल, और कम आपेक्षिक गुरुत्व वाला होता है। स्राव घट जाता है। मूत्रावरोध प्रायः नहीं होता। मल बन्ध रहता है परन्तु अतिसार कभी नहीं होता। ताप परिमाण हद दर्जे तक (११० तक) वर्मा २१ बढ़ जाते हैं।

हिस्टेरिया का उन्माद के साथ अतिघनिष्ठ सम्बन्ध है। बहुत सी पागल औरतें पहिले इस रोग से ग्रस्त होती हैं। इन दोनों में विभक्त करने वाले रेखा खींचना कठिन है।

पहिचान—इसके लिये लिंग, आयु का जानना आवश्यक है। अवयवों की विशेष रूप से परीक्षा करनी चाहिये। यदि अवयव स्वस्थ हों तो इस रोग की सम्भावना विशेष रूप से करनी चाहिये। इस रोग को पहिचान कराने वाले कई लक्षण विशेष होते हैं। इसका मृगी से भेद करना चाहिये।

पूर्व कथन—अनिश्चित है। बड़ी उमर में स्वयं यह रोग मर जाता है।

चिकित्सा—

(क) साधारणतः—रोगी को उत्तम परिस्थिति में रखना चाहिये। उत्तम वायु, भोजन साधारण न थकाने वाली व्यायाम, मानसिक श्रम से बचाव, आँतों की शुद्धि तथा रक्त वर्धक भोजन देने चाहिये।

(ख) रोगी को मित्रों से दूर ऐसे स्थान पर ले जाना चाहिये जहां अनुचित सहानुभूति अथवा प्रेम दिखाने वाले व्यक्ति न हों। कई बार औषधालय में रोगी जाते ही स्वस्थ हो जाते हैं। जहां कि केवल एक रोगी ही होती

है। जो कि आपत्ति से उसे बचाती है। रोगी के साथ कभी भी अनुचित सहानुभूति नहीं दिखानी चाहिये।

(ग) दर्दों के लिए साधारणतः धतूरे का लेप उष्ण उपनाह, सेक आदि करना चाहिये।

(घ) पक्षाघात के लिये विद्युतधारा का उपयोग तीव्र रूप में करना चाहिये। शक्तिजन्य आक्षेप विद्युतधारा या आग के पास ओर छाला उठाकर रोके जा सकते हैं।

(ङ) तीव्रावस्था में उचित है कि रोगी का क्लोरोफार्म के द्वारा संज्ञालोप कर दिया जाये।

(च) शङ्खों का सीधा करके उनको पलङ्ग के साथ बांध देना चाहिये।

(छ) यदि आक्षेप बलवान आकुलता युक्त हों तो शांतिकारक औषध यथा भांग गांजा, धतूर ब्रोमाइड, क्लोरल, हाईसोसिन, एपोमार्फीन हाइड्रो ब्रोमाईड देने चाहिये।

(ज) आतातुरता आक्रमण विष को अन्यत्र बदलने से या तीव्र गन्ध के द्वारा तथा अमोनिया ईथर के द्वारा रोका जा सकता है।

(झ) आक्रमण को शांत करने के लिए सिर पर ठण्डे पानी की धार सुन्दर ठण्डे पानी (कोलोनवाटर या सिरकायुक्त मिश्रित पानी) से छीटें दें। पीठ छाती के वस्त्र ढीले करदिए जायें। छाती और मुखपर गीला वस्त्र फेरें। नासा में अमोनिया या अमृतधारा सुंघावें। नाक और मुख को बन्द रक्खें जिससे गहरा श्वास लेवें डिम्बकोश पर दबाव दें।

(ञ) अन्य चिकित्सा—रोगी की मानसिक वृत्तियों को उन्नत एवं विकसित किया जावे। रोगी के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिये। निर्बलता के लिये उचित व्यायाम उत्तम भोजन तथा अन्य स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए लौह, दाड़िम, शिलाजीत का प्रयोग करना चाहिये।

औषध चिकित्सा:—

(आंग्ल चिकित्सा)—इस रोग के लिये वेलेरीयन, एसे फिटेडा, (हींग) जिंक वेलेरीयन उत्तम माने गये हैं। इस लिये इन को निम्न रूप में दिया जाता है।

Tr. Asafaetida	m xd
„ Valerian amonata	m x
Lot Bromide	gr x
Soda Bromide	gr d
Mag Sulpha	3 ii
Tr Hyoscyamus	m xx
Tr Belladona	m ii
Aqua Mx P	zi

M ft mist

दिन में तीन बार

यदि गोली के रूप में देना अभीष्ट हो तो

zinc Vallrion amo	gr ½
Pill assafaeatia co	gr ii

m ft. pill

तीव्र रोग के समान निम्न औषधियों का इंजेक्शन के द्वारा भी दिया जाता है। जिस से विशेष लाभ देखा गया है। यथा—

(१) हायोसीन हाइड्रो ब्रोमाईड

(२) गोल्ड क्लोराईड

(३) एपो मार्फिन हाइड्रो क्लोराईड

इस के अतिरिक्त आंत्र स्वच्छ रखने की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। इसके लिये वस्ति (शीतोदक या उष्णोदक) एरण्ड तैल साल्ट देना चाहिये। मलवन्ध का स्वस्थावस्था में भी ध्यान रखना चाहिये। पेट में भार नहीं होने देना चाहिये। और गैलोथेरेपी के अनुसार स्तन्य ग्रन्थि कौर्पस ल्युरम निकण्ठ कण्ठ ग्रन्थि का चूर्ण या हार्मोटोनको देकर परीक्षा करनी चाहिये।

आयुर्वेद चिकित्सा—यह एक वात विकार है। जोकि ज्ञान तन्तुवों की निर्बलता से होता है। अतः ज्ञान तन्तुवों को बल देने के लिए स्वर्ण, अश्वगन्धा का उपयोग विशेष रूप से किया जाना चाहिये।

इसके अतिरिक्त ज्ञान तन्तुओं की उत्तेजना हटाकर उनको शांत करने के लिए भांग, अजवायन, अजमोद, खुरासानी अजवायन, जटामांसी, (इसमें वैलेरीन होती है) का क्वाथ अथवा इनसे आवित औषधियां अथवा इनका चूर्ण देना चाहिये

मस्तिष्क को शक्ति देने वाली औषधिया का भी पृथक् या समस्त रूप में प्रयोग करना चाहिये। यथा वच, कूट, शक्ति के लिए कपूर का भी योग कर दिया जाता है।

औषध—चिंतामणि चतुर्मुख, चतुर्मुख योगेन्द्ररस, हिमवान्य घृत, चैतस घृत, अश्वगन्धारिष्ट हिस्टेरिया नाशक क्वाथ के साथ हिस्टेरिया नाशक वटी *।

चतुर्भुज त्रैलोक्य चिन्तामणि सारस्वत चूर्ण भी उत्तम है। मलवन्ध के लिए शिवक्षार पाचन चूर्ण उत्तम है।

वायविडङ्ग चूर्ण भी इस रोग में उत्तम गिना गया है। इसलिए कृमिकुठारि रस भी इस रोगमें व्यवहृत होताहै, योगराज वटी अमरसुन्दरी वटी दिन में प्रातः साय दिया जाना चाहिये।

निर्बलता के लिए अग्नितुण्डी रस, विषतन्दुक वटी, लोह, शिलाजीत योग दियाजाना चाहिये। शक्ति के लिए मकरध्वज भी उत्तम हो सकता है। छागलाद्य घृत भी प्रयोग करके देखना चाहिये।

मुसब्बर, विजयसार, (मर) भी उत्तम है यह आंगल औषधियों में टिंचर या गोली के रूप में (एलोज एट मर) आते हैं। इनको हींग के साथ मिलाकर व्यवहार में ला सकते हैं।

आर्त्तव रोग की या मूत्राशय (मूत्र संस्थान) का कोई रोग हो तो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

---

* देखिये इन योगों के लिये वैद्यक चिकित्सासार (गुजराती)

अपतन्त्रक (हिस्टेरिया) HYSTERIA

हिस्टेरिया माईनर Hysteria Minar

(लेखक श्री० रसायन शास्त्री पं० भागीरथ स्वामी आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेद महामहोपाध्याय)



आज कल जिस रोग में हिस्टेरिया शब्द का व्यवहार किया जाता है जिसको हिस्टेरिया कहते हैं। उसका साधारता से छोटे से लेख में वर्णन करना अत्यन्त क्लिष्ट है परन्तु धन्वन्तरि सम्पादकजी की बात को किसी प्रकार भी न टाल कर लक्षण लिख कर थोड़े से शब्दों द्वारा अपना अभिमत प्रकट करना चाहते हैं।

हिस्टेरिया में अनेक प्रकार के लक्षण होते हैं। जिनको एक साथ मिलाकर इंगरेजी में हिस्टेरिया के नाम से आयुर्वेद में अपतन्त्र आदि नामों से किसी एक का नाम लेकर बता देना शास्त्र विरुद्ध है। डाक्टरी के सिद्धांतानुसार अनेक रोगों के पृथक लक्षण युक्त होने पर भी नाम हिस्टेरिया ही प्रसिद्ध किया है। उसी प्रकार हमारे यहां के वैद्य भी योषापस्मार कहने लगे हैं और किसी पुस्तक में नवीन श्लोक भी बनाकर रख दिये हैं। मेरी बुद्धि में यह बिल्कुल भूल है जबकि हमारे शास्त्र में प्राचीन काल से सबके लक्षण चिकित्सा मिलती है तब दूसरा को देना ऐसी नवीन नाम रख कर नवीन कल्पना कर दूसरों को धोखा देकर अपनी चिकित्सा दिखाना अच्छा नहीं समझा जाता है। हाँ यह अवश्य बात है कि

कितने ही चिकित्सक हिस्टेरिया को अपस्मार मानते हैं क्योंकि अपस्मार के लक्षण और हिस्टेरिया (आक्षेप आदि सब) के लक्षण समान मिलते हैं। परन्तु सूक्ष्म विचार करने से मृगी और अपतन्त्रादि सब रोग में पूर्ण भिन्नता प्रतीत होती है मृगी चिंता शोकादि से कुपित वातादि दोषों द्वारा चेतना स्थान वात हृदय के सूक्ष्म स्रोत (छिद्रों) में स्थित होकर स्मृति को अपभ्रंश करने से होती है इसमें मुख से फेन जरूर आता है (अपतन्त्रादि सब) सब रोग में [हिस्टेरिया] में कभी फेन नहीं होते यह खास परीक्षा है जिस हिस्टेरिया रोग में स्त्री हाथी पर चढ़े हुये के समान बैठी रहती हैं कुछ मन मानी बातें बकती हैं उस समय वे भूत प्रेत महाविष्टा के समान लक्षण मालूम होते हैं उसको आयुर्वेद में आक्षेपक कहा हैं तथा कुपित वात समस्त अथवा धमनियों में प्राप्त होकर देह को बारम्बार फेंकने के कारण भी आक्षेपक कहते हैं। वह वातज, पित्तज, कफज, अभिघातज भेद से ४ प्रकार का होता है। जिसमें हाथ पैर मस्तक पीठ श्रोणी स्तम्भ (जकड़जाये) और धनुष की तरह नमकर स्तम्भ होजाये दांती पर चढ़े हुये की तरह हलनादि, यह आक्षेपक रोग है यह केवल वात से उत्पन्न होता है वातरोग होने से असाध्य कष्टसाध्य समझा जाता है।

२ जब कफ से युक्त होकर वायु धमनियोंमें प्राप्त होकर कोप करता है तब समस्त शरीर को दण्ड की तरह स्तम्भन कर देता है उसको दण्डापतानक कहते हैं—यह गर्भावस्था के ६।७।८ मास पर प्रायः देखा जाताहै और कष्ट साध्य माना जाता है।

३ पित्तज आक्षेपक में प्रायः यही सब लक्षण होते हैं। परन्तु शरीर अग्नि के समान जलता है कभी २ वमनेच्छा होती रहती है चतुर्थ आक्षेपक किसी आघात (चोट) आदि न लगने से वायु का उत्कोपण अपतोवण कार्यों की वृद्धि हो जाती है ॥

जब बलवान कुपित वायु धमनियों में प्राप्त होकर तथा अङ्गुली,गुल्फ,जठर,हृदय (दिल) में प्राप्त होकर उपद्रव करता है तब स्नायु समूह को तथा शिराओं को और कण्ठ कोऽस्पाय मानकरता है अङ्गुलियां पेंठ जाती हैं। दिल की धड़कन बहुत बढ़ जाती है नाडी तीक्ष्ण चलने लगती है आंख पथरायसी जाती है। पुतली ऊपर को चढ़ जाती है। जवाडे रुक जाते हैं । मन्या स्तम्भ सा प्रतीत होता है पसलीयां टूटी हुई सी धनुष की तरह विलक्षण प्रकार की हो जाया करती हैं। उस रोग का नाम अन्तरा याम है। जब बड़े बड़े किसी किसी प्रधान कारणा से वात अत्यन्त कुपित होता है तब बाहर कार्य्य करने वाली मन्या (ठोड़ी)के पृष्ठ में आश्रित शिरा स्नायु कण्डराओं का सशोषण करके ठोडी को तथा और पीठ को नीचे की तरफ झुका देता है । जिससे कटि उरू, वक्षस्थल में पीड़ा होती है उसका नाम बाह्या याम है यह असाध्य रोग है जिसमें धनुष की तरह हो जावे (कीड़े पड़ जावें) शरीर का वर्ण बल दृष्टि नष्ट भी हो जाय उसको धनुस्तम्भ कहते हैं। यदि इसी प्रकार बार बार वेग (दौरे)होने लगें तो समझना चाहिये कि यह असाध्य और दश रात्रि के भीतर ही मार डालने वाला है।

यह रोग स्त्रियों को ज्यादह होते हैं इस लिये इनको भी लोग हिस्टेरी या मृगी मानते हैं। विशेषता करके प्रायः जब वायु अपने विलक्षण कारणों से कुपित होकर ऊर्ध्व गति को धारण करता है तब हृदय को प्राप्त होकर हृदय को पीड़ित करता हुआ शिर और कनपटियों मेंपीड़ा पैदा कर शरीर को धनुषाकार बना देता है। अथवा हाथ और पैरों को बार बार आक्षेपण करता है अथवा पत्थर की तरह गुम सुम चुप चाप कर देता है श्वास प्रश्वास लेना कठिन पड जाता है आंखें ढंप जाती है कभी आंखें बिलकुल बन्द हो जाती हैं। बार बार कबूतर की तरह गूंजता है तथा संज्ञा रहित हो जाता है।

इसको अपतन्त्रक कहते हैं। विशेषता से स्त्रियों में यही रोग दृष्टिगत होता है। और जब वायु कुपित होकर हृदय को आच्छादित कर लेता है तब देखने की शक्ति को नष्ट कर देती है गले से कुजन (गूजने)की सी आवाज होती है। हृदय की गति मन्द पड़ जाती है और थोड़ी देर में वायु हृदय को छोड़ देता है तब बेहोशी शांत हो जाती है इस प्रकार बार २ दौरा (वेग) होते रहते हैं। इसको दारुण तथा अपतानक रोग कहते हैं यह गर्भ समय में कभी २ गर्भ के बाद किसी कारण से अत्यन्त रक्त निकल जाने से विशेष चोटः लगने से होता है गर्भ में अत्यन्त रुधिर स्राव से अभिघात से होने वाला अप तन्त्रक प्रायः कठिनता से आराम होता है।

जिस समय हिस्टेरिया की चिकित्सा करने को आरम्भ करना चाहिये उस समय विचार करना कि यह आक्षेपक श्रेणी में है या अनाक्षेपक श्रेणी में है। किसी अङ्ग पर या पक्षाघात के लक्षण तो नहीं हैं, अङ्गों का सङ्कोच विकाश होता है या नहीं ? । स्पर्श करने से वेदना अधिक होती है या नहीं और अङ्ग के दबाने से स्पर्शज्ञानाभाव है स्नायु तन्तुओंमें पीड़ा है या नहीं ? है तो किस प्रकार कितनी है इत्यादि प्रत्यक्ष मूलक बातों को खूब समझ लेना चाहिये। हिस्टेरिया की अधिक प्रवृत्ति में शिक्षा का प्रभाव भी एक कारण है। बहू बेटियों को उत्तम शिक्षा नहीं प्राप्त होने से गुप्त भावों की वृद्धि होतीहै। एवं नवयुवकों कोभी यह रोग इसी प्रकार होता है स्वास्थ्य विधान की सङ्गति का भी प्रभाव है यह भी पूरा विचार करना चाहिये कि इस रोग में शरीर के कौन से अग में विशेष या अल्प विकार है किस क्रिया की विशेषता बढ़ गयी या घट गयी है उस को ठीक करना चाहिये वह किस उपायसे ठीक होसक्तीहै। या नहीं ? इस बात का भी साथहीविचार करना चाहिये। आक्षेपकनाशक औषधों के व्यवहार करते समय इस बात का विचार करना चाहिये कि किसी खास अवयव या सूक्ष्म विज्ञान वाले अवयवों का सङ्कोचन आक्षेप कर्म से कुछ हानि तो नहीं होगी। जैसे पक्वाशय सङ्कोच करने वाला नागदमन निद्रा कारक डाक्टरीमें ब्रोमाइड पोटास अहिफेन, अहिफेन सत्व,कुचिला या कुचिला सत्व(ऽष्रिनीन) आदि औषध का प्रयोग करने न करने से हानि लाभ का विचार करना। यदि औषधों में हानि की सम्भावना हो तो क्या करना ? औषधों से हानि लाभ होने पर शस्त्र चिकित्सा [हाइड्रोथेरापी] जलचिकित्सा का विचार करना—जाग्रत समय अग सन्धि पीड़ा आदि का विचार करना चाहियें डाक्टरों के मत से भी आयुर्वेद की तरह यह रोग हिस्टेरिया और न्यूरास्थिनिया नामसे दो भागों में विभक्त है। जब देखते हैं किसी औषध से लाभ नहीं मालूम होता है। तब कोई दवाई करते हुए केवल शय्या पर आराम सेशयन कराकर आरोग्यता होने न होने का विचार करना। रोगारम्भ के पूर्व काल से स्नायु विकारों से क्षुधाका अभावाभाव देखना मनुष्यों की बोल चाल से चिड़ चिड़ाहट पैदा होती है या नहीं ऐसे समय में रोगी को एकाकी रख कर अग सम्वाहन करना शरीर को बल कारक दिमाग को शक्तिप्रद औषधों का प्रयोग करने का विचार स्थिर करना, श्वासागमन की स्वच्छता, कांशमय, श्वासमय, वान्ति, भ्रान्ति, आध्मान, अक्षुधा, दुस्साध्य, कोष्ठबद्धता, विशेष हृत्कम्प, स्त्रोकोच्छ्वासहै या नहीं किससमय बढ़ सकताहै इन बातोंका विचार करना चाहिए।

मतभेद से डाक्टरों में भी शस्त्र चिकित्सक कहते हैं जानु जङ्घा आदि के सन्धि स्थानों में वातज रोग प्राचीन हिस्टेरिया होने से उत्पन्न होते हैं उनके आराम होने में बहुत देर लगती है ।

हिस्टेरिया के निदान करने में बड़ी बुद्धिमत्ता की जरूरत है क्यों कि अनेक रोगों के लक्षण मिलते हैं इस लिये मत भेद भी विशेष है बहुतों का तो यही कथन है कि यह रोग केवल स्त्रियों को ही होता है। पुरुषों को नहीं होता,यह कथन अनुभव शून्य चिकित्सकों का ही केवल होसकता है। आयुर्वेद में कहीं पर भी यह नहीं लिखा है कि यह केवल स्त्रियों को होता है पुरुषों को नहीं होता। इसी प्रकार सामान्यों को जाने दो कर अच्छे डाक्टर भी कभी नहीं ताड़ सकते हैं। अनेक बार देखा जाता है कि स्त्रियों के यौवन

आरम्भ होते ही इस रोग का प्रारम्भ होजाता है इसी प्रकार कई युवावस्था पल लड़के बेहोश से होजाया करतेहैं। इसका कारण यह है अभिभावक और अभिभावुका के गुह्य प्रेम की अग्निवृद्धि के गुह्य विस्फुलिंग उठने लगते हैं। कई कारणो से अवरोध होनेपर हस्तमैथुन नरमैथुन आदि घृणित आदतों के बढ़ने के कारण अनेक प्रकार का अपस्मार नाना लक्षणों वाला संसार में फैलरहा है कुछ युवा लडके युवतियां लड़कियोंके दूषित शिक्षा पद्धतियो के प्रचारसे अथवा अधिक बात प्राकृतिक (न्यूरोपैथिक) होने से माता के अधिक लाडसे सौन्दर्याभिमान से—अधिक अभिमान की वृद्धि से युवावस्था के प्राप्त होने पर कामोद्दीपन शीलोंमें होता है भारत वर्ष में जितना जोर से हिस्टेरिया का फैलाव है उससे अधिक लेटिन में अधिक फैलाव है। उसका कारण युवायुवतियो की अशिक्षित ढङ्ग से प्रेम की इच्छा वृद्धि है। विशेषबात यह है जो शहरों के अतिरिक्त ग्रामो में रहते हैं जिनको खुली हवा चलने फिरने दौडने का आराम शुद्ध जल स्नान पान दैहिक मानसिक परिश्रम प्राप्त होता है। उन लोगो को यह रोग नहीं होगा ग्रामीणों में बुरी आदतें कम होती है रज वीर्य्य स्राव अधिक न होने से यह रोग नहीं होता है इसकी साधारण चिकित्सा २ आक्षेप आक्रमण ३ हरण चिकित्सा विशेष लक्षणों की विशेष चिकित्सा कीजाती है। डाक्टरी की अनुसन्धान कार्य्य कारिणी की रिपोर्ट से पता चलताहै इसके पूर्ण अनुसन्धान न करने के लिए अध्यापक शार्कर ने बड़ी कोशिश की तथापि यथेष्ट अनुसन्धान नहीं होसका। बल्कि हिस्टेरिया (अपतन्त्रादि सप्तरोग लक्षण निदान) तथा अपस्मार (एपीलेपसी) के लक्षण निदान के भ्रममें पड़गया, और भेद का असली पता न लगा सका जिसको वैद्यका पश्चात पूछने से बता सकता है। हिस्टेरिया आन्त्र (गुल्म) जनक तथा गुल्म रहित होती है गुल्म युक्त हिस्टेरिया में पेट में गोला उठकर कण्ठ तक प्राप्त कर गले को एक दम रोक देता है जिससे श्वासोच्छ्वास आना जाना बन्द होजाता है उस समय हस्तपादादि को फेंकता है बुरी तरह हांफता है नेत्र फाड देता है या बन्द करलेता है, बुरी तरह देखता है। जब हस्त पादों को आक्षेपर करते २ रोगी थक जाता है तब आक्षेप बन्द होजाता है तब रोगी नेत्रों कोमिचकाता है। इसीसे इसको आक्षेप युक्त कहते हैं।

हसनाहै रोताहै जरा होश आनेही रोगी विशेष परिमाण में मूतता है इसका दैहिक मानसिक अनेक व्यथायें होती हैं। इंगलेण्ड में स्वास्थ्य विज्ञान की कुछ अधिकता के कारण हिस्टेरिया न्यून है परन्तु लेटिन में पहिले से कम होने पर भी निर्दोष है। गले के स्वर यन्त्र पर (लेरिंगस) पर प्रभाव पड़ने से स्वर भंग मूत्राशय पर प्रभाव पड़ने से मूत्रातिसार या मूत्राभाव होता है। जब मांस पेशियों के गुच्छ भाग पर प्रभाव पड़ता है तब खजत्व गठिया बात नेत्रो से किंचित पूर्णतः वक्रवाद आदि लक्षण होते हैं जब बात का अधिक वेग होता है उभरे हुए स्थानों को स्पर्श व्याकुलता, पीठ में वेदना, पक्वाशय में पीड़ा, आंत्रिक शूल औरज्ञानेन्द्रियो में विकार उत्पन्न होजाता है। इसमें अधिक विलम्ब नहीं करना चाहिये। इसमें उत्तेजक मद्य या सुरा काफी चाय निषिद्ध रखना चाहिये।

क्रमशः

भयङ्कर होता है, जिस हिस्टेरिया में खलियों का अभाव होता है ऐसे हिस्टेरिया में अनेक लक्षण अर्द्धांग बात के होते हैं और उसके अनेक रूप दिखाई देते हैं, कभी २ पेशाब रुक जाता है कभी किसी विशेष अङ्ग के मांस शिथिल हो जाते हैं जिस से शरीर में पङ्गुता खञ्जता आदि हो जाते हैं, कभी २ कलाय खञ्जता भी देखी जाती है। हाथ पैरो में कम्प होता है और किसी २ अङ्ग के मांस संकुचित हो जाते हैं, और शरीर में स्पर्श ज्ञान की विकृति भी देखी जाती है। किसी २ रोगी का स्पर्श ज्ञान एक दम नष्ट हो जाता है और किसी २ में स्पर्श ज्ञान थोड़ा २ नष्ट होता है। अनेक रोगियो में स्वाद; गन्ध और श्रवण शक्ति एक पार्श्व की नष्ट हुई देखी गयी है। वात नाड़ियों का विकार प्रायः सभी रोगियोमें देखा जाता है गर्भाशय के आस पास बीज कोश के नजदीक सामान्य कारण से भी स्पर्शोत्तेजना उत्पन्न हो जाती हैं हृदय और पीठ में प्रायः शूल रहती है पाचन शक्ति का विकार भी होता है कुछ रोगियों के नेत्रों की शक्ति हीन हो जाती है। हिस्टेरिया रोग के उपद्रव में—श्वास, कास और हिक्का रोग भी कभी कभी दिखाई देता है। वमन, आध्मान, मदाग्नि विबध हृद्रव (हृदय की गति वृद्धि) और स्वेदाधिक्य भी दिखाई देते हैं। जोड़ों में शूल होता है विशेष कर जानू और सक्थि की सन्धियों में कष्ट रहता है।

रोगी मानसिक और धार्मिक विचारों में पूर्व दशा से बहुत परिवर्तित होजाता है। किसी २ रोगी की शारीरिक ऊष्मा १०८ से ११३ डिगरी तक बढ़ जाती है, किंतु इसमें नाड़ी, श्वास और मूत्र का विकार जो कि ज्वर में नजर आता है वह दिखाई नहीं देता। शारीरिक ऊष्मा का घटाव बढ़ाव बहुत अनिश्चित रहता है कभी २ रोगी के अर्द्धाङ्गमें ही ऊष्मा अधिक प्रतीत होती है

हिस्टेरिया रोग में सदा रोगी के मानसिक विकृति का होना अवश्यम्भावी है उपरोक्त लक्षण संक्षेप में हिस्टेरिया के बतलाये गये हैं। अब जानना यह है कि इसके उत्पत्ति का कारण क्या है। कभी २ नर रोगी में हिस्टेरिया के लक्षण देखे जाते हैं, किंतु स्त्रीयों में यह अधिकांश में पाया जाता है पुराने विद्वानों की यह राय है कि यह रोग स्त्रियों में गर्भाशय सम्बन्धी विकृति के कारण पैदा होता है। आज कल की कड़ी परीक्षा के सामने यह सिद्धांत सिद्ध नहीं हुआ। इसकी उत्पत्ति में पैतृक दोष और माता पिताओं का मद्यप होना पाया गया है। आयुभी एक भी इसमें कारण भूत होता है प्रायः देखा जाता है कि जो बालिकायें भाव मय और उद्दण्ड होती हैं वे प्रायः युवा अवस्था के आरम्भ में हिस्टेरिया रोग वाली होजाती हैं। और भी ऐसे अनेक हेतु मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि काम वासनाओं के विकार से और गुह्य इन्द्रियों के विकृत से भी यह रोग उत्पन्न होता है। हस्त मैथुन अति मैथुन के उपरान्त प्रायः इसका आक्रमण होजाता है। इससे पीड़ित स्त्रियों के गर्भाशय के बीजकोष में अवश्य विकृति देखी जाती है। थोड़ी पढ़ी लिखी स्त्रियाँ जो उपन्यास आदि अधिक पढ़ा करती हैं, रङ्गीली तबियत की हैं वे प्रायः इस रोगसे पीड़ित देखी जाती हैं। जो बालिकायें व्यायाम आदि नहीं करतीं और विद्याभ्यास में निरत रहती हैं और काम वासना पैदा करने वाली पुस्तकें पढ़ती हैं वे अवश्य इस रोग से पीड़ित रहती हैं। क्रमशः

गर्भाशयोन्माद अथवा (हिस्टेरिया)

(लेखक—श्रीमान् पं० रामप्रसाद दीक्षित वैद्य—)

विवेचन



आज कल भूतोन्माद या हिस्टेरिया के रोगी प्रायः हर एक घर में अवश्य पाये जाते हैं, जो कि यह पहले कभी किसी घर में शायद ही कभी दिखाई देता था। आज कल ऐसा घर मिलना असम्भव सा है, जहां पर इसका पदार्पण, किसी न किसी रूप में न हुआ हो, इसका सबसे पुराना नाम भूतोन्माद ही है और इसका यह नाम करण इस कारण पड़ा कि अज्ञान मनुष्य ऐसी भ्रम वाली बातें करता है कि मुझे अमुक भूत, पिचाश, प्रेत देवी, देवता आदिका दोष हुआ है। जो कि छोटी अवस्था में भूत प्रेत की बातें सुनने का प्रायः काम पड़ता ही रहताहै। इसी कारण इसका भूतोन्माद नाम सार्थक ही है। आज कल इसके अनेक नाम करण होगये हैं। जैसे योषापस्मार, अपतन्त्रक वायु गर्भाशयोन्माद, गुल्मवायु मूर्च्छागतवायु आदि २। यह शारीरिक एवं मानसिक रोग आज कल की स्त्रियों में बहुत अधिकता से होने लगा है। इसकी वात व्याधि में गणना होसकती है, किंतु ऐलोपैथिक वाले इसकी मस्तिष्क केरोगों में गणना करते हैं। आज कल भी अज्ञान मनुष्य इसको भूतावेश मानकर भूत, प्रेत, निकालने के अत्यंत मूर्खता पूर्ण तावीज, यंत्र मंत्र आदि अनेक उपचार कर धन और समय का दुरुपयोग करते हैं यह एक मानसिक रोग है और मनके विकारों का असर शरीर पर अवश्य ही पड़ता है आज कल की नवीन शोध से ज्ञात हुआ है कि यह मन और शरीर की अपूर्णता का रोग है। यह स्त्रियों के गर्भाशय और गर्भजनित अवयवों में विकृत कारणों द्वारा होने से इसको गर्भाशयोन्माद कहते हैं। यह ऋतुधर्म प्राप्त होने के आरम्भ से लेकर ऋतुधर्म नष्ट होने के मध्य के समय में अधिकतर होता है। यह विशेष कर स्त्रियों के ही होता है किंतु कभी २ वीर्य के अति क्षय वाले मानसिक निर्बलता वाले मनुष्य के भी देखने में आता है।

यह रोग अपस्मार (मृगी) के रोग से प्रायः मिलता जुलता है। इसकी चिकित्सा भी मृगी एवं मूर्च्छा के समान ही करनी चाहिए। इसको उपरोक्त समस्त कारणों से ही योषापस्मार या भूतोन्माद न कहकर गर्भाशयोन्माद ही कहना सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि जिनको रजोधर्म बड़े कष्ट से होता है अथवा एक दम बंद होजाता है या जिन स्त्रियों की कामेच्छा अति प्रबल होजाती है उनको ही यह रोग अधिक होता है। आजकल यह रोग विशेष कर उठती जवानी की स्त्रियों से लेकर ३०—३५ या ४० वर्ष तक की स्त्रियों में ही अधिक पाया जाता है। बहुतों को यह रोग मन की निर्बलता, या मन का वहम, एवं भ्रम द्वारा तथा अत्यत कामेच्छा के कारण ही होता है।

कारण

गर्भाशय के रोग, रजो धर्म का कम या अधिक होना, कामोद्वेग, अति विषयाशक्ति, मानसिक निर्बलता, अत्यधिक मादक पदार्थों का सेवन, भय, शोक, अति क्रोध, प्रदर, उपदंश, गर्भपात, पति और स्त्री की अनबन, अतिमैथुन, इष्टजन वियोग, कामोन्माद, वैधव्य अवस्था में रंज या शोक, कुटम्ब क्लेश, द्वेष या संताप, मलावरोध, कृमिरोग, पतिके बुरे आचरण, पैतृक वीर्य दोष, शारीरिक दुर्बलता, छोटी २ लड़कियों का मन इश्क—प्रेम, प्यार, एवं विषय भोग की बातों के पढ़ने और काम भोगसे अतृप्ति, और अप्रीति आदि कारणों से जवान स्त्रियों को जो रोग होताहै, उसको गर्भाशयोन्माद या हिस्टेरिया कहते हैं। बारह वर्ष के भीतर एवं चालीस वर्ष के ऊपर वाली स्त्रियों को यह रोग विशेष कर नहीं होता है।

पूर्वरूप—

मनमें अप्रसन्नता बहुत आलस्य, हृदय में धड़कन का बढ़ना, बार२ जंभाई का आना, आँखों में अँधेरा या चक्कर का आना, एवं शरीर में शिथिलता उत्पन्न होकर संज्ञाहीन होजाता है।

लक्षण

इस रोग में अनेक तरह के लक्षण होजाते है, और सब को एक से भी लक्षण नहीं पाये जाते रोग की प्रारंभिक अवस्था में मालूम होता है कि एक गोला आमाशय से चलकर गलेमें जाता है, जिससे गला घुटता है, ऐसा जान पड़ता है और रोगी का मन विकृत एवं बुद्धि भ्रम होकर बेहोश होजाता है। कोई २ बिना कारण रोती, हँसती, ज़ोर २ से चिल्लाती, चीखती चढ़बड़ाट मूर्च्छा, कभी २ डांयटों का जोरों से आना, हाथ पैरों का पटकना, पसवाड़ोंका इधर उधर घुमाना जवान बन्द, स्वास लेने में कष्ट तथा श्वास लेने और छोड़ने में अत्यंत कष्ट, स्वरभङ्ग पेटमें गोले का चढ़ना दांतों का भिचजाना, मुंह से फेन या लार का गिरना, आँख खुली या बन्द, शिर दर्द, मुष्टिका का जोरों से बन्द करलेना, एवं शिर इधर उधर पटकना, शरीर का कांपना, और किसीको उल्टी होकर बे बुद्धि होती है तो कोई साधारण स्थिति में ही बेसुध पड़ा रहता है। किसी का शरीर धनुष के समान टेढ़ा किसी का शरीर गरम और किसी का शरीर बर्फ के समान ठण्डा होजाता है। और कोई२ बेसिरपैर की वाहियात ऊटपटांग बकती हैं, आहें भरती हैं सिसकती कभी२ छाती का उछलना, दिलकी धड़कना, वगैरह अनेक उपद्रव होजाते हैं, फिर अन्त में रोगी बेहोश होकर गिर पड़ता है। हिस्टेरिया वाली स्त्री की बातें बड़ी दुःखदायक होती हैं और बहुत बार कोई रोग न होने पर भी उसके लिये बार २ ओर २ से चिल्लाती हैं। और आने अभी प्राण निकल जांयगे ऐसा जोर करती हैं। ऐसा होते २ अन्त में वह निश्चेष्ट संज्ञारहित बेसुध हो-जाती हैं। कोई कुछ देर तक तो कोई बहुत देर तक बेहोशी में रहती हैं। कोई २ तो १ दो दिन से लगाकर पांच सात दिन तक उसी अवस्था में ही देखी जाती हैं। इसके बाद जब वह होश में आतीं हैं तब लज्जा का मनोभाव फिर पैदा होजाता है। दौरे की कोई बात कदाचित ही याद रहती है। हां, शरीर में वेदना का अनुभव अवश्य होता है। हिस्टेरिया के दौरे में खतरे की विशेष संभावना नहीं देखी जाती।

यह रोग विशेष कर के श्रीमानों की लडकियों में बहुत अधिक देखा गया है, और साधारण स्थिति की स्त्रियों में तो बहुत ही कम होता है। इसका कारण विलास प्रियता, वैभव और अज्ञानता या भ्रम है। इस रोग में स्त्री को पुरुष समागम करने की प्रबल इच्छा रहती है।

चिकित्सा

प्रथम हिस्टेरिया उत्पन्न होने के समस्त कारणों की खोज करे और उसके पश्चात् चिकित्सा आरम्भ करनी चाहिये। इसके लिये इसके स्वभाव एवं सहवास वालों से मिल जुलकर सांसारिक स्थितियों का अनुभव प्राप्त करे। इस रोग में मल शुद्धि एवं रजोविकार को दूर कर वायु को अनुलोमन एवं स्नायविक बलकारक पौष्टिक औषधियों का प्रयोग करना अति लाभदायक है। यद्यपि यह रोग बड़ा कठिन है, तथापि इसका वेग समय पर आकर अपने आप शांत होजाता है। अवश्य इसके दौरे के समय अधिक घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

दौरे के समय के उपचार।

(१) प्रथम रोगी के पहनने के कपड़े एक दम ढीले कर देने चाहिए और उसकी मूर्च्छा दूर करने के लिये कार्बोनेट आफ़ अमोनिया अथवा नौसादर, चूना, कपूर, तीनों को एकत्रकर एक शीशी में बन्द करदें। इस उपनस्य को बार २ सुंघाना चाहिए। तथा मुखपर ठोर २ से ठण्डे पानी के छींटे मारना चाहिए।

(२) आंखोंमें पिपरमेन्ट का अञ्जन लगाओ?

(३) कपूर या कस्तूरी एवं प्याज को चीर कर सुंघाने से भी तत्काल चैतन्यता आजाती है।

(४) यदि दांत एक दम बन्द होगये हो तो एक कागज़ की भूंगलीमें बढ़िया तमाखू सुंघावो अथवा कल्पतरु इसकी नस्य दो। इसके द्वारा अवश्य बेहोशी दूर होकर होश आजायगा।

(५) उसके मसूढ़ों पर धीरे २ त्रिकुटा का बारीक चूर्ण घिसो। इससे दांत खुल जांयगे।

इसके बाद जब रोगी होशमें आजाय तब तत्काल सिद्ध मकरध्वज या मल्ल चन्द्रोदय पीसकर और शहद मिलाकर निगल बादो, या पुराना द्राक्षासव एक औंस जल में मिलाकर पिलादो, इससे शरीर में चैतन्यता आजावेगी। इसपर भी यदि रोगी को होश न आवे तो उसे चुपचाप पड़ा रहने दो और उसे किसी प्रकार का कष्ट मत दो। कभी कभी इसका वेग शांत होने पर रोगी को अपने आप आराम होजाता है।

हिस्टेरिया का पुनराक्रमण रोकनेका उपाय।

इस रोग के होने के वास्तविक कारणों का पता लगजाने से और उसीके अनुसार चिकित्सा करने से रोग दूर करने में बड़ी सुविधा होती है एव रोग शीघ्र दूर होजाता है। यदि मलावरोध के कारण हो तो प्रथम एक उत्तम विरेचन अभयादिमोदक एवं इच्छाभेदी का देदेवें पश्चात् सवेरे शाम त्रिफला चूर्ण को घृत और मधु के साथ ३ माशे देवें और भोजन के पश्चात् अभयारिष्ट २ तोला थोड़ा जल मिलालिया करें। इससे कोष्ठ शुद्धि और शरीर निर्मल होजायगा। इस रोग में रजोधर्म शोधक उपायोंसे विशेष लाभ पाया जाता है। अब हम अपने अनुभूत उपचार लिखते हैं जिसके सेवन करने से यह रोग समस्त उपद्रवों सहित अति शीघ्र निर्मूल होजायगा।

(१) महा योगराज गूगल (शार्ङ्गधर) एक २ वटी सवेरे, शाम, महारास्नादि क्वाथ के साथ सेवन करावे और भोजन के पश्चात् कुमारी॰ सव (यो०र०) २॥ तोला, जल में मिलाकर दो तीन महीने धैर्य्य पूर्वक बराबर लेते रहने से हिस्टेरिया के समस्त उपद्रव एवं रज विकार दूर होकर सन्तानोत्पत्ति होती है यह रजः शोधक,वायुनाशक, एवं पौष्टिक सर्वरोगहर रसायनहै। हमारा अनेक बार का अनुभूत फलप्रद प्रयोग है। अवश्य लाभ होगा।

(२) यदि अधिक निर्बलता के कारण हो तो सवेरे, शाम, एक २ रत्ती महाचन्द्रोदय या सिद्ध मकरध्वज शहद में चटाकर ऊपर से जटामांसी का क्वाथ पिला दिया करें। और भोजन के पश्चात् सिद्धाश्वगंधारिष्ट २—२ तोले जल में लिया करें। इससे बहुत ही शीघ्र निर्बलता दूर होकर शरीर में अपूर्व शक्ति का संचार होगा।

(३) कामोन्माद—में चन्द्रांशु रस (यो०र०)एकसे दो रत्ती तक जीरेके साथ सवेरे,शाम सेवन करें। और भोजन के पश्चात् कनकासव या अश्वगन्धारिष्ट लेने से बहुत शीघ्र रोग दूर हो जावेगा। जिससे कामोन्माद, योनिकण्डू आदि अनेक गर्भाशय गत रोग दूर होकर बड़ी शांति मिलेगी कामोन्माद में अच्छा लाभदायक है।

(४) कष्टरज या अनियमित रज—रजः प्रवर्तिनीवटी १ गोली निम्नलिखित क्वाथ के साथ सेवन करावें—क्वाथ यह है— सोंठ, मिरच, पिप्पली, अरण्डी, काले तिल, नीम की छाल प्रत्येक ३—३ माशा, और गुड़ १ तोला इन सबको मिलाकर आधसेर जल में क्वाथ बनावे, चतुर्थांश रहने पर छानले। इससे सब प्रकार के रजोविकार दूर होंगे और भोजन के पश्चात् लशुनासव सेवन करना चाहिये। इस अकेले लहसुनासव से भी कई बार चमत्कारिक लाभ होता है।

(५) अत्यार्तव—चन्द्रसिद्ध प्रवाल,मौक्तिक भस्म गुडूचीसत्व आमलेके स्वरस की ७ भावनादे कर ४—४ रत्ती, सवेरे, दुपहर शाम को शहद के साथ लेवें। और ऊपर से दुग्ध पीलिया करें। दुग्ध अशोक की छाल के द्वारा पकाया हुआ होना चाहिए। भोजन के बाद अशोकारिष्ट २–२ तोला जल मिलाकर सेवन करें। अथवा उलटकम्बल का क्षार पिलाना भी उपयोगी है। इनके द्वारा सब प्रकार के रज विकार दूर होकर शरीर निरोग होजायगा।

विशेष—समय २ पर दार्व्यादि क्वाथ. द्राक्षासव,लहसुनपाक, ब्राह्मीघृत आदि औषधियों का उपयोग किया जाना भी लाभदायक है। उपरोक्त समस्त औषधियां शास्त्रीय हैं। अतएव अच्छे वैद्य या फार्मेसी में उचित मूल्य पर मिल सकती हैं। अन्यथा हम से भी मंगासकते हैं। श्रीधन्वन्तरि औषधालय विजयगढ़ (अलीगढ़) में ये समस्त औषधियां मिलजांयगी। वहां से मंगा लीजिये।

पथ्य—

दूध, चावल, गेहूं, घृत, खिचड़ी, आदि सुपाच्य पौष्टिक भोजन करना उत्तम है। अनार, अंगूर, सेब, नारङ्गी आदि फलों का उचित प्रमाण में सेवन करना हितकर है।

अपथ्य—

अति खट्टा, लालमिर्च, धूप, अग्नि का सेवन क्रोध,शोक श्रम,चिंता,मलमूत्र वायुआदिका रोकना

अति-परिश्रम, एकांत स्थान में बैठना या एकांत में सोना दुष्ट धूर्तों का सहवास, आदि २ कुपथ्य एक दम त्याग देना चाहिए।

उपयोगी सूचना:—

(१) निर्बलता अधिक हो तो पोष्टिक औषधियों का सेवन करना तथा बल बढ़ाने वाली चिकित्सा करनी चाहिए।

(२) यदि पति से मिलने की प्रबल इच्छा हो तो पति को मिला देना ही सब से उत्तम है।

(३) रोगी को बिछौने पर सुला कर उस को तकिया के सहारे आरामसे लिटा देना चाहिये।

(४) रोगी के कमरे में साफ हवा का आगमन होना चाहिये तथा उसके पास अधिक मनुष्य इकट्ठे न रहें।

(५) यह रोग ऋतु सम्बन्धी बीमारियों के कारण अधिक होता है, अतएव इसका खास ध्यान रखकर चिकित्सा करनी चाहिए।

(६) रोगी को सदैव प्रसन्न मन रखने का उपाय करना चाहिए। और उसपर कृपा भाव दिखलाना अच्छा रहता है।

(७) हमेशा विशुद्ध वायु का सेवन और उचित परिश्रम अवश्य करना चाहिए। अलमिति बहुरोग —

हिस्टेरिया

लेखक—श्रीमान प० नारायणदत्त शर्मा "वैद्यराज"

पाठकवृन्द !

उक नाम से पुकारा जाने वाला रोग भारत में इतना जोर पकड़ता जाता है जिसके अनुसन्धान करने में डाक्टर, वैद्य, हकीम अपनी २ बुद्धि के अनुसार रोग विनिश्चय में अनेक तर्क वितर्क कर रहे हैं। तथापि अद्यावधि रोग पर ऐकमत्य किसी भी चिकित्सा प्रणाली के चिकित्सकों का नहीं हुआ है जो यह मान लिया जाय कि यह अमुकही रोगहै। यह तो हमें शास्त्राज्ञा के अनुसार अवश्य ही मानना पड़ेगा कि प्रायः सबही रोगोंकानिदान(कारण, हमारे रोग विज्ञान ग्रन्थों में नहीं है जैसे वाग्भट्ट कहते हैं।

विकारनामाकुशलोन जिह्रीयात् कदाचन:
नहि सर्व विकाराणाम् नामतो=ऽस्ति ध्रुवास्थिति

अर्थात्—किसी रोगके न पहिचानने वाला वैद्य लज्जा को न प्राप्त होवे क्यों कि यह नहीं है कि सब ही रोगों का निश्चय शास्त्र में है।

जहां ऐसी स्थित होवे वहां वैद्य को चाहिये कि दोषों की कल्पना और व्याधि का रूप,स्थिति देखकर ही रोग का निश्चय करले। इस लिए इस रोग के विषय में यह मानना पड़ेगा कि इस रोग का इत्थंभूत नाम कहीं पाया ही नहीं जाता है जो कुछ लोग इस रोग के अत्यन्त

लक्षण देखकर दोषों को अशांश कल्पना करते हुए शास्त्र प्रमाणों को भी उद्धृत करते हैं और रोग का निकास करते हैं हमारी सम्मति में यहां इस रोग विषय में एक से ही मत मिल जांय और वास्तव में यह रोग की कल्पना ठीक करते हों तो वही विनिश्चय इस रोग के नाम संस्करण के लिए ठीक होगा।

पाठक!

इस रोग के विषय में कितने ही विद्वानों के निबन्ध आपके सन्मुख हैं। इनके अवलोकन से ज्ञात होसकेगा कि लेखकों का इस रोग विशेष के लिए क्या मत है। हमभी संक्षिप्त रूप से अन्य चिकित्साओं के विद्वानोंके मत का दिग्दर्शन कराते हुए हमारी सम्मतिमें इस विषमर्मापन्न रोग का क्या निश्चय है वह उपस्थित करते हैं।

डाक्टरी मत से हिस्टेरिया रोग का (निश्चय)

पाठक!

इस रोग के नाम करण और अनेक लक्षण रोग के आवेग के समय होते देखकर डाक्टर लोग भी अश्चार्यान्वित है, इन लोगों की सम्मति भी भिन्न २ ही है। दिग्दर्शनार्थं कुछ लिखते हैं जिनको देखने से जाना जाता है कि इस रोग का निश्चय अभी विदेशी लोग भी नहीं कर सके हैं।

हिस्टेरिया शब्द का अर्थ डाक्टरी सिद्धांतानुसार गर्भाशय का है इसी लिए उनका यह मतहै कि यह रोग स्त्रियों को गर्भाशय की विकृति से हो जाता है। परन्तु जब यह देखने में आया कि इस रोग का प्रकोप पुरुषों में भी होता है तो अब इस रोग को पट्ठों का रोग (वातविकार) भी कहते हैं, किसी के मत में यह पैतृक व्याधी मानी गई है। कितने ही लोगों का मत है कि स्नेह मय वस्तु का प्राप्त न होना ही मनोविकार पैदा करके रोग की उत्पत्ति का हेतु माना जाता है। हमने यह अनेक डाक्टरों की सम्मतियों सारांश लिखा है।

यूनानी मत से रोग का सिद्धान्त।

यूनानी चिकित्सा के विद्वान चिकित्सक इस रोग को अपने यहां इख्त नाम उलरहेम कहते हैं। जिसका अर्थ भी गर्भाशय में विकृति पैदा होजाना ही मानते हैं। साथ ही यह कहते हैं कि यह (मृगी) की बेहोशी से सदृश मिलता जुलता है परन्तु वास्तविक प्रारम्भिक कारण तो गर्भाशय का दूषित होना ही मानते हैं। वह कहते हैं ऋतु का रुधिर जब गर्भाशय में बन्द होजाता है और निकलने को मार्ग नहीं रहता है तो वह गर्भाशय की नसों में रहकर रोग का रूप धारण कर लेता है और फिर वह सारे शरीर में फैलकर बहुत से रोगों का कारण बन जाता है। कई विद्वानों का मत है यह रोग वीर्य विकार से पुरुषों को भी होता है।

यूनानी मत का सिद्धांत अन्त में यही स्थिर होता कि यह रोग ऋतु की रुकावट या वीर्य विरोध से उत्पन्न होता है और इन्हीं कारणों से शरीर के अन्य अङ्गों में विकृति पैदा हो जाती है।

आयुर्वेद मत से रोग का निराकरण

इस रोग के अनुसन्धान में जैसे डाक्टरों और युनानी (हकीमों) के अनेक मत हैं उसी प्रकार आयुर्वेद के विद्वान भी अपनी पृथक २ ही

राय रखते हैं अभी तक यह निश्चय नहीं कर पाये हैं कि वास्तव में यह क्या व्याधि है।

कितने ही वैद्य इस रोग को वातज उन्माद बताते हैं उनका यह कथन है—कुपित हुए दोष मनके वहाने वाली नाड़ियों में प्राप्त होकर उन्माद रोग को पैदा कर देते हैं।

इसमें बुद्धि विभ्रम हो जाती है मनकी चञ्चलता दृष्टि की अस्थिरता अधीर होना अवध्य वाक्य आंय, बांय, सांय बकना मन की शून्यता ये लक्षण होते हैं।

इसका दूसरा कारण और लक्षण बताते हैं। रूखा और थोड़ा एवं शीत अन्न के खाने से तथा दस्तों की अधिकता धातु क्षय लङ्घनादि से कुपित हुवा वायु वा अति चिंतादि से हृदय में प्रवृष्ट होकर बुद्धि और (स्मृति) याद दास्ती को शीघ्र नष्ट करके रोग को पैदा करते हैं इसको वातज उन्माद कहते हैं इस रोग में बिना कारण के हंसना, मुसकराना नाचना गाना अङ्गों को घुमाना मटका वा रोदन करना तथा कठोर काला या अरुण शरीर का रङ्ग हो जाना अन्न पचने पर रोग की अधिकता होना इन लक्षणों से रोग की सम्भावना करते हैं।

कितने ही वैद्यों की यह सम्मति है कि यह रोग मृगी का भेद है स्त्रियों को ही अधिक होता है इस लिये इसका नाम योषापस्मार बताते हैं।

प्रमाण में यह नवीन रचित श्लोक देते हैं।

योषिता मेव बाहुल्याद् [illegible] भवेद्द गदः।
अपस्मार प्रकृतिक [illegible]पाभिधामता॥

अर्थात् यह रोग प्रायः स्त्रियों को हुआ करता है—और इस रोग की प्रकृति अपस्मार के सदृश है।

हमारे कई मित्र वैद्य इसको अपतन्त्रक (अपतानक) वायु का रोग कहते हैं।

वह कारण और लक्षण इस प्रकार बताते हैं।

अपने हेतुओं से प्रकुपित हुआ वायु अपने स्थान से ऊपर को जाता है और हृदय में जाकर पीड़ा करता है, मस्तक और शंख (कनपटीयों) में पीड़ा होती है शरीर को धनुषाकार टेढ़ा करे आक्षेप और सज्ञाहीन करे। रोगी बड़े कष्ट से श्वास लेवे नेत्र बन्द हो जावें और रुक जावें कबूतरकी तरह रोगीकूजे औरज्ञाननष्टहो जावे इसको अपतन्त्रक कहते हैं और जिसमें दृष्टि स्तम्भ हो जावे चेतना जाती रहे कण्ठ में घुर्घुर शब्द हो जब वायु हृदय को छोड़ेतो स्वस्थ्य हो जावे जब पकड़े फिर मोह को प्राप्त हो इस वायु रोग को कोई अपतानक भी कहते हैं—पाठक ! इस प्रकार वैद्य लोग इस रोगके विषयमें अपनी २ सम्मति प्रकट कर रहे हैं। अब इन सम्मतियों को देखते हुए हम अपना मत लिखते हैं —

(नोट) अपस्मार के [illegible] के कहने से कई डाक्टरों का भी मत है कि हिस्टेरिया (अपस्मार) का ही भेद है इस को यह दो प्रकार का मानते हैं हिस्टेरिया मेजर और हिस्टेरिया एपिलेप्सी अर्थात् अपस्मार सदृश आक्षेप सयुक्त प्रबल हिस्टेरिया (२) हिस्टेरिया माईनर अर्थात् मृदु आक्षेप सयुक्त हिस्टेरिया इस में समोह नहीं होता है—एपिलेप्सी का अर्थ अपस्मार होता है।

पाठकवृन्द?

जिन डाक्टरों का यह मत है कि यह रोग गर्भाशय की ही विकृति से होता है तो यह रोग स्त्रियों को ही होना चाहिये फिर पुरुषों को क्यों होता है ? इस लिये यह सिद्ध हुआ कि यह रोग गर्भाशय की विकृत का ही हेतु है सो बात नहीं ? और जो यह मानते हैं। कि यह रोग पट्ठों में खराबी आने से वात कुपित होने से होता है तो उनका यह पक्का सिद्धात नहीं न उन्हों ने इस विषय का कोई विवेचन किया है जिस से यह मान लिया जाय इस रोग का यही कारण है—

जो पैतृक दोष का कारण मानते हैं यह सिद्धात भी ठीक मालूम नहीं होता क्यों कि प्रत्यक्ष में हम यह नहीं देख रहे हैं कि यह रोग किसी के पिता को हो तो पुत्र को होता हो ? सो बात नहीं है—और जो डाक्टर यह मानते हैं कि यह रोग मानसिक रोग के ही कारण से ही होता है सो भी ठीक मालूम नहीं होता क्योंकि मनोविकार से तो हर समय ही रोग की घटना बनी रहनी चाहिये जो इस रोग में रहती नहीं इस लिये यह कारण भी नहीं माना जासका।

यूनानी—के विद्वान् (हकीम जो यह कहते है कि यह रोग गर्भाशय की खराबी ऋतु) दोषों से होता है तो स्त्रियों को ही दोष पुरुषों में क्यों ? इस लिये उनका भी यह मत व्यर्थ ही है किंतु साथ ही यह कहते हैं कि यह रोग पुरुषों को भी (वीर्य) निरोध से पैदा हो जाता है, फिर इस में अनेक लक्षण हो जाते हैं उत्पत्ति स्त्रियों में ऋतुदोष से और पुरुषों में वीर्य्य निरोध है परन्तु सर्वथा यह मानना कि पुरुषों को वीर्य्य निरोध से होता है नों कैसे ? इस की विवेचना युक्ति युक्त न होने से यह बात भी समझ में नहीं आसक्ती ?

इस लिये डाक्टरी और यूनानी मतों का सिद्धान्त गर्भाशय की विकृति से ही रोग का कारण माना जा सकता था परन्तु जब स्त्रियों में ही इस रोग का प्रचार होना तथा बाद पुरुषों में भी है इस लिये दोनों के मतों में बहुत अन्तर है दोनों मतों के उदाहरणों से हम तो यही समझ सके हैं कि अभी इस रोग के विषय दोनों मतों का विनिश्चय अनुसन्धान के योग्य ही है ।

अब रही आयुर्वेद सिद्धान्त की बात—

जो महानुभाव यह मानते हैं कि यह रोग मनोविकार का ही प्रधान कारण है और इसे (उन्माद) रूप क्यों न किया जाय ?

यह बात हमारी सम्मति में नहीं आती है उन्मादमें हंसना मुसकराना नाचना गाना रोना अङ्गों को घुमाना आदि लक्षण होते हैं परन्तु यह सब बातें हिस्टेरिया में विपरीत होती हैं इस लिये उन्माद का मानना हमारी सम्मति से तो विरुद्ध है हां यह हम उन्माद के कारणों की तुलना में कुछ मान सकते हैं कि हिस्टेरिया रोग में भी हृदय और मस्तिष्क के ज्ञान तन्तुओं में अवश्य विकृत भावहो जाता है इसी लिये आवेग के समय अचैतन्यता हो जाती है दूसरी बात यहहै कि उन्माद में तो हृदय में बिलकुल शून्यता हो जाती है ज्ञान शक्ति बिलकुल मारी जातीहै परन्तु हिस्टेरियामें नहीं? आवेग के समय भी (स्मृति शक्ति) आभ्यान्तर रहती ही है उन्माद में पक्का लक्षण यह है कि उस में प्रति दिन निद्रा नहीं आती है परन्तु हिस्टेरिया में ऐसा नहीं होता निद्रा अवश्य आती है—उन्माद में वि-

धार शक्ति बिलकुल नष्ट हो जाती है–भले बुरे का ज्ञान नहीं रहता परन्तु हिस्टेरिया में यह बात नहीं होती इस लिये–इस रोग को उन्माद कहना भोभूल है—और जो लोग "योषापस्मर" कहते हैं वह भी कैसे मान लिया जाय ? क्यों कि एक तो अपस्मार (मृगी) के पूरे लक्षण ही नहीं मिलते हैं दूसरे यह नाम करण करना कि इसे योषापस्मार कहा जाय तो यह रोग स्त्रीयों का ही हो सक्ता था पुरुषों में क्यों होता है फिर मृगी और हिस्टेरिया के लक्षणों में भी परस्पर भेद है।

अपस्मार में आवेग के समय बिलकुल स्मृति नष्ट हो जाती है मुख से झाग निकलते हैं परन्तु हिस्टेरिया में नहीं इस लिये इस रोग को योषापस्मार कहने से संकुचित होते हैं।

अब रही अपतन्त्रक और अपतानक की बात—यह रोग वास्तव में एक ही अङ्ग के हैं और इन में उत्पत्ति का प्रधान वायु से ही माना गया है।

सज्जन वृन्द ! यह तो हम भी कैसे कह सके हैं कि हमारा जो निश्चय है वही यथार्थ है, कि बड़े २ विद्वान् जब अभी कुछ नहीं कह रहे हैं हमारा ही किसी बात का आग्रह करना अपवाद ही होगा ? परन्तु जो बात युक्ति वाद से सिद्ध होती है उस पर पाठकों का ध्यान दिलाना हम आवश्यक ही समझते हैं मानना न मानना दूसरी बात है ?

यह तो मेरे इस सक्षिप्त लेख से आप जान कर ही सके गे कि डाक्टरों और यूनानीयों के इस रोग विशेष के विनिश्चय में बहुत कुछ अनुसन्धान शेष है ?

वैद्य लोगों के और रोगों की उत्पादकता की निश्चयता को छोड कर अपतन्त्र वा अपतानक के लक्षणों का चिन्ह हमारी सम्मति में जरूर रोग आवेग के समय संघटित होते दिखाई देतेहैं। और तब हम डाक्टरों एवं यूनानी हकीमों के सिद्धान्त वाद को निष्कर्ष दृष्टि से देखते हैं तो उन का यह आशय जरूर है कि इस रोग की उत्पत्ति मे वायु का ही प्रधानत्व है ? चाहे कारण और लक्षण क्योंन "और हों।

इसलिये यह तो स की सम्मति से निश्चय होता है कि यह रोग वायु का कारण भूत है अब रही लक्षणो की बात और स्त्रियों में इस रोग की अधिकता क्यों होजाती है । तो लक्षण (चिन्ह) जब हम देखते हैं तो अवश्य ही अपतन्त्रक के ही मिलते हैं स्त्रियों के रोग की इसी लिये अधिकता है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में दोषों का प्रभाव जल्दी पड़जाता है क्योंकि उनका हृदय कमजोर होता है मस्तिष्क की विचारशक्ति भी स्वल्प होती हैं फिर यह रोग गांवों की अपेक्षा शहरों की रहने वाली स्त्रीयों को बहुतायत सेइस लिये होता है कि वह शारीरिक परिश्रम से बच कर आराम तलब होती है । यह भी मान लेवे कि उनको यहरोग गर्भाशय (ऋतु) सम्बन्ध की खराबियों से होता है तो क्या उस समय वायु का प्रधानत्व होना नहीं माना जासकता है।

कारण रोगों के कुछ और होते हैं फिर रोग के लक्षण और होजाते हैं इसमें स्त्रियों के गर्भाशय पर ऋतु दोष से उत्पत्ति मानते हुए वात का प्रधानत्व रखते हुए यदि अपतन्त्रकापतानक का रूप दें तो और रोगों के लक्षणों के अपेक्षा वयुकि सबक न होगा क्योंकि जब लक्षण वही होते हैं

सौ नाम सज्ञा में क्या दोषापत्ति है। यह बात हमारे अनुभव में भी रोगियों को देखकर आई है कि यह रोग प्रायः स्त्रियों को ही ज्यादह होजाता है साथही यहभी देखा है जब ऋतुधर्म का समय आता है तो उससे दो चार दिन पूर्व ही होता है या जो तारुण्य अवस्था वाली वालिका है जिनका ऋतुधर्म का नियत काल व्यतीत होता है और ऋतुधर्म नहीं होता उन्हें भी देखते हैं बहुत सी ऐसी भी देखी हैं जिनको रोग का प्रबलाक्रांत होजाता है उस समय दिनमें कई २ बार रोग का आवेग होता है। परन्तु रोग के लक्षण अपन्तापतानक ही के मिलते हैं। इसलिए हम तो इसे वायु प्रधान रोग ही मानते हैं अगर अपन्तापतानक नाम सब की सम्मति में नहीं है तो वायु सूचक अन्य कोई नाम करदे तो उचित ही है हमारी सम्मति में वातजन्य प्रमेह यदि नाम सार्थक होतो विद्वान् और विचार करले।

वैद्यों को अपूर्व अवसर

थोड़ी पूंजी से विराट औषधालय खोलने का उपाय।

हमारे देश के अधिकांश ऐसे वैद्य भाई हैं जो पढ़ लिख कर भी—सफलता प्राप्त नहीं कर सके। कारण किसी के पास तो इतना रुपया नहीं होता जो खर्च कर वैद्यक की सभी औषधियों को बना कर औषधालय चला सके। कितने ही भाई दवा बनाना ही नहीं जानते उनको यह डर रहता है कहीं बनाई हुई दवा बिगड़ न जाय जिससे लगी हुई लागत व्यर्थ जाय इस भय से नहीं बनाते हैं, इन सब बातों को विचार कर हमने इस वर्ष से अपने औषधालय का यह नियम कर दिया है—जो वैद्य भाई हमारे यहां जितना रुपया जमा करायेंगे हम उस रुपये से दूनी लागत की औषधियाँ उनको एक (स्टाम्प) लिखने पर देंगे—जिस की शर्तें यह होंगी कि यदि हमारी दवायें छै माह तक आधे रुपये से ज्यादे की जो होंगी वह न बिकेंगी तो हम उन्हें वापिस ले सक्ते हैं और यदि बिक जायगी तो उनका रुपया ले सकेंगे। अर्थात् छै मास तक हम उनको सहायता के लिये अपना हिसाब छोड़ सकेंगे। इस से ज्यादह क्या सरल उपाय हो सक्ता है, थोड़ी पूंजी से आयुर्वेद की बनी बनाई सभी दवायें प्राप्त करके बहुत बड़ा औषधालय खुल सक्ता है।

पत्र व्यवहार का पता—
मैनेजर—नारायणदत्त शर्मा वैद्यराज
धन्वन्तरि औषधालय विजयगढ़
वाया—हाथरस जंक्शन

हिस्टेरिया रोगिणी की प्रार्थना

धन्वन्तरि भगवान?दीन-रक्ष? असुरारी, अशरणर्ण-शरण?प्रजेश?बुद्धि, जग विदित तुह्मारी?
नाथ? रावरे सिवा, न कोई हितू हमारा, अबलाओं के लिये, राम बिन कौन सहारा ?१॥

'हिस्टेरिया'यम फांस, सांस कब लेने देती! दइमारी,बटमार न हमको जीने देती !
इस जीवन से भलीमृत्यु,सब भांति हमारी! जीवित मरण समानहुई यह सुता तुम्हारी !२

यद्यपि, पति सब तरह, हमारी सुधिलेते हैं! दवा-फीस,अब फंद मध्य,झोकड़ देते हैं !
वैद्य,डाक्टर लोग, हमारा रोग न हरते? कहते वे जिस भांति न वैसा करतब करते ?३॥

'हिस्टेरिया का रोग, ताड़का रूप हुआ है! लिया उसीने पकड़ हमारा जीव सुआ है?
वैद्य, डाक्टर-लोग मुख्य पैसा हितकारी! हृदय युक्त बिन स्वार्थ, खबरि ले कौन हमारी!४

हे धन्वन्तरि देव? आप श्रीकृष्ण रूपहो! आप स्वयम् श्रीराम, जगत के वैद्य—भूप हो!
विष्णुस्वरूप, समर्थ, दयासिन्धुज,अघहारी,आहिर भगवंत,सन्त हम शरण तुह्मारी?५॥

'हिस्टेरिया'नें हमें नरक रौरव में डाला! पड़ा हमारा बड़े कठिन दुश्मन से पाला?
उदर दोष की खान,प्रदर की माता सोहै, १००में ८०+५ बहिन की यह फांसी है ?६॥

पुत्र हुये बलहीन, ओज का नाम नहीं है! तेज गया कुम्हलाय, शौर्य अविराम नहीं है ?
आयुहीन, मतिहीन, लाल भी काल हवाले, हमी नहीं पति-पुत्र सभी पर पड़े कसाले !७॥

बिल्कुल आशा नहीं, एक है आश तुह्मारी! रहान अब उत्साह, किंतु, प्रभु-बात प्यारी !
शेष नहीं उत्साह,आप जो चाहें करलें ? करदें हमको स्वस्थ, नाश अथवा ही करदें? ८॥

—नयन जी



हिस्टेरिया--प्रहसन

(लेखक--बाबू गणपति चन्द्र केला)

प्रथम दृश्य

(सेठ धनीराम जी के एक सुसज्जित कमरे में उनकी सुशिक्षिता पुत्री सुकुमारी—हाथ में एक चित्र लिये—कोच पर अर्धशयनावस्था में बैठी हुई है।)

सुकुमारी—(स्वगत) प्यारे, मुझे यह चित्र क्यों अच्छा लगता है। इसी लिये न, कि यह तुम्हारा है। तुम्हीं मुझे क्यों भाते हो, मैं बारम्बार हृदय से पूछती हूं परन्तु कोई जवाब नहीं मिलता (रुक कर) हां मिलता है, यही कि तुम अच्छे हो-इस अच्छे के साथ में न जाने और भी कितने ही गुण हृदय से प्रगट होते हैं-मैं स्वयं उन्हें शब्दों में नहीं कह सकती। (रुक कर) बस सब मिल कर यही वाक्य बना देते हैं कि तुम अच्छे हो, और, तुम्हीं अच्छे हो।

(एक टहलनी आती है)

टहलनी—बाईजी ! स्नान कर लीजिये—गरम जल रखा है।

सुकुमारी—अभी नहीं ! अभी हमारा चित्त नहीं चाहता—जा !

(जाती हुई टहलनी—लौटकर)

टहलनी—ठण्डा हो जायगा. फिर, जल, अभी बिल्कुल ठीक है। साबुन, केशकिशोर, सब रख आई हूं—

सुकुमारी—अच्छा र, जा—भाग—मैं थोड़ी देर में आती हूं। (खिन्न होकर) कह दिया जा जाती क्यों नहीं ?

टहलनी—(आगे बढ़ कर)—क्या देख रही हैं बाई जी, हम भी देखें यह तो तसवीर है किनकी है बाई जी ?

सुकुमारी—(कुछ शरमाती सी) है तेरे बाप की— (हंसकर) पगली तसवीर किस की बताऊं तुझे—(सुकुमारी चित्रछिपाना चाहती है)

टहलनी—(चित्र पकड़ कर) ना बाई जी, ये तो हमने कहीं देखे हैं—अरे याद आया—ये तो वे हैं-बा० नारायण दत्त-अरे मैं कैसी भूल गई—अभी उस दिन तो ये आपसे बातें कर ही रहे थे-कैसा सुंदर चहरा है-बाई जी ! ये गरीबों की खूब मदद करते हैं-अभी हैज़ा फैला था तो बिचारे दिन रात दवा दारू देते फिरते थे।

(सुकुमारी मुस्कुरा कर चित्र हटा लेती है)

रहमती—अच्छा ! बाई जी अब समझी—पर तसवीर देखने से क्या, अब तो बातचीत दूसरी जगह पक्की होने को है।

सुकुमारी—(अचम्भित होकर) ऐ—क्या सच्चे ही-क्यों गंगा !

रहमती—(गंगा) हां बाई जी, सच !

सुकुमारी—मैं यह पूछती हूं—कि मेरी बात चीत हो रही हैं और मुझे खबर भी नहीं। क्या इस अभागे देश की तरह मैं भी अभागी हूं—जो—मेरी किस्मत का फैसला हो और मेरी राय भी न लें। मुझे इसके लायक भी नहीं समझते—(रुक कर) ऊंह - जाने दो-देखा जायेगा। बात चीत उनके हाथ में है-तो करलें-क्या विवाह भी जबर दस्ती करेंगे।

रहमती—तो बाई जी-फिर आप साफ २ कह दीजिये। आप तो खूब पढ़ी लिखी हैं—कह न सकें तो चिट्ठी से—इशारे से ही बता दीजिये।

सुकुमारी—(हलका धक्का देकर) दुर पगली। मैं कैसे कहदूं। क्या उन्हें खुद नहीं सूझता क्या उनसे अम्मा ने दो एक बार नहीं कहा ? पर उन्हें तो बड़ा घर चाहिये। लड़का चाहे निरक्षर भट्टाचार्य हो—पर घर दस लाख का होना चाहिये। अब मेरे कहने से ही क्या-तू उनका स्वभाव जानती है। कहीं तू ही मत कह देना।

रहमती—ना—बाई जी—आप न चाहें, तो मैं न कहूंगी-कहने में कोई हर्ज तो है नहीं—(जाते हुए) अच्छा न कहूंगी—जल्दी आइये—

(गई)

सुकुमारी—(स्वागत)—कैसो बताऊं—विकट समस्या है—पिताजी की बातें सुन सुनकर चित्त में निराशा की तरङ्गे उमड़ती हैं। खाना—पीना—कुछ नहीं सुहाता। कभी सिर में कभी पैर में कभी पीठ में, कभी पेट में, दर्द, कभी जलन, कभी सुन्न कभी तनाव, बीसों उपद्रव होने लगे हैं इनकी बातें सुन सुनकर दमसा घुटने लगता है—

(सामने देखकर)—लो वे तो यहीं भी आये। (उठकर) (चित्र को छिपाने की चेष्टा करती हुई) अब इसे कहां छिपाऊं (पीछे करलेती हैं)

(वृद्ध धनीराम आते हैं)

धनीराम—सुकुमारी ? मैं क्या सुनरहा हूं। क्या मैंने तुम्हें इसी लिए पढ़ायी थीं। क्या मैंने तुम्हारा मान इसी लिए बढ़ाया था, कि तुम मेरी बात टालोगी। बोली क्यों नहीं निकलती ? जबाब दो (सुकुमारी चुप है) अरे बोलो !

सुकुमारी—पिताजी ! मैंने तो आपकी कोई आज्ञा नहीं टाली—मेरा क्या कसूर हुआ।

धनीराम—माना कि तुमने नहीं टाली—तो फिर, अब, मीनमेख की क्या जरूरत है। क्या तुम सोचती हो कि मैं अपनी बेटी-उसको दूंगा जिसके घर की कोई दुकान भी नहीं। जो पढ़ा लिखा हट्टा कट्टा होनेपर भी वैद्यक का काम करता है, सो भी फीस नहीं लेता

सेवा समिति के काम में दिन रात घूमते रहना। क्या हुआ कि पिता बीस बाईस हजार छोड़ गये हैं। १००) १२५) मासिक की आय से क्या होता है। उसको देकर क्या अपनी शान बिगाड़ूं ? रमेश कुछ नहीं पढ़ा—माना कि लोगों का कहना सच है और वह थोड़ा बहुत जुआ भी खेलता है ? मगर इससे क्या ? पन्द्रह लाख का घर है। कितना ही बिगाड़े तो भी जन्म भर को काफी है। (स्वगत कदाचित कुछ हो भी जाय) तो भी बेटी दुखी तो नहीं रहेगी ? सुकुमारी ! बेटी !! कुछ हम भी अकल रखते हैं—तुम ये नये जमाने के ख़्यालात छोड़दो। स्वयम्वर करके हसी न कराओ। (जाते हुए) समझलो ! मैं सब तै कर चुका हूं—समझो— (गये)

(सुकुमारी चित्र निकालकर देखती हुई)

सुकुमारी—(स्वगत)—जीवन—धन !! पिता तो निश्चय कर चुके। और मैं भी निश्चय कर चुकी, तुम मुझे चाहो-न—चाहो—मैं तो चाहती हूं। तुम्हें मेरी पर्वाह हो न हो-पर मुझे तो यही चाह है। अब तक मैं शुद्ध प्रेम ही चाहती थी—परन्तु अब मैं सब कुछ चाहती हूं। चित्त दिनों दिन व्याकुल रहता है। न जाने कैसी २ उमङ्गें उठती हैं—पिता बाधा देते हैं मगर (जाते हुए) मर्ज बढ़ता ही जाता है। (गई)

दृश्य दूसरा।

(आंगन में सुकुमारी घुटनों पर खड़ी है-उसके केश और वस्त्र अस्तव्यस्त हैं, गङ्गा, सुकुमारी का भाई और एक स्त्री उसे पकड़े हुए हैं।

(धनीराम आते हैं)

सुकुमारी—छोडदो—मुझे छोड़दो, मैंने क्या बिगाड़ा है—हाय मेरी किस्मत—घर के भी दुश्मन होगये।

(रोने लगती है)

धनीराम—बेटी ! सुकुमारी !! आज तुम क्या बहकी २ बातें कर रही हो।

गङ्गा—सिरकार ! अभी २ अच्छी तरह थीं, बोलीं मेरी पीठ में दर्द होता है, आंखें लाल होगईं, अब जोर २ से सांस लेने लगी हैं।

सुकुमारी---(काटने की चेष्टा करती हुई) छोड़दो ! मैंने कोई चोरी की है ? मैंने क्या किया है, हाय ! मुझे क्यों बांध रक्खी है। दादा !!

धनीराम—क्यों बेटी-कैसे हो लाली !

सुकुमारी—मेरे पेट में-इधर बाईं ओर (हाथ से दिखाकर) दर्द सा होता है।

धनीराम—दर्द ! अच्छा, अरे सटकू ! ओ, अरे—सटकुआ !!

(नौकर आता है)

सटकू—जी ! आया हुजूर-क्या हुकुम मालिक !

धनीराम—अबे कहां सटक गया था...?

सटकू—कहीं नहीं हुजूर-अभी आता हूं-मैं (जाने लगता है)—गया

धनीराम—अबे ! फिर सटका। (नौकर रुक कर



एक हिस्टेरिया रोगिणी की मूर्छित अवस्था।

लौटता है) सुनतो-देख आओ की क्या हालत है ?

सटकू—बड़ी खराब ! एक दम डस्पलाट (फिर जाते हुए) ससुरी-अरे, ओ ! दिनों दिन सिर चढ़ती जाती है-ओ—गैया

धनीराम—अबे, ओ, क्या बकता है (नौकर लौटता हुआ) सुन !

सटकू—सुनता हूं-अभी हुजूर ! पर-ये ससुरी-गैया-हाँ मालक मैं गैया को कहरहा हू मानती ही नहीं-खुजाते २ तमाम चारपाई खसोट डाली—

सुकुमारी-आह ! अरे मैं मरी-मुझे छोड़दो !

सटकू-(दरवाजे की ओर मुंह उठाकर)-रूक रखना सच्चन ! छोलना मत—इस गैया ने मेरा—

धनीराम-(जोर से) अरे ठीक करदूं क्या अभी ! हैवान कहीं का ।

सटकू—(हाथ जोड़कर) नहीं मालिक, क्या हुकुम-कहो ?

धनीराम-जा हकीमजी को बुलाला—कहना बहुत बीमार हैं—अभी चलें-

सटकू—जो हुकुम-

(जाता है)

सुकुमारी—अरे राम ! अरे मैं मरी, गोला उठारे…

धनीराम—बेटी—गोला कहां है लाली ?

सुकुमारी—अरे वह ऊपर पेट को आरहा है—यह आया —

(हाथ से—पेटपर ऊपरको दिखाती हुई छाती मल लाती है)

धनीराम-(घबराकर)-अरे मुल्लन ! ओ मुल्लन !!

(नेपथ्य में—जी हुजूर ? (आता है)

जा—गाड़ी लेजा । बनर्जी बाबू—वे ही होमियोपैथिक डाक्टर साहब जो मीठी दवा देते हैं, अरे वे ही जिन्हों ने तुझ से साफ रहने को कहा था ।

मुल्लन (सिर हिलाकर)—जी हां समझ गया हुजूर—

धनीराम—हां तो बस, जा—उन्हीं को बुलाला । बक्स लेते आवें । कहना अभी चलें ।

मुल्लन—हुजूर, वे उस दिन भी देर में लौटे थे, आज न आये हो तो इन्तिजार करूं ।

धनीराम—अरे नहीं, इन्तिजार में देर न करना । वहां कहजाना । और आगे बड़ी सड़क पो जाकर—डाक्टर साहब को लेआना ।

मुल्लन—उनको तो मैं नहीं पहचानता हुजूर ।

धनीराम— देख सड़क पर बाईं ओर बड़े साइन-बोर्ड पर लिखा है-प्रो० चतुर्भुजदास H. M B S. का नवजीवन फ़ार्मेसी । अन्दर तो हम भी नहीं गये पर साइन-बोर्ड और इश्तहार देखने से कोई भारी डाक्टर जान पडते हैं ।-उन्हें बुलालाना किनको लाएगा ?

मुल्लन—समझ गया-हुजूर (जाते हुए) पहिले बनर्जी बाबू-न मिले तो वहां कहकर—प्रोफेसर चतुर—अचार H, M, B S. समझ गया—(जाता है)

धनीराम—अरे यह नहीं ।

(नेपथ्य में—समझ गया अभी लाता हूं)

दृश्य—तीसरा

(सेठ धनीराम जी के बैठक खाने में बही-खातों का ढेर पड़ा है मुनीम जी जाने की तैयारी में हैं-अकस्मात सेठ जी घबराये हुए आते हैं:—)

धनीराम—मुनीम जी ! आज बड़ी आफत आई। लाली को न जाने क्या होगया है। बहकी २ बातें कर रही है। आप जाकर फौरन किसी डाक्टर को लाइये—एक तार भी गांव को देते आवें।

मुनीम—किनको, सेठ जी ? डाक्टर ऐन०ऐन०मिश्रा को, या, रेवतीप्रसाद जी को,

धनीराम—महावीर मालवीजी को तार देदो कि सुकुमारी सख्त बीमार है—फौरन पधारिये। और आप किसी बड़े डाक्टर को लाइयेगा—जल्दी जाइये

मुनीम—(जाते हुए)—लाली दुखारी है। उसने कभी कष्ट नहीं सहा—मैं सर्जन से कम तो क्या लाऊं—आप कहें तो—सर्जन जनरल साहब…

धनीराम—हां—हां—उन्हीं को ले आइये जल्दी …

(मुनीम जी जाते हैं)

हाय ! इस बम्बई जैसे शहर में भी, इतनी देर होगई अभी कोई नहीं आये।

(मुल्लन आता है)

मुल्लन—हुजूर! प्रोफेसर चतुर्भुज दास ए० बी० सी० डी० आरहे हैं, चन्द्रजी थे नहीं—थोड़ी देर में आजायेंगे। जाकर लाता हूं सरकार ! (जाता है-चतुर्भुज जी आते हैं)

(सेठ जी कुर्सी बढ़ाते हुए)

धनीराम—आइये, साहब ! बिराजिये, आज मैं बड़ी आफत में हूं ?

डाक्टर साहब—घबराइये मत। जमाने के आगे लाचारी है, मगर मैं इस काम को ऐसे ढङ्ग से निपटा दूंगा कि कोई ख़राबी पैदा न होने पावेगी। … आपकी कृपा से मुझे काफी… …..

धनीराम—अजी नहीं-वैसी पाप पुण्य की कोई बात नहीं है। मेरी बेटी…

चतुर०—अच्छा ! अच्छा !! समझ गया। वे बाल विधवा हैं और आप पुनर्विवाह करते में डरते हैं। न कीजिये। मैं आप से एक पुस्तकको सिफारिश करूंगा। उसमें विद्वान अनुभवी लेखक ने ऐसे अनेकों उपाय बता दिये हैं। उन्हीं से काम चल जायगा। आपको बिरादरी में जलील होने की ज़रूरत नहीं।

धनीराम—मगर—   (बीच में ही)

चतुर—अगर—मगर कुछ मत डरिये। और कोई नुकसान पहुंचा तो, मैं मौजूद हूं। फौरन ठीक कर दूंगा। आप सोच विचार न कीजिये।

धनीराम—मगर आपने सेवक की बात पर ध्यान नहीं दिया।

चतुर—अच्छा तो कहिये ! मैंने तो यही समझा था।

धनीराम—वह आज बहकी २ बातें करती हैं-का-
टत हैं -आंखें लाल हैं—

चतुर—बस समझ गया । उसे Mania है (स्व
गत)-कौनसा उन्माद बताऊं । लड़की सु-
न्दरी होगी ? (प्रगट) कितनी अवस्था है।

धनीराम—अभी सत्रहवीं में आई है । बड़ी सुशील
थी ।

चतुर—(स्वगत) अहा ! परन्तु कौन भेद कहूँ।
ऐसा रोग बतावें जिससे काम बने । ऐसा
ही स्वांग रचना चाहिये । (प्रगट)-क्या
वह बीमारी से उठी है । नाम क्या है ?

धनीराम —नहीं वह खूब अच्छी भली थी । डाक्टर
साहब मेरी-सुकुमारी-कभी ऐसी बीमार
नहीं हुई !

चतुर० (स्वगत) अहा कैसा प्यारा नाम है—सु-
कु—मा-री—। और अच्छी भली ,-मगर
यहां दाल गलनी कठिन है—देखा जायगा
(प्रगट) इन्हें Frotomania है।

धनीराम—ओ साहब ! ठीक २ विचार करके-ज-
ल्दी दवा दीजिये । जैसे होसके-मेरी बेटी
को बचाइये—

चतुर०-अजी सो तो कोई चिन्ता न करें। आप
उन्हे नित्य सुबहशाम—८-८-बजे फार्मेसी
ही भेज दिया करें ।

(स्वगत-इन्हें विश्वास दिलाना चाहिये)
(प्रगट) क्यों कि मैं तो कहीं जाता नहीं।
इसी हफ्ते में-नवजीवन फार्मेसी में ऐसे
सतालीस रोगी आये थे;बड़े २आदमी थे,
एक बेरिस्टर थे; एक, कलक्टर थे, ?
एक वायसराय के एडीकांग थे ।

धनीराम—ओ हो ! तब तो डाक्टर साहब हम
ग़रीबों पर भी कृपा हो—जैसे बने जल्दी
आराम कीजिये । महाराज ग़रीबाई मुजब
ही सही—मगर आप को खुश कर दूंगा ।

चतुर०-अजी सो तो होगा ही, मगर मुझे रुपये
की उतनी पर्वाह नहीं जितनी प्यारी (स्व
गत-अरे ! भूल गया) (प्रगट) भारत-सं-
तानों की । परसों एक रोगी एक खुले लिफा
फे में दो लाख के १०)१०)के नोट छोड़गया
था । आप जानते ही है किहनने में, मै बच्चा
बन कर रह सकता, मगर मेरे समान सदा
चारी होना कठिन है । मैंने उस लिफाफे
को आंख से भी नहीं देखा । वह आदमी
दूसरे दिन लौटा और टेबिल पर से उठा
लेगया । मुझे पता भी नहीं ।

धनीराम—अच्छा-धन्य है महाराज ! हम लोगों
को ऐसे ही त्यागी महापुरुष कहाँ मिलेंगे ।
अब तो मै आप की ··

(मुनीम जी आते हैं—पीछे २ सर्जन जन-
रल आरहे ,हैं सब उठ खड़े होते हैं । डा-
क्टर साहब कुर्सी छोड़ देते हैं । सर्जन
जनरल उस पर जम जाते हैं)

धनीराम—सलाम जनरल साहब ! डाक्टर साहब
मै बड़ी आफत में हूं :—

सर्जन—Well वेल क्यों, क्या, Abortion ऐबो-
र्शन हुआ । Who is this(चतुरभुज की ओर देख
कर) यह कौन हैं ।

चतुर०—म ' म···मैं—चतुर्भुज दास ।
हूं-हूं-हूं ··(डर जाते हैं)···

धनीराम—हुजूर आपके आने में देर थी, अतः इन डाक्टर साहब को बुलालिये थे।

सर्जन०—ओः यू! व्हेअर्स यौर सर्टीफिकेट सनद दिखाओ।

(चतुर० मुनीम जी के कान में कुछ कहते हैं-मुनीम अटी में से कुछ निकाल कर देते हैं—चतुर और मांगते हैं, वे हाथ से मना कर देते हैं। फिर मांगते हैं-फिर मना कर देते हैं- चतुर० चुपके २ खिसक जाते हैं)

य लोक गर्म डवा डिया होगा अब हम ठडा डवाई डेगा। जिस से रोगी ठडा हो जायगा। वैल (Well) डनीराम क्या बातहै?

धनीराम—हुजूर मेरी बेटी आज कल बहुत बहकी बाते कर रही है।

सर्जन—ओः इस बैड (Bad) ने गरम डवा डेकर केस बिगाड़ दिया। इन्सेनिटी (Insanity उन्माद) होगया। अब ठडा मैडीसिन (Medicine दवा) डेगा।

(लटकू के साथ हकीम जी आते हैं।

हकीम०—जी हा ग़रीब परवर सलामत! आपका ख़याल शरीफ़ बिलकुल बजा है। हर मर्ज़ में ठंडी दवा ही मुफीद होती है इस से ख़फ़क़ान की हरारत रफै होती है

सर्जन०—नो! नो!! (No नहीं) आयफूँट कोई बड़ा डाक्टर नहीं हुआ। हार्ट (Heart हृदय) रफ (Rough खुरखुरा) होने से भारी नोकसान होगा। फिर, आप का डवा से हमारा कंट्री (Country देश) को क्या फायडा? हाम, कोई डेसी सिस्टम (System चिकित्सा पद्धति)। रिकमण्ड (Recommand की सिफारिश) नहीं कर सकटा। रूलिंग नेशन (Ruling nation —शासक जाति) का फायडा नहीं होने सेगवर्नमेंट क्यों एक्सेप्ट (Accept स्वीकार) करेगा। आप लोग का सब बात नौनसेंस (Noncense मूर्खता पूर्ण) है।

धनीराम—(हाथ जोड़ कर) तो-हुजूर अब चल कर मेरी-बेटी की हालत देखिये-वह मर रही है। बड़े कष्ट में है

(सब-कहते हैं-अच्छा चलो-और जाते हैं)

दृश्य चौथा।

(उसी आंगन में सुकुमारी घुटनों पर खड़ी है। वस्त्र आदि सब अस्त व्यस्त-केश बिखरे हुए हैं। उसकी माता, भाई, और गंगा पकड़े हुए हैं-लपकू स्याना आता है।)

लपकू—पालागों माई जी। आज कैसन याद किये।

मा—(रोती हुई)—बेटा क्या बताऊं मेरे करम फूटे हैं, देखो मेरी लाडो का क्या हाल है।

लपकू—अरे, नो माई जी रोवति हौ काहे लागे ; अब्बे आराम करत हौं—(सुकुमारी के पास झुक कर चहरा देखता है, सुकुमारी—कराहती है)–बूझि गैन । इनका जखैया बाबा चेरिन है। सब उस्ताद् कृपा से ठीक हुइ जै हैं।

मा—(रोकर) तो बेटा, बचाओ—मो दुखिया पर दया करो. मुझसे इस की यह हालत नहीं देखी जाती—

सुकुमारी—अरे-छोड़ दो! मुझे क्यों पकड़ी है, मैं मरी रे···

लपकू—अब्बे लीजिये। तनी हल्दी मंगाओ, और थोरे सेमूंग-चाउर, लाल मरिचा,तनी आगी मंगाओ। (मुंह से धीरे २ कुछ बोलता जाता है) एक सवाउ गज लाल कपड़ा, और सात सींकें मगाओ।

मा—आ गंगा ले आ-जल्दी ला···(गंगा जाती है)

सुकुमारी—अरे दर्द रे—मुझे छोड़ो!

लपकू—अब न छोड़ब। सार तो का पकर लिहिन हैं, तू हमार हरऊ बारा के नाहीं जानीत का···

सुकुमारी——अरे! पेट से ऊपर को चढ़ा रे? गो—गो-ला—

लपकू—ठहर! सरवा ऊपरै चढ़त आय। मंगाओ माजी. तनी पीरी माटी और लाल धान—चाहे गोहूं (गेहूं) होय—सवा सेर। और तेल सवा पाव, कंचवा के कटोरा में—एक रा मुंह दिखाव. फिर मन्तर पढ़ो।

(गंगा पहला सामान लाती है--नया लेने जाती है)

सुकुमारी—अरे गो···गोला गले—ले-में अ-अ-ट क···

लपकू—ओ हो गले पर हू चोकी धरी है। अब्बै काटत हूं।

(हाथ नचा कर मूंग छिटकता हुआ)

वी—र बली बजरङ्गी, उस्ताद तोरा संगी।
बावन कोट-किले की खाई—तोरा गुरू की दोहाई
मा-ग भाग दक्खन भाग पश्चम दिन बाचा।
मार जखैया,कल पलधाई गुरू का सबद साचा॥

(कुछ मन ही मन बड़ बड़ाता हुआ- आया सामान अपनी पिछौरी में पलटता जाता है)

सुकुमारी—(गले में उँगली डालती है) अरे—रे आह!

मां—जल्दी, भैया जल्दी—हाय! अरे मेरी लाली·

स्याना—(स्याना दर वाजे की ओर देखता है कि डाक्टर वगैरहः आरहे हैं) (स्वगत) अरे ई तो आये। अब इनको हम दिलासा देते हुए, सामान लेकर भागना चाहिये——(पिछौरी में सब समेटता हुआ) (प्रगट) अब्बे लो माई जी देख? देख!! भूत प्रेत पिसाच—इस तेलवा में नाचः— (तेल सुकुमारी के आगे रख देता है) (फिर उठा कर ले जाते हुए) लो! माई जी बाधा तो हट गैत, तनी देर में ठीक हुइ जै है, अबहीं हमार डर से जान नाहीं पावा,अब परेत भागि जै है पर—केकरेऊ इलाज न कराव। ई हम कहि देत हैं पालागीं।

(जाता है)

मां—अरे बेटा लपकू ! तनिक सुनो तो—

(इतने में—सर्जन जनरल—धनीराम और हकीम जी आते हैं—लटकू भी आता है पर—ओ! ओ !! मैया कहता हुआ पीछे दौड़ जाता है)

हकीम जी—ओ हो, इसे तो मर्जे-मिराक है। कब से ऐसी हालत है ?

धनीराम—कल तक खूब अच्छी भली थी , कुछ कब्जियत की शिकायत जरूर थी। दो—ती न दिन से उदास भी रहने लगी थी। अभी इसी महीने में इसकी शादी की सोच रहा था।

सर्जन०—ओ ! यॅस (Yes ठीक—ठीक !) हम समझ गया। (स्वगत) her love had been to some other person हर लव हैड बीन टू सम अदर पर्सन ; उसका प्रेम सम्भवतः किसी और से रहा हो (प्रगट) इसको पहिले ऐसा हुआ !

धनीराम—जी नहीं हुजूर !

सुकुमारी—अरे ! गले में गोला अटका। Sir this person has beaten me very much (सर दिस पर्सन हैज बीटन मी व्हैरी मच पिता की ओर दिखा कर) साहब ?इन्होंने मुझे बहुत मारी है) अरे मैं मरी—रे ? (एक दम गिर पड़ती है, हाथ पैर ऐंठन लगते हैं।-पिता-भाई-भगा,माता पकड़ कर मुड़नेसे रोकते हैं)

माता—अरी लाली ! लाली !! हाय……

(बनर्जी बाबू आते हैं-हाथ में दवाओं का बक्स है)

बनर्जी—ओफ ! हिस्टेरिया ! कुछ फीकर नेईं ! हाम अभी ' इग्नेशिया ६, इकर ठीक करता है।

(बक्स से निकाल कर दवा देते हैं)

सर्जन—हैलो ! गुडईवनिंग मिस्टर बेनर्जी ? (Hallo ! Good evening Mr B) अहा ! जयराम जी बनर्जी बाबू।

बनर्जी—गुडईवनिंग सर, (Good Evening Sir,) (जयराम जी, साहब)

(मुल्लन आता है—)

मुल्लन—सिरकार ! गांव से महावीर बाबूभी आ- गये हैं। और क्या हुकुम !

धनीराम—बहुत अच्छा हुआ तुम अभी यहीं रहो। (सुकुमारी की ऐंठन कम हो जाती है-म- हावीर प्रसाद जी अंदर आते हैं—धनीराम आगे बढ़ कर मिलते हैं)

धनीराम—आइये प० जी महाराज। आपत्ति के समय में आपने बड़ी कृपा की।

महावीर—लालाजी,सुकुमारीकी बीमारीकी खबर पाते ही तमाम गांव चिंतित हो गया है।

(सुकुमारी की ओर देख कर)

कुछ नहीं योषापस्मार का दौरा है, अभी. शान्त हुआ जाता है, फिर धीरे २ रोग भी जाता रहेगा। आप गांव को राजी खुशी का समाचार भिजवादीजिये।

सर्जन०—आप कौन हैं ?

महावीर—मुझे एक छोटा सा वैद्य समझ लीजिये।

सर्जन—आप क्या,बोलटा ! वैद्य लोक हिस्टेरिया सोने सकटा।

महावीर—अवश्य ! हम इसे असाध्य नहीं मानते ।

सर्जन—इम्पौसीबिल (Impossible असम्भव) हिस्टेरिया एकदम क्योर(Cure आराम) नहीं होने सकटा !

बॅनर्जी—होता है ! हामरा होमोपैथिक (nomeo patnic) सिस्टम से भी रोग बीलकुल चला जाता है । आप का एलोपेथी अभी इस को क्योर नहीं कर सकटा ।

(सुकुमारी की ऐंठन बन्द होकर-होश होआता है)

सर्जन—आच्छा ! हाम बाट करने मांगटा नेई ! (जेब मे नोटबुक और पेंसिल निकाल, नुसखा लिखकर फाड़ कर घनीराम को देते हुए)—

ये प्रेस्क्रिप्शन (Prescription नुसखा) अंग्रेजी कंपनी से लायेगा । डिन में टीन वार, एक हाफ्ता डेगा । फेर हम को खबर करेगा चलो''...

(सर्जन जनरल—और मुल्लन जाते हैं)

महावीर०—आश्चर्य हकीम जी ! दौरा कैसे हुआ था ।

हकीम०—बंदगी जनाब ! हुआ तो जोर का था मगर ज्यादह देर नहीं रहा । फ़िज़ल मेरे आने से ही हो रहा था इधर तो कोई घंटा भर रहा होगा ।

महावीर—तो कोई चिन्ता की बात नहीं: अब कहिये. क्या राय शरीफ है ?

हकीम०—मैं अभी तजवीजकरता हूं-पहिले हमलोग इसे इख़्तनाकुल रहम मानते थे, मगर अब कुछ इख़्तला़ज़ है । मैं अभी सोच कर अर्ज करूंगा ।

सुकुमारी दौड़कर महावीरजी की गोदीमें आकर रोने लगतीहै

महावीर—बेटी ! रोओ मत, कुछ चिन्ता नहीं । अब मै आगया अब तुम्हें यह कष्ट नहीं होगा मुनीम जी ?

(मुनीम जी आते हैं—)

महावीर०—मेरी दवाख मजूषा बाहर रक्खी है, जरा मंगवादीजिये ।

(मुनीम जी जाते हैं—लेकर आते हैं)

महावीर०—बनर्जी बाबू ! आप से सर्जन साहब कैसे रुखाई से पेश आये ।

बनर्जी—अजी एक दम बोलने नहीं सकता ।।होमोपैथी के सन्मुख ओ लोक पद २ पर पराजित होता हाय ! कॉलेरा कोलैप्स (विषूचिका Chollera of Collapse) में ओ लोक जब होपलेस (निराश) हो जाता है, तब भी हाम बचाता है बालक लोग दांत, निकलने से मरता है, ये लोक नेई बचा सकता । हाम ' कैमोमिला ६ , देकर उनका सब कष्ट दूर करता हाय ।

हकीम०—जी हां—ये लोक कुनैन खिलारकर रोगी के अब खरात और भी गर्म कर देते हैं । इलाज ठंडा ही करना चाहिये ।

महावीर०—अजी कोई भी जीर्ण (Chronic-क्रौनिक) रोग हो इसे झट, असाध्य कहदेते हैं । विषमज्वर का रोगी तो ये अपनी अज्ञानता से हीमारलेतेहैं । उसको दुनादुन कुनैन खिलाये जाते हैं ।

हकीम-जी!हां उस के खून की बढ़ाया तरीः!भी!सो खता हो जातीहै ये लोग मद दवा नहीं जानते।

बनर्जी—ए लोक मैडीशन इतना ज्यास्ती क्वान्टिटी (तादाद)में देता है, जो रोगी का नेचुरल पावर (प्राकृतिक रोगहर शक्ति) मारा जाता है। ओ सदा रोगी रहने मांगता है ··· (रुक कर) अच्छा बाबू अब हम जायगा। फेर दर्शन करेगा!—जयश्रीकृष्ण।

हकीम—बन्दा भी इजाजत—ख्वाहां है। जरा तशरीफ इनायत फर्माइयेगा। —आदाबर्ज— (जाने लगते हैं)

महावीर०—जी हां ? मैं अवश्य ही दर्शन करूंगा जयराम जी–

(बनर्जी-और हकीम जी के साथ घनीराम भी जाते हैं)

दृश्य—पांचवां ।

(एक रमणीय उद्यान में—खूब सजावट हो रही है-)

(सटकू—और भुल्लन बातें करते आते हैं)—

भुल्लन—भैया, हो तुम पूरे सटकू, काम के वक्त न जाने कहां सटक जाते हो । उस दिन जब लाली कुवारी थी तब भी न जाने कहां सटक गये—आज···

सटकू—अजी गया कहीं नहींथा। हकीम जीआये नहीं थे मैं थोड़ी देर बैठा। इतनेमें मुझे चारपाई का ख्याल आया। वह गैया उसे सोंस रही होगी। मैं फौरन दौड़ा। मगर पास आते ही वह भाग गई। मैं फिर हकीम जी के यहां गया। सब गऊ दे आकर फिर चले गये थे।

ऐसे ही मैं एक बार फिर देखने आया अब की बार गैया न थी। मुझे सतोष—सखकीनवर—जबर सब कुछ होगया। और मै आनन्द से बेख़बर हकीम जी के यहां बैठा रहा। वे फिर आये और खाना खाने चले गये। फिर आये, और पान खाने चल दिये। पीछे मुझे याद आई कि जल्दी लिवाले जाऊं बस मैंने तभी से आवाज लगानी शुरू की, और आखीर हकीम जी आगये तब दम लिया।

भुल्लन—मगर आज ब्याह के मौके पर कहां चले गये थे।

सटकू—अरे ? क्या सच्ची, तो ये धूम धाम इसी लिये है। यार, हमें तो वह चार पाई की गैया—नहीं बैठने देती।

भुल्लन—तुम भी अजब बोड़म हो—इतनी तयारी हो गई और तुमने सुना ही नहीं।

सटकू—भैया सुना तो था। पर पुना—प—घुना· नहीं, नहीं गुना-नहीं था ! विश्वास नहीं था, क्यों कि सेठ जी की तो कुछ और ही राय थी ?

भुल्लन—सो तो थी। मगर बीमारी में-मालवीय जी ने सुकुमारी का इलाज करते २ यह भी जान लिया कि सेठ जी की राय कब

के माफिक नहीं है, और (कान में कुछ कहते हुए)—अजी साफ मनाई करदी थी कि मैं उनके सिवा किसी से विवाह नहीं करने की। चाहें जनम भर कुमारी रहूं।

खटकू—तो फिर मालवीजी ने भी यही राय दी होगी।

भुल्लन—अजी उन्होंने साफ कह दिया कि सुकुमारी जैसी तुम्हारी बेटी तैसी हमारी कुछ हक हम भी रखते हैं। अगर आप हमारी बात न मानेंगे तो हम आपके किसी काम में शरीक नहीं होंगे गांव भर से कोई नहीं आवेगा।

खटकू—खूब खरी कही। फिर...

भुल्लन—आखिर नारायण बाबू में कोई कसर तो थी नहीं सेठ जी को भी मंजूर करना पड़ा अजी फिर तो मानों कोई नशा सा उतर गया। अब तो सेठ जी खुद यही ठीक समझने लगे हैं। (बातें करते २ जाते हैं)

(वैद्य महावीरप्रसादजी और हकीमजी बातें करते हुए आते हैं पीछे २ धनीरामजी भी हैं)

हकीम०—पण्डित जी ! हज़ार आफरीं ! आपने भी कमाल दिखाया। जो कहा था सोई करदिया। न जाने क्या बूटी पिलादी कि उस दिन से आज तक उसे कोई शिकायत ही नहीं। दौरे का नाम भी नहीं।

महावीर०—हकीमजी, बूटी क्या थी। यही हमारे आपके पूर्वजों विद्वान महर्षियों का प्रताप था। केशरादि वटी एक २ गोली सुबह शाम पान में खिलाता रहा। सिरमें मस्तिष्क विनोद तैल लगवाया—और शरीर पर महा लाक्षादि तैल की मालिश कराई। और भी अनेकों प्रयोग थे। वे सब आप उस कामिनी कर्णधार में पाइयेगा जो मैंने आज आपकी नाज़र की है। मगर अच्छी तरह व्यवहार किया जावे तो ये तीन ही काफी हैं।

(बनर्जी बाबू आते हैं)

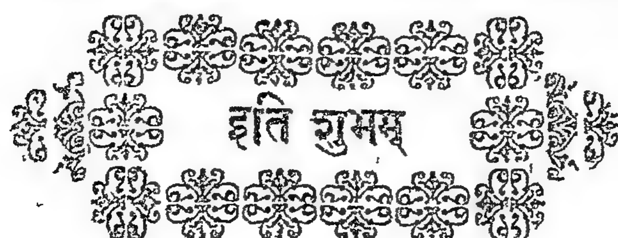
सब—आइये डाक्टर साहब ! आपने उस दिन खूब जवाब दिया।

बनर्जी—जय श्रीकृष्ण ! हामको बड़ा खुशी होता है कि जो हाम बोला रहा ओइ महावीर बाबू कर दिखाया। हाम भी सुना हाय कि ओ दिन से सुकुमारी एकदम हैल्दी (स्वस्थ) हाय। हाम धन्यवाद देता हाय !

धनीराम—मैं आप सर्व सज्जनों को हृदय से धन्यवाद देता हूं जिनकी कृपा से आज यह शुभ अवसर आया है।

सब—साथही जिनके चरणों की कृपा से ऐसे शुभ अवसर मिलते हैं उन सर्वेश्वर भगवान को "कोटानुकोटि प्रणाम है"

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणिपश्यन्तु-न कश्चित्-दुःखभाग्भवेत्



हिस्टीरिया रोग विवेचन

लेखक—श्रीमान् पं० हरिदत्तजी पांडे प्रिंसिपल ललितहरि संस्कृत कालेज पीलीभीत, मेम्बर बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन (यू० पी०)

की अधिकता स्वाभाविक है पित्त की अधिकता में तमोगुण की वृद्धि होनी ही है तमोगुण अधिक होने से सत्व गुण का हीन होना भी स्वाभाविक है। मूर्च्छा पित्त तमः प्राया इस वाक्य से प्रत्येक मूर्च्छा में पित्त का अधिक होना सिद्ध होता है जब पित्त और तमोगुण का प्राबल्य होजाता है इनके प्राबल्य से सत्व गुण हीन होजाता है। ऐसी अवस्था में मूर्छित होजाना स्वाभाविक है इसकी पुष्टि के आचार्यों के वाक्य भी पाये गये हैं। हीनसत्वस्य चापुनः करणायतनेषूग्रा वाह्येष्वाभ्यन्तरेषु च निविशन्ति यदा दोषास्तदा मूर्च्छन्ति मानवाः संज्ञा वहासु नाडीषु पिहितास्वनिलादिभिः तमोऽभ्युपैति सहसा सुख दुःख व्यपोहकृत् सुख दुःख व्यपोहाच्च नरः पतति काष्ठवत् मोहो मूर्च्छेति तामाहुः इस सम्मति के अनुसार भी मूर्च्छा का होना युक्ति युक्त है। यह रोग विशेष कर स्त्रियों को ही क्यों होता है इसका कारण केवल यही हो सकता है कि अग्नि सोमीय द्विविध सृष्टि विभाग के अनुसार स्वभाव ही से पुरुष सौम्य सत्व बहुल और स्त्रियां पित्तात्मक तमोबहुल मानी गई हैं इसी लिए पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को ही यह विशेष होता है। यह भी देखा गया है कि जब स्त्रियों की युवावस्था ढली जाती है अथवा उनके प्रसव (सन्तानोत्पत्ति) होने लगते हैं फिर यह रोग स्वयं निवृत्त होजाता है क्यों कि पूर्वोक्त हेतु अर्थात् युवावस्था की पित्ताधिकता तज्जन्य तमो बाहुल्य के न रहने से इसका स्वयं निवृत्त होजाना सङ्गत ही है। इस युक्ति से भी यह मूर्च्छा ही सिद्ध होती है अतः मेरे विचार से यह हिस्टेरिया रोग मूर्च्छा रोग ही में अन्तर्भावित है।

एक उपयोगी प्रस्ताव ।

हम देख रहे हैं कि भारत में हमारे ऐसे चिकित्सक हैं जिनका चिकित्साव्यवसाय अच्छी तरह नहीं चलता था जो अपनी आमदनी के अनुसार सब खर्च कर देते हैं या अधिक उन्हें मुसीबत के समय या विवाह आदि कार्य के समय बड़ी असुविधा और चिंता होती है अथवा जो धन संग्रह नहीं करते उनकी मृत्यु के बाद उनकी स्त्री बाल बच्चे बड़ी तकलीफ उठाते हैं उनके लिये देश में कोई उपयुक्त साधन नहीं और न उन्हें ऐसे अवसर पर कोई सहायक ही मिलते हैं। हमने अपने नेत्रों से ऐसे चिकित्सक परिवारों को देखा है जो बड़ी मुसीबत में दिन काटते हैं अतः भारतीय चिकित्सकों के लिये आवश्यक कोई ऐसी समिति सङ्गठित नहीं हुई जिससे उन्हें समय पर आसानी से धन मिल सके और वह मुसीबत के समय धन से दुखी न हों। अतः हमारे चिकित्सक विचार करें और लिखें कि हमारा प्रस्ताव कितना उपयोगी है।

हमारा विचार है कि एक "चिकित्सक परिवार सहायक समिति" का सङ्गठन किया जाय और उसमें वार्षिक २) दो रुपये सभासद फीस हो और उसके सभासदों यदि किसी सभासद को विवाह के लिए धन की आवश्यकता हो उस समय उसे धन मिल सके और मृत्यु के बाद उनकी स्त्री पुत्रों को धन मिल सके। इसके सञ्चालक प्रमुख चिकित्सक हों।

प्रस्तावक—वैद्य बांकेलाल गुप्त धन्वन्तरि कार्यालय
विजयगढ़ (अलीगढ़)

हिस्टेरिया विज्ञान

(लेखक—वैद्य भूषण श्यामलाल जी सुहृद एच० एल० एम० एस० सम्पादक सुमार्ग)

हिस्टेरिया—

लेटिन भाषा का शब्द है—आयुर्वेद में इस रोग का नाम " अपतन्त्रक ,, पाया जाता है वंग भाषा में इसको " योषापस्मार ,, कहते है। हिन्दी में वायु गोला और अर्बी में " इख्तनाक उलरहम ,, कहते हैं। हिस्टेरिया को ग्रीक भाषा में " हिस्टीरा , कहते हैं जिसका अर्थ गर्भाशय होता है। जिससे समझा जाता है कि रोग की जड़ गर्भाशय की खराबी है हिस्टेरिया शब्द संस्कृत के " स्त्रीर्या ,, शब्द का अपभ्रंश मालूम पड़ता है। अर्थात् स्त्रियों में अधिक होने वाला रोग कहना चाहिये। आयुर्वेदीय बहुत से वैद्य " अपतन्त्रक वात ,, इस लिये मानते हैं कि मासिक धर्म के बिगड़ने से इस में गुल्म शूलादि की असह्य वेदना होती है जिससे अपतन्त्रक नामक वायु के उपद्रव उठ खड़े होते हैं। हिन्दी वाले वायु गोला या गुल्म इस लिये कहते हैं कि इस रोग में एक गोला पेट नाभि से उठ कर ऊपर गले की तरफ जाता है जिससे बेहोशी होती है लेकिन यह गोला खास खास तौर से १२, १३ वर्ष की स्त्रियों से ही मासिक धर्म की खराबियों से अधिक पैदा होता है यह भी इस रोग को स्त्रियों के लिये प्रधानता देते हैं। अरबी वालों ने भी इसका नाम " इख्तनाक उलरहम,, इस लिये रक्खा है कि यह बीमारी रहम (रजो धर्म) के बिगाड़ों से पैदा होती है वंग देशी वैद्य भी " योषापस्मार ,, स्त्रियों को अधिक होने वाली मृगी कहते हैं जो कि स्त्रियों का रज विकार मासिक धर्म की खराबी से होना मानते हैं। ऐसा ठीक ? लेकिन पुरुषों को भी हिस्टेरिया होता बतलाते हैं, तो क्या पुरुषों को भी गर्भाशय की खराबी हुआ करती है। यदि पुरुषों को मासिक धर्म या गर्भाशय की खराबी नहीं होती तो स्त्रियों के लिये वास्तव में इस रोग की प्रधानता देना ठीक है।

कारण—

यह रोग १२, १३ वर्ष की लड़कियों से लेकर ५० वर्ष की स्त्रियों को होता है, लेकिन इसमें भी युवक अवस्था अर्थात् २०, २५, वर्ष के लगभग अधिक होते देखा गया है। जो कि ऋतु दोष और गर्भाशय के बिगाड़ों से होता है, जैसे मासिक बन्द हो जाना या अधिक आना, गर्भाशय टल जाना, गर्भ रहना, सुहबत की इच्छा मारना, मा बच्चों को ज्यादह दिनों दूध पिलाने से व खून की कमी दिमाग की खराबी तथा पुरुष चाहने की इच्छा को रोकने से होता है गांव वाली स्त्रियों के बजाय शहर वाली अथवा नाजुक मिजाज व ऐशो आराम के ख्याल वाली स्त्रियों को अधिक होता

है जिसकी मा को यह रोग होता है तो लड़की को भी हो जाता है कभी २, घर में एक स्त्री को हो तो दूसरी को भी हो जाता है।

बारी

इसकी बारी अधिकतर में ऋतु, (मासिक धर्म) आने के दिनों में होती है कुछ मिनटों से ३—४ घन्टों तक बारी रहती है फिर किसी किसी को दूसरी बारी भी आती है इस तरह १२ घन्टे से २,३ दिन तक बारी रहती है। लेकिन सोने की हालत में बारी नहीं आती और अधिक बेहोशी भी नहीं होती। बारी के बाद जो थोड़ी बेहोशी होती है, वह हटने लगती है। फिर सिर में दर्द और सुस्ती बनी रहती है और बहुत थकावट मालूम होती है और भूख बहुत समय तक मालूम नहीं होती इस रोग में बहुत काल तक हजार में २ से मौत होती है—इसके लिये निम्नलिखित लक्षण होते हैं।

लक्षण

पेट में दर्द व कम्प होता सा उठ कर गले की ओर आता है गर्मी व खुश्की मालूम पड़ती है रोगी चीख कर ज़मीन पर गिरती है होश में गफलत पड़ जाती है कभी २ हाथ पैर व छाती पीटती है, रोती है, हंसती है, उछलती, कूदती है कुल बदन के बालों को पकड़ने लगती है जिसको बहुत से पुरुष भूत प्रेत की बाधा कहे दिल से समझने लगते हैं कभी मृगी का सा दौरा हो जाता है लेकिन मृगी की भांति बिल्कुल बेहोशी तथा मुंह से झाग नहीं आते नसों में तनाव होता है लम्बी श्वास आने लगती है पेट भारी मालूम पड़ता है।

चिकित्सा

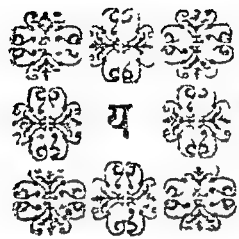
पागलपन अधिक हो तो रोगी को ज़ोर की आवाज़ से धमकावें, और पकड़ कर नाक बन्द करदें, फिर नाक को छोड़दें इससे साफ हवा और अधिक तादाद में मिलेगी और पेट दर्द को भी आराम होगा बेहोशी हटाने के लिये मुंह पर ठंडे पानी के छींटे मारें यदि मुंह भी बन्द हो गया हो तो धार देकर पानी ऊपर से मुंह गर्दन और नाक पर डालें। इससे घबरा कर मुंह खोल देगी तथा वह पहुंचेगी। तंग कपड़े व गहने को अलग करदें तेज़ चीज़ें सुंघावें और साथ में नीचे की दवा का उपयोग करना बड़ा लाभ कारी है—मैंने स्वयं तीन स्त्रियों को जिनकी अवस्था २२,२३ वर्ष की लगभग थी जो कि २ हिन्दू एक मुसलमानी थीं इस रोग से छुटकारा दिया है। यह बिगड़ती हुई सिर से पैर तक नही हो गई थी और इन के पागलपन में किसी तरह की कमी नहीं मालूम पड़ती थी उन को इन उपायों से पूर्ण लाभ हो गया।

बारी के समय लाहौरी नमक और काली मिर्च दोनों को बारीक पीस आंखों में अञ्जन करदें, चूना, नौसादर दोनों को अलग पीस कर डाल पानी शीशी में बन्द करदें और रोगी को सुंघावें २ व ३ रत्ती असली हींग थोड़े से पानी में घोल कर पिलावें। कुछ चैतन्य मालूम पड़ने पर फिर पिलावें। डकार और पेशाब आना इसमें बड़ा लाभ कारी है। हींग इसके लिये उत्तम चीज़ है।

बारी उतरने के बाद अधिक कब्ज जान पड़े तो पञ्च सकार चूर्ण या डाक्टर औषध देकर दूर करें और रोजाना हलका भोजन ठन्डे जल से नहाना, हवा खाना, वरजिश कराना चाहिये और क्वांरी जवान लड़कियों को यह रोग हुआ हो तो उनकी शादी अवश्य कर देनी चाहिये। इति—

योषापस्मार

[लेखक—चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालजी वैद्यराज सम्पादक अनुभूत योगमाला]



द्यपि योषापस्मार—यह कपोल कल्पित नाम विनोद लालसेन महाशय ने अपने आयुर्वेद विज्ञान में दिया है इसके बाद धीरे २ इसका नाम वैद्य समाज में भी होगया। हम उक्त विद्वान के नाम को स्वीकार करते हैं नाम में कुछ बात नहीं वैद्यों को दोष विज्ञान और कारण जानने की आवश्यकता है। अपस्मार और उन्माद प्रायः एक जैसे ही रोग हैं परन्तु अपस्मार में मनुष्य बिलकुल ज्ञान रहित और निश्चेष्ट हो जाता है। उन्माद में मद की हालत होती है कभी ज्ञान कभी मद यह होता है इस लिए योषितोन्माद ही ठीक है अपस्मार और उन्माद सभी स्त्री पुरुषों में होते हैं परन्तु यह एक प्रकार का एक खास रोग है जो प्रायः स्त्रियों में ही होता है इसी को योषापस्मार कहते हैं। इसके उत्पन्न होने के कारण जो भी आज तक हमारे विचार में स्थिर हुए हैं, लिखते हैं ;

स्त्रियां प्रायः स्वभाव से ही कोमल होती हैं इस लिए तनिकसी भी कठिनाई आ पड़ने पर वे एकाएक कि कर्तव्य विमूढ़ होजाती हैं अर्थात् उसे सहन नहीं कर सकतीं इसलिए जब उनका विवाह हो जाता है और वे पति के घर पहुंचती हैं—उस समय अपने स्वभाविक आचरण आहार और विहारों को तथा अपने से विशेष प्रीति करने वालों को न प्राप्त होकर उनका मन उद्विग्न होजाता है। कोई स्त्री मान चाहने वाली कोई विशेष आभूषण और कोई उत्तमोत्तम वस्त्र एवं शृंगार चाहने वाली तथा कोई २ विशेष विलास प्रिय होती हैं जहां उनकी उत्सेक इच्छाओं का विधान होता है और उनके हृदय में उसकी सहन शीलता नहीं होती तो उनके हृदय में एक बड़ी ठेस लगती है। इस कारण ही बहुत सी कम उम्र की लड़कियों को उन्माद होजाता है और वे उन्मत्त (पागल) होजाती हैं और उनको दौड़ा आने लगते हैं प्रायः सुना और देखागया है कि अमुक की नई बहू रोती हंसती है तथा चुपचाप पड़ी रहती है या अट सट बकती है या चुराकर वस्तु खाती है या पाखाना आदि फिर देती है प्रायः भूतोन्माद के लक्षण इसमें मिलते हैं यह शिकायतें प्रायः कम उम्र की लड़कियों में विवाह होनेपर ही देखी जाती हैं उम्र बारह से सोलह वर्ष तक प्रायः स्त्रियों में देवता भी भोग करते हैं।

सोमः प्रथमं विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ।
अग्निस्तृतीयो विविदे तुरीये तु मनुष्यजः ॥

प्रथम सोम स्त्रियों में भोग करता है बाद को गन्धर्व इसके बाद अग्नि और इसके पश्चात् मनुष्यों से भोगित होना चाहिये।

सोमः शौचं ददौ आसां गन्धर्वश्च शुभांगिरम्
पावकः सर्वमेध्यत्वं मेध्या वै योषितो ह्यतः ।

लोम से शोभा सुन्दरता यह प्राय २१ वर्ष से प्रारम्भ हो जाती है इसके बाद गन्धर्व उत्तम बोल चाल और उसमें समर्थन स्मरण शक्ति देते हैं इसके बाद २८ वर्ष के बाद स्त्री मनुष्य के भोगा के लिये हो जाती है—इससे देवताओं के भोगावस्था में स्त्री से भोग करने से भी उन्मादादिक हो जाते हैं।

जितने भी कारण प्रायः हृदय को क्षुभित करने वाले हैं या जितने भी कारण स्त्रियों के मन को दुःख पहुंचाने वाले हैं जैसे पुत्र न होना—योग्य पति न मिलना आदि से भी स्त्रियों को उन्माद हो जाता है।

इनके अतिरिक्त जितने भी हिस्टेरिया(योषापस्मार) के कारण (रोगी) देखे हैं उनमें विशेषकर कुमारी तथा पति छोड़ा या अन्य स्त्री को चाहने वाला या नपुंसक या दूर पढ़ने वाला या दूर देश में रोजगार या नौकरी करने वाला ही होता है इस लिये हम यह कहने को तैयार हैं कि यह योनिगत रोग है यूनानी हकीम भी प्रायः इसे योनिगत मानते हैं और यह काम की ६ छठवीं दशा भी है जैसा कि काम शास्त्र के ग्रन्थ "नागर सर्वस्व" में लिखा है। यथा—

अभिलाषस्तथा चिन्ताऽनुस्मृतिर्गुणकीर्तनम् ।
उद्वेगश्च विलापश्च उन्मादो व्याधिरनन्तरम्‌ ॥
जडतामरणं चेति दशावस्थाः प्रकीर्तिताः
मन्मथार्ते नराणाञ्च स्मरेणाकुलितचेतसाम् ॥

काम ग्रस्त स्त्री पुरुषों की दश अवस्थायें होती हैं १ अभिलाष २ चिन्ता ३ अनुस्मृति (स्मरण) ४ गुणकीर्तन ५ उद्वेग (अस्थिरता) ६ विलाप ७ उन्माद ८ व्याधि ९ जड़ता १० मृत्यु—यह दश दशायें हैं।

जब स्त्री की योनि गत कृमि जो मासिक रक्त स्राव के बाद उत्पन्न होकर एक प्रकार की खुजली पैदा होकर रति के लिये उत्तेजना करते हैं उस समय वह सहवास के लिये पुरुष की चिन्ता करती है यदि उस समय उनकी इच्छा पूर्ण न हो सके तो उनके हृदय में उसका सदमा होता है इस से उन्माद हो जाता है इस रोग का सबन्ध हृदय से ही है मस्तिष्क से नहीं यह मानसिक रोग है अपस्मार मस्तिष्कीय रोग है यही उन्माद और अपस्मार में भेद है इसी लिये चिकित्सकों को उपरोक्त बातों पर भले प्रकार विचार कर चिकित्सा में प्रवर्त होना चाहिये अवश्य वह जल्द लाभ करेंगे—

और भी ऐसे रोग तथा कारण हैं जिन से हृदय के स्पन्दन आदि से सम्बन्ध है उन पर भी विचार कर लेना चाहिये, रक्त वृद्धि तथा ह्रास—अनियमित ऋतु स्राव—पेड़ू का दर्द—जरायुक्षत—आदि आदि।

साधारण चिकित्सा योनि में हय मारादि तैल सेवज्य रत्नावली का और खाने के लिये ब्राह्मी चूर्ण पर्याप्त है तथा कारण हटाने की चिकित्सा करें विशेष जानने के लिये हमारी लिखी स्त्री रोग चिकित्सा तथा सहवास नामक लेख जो वाजीकरण नामक अनुभूत योगमाला का नवम्बर का विशेषाङ्क पढ़ें उस में बतलाया गया है कि स्त्री पुरुषों का परस्पर क्या सम्बन्ध और प्रीति वर्धन में क्या २ अनुष्ठान करना चाहिये जहां रक्त की कमी हो वहां रक्त वृद्धि करने के लिये केशर कस्तूरी-

री-षड्जटा कोमल-अश्वगन्ध-शुद्ध कमल बीज का समभाग का किया हुआ चूर्ण समान भाग मिश्री मिला ३-३ मासा दुग्ध के साथ दें रक्त की कमी होने का प्रधान कारण यकृत और पाकस्थ-की खराबी होती है इस लिये इस की खराबी हटा ने का उद्योग करना यकृत और पाकस्थली की खराबी को दूर करने के लिये मकरध्वज (चन्द्रोदय) एक मात्रा दवा है प्रायः आज कल जो चन्द्रोदय बनाये जाते हैं उन में स्वर्ण नीचे रह जाता है इस लिये चन्द्रोदय सेवन करते समय यह ध्यान में रखना चाहिये कि निम्न बची हुई स्वर्ण की पुनः भस्म करके प्रति तोले में २ मासा स्वर्णभस्म मिला कर और ५६ दिन उत्तम खरल में घोट कर काम में लावें कोई २ विद्वान अपतानक वातरक्त वात व्याधि के अन्दर भी इस रोग को मानते हैं परन्तु मेरी राय से यह योषितोन्माद पृथक व्याधि है-और वात व्याधि उन्माद- अपस्मार-से भिन्न है, जैसा ऊपर वर्णन कर चुके हैं।

इतिशम्।

श्री धन्वन्तरि स्तवन

घनाक्षरी

जटित मुकुट भाल, भूषण वसन आल, श्रीपति सुमुक्त माल, तिलक विराम हैं।
कोटि सूर्य आभाधाम, केस घुघरारे वाम, रूप उजियारे नैन, कुंज खिले श्याम हैं॥
कुण्डल कपोल गोल, लाल अधर सोहैं हँसत अनोखी छटा, मोहे कोटि काम हैं।
चक्र शिवा सोभा पूर्ण, अमृत कलश पाणि, विष्णु भगवान धन्वन्तरि को प्रणाम हैं ॥१॥
काय बाल ग्रह ऊर्ध्व, अङ्ग अष्ट विद्यमान, शल्य को प्रधान उपदेश कर देवने।
छेद्य भेद्य लेख्य वेध्य, स्राव्य सीव्य पथ्य हार्य, अष्ट विध शस्त्र कर्म भेदभरि देवने॥
साल दश स्वहित कारि, एक शत यन्त्र कहि, मण्डलाग्र विंश विध शस्त्र धरि देवने।
धन्व शल्य तन्त्र अन्त पारता दिखाय कर, अन्वर्थक नाम कियो धन्वन्तरि देवने ॥२॥
कैसें मूढ़ गर्भ को निकासें वैद्य वन्ध गण, अश्मरी की सारण की विधि धरि देवने।
जोंफण सुकोश दाम पञ्च अगी वन्ध बहु, नाना विध व्रण कर्म तंत्र करि देवने॥
लिंगनाश नासाधान सर्जरी सिखाय कर, शस्त्र क्षार अग्नि कहे अर्श परि देवने।
धन्व शल्य तन्त्र अन्त पारता दिखाय कर, अन्वर्थक नाम कियो धन्वन्तरि देवने ॥३॥
पूजन करत वैद्य धन्वन्तरि त्रयोदषि, षोडशोपचार पूज धन्यता दिखाई है।
शल्यक शालाक्य तन्त्र सीख जावें वैद्य गण, पूजन प्रमाणता की यही सुघराई है॥
सुश्रुत सुगोपुर सुपौष्कल बन जायें, भारतीय शल्य तंत्र धार चमकाई है।
धन्वन्तरि प्रभो कभी स्वप्न कथा पुरी होवे, शल्य तन्त्र भारती की भारती जगाई है ॥४॥

वैद्य राज हरिशङ्कर शर्मा इरदुआगञ्ज निवासी



हिस्टेरिया बूंटी

लेखक—श्रीमान् डाक्टर इन्द्रदत्त शर्मा राजवैद्य



प्रिय पाठकगण ! मैं आपके सामने एक अद्भुत देशी बूंटी का चमत्कार पेश करता हूं जिसे पढ़ कर आप अवश्य अचम्भे में होंगे, परमात्मा ने हमारे लिये प्रत्येक वस्तु किसी न किसी आवश्यकता के लिये अवश्य उत्पन्न की है, उसका उचित रीति से खोज करना और काम में लाना बुद्धिमानों का कर्तव्य है।

यह बूटी बहुत साधारण सी है जिसके ऊपर आपने शायद ही कभी ख्याल किया होगा कि इसमें कोई ऐसा अपूर्व चमत्कार भी है। इसकी बेल पुराने तालाबों के किनारे पर बहुतायत से मिला जाती है वह तीन प्रकार की होती है।

(१) सफेद फूल की कुछ कालनी रङ्ग लिये हुवे और अन्दर की तरफ फूल गहरा जामुनी रङ्ग पर होता है।

(२) बिलकुल पीले फूल की।

(३) लाल फूल की पत्ते लड़के हरे डंठल शाख तीनों की एक ही समान होती है फूल सफेद

खिलता रहता है ।

मुझको इस का ज्ञान कैसे हुआ पहले यह बतलाना जरूरी समझता हूं ॥

सन् १९२४ में चैत्र का प्रथम दिन था जिस में कि फाग का त्यौहार होता है। (यानी होली से दूसरा दिन) सवेरे ही जब में संध्या तथा हवन से निवृत्त होकर बाहर अस्पताल में आया तो एक मित्र ने इन्कार करने पर भी मुझको थोड़ी भांग (दूधिया) पिलादी, थोड़ी देर में नशा होने लगा मैंने तत्काल अपना शफाखाना बंद कर वा दिया और उठ कर बाहर जङ्गल को चला गया (इस डर से कि आज फाग का दिन है मुझको नशा हो गया है काम कुछ नहीं हो सक्ता और मित्र लोग दिक् करेंगे) वहां पर जङ्गल में थोड़े फासले पर एक शिवजी का मंदिर है मैं वहां जा बैठा नशा इतना तेज होगया कि सारी पृथ्वी तथा वृक्ष आदि घूमते नजर आने लगे, जी मिचलाने लगा तबियत अधिक खराब हो गई नौकर मेरे साथ कोई न था अब मैं परेशान होगया कि क्या करू मकान तक आने की हिम्मत न रही ॥ शिवजी महाराज से प्रार्थना की कि हे कैलाश पती तुम सर्व शक्ति मान हो मेरी रक्षा करो शायद उन्होंने मेरी प्रार्थना पर ध्यान दिया हो मेरी इच्छा हुई कि सामने के तालाब पर जाकर ठंडे पानी का सिंचन किया करूं लेकिन नशा बहुत था मैं तालाब तक तो बड़ी मुश्किल से चला गया परन्तु किनारे पर जाते ही गिर पड़ा जिस जगह से गिरा वहां पर इस बूटी की बेल बहुत थी नशे में मैं इसको ही चाबने लगा थोड़ी देर में ही मुझ को कुछ स्वस्थता हुई मैंने सिंचन किया नहीं की और इसी बेल को चबाना शुरू कर दिया कोई १५ वीं मिन्ट में मेरा नशा बिल्कुल दूर होगया मैं मकान पर आया अब मेरी तबियत बिल्कुल ठीक थी मैंने उस दिन केवल दूध ही पिया खाना बिल्कुल नहीं खाया ॥ अगले रोज से मैं इस बूटी के विचार में लगा कि इसका नाम क्या है मैंने निघन्टु आदि देखे पर कहीं इसका पता न लगा लोगों से पूछा कि इस घास का क्या नाम है और किस काम आता है परन्तु कोई सन्तोष जनक उत्तर न मिला मैं इस बूंटी की गूढ़ परीक्षा में लग गया, संयोग वश मुझको फिर एक अफीम के नशे का रोगी मिला जिसने कि अफीम अधिक खाली थी और हिचकियां तथा अफीम के नशे के उपद्रव बहुत हो रहे थे मैंने तत्काल ही नौकर को भेज कर यह बूटी बहुत सी उखड़वा मगाई और एक औंस इसका स्वरस रोगी को पिला दिया गया कोई १० मिनट में ही वह स्वस्थ हो गया और सब उपद्रव दूर होगये। तब मैंने इस बूटी का नाम विष नाशक बूटी रक्खा कोई साल [illegible]र पश्चात मुझको एक उन्माद का रोगी मिला जो कि धनाढ्य पुरुष था बहुत से सज्जनों (डाक्टरों, वैद्यों, हकीमों) की चिकित्सा हो चुकी थी मैंने भी उसका डाक्टरी (होम्योपैथी) इलाज शुरू कर दिया, ३० दिन तक होम्योपैथी चिकित्सा रक्खी गई परन्तु कुछ लाभ न ज्ञात हुआ, तब मुझको फिर इस बूंटी का स्मरण हुआ मैंने इस रोगी को एक २ औंस स्वरस दिन में तीन मरतबा पिलाया अगले ही दिन हालत में बहुत कुछ फरक होगया १० दिन तक इसी प्रकार चिकित्सा रही रोगी बिल्कुल स्वस्थ होगया अब फिर उसको कभी कोई शिकायत नहीं हुई ॥ तब मुझको यह पूर्ण निश्चय हो गया कि

इस अद्भुत बूंटी में प्रत्येक उन्माद को दूर करने की पूर्ण शक्ति है-चाहे वह किसी प्रकार होवे। परन्तु सोच इस बात का होगया कि इसको हर समय अपने पास कैसे रक्खें ॥ मैंने इसको अपने फार्मी कोपिया में जगह दी इसकी तीन सूरतें बनाई; (१) टिंचर (२) पेटेन्टक—सत (३) पोटास (क्षार) जिनके बनाने की युक्ति भी सेवा में अर्पण है। अब यह हर समय किसी न किसी रूप से साथ में पास ही रहने लगी।

मैंने सहस्रों निम्न लिखित रोगियों पर परीक्षा की निम्न भांति शक्ति पाई जिससे आप स्वयम् विचार लें कि आयुर्वेदिक बूटियों में कितना चमत्कारिक प्रभाव है।

परीक्षा सन् १९२४ से १९३६ तक की

नाम रोग	स्वरस	टिंचर	क्षार	सत	चूर्ण	
हर प्रकार के नशे के उपद्रवों पर	स्वरस से ३०फीसदी	६० फीसदी	८०फीसदी	५०फीसदी	१०फीसदी	
उन्माद पर	१० फीसदी	——	५०फीसदी	३०फीसदी		चूर्ण से वमन हो जाता है
विषैले जीवों के काटने पर	२० फीसदी	८० फीसदी लगाने पर	४०फीसदी	३०फीसदी	१०फीसदी सर्प के काटे पर	
हिस्टेरिया		——	९०फीसदी			
मिरगी पर			२०फीसदी			

इस उपरोक्त व्याख्या से साबित होता है कि क्षार अधिक काम करता है और उससे कम सत तथा टिंचर और इससे कम स्वरस चूर्ण बहुत कम काम करता है बल्कि इससे वमन हो जाता है यह External Use ऊपर लगाने तथा Internal Use खिलाने व पिलाने दोनों तरीके से सेवन कराई गई है॥

पिलाने व खिलाने में स्वरस, टिंचर, क्षार सत तीनों ही काम आसकते हैं परन्तु क्षार अधिक काम करता है और ऊपर लगाने में टिंकचर. क्षार (पानी में गाढ़ा २ घोल कर) लगाने में टिंचर अधिक काम करता है।

सब से अधिक इस बूंटी का प्रभाव हिस्टेरिया पर हुआ है इस लिये इसको हिस्टेरिया की बूंटी कहा जाय तो अनुचित न होगा।

अवगुण—चूर्ण के देने से कै आने लगती–

है, और हालतों में भूक कम हो जाती है, मूत्र अधिक आने लगता है (परन्तु शर्करा नहीं होती) मसाने के काम में भी शिथिलता हो जाती है। इस लिये जब रोगी रोग मुक्त हो जावेतो इसका व्यवहार तत्काल बन्द करदे अधिक दिनों तक सेवन न करावें।

नोट—शीत ऋतु में स्वरस न दें, क्षार, टिंचर या सत ही देवें। क्षार में अवगुण कमहोते है। क्षार का वर्षा ऋतु में हवा लगने से पानी हो जाता है।

बनाने की विधि

स्वरस—गीले पत्तों को कूट कर वस्त्र में छान लें॥

Extract सत—इस बूटी को सर्वांग (फूल, पत्ते, डठल आदि) लेकर गीली को किसी चीनी या पत्थर के खरल में कूटलें और एल्कोहल (६० फी सदी) से पर कोलिट करलें फिर इसको सात दिन बाद छान कर (फिल्टर करके) स्प्रिट लैम्प पर इतनी हरारत दें और इतना उड़ावें कि एक मुलायम रुब बन जावे।

(नोट) —जब बूटी कूट लें तो उसको किसी चौड़े मुह की शीशी में डालदें और एल्कोहल (६० फीसदी) की उस बूटी के तोल से दुगनी उस शीशी में डाल कर कार्क मजबूत लगा कर सात दिन तक छोड़दें बाद को फिल्टर करके रुब बनावें॥ मात्रा १ ग्रेन से ३ ग्रेन तक अवस्थानुसार

टिंकचर — उपरोक्त प्रकार का Extract रुब या सत एक औंस कोएल्कोहल (६० फी सदी) १८ फ्लूड औंस में खूब हल कर लें जब खूब हल हो जावे तो एल्कोहल (६० फी. सदी) की इतनी मिलावें कि सब तोल पूरा एक पाइन्ट हो जावे॥

मात्रा २० बूंद से ६० बूंद तक अवस्थानुसार स्वच्छ पानी में मिला कर Potasium क्षार— जवाखार की तरह क्षार बनालें क्षार विधि साधारण ही है॥ मात्रा १ ग्रेन से ३ ग्रेन तक अवस्थानुसार

मैंने इस बूटी के प्राचीन शास्त्रोक्त नाम के लिये बहुत छान बीन की बहुत से निघन्टु तथा बूटी दर्पण आदि पुस्तकों में ढूंढा परन्तु कहीं भी पता नहीं मिला क्या कोई वैद्य महाशय या विद्वान सज्जन इसका प्राचीन शास्त्रोक्त नाम प्रमाण सहित धन्वन्तरि द्वारा बताने की कृपा करेंगे।

विद्वानों से प्रार्थना है कि वह भी इसकी यथा शक्ति परीक्षा करें।

आशा है कि सर्व सज्जन इस लेख से अधिक लाभ ग्रहण करेंगे, रोगी जनता के उपकारार्थ मैंने यह आपकी सेवा में पेश की है।



औषधि संग्रह—लेखक—स्वर्गीय डाक्टर वामन देसाई, एल० एम० एस० बम्बई। प्रकाशक आयुर्वेदाचार्य श्रीमान् पं० जादवजी त्रिकमजी आचार्य लक्ष्मीनिवास कालवा देवी रोड बम्बई। साईज १८। २२ अठपेजी पृष्ठ संख्या ८८० । छपाई सुन्दर और शुद्ध, जिल्द उत्तम मूल्य १०) दस रुपये।

यह पुस्तक मराठी भाषा में बड़ी योग्यता से लिखी गई है पुस्तक को आयुर्वेदीय वनस्पति निघण्टु कहना तद्रूप होगा। इसमें करीब एक हजार औषधियों का संग्रह है। लेखक ने बड़े परिश्रम से प्रत्येक वनस्पति के संस्कृत, हिन्दी, मराठी पञ्जाबी बंगला, गुजराती, सिन्धी, सिंगाली, तामील, कर्नाटक, तेलङ्गी, अंग्रेजी भाषा के नाम दिये हैं साथ ही उनके स्वरूपों का विस्तार से वर्णन किया गया है, गुण और उपयोग का भी समावेश है। बड़े खूब कुशल और गवेषण के साथ हुआ है। मराठी जानने वाले वैद्यों के बड़े काम की पुस्तक है। ऐसी पुस्तकों की हिंदी भाषा में बड़ी कमी है यदि इसका अनुवाद हिंदी भाषा में होजाय तब हिंदी भाषा की यह कमी पूर्ण होजाय और पुस्तक का मान भी सब प्रांतों में होजाय आशा है कि प्रकाशक महोदय ऐसा प्रयत्न कर हिंदी भाषा भाषियों के ऊपर महान उपकार करेंगे।

चारु चिकित्सा—लेखक—श्रीमान् वैद्य गोपीनाथजी भिषग्रत्न, सम्पादक आरोग्य दर्पण. प्रकाशक—स्वास्थ्य सदन हल्दौर जिला बिजनौर। धन्वन्तरि साईज के १०४ पृष्ठ मूल्य ॥)

धन्वन्तरि के पाठक उक्त लेखक—महोदय से अच्छी प्रकार परिचित हैं आपकी लेखन शैली उत्तम और कामकी होती है। आप चारु चिकित्सा का प्रथम खण्ड पूर्व प्रकाशित कर चुके हैं यह पूर्व

खण्ड अब प्रकाशित किया है। इसमें ४ अध्याय हैं, प्रथमाध्याय में स्वस्थ, रोग, रोग के भेद निदान, त्रिदोष मीमांसा, साध्यासाध्य, काल ज्ञान रोग परीक्षा के साधन आदि द्वितीय अध्याय में चिकित्सा सिद्धांत, पदार्थ विज्ञान औषधि सेवन का समय, अनुपान, पथ्यापथ्य, आदि तृतीयाध्याय में शोधन के अर्थ पञ्चकर्म जलौका, धूमपा नादि। चतुर्थाध्याय में सन्ताप हटाना, सेंकना पलस्तर, आदि विधि वर्णित है। पुस्तक बड़ी उत्तम और संग्रह करने योग्य है।

मूत्र परीक्षा—लेखक, प्रकाशक, श्रीमान कविराज शिव शरणजी वर्मा भिषगाचार्य फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट) साईज २०। ३० सोलहपेजी पृष्ठ संख्या ६१ मूल्य १)

इस पुस्तक में पाश्चात्य मतानुसार मूत्र की परीक्षा का वर्णन किया गया है वर्णन अच्छा और वैद्यों के लिए बड़ा उपयोगी हुआ है जो वैद्य डाक्टरी ढङ्ग से चिकित्सा करते हैं वह इसके द्वारा मूत्र की डाक्टरों के समान परीक्षा कर सकते हैं। हम ग्राहकों से अनुरोध करते हैं कि वह इसकी एक २ प्रति खरीद लेखक के श्रम को सफल करें।

विशेषांक वाजीकरण—इस अंक के सम्पादक श्रीमान् पं० परशुराम जी शास्त्री विद्यासागर, प्रकाशक—श्रीमान् चिकित्सक पण्डित विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज बरालोकपुर इटावा। वार्षिक मूल्य ३)

अनुभूत योगमाला, नामक जो पाक्षिकपत्र प० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता है उसका यह वाजीकरण विशेषांक है। किंतु इसमें काम शास्त्र सम्बन्धी अनेक विषय नपुंसकता, स्तम्भन आदि के प्रयोग होने से यदि हम इसे काम शास्त्र की एक पुस्तक कहे तो अति युक्त न होगी। जो नवयुवक काम शास्त्र की तलाश में रहते हैं और विज्ञापनी काम शास्त्रों से ठगे जा रहे हैं उनको इसे अवश्य देखना चाहिये इसमें विद्वानों द्वारा लिखित अनेक अनुभूत प्रयोग भी हैं। विशेषांक उत्तम और सर्व साधारण के संग्रह योग्य है।



अनुभूत चिकित्सा क्रम

हिस्टेरिया रोग पर निम्न लिखित औषधियां मेरी विशेष परीक्षित हैं यदि साथ ही साथ मनोविकार को भी शांति करने वाले उपाय किये जायं तब अति शीघ्र लाभ होता है।

प्रातः और सायं काल—वात कुलान्तक रस १ रत्ती, ब्राह्मी के जल के साथ।

प्रातः ९ बजे और कल्याण घृत या पंच गव्य घृत, दूध के साथ।

भोजन के बाद—सारस्वतारिष्ट दो दो तोला।

शरीर में मालिश करने के लिये—हिम-सागर तैल या नारायण तैल लेना चाहिये

पं० सूर्यनारायण वैद्य, भिषगाचार्य

मूर्छा निवारणार्थ अञ्जन

काली मिर्च, सहजने के बीज, वाय विडंग अफीम, महुआ के फूल, यह सब औषधियां समान भाग ले पानी के साथ मर्दन कर गोली बनाले और आवश्यकता पड़ने पर १ गोली पत्थर पर घिस कर सलाई से नेत्रों में लगावे तो हिस्टेरिया जनित मूर्छा दूर हो।

पं० दयालुचन्द्र पं० उत्तमचन्द्र मेंड़ा वैद्य।

मूर्छा हर नस्य

नागफनी, पीपर छोटी, कायफल, औंगा के चावल, यह सब समान भाग ले चूर्ण बारीक कर कपिला गौ के मूत्र में मिला पांच २ बूंद नाक में टपकाने से तत्काल मूर्छा दूर होजाती है। प्रति दिन, दिन के तीसरे पहर नस्य देने से दौड़ा नहीं होता।

वै० शास्त्री रामप्रसाद शर्मा

मूर्छा हरि धूप

उल्लू, बिल्ली, काक, तोता इनमें से जिनकी प्राप्त हो सके वीट (मल) ले उसमें उसके ही समान घी और जौ मिलाकर अग्नि पर धूप देने से हिस्टेरिया जनित मूर्छा दूर होजाती है।

वैद्य शास्त्री रामप्रसाद शर्मा

हिस्टेरिया नाशक योग

यह प्रयोग मेरा अनेक बार का परीक्षित है वह कभी निष्फल नहीं हुआ पाठक इसे व्यवहार में ला परीक्षा कर धन्वन्तरि में अपना २ अनुभव प्रकट करावें।

प्रयोग—शुद्ध कुचला १ तोला, मल्ल चन्द्रोदय १ तोला, केशर असली १ तोला, कस्तूरी १ माशा सबको खरल में डाल पावभर पान का स्वरस थोड़ा २ डाल मर्दन करे जब सब अर्क खुश्क हो होजाय तब दो दो रत्ती की गोली बनाले। व्यवहार—एक गोली प्रातः और एक गोली साय काल सारस्वतारिष्ट ६ माशे अश्वगन्धारिष्ट १॥ तो० में मिला ऊपर से पीवे शिर से ब्राह्मी घृत की मालिश करावे।

वैद्यशास्त्री ओंकारनाथ गोभिल

सुजाक पर

नई रेवतचीनी—३ तोला

नया मोचरस—३ तोला

करेंटी के बीज—३ तोला

मिश्री — ६ तोला

विधि—इन चारों को कूट पीस छान ३२ मात्रा बनालें।

समय प्रातः सायम्

अनुपान धारोष्ण दूध

गुण—इसके २१ दिन सेवन करने से सुजाक समूल नष्ट होगा।

पं० रामेश्वर शर्मा वैद्य

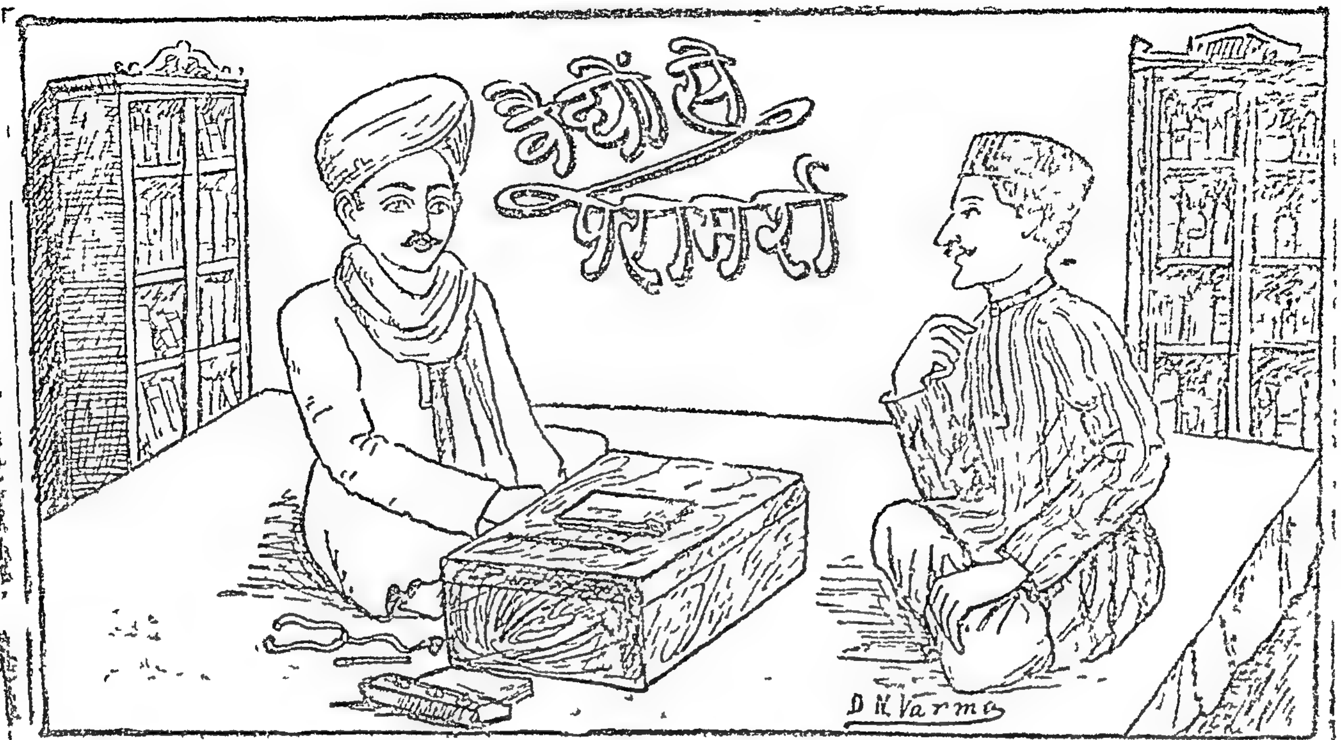
पौष्टिक पाक

सिद्ध मकरध्वज ६ माशे। अकरकरा और केशर नौ२ माशे। बंगेश्वर १ तोला, लता कस्तूरी और लवङ्ग डेढ़ २ तोला, शुद्ध शिलाजीत ३ तोले, छोटी इलायची का दाना, जायफल और जावित्री तीन २ तोले। असगन्ध और श्वेत मुसली दश २ तोले, गरी एक पाव, अखरोट और पिस्ता डेढ़ २ पाव, चांदी का वर्क १०० नग, घी एक सेर, बादाम तीन सेर, मिश्री ५ सेर, गो दुग्ध ८ सेर, पहले अकरकरा, लता कस्तूरी, लवंग, इलायची, जायफल, जावित्री, असगन्ध और मुसली को कूटकर कपड़छान चूर्ण बनाले। गरी, अखरोट और पिस्ता को साफ करके महीन कतर कर रखलें बादाम फोड़ कर छिलका दूर करके श्वेत बीजियों को दूध के साथ सिल पर महीन पीस पिट्ठी बनावे। दूध को कड़ाही में डाल मध्यम आंच से पकावे और खुरचनी से बराबर चलाता रहे। जब वह गाढ़ा होजाय तब उसमें बादाम की पिट्ठी और एक पाव घी डाल कर मन्द आंच से भूने। रंग निखर जाय और सुगन्धि आने लगे तब नीचे उतारले। इसी प्रकार अखरोट, गरी, और पिस्ते को भी घृत के साथ थोड़ा भून लेना चाहिये, फिर मिश्री की गाढ़ी चाशनी करके नीचे उतार उसमें खोवा मिलाकर एक दिल करे। औष-धियों का चूर्ण, चांदी का वर्क और मेवा भी

मिलादे। मकरध्वज, केशर और शिलाजीत को अलग २ गुलाब जल में घोटकर मिलादे। शीतल होजाने पर हाथ से मसल कर तीन २ तोले का लड्डू बनाले। कोष्ठ शुद्धि के अनन्तर दोनों समय एक २ लड्डू पके हुए पाव आध सेर दूध के साथ खा जावे, चालीस दिन इसी प्रकार सेवन करने से वीर्य की वृद्धि होती है। शरीर पुष्ट होकर कांति और बल बढ़ता है प्रमेह आदि धातु सम्बन्धी समस्त दोष इस तरह नष्ट होजाते हैं जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार का नाम नहीं रह जाता। परन्तु औषधियां वीर्य हीन संग्रह करने से यथार्थ गुण नहीं प्रकट होसकता अतएव प्रत्येक द्रव्य शुद्ध और वीर्यवान लेना चाहिए।

वीर्यवर्द्धक चूर्ण—असगन्ध, विधारा और श्वेत० मुसली एक २ पाव, मिश्री डेढ़ पाव, सब कूट कर कपड़छान चूर्ण बनाले। मात्रा छै माशे से एक तोला पर्यन्त दोनों समय खाकर ऊपरसे पावसर पकाया दूध पीजावे। इसी प्रकार तीन मास सेवन करने से धातु वृद्धि होती है और शरीर में बल बढ़ता है। प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष आदि इसके प्रभावसे नष्ट होजाते हैं।

प्रेषक—पं० महावीरप्रसाद मालवीय वैद्य



संख्या १

मेरी आयु ३२ वर्ष की है और ६ वर्ष से रोगी हूं। सम्वत् १९७५में ज्वर आया था और कुपथ्य के कारण ६ महीने में नष्ट हुआ उसके बाद "मन्दाग्नि" हो गई जिसके लिये वैद्यों ने हिंगाष्टक चूर्ण, लवण भास्कर, पञ्चसकार, चित्रकादि और बहुत से चूर्ण सेवन कराये मगर फिर भी लाभ न हुआ। और यह शिकायत बनी रही कि दस्त साफ न हो और भूख लगे नहीं तब १ तोला सनाय रात्रि को औटा कर दूध मिला कर सेवन की जाय तब प्रातः दस्त हो ऐसी हालत कुछ दिन चलने के बाद वैद्यों ने कहा कि सनाय बन्द कर दो तुम्हें प्रमेह हो गया है पर मैंने दवा कोई न खाई और सनाय भी छोड़दी उसके बाद १ वर्ष तक स्वस्थ तबियत ठीक रही और चित्त प्रसन्न रहा और विवाह भी होगया। उसके बाद फिर मलावरोध होने लगा तब फिर वैद्यों ने पुष्टिकारक बल वर्धक चूर्ण, पाक, कुश्ता वगैरह सेवन कराये पर लाभ न हुआ और वैद्यों ने कहा कि यह वातज प्रमेह है यह असाध्य होता है और जब तक औषधि सेवन करोगे तब तक लाभ रहेगा बाद को फिर वैसे ही हो जाओगे इससे मैं निराश हो कुछ सुधारक कम्पनी मथुरा, डाक्टर रामानन्द जगाधरी, हिन्दुस्तानी दवाखाना देहली, अनूपशहर के वैद्यों की औषधियां सेवन कीं पर लाभ न हुआ।

वसन्त कुसुमाकर, चन्द्रप्रभा, अभयारिष्ट, द्राक्षासव, वगैरह भी सेवन किये पर लाभ न हुआ इस लिये अब वैद्य, डाक्टर, और हकीमों से प्रार्थना है कि कोई अनुभूत और लाभप्रद औषधि प्रकट कर पुण्य और यश के भागी हो मुझ ब्राह्मण को जीवनदान दें।

इस समय अन्न एक पाव भी नहीं पचता भूक लगती ही नहीं, दस्त साफ नहीं होता पेट हर समय भरा हुआ मालुम होता, चित्त व्याकुल रहता है शुक्र पतला है, कामेच्छा पूर्ण रूप से नहीं होती, शिर में भारीपन रहता है और कभीर दर्द भी होता है, कमर में दर्द हो जाता है कान में दर्द हो जाता है, कुछ कम सुनाई देता है, करीब २ वर्ष से कान में सांय २ होती रहती है. दांत डाढ़ में कीड़ा लग गया है और दर्द रहता है, मसूड़ों से खून निकलता है. सर्द चीज सर्दी और गरम चीज गरमी करती है। पढ़ने लिखने से चक्कर आ जाता है आंखों के सामने अंधेरा सा रहता है, स्मर्ण शक्ति नष्ट हो गई है चित्त में बुरे २ विचार उठते हैं मैंने सब स्पष्ट हाल लिख दिया है अब महानुभावों से पुनः प्रार्थना करता हूं कि मुझे आरोग्यता प्रदान कर कृतार्थ करें।

पं० श्रीदेवशर्मा—नाथ

संख्या २

आयु ४५ वर्ष की है, नाभि के नीचे हमेशा भारी रहता है, दबाने से आवाज आती है, दस्त साफ नहीं होता, दस्त होने पर भी उदर भारी र- हता है समय पर भूख नहीं लगती. वीर्य्य पतला है, पेट भारी रहता है, जिगर भी बढ़ा हुआ है, ए- क नहीं बनता अनेक औषधियां सेवन की पर ला- भ नहीं होता, गरम दवा, गरमी करती है और रू- क्षता लाती हैं। आशा है कि विद्वान, अनुभवी वैद्य अनुभूत प्रयोग लिख कृतार्थ करेंगे।

मुंशी बाबूलाल हैडमास्टर

संख्या ३

बाँये तरफ पसुल में ४ बजे से दर्द होता है और आठ बजे रात तक रहता है। और इतने समय में पेशाब भी पीला होता रहता है। जिस समय बादल होते हैं उस समय दर्द ज्यादा होता है। रीढ़ में भी दर्द होता है। पसली और कूख में भी कभी २ दर्द होता है। बादल जब अधिक उठते हैं तब बड़ी वेदना होती है शरीर से चिनगारी सी निकलती मालूम होती हैं। पेशाब उस समय पीला हो जाता है। ... वैद्य महानुभावों से प्रार्थना है कि यह कौन सा रोग है और उस के लिये अनु- भूत औषधि कौन सी है कृपया लिख कृतार्थ की- जिये।

भैरोंप्रसाद मास्टर

संख्या ४

पीव या दाद क्या है? इस को अच्छी तरह समझाने की कृपा करें। मैंने दानापुर के कई वैद्यों महाशयों से पूछा किंतु सन्तोष जनक उत्तर नहीं मिला। आशा है कि वैद्य महानुभाव स्वमति लिख कृतार्थ करेंगें।

मोहनलाल, मेहरा

संख्या ५

एक बालक की अवस्था ८ वर्ष के अनुमान है, मुख से लालास्राव अधिक होता है और वाड़ी साफ नहीं उच्चारण करता, कोई २ वाक्य साफ बोलता है (तोतलापन है) बुद्धिमन्द है प्रकृति कफज है। गत अषाढ़ से यह रोग हो गया है कि गर्दन एक तरफ को टेढ़ी करता है और एक टक से देखने २ गिर पड़ता है कभी २ नहीं गिरता। गिरने पर बेहोशी होती है पर शीघ्र ही चेतन्यता हो जाती है। मुख से फेन वगैरह नहीं गिरते दांत भी नहीं बैठते। कभी २ दिन में ३–४ बार आक्रमण हो जाते हैं। और कभी नहीं होता जब विशेष वेग होता है तब आंख मुख बिलुस

होजाते हैं। पैर, हाथ, शरीर कांपने लगता है। यह कौन रोग है मूर्च्छा है या कृमि जन्य कोईरोग है। वैद्य महानुभाव अपनी २ शुभ सम्मति लिख कृतार्थ करें।

बाबू छेदीसिंह वैद्य

संख्या ६

एक लडके की आयु ८ वर्ष की है, शरीर-भारी और रङ्ग गेंहुआ है जिसकी जवान से शुद्ध और साफ उच्चारण नहीं होता और गलेसे आवाज रुक रुक निकलती है और 'ड़ाढ़' को र कहता है अतः वैद्यवरों से प्रार्थना है कि अनुभूत प्रयोग लिख आभारी करें। वैद्य लक्ष्मणप्रसाद शर्मा

संख्या ७

एक मनुष्य के पोतों में खारिस्त है कई औषधियां दी हैं पर लाभ नहीं इसके लिये भी अनुभूत प्रयोग लिखने की कृपा करें।

वैद्य लक्ष्मणप्रसाद शर्मा

संख्या ८

एक स्त्री जिसकी आयु २२ वर्ष की है शरीर से ठीक है और मासिक धर्म भी समयपर ठीक हो जाता है। एक वर्ष पहले उसे ज्वर आया था और डाक्टरी दवा दी गई थी और आराम भी होगया था पर जब से ही उसे हिचकी आती है। हिचकी दिनको आती है। रात को नहीं। हिचकी दो दो घन्टे के अन्तरसे और एक वार में पांच २ सात २ आती हैं हिचकी सालभर से आरही हैं। रात को निद्रा आजाने पर कभी हाथ को कभी पैर को थोड़ा २ हिलाती है यानी चमकने के मुआफिक यह आदत भी सालभर से है और अभी तक कोई इलाज नहीं कराया गया। कभी २ सफेद प्रदरकी भी शिकायत होजाती है और कोई शिकायत नहीं है। वैद्य महाशय दवा बताने की कृपा करें।

एक ग्राहक

संख्या ९

पारद और गन्धक की कज्जली को फिरसे जीवित पारदका रूप किसी प्रकार दिया जासकता है। ऐसी अवस्थामें जहां कज्जली व्यवहार होता है वहां कच्चा पारद ही हुआ। यह कच्चा पारद समयांतर में हानिकर है या नहीं। किन्हीं २ चिकित्सकों से मैंने सुनाहै कि कज्जली मिश्रित औषधि से समयांतर में हानि होना आवश्यक है। कृपा कर इस पर अपना मत वैद्य महोदय एवं सम्पादक लिखने की कृपा कर भ्रम को दूर करें। पारद गन्धक के स्थान में हिंगुल दिया जासकता है या रस सिंदूर।

राजेन्द्र शर्मा

संख्या १०

(क) सविनय प्रार्थना है कि मेरे मित्र की स्त्री अत्यन्त दुष्टा है किसी प्रकार से भी वह पति पर हर्ष नहीं प्रकट करती इस लिये जिन सज्जनो को वशीकरण अनुभव किये हों वही प्रयोग लिखने की कृपा करें।

(ख) कुचिमार तन्त्र में लोमशातनम् में जो वरार तैल, खरी का दूध और वशीकरण वन्धन में मन्दकीट, सारिलता, जो लिखी हैं इन चारों की पहिचान और मिलने का पूरा २ पता तथा मूल्य लिखें। सम्पादक भी ध्यान दें।

यमुनाप्रसाद कान्कू

संख्या ११

(क) अम्बर क्या एक ही स्वतन्त्र वस्तु है या अन्य पदार्थों द्वारा तैयार होता है। इस की पैदायश कहां होती है क्या आयुर्वेद में इस का वर्णन है ? किन २ रोगों में दिया जाता है अनुपान

सहित लिखें तथा उत्तम विश्वास योग्य कहां और किस भाव मिलता है।

(ख) धन्वन्तरि भाग ५ अङ्क ११ सम्मति नं० ७ में आरोग्य वर्धिनी वटी सेवन करना लिखा है। अतः प्रार्थना है कि उस का पाठ (नुकसा) विधि सहित लिखने की कृपा करें।

(ग) श्रीमान् राम लाल शर्मा वैद्यशास्त्री जी महाविषगर्भ तैल योगरत्नाकर का पाठ प्रकाशित करें।

(घ) कुचिला पाक (वाजी करणाधिकार) की अनुभूत विधि लिखने की कृपा करें।

ग्राहक नं० १० क शारदा घडा

संख्या १२

क—लोह भस्म में, क्या बांटने योग्य सब ही प्रकार की औषधियां घोटी जा सकती हैं ? यदि नहीं तब क्यों ? तथा कौन २ सी घोटी जा सकती है? इनमें ना किसी औषधि का भी जाहेर भस्म में कूट सकते हैं ? लिखिये कृपा होगी।

ख—आयुर्वेदिक एड हामियोपैथिक कौलेज अलीगढ़ के विषय में विद्वान वैद्यगणों का कैसा मत है यह संस्था कैसी है? यहां पढ़ाई कैसी होती है ? सब वृतान्त लिखने की कृपा करें।

ग—एक ऐसा योग लिखने की कृपा करें–जिस से रोगिणी स्त्रियों को मासिक धर्म के समय जो कष्ट होता है या आर्तव कम आता है, आर्तव का रङ्ग ठीक न होना, कमर जांघ या जोड़ों में दर्द होना आदि सब विकार नष्ट कर सके यदि एक योग से काम न चले तब अधिक हों।

घ—गर्भाशय पुष्टकर कौन औषधि–सर्वोत्तम है। योग परीक्षित हो।

ग्राहक नं० १३१ कृष्णापुर (सोनामण्डी)

संख्या १३

एक मास से एक रोगिणी मेरे औषधालय में भरती हुई है उस का रोग वर्णन निम्न है। वैद्य महानुभाव अपनी सम्मति लिख अनुग्रहीत करें गत एक वर्ष से उसे मासिक धर्म नहीं हुआ इस में स्त्रियों को गर्भ का सन्देह रहा जब १२। १३ महीने व्यतीत हो गये तब उसे अकस्मात पैरों में शोथ प्रकट होगया। शोथ लेपादि करने से जाता रहा। अब योनि मार्ग से श्वेत धातु ६। १० महीने से स्राव होता है जैसा कि–माधवाचार्य्य ने लिखा है " आमं सपिच्छा–प्रतिम सशंङ्कु पुलाक तोय प्रतिम कफात् । तथा रुक्षारुणफेनिल मल्प मल्प वातार्ति वातात्पि शितोद्रुकमम् „ उपरोक्त लक्षणानुसार कामिनी कर्णधार द्वारा लिखित सफेद सुर्मा शोधित शहद युक्त सेवन करा रहा हू परन्तु कोई लाभ देखने में नहीं आया। यह रोगिणी एलोपैथिक औषधियाँ सेवन करती २ हताश हो गई है। रोगिणी निर्धन होने के कारण हमने भरती करली है।

लाला नन्दकिशोर कुमोचक

संख्या १४

चि० बिहारीलाल आयु २६—३० वर्ष की है इसको करीब २॥ वर्ष पहले मधुरा हुआ था उसम उठने पर इसे पुष्टी आनेके लिये अभ्रकभस्म रौप्य भस्म, प्रवाल भस्म, कांतीलोह भस्म, आदि लड्डुओं में मिलाकर दिया गया जिससे थोड़ी शरीर में दाह होगया बाद शरीर में नाताकती आने लगी वीर्य पतला गया कुछ दिन बाद थोड़ा जीर्णज्वर भी हुआ साधारण औषधि चलती रही साथ में खांसी भी होगई प्लीहा का प्रादुर्भाव हो गया बाद कुछ दिन औषधि सेवन करने से प्लीहा

वगैरह मिटगया धातु भी थोड़ी ठीक होती चली परन्तु खांसी में बिलकुल आराम नहीं हुआ वह दिनो दिन बढ़ता ही गया।

अभी उसकी हालत–

खांसी आती है तब खूब आती है कफ भी पतला कभी गाढ़ा सफेद (बहुतांश पतला) गिरता है कभी तो थोड़ी खांसी के साथ कभी बहुत देर खांसने से कफ गिरता है अभी दिनों दिन खांसी बढ़ती जाती है आंखें मैली रहती हैं दांत भी मैले हैं शरीर दिनो दिन कृश होता जाता है। भूख कम लगती है पचन क्रिया बहुत मन्दी है। सदा सरदी के अमल काला मालूम होता है यानी जब खांसी जोर में रहती है नाक भी शुद्ध रहती है

इसको प्रकृति में यहाँ पर कोई कोई उष्ण बात बतलाते हैं वैद्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह योग्य निदान तथा इलाज भी लिखियेगा।

ईश्वरदास ताराचन्द मु०पो०डखरी

संख्या १५

माननीय महोदय वैद्य वृन्दों मैं बहुत समय से रोगी हूं और मैं अपने रोग के पूरे २ लक्षण लिखता हूं आशा है आप लोग निदान करके मेरे लिये उचित परामर्श देंगे। सन् १९१६ से पहिले ५ या ६ साल तक प्रमेह रोग रहा, जो कि कुश्ता के इस्तेमाल करने से जाता रहा। सन् १९१६ में शर के कुल हिस्से में दर्द हुआ जो कि १५ दिन तक रहा सन् १९१८ में फिर शुरू हुआ जो कि दश पन्द्रह दिन औषध सेवन करने से जाता रहा सन् १९२० में रक्त विकार में ग्रसित रहा अगस्त सन् १९२२ में एक दौरा मूर्छा रोग का हुआ, जिसके होने से ऐसा मालूम होता था कि तमाम चीजें आस पास की घूम रही है और पसीना ज्यादा आने लगा और शरमें कमजोरी और थकान ज्यादा मालूम हुई यह हालत दो एक रोज रही–

अक्टूबर सन् १९२१ में शर का आध हिस्से में दर्द का दौरा हुआ जो कि ८ दश दिन तक रहा। दिसम्बर १९२१ में चक्कर का दौरा ४ दिन तक रहा और उसमें ऐसा मालूम होता था कि शर में कोई चीज घूम रही है और उसके असर से गिरा जाता हूं। मार्च १९२३ में शर का सूक्ष्म दौरा हुआ, जून सन् १९२३ में सर दर्द का वही सूक्ष्म दौरा हुआ, फरवरी सन् १९२४ में मूर्छा का दौरा हुआ जिसमें एकदम खड़ा था, गिरगया, कमजोर और थकान और इस दौरे का असर १५ दिन तक रहा, १९२४ में फिर वही सर दर्द का दौरा हुआ जो कि पहले सब दौरों से कठिन था और इसका असर १५ दिन तक रहा–

१५ अगस्त से लेकर १५ अक्टूबर तक २ महिने बराबर कुछ चक्करों का दौरा रहा। जनवरी सन् १९२५ में वही सर दर्द का दौरा हुआ जो कि कठिन था और १५ दिन तक रहा फरवरी सन् १९२६ में दौरा हुआ वह हलका था अप्रैल सन् १९२६ में सर दर्द का दौरा बहुत हलका हुआ जो कि हफ्ते तक रहा, फरवरी १९२७ में सर दर्द का दौरा पिछले सब दौरों से ज्यादा कठिन रहा और किसी २ दिन सोते वक्त तक वह नहीं होता था। जौलाई सन् १९२७ में सर दर्द का दौरा हुआ जो कि पहिले दौरे से हलका था और दौरे की तेजी की हालत में पेशाब कुछ २ सर दर्द से आता था, यह विशेष कष्ट इसी दौरे में हुआ है। २३ दिसम्बर १९२५ से लेकर अबतक चक्कर हर वक्त रहते हैं यानी सर में कोई चीज घूमती सी या सर की नसें

घूमती सी मालूम होती हैं जिसके असर से चलने फिरने में पैर कहीं का कहीं पर पड़जाता है और टांगें कांप जाती हैं और बटे ५ भी सर के बाईं तरफ यानी जिस तरफ कि दर्द होता है झोंके से आजाते हैं और रात को सर की नसें घूमने से नींद नहीं आती. एक साथ चौंक पड़ता हूं गर्मी और वर्षा में शिकायत ज्यादा आती है और नींद कम आती है दिल धड़कन की शिकायत भी अबकी बार हुई है।

दौरे के लक्षण

प्रातः ४ बजे से बाईं तरफ के भौं में कुछ भारीपनसा मालूम हुआ करता है और बाईं आँख में और दस के नीचे तक जलन सी मालूम हुआ करती है और सर के आधे हिस्से में यानी बाईं तरफ की कनपटी में धीरे २ फैल जाती है और दर्द की तेजी की हालत में ऐसा मालूम होता है कि कोई कीड़ा सा जल्दी २ चलता या कोई कांटा सा दर्द में चुभता मालूम पड़ता है दर्द की तेजी खास तौर से प्रातः ८ बजे से मध्यान्ह १२ बजे तक रहती है और किसी दिन सायङ्काल को भी होता है १ हफ्ते तक दर्द बढ़ता चला जाता है दूसरे हफ्ते में दिन पर दिन बढ़ता जाता है तीसरे हफ्ते में शान्ति मिलती है—तेजी के दौर में अफीम का सेवन किया है दर्द की तेजी में खुश्की और प्यास अधिक होती है सारे शरीर और हाथ पैर से अग्नि निकलती है तिलियों और पैरों के तलुओं और अङ्गुलियां ठंडी हो जाती है यह सब मेरे रोग के लक्षण हैं मेरे न कोई खराबी नहीं दस्त साफ आया करता है, भूख भी अच्छी लगती है—चिकित्सा काफी कर चुका हूं परन्तु आज तक किसीसे लाभ न हुआ वैद्य महात्माओं से सादर नम्र निवेदन है कि मेरे रोग का निदान और चिकित्सा के अनुभूत प्रयोग लिखने की कृपा करें जिन के प्रयोग से लाभ होगा उन को यथा शक्ति पुरुस्कार दिया जायगा।

अनेक औषधियां और इग्रेंजी दवा भी बहुत सी की हैं परन्तु लाभ न होने से कविराज पं० बाबूराम रसशास्त्री पैलोन जि० बुलन्दशहर की आज्ञा से आयुर्वेद की शरण ली है और अपना हाल समस्त वैद्यों के सम्मुख प्रगट कर दिया है आशा कि उचित निदान कर मुझे औषधियां बनी हुई प्रयोग लिख कर अनुगृहीत करेंगे मैं औषधियों का मूल्य दूंगा और १०१ रुपया पुरुस्कार दूं।

कुंवर भगतसिंह रईस
डिभाई
जि० बुलन्दशहर

संख्या १६

सर्व वैद्य महानुभावों की सेवा में सादर प्रणामानन्तर निवेदन है कि मेरे प्रश्नों का उत्तर जल्दी प्रेषित करके आगामी अङ्क में प्रकाशित करवावेंगे।

(क) योगरत्नाकर पृष्ठ संख्या २४५ पर कटिशूल चिकित्सा में निम्न लिखित श्लोक है—(हल्लाव माक्षस खाद्य; खरजूर मेथिकरतिला) इसमें—हल्लाव खाद्य —के पर्याय वाचिक शब्द और हिंदी का नाम लिखने की कृपा करें।

(ख) धन्वन्तरि निघन्टु—कहां और किस नगर में मिलता है—

(ग) अष्टाङ्ग हृदय की—इन्दु—नामक टीका कहां से प्राप्य है कृपया लिखें।

चिकित्सक रामेश्वर शर्मा विशारद
मु० नदायना—(नरैना)



इस स्तम्भ में प्रति वर्ष की भांति---वैद्यों से परामर्श स्तम्भ की सम्मतियां (उत्तर) प्रकाशित हुआ करेंगे। सम्मतियां भेजने का सब को अधिकार है। पर सम्मति—भेजते समय निम्न बातों पर ध्यान रखना चाहिये।

१—सम्मति उन्हीं सज्जनों को भेजनी चाहिये जिन्हें उन विषयों में पूर्ण ज्ञान और अनुभव हो।

२—सम्मति—स्पष्ट और कागज के एक ही तरफ लिखी होनी चाहिये तथा जिन पुस्तकों से उसमें प्रयोग लिये हों उन पुस्तकों का पूरा २ नाम और पृष्ठ लिखे होने चाहिये।

३—सम्मति—भेजते समय यह भी ध्यान रखना चाहिये कि रोगी उनकी सम्मति से आरोग्य होगा तब उनका यश और पुण्य होगा और यदि रोगी को हानि होगी तब उनकी अपकीर्ति होगी।—

—सम्पादक.

विविध-समाचार

धन का दुरुपयोग



भारतीय वैद्य सम्मेलन सदैव धन संग्रह न होने की शिकायत करती रहती है उसके पास उपयोगी कार्यों के लिये धन नहीं यही बहाना रहता है पर " वैद्य सम्मेलन पत्रिका पुस्तक ११ संख्या १ ,, में कार्य्य कर्त्ताओं ने चित्र और पाठ्य विषय वही दे डाला है जो कि प्रायः अनेक पत्रो में प्रकाशित हो चुका है तथा सम्मेलन के समय बट चुका है। हम उन कार्य्य कर्त्ताओं से यह पूंछते हैं कि जब सम्मेलन के समय स्वयं सभापति महोदय ने अपना भाषण पुस्तकाकार बटवा दिया था और स्वागताध्यक्ष जीने भी अपना-भाषण छपा कर बांट दिया था और वही अनेक पत्रो में भी प्रकाशित हो चुका था चित्र भी पत्रों में प्रकाशित हो चुके थे तब उसको ही प्रकाशित कर कौनसा लाभ जनता का विचारा है या यह " धन का दुरुपयोग " नहीं है ।

एक—सभासद

बधाई

बड़े हर्ष के साथ लिखा जाता है कि श्रीमान् लाला नन्दकिशोर प्रसाद जी राजवैद्य कुमीचक निवासी को धर्म पत्नी के पुत्र रत्न हुआ है बधाई ।

वैद्य कुछ नहीं कर सक्ते हैं

गत सप्ताह कलकत्ते में मेडीकल कान्फ्रेंस हुई थी. उसमें दूर २ से डाक्टर लोग आये थे। इगरेज़ भी कई थे अँन्दाज़ ७—८ दिन तक कान्फ्रेंस हुई प्रदर्शनी भी हुई साधारण तथा थोड़ी देर में प्रस्ताव पास करलिये गये इंजेक्सन, हरी औषधियां, सूखी औषधियों, सिद्ध औषधियों, पेटेण्ट-

औषधियोंके, अनुभूत अनानुभूत औषधियोंकेभिन्न कमरे सजे थे जिनमें प्रदर्शनी की गई थी। उनपर ८ दिन तक विचार होता रहा अनुभूत कार्य्य बताये गये दुर्गुण बताये गये भारतवर्षीय औषधियोंकेसत्व निकाल कर प्रयोग किये गये उनकाफल प्रकाशित किये गये आनेवाले डाक्टरों ने अपना अनुभव कहा दूसरों का सुना परंतु हमारे वैद्य देवता प्रथमतो सम्मेलन में पहुंचेंगे ही नहीं पहुंचेंगे तो फीस की फिकर होगी शास्त्रीय बातें बुरी प्रतीत होंगी प्रस्ताव में समय नष्ट कर देंगे। इसका फल यही है कि आजतक कुछभी किसी साधारण औषधि का भी निर्णय नहीं होपाया। यह सम्मेलन का दोष नहीं सम्मेलन तो इसी लिये होता है परंतु दोषी हम हैं अ०वै० महामण्डल को चाहिये स्थापित कमेटियों को जरा सचेत कर आगामी फतेहपुर सम्मेलनमेंउपस्थित करने केलिये सन्दिग्ध औषधियों का कुछकार्य तो करलेवे।

वै०रा०भागीरथ स्वामी

मारवाड़ फतेहपुर में वैद्य सम्मेलन

अबकीबार फतेहपुरमें वैद्यसम्मेलन होगा। किन तारीखों में होगा यह अनेक वैद्य पत्रों द्वारा पूछते हैं। उनका उत्तर पत्रों द्वारा यही निकलताहै बहुत शीघ्र स्वागत कारिणीबनकर तारीखें निश्चित होंगी निमन्त्रण दाता अमोलकचन्दजी वैद्य सुवई ... हैं मैं १०दिनमें जाकर स्वागतकारिणी का ... दूंगा। यथाशक्ति जब यह फतेहपुर ... तब आगे तारीखों का विचार होगा ... वैद्य लोग प्रतीक्षा का व्रत करें।

... लोग नाराज होकर जब कुछ श्राप देने ... अनुग्रह होहै तीर्थगुरू—इ.राम ... निवासी

श्री जगन्नाथजी शुक्ल नि०भा० वैद्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापतिने अपने सुधानिधिमें सलाह दी है कि भागीरथ स्वामी पर इतना काम पटकना चाहिये कि वह उभरने न पावें ठीक है यदि कोई और कहता तो जबाब जरूर देता मुझको अब जरासा भी काम में मत दबाइये आपतो दारागंज में रहते है आपके लिये यह बात सहजहै परन्तु मुझे लोग बुरा कहेंगे आप जगत के नाथ मैं आपका भक्त दोनों की बदनामी?

वैद्य पागल नहीं हैं इनके बाप दादों ने बड़ा यश पैदा किया है पुस्तक बना गये हैं बस होगया अब पढ़ने लिखने काम करने की औषधियां पहचानने की दवा बनाने की क्या जरूरत दिन अपना अच्छा होना चाहिए।

वैद्य पंजिका

अखिल भारतवर्षीय स्तदशवैद्यसम्मेलन पटना में समस्त भारतवर्षीय वैद्यों की एक वैद्य-पञ्जिका (डाइरेक्टरी) प्रकाशित करने का निर्णय हुआ था। उस निर्णय के अनुसार कार्य आरम्भ हो गया है। भारतवर्ष के समस्त वैद्यों को फार्म भेजे जारहे हैं जिन सज्जनों के पास फार्म न पहुंचे हों, वे निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डल, नयागञ्ज, कानपुर के पते से फार्म मंगवालें और उन्हें भरकर उपरोक्त पते पर लौटा देने की कृपा करें। इस पञ्जिका में समस्त भारतवर्षीय आयुर्वेदिक चिकित्सकों का नाम तथा पते रहेंगे। और उसके द्वारा वैद्यों के सङ्गठन तथा आयुर्वेद के प्रचार का कार्य किया जायगा। प्रत्येक आयुर्वेद चिकित्सक को इस सूचना पर ध्यान देना चाहिये।

नि०भा०आयुर्वेद महामण्डल

आवश्यक निवेदन

हिंदी शब्दसागर अब समाप्ति पर है। यह शब्द-कोश प्रायः दो या तीन संख्याओं में समाप्त होजायगा, और इसकी समाप्ति में अधिक से अधिक ४—५ मास का समय लगेगा। विचार यह होता है कि इस शब्द सागर में जो शब्द छूटगये हैं वे अन्त में परिशिष्ट रूप में देदिये जांय। कोश—कार्यालय में इस प्रकार के कुछ शब्दों का संग्रह प्रस्तुत है, परन्तु यह संग्रह किसी प्रकार पूर्ण नहीं कहा जासकता। अतः कोश के ग्राहकों तथा हिंदी के अन्यान्य समस्त विद्या प्रेमी पाठकों, समालोचकों, सम्पादकों तथा दूसरे विद्वानों से सभा का नम्रनिवेदन है कि आप लोगों के देखने में जो शब्द इस शब्दसागर में छूटे हुये हों, वे सब यथासाध्य व्युत्पत्ति और अर्थों आदि के सहित सभा में लिख भेजने की कृपा करें। उन लोगोंके थोड़ा २ कष्ट उठाने पर ही इस कोश के एक अभाव की बहुत बड़ी पूर्ति होजायगी। जो लोग इस प्रकार सभा में शब्द संग्रहीत करके भेजने की कृपा करेंगे, सभा उनकी अत्यन्त अनुगृहीत होगी यदि इस कार्य के लिये पुरस्कार की आवश्यकता होगी, तो उसपर भी सभा विचार करेगी।

श्यामसुन्दरदास

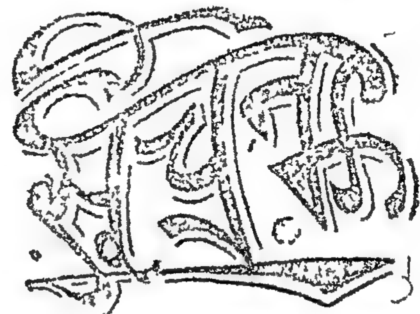
अष्टादश वैद्यसम्मेलन

फतेहपुर (सीकर) राजपूताना में होगा। स्वागत कारिणी का चुनाव होगया है।

वार्षिक अधिवेशन



आलइण्डिया वैद्यक एण्ड युनानी तिब्बी कान्फ्रेंस का वार्षिकोत्सव देहलीमें ता० ६—७—८ अपरेल सन् १९२८ को होगा। वैद्यों और हकीमों को बड़ी संख्यामें पहुंच इसे सफल बनाना चाहिये



श्रीराष्ट्रीय विद्याभवन तथा सरस्वती-सम्मेलन आगरा की परीक्षायें २३ मार्च १९२८ ई०से होंगी। आवेदनपत्र सशुल्क १५ फर्वरी तक आजाने आवश्यक हैं। प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों को पदक प्रदान किये जावेंगे। नवीन केन्द्र सात परीक्षार्थियों के होने पर होसकेगा। नियमावली तथा आवेदन पत्र -) आने की टिकट आने पर भेजदिये जायेंगे। विनीत—मंत्री

कमल का विशेषाङ्क

होली के अवसर पर कमल का विशेषांक नव वर्ष के उपलक्ष में बड़ी धूमधाम, सजधज के साथ बहुत बड़ी संख्यामें छपेगा एकबार अवश्य पढ़िये बड़े २ विद्वानों के लेखादि होंगे इस अङ्कका मूल्य ॥) वार्षिक मूल्य २) रुपया

पता—कमल कार्यालय बरेली

उपहार बन्द

धन्वन्तरि के साथ प्रतिवर्ष ४) की पुस्तकें उपहार में दी जातीथीं अब वह उपहार सिर्फ ३० अप्रेल तकही दिया जायगा बादको किसीभी ग्राहक को उपहार न दिया जायगा। कारण धन्वन्तरिके प्रकाशन में हमें यथेष्ट हानि रहती है इससे लाचार होकर हमें उपहार देना बन्दकरना पड़ताहै

क्षमा प्रार्थना

धन्वन्तरि पांचवें वर्ष से प्रतिमास पहले सप्ताह में प्रकाशित करदिया करेंगे ऐसी हमेंपूर्ण आशाथी और साथही धन्वन्तरि का यह विशेषांक १० फरवरी को प्रकाशित कर देने का विचार था पर खेद है कि हम उसमें सफल न होसके इसका मुख्य कारण दैवी घटना है। प्रथम ही हमारे यहां १४००), १५००) के अनुमान की चोरी होगई और हम उसकी तहकीकात में फसेरहे और ६ व्यक्ति पकड़े गये और फिर उनका मुकद्दमा चला और उनको सजायें हुई उसके बाद मेरी जेष्ठ पुत्री का विवाह था और मुकद्दमे से निश्चित भी न हुआकि विवाह कार्य्य में संलग्न होगया और उसमें लगे रहे खेद है कि उससे निश्चित होते ही जेष्ठ पुत्र के चेचक निकल आई और हम उसकी परिचर्या में रहे उसे अभी आरोग्य भी नकर पाये थे कि छोटे पुत्र के भी चेचक निकल आई और छोटी पुत्री को भी ज्वर आगया मालुम होता है उसके भी चेचक निकलेगी हमारे इन हर्ष और खेद जनक कार्य में लगे रहने से धन्वन्तरि कायह विशेषांक जितना सुंदर छपना चाहिये न छपसका जितना शुद्ध बनाना चाहते थे न बना सके चित्र भी पर्याप्त न देसके सबसे मूल्यवान सम्पादन भी उचित रीति से न करसके और न समय पर निकालही सके इसका हमें जितना दुःख है लिख नहीं सकते हमारा महीनोंका प्रयास सफल न हुआ इसका हमें बड़ा पश्चात्ताप है पाठकों से क्षमा याचना करें समझ में नहीं आता। पाठकों के सामने सच्ची बात रखदी है अब ग्राहकों को अधिकार है कि क्षमा प्रदान करें या …………

आगामी धन्वन्तरि का ३ रा अङ्क इसही मास में प्रकाशित होजायगा और चौथा भी शीघ्रही प्रकाशित कर धन्वन्तरि ठीक समय पर होजावेंगे ऐसी हमें आशा है परमेश्वर सहायता करे।

आयुर्वेद समाचार

आयुर्वेदसमाचार के ३ अङ्क कार्तिक, मार्गशिर, पौष के प्रकाशित होचुके हैं। माघ, फाल्गुण, चैत्र के अङ्कभी शीघ्र प्रकाशित होंगे उनके प्रकाशन में ही उपरोक्त ही कारण रहा। जिन ग्राहकों के पास आयुर्वेदसमाचार के इन अङ्कों में से जो अङ्क न पहुंचा हो वह मगालें।

पत्रोत्तर—

में भी विलंब होने और पारसल, औषधियां पुस्तक भेजने में जो असावधानी हुईहो उन सबका यही उपरोक्त कारण है ग्राहक क्षमा प्रदान करें।

वैद्य बांकेलालगुप्त

शोक! शोक! शोक!

देहली के सुप्रसिद्ध नेता, आलइण्डिया वैद्यक एण्ड युनानी तिब्बी कान्फ्रेंस के सच्चे सहायक और जन्मदाता, वैद्यक युनानी तिब्बी कालेज के संस्थापक परमउदार श्रीमान् मसीहुलमुल्क हकीम अजमलखां साहेब का स्वर्गवास होगया। शोक! ——सम्पादक

अठारवां वैद्य सम्मेलन ।

चैत्र शुक्ल १३-१४-१५ सं० १९८५ भौम, बुध, गुरुवार, ३--४--५ अप्रैल १९२८ को फतहपुर शेखावटी (जेपुर राज्य)में होना निश्चित् हुआ है इसी के साथ औषधि प्रदर्शनी भी होगी सब प्रकार के पत्र व्यवहार इस पते से करें ।

श्री अमोलकचन्द्र मिश्र वैद्य, अष्टादश वैद्य सम्मेलन स्वागतकारिणी कार्यालय फतेहपुर
जि० शेखावाटी जयपुर स्टेट ।

धन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ़ में मिलने वाली पुस्तकें

जर्राही प्रकाश

हिंदी भाषा में यह ग्रन्थ अपने ढङ्ग का बिल्कुल ही नया है। इसमें शरीर की त्वचा पर होने वाले फोड़ा, फुन्सी, चोट आदि के घावों का इलाज, मरहम, पट्टी, चीर फाड़ आदि का वर्णन है। इस पुस्तक के चार भाग किये हैं। ग्रन्थ के आदि में मनुष्य के शरीर सम्बन्धी बहुत से चित्र दिये हैं। प्रथम-भाग में जिस स्थान पर फोड़े होते हैं। उनके चित्र ब्लाक बनवाकर छापे गये हैं और उन के साथ २ ही इलाज मरहम आदि का वर्णन है दूसरे भाग में चीरने फाड़ने में काम आने वाले आयुर्वेदीय रीति से अस्त्र शस्त्रों के चित्र उनका वर्णन और डाक्टरी मतानुसार टूटी हुई हड्डी, पसली, टांग, हाथ, पहुंचा आदि को जोड़ने की विधि और पट्टी बांधने के नियम दिये गये है। तीसरे भाग में उपदंश सम्बन्धी घाव, सुजाक प्रमेह और गठिया आदि के इलाज हैं। चौथे भाग में नेत्र रोग सम्बन्धी इलाज लिखे हैं। पुस्तक बहुत मोटे चिकने कागज पर छापी गई है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

वैद्य जीवन

(लोलिम्बराज) भाषा टीका तथा संस्कृत टीका सहित इसमें कवि लोलिम्बराज ने अपनी प्यारी स्त्री को अनेक प्रकार के सम्बोधों से कार्य के मिस से वैद्यक शास्त्र का उपदेश किया है इसके चुटकुले तीर के समान काम कर जाते हैं, अब की बार श्लोकों के ऊपर अन्वय के अङ्क भी दिये हैं जिनसे कम पढ़ा भी श्लोक लगा सके मू० १॥) डेढ़ रु०

बृहत् रसराज सुन्दर

यह अमूल्य रस ग्रन्थ अधिक समय से समाप्त होगया था इसके लिये हमारे पास अनेक ऑर्डर जो दश १०) रुपये तक में लेने को तैयार थे आते थे पर पुस्तक अप्राप्त थी। यह अधिक समय से बम्बई में छप रहा था अब छपकर तैयार हो गया है। मूल्य वही रक्खा गया है पुस्तक थोड़ी छपाई है। अत शीघ्रता कीजिये अन्यथा पछताना होगा मू० ३।)

पता—मैनेजर श्री धन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ़ जिला अलीगढ़

धन्वन्तरि कार्य्यालय बिजयगढ से मिलने वाली पुस्तकें

तिब्ब अकबर—हकीम अकबर अलीखां लिखित तथा देवी प्रसाद कृत हिंदी भाषा अनुवादित। इस में–छब्बीस अध्यायों शिर से पैर तक का पुरुष लड़के आदि का सम्पूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति निदान कारण, स्वरूप, लक्षण और यूनानी मत से सब रोगों पर सैकडों औषधों का इलाज (चिकित्सा) वर्णित है। यह अपूर्व ग्रन्थ वैद्य मात्र को उपयोगी है मूल्य ७) रु०

सचित्रस्वास्थ्यशिक्षा

भूमिका लेखक प्रो०राममूर्तिनायडू कलयुगी भीम –यदि आप भी राममूर्ति के समान बलवान सुख स्वस्थ्य और द्रव्योपार्जन करने वृद्ध से जवान बनने, तैलकी मालिश करने आरोग्य मनुष्य दिनचर्य्या भोजन व्यायाम 'मनइच्छित सन्तान उत्पन्न करने के साधन शरीर रचना तथा काम शास्त्र सम्बन्धी बातों के वर्णन के अतिरिक्त राममूर्ति सैन्डोमिस ताराबाई गुलाम आदि विख्यात् २ पहलवानों का सचित्र जीवन चरित्र पढ़ने के इच्छुक हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढें । अधिक लिखना व्यर्थ है सचित्र ११६ पृष्ठ की पुस्तक का मू० १)

निघण्टु शिरोमणि

यह अपूर्व ग्रंथ वैद्यकके लिये बहुत उपयोगी है राज निघन्टु गुण निघन्टु धन्वन्तरि नि०भाग प्रकाश आदि भिन्न २ और सर्व मान्य बड़े २ बारह निघन्टुओं का सर्वस्व एकत्र करके यह निघन्टु बनाया गयाहै ऐसा उत्तम निघन्टु इस समय दूसरा नहीं है। यह आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षा में नियुक्त है । दाम १)

रस पारिज्ञान

लेखक वैद्य पंचानन पं० जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल। इस में पदार्थों की उत्पत्ति से लेकर रसों की उत्पत्ति भेद कल्पना; पहचान,गुण , अवगुण कार्य शक्ति,आदि२५विषय सन्निविशितहै दाम॥=)

अमृत सागर	२॥)
मदनिग्रह (संस्कृत)	४॥)
पथ्यापथ्य (भाषा टीका)	३)
आयुर्वेद मीमांसा	॥)
आरोग्य साधन	।–)
भलाव शोध	।≈)
सन्तानकल्पद्रुम	१)
प्रसूतिशास्त्र	३)
चिकित्साचन्द्रोदय (यूनानीमत)	२)
वैद्यक शब्दसिंधु (संस्कृत)	७॥)
श्रीधन्वन्तरि व्रतकल्पकथा	=)
आयुर्विज्ञान	।)
नाड़ी परीक्षा	≈)
कीटाणु शास्त्र	॥)
बुढ़ाई को रोक और दीर्घ जीवन	॥)
पथ्य	१)
आरोग्य विधान (भारत में मंदाग्नि)	≈)
योगरत्नाकर (संस्कृत) पूर्ण	५)
निघन्टुशिरोमणि (संस्कृत)	१)
इलाजुलगुर्बा	१॥)
फुफ्फुस (निमोनियां) चिकित्सा	१॥)
स्वाभाविक जीवन	१॥=)
अभिनवनिघन्टु प्र० भाग भाषा टीका	३)
" द्वि० "	२॥)

पता–वैद्य बांकेलाल गुप्त धन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ (अलीगढ)

रतिरहस्य

[For Private Use Only]

The Science Of a Happy Married Life.

जिसमें

२२ सौ वर्ष प्राचीन काम सूत्र आदि ५० अलभ्य काम ग्रन्थों का सार

तथा

नवीन प्रकाशित अंग्रेजी, हिंदी उर्दू की तमाम पुस्तकों का निचोड़

काम विषयक अलभ्य जानने योग्य बातों को सीख कर अपना जीवन सुखमय बनाइये

गारंटी

यदि पुस्तक ना पसन्द हो २४ घन्टे में वापिस करके मूल्य मये खर्चेके वापिस मगालीजिये। (मू०१)

प्राचीन कामसूत्र भाषा टीका सहित

यह वही पुस्तक है–जिस की कुछ एक बातें लेकर कोकशास्त्र व काम शास्त्र आदि पुस्तकों द्वारा जनता को लूटा जा रहा है। यह वही पुस्तक है—जिसका अनुवाद फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी आदि भाषाओं में होकर विदेश में ३०) और ४० रुपये में बिकती है।

यह वही पुस्तक है— जिस का संस्कृत भाष्य निर्णय सागर प्रेस में और अंग्रेजी अनुवाद व इंगलैंड में बहुत वर्ष हुए छपा और अब १०, १०, १५, १५ रुपये में बड़ी कठिनता से मिलता है।

यह वही पुस्तक है—जिसके बारे में डाक्टर पी० पैटरसन ने रायल एशियाटिक सोसाइटी को एक लेख में लिखा था कि "विवाह के पूर्व इस पुस्तक का पढ़ना प्रत्येक युवक का कर्तव्य है"।

यह वही पुस्तक है—जिस के बारे में डाक्टर एफ केलहारन, पी एच, डी डाक्टर आयङ्गरजी तथा जयजालीं आदि बड़े २ विद्वानों ने मुक्त कण्ठ की प्रशंसा की है और—

संस्कृत श्लोकों के साथ २ सरल भाषा टीका कर दी गई है जिससे सब ही श्रेणी के स्त्री पुरुष लाभ उठा सकें। मूल्य ५) पोस्ट व्यय पृथक। पता—मैनेजर धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़

Printed and published by Vaidhya Bankeylal Gupta at the Dhanwa tr' press Bijaigarh.

संस्थापक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभजी वैद्यराज,

भाग ५] माचं सन् १९२८ [अङ्क ३



सम्पादक—

वैद्य बांकेलाल गुप्त

वैद्य पं० नारायणदत्तशर्मा

वार्षिक मूल्य उपहार सहित }

{ साधारणाङ्क ।=)
{ विशेषाङ्क का १॥)

एक आश्चर्य बात

स्त्री मात्र के लिये संजीवनी

“स्त्रीसुधा„

बहुत दिनों की खोज के बाद

हजारों स्त्रियों पर

परीक्षा कर

अब वैद्य समाज के सामने पेश करते हैं।

स्त्री सुधा से

सब प्रकार के प्रदर, योनि दोष, गर्भाशय विकार

और उनके साथ होने वाले सब

उपद्रव तत्काल नष्ट होते हैं

मूल्य २) शीशी एक दर्जन २०) रुपया पोस्ट व्यय पृथक



विशुद्ध कस्तूरी

अष्टाङ्ग आयुर्वेद विद्यालय का प्रोफेसर और सुपरिटेन्डेन्ट कविराज श्रीयुक्त सत्यचरणसेन कवि रञ्जन महाशय हमारी कस्तूरी की विशुद्धता और उत्तमता के सबन्ध के निम्नलिखित प्रशंसा पत्र देते हैं।

This is to certify that messrs Lakshmi Sundr Gopal Sundr Nepali are big dealers in musk. I have personally examined their musk and found the quality to de pure and Genuine. This kind of musk well serve will for medicinal perposes it is fairly recommended to all.

यदि विशुद्ध द्रव्य से औषध बनाकर धन और नाम कमाना है तो विशुद्ध कस्तूरी हम से खरीदे हमारे पास शुद्ध सोधीत शिलाजीत, काश्मीरी केशर, गोलोचन, अम्बर और भस्म करने का मोती इत्यादि भी मिलते हैं। भाव के लिये पत्र लिखिये।

ठिकाना :—

लक्ष्मी सुन्दर गोपाल सुन्दर नेपाली

६६६१६ हारिसन रोड् "माधो भवन" कलकत्ता

टेलिग्रामः Muskseller टेलिफोन 1278 B. B.

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

धन्वन्तरि

बिल्कुल मुफ्त।

जो सज्जन 'प्रेम मडल' के ५ सदस्य बनावेंगे उनको 'धन्वन्तरि' साल भर तक मुफ्त भेजा जायेगा। 'धन्वन्तरि' के अतिरिक्त दूसरे पत्र भी मुफ्त भेजे जाते हैं। -)के टिकट भेज कर नियम मुफ्त मंगाइये।

पता—

प्रेम मंडल बरेली

दस रुपया रोज कमालो।

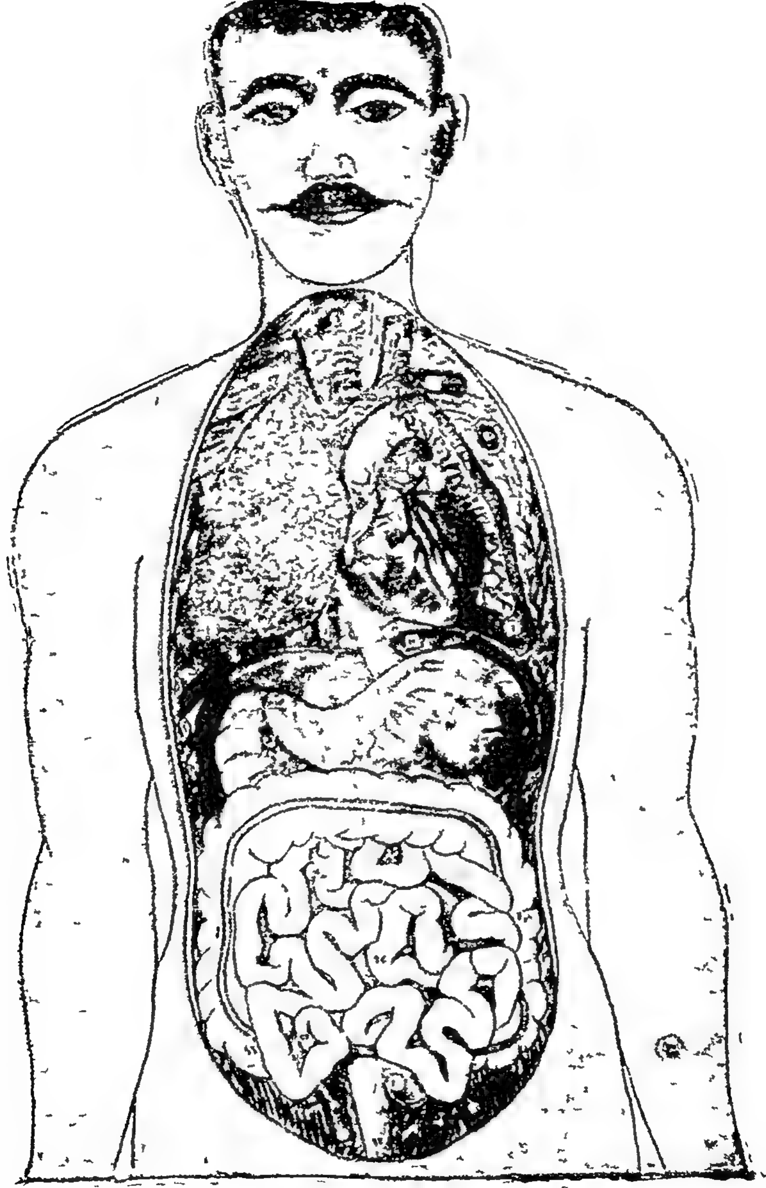
यदि आप अमेरीका, जर्मनी, जापान की अमूल्य दस्तकारियां व व्यापार के गूढ़ रहस्य सीखकर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहें तो आज ही ३) रु० मनीआर्डर द्वारा भेज कर सचित्र मासिक पत्र "रसायन" के ग्राहक बन जाइये। अगले मास ग्राहक होने वालोंसे वार्षिक मूल्य ४) लिया जायेगा।

मैनेजर "रसायन"

बोटाका (हिसार)

विषयसूची

चित्रसूची



शारीरिक अवयव प्रदर्शक चित्र।



जुजुरुषोनासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतंद्रापि मिवच्यवानात् ।
प्राति रतं जहि तस्तायुर्दस्त्रादित्यति मकृणुतंकनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं॰ १० अ० १७ सू० ११६

भाग ५ } मार्च सन् १९२८ { अङ्क ३

प्रात--जागरण !

बुद्धि न होगी मंद, शान्ति से हीन न होगा ।
घर में होगी सुमति, द्रव्य से दीन न होगा ॥
मात–पिता–गुरु–और, मित्र का कोप न होगा ।
राजा का प्रिय पात्र, दण्ड आरोप न होगा ॥
वे रख सकते प्यार में, अपने सुन्दर वदन को ।
सूर्योदय से प्रथम उठ, जो जन सेवित पवन को ॥ नयनजी

वारुणी व बकयन्त्र और इनसे प्रस्तुत द्रव्य

(लेखक वैद्यराज सर्वेश्वरानन्द शर्मा सक्सेना मेडिकिस्ट)



अभ्यास से ही विद्या की प्राप्ति हुआ करती है। बिना अभ्यास के मनुष्य का प्राप्त किया हुआ योगमी नष्ट हो जाता है। यही कारण है, कि जिन उत्तम २ प्रक्रियाओं और प्रयोगों को हमारे पूर्वजों ने अह-र्निश अमित उद्योग से प्राप्त कर सारे संसार का मूर्धन्यपद अधिकार किया था। आज उन्हींकी अनधिकारी सन्तान दैवदुर्विपाक से उद्योग रहित हो कर उन प्राणि हितकारि उत्तमोत्तम प्रक्रियाओं को दिनों दिन भूलते आ रहे हैं। हमारे इस आलस्य का दैवदुर्विपाक ही एक मात्र कारण नहीं है, बल्कि विदेशीय वणिकों का पदार्थ विज्ञान की उपासना से प्राप्त यान्त्रिक शक्ति द्वारा प्रतियोगिता में प्रवृत्त होना इस पराभवमूल आलस्य का एक हेतु प्रतीत होता है। द्वितीय कारण राजकीय प्रति बन्धक (कानून द्वारा वैद्यों कोवारुणियन्त्र आदि से प्रस्तुत द्रव्यों के व्यवहार व बनाने की रोक) तथा वैद्यों व जनता का स्वदेश प्रेम को छोड़ कर विदेशीय सुन्दर आवरण से आवृत द्रव्यों से प्रेम आदि २ कितने ही कारण हैं।

आज इस बीसवीं सदी में जब, कि वैद्यों का एक संघ इस दशा को बदल कर वैद्य समाज को उसी उच्च आदर्श तक पहुंचाने का अथक उद्योग कर रहा है। दूसरी ओर देश के प्राण स्वरूप कुछ देश भक्त राजकीय सभाओं में गम्भीर गर्जन द्वारा आयुर्वेद की दशा सम्हालने की ओर राजकीय सभाओं का ध्यान आकर्षित करा रहे हैं। फल स्वरूप कहीं राजकीय सहायता प्राप्त विद्यालय और कहीं औषधालयों की स्थापना आदिका श्रेय उन महापुरुषों की तपस्या का फल उद्घोषित कर रहा है। जिस से प्रतीत होता है, कि अब समय आगया है कि उन प्रक्रियाओं को वैद्य समाज और देश के रक्षस्वरूप कार्यकर्ताओं के सामने उपस्थित किया जाय। जिन की पूरी २ सुभीता न होने के कारण ही जन समाज में आयुर्वेद का पूर्ण प्रभाव अभी तक व्यक्त नहीं होने पा रहा है। आइये पाठकगण ! आज धन्वन्तरि के विज्ञानमय प्राङ्गण में बैठ कर वारुणि और बकयन्त्र का निर्माण, इन से बनने वाली औषधियों के बनाने की विधि तथा उनके गुण व गुणों के विषय में प्राचीन और आधुनिक मतवाद के अनुसार विचार करें

वारुणियन्त्रकीआकृतिव निर्माणविधि

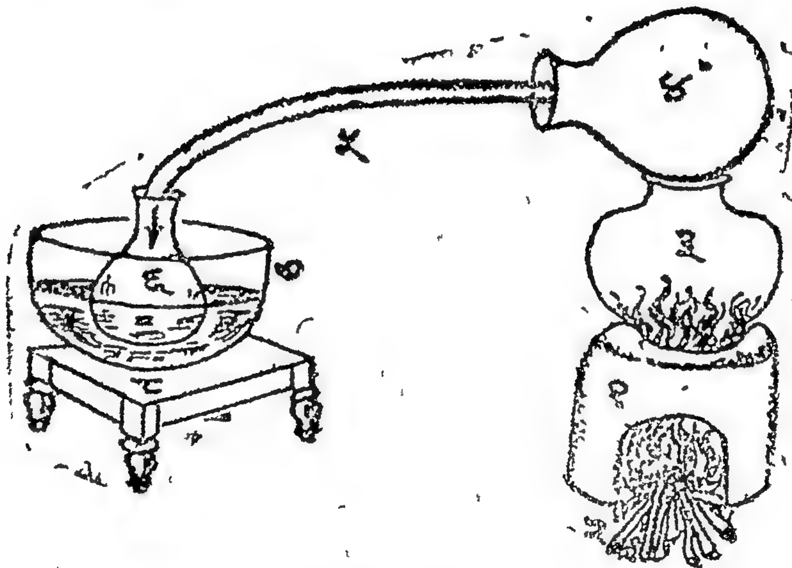
यह यन्त्र मिट्टी, लोहा या कांच का बनाया जाता है। इस से मद्य आदि प्रस्तुत किये जाते हैं। इस को साधारण बोलचाल में भबका यन्त्र या कर्मभीक कहते हैं।

जिस चीज को चुआना हो, उसको एक बड़े मटके में रख कर और दूसरे मटके के बीच में ऊपर लिखे मटके के मुख के बराबर का छेद कर के

उस को चुआने के द्रव्यवाले मटके के मुखकेऊपर आड़ा टिकाकर रखना। फिर मुलतानी मिट्टी और कपड़े से इनदोनों के संयोग स्थल को अच्छी तरह से लेप करके जोड़ देना और इस ऊपरवाले मटके के मुख में ऊपर की ओर को नल का एक शिरा अच्छी तरह से जोड़कर उस (नल) का दूसरा शिरा एक और खाली मटके के मुख में लगाकर अच्छी तरह से मुलतानी व कपड़े से जोड़ देवे। इस दूसरे बर्तन को पानी से भरी हुई नांद में डुबोकर रखना। इस प्रकार यह यन्त्र तैयार होजाता है। जुड़े हुए दो मटकों में से निचले मटके को चूल्हे में आगपर चढ़ा देना।

चित्र संख्या १

(१) चुल्हा (२) लकड़ी (अग्नि) (३) द्रव्याधार [चुआने का द्रव्य रखने का मटका] (४) वाष्पाधार [भाफ टिकाने की जगह] (५) नल (६) आम्नाय भांड [चुआई हुई चीज संग्रह का पात्र] (७) जलाधार [इसमें पानी भरा रहता है और उसके गरम होने पर उसको बार २ बदल दिया जाताहै।



वारुणि यन्त्र१

बकयन्त्र की आकृति और बनाने की विधि—

यह यन्त्र भी लोहा, कांच या मिट्टी से बनाकर व्यवहार कियाजाता है। इस यन्त्र से सुरा, तैल और द्रावक (तेजाब) आदि चुआये जाते हैं।

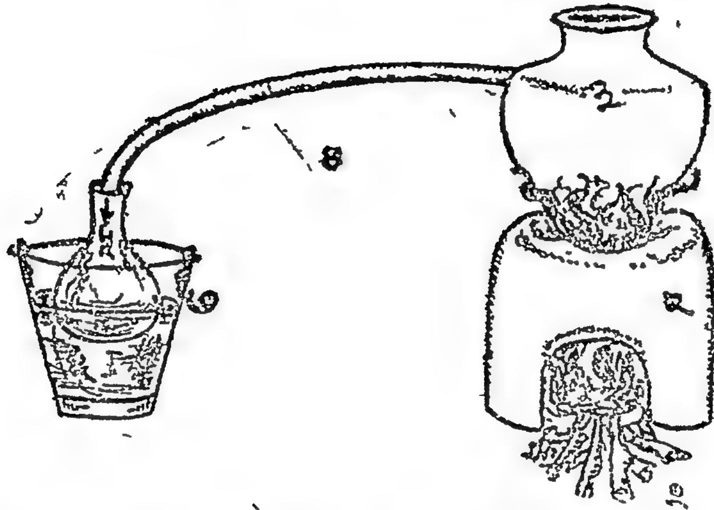
एक बड़ा मटका लेकर उसके गले के नीचे एक छेद बनाकर उस छेद पर जो ठीक २ लगसके ऐसा बांस आदि का नल लगाकर उस नल का एक शिरा उस छेद में और दूसरा शिरा एक दूसरे बर्तन के मुख में अच्छी तरह मुलतानी मिट्टी और कपड़े से जोड़कर बन्द करदेना। फिर जिस मटके के गले में छेद कर नल लगाया गया है। उसमें चुआने वाली चीज भरकर उसके मुखपर

ढक्कन लगा के मुलतानी मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर देना। बस इस तरह से यह यन्त्र तैयार होजाता है। फिर इस द्रव्य वाले मटके को चूल्हे पर चढ़ाना और खाली को एक पानी भरी हुई नांद में डुबोकर रखना। इस पानी में अवस्था के अनुसार बरफ या नमक नौसादर मिलाकर इसको अधिक परिमाण में ठण्डा बनाये रखते हैं।

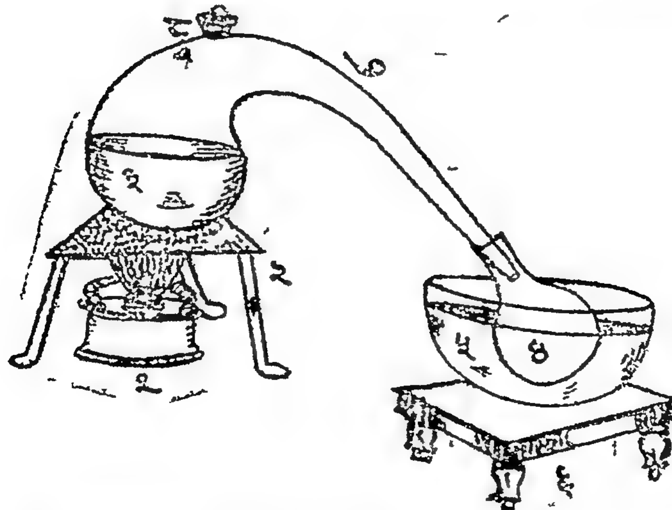
चित्र संख्या २

(१) लकड़ी (अग्नि)—(२) चूल्हा (३) द्रव्याधार (४) नल (५) चुआई हुई चीज संग्रह का पात्र (६) बरफ या नमक नौसादर मिला हुआ पानी, (७) पानी का पात्र।

देशी वक यन्त्र



विलायती वकयन्त्र (डिस्टिलेशन प्रोसिस)



(१) गेस का चूल्हा (२) तिपाई (३) पदार्थ (४) प्रस्तुत द्रव्य का फ्लास्क (५) जलपात्र (६) चोकी (७) रिटोर्ट (८).

ऊपर वाहणि यन्त्र व वकयन्त्र का वर्णन कर चुके हैं। अब नीचे इन यन्त्रों से तैयार किये जाने वाले कुछ प्रसिद्ध २ प्रयोग लिखे जाते है।

गन्धक द्रावक:—यह द्रव्य १ भाग गंधक और ३ भाग ओक्सिजेशन के संयोग से बनता हैं। इसको जल मिलाकर व्यवहार किया जाता है इसी लिए अंग्रेजों में इसका नाम "डाइल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड" दिया जाता है।

निर्जल गन्धक द्रावक बनाने की विधी:—एक बर्तन में समान भाग गन्धक और शोरा जला देने से उसमें से जो धुआं निकले उसको सिसे (सिक्के) के बने हुए नल के द्वारा सिक्के से बने हुए एक कमरे के भीतर प्रवेश करा देना। इस कमरे के नीचे जमीन पर पानी भरकर रखा रहना चाहिये। यह धुआं इस पानी में शोषित (जज़्ब) होकर "गन्धक द्रावक" बन जाता है। जब इस घर के भीतर का यह पानी बहुत अधिक अम्लास्वाद (खटाश पर) और भारी होजावे, तब उसको इस कमरे में से निकाल कर "प्लाटीनम" धातु के बर्तन में रखकर आँच से गरम करके गाढ़ा कर लेना चाहिये।

इसका नियम यह है, कि पहिले १५००, १६०० तक आपेक्षिक गुरुत्व (स्पेसिफिक ग्राविटि) भारी होने पर आंच पर से उतार देना फिर कुछ ठहर कर आग पर चढ़ाके १८४०, १८४५ आपेक्षिक गुरुत्व होनेपर उतार देना। "प्लाटिनम" धातु का बर्तन न मिल सके तो कांच के बर्तन में द्रावक को रखकर उसमें प्लाटिनम धातु के दो चार टुकड़े डाल के गरम करना चाहिये। फिर "सैण्ड फिल्टर" में छानकर साफ करके व्यवहार करना चाहिये।

व्याख्या (शोरा व गन्धक के संयोग से गुण परिवर्तन):—यवक्षार द्राव (नाइट्रिक एसिड) और शोरा (पोटास) इन दोनों चीजों के मिलने से "शोरा द्रावक" (नाइट्रिक ओफ पोटास) तैयार होता है। इसको गन्धक के साथ दग्ध करने से कुछ गन्धक वायू के "औक्सिजन" के साथ मिलकर गन्धक द्रावक (सल्फ्यूरिक एसिड) बनकर ऊपर बताये हुए शीशे के कमरे में चला जाता है और बाकी गन्धक शोरा और यवक्षार द्रावक के ३ भाग औक्सिजन के संयोग से गंधक द्रावक (सल्फ्यूरिक एसिड्) बन जाता है जो शोरे के साथ मिलकर "सल्फेट औफ पोटास" बनकर बर्तन में बाकी रह जाता है। यवक्षार द्रावक (नाइट्रिक एसिड्) नाइट्रिक औक्साइड् में परिवर्तित होकर वायु के औक्सिजन के साथ संयुक्त होकर "नाइट्रस् एसिड्" यवक्षार द्रावक होकर नारङ्गी रङ्ग का धुआं जैसे होकर इसी शीशे के कमरे में जाकर प्रवेश कर जाता है। ये दोनों प्रकार के धुएं (सल्फ्यूरस् एसिड् और नाइट्रिक एसिड्) एकत्र होकर "सल्फ्यूरिक एसिड्" नाइट्रिक एसिड् का औक्सिजन आकर्षण करके सल्फ्यूरिक एसिड् बन जाता है। और "नाइट्रिक एसिड्" का हिपो नाइट्रिक एसिड के आकार में परिवर्तन होजाता है। इन दोनों प्रकार के द्रव्यों के संयोग से इस शीशे के कमरे के चारों ओर छोटे २ दाने जम जाते हैं। इन दानों की अधिकता होने पर वे नीचे गिरकर इस कमरे के तले में पहिले से ही भरे हुए पानी में गंधक द्रावक का आकार धारण कर द्रवित होजाते हैं, और हिपोनाइट्रस एसिड् पृथक् होकर बुलबुले के आकार में परिवर्तित होकर निकल जाता है।

गन्धक द्रावक दृश्य में तेल के समान

वर्ण विहीन, भारी, अति तीक्ष्ण अम्लास्वाद लिए होता है। इसमें पानी मिलाने से परस्पर आकर्षण पूर्वक इससे उष्णता उत्पन्न होती है। खुले मुंह के बर्तन में इसको बिना ढाँके रखने से यह अपने में जलीय अंश को आकर्षण कर निस्तेज व शिथिल होजाता है। विविध प्रकार के धातुओं के साथ मिलाकर आग पर गरम करने से सफेद रङ्ग के धुयें के आकार में होकर यह (गन्धक द्रावक) उड़जाता है। इसके शरीर में लगने से उस जगह पर पहिले काले रंग का दाग पड़ जाता है। फिर कुछ समय तक वैसे ही रहने से वहांपर घाव होजाता है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व १.८४०—१.८४५ तक होता है।

गन्धक द्रावक बनाने की दूसरी सुगम विधी:—यह बात पदार्थ विज्ञान जानने वाला प्रत्येक व्यक्ति जानता है, कि लोहा और गन्धक द्रावक के सयोग से हीरा कशिस तैयार होता है इस हीरा कशिस को लोहा या मिट्टी के वकयन्त्र में रखकर चुआ लेने से भी गन्धक द्रावक तैयार होजाता है।

गंधक द्रावक की परीक्षा— किसी भी द्रव्य को गन्धक द्रावक के साथ मिलाकर पानीमें घोल के उसमें "नाइट्रेट ऑफब्यारोइटा" कापानी मिलादेने से उससे सफेद रङ्ग का "सल्फेट् ऑफ ब्यारोइटा" नीचे गिर जाता है, जो यवक्षार द्रावक में नहीं घुलता। गन्धक द्रावक में नील घुलजाती है। इस घोल को अंग्रेजी में "सल्फेट ऑफइन्डिगो" कहते हैं। इस (गन्धक द्रावक) को यवक्षार द्रावक के साथ मिलाने से यवक्षार द्रावक का रङ्ग पलट जाता है। इसलिये इसको यवक्षार द्रावक की परीक्षा के लिये व्यवहार करना चाहिये

निर्जल गंधक द्रावक की क्रिया—यह अति तीक्ष्ण होता है। इसके शरीर में लगने से जलन होती है। पेट में चले जाने पर मुख, गला और आमाशय में घाव होजाते हैं। फिर इसके परिणाम स्वरूप खून के दस्त और खून की कै होने लगती है। पेट में दर्द, मुख में दुर्गन्धि आने लगती है और क्रमशः हाथ पैर टेढ़े पड़कर सबसे अन्त में रोगी दुर्बल होकर मरजाता है। परन्तु रोगी मरने पर्यन्त होश हवाश में रहता है।

गंधक द्रावक खाजाने पर—

(१) खड़िया मिट्टी का चूर्ण (२) मेग्नेसिया साल्ट (३) कार्बोनेट ऑफ पोटास (४) या सोडाबाई कार्ब सेवन कराना चाहिये। यदि इनमें से कोई भी चीज उस समय न मिल सके, तो दिवारों पर पोते हुए चूने को उसी समय सेवन करने को देना चाहिए।

पानी मिलाहुआ गंधक द्रावक—

निर्जल गन्धक द्रावक १४ ड्राम लेकर इसमें २० औंस साफ पानी मिलाने से यह तैयार होता है। इसको "डाइल्यूटेड सल्फ्यूरिक एसिड" कहते हैं। इसमें १ पाइन्ट तक पानी मिलाया जा-सक्ता है।

इसके गुण—बल कारक, सङ्कोचक, मूत्रकारक शैत्य और रक्तशोधक होता है। विविध प्रकार के रोगों के आराम होने के बाद की दुर्बलता को दूर करने के लिये चिरायता व जेन्सियाना के फाण्ट के साथ व्यवहार किया जाता है।

ज्वर व विविध प्रकार के प्रदाह जन्य रोगों में इसको सेवन कराने से यह बढ़ी हुई शारीरिक उष्णता को और नाड़ी की द्रुत गति को उपशम

कर देता है अर्थात् शैत्य गुण करता है। इसके लिये किसी के शर्बत् के साथ मिलाकर पिलाने से इसको रोगी बड़ी प्रसन्नता से पीजाता है।

जीर्णज्वर (Hectic fever हेक्टिक फीवर) में यदि रोगी को अधिक पसीना आताहो तो इसको सेवन कराने से यह बन्द होजाता है।

उदर रोग में पेशाब लाने के लिये व्यवहार किया जाता है रक्तस्राव (हेमरेज़ Hemorrhage) रोग में इसको व्यवहार करने से रक्त गिरना बन्द होजाता है। दाद पर लगाने से भी लाभ होता है "एप्समसाल्ट" नामक डाक्टरी दस्तावर औषधि कड़वी होती है। इसके साथ जल मिश्र गन्धक द्रावक मिलाकर सेवन करने से इसका कडुआपन दूर होजाता है। गन्धक द्रावक अधिक खट्टा होता है। इसके दाँतों पर लगने से विशेषतः अपकारकी सम्भावना रहती है। इसलिए इसको चिनिमिट्टी या काँच की प्याली में रखकर नलकी द्वारा चूसने से फिर दाँतों को कोई तकलीफ नहीं होने पाती।

जलमिश्रित गन्धक द्रावक की मात्रा १०—२० बूंद तक व्यवहार की जाती है।

२—लवण द्रावक—इसको अंग्रेजी में "हाइड्रोक्लोरिक एसिड" या "म्यूरियेटिक् एसिड" भी कहते हैं।

इसके बनाने की विधी—साफ नमक २ पौण्ड (१सेर) गन्धक द्रावक२० औंस[१० छटांक] और साफ पानी २४ औंस [१२ छटांक]।

मिट्टी या काँच के वकयन्त्र में नमक कोरख कर गन्धक द्रावक को १२ औंस पानी में मिलाकर उस नमक के साथमिला देना चाहिए। बाकी बचे हुए १२औंसपानी को आधारभाण्ड में रखकरपुनः [काँचकेवकयन्त्र को] वालुका यन्त्र में रखकर आगपरचढ़ाकर चु आ लेना चाहिए।

व्याख्या—सोडियम धातु और क्लोरीन वायु के संयोग से नमक [क्लोराइड् औफसोडियम] तैयार होता है। इसको गन्धक द्रावक व जल के साथ मिलाकर आगपर गरम करने से जलके हाइड्रोजन के नमक के क्लोरिन के साथ मिलने से सोडा बनजाता है। फिर उसके गन्धक द्रावक के साथ मिलने से "सल्फेट् औफ सोडा" बनकर वह बाकी रहजाता है।

साधारण परीक्षा—यह द्रव्य देखने में जल के समान विवर्ण कुछ हल्दिया रङ्ग लिये तीक्ष्ण गन्ध अम्लास्वाद होता है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व ११७० होता है। इसमें नीलारङ्ग का कागज़ (लिटमस्पेपर] डुबोने से यह लाल होजाता है। और नौसादर (अमोनिया) की शिशि के सामने इसको रखने से इससे सुफेद रङ्ग का धुआं निकलना आरम्भ होता है।

विशेष परीक्षा—[१] इसको यवक्षार द्रावक के साथ मिलाकर उसमें सोना डाल देने से सोना गल जाता है। यह धातु और किसी चीज से इतनी जल्दी नहीं गलती है। केवल इन दोनों द्रावकों के संयोग से गलता है।

(२) इसमें नाइट्रेट औफसिल्वर कापानी डालने से उसमें से सफेद रङ्ग का "क्लोराइड् औफसिल्भर" नीचे गिरजाता है। जो अमोनिया [नौसादर] से द्रव होता है। यवक्षार द्रावक में द्रव नहीं होता।

निर्जल लवण द्रावक की क्रिया—यह अति तीक्ष्ण व दाहक होता है। इसको खाने से गन्धक द्रावक के समान विष लक्षण उपस्थित होते हैं। और वे उसी प्रकार प्राण नाशक भी होते हैं इनकीचिकित्सा भी गन्धक द्रावक में लिखे समान करनी चाहिये।

इस निर्जल लवण द्रावक का दाहक गुण होने के कारण मुख के "क्यांक्रम ओरिस्" रोग में तथा मुख के अन्य प्रकार के घाव उपदंश रोग या अधिक पारा सेवन करने के कारण गले में घाव हो जाने पर इस द्रावक को सिन्कोना वार्क के क्वाथ के साथ मिलाकर कुल्ली करने से विशेष लाभ होता है।

जलमिश्र लवण द्रावक–इसको अंग्रेजी में "डाइल्यूटेड् हाइड्रोक्लोरिक एसिड" कहते हैं। यह लवण द्रावक ४ औंस में साफ पानी १२औंस मिलाने सेतैयार होता है। इसकी मात्रा १०—२० बूंद तक व्यवहार की जाती है।

इसकी क्रिया– यह बलकारक, सङ्कोचक शैत्य व धातु परिवर्त्तक होता है। अग्निमांद्य, गण्डमाला, उपदंश व यकृत् आदि रोगों में व्यवहार किया जाता है।

इसके लोशन में स्पञ्ज आदि भिगोकर घाव पर लगाना चाहिए।

कुल्ली कराने के लिये १—२ ड्राम तक लवण द्रावक १२ औंस पानी और २ औंस चिनी के सर्बतके साथ मिलाकर व्यवहार करना चाहिये सेवन करने के लिये चिनी व जल मिला व्यवहार करना चाहिये। जिससे दाँतों में किसी प्रकार की तकलीफ न होने पावे इसके लिये नलके द्वारा चूसकर पीना चाहिए।

३–यवक्षार द्रावक (नाइट्रिक एसिड)– यह द्रव्य १ भाग नाइट्रोजन और ५ भाग ऑक्सिजन और १ भाग पानी को मिलाने से तैयार होता है। अंग्रेजी में इसको "एक्वा फर्टिस्" भी कहते हैं।

वनाने की विधी— सूखा शोरा २ पौंड, गन्धक द्रावक २ पौंड इन दोनों को एक साथ मिलाकर कांच के वकयन्त्रों में रखकर अग्नि से सन्ताप से चुआकर लेने से यवक्षार द्रावक तैयार होजाता है।

व्याख्या–शोरा व यवक्षार द्रावक के संयोग से शोरा "नाइट्रेट ऑफपोटास" बनताहै। इसको गन्धक द्रावक के साथ मिलाकर आगपर गरम करने से "वाईसलफेट् ऑफपोटास" बनकर शेष रह जाता है। और शोरा द्रावक [नाइट्रिक एसिड] इससे जुदा होकर निकल जाता है।

यवक्षार द्रावक वनाने की दूसरी विधी— —हीरा कशिस व शोरा मिलाकर इनको वकयत्र द्वारा चुआने से भी यह द्रावक बनजाता है। देखने में यह द्रावक पानी के समान होता है। कभी २ नारङ्गी के समान पिलाई रंग लिये भी हुआ करता है। इसका तीक्ष्ण अम्लास्वाद होता है। इसमें नीला (लिट्मस्पेपर) कागज़ डुबोने से वह लाल होजाता है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व ५०० होता है।

यवक्षार द्रावककी विशेष परीक्षा–(१)इसके शरीर में लगते ही हल्दिया रङ्ग का चिन्ह हो जाता है।

[२] इसको लवण द्रावक के साथ मिलाने से इसमें सोना हल होजाता है।

(३) इसमें तामे का चूर्ण डालने से इससे नारङ्गी रङ्ग का धुआँ निकलता है।

निर्जल यवक्षार द्रावक की क्रियाः—यह अति तीक्ष्ण व दाहक होता है। इसको सेवन करने से मुख, गला व आमाशय के भीतर हल्दिया रङ्ग के दाग पड़जाते हैं और परिणाम में इन जगहों पर घाव होजाते हैं।

गन्धक द्रावक के खाजाने पर जो लक्षण होते हैं, इसके सेवन से भी वे ही सब लक्षण प्रकट होकर रोगी का प्राणान्त हो जाता है। इसकी चिकित्सा भी गन्धक द्रावक के समान करनी चाहिये। इसका दाहक गुण होने के कारण यह विचेर्ज और फवाजेडिना नामक घावों पर लगाया जाता है।

जल मिश्र यवक्षार द्रावकः—इसको अंग्रेजी में डाइल्यूटेड् नाइट्रिक ऐसिड् कहते हैं। यवक्षार द्रावक ३ औंस में साफ पानी १७ औंस मिलाने से तैयार होता है। इसकी मात्रा १०—२० बूंद तक होती है।

इसकी क्रियाः—यह बलकारक, शैत्य व धातु परिवर्तक होता है। इसको बहुत दिन तक सेवन करने से मुख से लार निकलती है।

बल बढ़ाने के लिएः—चिरायता व लेम्नियाने के फाण्ट के साथ व्यवहार करना चाहिये।

धातुपरिवर्त्तन और शरीर शोधन के लिएः—जिगर के रोग, उपदंश (आतशक) और त्वचा (खाल) के विविध प्रकार के रोगों में व्यवहार करना चाहिये।

दाद व खुजली के लिएः—इसका नीचे लिखा मरहम व्यवहार करना चाहिये।

अलपाई का तेल (या कड़वा तेल) आध सेर मोम २॥ छटाँक, यवक्षार द्रावक १॥ तोला लेना। पहिले तेल को आग पर चढ़ाकर गरम करना, तेल के खूब गरम होजाने पर उसमें मोम डाल के पिघलाना। जब मोम पिघल जावे फिर उसको चूल्हे से नीचे उतार कर इसमें धीरे २ से यवक्षार द्रवाक मिला लेना।

इसके शरीर पर मलने से खुजली और दाद पर चुपड़ने से दाद आराम होजाता है तथा उपदंश के घावों पर लगाने से भी विशेष लाभ होता है।

महा द्रावक (आयुर्वेदोक्त)—नौसादर ५ भाग, सेंधा नमक २ भाग, जवाखार ७ भाग, फटकरी १४ भाग लेना,

इन सब चीजों को एक साथ मिलाकर बकयन्त्र में भरकर चुआ लेना।

इसकी मात्रा १०—२० बूंद तक व्यवहार की जाती है।

क्रियाः—बलकारक है।

तिल्ली रोग में और अफारा वायुगोला, शूल, अग्निमांध, अम्लपित्त, पाण्डु, कामला, हलीमक आदि रोगों में व्यवहार करने से विशेष लाभ होता है।

निम्बु द्रावक, सत निम्बु (साइट्रिक ऐसिड्):—निम्बु का रस ४ पाइण्ट (२॥ सेर) शुद्ध खड़िया मिट्टी २। छटाँक (४॥ औंस) साफ पानी ११ सेर (पाइण्ट) जल मिश्र गन्धक द्रावक १३॥ छटाँक (२७॥ औंस) लेना।

निम्बू के रस को गरम करके उसमें थोड़ा२ करके खड़िया मिट्टी का चूर्ण मिला देना। जब सब खड़िया मिल चुके फिर इसको सूखी जगह पर टिका कर रख देना। इस तरह रखे २ जब

निथर जावे. उसके ऊपर का स्वच्छ द्रव भाग निथार कर लेलेना। जो भाग नीचे बर्तन के तले में पड़ा हो उसको पहिले गरम पानी से धो लेना, फिर साफ पानी और गन्धक द्रावक मिलाकर उसको आध घण्टे तक आग पर चढ़ाकर पकाना, फिर कपड़े में छानकर द्रवांश लेलेना। पहिले निकाले हुए और इस द्रवांश को एक साथ मिला कर इसको धीमी आग पर चढ़ाके गाढ़ा करके सूखी जगह पर ठिकाकर रख देना। इस प्रकार कुछ देर तक टिकाये रखने से जो दाने उसमें जम जावें उनको फिर आँच पर चढ़ाके पिघलाकर कपड़े में छानके फिर दाने जमा लेना। इसी तरह तिसरी बार कर लेने से साफ स्वच्छ दानेदार "साइट्रिक ऐसिड् तैयार होजाता है।

व्याख्या:—निम्बु के रस में साइट्रिक ऐसिड् हुआ करता है। उसमें खड़ी मिट्टी का चूर्ण मिला देने से उसका कार्बोनिक ऐसिड् गैस निकल जाता है। फिर चूना (लाइम) और साइ-ट्रिक ऐसिड् के संयोग से साइट्रिक ऑफ लाइम बनकर नीचे गिर जाता है। फिर इस द्रव्य को गन्धक द्रावक के साथ मिलाकर पकाने से उसका चूना सल्फ्यूरिक ऐसिड् के साथ मिल कर "सल्फेट् ऑफलाइम बनकर नीचे जमजाता है और साइट्रिक ऐसिड् उससे पृथक होकर पानी में घुला रह जाता है।

परीक्षा:—इसके दाने साफ स्वच्छ गन्ध व वर्ण रहित और अत्यधिक अम्लास्वाद होते हैं तथा पानी में घुल जाते हैं।

इसके घोल मे कार्बोनेट् ऑफ पोटास या कार्बोनेट ऑफ सोडा आदि मिलाने से इसमें उफान उठ आता है।

गुण:—शीतकारक होता है, ज्वर आदि रोगों में प्यास बुझाने के लिए कार्बोनेट ऑफ सोडा या कार्बोनेट ऑफ पोटास के साथ मिला कर इसका एफरवेसिंग ड्राफ्ट (उफान वाला पानीय) बना करके व्यवहार किया जाता है। मात्रा १० ग्रेन से $\frac{१}{२}$ ड्राम तक।

सिर्का।

मुनक्के का रस और जौ आदि से आसव तैयार हो जाने के बाद उसको वैसे ही कुछ और दिन तक रखे रहने से वह द्रव्य अधिक सडकर आसव की दशा से बदल कर सिर्का बनजाता है। यह जल के समान निर्मल स्व-च्छ होता है या कुछ थोडी लालि लिए हुए सिर्के की विशेष गन्धक वाला और अम्लास्वाद होता है। इसमें नीला लिटमसपेपर डुबोने से वह लाल होजाता है।

परिश्रुत सिरका:—सिर्के को कांच के बकयन्त्र में रखकर वालुका यन्त्र द्वारा आंचपर चढ़ा कर चुआने से परिश्रुत सिर्का तैयार होता है।

सिर्के के तेजाब (ऐसेटिक् ऐसिड्) को पानी में मिलाकर व्यवहार करने से सिर्का और परिश्रुत सिर्के का गुण करता है।

सिर्के के गुण:—थोडी मात्रा में व्यव-हार करने से यह शैत्य गुण करता है। इसके व्यवहार करने से प्यास कम होती है। शरीर की उष्णता और नाड़ी की तेजी कम होती है। इस लिए ज्वर और प्रदाह आदि रोगों में व्यवहार किया जाता है।

नाकसे, बवासीर के मस्सों से और स्त्रियों के गर्भाशय से अधिक खून गिरने पर सिर्के की

पट्टी आदि लगाने से खून गिरना बन्द होजाता है। शरीर के किसी भाग में चोट लगने पर या और किसी कारण उस जगह से खून गिरने पर वहां पर सिर्के की पट्टी बांधने से या इसका निषेक करने से खून गिरना बन्द होजाता है। शिर दर्द और उन्माद रोग (बावलापन) में और ज्वर रोग में प्रलाप की अवस्था में सिर्के में कपड़ा भिगो कर उसको मस्तक में लगाये रखने से यह अपनी शीतल क्रिया करके उपकार करता है। ज्वर की दाह से रोगी के अस्थिर व व्याकुल होनेपर सिर्का पानी में मिलाकर इससे रोगी के हाथ पैर आदि पोछने (मोछने) से दाह की बहुत कुछ शांति हो जाती है। मुख में या तालु में घाव होनेपर इसकी कुल्ली कराने से यह पचन (पकने) को रोकता है और दुर्गन्धि को भी नाश करता है।

इसके द्वारा चीजें सड़ने नहीं पाती। इसी लिए अचार आदि बनाने में और मरे हुए प्राणी को सड़ने से सुरक्षित रखने के लिए व्यवहार किया जाता है। दुर्गन्धि हटाने के लिए चिकित्सालयों में व्यवहार कराना चाहिये। सिर्का और परिश्रुत सिर्का तथा नीचे लिखा हुआ जल निश्रित सिर्का द्रावक की मात्रा १ ड्राम से २ ड्राम तक व्यवहार की जाती है।

कुल्लि और शरीर को पोंछने के लिए—सिर्का १ छटांक पानी ४ छटांक में मिलाकर व्यवहार करना चाहिये। इसको उबलते हुए गरम पानी में डालकर इससे उठी हुई भाफ सूंघने से खांसी में विशेष लाभ होता है।

सिरका द्रावक—इसको अंग्रेजी में ऐसेटिक ऐसिड कहते हैं।

बनाने की विधी—विविध प्रकार के वृक्षों की लकड़ी को लोहे के वकयन्त्र में रखकर चुआने से पाइरोलिग्नाइस् ऐसिड् नामक द्रव्य तैयार होता है। इसमें खड़िया मिट्टी का चूर्ण या कार्बोनेट औफ सोडा मिलाने से जो चीज तैयार होती है उसको फिर दूसरी बार गन्धक द्रावक मिला कर चुआने से सिर्का द्रावक (ऐसिटिक् ऐसिड्) तैयार होजाता है।

ऐसेटेट्स् औफ सोडा १ सेर (२ पौण्ड) गन्धक द्रावक ४॥ छटांक (९ औंस) साफ पानी ४॥ छटाँक, इन तीनों चीजों को एक साथ मिला कर कांच के वकयन्त्र में भरकर बालुका यन्त्र द्वारा आग पर चढ़ाकर चुआ कर सिर्का द्रावक तैयार होजाता है।

व्याख्या—सोडा और ऐसेटिक् ऐसिड् के संयोग से "ऐसेटेट् औफ सोडा" बनता है। इसको गन्धक द्रावक के साथ मिलाकर आगपर गरम करने से सोडे के गन्धक द्रावक के साथ मिलने से सल्फेट औफ सोडा बनकर वकयन्त्र में नीचे बाकी रह जाता है और उसमें से ऐसेटिक् ऐसिड् प्रथक् होकर निकल जाता है। इसी को सिर्का द्रावक कहते है।

सिर्का द्रावक की परीक्षा—यह देखने में जल के समान स्वच्छ होता है। इसमें सिर्के जैसी गन्ध होतीहै और यह अत्यधिक अम्लस्वाद होता है। इसमें नीले रङ्ग का लिट्मस् पेपर डुबाने से वह लाल होजाता है और इसमें कार्बोनेट औफ सोडा आदि डालने से उनका कार्बोनिक ऐसिड् वायु उथलकर निकल जाता है, और इसे द्रावक के संयोग से "ऐसेटेट्स्" किए बहुत से लवण

तैयार किये जाते हैं, जैसे ऐसेटेट् औफ सोडा या ऐसेटेट् औफ पोटास आदि।

गुण—इस सिर्का द्रावक की क्रिया अति तीव्र होती है। इसके शरीर में लगने से त्वचा लाल होजाती है और कुछ देरमें वहां पर फफोला पड़जाता है। इसके सेवन करने से इसकी तीव्र विष क्रिया द्वारा और २ पूर्व लिखित द्रावकों के समान विषक्रिया होकर रोगी की मृत्यु होजाती है इस सिर्का द्रावकमें पानी मिलाकर व्यवहार करने से यह परिश्रुत सिर्के का जैसे गुण करता है *

(क्रिमशः)

श्री० पं० महावीरप्रसादजी मालवीयके नाम खुली चिट्ठी



श्रद्धेय मालवीजी ! आपने आयुर्वेद के महत्वक शीर्षक लेख में आयुर्वेदका पूर्व इतिहासलिखते हुए मुझेमेरी स्वतन्त्र सम्मतिमें लिखी गई इन्जकशन चिकित्साके विषय में कुछ आपत्ति कीहै, आप आयुर्वेदीय चिकित्सा ही को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, यह तो सब लोग मानते हैं कि भारतवर्ष से यूनान और यूनान से यूरुपमेंही यह विद्या पहुंची, परन्तु जो लोग हमसे यह विषय सीखे उन्होंने इसमें इतनी छान बीन और उन्नति की कि अब हम लोगों को अपनी पुरानी बातें ही याद रहगई। जिस प्रकार अश्विनीकुमारों ने राजा दक्ष प्रजापति के कटे हुए शिर में बकरेका शिर जोड़ दिया था, क्या वर्त्तमान में कोई वैद्य ऐसा कर सकता है, जब हम अपनी विद्या को एक दम भुलाबैठे और यदि कोई आज भी उसका प्रति शोध करके वैसाही गुरुतर काम कर दिखावे तो उस समय हमारा यह कहना कि यह तो हमारे ग्रंथों में पहले ही से लिखा है अमुक ऋषि ने ऐसा किया था कहां तक न्याय सङ्गत है। क्या हम लोगों की आज यही दशा नहीं होरही है।

आज बीसवीं सदी में प्रवेश करके भी हम लोग वात पित्त और कफ जैसे आयुर्वेद के महत्वपूर्ण विषय का वास्तविक निर्णय नहीं कर सके, १७ वर्ष से देश का हजारों रुपया खर्च

*नोट—ऊपर जिन द्रावकों (तेजाबों) का वर्णन् किया गया है। ये सब तीव्र विषात्क होने के कारण मारात्मक हुआ करते हैं। इस लिये इनको हर समय सुरक्षित स्थान पर रखे रहना चाहिये तथा शीशी पर विष चिन्ह लगाये रखना चाहिये।　लेखक—

करकेभी आयुर्वेद महामण्डल जैसी वृहद् संस्थाने भी इस विषय का निर्भ्रान्त निर्णय नहीं किया क्या यह वैद्य समुदाय के लिये लज्जा की बात नहीं है, कहां हैं वे पांच प्रकार के वात, पांच प्रकार के पित्त और पांच प्रकार के कफ, क्या उनका स्वरूप है, शरीर में क्या उनका व्यापार है क्या उनकी गति है और क्या उनका आधार आदेश है।

माधवनिदान के अधिक विस्तृत निदान अर्वाचीन और प्राचीन नहीं मिलता क्या केवल माधव निदान ही हमें रोग, इन्फ्लूइन्जा, टाईफाइड. ज्वर, कोलाइटीज़, प्लोरिफ्रम आदि रोगों का विस्तृत ज्ञान पैदा कर सकता है?

चिकित्सा विषय में हम लोग अवश्य कुछ दावा कर सकते हैं परन्तु हमारी दवाइयों में हमें अभी वही कुचला, धतूरा, बत्सना आदि के शोधन वगैरह में अपने पुराने तरीके से काम लेना पड़ता है हमें शुद्ध और अशुद्ध द्रव्य के वास्तविक ज्ञान का कुछभी पता नहीं पड़ने पाता और जितने प्रयोग हैं उनमें हमें यह भी नहीं पता लगता कि किस द्रव्य के प्रभाव से ही यह योग विशेष उत्कृष्ट होजाता है अथवा निरर्थक द्रव्य इसमें कितने हैं और उन्हें अदन मिलाने की प्रथाबंद करदी जावे।

इनजक्शन चिकित्सा का आधार भूत भी तो हमारे देश की उत्पन्न हुई औषधियां ही हैं परन्तु उन दवाइयों का पश्चात्य चिकित्सकों ने यह तत्व अपने वैज्ञानिक ढङ्ग से निकाल लिया है जो कि सीधा रक्त द्वारा समस्त शरीर में पहुंचाया जाता है परन्तु हमें इसका इतना भी पता नहींहै कि दक्षिण प्रदेश में उत्पन्न होने वाले कुचला या वत्सनाभ में कितनी उग्रता होती है और उत्तर प्रदेश में उत्पन्न होने वालों में कितना सत्व या उग्रता होती है फिरभी हम अपनी शान में मस्त है, अपने रहें हमारे ज्वरः त्रिपाद्. त्रिशिरः आदि वाले आर्ष श्लोक और उन्हीं की टांग पूछ तोड़ मरोड़ कर लिखे गये नवीन विचार फिर क्या है हम श्रेष्ठ और हमारा आयुर्वेद श्रेष्ठ।

सम्भव है आपने आयुर्वेद के मर्म का भली भांति ज्ञान प्राप्त कर लिया हो और पश्चात्य चिकित्सकों तथा उनकी निर्माणकी हुई औषधियों की अपेक्षा आपकी औषधियां भी विशेष लाभप्रद हैं परन्तु एक व्यक्तिकी विज्ञता व सर्वज्ञता समाज की सफलता और विज्ञता नहीं कही जासकती। डाक्टरी कालेजों में ऐसी बात नहीं है वहां का पाठ्यक्रम प्रायः एकसा रहता है परन्तु हमारेयहां के विद्यालयों में बड़ी विभिन्नता है क्याही अच्छा हो कि आप वैद्य समाज को इन सब बातों की ज्ञान वृद्धि के लिये अपने विचार स्पष्ट रीति से प्रगट करना प्रारम्भ करदें इससे मुझ जैसे भ्रान्त वैद्यों का तो अवश्य उपकार होगा।

विनीत—

ब्रजभूषण कवि चतुर्वेदीय वैद्यराज



शीतला

लेखक—श्री अनूपलाल पाठक आयुर्वेदभूषण

"यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो ।
बौद्धाः बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः ॥
अर्हन्नित्यथ जैन शासनरताः कर्मेति मीमांसकाः ।
सोऽयंवो विदधातु वाञ्छित फलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥"

शीतला एक प्रकार का पिडकावाला संक्रामक रोग विशेष का नाम है। इस की संक्रामकता बड़ी भयङ्करी है। जिस घर में अथवा ग्राम में इन का प्रवेश होता है वहां के मनुष्यों को अपना भयङ्कर पराक्रम दिखाये बिना इनको किसी प्रकार चैन नहीं पड़ता। वह घर सौभाग्यशाली समझा जाता है जिस घर से दो एक प्राणी के ही निछावर दिये जाने पर वह अपना डेरा उठा लेता है। इन की संक्रामकता तथा दुःखदायिनी शक्ति इतनी भयङ्करी है कि जिस स्थान में इनका आगमन होता है वहां के मनुष्य इन के दर्शन ही से आधे मरे के समान हो जाते हैं और यदि कुछ अधिक समय तक इन के ठहरने का सामान दिखाई पड़ता तो फिर उनकी अवस्था पूछना ही व्यर्थ है। संसार के दुःखमय बन्धन से छुड़ा देना तो इनका साधारण धर्म ही है किन्तु जब कभी रोगी के आत्मियों

के आचालाप के कारण विरक्त होजाते हैं तो प्रायः रोगी को अपने क्राध सूचक में कुरूपी बना आखिमयों की ही सेवा करने को छोड़ जाते हैं। बिना किसी प्रकार का चिन्ह दिये छोड़ देना इनके लिए नीति विरुद्ध है। यह रोग अधिकतर बालक को ही होता है। बड़े आदमियों को कम होता है। इस की उत्पत्ति का आदि कारण माता के गर्भाशय वाले दो पादप अण्डों का रज है। शीतला, मसूरिका, वसन्त और माता आदि कई नामों से यह जगत्विख्यात है। इस रोग को लैटिन भाषा में वेरिओला (Veriola), अङ्गरेजी में स्माल पाक्स (Smallpox) तथा यूनानी में चेचक कहते हैं।

इस रोग में शीतल वस्तुओं की अधिक इच्छा होती है इस लिये इसका नाम शीतला है। मसूर के समान प्रायः इस की आकृति देखी गई है इस लिये इस को मसूरिका कहते हैं। वसन्त ऋतु में इस का प्रसार अधिक होता है। इस लिये इस का नाम वसन्तहै औरमाताके रजसे इसकी आदि उत्पत्ति है इस लिये इसको माता कहते हैं।

स्त्रियों के गर्भाशय में १५ अण्डे अञ्जीर के फल सदृश होते हैं उन में से १ पुरुष के वीर्य्य को ग्रहण करता है, १२ गर्भ को धारण करते हैं और २ जिन का नाम पादप है इन के द्वारा गर्भिणी के भक्ष्य पदार्थों का रस गर्भस्थ बालक के शरीर में जाता है। इन दोनों पादप अण्डों में गर्भधारण करने के समय कुछ रजस्वला का रक्त ईश्वरीय नियम रूप अवश्य ही रह जाता है और वह सूख कर विष के समान हो जाता है। इस सूखे हुए विषतुल्य रज का अंश दोनों पादप अण्डों से गर्भस्थ बालक के शरीर में प्रविष्ट होता है और अवस्था के अनुसार क्रमशः २ रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि मज्जा और शुक्र इन धातुओं में पहुंच जाता है

शीतला यदि एक वर्ष की उमर में निकले तो उसका बीज रस होता है। दूसरे वर्ष रक्त में, तीसरे चौथे वर्ष मांस में, पांचवे वर्ष मेद में, छटे वर्ष से दसवें वर्ष तक अस्थि में, दसवें वर्ष से २० वें (बीसवें) वर्ष तक मज्जा में और बीसवें वर्ष से चालीसवें वर्ष तक शुक्र में रहता है। किन्हीं २ ग्रन्थकारों का मत है कि इस का बीज शुक्र में प्रायः नव्वे (९०) वर्ष तक रहता है। जब तक इस का बीज रस, रक्त तथा मांस में रहता है तभी तक यह विशेष निकलती है उस के बाद इस के निकलने का भय कम रहता है किन्तु भय रहता अवश्य है। भाव प्रकाश, मध्यम खण्ड मसूरिकाधिकार में लिखा है :—

"कट्वम्ल लवणक्षारविरुद्धाध्यशना शनैः।
दुष्ट निष्पावशाकाद्यैः प्रदुष्ट पवनोदकैः ॥
क्रूर ग्रहेक्षणाच्चापि देशे दोष समुद्भवाः।
जनयन्ति शरीरेऽस्मिन्दुष्ट रक्तेन संगताः ॥
मसूराकृति संस्थानाः पिडकास्तामसूरिकाः।

अर्थात्—कटु अम्ल, लवण तथा क्षारविशिष्ट द्रव्यों के सेवन करने से, विरुद्ध पदार्थ खाने से, अधिक भोजन करने से, दूषित सोम और दूषित शाकादि के सेवन करने से, दूषित जल वायु के सेवन करने से, देश में राहु तथा शनिवार आदि क्रूर ग्रहों की दृष्टि पड़ने से वातादि दोष कुपित होकर दूषित हुए रुधिर के साथ मिल कर मसूर के समान आकारवाली जो पिड़का उत्पन्न करते हैं। उस को मसूरिका कहते हैं।

मसूरिका रोग के उत्पन्न होने में जो सब उपरोक्त कारण वर्णन किये गये है उन कारणों की सहायता से प्रथम पित्त कुपित होता है। इसके बाद यह दूषित पित्त रक्त के दूषित होने पर पादप अण्डों द्वारा आया हुआ शीतलांकुर भी बलवान् होजाताहै। तीनों जब रोगोत्पादक सीमे पर पहुंच जाते हैं तो शरीर के त्वक् में आकर गोटी उत्पन्न कर देते हैं। इस प्रकार रोग की उत्पत्ति तथा पुष्टि होजाने पर भी गोटी तुरत नहीं निकल जाती है। प्रथम यह दो एक दिन तक शरीर में गुप्त भाव से छिपा रहता है उसके बाद आहिस्ते २ शिर में दर्द शिर और शरीर में भारीपन, आंख से पानी गिरना मुख का स्वाद विगड़ जाना, क्षुधा का मन्द होना अरुचि, अरति, अशान्ति, ठीक निद्रा का न होना, दुर्बलता, भयानक स्वप्नों का देखना, शरीर कावर्ण बिगड़ जाना, चक्षु, मुख तथा प्रायः समूचे शरीर का रंग लोहित वर्ण सा दिखाई देना आदि लक्षण हो जाते हैं। रोगके प्रबल आक्रमण के रूप में त्वक् का अत्यन्त लाल हो जाना, ज्वर का वेग प्रबल होना तथा कम्प होना ये लक्षण हो जाते हैं।

शीतला रोग के ये पूर्व लक्षण प्रायः २ दिन रहते हैं। तीसरे दिन गोट बाहर निकल आती है। किन्तु यह नियम सर्वत्र नहीं देखा जाता। कहीं २ गोटी का निकलना चौथे, पांचवें, छटे, सातवें, आठवें वा इससे भी अधिक दिनों में देखा गया है इन पिडकाओं का देर से निकलना वा शीघ्र निकलना अधिक संख्या में होना वा कम संख्या में होना शीतलांकुर तथा उन के सहायक पित्त और रक्त की प्रबलता तथा अबलता पर निर्भर है।

गोटियों की संख्या साधारणतः १०० से ३०० तक होती है किन्तु रोग के अधिक प्रबल हो जाने पर इसकी संख्या प्रायः १००० तक हो जाती है। ३०० पिडिका रहने पर भी रोगी की अवस्था प्रायः सांघातिक ही रहती है। इस अवस्था में ज्वर का वेग प्रायः अत्यन्त प्रबल रहता है सर्वदा वमनोद्वेग, गात्रवेदना, प्रलाप, मूर्च्छा और अस्थिरता प्रभृति उपसर्ग भी साथ २ बढ़ते जाते हैं। और कभी २ तो संज्ञालोप भी होजाता है। गोटियों के कम निकलने पर ज्वर अथवा अन्यान्य उपसर्ग इस प्रकार प्रबल नहीं होते हैं और रोगी भी अनायास आरोग्य होजाता है। प्रायः ८—६ दिनमें अथवा इससे भी कुछ अधिक समय में गोटी पकजाती है और पक जाने पर कभी २ तो स्वयं ही फट जाती है और कभी २ कांटा आदि से फोड़कर पूयादि निकाल देना पड़ता है। पूयादि के निकल जाने पर व्रण स्थान पर पपड़ी पड़जाती और पपड़ी के सूख कर गिर जाने पर वह स्थान प्रथम लाल वर्ण का होजाता है। कहीं २ गोटी को फोड़ने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती वह स्वयं ही बिना फूटे सूखजाती है।

शीतला रोगांकुर शीतला रोग की गुटिका और शोणित में रहता है और रोगी के गात्र संस्पर्श, निःश्वास, उसके बिछावन पर सोने से उसके आसन पर बैठने से अथवा रोगी के पहरे हुए वस्त्रों को पहरने से यह बीज एक देहसे दूसरे शरीर में प्रवेश करते हुए यह रोग देशव्यापी हो जाता है और समय आने पर जब इसके कारण अबल होजातेहैं तो यह रोग स्वयं आहिस्ते २ शांत होजाता है। इस रोग की संक्रामकता के कारण के विषय में दूसरे विद्वानों का कहना है कि जिस प्रकार अपने ऋतु में बोया हुआ बीज अंकुरित होकर अपनी गंध से पृथ्वी में दबे हुए दूसरे २ बीजों को भी अंकुरित कर देते हैं उसी प्रकार मसूरिका बीज भी एक जगह किसी के शरीर में

अंकुरित होकर अपनी गंध से (जिस को गंध लगेगा और जिनके शरीर में अंकुरित होने योग्य बीज रहेंगे) दूसरे शरीर में छिपे हुए शीतलांकुरों को भी अंकुरित कर देती है। इसी कारण से जब यह एक घर में उत्पन्न होता है। तो अन्य पड़ोसी घरों में भी अवश्य हो जाता है।

मसूरिका, कोद्रवा, पाणिसहा, सर्षपिका, दुःखकोद्रवा, हाम और चर्मनी इन सात प्रसिद्ध भेदों से यह रोग जगत्‌विख्यात है। आयुर्वेद शास्त्र से अनभिज्ञ पुरुषों के निकट यह रोग इन ही सात भेदों में विभक्त है किन्तु यथार्थ में दोष दूष्यादि भेद से यह अनेक प्रकार का होता है। शार्ङ्गधर संहिता में लिखा है:—

"चतुर्दश प्रकारेण त्रिभिर्दोषैस्त्रिधा च सा।
द्वन्द्वजा त्रिविधा प्रोक्ता सन्निपातेन सप्तमी॥
अष्टमी त्वग्गता ज्ञेया नवमी रक्तजा मता।
दशमी मांसजा ख्याता चतस्रोऽन्याश्च दुस्तराः॥
मेदोऽस्थिमज्जाशुक्रस्थाः" (क्षुद्ररोगाद्दीरिताः)।

अर्थात्—मसूरिका रोग चौदह प्रकार का है (१) वातजा, (२) पित्तजा, (३) श्लेष्मजा, (४) वात पित्तजा, (५) वात श्लेष्मजा (६) पित्त श्लेष्मजा (७) सन्निपातजा (८) त्वग्गता (९) रक्तजा (१०) मांसजा (११) मेदोगता (१२) अस्थिगता (१३) मज्जागता और (१४) शुक्रगता।

भाव प्रकाश में चर्मगता मसूरिका और रोमगता मसूरिका ये दो नाम अधिक देखे जाते हैं।

शीतला का पूर्व रूप

"तासां पूर्वं ज्वरः कण्डूर्गात्रभंगोऽरतिर्भ्रमः।
त्वचि शोथः सवैवर्ण्यो नेत्र रागस्तथैवच॥

अर्थात्—जब शीतला रोग होने को होता है तो प्रथम ज्वर आता है, खुजली होती है, अङ्ग टूटने लगते हैं, किसी पदार्थ पर रुचि उत्पन्न नहीं होती, भ्रम होता है, त्वचा में सूजन होती है, वर्ण बदल जाता है और नेत्रों में लाली होती है।

शीतला के प्रत्येक भेदों का लक्षण

मसूरिका

"ज्वर पूर्वा बृहत्स्फोटैः शीतला बृहती भवेत्।
सप्ताहान्निः सरत्येव सप्ताहात्पूर्णतां व्रजेत्॥
ततस्तृतीये सप्ताहे शुष्यति स्खलित स्वयम्"

अर्थात्—प्रथम ज्वर आकर पश्चात् बड़ी फुंसी शरीर में उत्पन्न होजायं तो वह बड़ी शीतला कही जाती है। यह शीतला प्रथम सात दिन में निकलती है, फिर सात दिन में भरजाती है और तीसरे सप्ताह में सूख जाती है और अपने आप झड़ जाती है।

कोद्रवा

"वात श्लेष्मसमुद्भूता कोद्रवा कोद्रवाकृतिः।
तां कश्चित्प्राह पक्वेति सातुपाकं न गच्छति॥
जल शूक वदंगानि सा विध्यति विशेषतः।
सप्ताहाद्वा दशाहाद्वा शान्ति याति विनौषधम्॥"

अर्थात्—वात और कफ से उत्पन्न हुई और कोदो के समान आकार वाली जो शीतला होती है उसको कोद्रवा कहते हैं अनजान मनुष्य इस शीतला को पकने वाली कहते हैं किंतु यथार्थ में यह शीतला पकती नहीं है। यह शीतला विशेष करके जल के शूक नामक कीड़े के समान अङ्गों को वेधन करती है और सात दिन में या दश दिन में विना औषधि के ही शांत होजाती

है। यह कोद्रवा "कोदवा माय" नाम से अधिक प्रसिद्ध है।

पाणिसहा

ऊष्मणा तूष्मजा रूपा सकण्डूः स्पर्शन प्रिया ।
नाम्नापाणिसहाख्याता सप्ताहाच्छुष्यातिस्वयम्॥"

अर्थात्—जो शीतला गरमी के कारण राई के समान आकार वाली खुजली युक्त और जिसके ऊपर हाथ आदि का स्पर्श प्रिय लगे वह पाणि-सहा कही जाती है और वह शीतला सात दिन में अपने आप सूख जाती है। यह "पनसाहामाय" नाम से अधिक प्रसिद्ध है।

सर्षपिका

"चतुर्थी सर्षपाकारा पीत सर्षप वर्णिनी ।
नाम्ना सर्षपिका ज्ञेयाऽभ्यङ्ग मत्र विवर्जयेत ॥"

अर्थात्—जो शीतला सरसों के समान आकार वाली; और पीले सरसों के समान वर्ण वाली हो वह सर्षपिका कही जाती है। इस शीतला में अभ्यङ्ग का त्याग करना चाहिये।

दुःख कोद्रवा

"किञ्चिदूष्म निमित्तेन जायते राजिकाकृतिः ।
एषा भवति बालानां मुखं शुष्यति च स्वयम् ॥

अर्थात्—जो शीतला कुछेक गरम रूपी कारणों से बालकों के मुख पर राई के समान आकार वाली हो वह दुःख कोद्रवा कही जाती है और वह शीतला अपने आप सूख जाती है।

हाम

"कोष्ठ वज्जायते षष्ठी लोहितोन्नत मण्डला ।
[ज्वरपूर्वा व्यथायुक्ता ज्वरास्तिष्ठेद्दिन त्रयम् ॥"

अर्थात्—प्रथम ज्वर आकर जो शीतला कोढ़ के समान लाल वर्ण तथा ऊंचे मण्डल वाली और व्यथायुक्त होती है वह मगध देश में "हाम" नाम से प्रसिद्ध है। इस शीतला का ज्वर तीन दिन तक रहता है।

चर्मनी

"स्फोटानां मेळनादेशा बहुस्फोटाऽपि दृश्यते ।
एकस्फोटे च कृष्णा च बोधव्या चर्मनाभिधा ॥"

अर्थात्—एक फुन्सी के दूसरी फुन्सी में मिल जाने से अनेक दिखाई दें अथवा जो शीतला एक स्फोट में काली हो तो चर्मनी कही जाती है यह "चमरिया माय" के नाम से अधिक प्रसिद्ध है

वातजा मसूरिका

स्फोटाः कृष्णारुणा रूक्षास्तीव्र वेदनयान्विताः ।
कठिनाश्चिरपाकाश्च भवन्ति अनिल सम्भवाः"

अर्थात्—काली, लाल, रूखी, तीव्र वेदना वाली, कठिन, और बहुत समय में पकने वाली, फुन्सी यदि उत्पन्न हों, तो जानना चाहिये कि वात से मसूरिका उत्पन्न हुई है। यह लाखड़ा कालड़ा नाम से प्रसिद्ध है और वैद्यक में इसका नाम शराविका है।

पित्तजा मसूरिका

"सन्ध्यस्थिपर्वणां भेदः कासः कम्पोऽरतिर्भ्रमः।
शोषस्ताल्वोष्ठजिह्वानां तृष्णा चारुचिसंयुता ॥
रक्ताःपीताः सिताः स्फोटाः सदाहास्तीव्रवेदनाः।
भवन्त्यचिरपाकाश्च पित्त कोपसमुद्भवाः ॥"

अर्थात्—पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हुई मसूरिका में सन्धि, अस्थि और पर्वों में भेदन

शरीरकी पीड़ा होती है, खाँसी, कम्प, अरति, भ्रम, तालु, होठ और जीभ का सूखना, अरुचि के साथ प्यास का बढ़ना आदि लक्षण होते हैं। फुन्सी लाल, पीली, सफेद दाहयुक्त और तीव्र पीड़ा वाली होती है तथा शीघ्र पक जाती है। इसको वैद्यक में कच्छुपिका कहते हैं। किसी २ ग्रन्थ में "कच्छिपका" इस प्रकार भी लिखा है। प्रचलित भाषा में यह "खसरा" नामसे प्रसिद्ध है।

कफजा मसूरिका

"श्वेताः स्निग्धा भृशंस्थूलाः कण्डूरा मन्दवेदनाः।
मसूरिकाः कफोद्भूताश्चिरपाकाः प्रकीर्तिताः॥"

अर्थात्—कफ के प्रकोप से जो मसूरिका होती है वह सफेद, चिकनी, अत्यन्त मोटी खुजली युक्त, मन्दवेदना वाली और बहुत देर में पकने वाली होती है। इसको वैद्यक में "जालिनी" और प्रसिद्ध भाषा में "दहल" कहते हैं।

वातपित्तजा मसूरिका

"मसूरिकाभिभूतो यो भृशं घ्राणेन निःश्वसेत्।
स भृशं त्यजति प्राणांस्तृष्णार्तो वायुदूषितः॥

अर्थात्—मसूरिका वाला रोगी जो व्याकुल अधिक हो, नासिका से ही श्वास ले सकता हो, प्यास से पीड़ित हो, उसको वात पित्त से पीड़ित समझना चाहिये। ऐसा रोगी बहुत शीघ्र मर जाता है। इसकी गोटिओं का स्वरूप कछुए के पीठ के समान होता है। इसको वैद्यक में शराव कूर्मा कहते हैं।

वातकफजा मसूरिका

"कासोहिक्का प्रमेहश्च ज्वरस्तीव्रः सुदारुणः।
प्रलापश्चारतिर्दाहस्तृष्णामूर्च्छाति घूर्णिता॥
वातश्लेष्मभवाचापि कण्डूशूक मिवावृता॥"

अर्थात्—वातश्लेष्म से उत्पन्न हुई मसूरिका में कास, हिक्का प्रमेह, तीव्रज्वर, दारुण प्रलाप, अरति, दाह, तृष्णा, मूर्च्छा, घुमनी आदि लक्षण होते हैं तथा पिडकाओं में बड़ी नोचनी होती है। इसको वैद्यक में शराव जालिनी कहते हैं।

पित्त कफजा मसूरिका

"मुखेन प्रस्रवेद्रक्तं तथा घ्राणेन चक्षुषा।
कंठेघुर्घुरकं कृत्वा श्वसित्यत्यर्थ दारुणम्॥
मसूरिकाभिभूतस्य पश्यतानि भिषग्वरैः।
लक्षणानि प्रदृश्यन्ते न देय तस्य भेषजम्॥"

अर्थात्—मुख नाक तथा नेत्रों में से रुधिर का स्राव, कण्ठ में घुर २ शब्द का होना और दारुण श्वास ये सब लक्षण हों तो उसको कफपित्त से उत्पन्न हुआ कहना चाहिये। यह असाध्य है अतः इसमें औषधि नहीं देनी चाहिये। "कच्छप जालिनी" नामसे यह प्रसिद्ध है।

सन्निपातजा मसूरिका

"नीलाश्चिपिटाविस्तीर्णा मध्ये निम्ना महारुजः।
पूतिस्रावाश्चिरात्पाकाः प्रभूताः सर्व दोषजाः॥"

अर्थात्—त्रिदोष से उत्पन्न हुई मसूरिका नीली, चिपटी, विस्तृत, बीच में धसी हुई, अत्यन्त वेदनायुक्त, दुर्गन्ध स्राव वाली और बहुत देर में पकने वाली होती है। इसका नाम 'सर्षपिका' कहा जाता है।

चर्मगता मसूरिका

"कण्ठ रोधोऽरुचिस्तन्द्रा प्रलापाऽरति संयुताः।
दुश्चिकित्स्याः समुद्दिष्टाः पिडकाश्चर्म संस्थिताः॥"

अर्थात्—कण्ठ रुक जाय, अरुचि, तन्द्रा प्रलाप, और बेचैनी हो तो मसूरिकाओं को चर्मजा जानना चाहिए। ये चर्म गत मसूरिका कष्टसाध्य

हैं। इसका नाम पुत्रिणी है और यह "तुरखी" और "तुरकी" नाम से अधिक प्रसिद्ध है।

रक्तजा मसूरिका

"विड् भेदश्चाङ्गमर्दश्च दाहस्तृष्णा रुचिस्तथा।
मुख पाकोऽक्षिपाकश्च ज्वरस्तीव्रः सुदारुणः॥
रक्तजायां भवन्त्येते विकाराः पित्तलक्षणाः॥

अर्थात्—रुधिर के प्रकोप होने से जो मसूरिका उत्पन्न होती है उसमें अतीसार, अङ्गों का टूटना, दाह, प्यास लगना, अरुचि, मुखमेंपाक आंखों का पकना और अत्यन्त दारुण तीव्र ज्वर होता है और इसमें सब लक्षण पित्तज मसूरिका के समान होतेहैं। यही माता "बड़ी माई,, के नाम से प्रसिद्ध है। इसका नाम मसूरिका है।

रोमगतामसूरिका

"रोम कूपोन्नतिसमा रागिण्यः कफ पित्तजा।
कासारोचक संयुक्ता रोमान्त्या ज्वापूर्विकाः॥"

अर्थात—जिसमें प्रथम ज्वर आवे, रोमों के छिद्रों के तुल्य बहुत छोटी २ लाल २ फुसियां हों तथा खांसी और अरोचक साथ २ हो तो उसका रोमगत मसूरिका समझना चाहिए। यह मसूरिक कफ पित्त से होती है। इसका नाम विदारिका है और "हंसनी खेलनी" नाम से अधिक प्रसिद्ध है।

रसगता (त्वग्गत्) मसूरिका

"मसूरिका स्त्वचं प्राप्तास्तोय बुद्बुद सन्निभाः।
स्वल्पदोषाः प्रजायन्ते भिन्नास्तोयं स्रवन्तिच॥"

अर्थात्—रसमें होने वाली मसूरिका अल्प दोष वाली होतीहै। इसकी आकृति पानी के बबूले के समान होती है और इसके फोड़ने से जलका स्राव होता है। इसका नाम "चर्मरोका" है।

रक्तगता मसूरिका

"रक्तास्थालाऽऽहताकाराः शीघ्रपाकास्तनु त्वचः।
साध्या नात्यर्थ दुष्टास्तु भिन्नारक्तं स्रवन्ति च॥"

अर्थात्—रुधिर में होने वाली मसूरिका लाल आकार वाली, तत्काल पकने वाली और पतली त्वचा वाली होती है। इस के फोड़ने पर उस में से रुधिर निकलता है। रुधिर में रहने वाली मसूरिका जो अत्यन्त दुष्ट रुधिर वाली न हो तो कष्ट साध्य है इस का नाम विद्रधि है। इस के आराम होने पर प्रायः त्वचा का रङ्ग पूर्ववत हो जाता है, कोई चिन्ह शेष नहीं रहते हैं। इस लिये कोई २ इसको "अभय" नाम से भी पुकारते हैं।

मांसगता मसूरिका

"मांसस्थाःकठिनाः स्निग्धाश्चिरपाकास्तनुत्वचः।
गात्रशूलाऽनिशंकण्डू मूर्च्छा दाह तृषान्विताः॥"

अर्थात्—मांस में रहने वाली मसूरिका कठिन, स्निग्ध, बहुत समय में पकने वाली और पतली त्वचा वाली होती है। इनके होने पर गात्रों में शूल निरन्तर खुजली, मूर्च्छा, दाह तथा तृषा ये लक्षण होते हैं। इस का नाम "पिडका" है।

मेदोगता मसूरिका

मेदोजा मण्डलाकारा मृदवः किंचदुन्नताः।
घोरज्वर परीताश्च स्थूला स्निग्धाः सवेदनाः॥
संमोहाऽरतिसन्तापाः कश्चिदाभ्यो विनस्तरेत्॥,

अर्थात्—मेद में होने वाली मसूरिका मण्डलाकार वाली कोमल, किञ्चिदुन्नत, घोर ज्वर से व्याप्त, स्थूल, स्निग्ध, वेदनायुक्त, बेहोशी, व्याकुलता और सन्ताप से युक्त होती है। इन मसूरिकाओंसे कोई२ बचताहै प्रायःइस से पीड़ित होने वाले मर ही जाते हैं। इसका नाम "अञ्जलिका" है।

अस्थिगता मसूरिका

और

मज्जागता मसूरिका

क्षुद्रा गात्र समा रूक्षाश्चिपिटाः किञ्चिदुन्नताः ।
मज्जोत्था भृश सम्मोहा वेदनारति संयुताः ॥
भ्रमरेणेव विद्धानि कुर्वन्त्यस्थीनि सर्वतः ।
छिन्दन्ति मर्मधामानि प्राणानाशु हरन्ति च ॥"

अर्थात्—अस्थि तथा मज्जा में रहने वाली मसूरिका क्षुद्र होती है, शरीर के रङ्ग के समान वर्ण वाली होती है. रूखी चिपटी, कुछेक ऊंची, अत्यन्त मोह, वेदना और व्याकुलता से पीड़ित होती है। मज्जा ही हड्डियों का सार तथा हड्डियों को रोकने वाली है। जब तक हड्डियों में मज्जा रहती है तभी तक उसकी दृढ़ता है। भौंरों से विद्ध के समान हड्डी चारों ओर से होती है, मर्म स्थानों को छेदन कर देती है। और प्राणों को तत्काल नष्ट कर देती है इसका नाम "मधुरुखा" है।

शुक्रगता मसूरिका

"पक्वाभाःपिडकाःस्निग्धाःश्लक्ष्णाश्चात्यर्थवेदनाः
स्तैमित्याऽरति संमोह दाहोन्माद समन्विताः ॥
शुक्रजायां मसूर्यान्तु लक्षणानि भवन्ति हि ।
निर्दिष्टं केवलं चिन्हं जीवनं नतु दृश्यते ॥"

अर्थात्—वीर्य्य में रहने वाली मसूरिका पकती नहीं किंतु पके हुए के समान होती है। यह स्निग्ध, कोमल, अत्यन्त वेदना वाली स्तब्ध-बेचैनी, मोह दाह तथा उन्माद युक्त होती है। यह वीर्य्यगत मसूरिका केवल लक्षण के लिये कही गई है चिकित्सा के लिये नहीं क्योंकि इस से बचना बड़ा कठिन है। इस का नाम "तुलक्षणा" है।

सुखसाध्या मसूरिका

"त्वग्गता रक्तजाश्चैव पित्तजाः श्लेष्मजास्तथा।
श्लेष्मपित्तकृताश्चैव सुखसाध्या मसूरिकाः ॥
एता विनापि क्रियया प्रशाम्यन्ति शरीरिणाम् ॥"

अर्थात्—रसमें उत्पन्न हुई, रुधिर में उत्पन्न हुई, पित्त से उत्पन्न हुई, कफ से उत्पन्न हुई और कफ तथा पित्त दोनों से उत्पन्न हुई मसूरिका सुख साध्य है। प्राणियो के उत्पन्न हुई मसूरिका चिकित्सा के बिना भी शान्त हो जाती है।

कष्टसाध्या मसूरिका

"वातजा वात पित्तोत्था वातश्लेष्मकृताश्च याः ।
कष्ट साध्या असाध्यास्तु यत्नादेता उपचरेत् ॥

अर्थात्—वातजा, बात और पित्त दोनोंसे उत्पन्न हुई, तथा वायु और कफ इन दोनों से उत्पन्न हुई मसूरिका कष्ट साध्यहै इस लिये इनकी चिकित्सा यत्नपूर्वक करनी चाहिए। क्रमशः

(वैद्य स० पत्रिका)



रुदन्ती (रुद्रवन्ती)

[लेखक—श्रीमान् बा० रूपलालजी वै० वनस्पति विज्ञान बनारस]

अनेक भाषा के नामः—

सं०—रुदन्तीतु स्रवत्तोया सजीवन्यमृतस्रवा।
रोमाञ्चिका महामांसी चणपत्री मधुस्रवा।

रुदन्ती, स्रवत्तोया, संजीवनी, अमृतस्रवा, रोमाञ्चिका, महामांसी, चणपत्री, मधुस्रवा। (रुदन्तिका, सुधास्रवा)

हि०—रुद्रवन्ती, रुद्रदन्ती, संजीवन बूटी।

बं०—रुदन्ती। मु०—खरदी।

म—रुदन्ती, लाणा, लाणो, राणहरभरा।

गु०—पलियो। सिन्ध०—गून।

क०—अलुगुधि, अलुगणी, अडिवेकडेले, मोनसुचक।

नासिक—चवेल। तै०—उप्पुसनगा।

ले०—Cressa Cretica

शास्त्रकारों ने कहा है कि "रुदन्ती" एक दिव्यौषधि वर्ग की दुष्प्राप्य तथा अचिन्त्य शक्ति वाली महौषधि है। यह शिवालय के निकट पर्वतों की कन्दरा में, दुर्गम स्थान, धर्म स्थान, किलों में, पुण्य क्षेत्रों में, और प्रायः देवागरों के समीप कहीं २ पाई जाती है।

परन्तु आज कल भारतवर्ष के अनेक उष्ण भागों में, समुद्र की तट के पास, मुलतान, सिन्ध, गुजरात, कारोमण्डल के किनारे तथा सिलोन में उत्पन्न होती है।

अब प्रश्न यह है कि जिस "रुदन्ती" नाम वाली दिव्यौषधि को शास्त्रकारों ने दुष्प्राप्य बतलाया है क्या वही "रुदन्ती" हमें प्राप्त होती है ! विद्वानों का कहना है कि जिस बूटी को "रुदन्ती" के नामसे हम प्राप्त कर रहेहैं वह वास्तवमेंशास्त्रीय "रुदन्ती"नहीं है बल्कि वह "रुद्रवन्ती"नाम धारिणी महौषधि "रुदन्ती" के नामसे ग्रहण की जाती है। असली "रुदन्ती" तपस्वियों को ही पर्वत की कन्दरा एवं पुण्य क्षेत्रमें प्राप्त होतीहै और तिब्बत में भी मिलती है।

शास्त्रकारों ने इसकी पहचान में दो बातों की विशेषता दी है,—यथा—

चणपत्रो पत्रे पत्रेयु क्षौभो बिन्दु वर्षिणी, अर्थात् चने के पत्तों के समान पत्तों का होना और इससे ओस की बूंद की समान बूंद का टपकना।

भारतवर्ष में जो आजकल "रुदन्ती" या रुद्रवन्ती पाई जाती है उसी का चित्र यहांपर दिया जाता है। इसका क्षुप छोटे चने के क्षुप के समान ६ इञ्च से एक फुट तक ऊंचा, गुच्छाकार, शाखा प्रशाखाओं करके सघन और चमकदार होता है। नीचे की अपेक्षा ऊपर वाली डंडियां पतली होती जाती हैं। इसकी जड़ भूमिके भीतर एक फुट तक घुसी रहतीहै जो लाली मिश्रित पीले रङ्ग की दीख पड़ती है। पत्ते चने के पत्तों के आकार के कंगूरे रहित होते हैं परन्तु प्रधान पत्ते उनसे कुछ छोटे और छोटी २ शाखाओं के पत्ते बारीक एवं सघन रहते हैं तथा वे विषम वर्ती लगते हैं। ये पत्ते इतने सघन होते हैं कि इसकी बारीक शाखें उनसे छिप जाती हैं। इसकी शाखें और पत्ते अत्यन्त बारीक रेशम के समान कोमल रोवें से ढके रहते हैं जिससे इसका क्षुप चमकीला दीख पड़ता है। वे ओस की बिंदुओं से ढके हुये होते हैं और शरद ऋतुमें जलकी बूंदें टपका करती हैं। इसी कारण मुनिश्वरों ने इसको "रुदन्ती" कहा है। इसके क्षुप के नीचे की भूमि जलकी बूंदों से भीगी हुई रहती है और वहाँ पर चींटियों का वास रहताहै। फूल शाखाओं के अंत में पत्र कोणों पर गुच्छाकार नन्हे नन्हे होतेहैं और वे जामुनी रंग के दीख पड़ते हैं। काले, पीले, लाल और सफेद फूलों के भेद से वह चार प्रकार की होती है। यहां पर जिसका चित्र दिया जाता है उसका फूल बैंजनी अथवा पके जामुन के समान होता है, सम्भवत् इसी को काले फूलकी रुद्रवन्ती कहते हैं। बीज कोष नन्हे नन्हे किंचित लम्बाई युक्त गोल होते हैं। स्वाद में किंचित खारी और खट्टी जान पड़ती हैं। इसका क्षुप खारी भूमि और जल के निकटस्थ जमीन में अधिक पाया जाता है।

श्रीमान् के० एल० शर्मा हलद्वानी से लिखते हैं कि रुद्रवन्ती जिला फतहपुर, स्टेशन खागा-मझलेगा के तालाब पर पाई जाती है। यह अन्धेरी रात में झलमलाती है और रुद्रवन्ता भी झलझलाता है मगर रुद्रवन्ता खाने में कड़वा होता है। आपने यह नहीं बतलाया कि रुद्रवन्ता और रुद्रवन्ती के आकारादि में अंतर क्या है!। जिन महानुभावों ने रुद्रवन्ती के नमूने भेजे हैं। वे यह बतलाने की कृपा करें कि क्या वे अपनी आँखों से देखा है कि वास्तव में (१) इसका क्षुप अंधेरी रात में झलझलाता है, (२) पत्तों से जल की बूंदें टपका करती है, (३) और क्षुप के नीचे की भूमि गीली रहती है तथा (४) वहां चिंटियां

रहतीहैं। और रसायन शास्त्री श्रीभागीरथ स्वामी तथा अन्य विद्वानों वैद्यों से सादर निवेदन है कि वे भी रुदन्ती पर अपनी २ सम्मति प्रगट कर यह बतलावें कि रुद्रवन्ती हमें प्राप्त होती है। वही शास्त्रोक्त रुदन्ती है अथवा रुदन्ती कोई और बूटी है।

आ. म. गुणदोष—चरपरी, कडवी, गरम रसायन, अग्निजनक, वीर्य्य वर्द्धक, तथा श्वास, कृमि, रक्तपित्त, कफ, पित्त, और प्रमेह को नष्ट करने वाली, एवं पारे को बांधने वाली है।

यू. म. गुण दोष-गरम और रूक्ष, शरीरको बलदायक,बृहणता जनक, क्षुधा वर्द्धक, पाचनशक्ति और ओजको बलकारी, मस्तिष्क और उदर सम्बन्धी अवयवों को हानि कारक एवं अफरा करने वाली है दर्प नाशक मिश्री, मात्रा १ से ३ मासे।

डाक्टरी सम्मतियाँ-इसका काढ़ा व्यवहार में आताहै। यह रक्त शोधक,बलकारी, कफनिस्सारक प्रसन्नतादायक और सन्धियों को बलदायक है।

प्रयोगः—(१) यह रसायन और बलवर्द्धकहै। इस के काढ़े का सेवन करने से सूखी खांसी शान्त होती है। (२) इस के पचाग के चूर्ण को मधु के साथ सेवन करने से कफ रोग आराम होता है। (३) इसके पञ्चांग के काढ़े में मधु मिलाकर पान करने से श्वास रोग दूर होता है। (४) स्त्रियो का दूध बढ़ाने के लिये इसके पचांग को दूध में औटाकर पिलाना चाहिये (५) रक्त पित्त में इसके पचांग का बफारा नासिका द्वारा लेना चाहिये। (६) विषैले जीवों के दंश पर रुद्रवन्ती और वायबिडग के सम भाग चूर्ण को खिलाने से तथा इसी को दंश स्थान पर लगाने से एवं नस्य देने से लाभ होता है। (७) एक तोला रुदन्ती को ७ रत्ती काली मरिच के साथ घोंटकर सपथ्य सेवन करने से रुधिर शुद्ध होता है। (८) एक सेर दूध में एक सेर जल २॥ तोले गोघृत और दो तोले मधु मिलाकर मन्द अग्नि पर पकावे। जब पानी जलजाय तब उतार कर रुद्रवन्ती के पंचांग के चूर्ण को इसी दूध के साथ सेवन करे। इस प्रकार ४९ दिन सेवन करने से मेह रोग आराम होता है। (९) आयु वृद्धि तथा पुरुषार्थ बढ़ाने के लियेः-शुक्ल पक्ष शुभ मुहूर्त में इसके पंचांग को यथा विधि लाकर छाया में सुखाय चूर्ण करे और इसी के रस को सात भावना दे। फिर एक एक माशे की वटी बनाकर कड़वी तुम्बी में रख छोड़े। प्रातः काल विषम भाग घृत और मधु के साथ इस वटी को सेवन करें और एक घण्टे के बाद दूध पीवे। इस प्रकार वटी को ६ महीने सेवन करने से सब प्रकार के रोग मुक्त होते हैं शरीर दिव्य होजाता है और आंखें प्रज्योतित होजाती हैं। इसके सेवन काल में नमक का खाना वर्जित है। (१०) ताम्र भस्म विधिः—तामे के पत्र को अग्नि में लाल कर रुद्रवन्ती के रस में २१ बार बुझावे और इसीके पत्तो की लुगदी में रखकर गजपुट की अग्नि दे ऐसा करने से एक ही आंच से उत्तम सफेद भस्म होजाती है। (११) पारद संस्कारः—इसके पत्तों के साथ पारे को घोटने से वह निर्जीव शुद्ध और बद्ध होजाता है। इसके रस में पारे को तीन दिन घोट, इसी की लुगदी में रख कपड़मिट्टी की हुई शराव सम्पुट में उक्त लुगदी को धरकर सधियोको भली भांति बन्द करदे और धूपमें सुखाकर दोघड़ी जङ्गली उपलों की अग्नि दे। ऐसी अग्नि से उस पारे की कठिन गोली बनजाती है। फिर उस गोली को तोड़कर रुद्रवन्ती के रसमें गोली बना २ कर तीन अग्नि देने से पारे की उत्तम भस्म तैयार हो जाती है।

(बूटी दर्पण)



ी किणी चकवा राजा री जोर हालै अर नी किणी विद्वान री समझ के अक्ल ई काम देवै। अबूझ बाळक सूं दुनिया री कोई ताकत जीत नी सकै अर जे कोई अकलहीण उण सूं जीतणरो

अटपटी, मान जिमी विष मूढ।

८०—२ भला बात समझै, एण विध ईन अकार बोलियो, वर्षै पोग्य जिण नाग।



चेचक

पीपर की जटा, गूलर के पत्ता की माता, छोकरा की माई, जयती, प्रत्येक एक एक तोला, हरड़ बड़ी का छिलका ३ माशे सबको जलमें पीस मटर बराबर गोली बना सुखावे। यह गोली प्रातः सायं सेवन कराते रहने से चेचक (माता) निकलने का डर नहीं रहता। परीक्षित

वैद्यशास्त्री ओंकारनाथ गोस्वामि

प्लेग

नीम की मींग, बांसे का पत्ता, तुलसीपत्र, करंजा की मींग, समान भाग ले जल के साथ मटर बराबर गोली बनावे और प्लेग के दिनों में प्रातः साय एक एक गोली सेवन करावे तब प्लेग होने का डर नहीं रहता ।

वैद्याचार्य रामप्रसाद मिश्र

मनोहर शर्बत

यह शर्बत गरमियों के दिनों में सेवन करना चाहिये। जो पुरुष बाजार के शर्बत सेवन करते हैं और जिससे वह अपने दिल और दिमाग को तर करना चाहते हैं उनसे उन्हें बजाय लाभके हानि उठानी पड़ती है नजला का रोग उन्हें वे उत्पन्न कर देते हैं और हमारा निम्न शर्बत उनके दिल और दिमागको तर रक्खेगा, प्यास को पास भी न आने देगा तथा लू से बचावेगा। साथ ही जिनके नकसी छूटती होगी उसे बन्द करेगा। खाने में जायकेदार और खुशबूदार होगा।

प्रयोग—चन्दन का बुरादा ६ तोला खस २ तोला, सौंफ ३ तोला, धनियाँ ४ तोला, पोदीना ५ तोला। इन पांचों औषधियों को लेकर अधकुट करके और १ सेर पानी में १ रात को भिगोदे।

प्रातः हाथ से मल कर छानले और उसमें आध सेर गुलाबजल मिलाले तथा १ सेर मिश्री मिला धीमी २ अग्नि से गरम करे और एक तार की चासनी जैसी कि हलवाई जलेबी की करते हैं, करले, और छानकर साफ शीशी में रखले। यह २ तोला, पावभर पानी में डालकर पीवे।

वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग

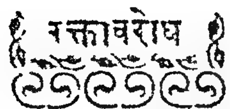


श्वेत कुष्ठ

यह औषधि हमारी सैकड़ों बार की परीक्षित है और लागत भी बहुत कम लगती है। श्वेत कुष्ठ जैसा कठिन रोग के लिये इससे सुलभ औषधि मिलना कठिन है। गुण बड़ा ही चमत्कारिक है हम वैद्यों से अनुरोध करते हैं कि एक बार अवश्य बनाकर परीक्षा करें और गुणागुण धन्वन्तरिमें प्रकाशित करावें।

मालकांगुनी नई लेकर उसे साफ करले और उसमें प्रति दिन स्त्री मूत्र इतना डाले कि वह अच्छी तरह भीगजाय इस प्रकार ४१ दिन स्त्री मूत्र की भावना दे पाताल यन्त्र से तैल निकाल ले और शीशी में रखले। ध्यान रहे कि पाताल यन्त्र में अग्नि धीमी २ लगावे जलने न पावे। इस तैल के लगाने मात्र से श्वेत कुष्ठ चला जाता है।

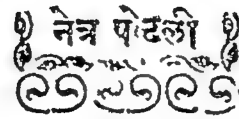
एक चिकित्सक



रक्तावरोध

गौदन्ती हरिताल को गरम कर नीम के पत्तों के स्वरस में बुझावे और कूटकर पुनः उस नीम के स्वरस में ही घोटकर टिकिया बना सराव सम्पुट में फूंकदे, स्वांग शीतल होनेपर निकालकर पीसले और शीशी में रक्खे। मात्रा १ रत्तीसे २ रत्ती तक। शर्बत अनार या बनफसा के साथ दे। किसी प्रकार से चाहे रक्त आता हो इसकी २-३ मात्रा से बन्द होजाता है।

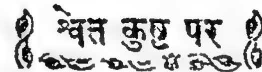
एक चिकित्सक।



नेत्र पोटली

जीरा सफेद, फिटकिरी रसौत, लोध, हल्दी, छोटी हरड, यह सब एक २ माशे लोंग ४ रत्ती, सबको जौकुट कर एक सफेद और साफ हलके कपड़ा में पोटली बना गुलाबजल में भिगो कर लगाने से गरमियों के दिनों में आने वाली आंख बहुत जल्दी ठीक होजाती है।

—एक चिकित्सक



श्वेत कुष्ट पर

एक गोहू मछली को लेकर उसका पेट चीरकर उसमें गंधक भर देना चाहिये और पेट को सी देना चाहिये। तीन दिन पश्चात् उसके पेट में कीडे पड़ जायेंगे, उन कीड़ों को निकाल कर एक शीशी में भर देना चाहिये। तत्पश्चात् १ भाग चावल एक भाग मूंग की दाल लेकर एक पतीली में पकाना चाहिये और उसके बीच में कीडों की शीशी को रख देना चाहिये, खिचड़ी पकने की गर्मी से शीशी के अन्दर कीड़ों का तैल होजायगा। इस तैल की मालिश श्वेत कुष्ट पर करनी चाहिये लाभ होगा।

नं० २—सरकन्डे की जड को लेकर पानी में रगड़ कर श्वेत कुष्ट पर लगाना चाहिये।

पं० रामगोपाल शर्मा।



डाक्टर—सम्पादक, प्रकाशक—श्रीमान् डाक्टर राधावल्लभजी पाठक, एल-आर-एम-पी०पूर्व गवर्नमेन्ट मेडीकल अफसर मथुरा। साइज २०। ३० सोलहपेजी वार्षिक मूल्य २)रुपया

यह डाक्टरी सिद्धांत का मासिकपत्र है। जनवरी से ही प्रकाशित होना आरम्भ हुआ है। हम सहयोगी की उन्नति चाहते हैं।

हिस्टेरिया रोगका वर्णन्—लेखक श्रीमान् कवि विनोद, वैद्य भूषण, पण्डित ठाकुरदत्तजी शर्मा वैद्य सम्पादक देशोपकारक—प्रकाशक—देशोपकारक बुकडिपो अमृतधारा लाहौर मू० ॥) साइज १८। २२ अठपेजी पृष्ठ सख्या ६५

प्रस्तुत पुस्तक बड़े खोज और विचार के साथ लिखीगई है। लेखक ने हिस्टेरिया रोग का नाम करण, कारण, निदान चिकित्सा सब विस्तार पूर्वक और सरल भाषा में लिखी है। हिंदी भाषा में अपने ढङ्ग की पहली पुस्तक है। चिकित्सक मात्र को एक २ प्रति अपने पास रखनी चाहिए।

निघन्टु रत्नाकर—लेखक, प्रकाशक—भिषक्मणि ठाकुर होरीसिंहजी गहलोत, शेरकोट प्रांत बिजनौर यू०पी०साईज २०। ३० सोलहपेजी पृष्ठ संख्या २५६ मू०२॥)

यह निघन्टु रत्न का प्रथम भाग, परिभाषा खंड है इसमें आयुर्वेदिक, एलोपैथिक और युनानी तीनों का समावेश है। इसके २० वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग वर्णित विषय पर विद्वतापूर्ण प्रकाश डाला गया है साधारण तया इस प्रथम खण्ड में बहुत सी ऐसी उपयोगी बातें है जिनको न जानने वाला वैद्य कोटि में गिना ही नहीं जा सक्ता आयुर्वेद के विद्यार्थियों को इससे बड़ा लाभ होगा और वे आयुर्वेद आचार स्तम्भ नियम बरूढ़ियों को जान

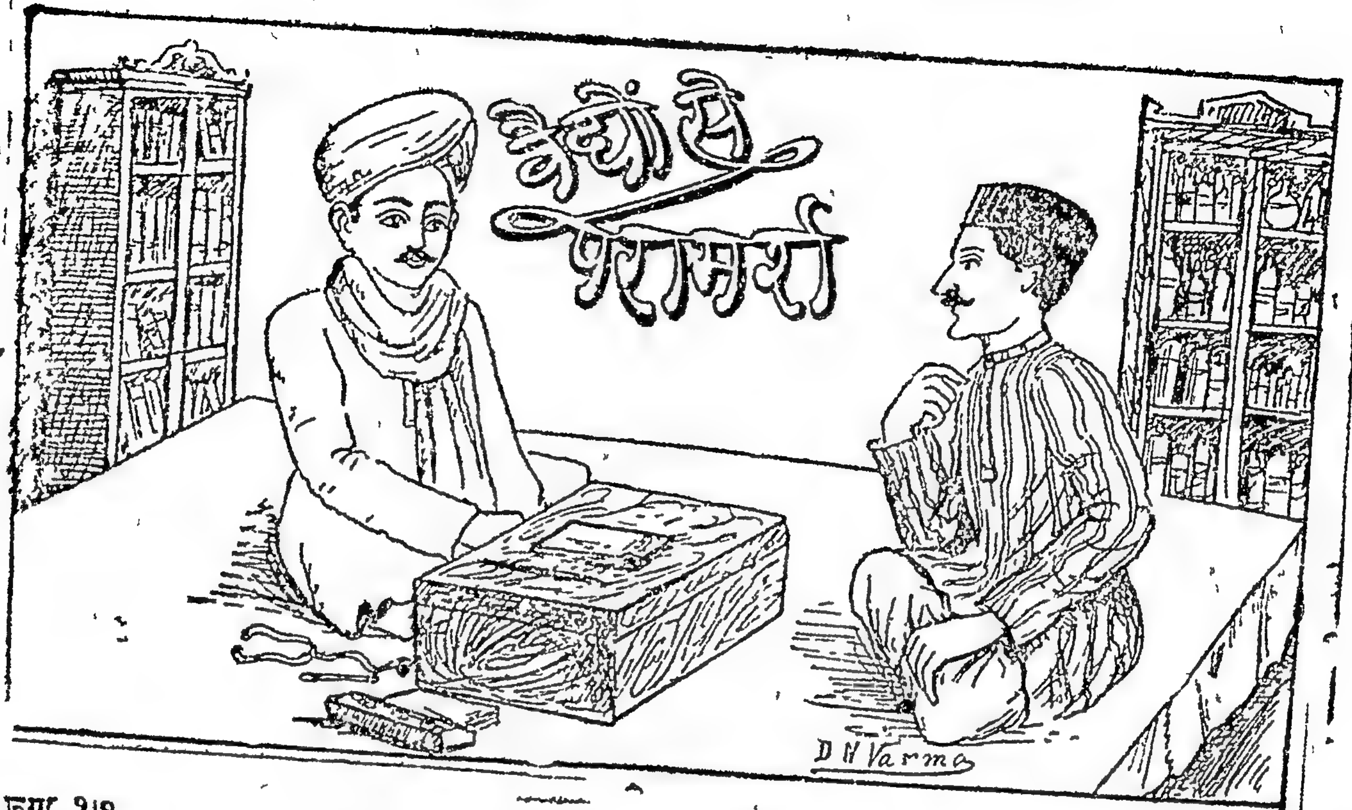
सकेंगे आवश्यकता भी इस बात की है कि वैद्य को इस बात का ज्ञान हो कि किन कारणों व तत्वों से दोष बनते हैं प्रकुपित होते हैं तथा क्षय को प्राप्त होते हैं और किस रोगमें उसके प्रभावको नष्ट करने केलिये किस स्वभाव व रस की औषधि का प्रयोग किया जाय–सारांश यह है कि आयुर्वेद को सिद्धांत रूपमें समझा जावे लेखक का उद्देश्य ४ भागों में पुस्तक समाप्त करने का है, प्रथम खड को पढ़ने व तृतीय खण्ड के पहिले वर्णन को देखकर पूर्ण अनुमान है कि यह ग्रन्थ मार्के का होगा और वैद्य-साहित्य में की कमी कुछ अंशों में पूरी होगी अन्य भागों के मूल्य पर लेखक विचार करेंगे, प्रत्येक विद्यार्थी व शिक्षक वैद्य को इसका लाभ उठाना चाहिये।

बाल हितोपदेश—लेखक श्रीयुत बाबू धनीराम बख्शी प्रकाशक-मैनेजर हितैषी कार्यालय पो० आ० चहिवासा (B. N. Ry.) मूल्य ≡) साइज १८+२२ पृष्ठ सख्या ३४०

हितोपदेश–संस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है उसका बहुत भाषाओंमें अनुवाद हुआहै। आज तक उसके जोड की पुस्तक दूसरी नहीं है उसमें मित्रलाभ सुहृदभेद, संधि,विग्रह इन चार बातो का विस्तार पूर्वक वर्णन है। विष्णु शर्मा ने राजा के अज्ञानी व विद्या में अरुचि रखने वाले उसके पुत्रो के लिए इस ग्रथ की रचना की थी। लेखक ने उसी हितोपदेश की कुछ कहानियों को बालकों के लिये इस पुस्तिका रूप में लिखा है। पुस्तक से बालकों का मनोरञ्जन होगा और ज्ञान की वृद्धि भी।

रिपोर्ट–निखिल भारतवर्षीय सप्तदश वैद्य सम्मेलन तथा दशम विहार प्रांतीय वैद्य सम्मेलन पटना की स्वागत कारिणी समिति का कार्य विवरण जैसा कि नाम से प्रगट है यह १७ वें वैद्य सम्मेलन तथा १० वें विहार प्रांत सम्मेलन की स्वागत कारिणी समिति का दिग्दर्शन है निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन के सभापति आयुर्वेद पंचानन प० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल थे व विहार प्रांतीय वैद्य सम्मेलन के पं० श्यामनरायण चतुर्वेदी, दोनों सम्मेलन निर्विघ्न सफलता के साथ सम्पन्न हुए। इसके लिए दोनों सभापति महोदय वैद्य वर्ग की ओर से धन्यवाद के पात्र हैं। इन दोनो सम्मेलनों का अधिक श्रेय प० बृजविहारी जी चौबे को है कि जिनके उद्योग से सम्मेलन एकस्थान में हुए और सजधज के साथ प्रस्ताव भी उत्तमोत्तम पास हुए और मनोरञ्जनी प्रदर्शनी भी प० जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल सभापति ने अंतिम दिवस कहा था कि हमको केवल प्रस्ताव पास करके ही न रहजाना चाहिये किंतु इनको कार्य में परणित करना चाहिये। हम आशा करते हैं कि उनकी इस इच्छा को वैद्य लोग कार्य में परणित करेंगे। दूसरा वैद्य सम्मेलन होने को है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इस सम्मेलन को वह सफलता दे जिससे हम सम्मेलन को यथार्थ सम्मेलन कह सकें।

पता—पं० रामावतार मिश्र वैद्यभूषण
प्रधान मंत्री स्वागत समिति
मुस्तफापुर (पटना)



प्रश्न १७

—अङ्क ३ भाग ४ में श्रीमान लालजी प्रसादवर्मा ने नौसादर तैल बनानेकी बिधि पूंछीथी उसका इस समयतक कोई उत्तरन मिलाक्या वैद्यराजों कोयह शोभा देताहै कि प्रश्नका उत्तर पूरीतरह सेन दिया जाये इसलिये प्रार्थनाहै कितैल बनाने की बिधि शीघ्र ही प्रकाशित करें—

प्र—आज कल यह रोग अधिकता से फैला हुआ है जिसमें कमसे कम भारत की ५० फीसदी युवतियां ग्रसित हैं, प्रथम तो प्रसव सुख पूर्वक होता ही नहीं और यदि किसी चतुर दाई अथवाअस्पताल में जाकर प्रसव हुआ भी तो वहांप्रसव होने के बाद ठण्डे जल व ठंडी वस्तु के इस्तैमालके कारण (क्योंकि औषधी व क्लोरोफार्म इत्यादि सुंघाकर सन्तान उत्पत्ति करती हैं और वह अधिक गर्म होती हैं) स्त्रियों के पेट में रक्त की ग्रन्थियें पड़जाती हैं। और वही ग्रन्थियें पेट में बड़ी होकर पेट में दर्द पैदा करती हैं और वही जल नसों मे भी भर जाता है फिर श्वेत प्रदर व मन्दाग्नी तो साथ ही लगजाती है परन्तु सबसे बड़ी खराबी पेट के दर्द व कमजोरी की होजाती है और बाद में यहां तक होता हैकि सन्तान हीन होजाती हैं। अथवा बांझ होजाती हैं इसलिए मेरी सर्व वैद्यों से हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि वह कोई ऐसी सरल व सस्ती और शतशोनुभूत औषधी अथवालेप लिख भारत का कल्याण करें जो कि मासिकधर्म समय में इन रक्त ग्रथियोंको फोड़ बहादे व पेट से दर्द व प्रदर आदि को निकाल कर पेटको शुद्ध साफ करदे साथही यह ध्यान रहे कि मासिक धर्म में व बच्चे दानीमें किसी प्रकार की खराबी न आने पावे और बन्ध्यापन

मिट करके संतान सुख पूर्वक हो—आशा है कि सर्व वैद्य महोदय व संपादक महोदय भी अपना २ अनुभव धन्वन्तरि द्वारा प्रकाशित करेंगे—प्रयोग सरल व आयुर्वेदिक हो डाक्टरी नहो—

ग—कोई ऐसी गोलियाँ बनाने की औषधियें लिखें जो मात्रा में भी छोटी हों और १–२ गोली खा लेने से ५–६ दस्त जोरों के साथ आजावें–और पेट को भी शुद्ध करदें—

बी०पी०सकसैना—

संख्या१८

क—योगरत्नाकर पृष्ठ संख्या २४५ पर कटिशूल चिकित्सा में निम्न लिखित श्लोक है (हल्लावखाखसं खाद्यं, खरजूर मेथिकातिला इसमें–हल्लाव खाद्य' के पर्याय वाचिक शब्द और हिंदी के नाम लिखने की कृपा करें।

ख—धन्वन्तरि निघन्टु—कहां और किस मूल्य में मिलता है।

ग—अष्टांग हृदय की–हेमाद्रि–नामक–टीका कहां से प्राप्य है कृपया लिखें।

चिकित्सक रामेश्वर शर्मा विशारद

संख्या १९—

एक पुरुष जिसकी अवस्था ३० वर्ष के लगभग रङ्ग गोरा शरीर पतला, कद लम्बा, पाखाने बन्द प्रायः रहता है, पेशाब कभी २ कुछ अधिक होता है, प्रायः पानी पीने के पश्चात् पेशाब लगता है (यह क्यों) कभी २ मुंह भी सूखता है। भूख साधारण। दिन रात में दो बार से अधिक भोजन करने पर प्रायः ठीक नहीं होता हां यदि बहुत कम खाया जाय तो कोई विकार नहीं होता। वीर्य पतला कुछ मालूम होता है। शीघ्र पतन है, अण्ड कोष नीचे को गया है। कब्ज रहने पर कभी पेशाब के साथ वीर्य अधिक भी निकलजाता है स्वप्न दोष भी किसी मास में ३, ४, ५, किसी में कुछ कम भी रहता है। एक बार लगातार अधिक होनेसे मकर-ध्वज से संख्या कम हुआ। गत् वर्ष जाड़े में धन्वन्तरि औषधालय का च्यवनप्राशभी दो या २॥ मास सेवन किया गया पर ये दोष अबभी है। ८, ९ वर्ष पहले हस्तमैथुनादि का कुछ अभ्यास था उसी समय से ये दोष आते हैं। इस ८ नौ वर्ष में कभी किसी प्रकार का मैथुन न किये हां स्वप्न दोष होता रहा कभी कम कभी अधिक। मूत्राशय दाहिने तरफ पसलियों से नीचे पेट तक लटक आया है डाक्टर लोग "किडनी सलम" कहते हैं, आयुर्वेदिक किस ग्रंथ में किस प्रकार निदान चिकित्सा है या नहीं है कृपा कर लिखें। कारणवश थोरे दिन हुए विवाह होने पर भी मैथुन नहीं किये केवल स्त्री की अवस्था कम होने से ही, कृपा कर ऐसा योग और चिकित्सा विधी लिखें कि शीघ्र-पतन औरस्वप्नदोष आराम होकर स्वाभाविक और स्थायी स्तम्भन हो क्या ऐसी अवस्था स्वास्थ्य की नहीं होसकती कि कितने हू दिन भी यदि मैथुन न करें तो भी स्वप्नदोषादि न हों और पूर्ण बलवान होजाय। देर तक पैरों पर बैठकर उठने से अँधेरा भी कभी कभी मालूम होता है। योग में मादक पदार्थ और यथा सम्भव धात्वादि न हो तो अच्छा है। योग ऐसा न हो जिससे वीर्य अधिक वृद्धि होकर कामोत्तेजना हो अधिक क्योंकि अभी ब्रह्मचर्य पालन ही कर्तव्य है। कुछ आसन व्यायाम एवं ईश्वर भजनभी करते हैं।

ग्रा०स० ११३

संख्या २०

क—एक रोगी की उम्र ४५ वर्ष की ३ वर्ष हुए पहिले हाथमें चमक हुई ४ महीने रहो बाद में दहिनी आंख में मोतिया बिंद होकर रोशनी कम होगई फिर ३ महीने तमाम जिस्म का थर्राना तालू से आंच का सा निकलना रहा बाद बुखार मोतीझरा जिससे ४ महीने में आराम हुआ इस समय हाल यह है जो खाना खाया जाता है पाक खट्टा होता है खाने के बाद गर्मी मालूम होती है दहन खुश्क भूख मध्यम बादी चीज खानेसे तकलीफ़ अधिक मलूढोसे खून रुकने पर तकलीफ चहरा स्याह होजाना है तमाम शरीर में चमक आख मुखमें अधिक २ वर्ष से जुखाम नहीं हुआ अब ज्यादा सरद चीज खानेसे होता है इलाज केदारनाथ वैद्य रजीपुर वैद्य पुत्तूलाल फरुखाबाद तथा गुलजी गुसांई राजवैद्य का करायादेहली हकीम अजमलखां ने बादी कायमकी जवारिसजालीनूस अर्क बादियान मकोइ गुलाब के साथ दी कानपुर लखनऊ के सिविल सर्जन ने ब्रेन की बीमारी कायम की जब तक दवा खाते हैं। फायदा होता है फिर वही दौड़ा होता है मरीज डोलना फिराहै सोडा बाईकार्ब नो१० सोंफ जीरा बराबोवन अजमान तो० २—२ नित्य प्रति खाने के बाद चूर्ण फांकने से जलन बन्द रहतीहै वैद्य महानुभावों से प्रार्थना है कि इसका निदान सप्रमाण रोग का नाम तथा चिकित्सा धन्वन्तरि में प्रकाशित कर यश के भागी बनें।

नोट—च्यवन प्राश मुरब्बा सेब आदि ताकत वर तथा भस्म आदि से ज्यादा तकलीफ होती है वही सज्जन तकलीफ करें जिन्होंने ऐसी बीमारी में चिकित्सा द्वारा यश प्राप्त किया हो।

ख—भस्म करने के लिये सर्वोत्तम लोह चूरा कहां किस भाव मिलेगा बाजारों में ≋) सेर बहुत मिलता है किंतु उसकी और इसकी पहिचान किस तरह होगी सर्वोत्तम भस्म किस तरह हो पुट आदि में ऐसी चीजें हों जो यहां मिल सकें कितने पुटों में उत्तम भस्म होगी।

ग—ताम्रभस्म शीशाभस्म जस्ता भस्म इनकी सर्वोत्तमभस्म करनेका तरीका निष्कपटभस्म करने में जो जानने योग्य बातें हों सविस्तार लिखें।

घ—हाथरस आदि में जो तांबे के टूक बिकते हैं क्या ये भस्म योग्य होते हैं यदि नहीं तो कहां किस भाव तथा पहिचान लिखें जिससे धोका न हो।

ङ०—संखिया आदि कौन २ सी चीजों को भस्म करने तथा तेल में डारने से धुआं आंखों को नुकसान पहुंचाता है उससे बचने का तरीका क्या है।

नोट—यों तो इन बातों को ग्रन्थों में लिखा है देख सकते हैं किंतु ऐसे योग हों जो मिहनत बेकार न हो।

लक्ष्मीनारायण पाठक

संख्या २१

मेरे यहां एक रावत जू महाराज आज ६ मास से बीमार हैं उनको प्रथम विषम ज्वर हो गया था उस समय अंग्रेजी दवा हुई उस दवा के

२४ दिन सेवन के बाद उनके दिमाग में खराबी उत्पन्न हुई तब बड़े २ डाक्टरों की अंग्रेजी दवा हुई लेकिन विशेष लाभ नहीं हुआ। अन्न जितना खाया जाता था वह सब पच जाता था। इतना लाभ रहा—इसके बाद वैद्यक (देशी दवा) हुई उसमें प्रथम प्रातः लवङ्गादि चूर्ण धारोष्ण—दुग्ध के साथ, ८ बजे मोती भस्म, प्रवाल भस्म, तथा लाक्षादि तैलको हाथ पैरों में व शिरमें चन्दनादि तैल की मालिश कराई जाती थी अर्क सुदर्शन, गुलकन्द, शङ्ख पुष्पी का अर्क व सीप भस्म वीर पाक इत्यादि का सेवन कराया गया था इससे बहुत लाभ हुआ था। परन्तु उष्णता नहीं गई थी— दिल और दिमाग दोनों बहुत कमजोर हो गये थे। दिल जोरसे हरकत करता था. दूरसे आता जाता था दिमाग में स्मरण शक्ति का बहुत ह्रास हो गया था। इसके बाद पुनः डाक्टरी इलाज हुआ। लेकिन अभी तक कोई लाभ नहीं हुआ ६ इंजेक्शन भी किये गये।

अब वैद्य जनों से सादर प्रार्थना है कि इस विषय में अपने २ अनुभूत प्रयोग तथा निदानादि से सविस्तार सूचित करें। डाक्टर लोग कीबर खराब बतलाते हैं।

पुरुषोत्तम देव आयुर्वेदाचार्य्य

प्रश्न प्रेषक प्रायः पुरस्कार लिख देते हैं पर देते हुए हमने एक को भी नहीं देखा इस लिये जो प्रश्न प्रेषक पुरस्कार लिखते हैं हम वह पुरस्कार की बात काट देते हैं जिनको वास्तविक में—पुरस्कार देना हो और उन्होंने मिथ्या न लिखा हो वह प्रश्न के साथ ही पुरस्कार के रुपये धन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ़ में मनियार्डर द्वारा भेज दें हम जब प्रश्न कर्त्ता यह लिखेंगे कि अमुक सज्जन का उत्तर ठीक था तब हम उन्हीं सज्जन को वह पुरस्कार भेज देंगे।

—सम्पादक



सम्मति नं० १

आप निरास न हों सिर्फ ५१ दिनही हमारी विधि से औषधि व्यवहार कर आरोग्य लाभकर संसार में सुख उपभोग करें । दान धर्म भी करना योग्य है ।

प्रातः-शौच जाने से पूर्व पावभर गुन गुने पानी में १ माशे काला निमक डालकर पीलें और उसके बाद शौच जांय । सायङ्काल डुस में गुन गुना त्रिफला का क्वाथ डाल डुस (पिचकारी) दें और भोजनोपरांत अजमायन शुद्ध माशे १॥ गरम जल के साथ सेवन करें और रात्रि को सोते समय आमलक्यादि वटी दुग्ध के साथ सेवन करें । अजमायन शुद्ध करने की विधि-पावभर अजमायन ले उसे साफकर थोड़े से पानी में भिगोदे २-३ घन्टे बाद उसे धोकर १ घन्टे छांयमें सुखादे उसके बाद हाथसे अच्छी तरह मलकर साफ करले जिससे मीग निकल आवे और उस मीग को आध सेर नीबू के रस में भिगोदे और १ छटांक (५ तोला) सेंधानिमक भी पीसकर डालदें जब वह खुश्क होजाय तब निकाल कर रखलें आमलक्यादि वटी बनाने की विधि-पावभर आमले ले उनकी गुठली निकाल कर फेंकदे गूंद को खरल में डारे और उसे आमले के स्वरस में ही घोटे जब तक कि आमले का एक सेर स्वरस उस में न पड़जाय जब घुटजाय तब झरबेरके बराबर गोली बनाछांया में सुखाले । इस विधि से औषधि बना और सेवन करें आप अवश्य आरोग्यता प्राप्त करेंगे ।

वैद्याचार्य्य रामप्रसाद शर्मा

सम्मति नं०२

आपका प्रमेह जनित मन्दाग्नि है । इसके लिये प्रथम २-३ दिन इच्छाभेदीरस से दस्त लेलेने चाहिए उसके पश्चात्‌:प्रातःसायं क्रव्यादि रस चार २ रत्ती तक्र गौ के साथ सेवन करें और रात्रि को गौ दुग्ध के साथ चन्द्रप्रभा वटी गोली १ सेवन करें । १-२॥ महीने के सेवन से अवश्य लाभ होगा । प्रयोग भैषज्यरत्नावली में देखें ।

वैद्याचार्य्य रामप्रसाद शर्मा

सम्मति नं०३

आयुर्वेद में जहां शूलों के लक्षण लिखे है वहां शरीरिक अवयव भेदन देकर दोष भेद ही दिए हैं इसे वात जनित यकृत शूल कहना चाहिए । वातशूल वर्षा और बादल के समय पड़ता है । इसके लिए प्रातः सायं-त्रिफला चूर्ण एक २ माशे लोहभस्म सर्वोत्तम रत्ती एक २ मिलाकर शहद माशे ६ घृत माशे ३ के साथ चाटना चाहिए और भोजनोपरांत विषमुष्टिका गोली एक २ गरम जल के साथ सेवन करे अवश्य लाभ होगा ।

सम्मति नं० ४

पीप—राद उसको कहते हैं । जो कि फोड़ा पक कर उसमें बहती है जिसका रङ्ग श्वेत होता है उसे पीप कहते हैं और जिसके साथ कुछ सुरखी भी होती है उसे राद कहते हैं । शरीर का कोई भाग सड़ जाय या गल जाय तब भी वह पक कर पीप राद देता है ।

सम्मति नं० ५

बालक के लिये प्रातः सायं सारस्वतारिष्ट (भैषज्यरत्नावली) माशे तीन २ पानी तोले, तोले में मिला कर पिलाना चाहिये और रात्रि को मकरध्वज वटी दुग्ध के साथ एक गोली खिलानी चाहिये इनसे अवश्य लाभ होगा ।

सम्मति नं०६

बच्चे को प्रातः सायं तीन २ माशे सारस्वतारिष्ट (भैषज्यरत्नावली) पानी में मिला कर सेवन करावे तथा बादाम का सेवन रक्खे । कफ कारक पदार्थ खाने को न दें तब लड़के की जबान साफ हो जायगी ।

सम्मति नं० ७

फोड़े की खारिस के लिये बृ० मरिचादि तैल भावप्रकाश का सर्वोत्तम है अथवा आक के पीले पत्ते सरसों के तैल में जलाकर लगावे ।

सम्मति नं०८

हिचकी वात विकार से आती हैं-अतः हिचकी रोग को स्त्री को वातनाशक स्निग्धवस्तुऐं खिलानी चाहिए छाती व फेंफड़ों पर तिल तैल की मालिश करनी चाहिए और औषधि रूप में काश की जड़ के चूरण को शहत में मिला कर चटाना चाहिए नं०२ मोर पंख के चंदवे को जलाकर शहत के साथ चटाना चाहिए ।

रामगोपाल शर्मा

सम्मति नं०९

कज्जली को नीबू के स्वरस में ४ पहर मर्दन कर डमरूयन्त्र से उड़ाने से पारद निकल आता है किन्तु गन्धक के साथ पारद के मर्दन से पारद एक प्रकार से मूर्छित होजाता है और हानि कारक गुण नष्ट होजाता है अतः कज्जली उचित रीति से व्यवहार करने पर कभी हानि नहीं करती। हां यदि कज्जली कच्ची रहजा यगी यथेष्ट घुटेगी नहीं तब हानि कर होगी। पारद गंधक के स्थान में हिंगुल लेना योग्य नहीं हां रससिंदूर लेसकते हैं।

सम्मति नं० १०

(क) आपके मित्रकी स्त्री केस्वभावकोबदलने के लिए यही उत्तम होगा कि किसी पढ़ी लिखी सुशिल अच्छे विचार की प्रौढ़ा स्त्रीसे वार्तालाप कराया जाया करे स्त्रीयों पर स्त्रियों का ही अधिक प्रभाव पड़ता है उनके पति देवको भी समयानुसार युक्ति से काम लेना चाहिए भोजन में अधिकतर पुराने चावल जौ अन्न व फलों का सेवन कराया जाय जिससे बुद्धि सात्विक हो वैद्यक शास्त्र में मंत्र इत्यादि का वर्णन है परंतु यह सब आजकल मान्य नहीं।

(ख) वरी का दूध वरी का वृक्ष होता है जिसे बट वृक्ष कहते है नन्दकीट आजकल अप्राप्य है।

सम्मति नं०११

क—अम्बर एक ही वस्तु है। और यह समुद्र में रहने वाली "स्पमाटेसीहवेल" नामक प्राणी के आंत से निकलता है। रस रत्न समुच्य में ईस का वर्णन है। वात पित्त और कफघ्न है धनुवात आर्दित वायु को दूरकरता है रस और मानासिक शक्ति को वढ़ाताहै अनुपान वैद्य अपनी अनुभव शक्ति से रोगानुसार चुन लेते हैं। मूल्य ३५) तोला से ६०) तोला तक। प्रायः वड़े शहरों में अच्छे प्रति ष्ठित अत्तारों एवं पंसारियों के यहां मिलता है।

सम्मति नं०१२

क—पर्पटी इत्यादि चीनी के खरल में घोटी जाती है—कजली—मालतीवसन्त को पत्थर के खरल में व गोली इत्यादि की औषधि को छोड़ कर जिनको पत्थर के खरल में घोटते हैं आम औषधियां लोहे के खरल में कूटी घोटी जाती हैं।

[ख] आयुर्वेदिक एण्डहोमियो पैथिक कौलेज अलीगढ़ में आयुर्वेद के पठन पाठन की प्रथा संतोष जनक नहीं होमियोपैथिक के सम्बन्ध में हम कुछ नहीं कहसकते।

[ग] आप मासिक धर्म के ठीक होने केलिए धन्वन्तारि कार्यालय विजयगढ़ का आर्त्तव सुधार व फल घृत उत्तम औषधि है।

सम्मति नं०१३

रोगिणी स्त्री को अशोकारिष्ट का सेवन कराया जावे जिससे रक्तकी शुद्धि होगी और प्रदरको भी आराम होगा।

रामगोपाल शर्मा

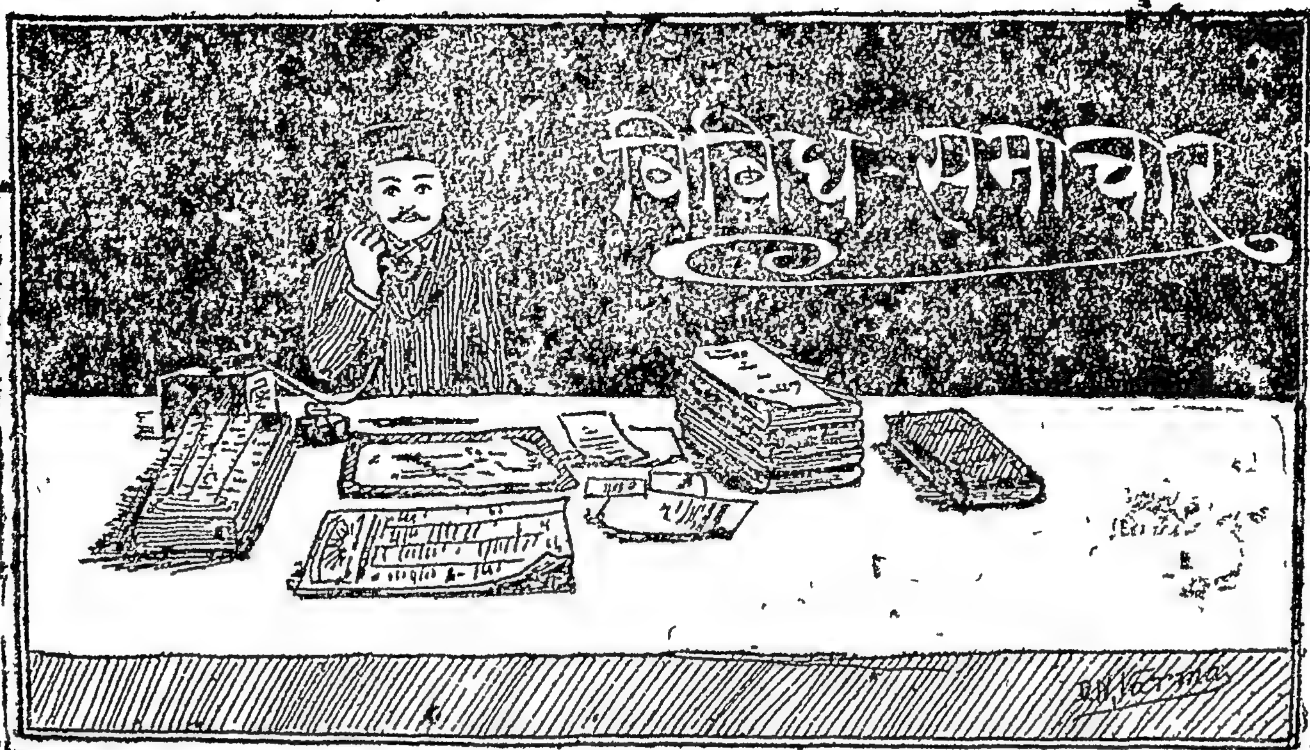
सम्मति नं० १४

हमारी राय में चि० बिहारीलाल को उन्माद नहीं है उसका रोग निश्चय उस समय तक ठीक नहीं होसक्ता जब तक कि रोग का पूर्ण वर्णन न ज्ञात हो प्रतीत होता है कि रोगी को ज्वर भी है यदि ज्वर व खांसी है तब निदान व चिकित्सा भिन्न होनी यदि ज्वर नहीं है तब भिन्न।

रामगोपाल शर्मा

सम्मति नं० १५

आपको पित्त विकार का रोग है प्रथम आपको अविपित्त कर चूर्ण २ दिवस जल के साथ लेना चाहिए तत्पश्चात् कूष्माण्ड अवलेह व च्यवनप्राश अवलेह का सेवन करना चाहिए शिर से आंवला तैल की मालिश नित्य करनी चाहिए आंवला का तैल हरे पके हुए आंवली के स्वरस से बनाना चाहिए। —रामगोपाल शर्मा



वैद्य संगठन

इस नाम का एक त्रैमासिक हिन्दी पत्र-दयानन्दायुर्वेदिक कालेज लाहौर से २५ मार्च सन १९२८ से प्रकाशित होगा १८।२२ अठपेजी के ५० पृष्ठ होंगे मूल्य होगा १।) वार्षिक।

वैद्य सम्मेलन

पंजाब प्रांतीय वैद्य सम्मेलन का प्रथम—महोत्सव ता० २३।२४।२५ मार्च सन् १९२८ को श्री दयानन्दायुर्वेद कालेज लाहौर में श्रीमान् वैद्यरत्न पण्डित रामप्रसाद जी राजवैद्य अध्यक्ष—आयुर्वेद विभाग रियासत पटियाला के सभापतित्व में बड़े समारोह से मनाया गया। साथ ही प्रदर्शनी भी हुई। प्रदर्शनी की सजावट मनोहर थी साथ ही संग्रह भी उत्तम हुआ था। अनेक बहुमूल्य पदार्थ संग्रह किये गये थे सभापति जी का व्याख्यान भी प्रभाव शाली और महत्व पूर्ण हुआ स्वागत कारिणी का प्रबन्ध उत्तम था मंत्री आयुर्वेदाचार्य श्री० वा० सुरेन्द्र मोहन जी बी० ए० का उत्साह और परिश्रम देखने योग्यथा। हम सम्मेलन की सफलता के लिये बधाई देते हैं।

गुजरात प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन।

गुजरात प्रांतीय वैद्य सम्मेलन कीनियमावली और सूरत के अधिवेशन के स्वीकृत प्रस्ताव देखने से पता लगता है कि गुजरात प्रांतीय वैद्य सम्मेलन आगे बढ़ रहा है उसकी स्थाई समिति के मंत्री वैद्य अम्बाशङ्कर जी त्रिवेदी वैद्य शास्त्री नागरलाल मोहनलाल जी बड़ा परिश्रम कर रहे हैं।

धन्यवाद

नोट—इन पदकों का निर्णय एक योग्य वैद्यों की समिति करेगी और वैद्यों की सम्मतियाँ वाला "सम्मति पदक" का निर्णय परामर्श भेजने वालों की बहु सम्मति से होगा। वर्षान्त में पदक प्राप्त करने वालों का शुभ नाम प्रकाशित किया जायगा।

सम्पादक

लेखकों से प्रार्थना

धन्वन्तरि ने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है वह आप सज्जनों की कृपा से। आपकी ही प्रभाव शाली लेखनी ने हमें उत्साहित किया है और हम धन्वन्तरि की उन्नति कर सकते हैं। अब आपसे सविनय सादर प्रार्थना है कि आप अपनी २ अपूर्व रचनाएँ भेज हमें कृतार्थ करें। अब की वर्ष हमने आपके सम्मानार्थ और भी पदकों की व्यवस्था की है। साथ ही परीक्षित प्रयोग और सम्मतियां (उत्तर) भेजने वालों को भी ध्यान देना चाहिये हम ने उनके सम्मानार्थ भी पदकों की व्यवस्था करदी है ऐसी अवस्था में अब उन्हें उत्साह पूर्वक हमें सहायता देनी चाहिये।

सम्पादक

सूचना

टाइप पुराने होने से अब की बार छपाई बड़ी भद्दी हुई है हम नया टाइप मँगा रहे हैं वह अपरैल तक आजावेगा और मई का अंक सम्भवतः उसी नये टाइप में छपेगा।

चित्र चाहिये

हमें धन्वन्तरि में प्रकाशित करने के लिये निम्न चित्र आवश्यक हैं जिनके पास हो वह भेजने की कृपा करें। यदि चित्रों के ब्लोक हो तब ब्लाक भेजें हम छाप कर वापिस भेज देंगे।

१—श्रीमान् कुमार सरयूप्रसाद नारायणसिंह जी बरांव।

२—आयुर्वेद निधि पं० गंगाधर जी भट्ट राजवैद्य जयपुर।

३—श्रीमान् कविराज योगीन्द्रनाथ सेन० एम ए० विद्याभूषण कलकत्ता।

४—श्रीमान् वैद्यराज लेफ्टिनेण्ट कर्नल डाक्टर कीर्तिकर बम्बई।

५—श्रीमान् आयुर्वेद मार्तण्ड प० लक्ष्मीराम जी राजवैद्य जयपुर।

६—श्रीमान् कविराज यामिनी भूषण राय एम०ए० एम० बी० कलकत्ता।

७—हिजहाईनेश महाराजराय वर्मा महाराजा कोचीन।

८—श्रीमान् प० डी० गोपालाचार्य्य आयुर्वेद मार्तण्ड मद्रास।

९—श्रीमान् महामहोपाध्याय कविराज उमाचरण जी भट्टाचार्य्य काशी।

१०—श्रीमान् कविराज द्वारानाथ जी चक्रवर्ती वैद्यराज शाही।

११—श्रीमान् वैद्य पंचानन प० कृष्ण प्रसाद शास्त्री कवड़े बी० ए० पूना।

रने के लिये हमारे पास अनेक पत्र रोगियों और चिकित्सकों के आये थे इस लिये हमने इस विषय की पुस्तक लिखने का विचार किया था एक समय बाबू किशनलाल जी मालिक [illegible] भूषण प्रेस से बातें हुई थी उन्होंने कृपा कर इस पुस्तक को हमें प्रकाशनार्थ दी [illegible] मूल अंग्रेजी पुस्तक से लिखी हुई है। यह उसका अनुवाद है।

इसमें पुंस्त्व नाश के कारण व वर्ण रचना से हुआ शुक्रमेह, मूत्र मैथुन, स्वप्न दोष, के अतिरिक्त इन्द्रिय व्यापार एवं शुक्रमेह के अन्यान्य कारण अश्मरी, और काम के कारण; शुक्र मेह विवाहिता अवस्था में इन्द्रिय की कमजोरी, [illegible] विक रोग: स्खलन का परिणाम, सर्वांग दोषयुक्त मेह, श्वास यन्त्र हृदय और अन्यान्य स्थानों के ऊपर शुक्रमेह का प्रभाव, ध्वज भङ्ग का कारण चिकित्सा विस्तार से लिखी गई है साथ ही तान्त्रिक चिकित्सा का भी समावेश कर पुस्तक और भी उपयोगी बना दी गई है। मूल्य ॥) आठ आना।

४—दोषधातु विज्ञान (सचित्र)

लेखक—श्रीमान् प० मुरारीलाल शर्मा वैद्यराज

इस पुस्तक में दोष क्या है वे कैसे उत्पन्न होते हैं। इनका नाम दोष क्यों रोग करते हैं किस प्रकार ये दूषित होने से क्या २ हानियां करते हैं तथा दूषित होने पर चिकित्सक को किस प्रकार चिकित्सा करनी चाहिये आदि २ तथा धातुयें भी विस्तार [illegible] हैं।

इसमें खूबी यह है कि कठिन और गहन विषय होने पर भी लेखक ने बड़ी सीधी सादी और सरल भाषा में लिखा है। पुस्तक वैद्यक के विद्यार्थियों को अवश्य पढ़नी एवं मनन करनी चाहिये। मूल्य ।=) छः आना।

५—बालबोधोदय (सचित्र)

इस पुस्तक को कानपुर प्रांतीय श्रीमान् प० महासुख शर्मा के सुपुत्र श्रीमान् काशीनाथ जी चतुर्वेदी महोदय ने आयुर्वेद के विद्यार्थियों के हित के लिये संस्कृत पद्यों में बनाई थी पर संस्कृत मात्र होने से अल्पमेधावी विद्यार्थियों को लाभ दायक न हो सकी इस लिये श्रीमान् प० रघुवर दयालजी भट्ट काव्यतीर्थ भिषग्वर आयुर्वेद मार्तण्ड मन्त्री युक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन ने इसकी विस्तृत कुमारबोधिनी नामक व्याख्या की और हिंदी भाषा भी इस लिये अब यह पुस्तक प्रत्येक विद्यार्थी को उपयोगी हो गई है। इसमें प्रत्येक रोग पर एक २ पद्य लिखा है और उसी एक पद्य में ही रोग की प्रधान औषधि का वर्णन बड़ी खूबी के साथ कर दिया है पुस्तक प्रत्येक वैद्य एवं विद्यार्थी को रखनी चाहिये। मूल्य ।=) छः आना।

६—सूर्यरश्मिचिकित्सा।

ले० वैद्य बांकेलाल गुप्त सम्पादक धन्वन्तरि छपे हैं सफाई चित्ताकर्षक अनेक दर्शनीय चित्र

सूर्य रश्मि चिकित्सा को अंग्रेजी में क्रोमो पैथी कहते हैं और अंग्रेज इस चिकित्सा के आविष्कर्ता अमेरिका के डाक्टरों को मानते हैं पर नहीं यह चिकित्सा अति प्राचीन है और हमारे शास्त्रों

पता—मैनेजर श्रीधन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ वाया हाथरस जंकशन

१—कामिनी कर्णधार (सचित्र)

लेखक श्री० पं० महावीर प्रसाद जी मालवीय "वीर" वैद्य शिरोमणि भूतपूर्व सम्पादक मनोरमा

इस पुस्तक की उपयोगिता नाम से प्रगट है। इसके सुप्रसिद्ध लेखक ने इस पुस्तक को लिख वैद्य मंडली एवं स्त्री समाज का विशेष हित साधन किया है स्त्री रोग सम्बन्धी सब ही बातों का वर्णन सरल और सुन्दर भाषा में किया है साथ ही परिशिष्ट लगा कर लेखक ने स्त्रियों के पढ़ने समझने और स्वयं चिकित्सा करने योग्य बना दिया है।

लज्जावश जो स्त्रियें अपने रोग का हाल प्रकट नहीं करतीं और वह दिन प्रति दिन रोग को भयंकर बना लेती हैं उनके लिये यह पुस्तक बड़े ही काम की है। क्यों कि इस में उन सब रोगों का वर्णन है जो प्रायः स्त्रियों को हुआ करते हैं विशेषता यह है कि आपके प्रायः सब ही प्रयोग लेखक के अनुभूत और शीघ्र लाभ देने वाले हैं।

इसमें प्रदर रोग, सोम रोग, बालिका प्रदर योनिरोग, गर्भ काल रोग गर्भ विकृति से होने वाले रोग जैसे मूढ़ गर्भ, नाल छेदन के समय की असावधानी का भयंकर परिणाम, प्रसूत रोग, मक्कल रोग स्तन रोग योषापस्मार आदि रोगों का निदान कारण लक्षण चिकित्सा विस्तार के साथ लिखी है। साथ ही विषय को स्पष्ट करने के हेतु भावपूर्ण रङ्गीन और सादे चित्र दे सोने में सुगन्ध वाली कहावत चरितार्थ की गई है। साथ ही पुस्तक प्रत्येक वैद्य एवं गृहस्थियों के संग्रह करने योग्य है मू० १।=) एक रुपया छै आना।

२—बालरोग चिकित्सा (सचित्र)

ले० श्री० पं० महावीर प्रसादजी मालवीय "वीर," वैद्य शिरोमणि, भूतपूर्व सम्पादक मनोरमा।

भारत वर्ष में बालकों की मृत्यु संख्या पर जब दृष्टि डाली जाती है तब बड़ा खेद होता है बालक के उत्पन्न होने से उसका पिता बड़ी बड़ी आशाएं करने लगता है किन्तु उनके पालन पोषण की विधि न जानने से एवं नित्य प्रति होने वाले रोगों से रक्षा न करने से वह अपनी आशा से ही नहीं किंतु बच्चों से हाथ धो बैठता है।

इस पुस्तक में दूषित दुग्ध पान के लक्षण दुग्ध शुद्धि के लिये, स्तन रोग चिकित्सा, घृत पान उबटन और स्नान औषधि मात्रा वीर्य और औषधियें बालरोग का परिज्ञान, बालोपयोगी नियम अन्नप्राशन पारिगर्भिक रोग, मृत्यु का लक्षण तथा बालकों के समस्त रोगों का वर्णन निदान लक्षण और उनकी परीक्षित चिकित्सा लिखी गई है। पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ के पढ़ने और ग्रहण करने योग्य है। मूल्य ॥=) चौदह आना।

३—धातु दौर्बल्य।

(लेखक—श्रीमान डाक्टर एल० ई० इस्लाम ए० एम० एम० डी० अमेरिका के शिकागो कालेज के आचार्य)।

इस पुस्तक का विषय पाठक नाम से ही जान गये होंगे इस विषय पर पुस्तक प्रकाशित

पता—मैनेजर श्रीधन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ वाया हाथरस जंकशन

में यहां तक कि वेदों में भी इसका उल्लेख मिलता है। इस चिकित्सा में सूर्य की किरणों से ही रोगियों के समस्त रोग दूर करने का विधान है। इसमें पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी है। इसको पढ़ पाठक देखें कि सूर्य कितना शक्तिशाली है और उसकी किरणें हमारे शरीरको कितनी लाभदायक हैं और उनके द्वारा रोग किस प्रकार बात कीबात में दूर हो सकते हैं जो सुकुमार स्त्री पुरुष औषधि सेवन से डरते हैं उनके लिये मानों अमृत ही मिलगया।

पुस्तक अपने विषयकी पहलीही है और हमने इस पुस्तक की छपाई बड़ी ही चित्ताकर्षक कराई है तथा साथ ही अनेक रङ्गीन चित्र भी दिये गये हैं तिसपर भी पुस्तक का मू०सिर्फ ॥।)बारह आना है

७ भारतीय भोजन।

ले०श्री पं०हरिनारायणजी शर्मा वैद्यराज

प्रधान अध्यापक बो०पन०मेहता स०वि०

छपाई सफाई चित्ताकर्षक?पांच दर्शनीय चित्र

इस पुस्तक में चरक सुश्रुत प्रभृति ग्रन्थोंके आधार पर आधुनिक डाक्टरी सम्मतियों का समावेश करते हुए मनुष्य के सात्विक आहारका समय,अजीर्ण भोजन, विधि, मात्रा, भोजन में रसना,बोलना, मानसिक विचार, तरल और शुष्क भोजन,पहले और पीछे खाने वाली चीज जिह्वा स्वाद, स्त्री के साथ भोजन, पेट भरना, भोजन का त्याग,भोजन में जल पानका व्यवस्था, भोजनोपरान्त कार्य,मौसमों के मुताबिक भोजन आदि अनेक विषयों पर बड़ी विद्वत्ता और ओज के साथ प्रकाश डाला है। परिशिष्ट में चीजों के पकने का समय भोजन की परीक्षा, पकाना, उपवास भोजन और शरीर के साथ प्रकृति सहन विषयों पर सरल भाषा में विवेचन किया है। इसके अनुकूल भोजन व्यवस्था रहने से रोगों का डर निःसन्देह जाता रहेगा। लेखनशैली रोचक और पुस्तक प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिये उपादेय है। मू०॥।)बारह आ०

८ प्लेग।

औपसर्गिक सन्निपात।

ले०स्व०ला०राधावल्लभजी वैद्यराज।

भारतवर्ष से अभी इस दुष्ट रोग का काला मुंह नहीं हुआ प्लेग के ऊपर छोटी२पुस्तक प्रकाशित हुई परन्तु इसका शास्त्रीय विवेचन पूरी रीति से नहीं है। सर्व साधारण और वैद्यों को इसके विषय में पूर्णजानकारी चाहिये। यह पुस्तक वैद्य और आरोग्यकांक्षी पुरुषों को एक बार अवश्य पढ़नी चाहिये। इसमें प्लेग का इतिहास, प्लेग का आयुर्वेदीय और डाक्टरी मतानुसार विचार का तत्व से सम्बन्ध प्लेग और धर्म संक्रामक रोगों के कारण प्लेगप्रतिबन्धक उपाय प्लेग चिकित्साआदि विषय विस्तार से वर्णन किये गये हैं मू०।) चार आना

९ मरणोन्मुखी आयुर्वेद चिकित्सा।

देखो! देखो ?? कहीं मर न जावे ???

ले—ला०राधावल्लभजी वैद्यराज।

आयुर्वेदीय चिकित्सा मरने को तैयार है। प्राण सिसक रहे हैं मृत्यु शय्या बिछाई जारही है क्योंकि उनके पुत्र बूढ़ी माता की परवाह नहीं करते क्या मरजाने दें। भारतवासी वैद्यो? पूछो अपने मनसे इस निबंध में आयुर्वेदीय चिकित्सा की जो दुर्दशा है उसको ओजस्विनी भाषा में वर्णन है।

इसमें साहित्य पठन पाठन, ज्ञानोपार्जन, कर्तव्य निरूपण स्वामियों सम्पादन प्रतिष्ठा स्थापन शक्ति संगठन शोध का विचार पूर्ण बढ़ेंगे इस निबन्ध के पढ़ने से अपनी सच्ची अवस्था मालूम होगी बार२ पछताना होगा निथ्या अभिमान के कान पकड़े जांयगे एक बार पढ़के देखिये तो सही मूल्य केवल) चार आ०

१० परीक्षित प्रयोग ।

इसमें स्व० लाला नारायणदासजी तथा राधावल्लभजी वैद्यराज सम्पादक आरोग्यसिंधु तथा वैद्य बांकेलाल गुप्त सम्पादक धन्वन्तरि के अनेक बार परीक्षित प्रयोगों का वर्णन किया गया है एक २ प्रयोग हजारों रुपये का काम देने वाला है जिनको परीक्षित प्रयोगों की तलाश रहती है । उनके तथा नवीन वैद्यों के बड़े काम की पुस्तक है छपाई सफाई देखने योग्य है । मू० ।=) छः आना

११ पंचकर्म विवेचन ।

ले०—स्व० ला० राधावल्लभजी वैद्यराज

पञ्चकर्म द्वारा चिकित्सा करने की प्रणाली वैद्य लोग भूलगये बहुत थोड़े वैद्य ऐसे मिलते हैं जिन्हें इनका अभ्यास है बड़े पश्चाताप का विषय है कि हम अपने ऋषियों के ज्ञानभण्डार को आँख मींचकर देखते हैं । और डाक्टर लोग हमारी ही विद्या के तिल का पहाड़ बनाकर दिखाते हैं । डाक्टर कुहनी की जलकी चिकित्सा जिसे नवीन विद्या बतलाते हैं हमारे पञ्चकर्म का ही भेद है ।

अब वैद्यों को इस चिकित्सा पद्धति पर ध्यान देना चाहिए यह पुस्तक इसी विषय पर लिखीगई है आज तक इस विषय को सविस्तार वर्णन करने वाली नए ढङ्ग से गहन विषय पर प्रकाश डालने वाली दूसरी पुस्तक नहीं छपी पाठक इसे पढ़कर पंचकर्म का तात्त्विक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे इस में स्नेहन स्वेदन वमन, विरेचन, बस्ती आदि पद्धतियों का पूरा २ वर्णन है । १२५ पृष्ठकी पुस्तक का मू० केवल ।=) छः आना

१२ रसायन संहिता ।

भाषाटीका सचित्र ।

आयुर्वेदीय साहित्य के अमोल रत्न अपनी अलौकिक प्रतिभा के साथ अन्धकार के आवरण मे आच्छन्न हैं आयुर्वेद प्रेमियो ऋषि महर्षियों की अमूल्य रचना कबतक प्रकाशार्थ न तरसेगी । अनेक प्राचीन ग्रंथोंका नाम मात्रही आज सुनने में आता है । अनेक अमूल्य पुस्तक यत्र तत्र पड़ी हुई हैं । जिनके प्रकाशन की बड़ी आवश्यकता है ।

प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसाही अमूल्य रत्न है । अनुभवी और विचार शील लेखक महोदयने हिमालय पर्यटन में परिश्रम से इसकी खोजकी है उन्ही के प्रशंसनीय प्रयत्नसे यह पुस्तकरत्न वैद्य समुदाय की सेवा में उपस्थित कर सके हैं इसमें अनेक अव्यर्थ प्रयोग औषधियों के स्वरूप प्रस्तुत विधि धातु उपधातुका शोधन मारण प्रभृति अनेकविषय लिखे गये हैं इसके प्रकाशन में श्रम और अर्थ व्यय कियाहै इसकी सफलता गुणग्राही साहित्य प्रेमियों पर निर्भरहै । आयुर्वेद प्रेमियो? आइये अपना कर्तव्य पालन कीजिये इस ग्रंथरत्न को अपनाइये घर २ प्रचार कर लाभ उठाइये । मू० ॥।=) चौदह आना

१३ दशमूल ।

ले०—बाबू रूपलालजी वैद्य काशी निवासी

छपाई सफाई चित्ताकर्षक ग्यारह रङ्गीन चित्रों युक्त । दशमूल किसको कहते हैं किन २ औषधियों से बनता है उन औषधियों की आकृति कैसी है यह विरले ही जानते हैं इस पुस्तक में दशमूल की दशों औषधियों का सचित्र वर्णन है ।

साथ ही इनके गुणों का भी वर्णन है तथा दशमूल पाँच मूत्र के बनने वाले अनेक प्रयोगों की विधि भी दी गई है पुस्तक एंटिक पेपर पर छापी गई है मूल्य ॥) आठ आना।

१६—क्षयादर्शी

अर्थात् क्षयरोग और उसकी चिकित्सा।

लेखक पं० हरिशंकर जी शर्मा वैद्यराज।

सम्पादक—स्व० ला० राधावल्लभ जी वैद्य

क्षय एक भयंकर रोग है लाखों नवयुवा प्रति दिन क्षय से मृत्यु शय्या पर जाते हैं। जिन युवाओं से बड़ी २ आशाएं होती हैं जिनके सौरभ के प्यासे अलि जिनकी मकरन्द गुंजारते रहते हैं वे ही युवा कुसुम दुष्ट रोग से हमारी शुभ आशाओं को धूल में मिला चल देते हैं जिस रोग की चिकित्सा करने में वैद्यों के छक्के छूटते हैं जिसके कारण आयुर्वेदीय सामग्री टटोलने में बड़े २ डाक्टर चक्कर में पड़ जाते हैं उसी रोग पर स्वतन्त्र विवेचन हो नवीन और प्राचीन मतों का मिलान किया गया तथा स्वनिर्धार चिकित्सा लिखी गई है इस पुस्तक में क्षय रोग की भयंकरता क्षयरोग क्या है, क्षय रोग और कीटाणु क्षयरोग और नई सभ्यता, क्षयरोग और वीर्य नाश क्षयरोग का आयुर्वेदोक्त विचार क्षय के भेद क्षय रोग पर डाक्टरी के विचार तथा खण्डन मण्डन क्षयरोग की चिकित्सा स्वास्थ्य रक्षा की आवश्यकता उत्तम वायुजल आदि से क्षय रोगों के स्वास्थ्य लाभ प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रयोग वर्णन साध्यासाध्य विचार आदि सम्बन्धी सब ही विचारणीय विषयों का वर्णन किया गया है इसके पढ़ने से क्षय सम्बन्धी सब ही बातें जानी जाती हैं वैद्य लोग इसके द्वारा क्षयरोग की चिकित्सा प्रणाली सरल रीति से समझ जाते हैं वैद्य हकीम तथा सर्व साधारण सब ही इससे पढ़ लाभ उठावेंगे। मूल्य प्रति पुस्तक ।||) बारह आना।

१५—कुचिमार तन्त्र।

भाषा टीका

श्रीमद् कुचिमार मुनि प्रणीत

प्रस्तुत पुस्तक प्राचीन अत्यन्त गोपनीय है इसमें इंद्रिय वृद्धि, स्थूल करण, कामोद्दीपन लोप, वशीकरण, वाजीकरण, द्रावण स्तम्भन, संकोचन केशपतन, गर्भाधान आनन्द प्रसव आदि अनेक विषयों का विवेचन भली प्रकार किया गया है इसकी भाषा टीका और सुबोध भाषा वैद्यशास्त्री पं० रामप्रसाद जी मिश्र ने की है। छपाई सफाई चित्ताकर्षक है। मू० ।=) छे आना।

१६—तिल्ली।

लेखक—लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज।

जो लोग समाचार पत्र पढ़ते रहते हैं। उन्होंने अदालती फैसलों के वृत्तांत में पढ़ा होगा तिल्ली फट गई या डाक्टर बर्मन के नोटिस में प्लीहा की दवा पढ़ी होगी वह तिल्ली क्या है। शरीर में किस जगह है इसका काम क्या है इसको कौन शक्तियां हैं, इन शक्तियों के बिगड़ने से कौन से रोग पैदा होते हैं, इनका पूरा वर्णन इस पुस्तक में है यकृत और तिल्ली की मुसलमानी पुस्तक में अच्छा वर्णन है इसही शैली का आशय लेकर इस निबंध को आयुर्वेदोक्त मत से लिखा है तिल्ली के रोगों की विस्तार पूर्वक चिकित्सा भी है। बड़ी अच्छी पुस्तक है दाम ।) चार आना।

वेदों में वैद्यक ज्ञान।

(लेखक—स्व० लाला राधावल्लभजी वैद्यराज)

वेद हिंदुओं के जीवन, ईश्वरीय ज्ञान अखिल विद्याओं के भण्डार और अनादि हैं। इस बात को धर्म परायण हिंदू का एक सामान्य बच्चा

भी कहेगा वेद में हमारे चिकित्सा सम्बन्धी अनेक मंत्र हैं जिनसे अनेक वैधक विषयों का पूरा पता चलता है। विद्वान् वैद्यों को ऐसे विषयों के देखने की सदैव अभिलाषा लगी रहती है। हमने उन की इच्छा पूर्ति के लिये इस निबंध को लिखा है इसमें ऋग्वेद और अथर्ववेद से अनेक मंत्र उधृत कर उन का पदार्थ और विस्तृत भावार्थ दिया गया है। इसे पढ़ जो अज्ञानी वेदों को किसानों के गीत बतलाते हैं उन का दिमाग ठिकाने आजावेगा। वैद्यों को इस के देखने से अपनी विद्या की प्राचीनता का अनुभव होगा सरस्वती, वैद्य कल्पतरु, सुधानिधि, आर्य-मित्र, बङ्गवासी आदि सहयोगियोंने इस की प्रशंसा की है वैद्यों को घर में एक २ पुस्तक अवश्य रखनी चाहिये मूल्य ≡) तीन आना

ओज क्या है।

(कविराज नरेन्द्रनाथ मिश्र लाहोर लि०)

ओज क्या पदार्थ है। ओज की क्षय वृद्धि लक्षण इसपुस्तक में विस्तार से लिखे हैं, पश्चिमीय डाक्टरों के मत का भी समावेश है तीनों मतोंका ऐक्य भाव दिखाया गया है पुस्तक समझने और मनन करने योग्य है। कीमत –) आना प्रति।

चित्र! सचित्र!! (अस्थियां)

१९–शरीर रचना।

(ले०कविराज हेमराज वैद्य विशारद एम०ए० एम)

आयुर्वेदीय साहित्य में शारीरिक विषयक पुस्तकों की नितान्त कमी है पश्चिमीय डाक्टरों ने हमारे शास्त्रों का सहारा ले शारीरिक ज्ञान में बड़ी उन्नति की है आज हमको उनके सामने लज्जा वश सिर नवाना पड़ता है जब तक हिंदी भाषा में नये ढङ्ग की और नवीन ज्ञानयुक्त इस विषय की पुस्तकें प्रकाशित नहीं होंगी और वैद्य महोदय उनका मनन और ज्ञानोपार्जन न करेंगे तब तक डाक्टरोंके सामने हमको इस विषय में लज्जित ही होना पड़ेगा हमने अपने वैद्योंके लाभार्थ ऐसी पुस्तका को छापना आरम्भ करदिया है शरीर रचना सम्बंधी यह पहली पुस्तक है। इस में हड्डियों का प्राचीन और नवीनमत से वर्णन है अस्थियोंके भेद प्रत्येक अंग की अलग २ और सम्पूर्ण शरीर की अस्थि गणना और नामकरण है आयुर्वेदके मतसे क्यों अधिक हड्डियां मानी जाती हैं डाक्टर लोगों के मत से वास्तवमें कितनी हड्डियां हैं इसका निश्चय किया गया है वैद्यों को अवश्य देखना चाहिये। की० ॥)

२०–चन्द्रोदय।

(ले० लाला राधावल्लभजी वैद्यराज)

आयुर्वेद चिकित्सा में एक प्रधान औषधि चन्द्रोदय अर्थात् मकरध्वज है जिस प्रकार चन्द्रमा अंधकार का नाश करता है उसी प्रकार चन्द्रोदय से सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है विशेष कर कामोत्तेजक, पौष्टिक, वीर्यवर्द्धक, क्लीवत्व नाशक है आसन्न मृत्यु रोगी को आयुर्वेदीय चिकित्सक इस का ही सेवन करा आरोग्य कर कीर्ति लाभ करते हैं ऐसीमहौषधि प्रत्येक वैद्य और गृहस्थों के यहां रहनी चाहिए, किंतु जैसी श्रेष्ठ औषधि है वैसा ही इस का बनाना भी कठिनहै भारतवर्ष में बहुत कम वैद्य ऐसे हैं जो मकरध्वज (चन्द्रोदय) बनाते हैं वह इस की कीमत इतनी अधिक रखते हैं कि गरीब वैद्य और रोगी साधारण इतने दाम देकर नहीं खरीद सकते हमने इस अभाव को मिटाने को ही इस पुस्तक की रचना की है। इस में पारद शुद्ध गन्धक शुद्ध स्वर्ण शुद्ध गंधक जारण, चन्द्रोदय बनाने की विधि, भट्टी लगाने की

की विधि चन्द्रोदय के भिन्न २ रोगों में भिन्न २ अनुपान आदि चन्द्रोदय सम्बन्धी सब ही बातों का विस्तार पूर्वक वर्णन है। कीमत ॥) आना

२१ नाड़ी सिद्धांत।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के ज्ञाताओं ने नाड़ी ज्ञान के लिये यन्त्र का आविष्कार किया है और उसके द्वारा नाड़ी परीक्षा की विधि लिखा है हमने उनके सिद्धांत को इस पुस्तक मे लिखा है डाक्टरों में प्रेक्टिस आफ मेडीसन तथा अन्यजो पुस्तकें हैं उनसे ही समुचित है। प्राचीन सिद्धांत का भी जहां २ समावेश किया है। इससे वैद्य अच्छी प्रकार जान सकते हैं कि नाड़ी क्या वस्तु है। नाड़ी से क्या २ ज्ञान प्राप्त होते हैं। नाड़ी और हृदय का क्या सम्बन्ध है। नाड़ी कौन २ से स्थान को देखी जाती हैं नाड़ी बन्द होनेकाकारण अवस्थानुसार, रोगानुसार नाड़ी की गति, स्वस्थ हृदय गति और नाड़ी की गति का भेद स्वास्थ्य और नाड़ी गति आदि अनेक विषय चित्रों द्वारा सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। मूल्य ।≈) छै आना

आरोग्य सिन्धु की फाइल मूल्य २) रु० गुदगुदी उपन्यास ६ भागों में समाप्त प्रत्येक भाग का दाम ।=) हिंदी अंग्रेजी शिक्षक मू०१)रु० दुग्ध ।≈) मनुष्य का आहार १) रु०

२२ रोग परिचय।

यह पुस्तक श्रीमान् पं० हरिनारायण जी शर्मा वैद्य कार्यालय द्वारा लिखित है पुस्तक में माधव निदान में कहा हुआ निदान पञ्चक का विस्तार पूर्वक सरल भाषा में वर्णन है इससे विद्यार्थी एवं वैद्य निदान की विशेष बातें मालूम कर सकेंगे। आयुर्वेद में निदान ही एक वस्तु है। उसकी बारीकियां जानना प्रत्येक वैद्य का कर्तव्य है। मू० ॥) आठ आना।

२३ प्राकृत ज्वर।

(ले० स्व० ला० राधावल्लभ जी, वैद्यराज)

प्राकृत ज्वर को फसली बुखार या मलेरिया फीवर कहते हैं। डाक्टर लोग इसके विषय में बड़ी बड़ी बातें मारते हैं और वैद्य लोग अपने घर की सच्ची बातें भी नहीं जानते यह निबंध इस विषय पर पहिली ही पुस्तक है. इस में प्रकृति का भाव रोगों की संक्रामकता, उपायोजन, मलेरिया ज्वर आयुर्वेद मत से मेलेरिया पैदा होती है या मच्छ क्यूनायन से हानियां आयुर्वेदीय चिकित्सा आदि विषय बड़े भाव पूर्ण लिखे गये है। इसे पढ़ कर वैद्य लोग ऐसे विषयों का पूरा २ ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे जिसके कारण भारत वासी अनेक कष्ट पाते हैं। सरकार भी जिससे चिन्तित है डाक्टर भी अपने मस्तिष्कों को इसमें लड़ाया करते हैं। कीमत ।) चार आना पृष्ठ संख्या ३०

२४ दोषविज्ञान।

(ले० स्वर्गीय ला० राधावल्लभ जी वैद्यराज)

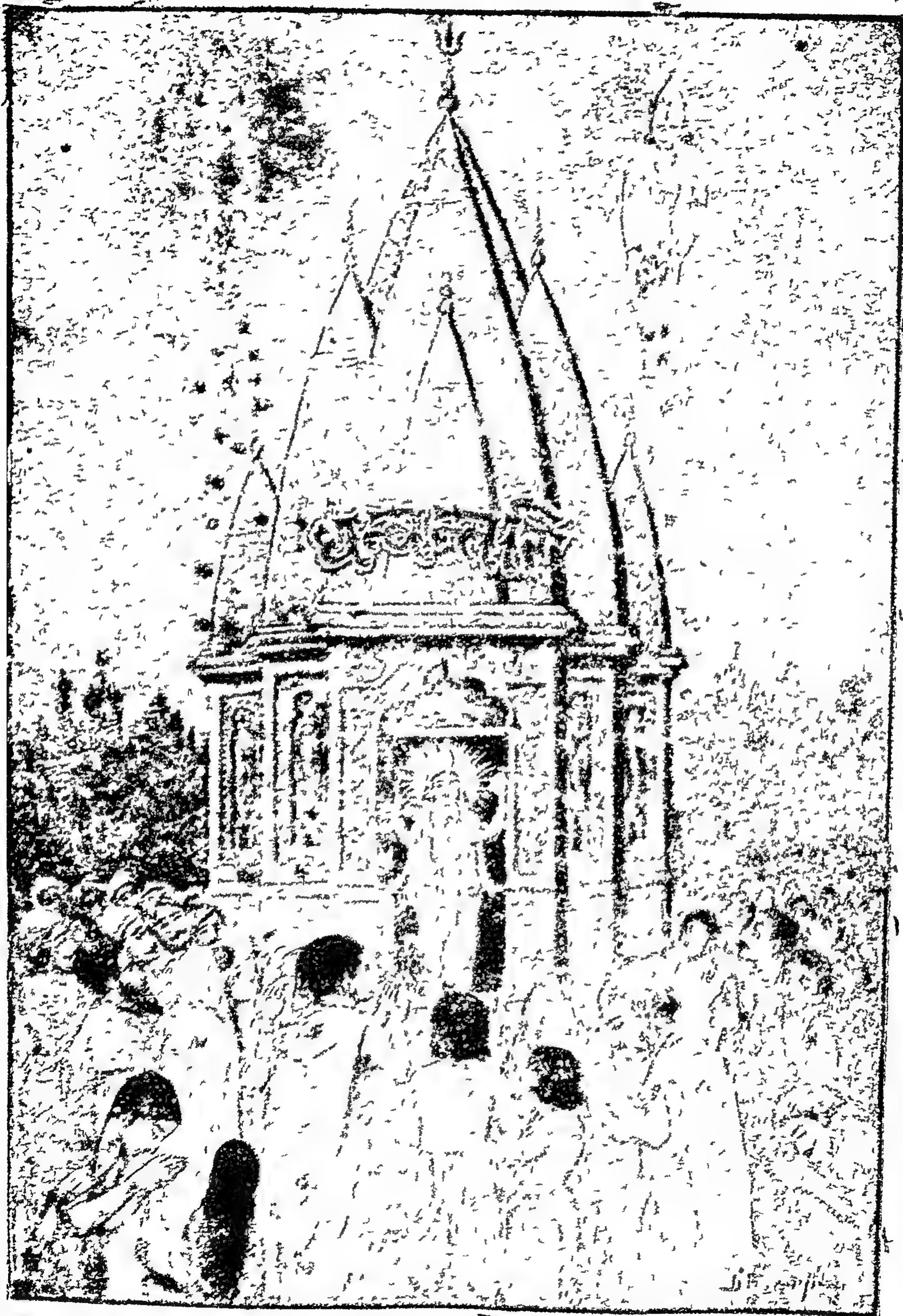
वैद्यक में दोषों का वर्णन बड़े विस्तार से है। दोषों की विषमता रोग और समानताही आरोग्यता है। इस पुस्तक में दोषों का बड़े विस्तार से वर्णन किया है दोषों का सञ्चय प्रकोप प्रसर स्थान संश्रय व्यक्ति भेद आदि विषय सरलता से लिखे गये हैं विद्यार्थियों को इसे पढ़ा देने से वे दोष सम्बन्धी कठिन विषयों को बड़ी अच्छी तरह समझ जाते हैं इस किताब की अनेक विद्वानों ने प्रशंसा की है कीमत =)॥ ढाई आना पृष्ठ संख्या ५०

मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी
मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी
मकरध्वजवटी मकरध्वजवटी

printed and published by V. Baukeylal Gupta at the Dhanwantri press Bijaigarh

संस्थापक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभजी वैद्यराज

भाग ५] अपरैल सन् १९२७ [अङ्क ४



वार्षिक मूल्य (उपहार सहित ४) }

सम्पादक—

वैद्य बांकेलाल गुप्त

{ साधारणाङ्क ।=)
{ विशेषाङ्क का १।)

वैद्य पं० नारायणदत्तशर्मा





पीयूष सिन्धु

का

बहुत प्रचार देख
कर स्वार्थी लोग
बडे परेसान हैं





पीयूषसिन्धु में सभी दवायें चिकित्सा शास्त्र के महान् अनुभवी विद्वानों द्वारा परीक्षा की हुई मिश्रत हैं यही कारण है कि इसके मुकाबले में नाम मात्र की दवा ठैर नहीं सकती और इस का प्रचार दिनों दिन बढता जा रहा है।

३७००० हजार एजेन्टों द्वारा समस्त संसार में बिकने वाली रजिष्टर्ड दवा



इस तरह के नीन रंग के सुन्दर लेविल में पैक है

पीयूषसिन्धु

कफ, खांसी, हैजा, दमा, पेचिश, दस्त, पेट दर्द शूल, संगहणी, जाडे का बुखार, कै होना, जी मिचलाना, बच्चों के हरे पीले दस्त, दूध पटक देना, नजला, जगाम, छाती का दर्द, सर्दी लगना, इनफ्ल्यूएन्जा आदि पाकस्थली और फफडों के अनेक रोगों म अकसीर, स्वादिस्ट सुगंधित और बिना अनुपान की असली दवा है मू० ॥) आना। डा. ख. १ से ६ तक ।=) एक दर्जन का मू. ४≡) डा. ख. माफ

पीयूष सिन्धु की बिक्री इस के अमूल्य गुणों पर निर्भर है

पीयूष सिन्धु के विषय म धडाधड सार्टीफिकेटों का आना और पीयूष सिन्धु के विषय म बडे २ डाक्टर वैद्य और हिकमत के आलिम लोगां की महान् राय व समाचार पत्रों की घोषणा व एजेन्टों का दिन दूना रात चौगुना बढना इस के अचूक गुणों का एक मात्र प्रमाण है विशेष क्या? पीयूष सिन्धु हजारों आदमियों को जीवन दान दे चुका है

(२) पीयूष सिन्धु के बेचने के अनेक साधन महौषधालय की ओर से मुफ्त किये जाते हैं जिस से दवा हाथों हाथ आते ही बिक जाती है, एजेन्टों को जिस कदर उन के नाम के नोटिस सायनबोर्ड पञ्चांग चित्र आदि जरूरत होती है मुफ्त छाप कर भेज जाते हैं विशेष हाल जानने के लिये साक्षी सहित बडा सूचीपत्र व एजेन्सी के नियम मुफ्त मंगा कर देखिये

हर तरह की दवा मंगाने का पता—सुन्दर श्रृंगार महौषधालय मथुरा।

कौन नहीं जानता दाद प्राणान्त कष्ट देता है ?

हाय हाय ! यह तो खुजाते खुजाते मर चले हमने पहिले ही कहा था कि

दाद के होते ही "दाद का काल" लगा कर दाद को उड़ा दीजिये

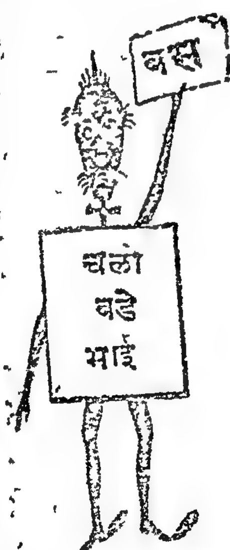




देखिये यह दाद पीड़ित रोगी



वरना यह विषैला रोग शरीर में फैल जायगा और इस भांति तकलीफ़ देगा



चुपके से दुमदबा कर भाग चलो

सुन्दर श्रृंगार महौषधालय मथुरा

दाद का काल

बना कर हमारा काल बुला लीया है



दुनियां भर की एक आवाज



सब से सस्ती अच्छी और बिना जलन व तकलीफ़ के दाद को जल्दी से जल्दी खोने वाली शर्तिया दवा "दाद का काल" ही है

मूल्य फी शीशी ।) आ डा. खर्च १ से ६ तक ।≡) १२ शीशी का मूल्य १।।।-) १.

माफ़-थोक खरीद दारों को गहरा मुनाफा और उपहार नीयम मुफ्त मंगाकर देखिये ।

दाद ही नही वल्कि खाज खुजली भी रफू चक्कर होजाती है

श्रीयुत पंडित मुक्ति नाथ पाण्डेय शिक्षक लौहर खुर्द से अपने (ता: १० फरवरी सन् १९२८) के पत्र मे लिखते है:- गत शरद ऋतु मे मैने दो दर्जन दाद का काल मगा कर पुराने से पुराने दाद ग्रसित लोगोंको मुक्त कर दीया जिस उपकार के वदले वह धन्यवाद दे रहे है साथही साथ आपको भी धन्य धन्य कहते और चिरऋणी वनेहुये हैं । आपको इस गिरा से धन्य वाद देने की शक्तिनही है । वर्तमान काल मे बहुतेरे लोग खाज खुजली के शिकार हो रहे है जिस से पुनः श्रीमान् को पुकारना पड़ा है -फी एक दर्जन

हर तरह की दवा मंगाने का पता—सुन्दर श्रृंगार महौषधालय मथुरा

घड़ी खरीदने का अच्छा मोका है

रेलवे रेग्यूलटर वाच गारंटी १० साल

नम्बर ७०१



यह फेन्सी घड़ी इस बार के चालान में नई आई है एक बार चावी देने से २४ घंटे ठीक टाइम बताने वाली मज़बूत पुरजों से फ़िट की हुई, सिरे पर चाबी, खुला मुंह, खूब सूरत डायल वाली एक से एक बढ़िया घड़ी है कीमत नीचे लिखे अनुसार है-

चांदी केस की......	कीमत १२॥।=) रु.
यही सफेद धातु केस की	कीमत ९॥)रु.
यही सुनहरी केस की	कीमत १०।) रु

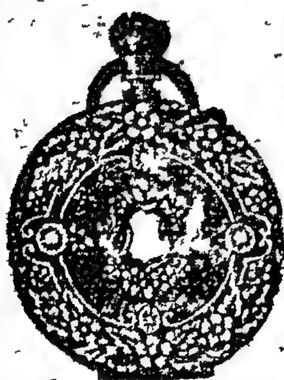
२ घड़ी के खरीदार को यह ☞ एक घड़ी इनाम! इनाम! इनाम



इन विज्ञापन में लिखी घड़ियों में दो घड़ी एक साथ मगा नेवालों को

रेलवे रेग्यूलेटर बन्दढक्कन गारंटी १० साल

नम्बर २२२



इन घड़ियों को जेब म रखने से कांच टूटने का डर नहीं जब टाइम देखना चाहो जरा कल दबाई कि ढक्कन फ़ोरन खुल जाता है और असल समय आप के सामने आजाता है सिर पर चाबी की लीजिये चाहे जुदी चाबी की लीजिये कीमत दोनोंकी समान है

चांदी केस की......................	कीमत १२) रु.
यही सफ़ेद धातु केस की.........	कीमत ९) रु.
यही सुनहरी केस की.............	कीमत ९॥) रु.

यह घड़ी ९ साल की गारंटीवाल.



१ घड़ी इनाम

घड़ी के शोक़ीनो को

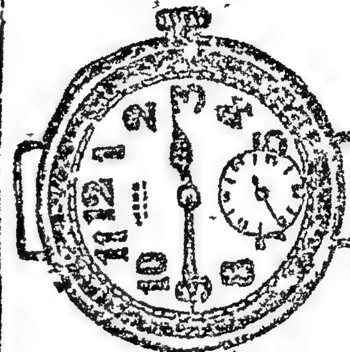


जल्दी आर्डर भेजना चाहिये यह इनाम थोड़े दिनही देंगा

समय बार बार नहीं आता है

लीवर रिष्टवाच

नम्बर १३०



एक बार चाबी देनेसे ३६ घंटा चलने वाली मज़बूत और फेंसी फिगर व सेकिन्ड की सुई वाली, मज़बूत घड़ी कीमत

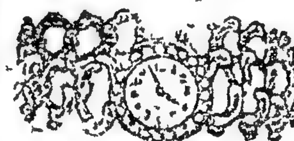
चांदी केस की.........	कीमत २०॥) रुपया
मिदिल केस की......	कीमत ११॥।) रुपया
रात मे देखने की......	कीमत १६।) रुपया
सुनहरी केस की......	कीमत १८॥।) रुपया

कलाई पर बांधने का पट्टा साथ है।

☞ यह एक घड़ा इन विज्ञापन की २ घड खरीदने वालेको इनाम! इनाम

❀ चूड़ी में घड़ी ❀

नम्बर ५७



चलो झगड़ा गया हाल के जमानेकी पढ़ी लिखी स्त्रीयों को विशेष गहना पसन्द नहीं होता उन्हें ता खूबसूरत चूड़ियों में ज ाऊ घड़ी पसन्द आती है यह चूडो मे घड़ी हमने इस बार अच्छी सुनहरी धातु की खास तौर से तयार कर स्प्रिंग वाली मगाई हैं जिन्हें रोजाना पहरने से रंगत ज्यों की त्यों बनी रहती है और घड़ी के चारों तरफ नकली हीरा पन्ना मोती और लाल नीलम जड़े हैं, चूड़ा इतना खूबसूरत और ऐसी बना हैं कि छोटे बड़े हरएक हाथमें आजाती है कीमत फी घड़ा साधा ८) नग वाला १०) रुपया

हर तरह की घड़ियां मंगाने का पता—सुन्दर शृंगार घडी विभाग मथुरा

सोना, चांदी और सुनहली, रुपहली केस की रिष्टवाच व जेबी घड़िया. दिवाल पर लगाने के क्लाक, टेबिल क्लाक और टाइम्पीस खरीदने का सुअवसर।



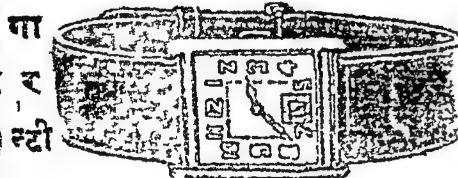
प्रिय सज्जनो!

हम दावे के साथ कहते हैं

इस बार के चालान मे जो घड़ियों का नया स्टाक आया है इनके सब कल पुरजे बड़ी मज़बूत धातु के बने है और चतुर कारीगरों ने ऐसे फ़िट किये हैं कि बर्षों चलने पर भी बन्द होने का डर नहीं है। हम आप साहबों से अर्ज़ करते हैं कि हमारी घड़ियों की गारंटी सची गारंटी है और घडी रवाना करने के पहिले कारखाना घडी को सब तरह जांच कर पारसल मे घडी सावधानी से बन्द करके रवाना करता है और सब तरह की जुम्मेदारी अपने उपर रखता है, इसलिये हरतरह की घडिया मगानेमें हमारे यहां ही से सुभीता पड़ेगा आपको जैसी घडी चाहिये शाजही आर्डर भेजकर मँगा लीजिये

अमीरी रिष्टवाच नं० ११२१

गारंटी १० सन्

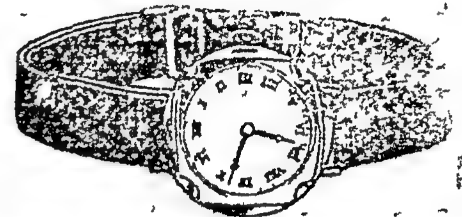


इसकी सादगी पर अमीरलोग मुग्ध हैं एक बार चाबी देनेसे ३० घंटा सच्चा टाइम बताने मे अपनी सानी नहीं रखती कीमत इस प्रकार है
रोल्ड गोल्ड सोने की लीवर की. ४९)४०)३९)रु
चांदी केस की लीवर कीमत ३०) २५) रुपया

हमने कहा था की सन् १९२८ के चालान में जो घडीयों का नया स्टाक आयेगा वह अत्यन्त मज बूत पुरजे वाली और अन्दर कितने ही ज्वैल वाली होगी और ५ से १० वर्ष की गारंटी रजिस्टर्ड होगी ऊपर का मोटा काच दानेदार बडा मजबूत होगा। वही नया स्टाक आगया और कीमत सस्ती होने की वजहसे धडा धड बिक रहा है आप को सच्ची घडी पास रख कर अपना शौक पूरा करना है तो इस अवसर को हाथ से न जाने दीजिये।

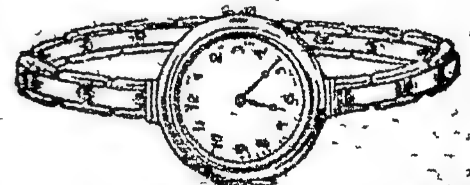
निकिल केस लीवर कीमत २०) १८) रुपया
सुनहली फेन्सी केस कीमत १८) ९) ७॥) रुपया
अंधेरेमे देखने वाली रेडीयम फिगर वाली का दाम १) रु. ज्यादा होगा

डेम ग कट केस की फैन्सी रिष्टवाच नं० ३९६



यह सचा वक्त बताते हुऐ भी अपने केस की चमक दमक से घडी के शौकीनों का मन प्रसन्न रख ती है गारंटी १० वर्ष
रोल्ड गोल्ड सोनेके केस की लीवर कीमत ४०) ३९) ३०) रुपया
चांदी केस की लीवर कीमत २८) २९) २०) रुपया
निकिल केस लीवर कीमत १८) १९) १४) रुपया
सुनहली केस की फन्सी कीमत ८॥) ७॥) रुपया

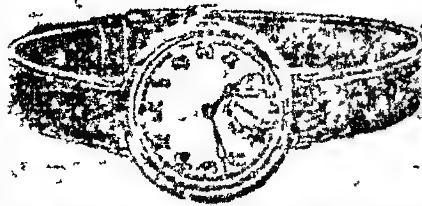
ब्रास लेट रिष्टवाच नं० ७५६
गारंटी १० वर्ष



इस घडी के डायल म जो अंक बने हैं इन्हे थोडा पढा भी समझ लेता है और हाथ की कलाई पर रहने से कलाई की अपूर्व सोभा हो जाती है टाइम बडा सच्चा देती है छोटे बडे हाथ मे बडे मजेमे रहती है
की. रोल्ड गोल्ड सोनेके केस की की. ३९)३२)रु.
चांदी केस की कीमत २०) १८) १९) रुपया
सुनहली फेन्सी केस की कीमत १२) १०] ९] रु.

हर तरह की घडियां मंगाने का पता—सुन्दर श्रृंगार कार्य्यालय मथुरा।

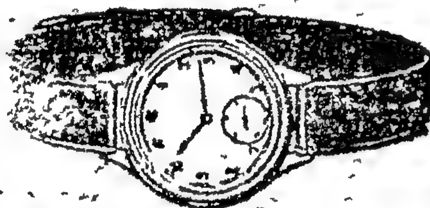
रेडीयम रिष्टवाच नं० ८६६ गारंटी १० वर्ष



इस घडी के डायल मे रेडीयम भानू से इतने खूब सूरत अक निर्माण किये है कि दिन मे बडे सुहावने दीखते है और रात को हीरे के माफिक चमकते है और सेकिन्ड की सुई भी मोजूद है घडी के शौकीनों को यह घडी मंगा कर जरूर रखनी चाहिये एक बार चाबी देनेसे ३० घंटा ठीक टाइम बताती है

कीमत रोल्ड गोल्ड सोने की कीमत ३९) ३०) २९) रुपया
चांदी केस की ... ... कीमत ३०) २२) १८) रुपया
सुनहली केस की ... ... कीमत १२) १०) ८) ७] रुपया

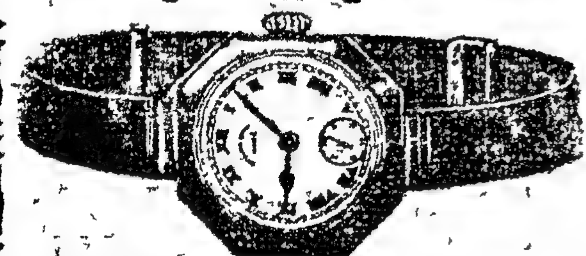
जैन्टिल मेन रिष्टवाच नं. ७३३
गारंटी १० वर्ष
एक बार चाबी देनेसे ३० घंटा बराबर चलने वाली



यह घडी बडी मनो हर है देखनेसे चित्त प्रसन्न होता है सेकिन्ड की सुई भी लगी है

फांसी सुनेहरी चमकीले केस ... कीमत १२] १०॥] रुपया
चांदी के केस की फन्सी डायल... कीमत १३] ११]९) रुपया
मिटिल केस ... ...कीमत ९] ८] ६॥] रुपया

खद्दर बुनाव के पट्टे वाली रिष्टवाच



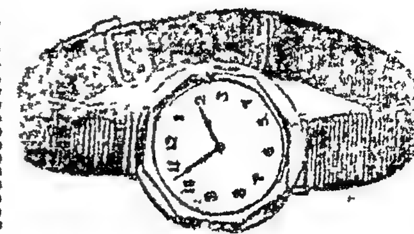
नं. ६५७

गारंटी १० वर्ष १ बार चाबी देनेसे तीस घंटा सच्चा वक्त बताने वाली इस घडी का पट्टा सुनेहली बारीक तारमे खद्दर कीतरह बुना हुआ है और घटाने बढानेके लिये बीच मे स्प्रिंग लगा है देश भक्तों के लिये खद्दर बुनाव की रिष्टवाच मंगा कर अवश्य व्योहार करनी चाहिये

कीमत रोल्ड गोल्ड केस लीवर कीमत ४७] ४२) ३९) रुपया
चांदी केस लीवर........... कीमत ३०] २९] २३] रुपया
मिटिल केस लीवर..... ... कीमत २०) १८] १९) रुपया

सुनेहली फन्सी डायल .... कीमत १०॥] ८॥] ७॥] रुपया

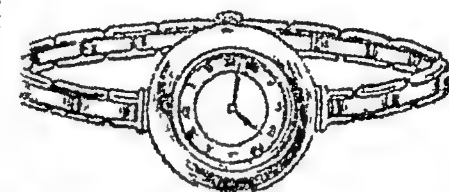
विद्यार्थी रिष्टवाच नम्बर ३४५
गारंटी १० वर्ष एक बार चाबी लगाने से ३० घंटा चलने वाली



इसके डायल मे जो अंक बने है उनको विद्यार्थी बडे मजे से समझ लेते है और इसका पट्टा भी नये स्प्रिंग से बना है

कीमत यों है सुनहली कीमत ९] ८] ७] रु. चांदी केस की. १०] ९]८] रु. मिटिल केस कीमत ८] ७)६) रु.

मुक्का सीर केस ब्रासलेट वाच नंबर ५५५



गारंटी १० वर्ष एक बार चाबी देने से ३० घंटा चलनेवाली इस के पट्टे मे इतने अच्छे स्प्रिंग लगे है की छोटी और बडी से बडी कलाई पर बडी आसानी से पहनली जाती है और बहुत खूब सूरत मालूम होती है

कीमत सुनेहली केस........ कीमत १९] १३] १०॥] रुपया
चांदी केस की............... कीमत १७] १४] ११] रुपया
मिटिल केस की............... कीमत १०॥] ८॥] ६॥] रुपया

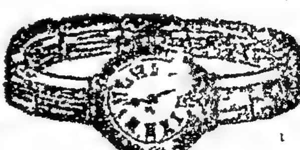
चमकने अंक वाली रिष्टवाच नं. ७१३
गारंटी १० साल



इस का पट्टा भी बडा खूब सूरत है डायल पर अंक नगीने कीसी चमक देते है कीमत यों है

सुनेहली केस की... ... ... १२) १०) ८) रुपया
चांदी केस की... ... ...कीमत १४) ११) १०) रुपया
मिटिल केस ... ... ८] ७) ८॥] रुपया

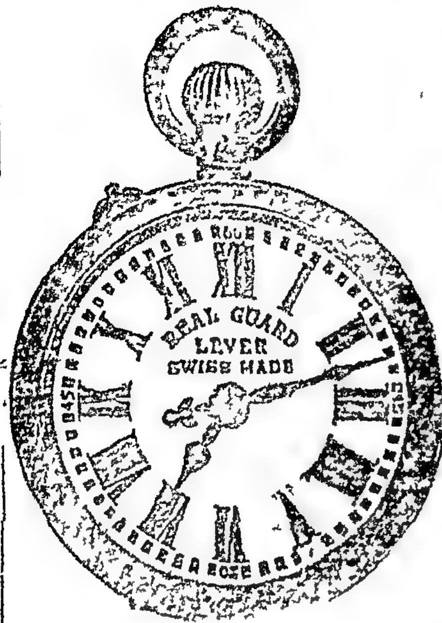
बिजली रिष्टवाच



यह सुनहरी रिष्टवाच बिजली के समान चमकने वाली अच्छी है कीमत फी. रिष्टवाच ८॥) रुपया

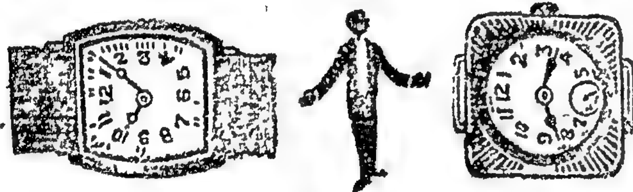
हर तरह की घडियां मंगाने का पता—सुन्दर शृंगार घडी विभाग मथुरा

रेलवे रेल गार्ड नं. २५११ गारंटी १० साल

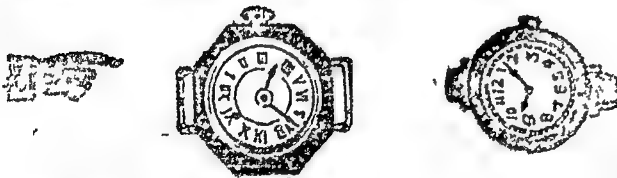


यह घडी रेल से ठीक टाईम मिलाकर चलती है एक भी मिनिट का फर्क नहीं देती है कारण इस के पुरजों में जुपल लगे हुए हैं जिस से पुरजे वर्षों तक काम देने पर भी चूल में ढीले नहीं हो सक्ते हैं और इस प्रकार टाइम में एक मिनिट का भी फर्क नहीं पडता है मूल्य लीवर वाच १५ जुपल वाली १४) रु.
यही सिलेन्डर मशीन का दाम .... ७॥) रु
यही सुनहरी केस का दाम .... ६) रु.

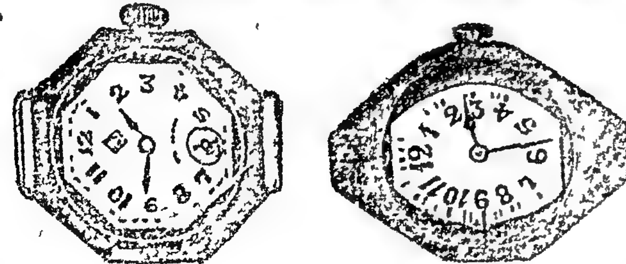
नं ४७६ फैन्सी टोना शेप — नं. ४८० चौकोनी रिष्टवाच



नं ४८१ अठपहलू रिष्टवाच — नं. ४८४ राउन्ड फैन्सीशेप



नं. ४८६ औक्टेगोनल शेप — नं. ४८८ ओवेलशेप



उपरोक्त नं ह २ के शेप की घडियां आप को एक ही दाम में मिलेंगी — कारण इस बार विलायत के इन्डेन्ट में सब एक ही भाव आई है वही हम आप को देंगे

यह सब घडियां बहुत सुन्दर चमक दमक के डायल और बढ़िया पालिश की केस की हैं जिन को पहिनने से ४०) ५०) रु. की घडियां और इस घडी में अन्तर कुछ फर्क नहीं मालूम पडता है जिस नम्बर की पसंद हो मंगा लीजिये मूल्य एक ही है सुनहरी केस की गोल्ड पालिश की घडियां ७॥) यही सादी ६) रुपया

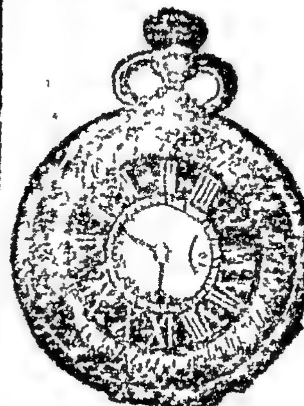
फैंसी पाकिट वाच नम्बर १६६१



यह फैंसी केस की बनी हुई घडी खुशनुमा घडी है वजन में हलकी और चपटी है जो फैशनेबुल आदमीयों की पाकिट का यह सूरत नहीं बनाती है टाइम इतना सच्चा बताती है कि बढिया से बढिया घडी का मुकाबला कर सकी है एक बार चाबी देने से ३० घन्टे सच्चा वक्त देती है

मूल्य चांदी के केस की १५) रुपया
,, सुनहरी फैन्सी केसकी १०) रुपया
,, सादा निकिल केस की ८) रुपया

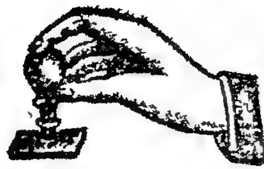
फैंसी हाफ हंटिंग मय सेकिन्ड नं, २६०२



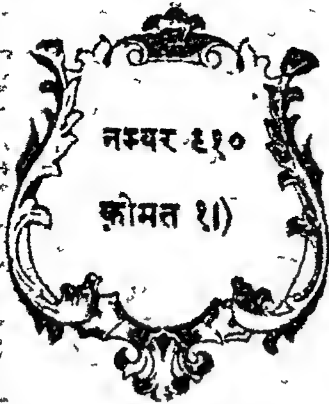
यह घडियां इस ही साल के चालान में स्विस के चतुर कारीगरों के हाथ से बन कर आई हैं — पुरजे जिस मजबूती से फिट कीये गये हैं वैसी ही मजबूती इस के डायल कांच और सुई की हिफाजत को यह खुशनुमा ढकना बनाया है जिस के खोलने की जरूरत नहीं है बस घडी जेब से निकाली कि टाइम मालूम हो गया ढक्कन पर इस खूबसूरती के फिगर बना दीये गये हैं जो देखते ही बनते हैं घडी हर समय ढकी रहती है इससे उस में धूल वगैरः नहीं पहुंचती है यही कारण है इस घडी की १२ साल की पक्की गारंटी है मूल्य चांदी केसकी १५) रु. सुनहरी केस की १२) रु. रूपहली केस की १०) रुपया ॥

इन घडियों के मंगाने का पता—सुन्दर शृंगार कार्यालय घडी विभाग मथुरा

फैंसी रबड की मुहरें



हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, जिस भाषा में चाहिये उम्दा छापने वाली मोहर, छापने की स्याही और पेड सब मोहर के साथ आर्डर आने के दूसरे ही रोज बनाकर भेजते हैं। इसके सिवाय जिस देवता की मोहर चाहिये आप लिख कर भेजदेंगे विशेष नमूने देखने हों तो रबड़ स्टाम्प विभाग का बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये।

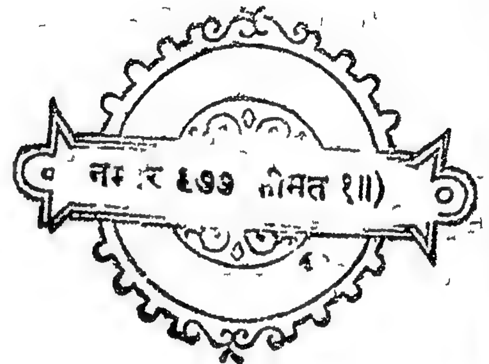












नम्बर १०२८



की. ॥)

नम्बर १०२९



की. ॥)





नम्बर १०३०

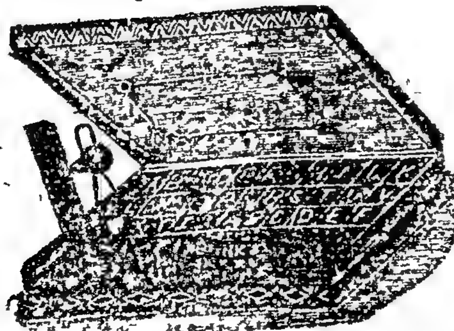


की. ॥)

नम्बर १०३१



की. ॥)



॥ रबड का टाईप ॥

इसमें इंगरेजी के सब अक्षर मजबूत रबड़ के और कम्पोज की स्टिक चिमटी, स्याही, पड सब मौजूद हैं की. बड़ा ५) ४) रु मझोला ३॥) ३) २॥) २) रु. छोटा १॥) १।) १) ॥।) रु. चिट्ठी, कार्ड, वगैरह छाप सकते हैं

हर तरह की मुहर मंगाने का पता—सुन्दर शृंगार रबड़ स्टाम्प विभाग मथुरा

उपयोगी पुस्तकें

रामाविनोद	१॥)
संदिग्ध बूटी चित्रावली	२॥)
प्लेग	।)
आरोग्य दर्पण	१॥)
स्त्री चिकित्सा	१)
सुधावर्ष	॥=)
पुरुषों के गुप्त रोग उनका इलाज	॥।)
प्लीहा	।=)
भैषज्य सार संग्रह	।=)
हरिधारित ग्रन्थ	।=)
काम शास्त्र	१॥)
रत्न भंडार	१।)

नोट-कुल पुस्तकें नई हैं ३३) सैकड़ा कमीशन मिलेगा।

३॥)फाइल अनुभूत योग माला१८२६ई०साल मा-स्य,
३॥) फाइल ,, ,, १८२७ ई० ,, ,,

पता—वैद्य बालकरामसिंह

नानमऊ पो० हरौनी लखनऊ

दस रुपया रोज कमालो।

यदि आप अमेरिका, जर्मनी, जापान की अन्य दस्तकारियों व व्यापार के गूढ़ रहस्य सीख कर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहें तो आज ही ३) रु० मनीआर्डर द्वारा भेज कर सचित्र मासिक पत्र "रसायन" के ग्राहक बन जाइये। अगले मास ग्राहक होने वालों से वार्षिक मूल्य ४) चार रुपये लिया जायेगा।

मैनेजर "रसायन"

चौटाला (हिसार)

बृहत् रसराज सुन्दर

यह अमूल्य रस ग्रन्थ अधिक समय से समाप्त होगया था इसके लिये हमारे पास अनेक ऑर्डर जो दस १०) रुपये तक में लेने को तैयार थे आते थे पर पुस्तक अप्राप्त थी। यह अधिक समय से बम्बई में छप रहा था अब छपकर तैयार हो गया है। मूल्य वही रक्खा गया है पुस्तक थोड़ी छपाई है। अतः शीघ्रता कीजिये अन्यथा पछताना होगा मू० ३।) सवा तीन रुपया।

पता—मैनेजर श्री धन्वन्तरि कार्य्यालय

विजयगढ़ जिला अलीगढ़

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

धन्वन्तरि

बिल्कुल मुफ्त ?

जो सज्जन प्रेम मंडल के ५ सदस्य बनायेंगे उनको "धन्वन्तरि" साल भर तक मुफ्त भेजा जायेगा। "धन्वन्तरि" के अतिरिक्त दूसरे पत्र भी मुफ्त भेजे जाते हैं ।–) के टिकट भेज कर नियमावली मुफ्त मँगाइये।

पता—

प्रेम मण्डल बरेली

विषय-सूची

चित्र सूची



जुजुरुषो नामत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतंद्रा।पि मिवच्यवानात् ।
प्राति रतं जाहिततस्तायुर्दस्त्रादित्यति मकृणुतंकनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं० १० अ० १७ सू० ११६

भाग ५ } अप्रैल सन् १९२८ { अङ्क ४

तन्दुरुस्त

किसके ऊपर छिटक रही है, प्रेमेश्वर की प्रेम-कला ।
जिसको स्वयम सिद्ध, वानी है। वेद शास्त्र का जो ज्ञानी है।
नहीं-नहीं, उसने तो पाई, सरस्वती की क्षेम-कला।
जिसका भवन, लक्ष्मी-शोभित। श्री सम्पति समृद्धि प्राप्त नित।
नहीं-नहीं, उसने तो पाई, कमलेश्वरि की हेम-कला।
जिसके तनमें, रोग नहीं है। वह ही, उपमा योग नहीं है।
उसके मुखपर नृत्य कररही, प्रेमेश्वर की प्रेम-कला ।

नयनजी

सर्प चिकित्सा

(ले० आयुर्वेद महामहोपाध्याय रसायनशास्त्री पं० भागीरथ स्वामी आयुर्वेदाचार्य)



प्राचीन ग्रन्थों के देखने से पता चलता है कि सर्पों की एक हजार जातियां सृष्टि क्रम के आरम्भिक समयमें थीं। क्योंकि दक्ष प्रजापति की पुत्री कश्यप ऋषि की पत्नी कद्रू से एक सहस्र सर्पों की उत्पत्ति लिखी है। महाभारत से पता चलता है कि सर्पों का कई बार बड़ाही महत्व बढ़गया था। इनमें से कितने ही सर्पतपस्वी बन गये। कितने ही सर्पोंने ऋष्यादिको काटने का भारी उपद्रव मचाना आरम्भ कर दियाथा। उनके उपद्रव शांत करने की बहुत चेष्टा की गयी, परन्तु जब सर्प नहीं माने तब उन की माता कद्रू ने ही उन्हें नष्ट होनेका शाप देदिया था। जिन से शेष, वासुकी, तक्षक, ऐरावत, धृतराष्ट्र वंशीय जातियां बच गयी थीं। यह दिव्य सर्प कहाते हैं। भौम सर्पों में अस्सी प्रकारकी प्रधान जातियां हैं। वासुकी के वंशवाली १५ ऐरावत के वंशवाली८ तक्षक वंश की १८ कौरव्य वंशकी ११ और धृतराष्ट्र वंशकी ३५ जातियां हैं। इस प्रकार पुत्र पौत्र त्रिशिर द्विशिर आदि मिलकर एक हजार जातियां होती हैं। जिन का यहां उल्लेख करने से लेख के बढ़ने का भय है। अत्यन्त उपद्रव मचाने के कारण बड़ी २ विषधर सर्पों की जातियां राजा परीक्षित को तक्षक के काटने और राजा के जिलाने के निमित्त ब्राह्मण का रूप धर कर जाते हुए धन्वन्तरिजी को विनय पूर्वक बहुत सा धन देकर चालाकी से लोटा देने के कारण राजाजन्मेजय के यज्ञ में स्वाहा कर दी गयीं। राजा जन्मेजय का यज्ञकुण्ड खोदने से अबभी बड़े २ भारी अधजले सर्प कङ्काल मिलतेहैं।

एक बार सुश्रुत ऋषि के प्रश्न करने पर आयुर्वेद के प्रधान देवता धन्वन्तरि भगवानने बताया था कि वासु की आदि सर्प, तक्षकादि महीधर, नागेन्द्रादि अग्नि के समान तेजवाली वे सर्पों की जातीयां है, जो घोर जङ्गल में, समुद्रमें, तथा एकान्त पहाड़ों में रहतीं हैं। भौम और दिव्य इन दो प्रधान जातियों में दिव्य सर्प प्रायः किसी को नहीं काटते उनकी क्रोध भरीदृष्टि और फुसकारने से ही मनुष्य पशु पक्षी आदि भस्म हो सकते हैं। उनकी चिकित्सा नहीं है केवल परमात्मा की अर्चना ही है। भौम [पार्थिव जाति वाले] सर्पोंके दंशमें विष होता है। वह मनुष्यों को काटते हैं। उनके प्रधान ८० अस्सी प्रकार के भेद हैं। उन में भी प्रधान पांच भेद हैं। १, दार्वीकर (फणधारी)

२ मण्डली (गोल चकत्ते) वाले, ३ राजिमन्त (धारी वाले) ४ निर्विष (विना विषवाले , स्वल्प विषवाले) ५ वैकरंज (वर्णसंकर)अर्थात् अन्य जातिकी सर्पिणी में अन्य जाति वाले सर्पो के वीर्य से उत्पन्न होने वाले हैं। इन पांच जातियों में भी प्रधान दर्वीकर, मण्डली और राजिमन्तही हैं दार्वीकर २६ प्रकार के, मण्डली २२ प्रकार के राजिमन्त १० प्रकार के निर्विष १२ प्रकारके और वेकरंज ३ प्रकार के होते हैं। वैकरजों से उत्पन्न स्वधारियों के स्वरूप भेद से,चित्र (चितकबरे) राजिल धारीदार ७ प्रकार के होते हैं। इस प्रकार सब मिलाकर प्रधान २ सर्पों की प्रचलित ८० जातियां हैं। जिन सर्पों के शिर पर गोलचक्र (पहिये) के समान चिन्ह हों जिनके शिरपर हलके अग्रभाग के समान चिन्ह हो जिनके शिरों पर छत्रका चिन्ह हों स्वस्तिक वा सथिये का चिन्ह हो अंकुशका चिन्ह हो वह अत्यन्त शीघ्र चलने वाले फणधारी दार्वीकर कहाते हैं। दार्वी नाम चमचेका है उसके समान शिर करने वाले अनेक प्रकार के गोल चकत्तों से चिन्हित मोटी जाति वाले, मंद चाल से चलने वाले, जली हुई अग्नि केसमान प्रभाव युक्त माण्डलिक जातिवाले सर्प कहाते हैं। चिकने तिरछी टेढ़ी सीधीलकीरों तथा अनेक प्रकार रंगों से शुसोभित तसवीर के समान अनेक वर्ण वाले राजीमन्ती कहाते हैं। इन ८० प्रकार के सर्पों में बड़े २ नेत्रवाले बडी जिह्वा वाले बड़े मुख वाले बड़े शिर वाले सर्प पुरुष होते हैं। और जिनके नेत्र जिह्वा शिर मुख छोटे २ हों उन्हें स्त्रियां (सर्पिणी) जानना चाहिये। जिन में स्त्री पुरुष दोनों के लक्षण हों वह मन्द विष वाले क्रोधरहित नपुंसक जाति वाले सर्प होते हैं। तन्त्रान्तरोंमें सावित्र पथ्यते राज्ञौ क्रिय स्त्रीप्रवि- धास्सदा। स्त्री दृष्टो भिषजा कार्यं स्सूपचारस्त्वान- रमे इस लेखानुसार सर्पिणियोंमें अत्यन्त अधिक विष होता है। महर्षि चरकने लिखा है सर्पों गोधरे को नाम गौधाख्यायांचतुष्पदः। कृष्ण सर्पेणतुल्य- स्यात्माना स्युः मिश्रजातयः आर्यावर्तवाला गोधेर- क या गोहेरा नामक एक सर्प होता है वह काल सर्प के समान विषयुक्त होता है। जिसको मार- वाड़ी भाषा में खवरा हिन्दी में विषखापर कहते हैं। जिसका काटा हुआ कभी जीता नहीं है ऐसा सुनने में आता है जब उसको पेशाब लगता है तब वह काटता है इस प्रकार मिश्र जाति वाले अनेक सर्प हैं।

फणवाले समस्त सर्प वायु को प्रकुपित करते हैं मांडलिक सर्प पित्त को कुपित करते हैं। अनेक राजीमंत सर्प कफ को कुपित करतेहैं अ- र्थात् वात पित्त कफ को कुपित कर या वृद्धि कर मनुष्यों को नष्ट कर देते हैं। इससे वैद्य को चाहि ये कि वह वात पित्त कफ सन्निपात भेद सेअमुक जाति वाले सर्प ने काटा है इसी से यह चिन्ह है ऐसा वैद्य मात्र को जानना चाहिये और वैद्य मात्र को इस बात पर भी दृष्टि रखनी चाहिये अमुक स- मय में अमुक जाति वाले सर्प निकलते हैं तथा काटते हैं इससे भी सर्प अमुक जाति के सर्प ने काटा है ऐसा तथा साध्यासाध्य का भी निर्णय होजाता है। जैसे रात्रिके पिछले भाग में राजी- मन्त (चित्र सर्प) और रात्रि के पूर्व भाग में मांडलिक तथा दिनमें दार्वीकर विचरते हैं। और तरुण अवस्था वाले दार्वीकर वृद्धावस्था वाले माण्डलिक मध्यावस्था वाले राजीमन्त विशेष विषवान होते हैं इनके काटने से शीघ्र मर जाता है। चिकित्सकों को विष के स्वरूप या

विशेषता के लिये सर्पों के काटने के समय उनके व्यापार का भी ज्ञान अवश्य रखना चाहिये। यदि सर्प नकुल से व्याकुलित हो, बालकावस्था में हो (उत्पन्न होते ही) जल में बहने से थके हुए या ब्राह्मण द्वारा मंत्रौषधियों से जकड़ा हो, जैसे कालिदास ने राजा दिलीप का हाथ रुक्जाने पर "भोगीव मन्त्रौषधि रुद्ध वीर्य" किसी कारण वश कृश हो, वृद्ध हो, कांचली चढ़ी हुई हो, भय से व्याप्त हो तो ऐसे समय में सर्पों में थोड़ा विषहोता है। सर्पों में अनेक स्वभाव वाले सर्प होतेहैं जिनमें कोई पैरों से दब जाने पर, कोई केवलअपनी दुष्टता से बिना छेड़ेही अथवा किसी अन्य कारणसे क्रुद्ध होकर, कोई कोई केवल काटने की इच्छा रखनेवाले बिनाप्रयोजन काटने वाले होतेहैं। वह महाक्रोधी सर्प कहाते हैं। वह सर्पित, रदित और निर्विष नाम से ३ प्रकार के होते हैं। कोई २ सर्प विद्या विशारद सर्पाङ्गभिहत (सर्प की पूछ आदि से विष के प्राप्त होने) को चौथा सर्प का काटना भी मानते हैं। जिस दष्ट स्थान में एक या दो अनेक दांतों के चिन्ह अल्परक्त युक्त गड़े हुए के समान भीतर को मालूम हो तथा पूरी दांतों की पंक्ति का चिन्ह भी मालूम पड़े अथवा इन्द्रिय आदि में विकार प्राप्त होजाय, डाढ़े चिपक गईहो कुछ दंशस्थान पर शोथ हो तो उसको सर्पित (पूर्ण दष्ट) कहते हैं। काटा हुआ स्थान नीला पीला सफेद लाल या अल्पतरलाल झलकदार मालूम हो वह रदित अल्पविष कहाता है। काटा हुआ स्थान सूजन रहित थोड़ा रक्त स्राव हुआ मालूम हो इन्द्रियादि शरीर विकृत नाम मात्र भी न होवे, एक या दो या तीन नाम मात्र काटने के चिन्ह हों उसको अविष कहते हैं। जिस मनुष्य के सर्प के स्पर्श मात्र से भय व्याप्त होजावे या केवल भ्रम होजावे कि मुझको सर्प ने अवश्य काटा है इस भय से वायु कुपित होकर शोथ उत्पन्न कर प्रकृति को बिगाड़ देता है, उसको चतुर्थ सर्पाङ्गभिहत कहते हैं। रोगी उद्विग्न सर्प के शीघ्रता से काटने पर तथा अत्यंत बालक अत्यंत वृद्ध के काटने पर अल्पविष होता है और गरुड़ देवता (अन्य) महर्षि सिद्धों से सेवित स्थानमें या विषघ्न औषधिसे युक्त होने पर सर्पों के काटनेपर भी विषका आक्रमण नहीं होसकता। यहबात ठीक है परन्तु गोली लगने पर तलवार लगने पर बिजली गिरने परजिसप्रकारमनुष्यकिसीप्रकार नहीं बच सकता उसीतरह सर्प विषसे भी बचना अत्यन्त कठिनहै।

फर्रूखाबाद गङ्गातट टीकाघाट पर श्रीगंगा जी के मन्दिर के पास शिवजी के मंदिर में एक ब्राह्मण दीपक लेकर कई बार गया— जब गया तब दीपक बुझ गया। लोगों ने कहा आप अब मन्दिर में मत जाइये, परन्तु ब्राह्मण किसी की कही न मानकर दीपक लेकर सायंकाल पुनः गया तो जाते ही दौड़कर उस ब्राह्मण को सर्प ने काट खाया। काटते ही ब्राह्मण जब तक हास्पिटल पहुंचाया गया तब तक समाप्त होगया। इससे मेरा कथन है कि सर्पविष का कभी विश्वास नहीं करना, तत्काल उसके नष्ट करने वाली क्रिया में लग जाना चाहिए। अतएवमैं 'धन्वन्तरि' के पाठकों के लिए इस प्रकारकी चिकित्सा लिखताहूं जिससे पाठक सर्प विष सम्बन्धी थोड़ी बात में सब बात समझ सकेंगे। विशेष विधान बताने से साधारण चिकित्सकों की बुध्दि में भ्रम होकर चिकित्सा के करने में देर लगना सम्भव है। देर लगने से विष की प्रवृत्ति अधिक बढ़ने से शरीर में विष व्यापक

होकर रोगी को मार सकता है अतः प्रकारांतर से भेद भावोंको छोडकर दर्वीकर, मडलीक राजीमन्त केशिषोंके लक्षण दिये जाते हैं।

दार्वीकरोंके काट खाने सेजो विष प्रवृत्तहोता है उससे त्वचा, नयन, नख, दांत मूत्र विष्टा दष्ट स्थान काले और रूक्ष होजातेहैं। शिर का भारीपन सन्धियों में वेदना, कटी पृष्ठ ग्रीवादिमें दुर्वलता का आना जृंभ (जंभाई) कम्पन ,स्वर का अवसाद (स्वरभङ्ग होना और रुकना) कंठ में घुरघुरता, जड़ता, सूखी उद्गार (गुचलकी आंनी, श्वास, हिचकी, वायु का ऊपर को कंठ में ले चलना, शूल और ऐंठन, प्यास, लार टपकना मुख से फेन आना, भोंतों (रोमों) का रुकना और अनेक प्रकार की वायु की वेदना प्रभृति लक्षण होते हैं।

मण्डलीक सर्पों के काटनेके पश्चात् त्वचाआदि का पीला पड़ना, शीतलता की इच्छा करना, सन्ताप प्यास, मद, मूर्च्छा, ज्वर, मुख गुदा आदि से रक्त आना, मांस लटकना, शोथ, दंष्टस्थान का पकना, पीले २ रूपों का दर्शन विना मतलब क्रोध करनो आदि अन्य पित्तज उपाधियों के लक्षण मालूम होते हैं।

राजीमंत सर्पों केविषसे त्वगादि का श्वेत होना, शीत ज्वर रोगों का हर्ष (बार बार रोंए खड़े होना) अगों का जकड़ना, काटे हुए के आस पास शोथ होना, मुख और नाक से गाढ़ा गाढ़ा कफ गिरना, वमन होना, नेत्रों में खूब खाज होना कण्ठमें सूजन और घुर घुर शब्द होना, उच्छ्वास स्वांस लेना) का निरोध, तम प्रवेश (अन्धकार में व्याप्त मालूम पड़ना) इत्यादि कफ वेदना होती है पुरुष सर्प का काटा हुआ रोगी ऊपर की तरफ देखता है। सर्पिणी के काटने से केवल नीचे की तरफ रोगी देखता है और मस्तक पर की (ललाट की) नसें खड़ी हो जाती हैं। नपुंसक सर्प का काटा हुआ पुरुष इधर उधर तिरछा देखता है। गर्भवती सर्पिणी के काटने से पीला मुख होजाता है और पेट फूल जाता है तथा श्वास का दौरा सा मालूम पड़ता हैं। प्रसूता (ब्याई हुई) सर्पिणी के काटने से शूल बहुत होताहै। मूत्रमें रुधिर आता है और उपजिव्हिका रोग उत्पन्न हो जाता है। अर्थात् मुख में जीभ के पास एक दूसरी जीभ तालू में उत्पन्न होजाती है। क्षुधातुर सर्प के काटने से रोगी अन्न की इच्छा करता है वृद्ध सर्प के काटने से विष की मंद लहर आती है। बालक सर्प के काटने से हलके हलके बार २ वेग आते हैं। निर्विष सर्पके काटनेसे विषका कोईभी चिन्ह नहीं होता। एक आचार्य्य कामी सिद्धांत हैं कि अंधे के काटने से या बिल्कुल जीर्ण बिल से कभी न निकलने वालेके काटनेसे मनुष्य अंधा हो जाता है। अजगर प्रायः किसी को काटता नहीं है। वह श्वास से मनुष्यादि को खींचकर निगल जाता है जिससे मनुष्यादि उसकी तीव्राग्निसे तत्काल काल गत जातेहैं। सद्यः प्राण हर सर्पके काटने से बिजली के मारने के समान तत्काल गिरपड़ता है और शिथिल तथा अचेत होकर सोने लगता है पीछे तत्काल मर जाताहै। समस्त सर्पों के काटने से विष के सात वेग (दौरे या भेद) आया करते हैं।

दार्वीकर सर्पों के काटने पर विष के प्रथम वेग में रक्त दूषित हो जाता है जिससे शरीर का रक्त काला पड़जाता है। चींटियों के चलने के स-

मान मालूम पड़ता है तथा कुछ भारियो सी मालूम पड़ती हैं। दूसरे वेग में मांस दूषित हो कर अत्यन्त शरीर श्याम हो जाता है। शरीर में सूजन और ग्रन्थियां पड़ जाती हैं। तीसरे वेग में मेदा दूषित हो जाता है - काटे हुए स्थान से मवाद बहने लगता है, शिर भारी होता है, पसीना आता है, आंखें टँग जाती हैं। चतुर्थ वेग में विष उदर के कोष्ठ द्वारों में प्रवेश कर कफ प्रधान दोषों को दूषित कर देता है। जिससे तन्द्रा (घुमेर) मुख से जल गिरना जोड़ोंमें पीड़ा होने लगती है। पञ्चम वेग में विष हड्डी में प्रविष्ट कर प्राणवायु अग्नि को दूषित कर गांठ गांठ में टूटने की सी पीड़ा या गांठ गांठ टूटने लगती है। हिचकी दाह होता है। षष्ठ वेग में विष मज्जा में प्रविष्ट होकर ग्रहणी को बिलकुल दूषित कर सर्व शरीर पत्थर सा भारी, अतिसार, हृदय, पीड़ा, मूर्छा बढ़ती है। सप्तम वेगमें विष प्रविष्ट होकर व्यानवायुको दूषित कर तथा कुपित होकर शरीर के रोम रोम से कफ स्राव होता है। गांठदार चरबीदार कफ होजाता है कटि पीठ के बन्धन टूट जाते हैं। समस्त चेष्टाएं नष्ट होजाती हैं। लार पसीना अत्यन्त वेग से आता है। श्वास का आना जाना बन्द होजाता है।

मण्डलीक सर्पों के काटने से प्रथम वेग में विष रक्त को दूषित कर शरीर पर पीलापन जान पड़ता है। शरीर में दाह प्रत्येक अंग पर पीलापन बढ़ता है। द्वितीय वेग में मांस दूषित होकर पीलापन और दाह बढ़ जाता है। दष्ट स्थान पर सूजन हो जाती है। तृतीय वेग में मेदा दूषित होकर आंखें मिच जाती हैं। कभी टँग जाती हैं। प्यास बढ़ जाती है दष्ट स्थान में मवाद आता है। चतुर्थ वेग में विष कोष्ट में प्रविष्ट होकर ज्वर उत्पन्न करता है। पञ्चम वेग में शरीर में आग फैलजाती हैं। षष्ठ सप्तम वेग में आगे दार्वीकारों के विष के समान कार्य होते हैं।

राजीमत सर्पों के काटने पर प्रथम वेग में रक्त दूषित होकर पाण्डुरता आती है। रोम खड़े होजाते हैं। शरीर पर सफेदी झलकने लगती है। द्वितीय वेग में मांस को दूषित कर पाण्डुता विशेष बढ़ जाती है। जड़ता, शिरपर सूजन बढ़ आती है। तृतीय वेग में विष मेदा को दूषित करता है जिससे आंख का खुलना बन्द होजाता है। दांतों में पीप आती है। शरीर में पसीना आता है। नाक और आंखों से पानी निकलने लगता है। चतुर्थ वेग में विष कोष्ठ में प्रविष्ट होकर मन्या स्तम्भ (ठोड़ी) रुक जाती है मुख खुलता नहीं। शिर विशेष भारी हो जाता है। पञ्चम वेग में वाणी बंद हो जाती है। सरदी लगकर ज्वर बढ़ता है। षष्ट और सप्तम वेग में दार्वीकर विष के समान लक्षण होते हैं।

कुछ चिकित्सा शास्त्र से अनभिज्ञ पाठक इतना पढ़ने पर भी वेग कैसे और क्यों होते हैं यह न समझे होंगे उनके लिये यह बताया जाता है कि शरीर में रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि मज्जा और शुक्र यह सप्त धातु हैं। विष ज्यों २ अधिक कार्य करता हुआ आगे को बढ़ता है त्यों २ ही विचित्र २ सर्पों के अनुसार लक्षण विदित होते हैं। उनका नाम वेग या दौरा है। पशु और पक्षियों के काटने पर मनुष्य के समान वेग नहीं होते किंतु पशुओं के काटने में तीन या ४ ही प्रधान वेग होते हैं। पशु को काटते ही अङ्ग में सूजन होती है और धांय २ करके वह दुखित होता है और लार बहती है। दूसरे में शरीर काला होजाता है हृदय में पीड़ा होती है। तीसरे

वेग में शिर में अत्यन्त पीड़ा कण्ठ और गला सूखने लगता है तथा दुखता है चतुर्थ वेग में पशु बहुत कांपने लगता है और वेहोश होकर दांतों को चबाता हुआ मर जाता है। पक्षी को काटते ही प्रथम वेगमें वेहोश होकर पक्षी ध्यान मग्न सा मालूम पड़ता है द्वितीय वेग में अत्यन्त व्याकुल होकर तीसरे वेग में मरजाता है। कई बार एक ही वेग में पक्षी के सब काम होकर पक्षी मरजाता है। परन्तु पक्षियों में मयूर को, जानवरों में बिल्ली को, नकुल को सर्प का विष नहीं व्यापक होता है यह विशेष बात है। इससे सर्प को बिल्ली सामने लड़कर मार डालती है नकुल भी मार डालता है:—कोई २ कहते हैं कि जहां सर्प के नष्ट करने वाली बूटियां होंगी वहां तो नकुल लड़कर बूटी को खाकर बार २ उग्र सर्पों से लड़कर सर्प को काट डालता है जह बूटी नहीं होती है वहां नकुल जबर्दस्त विष वाले सर्पों से बल पूर्वक नहीं लड़ता लड़कर पीछे हटा जाता है। यह भी मालूम हुआ कि नकुल सर्प के काटने से नहीं भी मरता तब भी सर्प दबाकर नकुल को मार डालता है। ऐसी बात कभी कभी किसी समय में ही दृष्टिगत होती हैं। अन्यथा तो नकुल बड़े दांव पेच से लड़ता है दिल्ली में पीले काले चिन्ह वाले बड़े २ सर्प बहुत है। जिन घरों में सर्प हैं वहां नकुल भी १० । २० बराबर होते हैं। परन्तु हमने तो एक बार के सिवाय कभी लड़ाई होती नहीं देखी। लड़ाई भी देखी तो एक भारी पीले सर्प से कई नकुल लड़ रहे थे, परंतु आखिर सर्प को मार नहीं पाये सर्प बड़े वेग से फूं फूं कर गर्जता था। अधिक दूर होनेपर हमने कोठा खोल दिया, नकुल भाग गये। सर्प भी स्थान छोड़गया। परंतु उस घरसे सर्प नहीं हटा। नकुल भी मूसों की तरह सपरिवार विचरते हैं। मौका लगने पर कबूतर चिड़ियों को मूसों को पकड़कर खाजाते हैं। हां यह बात प्रायः देखने में आती है कि नकुल केवल दिनमें ही विचरते हैं, रात्रि में कभी नहीं। सर्प रात्रि में ही प्रायः निकलते हैं। मयूर तो सर्प को निगल जाता है, और बड़ा प्रसन्न होता है।

इन बातों से पाठक समझ गये होंगे कि अमुक जाति के सर्प के काटने से अमुक प्रकार के चिन्ह होते हैं। अब उसकी चिकित्सा किस प्रकार करनी चाहिये यह दिखलाया जाता है। सबसे प्रथम किसी जाति के सर्प के काटते ही जहर न फैलने देने वाला प्रयत्न करना चाहिए। यदि सर्प ने हाथ पैर के ऐसे स्थान पर काटा हो जहां ग्रंथ लग सके तो वहां काटते ही सबसे प्रथम उस स्थान से ४ अंगुल पूर्व सूतकी डोरी का या खाल का, सन तथा सुतली का या किसी वृक्ष की छाल का अरिष्टा (बन्धन) बांध देना चाहिये जिससे शरीर के अन्य भागों में विष न फैलने पावे। जहां बन्ध बांधने का मौका न हो (अंगुली आदि स्थानों में) वहां चाकू छुरी से दष्ट स्थान को खोदकर शीघ्र जला देना या सिंगी लगाकर चूंसकर वहां का सब रक्त निकाल कर फेंक देना चाहिये। चूसने के समय चूसने वाला बुद्धिमान हो। चूसते समय खून को अपने मुख में नहीं ले जाना चाहिये। अथवा दष्ट स्थान को छुरी से चीर कर चमड़े की नली लगा कर दष्ट स्थान से खून निकाल कर फेंक देना चाहिये। अथवा रबड़की नलीयुक्त पंप लगा कर दबा दबा कर सब रक्त निकाल देना उचित है। पीछे सफेद या लाल आक के दूध में रुई डुबो कर इसमें भर देना चाहिये। आज कल डाक्टर

लोग परमेगनेट आफ पोटाश भी भरने लगे हैं। अथवा जिसको सर्प काट खावे वह सर्प को काट खावे। सर्प नहीं मिले तो लोहे के दण्ड को ही शीघ्र काट खावे यह आरम्भिक चिकित्सा है। इस की प्रशंसा सभी लोग करते हैं।

परन्तु यदि माण्डलिक सर्प ने काटा हो तो कभी भूल कर भी अग्नि से न जलावे क्यों कि यह दृष्ट स्थान का पित्त बाहुल्य होने के कारण अधिक बढ़ने का पूरा भय होता है यदि कोई मन्त्र शास्त्रज्ञ हो तो उसके मन्त्रों द्वारा बंध बांध देने से नाम मात्र भी विष नहीं चढ़ता। मन्त्र कभी मिथ्या नहीं होते वह विष को तत्काल नष्ट कर सकते हैं। प्रथमावस्था में मन्त्रों के द्वारा सर्प चिकित्सा भारतवर्ष की विख्यात थी। भारतवर्ष में भी मिथिला और बंगाल कामरूदेश की मन्त्र चिकित्सा विख्यात थी। बंगाल की तो अब तक यह पुरानी प्रशंसा सुनने में आती है जिस सर्प ने काटा हो उसको मन्त्रों द्वारा पीली कौड़ियां फेंक कर जबरदस्ती सर्प को बुलाकर उससे काटने का कारण पूछ कर सर्प के कथनानुसार कार्य्य कर उसके काटे को आराम करते थे। कुछ ऐसी भी किम्वदन्ती सुनने में आती है कि सर्प काटे का रोगी गोबर में रखने से छः मास तक नहीं मरता है अतः प्राचीन पुरुष गोबर रख कर उसमें गाड़ते थे। चिकित्सक आकर चिकित्सा कर आराम करता था। परन्तु अब केवल मन्त्रों का नाम मात्र है अर्थात् मन्त्र शास्त्र सत्य है, परन्तु करने वाले ठीक नहीं हैं।

महर्षि सुश्रुत ने लिखा है कि "मन्त्राणां ग्रहणङ्कार्य्यं स्त्रीमांसमधु वर्जिना। जिताहारेण शुचिना कुशास्तरणशायिना॥ १॥ गन्धमाल्योपहारैश्च बलिभिश्चापि देवता। पूजयेन्मन्त्र सिद्धयर्थं जप होमैश्च यत्नतः॥ २॥ इसका भाव यह है कि स्त्री—मांस मद्य को सर्वदा परित्याग करने वाला जिताहार (मित आहार करने वाला) कुशा के आसनों पर बैठने तथा शयन करने वाला गन्ध माल्य उपहार (नैवेद्य आदि) से पूजन कर इष्ट देव का जप करने वाला, हवन करने वाला मन्त्र शास्त्र की सिद्धि को प्राप्त होता है। आज कल के मन्त्र शास्त्रियों के हाथ में मिथ्या बोलने से प्रतिग्रह लेने से दूसरी स्त्रियों पर कुदृष्टि डालने से तथा परिश्रम और तपोबल के अभाव से बनाने वाले गुरुओं के अभाव से मंत्र सिद्धता नहीं है।

आज तीन वर्ष की बात है फर्रुखाबाद में मेरे एक मित्र से एक ब्राह्मण ने कहा कि यदि किसी को सर्प काटे तो मुझको बताना, मैं छः मास के मरे हुए सर्प दष्ट वाले को जिला सकता हूं। परीक्षा लेने पर वह झूंठ निकला। इधर इलाहाबाद की सेवा समिति के पत्र कितने ही पत्रों में प्रकाशित हुए कि हमारे यहां अमुक बाबू घर बैठे ही सर्प काटे की दवा करते हैं तार द्वारा सूचना देते ही रोगी आराम हो जाता है। फरुखाबाद नीमलपुर में एक किसान या अहीर के घर पर सम्बन्धी आये खाट सम्बंधियों को देकर माता और लड़का जमीन पर एक कोठरी में सो गये। रात्रि में सर्प ने लड़के के गले में काटा सेवा समिति को उसी दिन सवेरे तार दिया गया परंतु कुछ भी न हुआ इसका भाव यह है कि झूंठा विश्वास घात करके लोग जबर्दस्ती आंखो में मन्त्र शास्त्र के नाम से धूल झोंक कर धोका देना ही परम कर्तव्य समझते हैं। इस लिये आयुर्वेदियों का सिद्धांत है कि

मंत्रास्तु विधिनाप्रोक्ता हीना वा स्वर वर्णतः।
यस्मान्न सिद्धिमायांति तस्माद्योज्योऽगदक्रमः॥१४

बिना विधि से स्वर वर्ण से हीन उच्चारण किये हुए मंत्र सिद्धि को नहीं दे सकते। इस लिये औषध से ही कार्य्य सम्पादन करना चाहिये।

इसमें शल्य क्रिया के आदिगुरु श्रीधन्वन्तरि जी का तो यह कथन है कि दष्ट स्थान के आस पास की शिरा का वेधन कर रक्त निकाल देवे। यदि फैल गया हो तो हाथ पैरों के अग्र भाग में या ललाट में शिरा वेधन कर रक्त निकाल देवे। इससे शरीर विषहीन हो जाता है। अथवा दंश स्थान को चक्कू से खुरच कर विषघ्न औषधियों का लेपकरना चाहिये और चन्दन खसके कषाय से खूब सिंचन करे। और अगद औषधियोंका क्वाथ दूध घृत मधु मिला कर पान करावे। यदि यह सामिग्री नहीं मिले तो काली मिट्टी (चीका माटी) को कूट कर उसमें खोद कर पानी से तर कर रोगी को सुला कर ऊपर से मट्टी ढाक कर रोगी को रखना चाहिये। कचनार की छाल, सिरस की छाल आक तथा कटभी की छाल के चूर्ण या क्वाथ का सेवन करे तथा निम्बादि के पत्र चबावें नीम के पत्रों को खिला कर जब तक कटु न लगे तब तक विषकी परीक्षा करे तैल कुलथीके पदार्थ मद्य कांजी आदि अम्ल पदार्थ खाना निषेध है। यथाशक्य घृत दूध वा विषहर औषध पान करके वमन करना चाहिये। दर्वीकरों के प्रथम वेग में रुधिर निकालना, द्वितीय वेग में मधु और घृत तथा घृतके साथ अन्य विषघ्न औषध पिलाना ना। तीसरे वेग में विष नाशक अंजन तथा नस्य देना। चतुर्थ वेग में वमन करा कर स्थावर विषोक्त यवागू (पतला हलवा) पिलाना पञ्चम और षष्ठ वेग में शीतोपचार कर तीक्ष्ण और शोधन औषधों को देवे। विषघ्न यवागू पिलाना। सप्तम वेग में अत्यन्त तीक्ष्ण अवपीड़न नस्य देना, तीक्ष्ण अंजन लगाना दष्ट स्थान के मुखपर काक पद की तरह चिन्ह बनाकर रक्त निकाल कर उसपर ताजा अन्य मांस या चर्म रखना। माण्डलिकों के पूर्व वेग में दार्वीकर की भांति चिकित्सा करना, द्वितीय वेगमें घृत मधु पिलाकर वमन कराकर विषघ्न यवागू पिलाना, तृतीय वेग में तीक्ष्ण शोधन करके विषहर यवागू पिलाना, चतुर्थ पचम वेग में दार्वीकर की भांति चिकित्सा करना। षष्ठ वेगमें दूध और काकोल्यादि मधुरगण पिलाना, सप्तम वेग में अवपीडन करे और विष नाशक दार्वीकरों के विष नाशन क्रिया की भांति क्रिया करे। राजीमन्त सर्पों के सातों वेगों की चिकित्सा दार्वीकरों की भांति करनी चाहिये। इतनी बात अवश्य याद रखनी चाहिये गर्भिणी, बालक, वृद्धों की शिरा का वेधकर रक्त न निकालना चाहिये किंतु मृदु विधान करना चाहिये। पशुओं के काटने पर मनुष्यों की भांति चिकित्सा करनी चाहिए। गौ और घोड़ों का द्विगुण भैंसा और ऊंट का तिगुना, हाथियों का चौगुना रक्त निकालना चाहिए। पक्षियों को रक्त रहित होने के कारण शीतल जल से सिञ्चन करना ही कल्याण कारी है। विषघ्न अञ्जन की मात्रा १ माशे नस्य की दो माशे पेयकी ४ माशे वमनार्थ अष्टगुण मात्रा लेनी चाहिए। फिर चिकित्सक की समझ पर निर्भर है।

चरकाचार्य के मत में सर्पों ही के विट् मूत्र से कीड़े पैदा होकर प्राण हरने वाले दूषी विष कहाते हैं। इनका शरीर लाल या बिलकुल सफेद या काला श्याव होता है। जिससे पिड़काओं

का पैदा होना खाज खाद आदि आदि लक्षण होते हैं। सर्पाणामेव विष्णूत्थानु कीटानप्युः कीट स्समताः दूषीविषाः प्राणहरा इति संक्षेपतोमताः कीटेंदू'षी विषे दुष्टे लिङ्गे प्राणहर मृत्यु" इस प्रमाण से सर्प विष की भांति यह भी दूषी विष है। लेख के बढ़ने के कारण इस विषय को यहाँ पर स्थिर कर शास्त्रीय प्रधान औषधियों का वर्णन किया जाता है। मयूर की पिच्छ से खोलाई काक के अण्डे मिलाकर गोमूत्र में पीसकर पीने से स्थावर और जङ्गम दोनों ही विष मिटते हैं। सप्तपर्ण की छाल, कुड़े का छाल, निम्ब की छाल नागरमोथा खस, कुष्ट, लोध्र, लोध के चूर्ण का नाम प्राचेतस चूर्ण है। इसको लोह की सीसी में या सुवर्ण या चांदी के बरतन मे रखना, समय पड़ने पर मधु मिलाकर चाटनी चाहिए। इससे स्थावर और जङ्गम विष मिटता है; शिसोड़े की छाल, स्वयं गुड्डुची, नृपद्रुम दोनों बृहती का चूर्ण आस्तीक ऋषि का उपदिष्ट है। यह समस्त विष नाशक है। जो पुरुष पुष्य नक्षत्र के दिन उसकी पिट्ठी कर सफेद पुनर्नवा के मूल को मिलाकर पान करता है, उसके एक वर्ष तक बीछी और सर्प पास नहीं आ सकते हैं। निम्ब के दो पत्तों के साथ मसूर को मेष की संक्रांति के दिन पीने से एक वर्ष तक विष से भय नहीं होता।

यन्त्र।

कृकलास[किरकांट] के पाद को सफेद महीन वस्त्र से लपेट कर दक्षिण बाहु में बांध कर भ्रमण करने से विष बाधा नहीं कर सकता प्रपौण्डरीक (सफेद कमल) देवदारु, नागरमोथा, कालीयक, कुटकी स्थौणेयक, ध्यामक (तृण) पद्माख, पुन्नाग, तालीश, सर्ज्जी, स्योनाक इलायची, श्वेत सरसालु शैलेय, कूट,तगर,प्रियङ्गु, लोध, नेत्रवाला, पीतगोरू पीपल चन्दन सफेद सेंधा लवण ये सब समभाग लेकर चूर्ण कर मधु मिलाकर सींग में भरकर रख देवें। इसको तार्क्ष्य (गरुड)अगद कहते हैं। यह द्रव्य तक्षक के विष तक को हरण करता है और सर्पों की बात ही क्या है।

जन्मेजय के सर्प यज्ञ में बहुतसी सर्प जातियों के नष्ट होने पर भी आस्तीक ऋषि ने कुछ सर्पों को बचा लिया था। अब उन्हीं सर्पों की जातियाँ और इनकी शङ्कर जातियों का उपद्रव होता है। इस वर्ष में ज्येष्ट से अबतक सर्पों ने बड़ी बदमाशी जहाँ तहाँ कर रखी है।

मिथिला प्रांत में धामन जाति के सर्प मनुष्यों से तो नहीं बोलते परन्तु दूध वाली स्त्रियों तथा गाय भैंसों के पैरों में लिपट जाते हैं और स्त्री तथा दूध देने वाले पशुओं को गिराकर स्तनों में मुख लगाकर सब दुग्ध पीजाते है इससे स्त्रियों के स्तन सर्वदा के लिए नष्ट होजाते हैं कितनी ही स्त्रियाँ मरजाती हैं। यही दशा पशुओं की भी होती हैं एक बिलस्त भर का १ अंगुली के समान मोटा पद्मनाग होता है। यह अपनी क्रीड़ा से उछल उछल कर काटताहै यह गर्भिणी को देखकर अन्धा होजाता है। परन्तु इसमें विष बहुत होता है। मनुष्य शीघ्र ही मरता है। बंगाल और मिथिला में सर्पों के उपद्रव अधिक होते हैं परन्तु अबकी बार बीकानेर राज्य में चूरू शहर में तथा चूरू के आसपास गोधूम वर्ण का एक हाथ लम्बा तथा कोई २ छोटा सर्प एकांत में सोते हुए मनुष्य के पास आकर मुख और नाक से निकलने वाला श्वास वायु का पान करता है अपनी विष जिह्वा उसके मुख नाक में फेंक देता है किसी प्रकार की आहट पाकर वह भाग जाताहै। प्रथम तो मनुष्यों

को पता भी नहीं लगता या बहुत से मनुष्यों को अज्ञानावस्था के कारण यमपुर जाना पड़ा। इस बात की जब परीक्षा कीगई, तब सर्प पकड़ कर मार दिये गए। अबभी लोग बड़े चौकन्ने रहते हैं तबभी प्रायः कभी न कभी किसी की श्वास को पी ही जाता है। मनुष्य प्रथम तो सर्प के जाते ही होश में आता है पीछे नशा आता है। इस बात को देखकर बता देता है कि मुझको पीहा सांप पीगया है श्वास खींचकर पीनेवाले सर्प का नाम पीहा है। तत्काल उस मनुष्य को गुलाबी फिटकरी ऊंट के मूत्र में घोल कर पिलाते हैं। (२) बवार पिलाने से वमन विरेचन होकर बच जाता है। एक कबूतरी रङ्ग का पान हाथ का सर्प होता है। जिसको बड़ जतिया कहते हैं वह केवल पूंछ मारता है जिस अंग में पूंछ लग जाती है वह अंग गलने लगता है उसको तत्काल धोकर घी लपेट देना चाहिये। इसी प्रकार विष खापर (गुहेरा) नाम का (गोघेर) सर्प होता है वह मूत्र की आशङ्का के समय मनुष्य को दौड़ कर काटता है। काटते ही तत्काल प्राण स्वर्ग धाम को चल जाते हैं। इनकी प्रायः औषधियां नहीं हैं। नरसिंहगढ़ में एक औषध होती है जिसको छाड़ी गोघेरू सर्प पर गेर देने से सर्प चाहे जितने दिन हो जावें वहीं पड़ा रहता है, हटता नहीं। एक औषध वहां वाले भील जानते हैं कि औषध को हाथ में लेकर विषखापर से कटाइये। तत्काल विष चढ़ने लगता है। प्रथम चरण शक्ति रहित शून्य होते हुये मालूम होंगे। परन्तु विष या क्रमण करता हुआ मालूम होता है उस समय यह बूटी मुख में देते ही व तत्काल विष पैरों की तरफ से उतरता हुआ जान पड़ता है। हमने उस बूटी के लिये अपने मित्र पण्डित ओंकारनाथ मिश्र को लिखा परन्तु गुप्त रखने का जिस आदत ने भारत की विद्यायें नष्ट कर दी वही उसके आने में बाधा डाल रही है।

अब मैं पाठकों को अनुभूत सर्प विष हरण करने वाली कभी धोखा न देने वाली औषधियों का पता देना ही प्रधान परोपकारी कार्य्य समझता हूं। सर्पों से बचने के लिये पुष्य नक्षत्र में रविवार के पूर्व दिन किसी बिल्व को चावल पुष्पों से निमन्त्रण देकर रविवार के दिन खूब गहरा गड्ढा खोदकर भीतर से लाठी के समान बिल्व की जड़ उखाड़ कर आस्तीक ऋषि का स्मरण कर जड़ को लेकर हाथ में रखने से सर्पों का उपद्रव नहीं होगा, सर्प मात्र पास नहीं आ सकते। यह एक महात्मा का बताया हुआ प्रयोग है। सर्प काटते ही बिल्व की जड़ का स्वरस या जमनी की जड़ की छाल का कलौला पन्द्रह २ बीस बीस मिनट पर पिलाना चाहिये। अथवा केले का स्वरस निचोड़ निचोड़ कर जब तक विष दूर न होय, तब तक पिलाना चाहिये। चाहे जितना रस यह पी जाय, कभी बन्द नहीं करना चाहिये। विषके परीक्षार्थ बीच बीच में नीम के पत्ते चबाना चाहिये जब तक नीम के पत्ते कड़वे न लगें तब तक केले के रस को बन्द नहीं करना चाहिये। अथवा खाने की तमाखू २० तोले जल ƒ२॥ ढाई सेर डाल कर क्वाथ कर खूब पिलाना चाहिये। क्वाथ में देर हो तो पीने की तमाखू घोल कर पिलाना चाहिये कम से कम 100 बार पिये हुए हुक्के का पानी इकट्ठा रखना चाहिये। सर्प काटते ही पिलाना चाहिये। सहदेवी छोटी १ तोले को पीस कर २१ काली मिर्च डाल कर बार बार पिलाना चाहिये। सर्प के रोगी को सोने नहीं देना चाहिये यदि बेहोशी अधिक मालूम हो तो तूतिया अ-

नवसादर या केवल तूतिया सुंघाना चाहिये। इन से नाक मुंह आंखसे कफ निकलता है निद्रा भंग हो जाती है। ककोडा, जिसका शाक बनता है उसकी जड़२ तोला जमाल गोटा२ तोला पीस कर गोली बना कर जलसे पिलाना चाहिये इस प्रयोग सेसैकडों काले दस्त तथा कै होकर विष शांत होने पर घी और काली मिर्च पिलाना चाहिये। परन्तु यह क्रिया यदि सर्प ने जरूर काटा हो तो करना सन्दिग्धता में पड़ कर यह दवा भूल से कर भी नहीं देना। बिना सर्प काटे ही मनुष्य स्वयं इससे मर जायगा।

कभी न बिगडने वाली, सर्वदा पास रखने वाली १०० में ८० को फायदा करने वाली दवा भी पाठक समझलें, जिसमें कभी धोखा नहींहो सकता है। काले कीतो अव्यर्थ और अनेक बार परीक्षित है। देशी कारखानों की नील ऽ१ या ऽ। पाव रखना चाहिये। एक तोले नील ५ तोले पानी में घोल कर १५।१५ मिनट से जब तक जहर न उतरे पिलाना चाहिये चाहे वह ५ तोला तक क्यों न पी जावे। किसी के १ किसी किसी को ३।४।५ तोले उग्रवाले को पिलाने की जरूरत होती है। ग्वार पाठे के समान बिना गूदे के पत्ते वाली जिसमें नाग के समान श्वेत फूल आता है, जिसको लोग मूर्वा कहते हैं यह एक प्रकार की नागदमनी है। उसकी जड़ को पीस कर काली मिर्च मिला कर पिलाना चाहिये। इसको ४।५ बार पिलाने से अवश्य विष उतर जाता है।

मिथिला में मंगाई हुई दवाई।

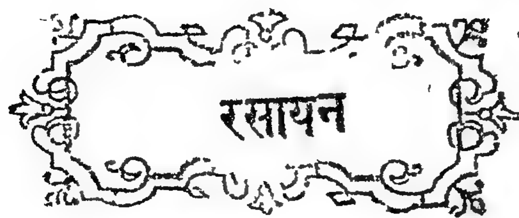
मिथिला में सर्प विष से बचने के लिये प्राचीन समय से एक परिपाटी चली आती है। जिससे एक वर्ष तक विष सर्प काटने पर भी नहीं बाधा कर सकता है। इस लिये आषाढ़ शुक्ला में प्रथम रविवार के दिन ईश्वर गत (पुलक क नागदमनी) मूल को हाथ से निकाल कर सफेद नवीन वस्त्र में लपेट कर रक्षा की तरह दक्षिण हाथ में मन्त्र पढ़ कर बांध देते हैं। वह मंत्र यह है।

शुचि सित दिन कर वारे करमूले पद्मपुलिकमूलस्य

नागारेरिव नागा प्रयान्तिकिलदूरतस्यतस्य॥

सर्प काट खाने पर इसी दवा के १ तोला मूल को काली मिर्च के साथ पीस कर जब तक शरीरमेंसे विष कुलन निकल आवे तब तक पिलाते हैं। पथ्य में घृत काली मिर्च पिलाते हैं इस ईसरगत (पुलकमूल नागदमनी) को तोड़ कर सर्पके मुखके पास करनेसे सर्प भयके मारे ममिट जाता है मुख नीचा करलेताहै यह दवासर्पकोदमन करने केकारण नागदमनी नामसे शास्त्रमें लिखीगयी है। मैं नागदमनी के भेदों पर एक लेख पूर्व वूटी दर्पण में लिख चुका हूं। इस नागदमनी के क्षुप मिथिला आदि स्थानों में होते हैं फूल लाल भब्बेदार फूलके खिलनेपर काले नीलिमायुक्त बेलनी छटे छोटे गोल एक एकमें दो दो सटे हुए लाल फूल के बीच में होते हैं। देखने में वामा अडूसे के समान पत्तोंसे मालूम होता है हमने यह औषध स्वतन्त्र के सहकारी सम्पादक पं० श्री कांत झाले मिथिला से मगा कर प्राप्त की है।

(स्वतन्त्र से)



चांदी से सोना बनाने का (Scientific) उपाय—

धन्वन्तरि अङ्क ११ नम्बर १९२७ में श्रीमानकविराज अत्रिदेवगुप्तभिषग्रत्न विद्यालंकार जी का लेख—'प्राचीन रसायन' पढ़कर मुझे एक खंड याद आया जो मेरी डायरी में—लण्डन के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र टट वट्स ता०२-१०-२५ से साइण्टिफिक खोज के आधार पर उद्धृत था। रासायनिक विषय निर्मूल नहीं है, कविराज जीने प्राचीन शैली के आधार पर ठीक ही प्रकाश डाला है। वास्तव में पारद में अनेक गुण और शक्तिएं निहत हैं। हमारी दीर्घ कालीन निद्रान हमें उद्देश्यसे ही गिरा दिया है। उधर वरालिनके डा० मेथने ने एक उष्णलेम्प द्वारा पारद को सोने के रूप में बदलने का उपाय पा लिया है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने जो खोज की है उस का फल भी विस्तृत दिया है।

प्राचीन समय के रासायानिक यह भली भांति जानते थे कि आकाश के नीचे और पृथ्वी के ऊपर ऐसी विचित्र शक्ति या पदार्थ—पारद मौजूद है जो धातुओं को सोने के रूप में बदल सकता है। लोग पारस पत्थर को भी बताते हैं वरन् सोना बनाने की खोज में बहुत से रासायनिक हैरान रहे सोना बनाते हुए कई और चीजें हाथ लगीं और सफलता प्राप्त हो गई। पहला आविष्कार—मि० ओगरबेकन ने बारूद बनाली केवरने एसिडों की व्यवस्था जानली, हेल्मरएट ने गैसों को जान लिया, निदान सोना बनाने के उपायों को खोजते हुए अर्वाचीन कैमिस्ट्री में बड़ी सफलता प्राप्त करली। रेडियम और बिजली की शक्ति और व्यवहार की खोजने एक नए साइन्टिफिक समय का श्री गणेश कर दिया।

फ्रांस के एक वैज्ञानिक ने पारे के ऐसे संस्कार किए जो वह पानी के सदृश हल्का हो गया, ठंडा करने के लिए उन्हों ने पानी के टब में उसे डाल दिया निदान किसी कारण वश शीशी टूट गई और वह पानी में मिल गया। शीशी टूटने का बड़ा दुख हुआ कैसे पानी में से निकाले वह इसी पर विचार करने लगे सहसा उन की डायरी में रखा हुआ गुलाब का फूल जो विवाह के दिन उन की स्त्री ने उपहार स्वरूप दिया था टब में गिर पड़ा परन्तु जैसे ही उन्होंने फूल, निकाला तो ऐसा जान पड़ा अभी ही तोड़ कर लाया गया है। यह विचित्र परिवर्त्तन सस्मयदेख सोचने लगे—यदि यह पानी मानव शरीर में भी इसी प्रकार नव्य स्फूर्त्ति भर सके तो कायाकल्प का इस से उत्तम अन्य कोई उपाय न होगा। उन्होंने स्वयम् और २-४ इष्ट मित्रों पर प्रयोग

किया तो अनुभव हुआ कुछ घन्टों के लिये मन और शरीर उतना ही उत्तेजित हो जाता है जितना एक नवयुवक का—सम्भवतः अब और सफलता हो गई होगी जो मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के प्रयत्न में है उन्हें पारद के संस्कार क्या कठिन हैं।

सरल उपाय

फ्रांस के एक वैज्ञानिक ने दावा किया है कि चांदी का सोने के रूप में परिवर्त्तन करने का उपाय सफल हो गया है। उपाय साधारण है, कुछ छिपाया नहीं है। "शुद्ध चांदी के १०५ भाग एक साफ खटाली में पिघलाए जाते हैं उस में ७ भाग जर्द हरताल और ३ भाग एन्टीमनी सेल्फाइड मिलाई जाती है और उस को एक सौ दर्जे की गर्मी में तपाया जाता है जिसका नतीजा यह होता है कि चांदी सोना बनजाती है।

साधारण मनुष्य शीघ्र सफल न हो सकेंगे क्योंकि वह सौ दर्जे की गर्मी— आगका माप न मान सकेंगे। कोई कुशल-रसायनिक वैद्यही सहज उपाय बता सकेंगे।

रूपकिशोर जैन



यदि हैं तो अपने रोग का सम्पूर्ण लक्षण [रोग का व्यौरेवार हाल] लिख भेजिये, तो वहां से रोग व्यवस्था और औषधि योजना करदी जाती है हमारे चिकित्सालय द्वारा अनेक कष्टसाध्य रोगी आरोग्य हुए हैं। अनेक सज्जन हमारी सम्मति से चिकित्सा कर धन, यश, मान प्राप्त कर रहे हैं एक बार पत्र व्यवहार कीजिये यदि आवश्यक समझा जायगा तो आपके रोग का हाल धन्वन्तरिमें प्रकाशित कर विद्वान् वैद्यों की सम्मतियां भी लेली जायगी। चिकित्सालय की नियमावली मुफ्त दी जाती है मंगाकर देखिये।

वैद्यों के लिये

बहुत ही सस्ते मूल्य में आयुर्वेदीय शास्त्रोक्त सिद्ध औषधियां जैसे कूपीपक्वरसायन भस्म रस गुटिका, गुग्गुल अरिष्ट आसव, तेल,घृत अवलेह, चूर्णक्वाथ अर्क,द्राव सत्वक्षार आदि भेजने का हमने विशेष प्रबन्ध किया है। हमारे यहां की औषधियां शास्त्रीय प्रक्रियानुसार विश्वसनीय बनती हैं। जिन की परीक्षा कर अनेक वैद्यराजों तथा वैद्यसम्मेलन वैद्य सभासमित राजगुरु आदि महापुरुषों एव सभाओंने स्वर्णपदक सार्टीफिकेट एवं प्रशंसापत्र प्रदान किये हैं आशा है कि आप भी थोक भाव का सूचीपत्र मंगा तथा औषधि खरीद परीक्षा कर प्रशंसा करेंगे सूचीपत्र थोक भाव का मुफ्त भेजा जाता है।

पता—मैनेजर—श्रीधन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)



शीतला

लेखक—श्री० अनूपलाल पाठक आयुर्वेदभूषण

गताङ्क से आगे

असाध्या मसूरिका

"असाध्याःसन्निपातोत्था स्तासांवक्ष्यामि लक्षणम्।
प्रवालसदृशाः काश्चित्काश्चिज्जम्बु फलोपमाः ॥
लोह जाल समाः काश्चिदतसी फल सन्निभाः ।
आसां बहुविधा वर्णा जायन्त दोष भेदतः ॥
कासो हिक्का प्रमेहश्च ज्वरस्तीव्रः सुदारुणः ।
प्रलापारति मूर्च्छाश्च तृष्णा दाहोऽति घूर्णता ॥
मुखेन प्रस्रवेद्रक्तं तथा घ्राणेन चक्षुषा ।
कण्ठे घुर्घुरकं कृत्वा श्वसित्यत्यर्थ दारुणम् ॥
मसूरिकाभि भूतस्य यस्यैतानि भिषग्वरैः ।
लक्षणानीह दृश्यन्ते न देयं तस्य भेषजम् ॥"

अर्थात्—सन्निपात से उत्पन्न हुई मसूरिका असाध्य है, इसका लक्षण मैं कहताहूं। इस मसूरिका की फुंसी कोई मूंगे के समान लाल, कोई जामुन के समान रक्त वाली, कोई लोहे की गोली के समान, कोई अलसी के बीज के समान रक्त वाली होती है। इनके अतिरिक्त और भी अनेक वर्ण वाली होती है। कास, हिक्का, प्रमेह, ज्वर प्रलाप, अरति, मूर्च्छा, तृष्णा, दाह, घूर्णता, मुख, नाक तथा चक्षु से रक्त का गिरना, और कण्ठ में घुर्घुर शब्द के साथ दारुण श्वास का होना, इत्यादि लक्षण जिस मसूरिका से पीड़ित मनुष्य को होते हैं वह असाध्य है। ऐसी अवस्था में अच्छे वैद्यों को औषधि नहीं देनी चाहिये।

मसूरिकारिष्ट

"मसूरिकाभिभूतो यो भृशं घ्राणेन निश्वसेत्।
सभृशं त्यजति प्राणांस्तृष्णावान्वायु दूषितः ॥"

अर्थात्—मसूरिका रोग से पीड़ित जो मनुष्य नाक से अत्यन्त श्वास ले, प्यास से पीड़ित हो और अपतानक आदि वात व्याधि से युक्त हो तो वह रोगी तत्काल मर जाता है।

मसुरिका की चिकित्सा

मसूरिका रोग की चिकित्सा में दो मत हैं-

(१) इसमें औषधि का प्रयोग करना।

(२) औषधि का प्रयोग नहीं करना।

एक ओर विद्वानों का कहना है कि इस रोग में औषधि देना एक दम ही नहीं चाहिए क्योंकि औषधि देने से माता कुपित होकर रोगी को नष्ट कर देती है। माता की पिडिका का आविर्भाव होते ही रोगी को पवित्र स्थान में, पवित्र शय्या पर, लेटा देना चाहिए और उनकी आज्ञाओं को पालन करते हुए सर्वदा उनकी सेवा सत्कार में तत्पर रहना चाहिये। नित्य दोनो समय और यदि हो सके तो तीनों समय रोगी के कमरे में धूप दीप देकर शीतला देवी का स्तोत्र पाठ करना चाहिए। किसी प्रकार की अपवित्र चीजें अथवा लाल पीले रंगे हुए कपड़े उस कमरे में नहीं रखना चाहिए। रोगी के समूचे परिवार को भी सदा हविष्यान्न ही खाना चाहिये। यदि किसी प्रकार भी रोगी के सत्कार, आज्ञापालन तथा सेवा में त्रुटि हो जाती तो शीतला देवी कुपित होकर रोगी के प्राणों को संकट में पहुंचा देती है। जब तक इनकी स्थिति रोगी के शरीर पर रहे तब तक रोगी के परिवारों को उचित है कि ठीक इनकी आज्ञा के अनुसार जो वह चाहें, जो वह कहें उसी प्रकार कर देवें। यदि ऐसी कोई आज्ञा होवे जिस को वे परिवारगण पालन नहीं कर सकें तो उस आज्ञा को उल्लंघन न कर के रोगी के निकट जा अपनी असमर्थता को प्रकट करते हुए प्रार्थना कर माफी माग लेवें। नित्य २ नई २ चीजें, अच्छे २ फल अच्छी २ मिठाईयां तथा अन्य जो वस्तु वह चाहें समर्पण करना चाहिये। इस प्रकार सदा सेवामें लगे रहने से शीतला देवी प्रसन्न होकर बिना किसी प्रकार की हानि पहुंचाए चली जाती है।

दूसरी ओर दूसरे विद्वानों का कहना है कि इस रोगमें औषध अवश्य देना चाहिए। क्योंकि बिगड़े हुए दोष दूष्यों को ठीक कर शरीर को प्राकृतिक अवस्था पर लाने वाला औषध के अतिरिक्त दूसरी कोई वस्तु नहीं हो सकती है। शरीर पर संकट आने से इस के सदा हितैषी प्रकृति देवी यद्यपि इसकी रक्षा का भार उठा लेतीहै तथापि उनकी समयोचित सहायता के लिए औषधि का प्रयोग करना परमावश्यक है। यदि समय २ पर उनकी (प्रकृति देवी) सहायता कर रोगी को अवरुद्ध करने का यत्न न किया जावे तो रोग प्रबल होकर रोगी को नाश कर देता है।

इन दोनों पक्ष के सिद्धान्तों को विचारने से मालूम पड़ता है कि द्वितीय पक्ष वाले का सिद्धान्त भीकोई अनुचित नहीं है। जब तक शरीर में किसी प्रकार की खराबी नहीं होती है तब तक कोई रोग भी उत्पन्न नहीं होता है। खराबी को दूर कर रोग हटाने की शक्ति औषधि और प्रकृति में है। जहाँ खराबी सामान्य रहती है वहां बिना औषधि के केवल प्रकृति ही काम कर लेती है किंतु जहां खराबी कुछ असाधारण रूप वाली होती है वहां औषधादि सेवन करना पड़ता

है। शीतला भी एक रोग है अतः इसके कारण भी शरीर में कुछ खराबी अवश्य होती है। यदि यह खराबी बिगड़ कर भयङ्कर रूप धारण करले तो इसमें भी औषधादि का प्रयोग करना परमावश्यक है। जब तक इसका रूप साधारण है तब तक केवल पूजा पाठ आदि पर ही निर्भर किया जा सकता है किंतु इसके भयङ्कर रूप धारण करने पर केवल आदि लकीर के फकीर बनकर रोगी के प्राणों का संहार करना किसी प्रकार उचित नहीं है। आज कल प्रायः ऐसा ही देखा जाता है कि रोगी की अवस्था अत्यन्त खराब होगई है। किंतु घर वाले "माता में दवाई नहीं पड़ती है। इस प्राचीनोक्ति को स्मरण कर रोगी को औषधि देकर बचाने का यत्न नहीं करते हैं। मेरी समझ में यही मूर्खता एक प्रधान कारण है जिससे इस रोग में मृत्यु संख्या अधिक बढ़ती जारही है।

शीतला के प्रतिषेधक उपाय

शीतला के दिनों में बड़े बालक के शरीर पर श्वेत चन्दन का लेप करने से तथा छोटे बालक के शरीर पर लेप करने और वंशलोचन मिश्री चटाने से इसका भय नहीं रहता है।

अनविधे मोती और कछुवे के मस्तक का हाड़ और मूंगा तीनों को जल में पीसकर पिलाने से शीतला रुक जाती है।

सोना, चन्दन और नीमका कोंपल जल में पीस कर चैत्र और आश्विन में बालकों को पिलाने से शीतला नहीं निकलती है।

जब शीतला निकलने का भय हो और बालक दूध पीता हो, अवस्था एक वर्ष से अधिक न हो तो उसकी दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह तक नारियल की गिरी ४ तोला मात्रा से रोज खिलावे, बालक २ वर्ष का हो तो ३ तो० खिलावे. बालक तीन वर्ष का हो तो २ तोला खिलावे, इस प्रकार रोज़ खिलाने से शीतला का निकलना रुक जाता है।

जो मनुष्य नीमके बीज, बहेड़े के बीज, और हल्दी इनका शीतल जल में भली भाँति पीस कर पीता है उसके शरीरमें पीड़ा—कारक शीतला का विकार कभी भी नहीं होता है।

शीतला वाले रोगियों को पवित्र, रमणीक एकांत और शीतल स्थानमें रखना चाहिए। इसके निकट किसी प्रकार की अपवित्र वस्तु अथवा अपवित्र मनुष्य नहीं रहना चाहिए। नीम के पत्तों समेत डालियों से रोगी को सदा हौंकना चाहिए।

जप, होम, बलिदान, स्वस्ति वाचन पूजन और ब्राह्मण गाय जगदम्बा इन के अर्चन से शीतला शीघ्र शान्त हो जाती है।

जिस मनुष्य को शीतला निकली हो उसके पास यदि श्रद्धापूर्वक निम्न लिखित शीतला स्तोत्र पढ़ा जाय तो इसके पाठ से शीतला शीघ्र शान्तहो जाती है।

शीतला स्तोत्र।

अस्य श्री शीतला स्तोत्रस्य महादेव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः ॥ शीतलादेवी शीतलोपद्रव शान्त्यर्थ जपे विनियोगाः ॥

स्कन्द उवाच

भगवन्देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम्।
वक्तुमर्हस्य शेषेण विस्फोटकभयापहम् ॥

ईश्वर उवाच

वन्देऽहं शीतलांदेवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ॥
यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटक भयं महत् ॥
शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाह पीडितः ॥

विस्फोटक भयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥
यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा सम्पूजयेन्नरः ॥
विस्फोटकभयंघोरं कुले तस्य नजायते ॥
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्ध गतस्य च ॥
प्रनष्टचक्षुपः पुंसस्त्वामाहुर्जीवितौषधम् ॥
नामानि शीतलांदेवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ॥
मार्जनी कलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥
शीतले तनुजान्रोगान्नृणां हरसिदुस्तरान् ॥
विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥
गलगण्डग्रहारोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ॥
त्वदनुध्यान मात्रेण शीतले यान्ति ते क्षयम् ॥
न मन्त्रो नौषधं किञ्चित्पापरोगस्य विद्यते ॥
त्वमेका शीतले धात्री नान्यां पश्यामि देवताम् ॥
मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्य संस्थिताम् ॥
यस्त्वां साञ्चिन्तयेद्देवी तस्य मृत्युर्न जायते ॥
अष्टकं शीतलादेव्या यः पठेन्मानवः सदा ॥
विस्फोटक भयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥
श्रोतव्यं पठितव्यञ्च नरैर्भक्ति समन्वितैः ॥
उपसर्ग विनाशायपरं स्वस्त्ययनं महत् ॥
शीतलाष्टमेतद्धि न देयं यस्य कस्य चित् ॥
किन्तु तस्मै प्रदातव्यं भक्ति श्रद्धान्वितो ह्यियः ॥

यदि कोई सज्जन संस्कृत होने की वजह से इस स्तोत्र का पाठ नहीं कर सकें तो उनके लिये इसका भाषा दोहा भुजङ्ग प्रयात छन्द में कर दिया गया है जो निम्नलिखित है।

दोहा।

बन्दं देवी शीतला नग्न दिगम्बर वेष।
खरारूढ़ कर सोहनी उरु आनन्द विशेष ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द।

नमू शीतला शीतला शीतकारी।
तुम्हारी कृपा से मिटै व्याधि भारी ॥
महा पीड़िका रक्त आताप हारी।
तृषा ताप मेरे जपू जाप भारी ॥ १ ॥
तुम्हें नीर में आप पूजन रचावें।
धरे भेंट सन्मुख व मस्तक झुकावे ॥
बसे आप कर देत आनन्दकारी।
न हो शीतला रोग उस कुल मझारी ॥ २ ॥
महाज्वर व्यथा देह दुर्गंध घेरा।
हुए नष्ट चक्षु भया जग अंधेरा ॥
बसे औषधि रूप है नाम तेरा।
करैं लोग विद्वान वर्णन घनेरा ॥ ३ ॥
गधे की सवारी नगन काय सोहै।
लिये कर बुहारी सकल सृष्टि मोहै ॥
भरा दूसरे हाथ में शीस सूपा ॥
नमू शीतला राजराणी अनूपा ॥४॥
अहो शीतला मानवी देह माहीं।
महा व्याधि विस्फोटकादि क लखाहीं ॥
तुही दुःख हरता तुही सुख निशानी।
तुही है सुधा वृष्टि करता भवानी ॥५॥
गले गण्डमाला तथा और पीड़ा।
महाकष्ट दारुण त्वचा मध्यकीड़ा ॥
त्वचा शोथ पिड़िमी उदर पर अफारा।
धरैं ध्यान तेरा मिटै सब विकारा ॥६॥
बुरी व्याधि है शीतला रोग माई।
नहीं मन्त्र इसका नहीं कुछ दवाई ॥
नहीं देव-दानव कोई शक्ति धारी।
तुही दुःख हर्ता महानन्द कारी ॥७॥
अहो माता जो कोई मानव सयाना।
कमल नाल के मध्य तन्तु समाना ॥
हृदय नाभि में धारि कर तोहि ध्यावै।

उसे मृत्यु यमराज फिर ना सतावे॥८॥
सदा काल जो व्यक्ति यह स्तोत्र गावे।
उसे तीव विस्फोटका ना सतावै॥
न हो व्याधि उस वंश में कष्ट भारी।
पढ़ै प्रात उठ पाठ कल्याणकारी॥९॥

दोहा।

कष्ट निवारण सुख करण, मूलमन्त्र गुण खान।
भक्तिभाव चित्त धार के पढ़त सुनत कल्याण॥
जिस तिस को नहिं दीजिये, यह स्तोत्र हर्षाय।
श्रद्धा भक्ति विवेक विन, अधिकारी नहीं थाय॥
शशि रस द्वीप वसुन्धरा, माधव मित युग भान।
उल्था ज्योतिष रत्न का, काशी खण्ड समान॥

यदि शीतला रोगी को कोई पुरुष पवित्र हो कर निम्न लिखित मन्त्र द्वारा नीम के टहनी (शाखा) से १०८ बार झार देवे तो भी रोग शीघ्र छूट जाता है।

मन्त्र।

"ॐ नमो महावीराय सर्व सिद्धि प्रदायक।
विस्फोटक भयं घोरं रक्ष रक्ष महाबल॥"

यदि इसी प्रकार पूजा पाठ आदि के करने से रोग शान्त हो जावे तो अच्छी ही बात है किन्तु यदि रोग का लक्षण सुधरता हुआ न दीख पड़े तो वातादि भेद से रोग का निर्णय कर औषधादि भी अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

वातजा शीतला (शराविका)

लघुपंचमूल, बृहत् पंचमूल, रास्ना, आमला, खस, धमासा, गिलोय, धनिया और नागरमोथा इनको पीस कर पीने से वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

मजीठ, बड़, पाकर, शिरीष और गूलर इनकी छाल को एकत्र पीस कर चारो ओर लेप करने से वात की मसूरिका नष्ट हो जाती है।

पित्तजा शीतला (कच्छपिका)

पित्त की मसूरिका में प्रथम पटोल के जड़ का क्वाथ पटोलपत्र के क्वाथ में केतारी के जड़ का स्वरस मिलाकर पिलाना चाहिये।

नीम, पित्त पापड़ा, पाठ, परवल, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, खस, कुटकी, आँवला, वाकस, धमासा इन को एकत्र पीस कर शर्वत की तरह मिश्री मिला कर पीने से पित्त की मसूरिका नष्ट हो जाती है।

किशमिश, गंभारी फल, खजूर, नीम छाल वाकस, धान का लावा, आँवला और जवासा इनके काढ़े में मिश्री मिलाकर पीने से पित्त से उत्पन्न हुई शीतला शांत होजाती है।

शिरीष, गूलर, पीपल, बड़ और कमलकी जड़ इन पाँचों को पीसकर मक्खन में मथकर रोगी के शरीर पर मले और पथ्य में नया चावल धोआ हुआ दाल (मूंग का) और दही का मक्खन आदि खिलावे तो शीघ्र पित्तसे उत्पन्न हुई शीतला शांत होजाती है।

कफजा शीतला (जालिनी)।

बेल, श्योनाक, गंभारी, पाटल, गनियारी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, रेंगनी, गुठरेंगनी, (बृहतीद्वय) और गोखुरू यह दशमूल तथा वरियारा, खस, जवासा, गरीच, धनियां और नागरमोथा इन सोलह औषधियों को समान भाग ले क्वाथ कर उसमें मधु मिलाकर पिलाने से जालिनी शीतला शांत होजाती है।

चिरायता, नागरमोथा, पान, हर, बहेड़ा आंवला, इन्द्रजौ, नीमका पत्ता, जेठीमधु और परवल, का पत्ता, इनके क्वाथ में मधु मिला कर पीने से कफसे उत्पन्न हुई शीतला शीघ्र शान्त होजाती है

धाकस, नागरमोथा, चिरायता, हर, बहेडा आंला, इन्द्रजौ, जवासा तीता परवल और नीम इनका क्वाथ बनाकर पीने से कफ की शीतला शांत होजाती है।

सन्निपातजा शीतला (सर्षपिका)

नीम, पित्तपापड़ा, पाढ़, तीता परवल, कुटकी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, खस, आंला, धाकस, और लाल धमासा इनके क्वाथ में मिश्री मिलाकर पीने से सब दोषों से उत्पन्न हुई शीतला शांत होजाती है।

नीम वृक्ष का सर्वांङ्ग अर्थात् छाल, जड़, शाखा, पत्र, पुष्प, फल, हलदी, चोपचीनी, हर बहेड़ा, आंला,, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, ब्राह्मी गोखुरू, भिलावा, चीता बायविडङ्ग, पुराना लोह-भस्म, गुरीच, बावची, अमलतासका बीज, कुट मिसरी, इन्द्रजौ, कत्था, और शृङ्गहार के पत्ते सब समान भाग लेकर महीन पीस नागरमोथे के क्वाथ में इन सबको सातबार भावना देवे और भृगराज के स्वरस में भी सात भावना देवे फिर छाया में सुखाकर काम में लावे। रोगी के अग्निबलानुसार ४ माशा से १ तोला तक निर्मल मधु के साथ चटावे तो यह रोग शीघ्र शांत हो। यह योग ब्रह्म संहिता में ब्रह्माजीने मार्कंडेयजीको सुनाया है और यह सभी प्रकार की शीतला में लाभकारी होता है। इस रोग के रोगी को पथ्यापथ्य जालिनी शीतला के समान ही है किंतु इसमें रोगी की सार सम्हाल अधिक रखनी चाहिये। कठोर वायु, मेघ की गर्जना, बिजलीकी चमक लड़ाई की चड़चड़ाहट इसमें हानिकारक है।

रक्तजा शीतला (मसूरिका)

आंला और महुआ दोनों के काढ़े में मधु मिलाकर पिलाने से रक्त से उत्पन्न हुई शीतला शान्त हो जाती है।

मेंहदी के पत्ते, पित्तपापड़ा, कावली बेर, (उन्नाब) इनको समान भाग लेकर फांट बनावे और मधु मिला के पिये तो रक्त से होने वाली शीतला शांत होती है।

रक्तचन्दन, जहरमोहरा, लघुबहेड़ा, इनको समान भाग लेकर शीतल जल में पीस रोगी के शरीर पर लेप करना चाहिये। इससे रक्त वाली शीतला शीघ्र दब जाती है।

चर्मगता शीतला (पुत्रिणी)

इस रोग वाले बालक के गले में चमेली के पुष्पों का हार डालना, उसके बिछावन पर चमेली के पुष्पोंको अच्छी तरह से बिछा देना उसके बिछावनों को सदा साफ रखना और बदलते रहना चाहिये। रोगी को जिसमें चमेली के फूलों के सुगध के अतिरिक्त कोई दुर्गन्ध नहीं लगने पावे इसका ध्यान अवश्य रहना चाहिये। इस प्रकार करने से रोग बहुत जल्द शांत होजाता है।

यदि चर्मगत शीतला में अनविद्ध मोती आध आध माशे की मात्रा से दिन भर में ३-४ बार पानी से खिलाई जावे तो यह रोग शांत हो जाता है।

रोमगता शीतला [विदारिका]

यह रोग स्वयं ही तीसरे व पांचवे दिन शांत होजाता है अतः इसकी चिकित्सा करने की

आवश्यकता नहीं है। यदि किसी कारण से चिकित्सा करनी पड़े तो केवल मेंहदीके पत्तों को शीतल जल में फुलाकर उसके छाने हुये जलमें थोड़ी मिस्त्रिरी मिलाकर पिलादेना चाहिये।

काबुली बेर (उन्नाव) मुनक्का, केशर, पित्त-पापड़ा, और अङ्गूर इन वस्तुओं से फुलाया हुआ पानी भी इस रोग में बहुत लाभदायक है।

रसगता शीतला (दुर्द्धरी)

महुआ की जड़, हर. बहेड़ा, आँला, दूब, घास, दाल चीनी कमल गट्टा, खस, मजीठ और लोध इन दवाइयों को जल में पीस कर रोगी के शरीर पर लेप करना, सिन्दुर और मोम दोनों को मिला कर धूनी देना, जङ्गली गोपठों के राख को पिड़काओं पर लगाना, इन उपायों से रसगता शीतला शांत होती है।

रक्तगता शीतला (दुर्भद्रिका)

इसको शांत करने के लिये रोगी को हल्दी घिस कर यथोचित मात्रा में पिलाना चाहिये।

वाकस का पत्ता, नागर मोथा, गुरीच और मुनक्का इनके काढ़े में मधु मिला कर पीने से भी यह रोग हटता है।

इस शीतला में नीम के टहुलियों का रहना अधिक आवश्यक है। इसके द्वारा रोगी को सदा वायु देना उचित है।

मांसगता शीतला (पिडका]

मुनक्का, छोहांडा, परवलपत्ता, नीम का छाल, वाकस का पत्ता, धान का लावा, आँला और अवासा इन औषधों के काढ़े में मिसरी मिला कर पिलाने से मांसगता शीतला शांत होती है।

पीपल, पित्त पापड़ा, नीम की छाल, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, गुरीच, आँला, घिकुमारः (घृत कुमारी) वाकस, खस और शिरीष का बीया इनके काढ़े में मिसरी मिला कर पीने से रोग शीघ्र शांत होता है।

मेदोगता शीतला (अंजालिका)

जेठी, मधु हर, बहेड़ा, आँला, दूब घास, दारु चीनी, दाल हल्दी, कमल का फूल, लोध और मजीठ इन सब को समान भाग ले शीतल जल में पीस कर लेप करे और इसी के जल को नाक में सुंघावे और आंखों में टपकावे। इस प्रकार करने से मेदोगता शीतला शीघ्र शांत हो जाती है।

अस्थिगता शीतला

इसकी चिकित्सा मेदोगता शीतलाके समान करनी चाहिये।

मज्जागता और शुक्रगता शीतला।

ये दोनों शीतला असाध्य हैं। इनकी चिकित्सा करते समय प्रथम शीतला देवी का ही ध्यान, जप हवन दान आदि करना चाहिये। औषधि में सोंठ का अथवा सोंठ के साथ गुग्गल मिले हुए का क्वाथ बना कर उसमें मधु देकर रोगी को पिलाना चाहिए। इनके स्थान में हाथी के लीद की धूनी देना भी हित कर है।

वात पित्त जा, वात कफ जा और कफ पित्तजा शीतला की चिकित्सा उन ही वातजा, पित्तजा और कफजा शीतला के समान करनी चाहिये।

शीतला के प्रत्येक भेदों में जो सब औषधियां इस निबन्ध में कही गई हैं वे केवल उदाहरण मात्र हैं। उन ही दो एक औषधियों पर निर्भर रहने से कार्य्य में किसी प्रकार सफलता नह

हो सकती है। अनुभवशील चिकित्सकों को उचित है कि रोगी की जैसी अवस्था देखें ठीक उसी प्रकार औषधि चुनकर व्यवहार करें। इस रोग में निम्न लिखित औषध प्रायः अधिक प्रसिद्ध और व्यवहृत हैं।

औषधों के नाम।

(१) पटोलादि क्वाथ, अमृतादि क्वाथ, त्रिफला खुलादि क्वाथ, गुडूच्यादि क्वाथ, द्राक्षादि क्वाथ दुरालभादि क्वाथ, खादिराष्टक, निम्बादि क्वाथ, उष्णादिचूर्ण, दुर्लभरस, सर्वतोभद्र रस इन्दुकला वटी, पलाशरिष्ट

इन कई औषधियों के अतिरिक्त भी यदि आवश्यकता दीख पड़े तो दूसरे अधिकारके औषधियों को ही प्रयोग कर कार्य निकाल लेना चाहिये। औषधों के प्रयोग करते समय केवल इतना ही स्मरण रखना चाहिये कि इस रोग में कोई तीक्ष्ण विषसे प्रस्तुत अथवा कोई अधिक शोधक औषधि नहीं पड़ने पावे।

टीका(Vaccination)

का साधारण परिचय

जिस मनुष्य को कभी शीतला नहीं निकली है यदि उसको कभी संयोग वश शीतला निकल आवे तो वह बड़ी भयङ्करी होतीहै। इससे पीड़ित होने वाले प्रायः मरही जातेहैं। यदि एक बारभी शीतला के निकल जानेसे उसका बीज कमज़ोर होगया है तो फिर यदि दोबारा शीतला कभी निकलेगी तो उसकाबल पहिलेकी अपेक्षा बहुतकम रहेगाशीतला के एक बार निकल जाने पर दुबारा शीतला का प्रकोप नहीं होता है और यदि होता है तो वह बहुत कम पराक्रम वाला होता है। इसी सिद्धांत का अनुसरण करके आज कल टीका लगाने की प्रथा (Vaccination) प्रचलित है। अच्छे आदमियों के शरीर में शीतला के बीज को प्रवेश कराकर इस रोगको उत्पन्न कर देतेहैं। इसके होनेसेशरीरस्थ शीतलांकुर प्रबल होजाताहैजिससे (आराम होने पर)इसमें स्वयं निकलनेकीशक्ति नहीं रहतीहै। शीतलारोकनेका यहभी एकअच्छा उपाय प्रत्येक मनुष्यको इसका अनुसरण करना चाहिए।

वैद्य सम्मेलन पत्रिका

मलावरोध में वस्ति प्रयोग

(लेखक—श्रीयुत बा० गणपति चन्द्र जी केला सम्पादक—अंग्रेजी शिक्षक)



यद्यपि अमर भगवान की कृपा से गत वर्ष धन्वन्तरि के विशेषाङ्क में इस विषय का यथेष्ट विवेचन हो चुका है, तथापि उसमें वस्ति प्रयोग-प्रकरण में बताये हुए एक प्रयोग पर कुछ अधिक प्रकाश डालने के लिये इस विषय पर हम फिर कुछ विचार करेंगे।

सामान्य कब्जियत तो पाचक—सारक (Laxative लेग्जेटिव) औषधों के प्रयोग से ही ठीक हो जाती है, यदि कुछ अधिक हो—या कुछ दिन से स्थायी हो तो रेचक (Purgative पर्गेटिव) औषधों तथा स्नेह वस्ति(Enema एनीमा) आदि का प्रयोजन होता है और दो—चार दिन में हालत ठीक हो जाती है।

परन्तु कभी२ असावधानी—अनभिज्ञता या, उचित अवसर के अभाव से यह रोग घर जमा लेता है और चिरस्थायी हो रहता है भोजन के समय विशेष रुचि बिना ही खाते पीते रहते हैं और उसका कुछ अंश हज़म भी होता रहता है परन्तु अधिकांश क्षुद्रांत्र (Mesentery मिसेंटी) द्वारा ग्रहण न होने के कारण पोषक तत्वों को लिए हुए ही, मल बन जाता है।

बृहद् अंत्र (Colon कोलन) में पहुंच कर उसका जल तो शोषण हो जाता है, परन्तु शेष भाग स्निग्ध होने के कारण आंत की दीवारों में चारो ओर जमा होता जाता है और केवल कुछ अंश ही बाहर निकलता है। धीरे २ वही मल स्थायी रूप से जमा रहने लगता है—पेट भरा रहता है—बारम्बार दूषित वायु सरती है और उससे भी अधिक आंत्र में जमा रही आती है। उससे पाचन क्रिया में भी बाधा आती है और चित्त भी विषण्ण रहने लगता है। परन्तु अधिकांश रोगी इस दशा को न समझने के कारण—कोई अन्य विकार ही समझे रहते हैं।

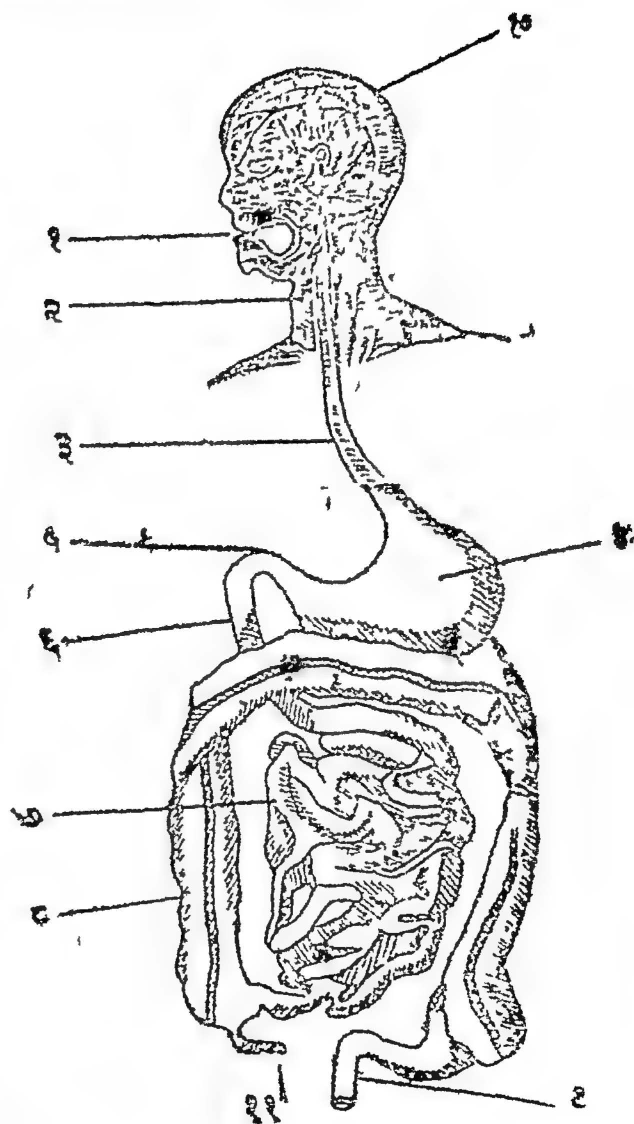
ऐसे पुराने मलावरोध में—आदत पड़ जाने के कारण प्रायः विशेष कष्ट भी प्रतीत नहीं होता और रोग की भयकरता छिपी रहती है। परन्तु वास्तव में वह दशा पूर्ण ध्यान देने योग्य और समय साध्य है।

इसकी चिकित्सा का प्रथम सिद्धांत यही है कि संचित मल आंतों से छूटे और बाहर हो जाय इसके लिये दस्तावर औषधें कोई काम नहीं करती साधारण पिचकारियां भी, उसके ऊपर तक ही, प्रभाव करती है—और उस मल पर चिकने घड़े की भांति कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

ऐसी दशा में ६८०—१००° से १०५° अश फै० के ताप का शीतोष्ण जल—कुछ गिलसरीन—या साबुन मिलाकर बड़ी आंतों में पहुंचाना, और दो—चार—छः मिनट रख कर निकाल देना अत्यन्त काम करता है उससे, धीरे २, वह ऊपर से स्निग्ध कठोर मल, ढीला हो हो कर बाहर निकलने लगता है। आंतों को भी विश्राम मिलता है और रेचक प्रयोगों के समान—कोई विलोम उनमें नहीं होता।

जल चढ़ाने के कई आसन हैं। साधारण तया रोगी को बाईं करवट लिटा कर जल चढ़ाते हैं जिससे कि अंत्र के अन्तिम आधे अश में जल बखूबी पहुंचता है। और प्रायः वहीं तक मल भी अधिक जमा रहता है। परन्तु स्थायी मलावरोध के कारण दूषित जमाव यदि अंत्र के ऊर्ध्व गामी (दाहिनी ओर के) भाग में भी होने लगा हो तो इस ढङ्ग से वहां यथेष्ट प्रभाव नहीं होता और वहां की विकृत वस्तु (जो स्वभावतः ऊपर को जाना चाहेगी) नीचे की ओर आंत में भरे हुए जल को चीर कर नहीं आ सकती अतः रोगी को कुछ कष्ट भी होता सम्भव है।

ऐसी दशा में रोगी को घुटनों के बल—उलटा लिटाना सर्वोत्तम होता है। यदि अंत्र की स्थिति पर विचार किया जाय तो यह तत्काल समझ में आ जाता है।



१—मुंह २—टेंटुआ (स्वरयंत्र) ३ सोतस ४—आमाशय या मेदा—५ आमाशय का दरवाजा ६—पक्वाशय—७ छोटी आंत ८—बड़ी आंत ९ मलस्थान—१०—शिर—११ आंत्र पुच्छ।

ध्यान देने योग्य बातें—

१—छोटी आंत की संधि (Calcum) से चल कर—बड़ी आंत (Colon) पहिले ऊपर को चढ़ती हुई यकृत तक पहुंचती है यह भाग ऊर्ध्व गामी बृहदन्त्र (Ascending colon ऐसैन्डिंग कोलन) है—

२—फिर मुड़ कर बाईं ओर को आमाशय तक सम तल जाती है यह भाग अनुप्रस्थ (Transverse टॉस वर्स कोलन)बृहदन्त्र है।

३—अब मुड़ कर बाईं ओर नीचे उतरती है। यह भाग अधोगामीबृहदन्त्र (Descending colon डिसेंडिंग कोलन) है।

४—मानिये कि रोगी बाईं करवट से लेटा हुआ है, तो वस्ति के जल को पहिले अधोगामी (Descending) भाग में बहने के बाद—अनुप्रस्थ(Transvorse समतल) भाग में—१। फीट ऊंचा चढ़नाहोगा—तब वह ऊपर के ऊर्ध्व गामी(Ascending colonभाग तकपहुंचेगा।

५—उस भाग की वायु को अब बाहर निकलने के लिये अनुप्रस्थ और अधोगामी भागों में भरे हुए जल को चीर कर—नीची उतर कर बाहर को मार्ग मिलेगा, परन्तु नीचा उतरना वायु के स्वभाव के प्रति कूल है। अतः जहां तक होगा वह ऊपर—दुग्रांत्र में मार्ग लेने को जोर करेगी। इससे कुछ कष्ट होगा।

६—अब मानिये कि रोगी (* चित्र में बताये हुए ढङ्ग से) घुटनों के बल—उलटा लेट रहा है—तो—आमाशय और यकृत के बीच की बृहदन्त्र (अनुप्रस्थ Transverse) उनके पीछे रहने के कारण (अब) ऊपर को है अतः कटि प्रदेश के (दाहिने वायें) ऊर्ध्व गामी (Ascending) और अधोगामी (Descending भागों के समतल में ही है। अर्थात् सम स्त बृहदन्त्र एक लेबल (Level) में है। अब जितना भी जल जायगा वह समस्त बड़ी आंत में फैलेगा, और साथ ही वहां की वायु भी-जलके ऊपर रहोकर बाहरनिकलतीजायगी।

६—आवश्यकतानुसार यदि ३—४ सेर जल भी चढ़ादें और समस्त अन्त्र भरदें तो भी वायु नहीं घुटेगी क्योंकि जब तकजल कम था और शेष स्थान में वायु थी तब तक ऊपर २ वायु के लिये मार्ग खाली था। अब वायु नहीं रही जल भरा है और टक्कर देदेकर बड़ी आंत के कोने २ से मल उखाड़ रहा है। इसी लिये चिरस्थायी मलावरोध हटाने को—यहआसन सर्वोत्तम है।

चित्त लेटने से भी, बहुत कुछ ऐसी ही स्थिति होती है परन्तु मलद्वार खिंचा रहने से जल जाने और वायु निकलनेमें सुगमतानहीं होती। दूसरे बहुतसा जल बाहर को ही बह जाताहै। इस आसनमें ये दोष भी नहीं हैं।

यह कोई नवीन आविष्कार नहीं। पाश्चात्य डाक्टर गण बहुत समय से इसका लाभ उठा रहे हैं जिनमें सुप्रसिद्ध डा० टेलर—डा० गोल्ड—डा० स्टीफ़ैन—डाक्टर तथा वैद्यवर स्वस्ति श्री हनुमत्प्रसाद जी जोशी केशुभ नाम उल्लेखनीय हैं। आशा है कि वैद्यवर कृष्णाचार्य जी तथा मित्रवर ·· · ············ जी की शङ्का इस से निवृत्त हो जायगी।

इस प्रकार दो—चार छः मिनट हो जल रखने के पश्चात् रोगी को धीरे २ बिठादें और शौच होने दे। प्रत्येक बार के प्रयोग में कम से कम तीन—चार दिवस का अन्तर रखें सुख पूर्वक सहन हो उतना ही प्रयोग करें



मूसाकर्णी

[लेखक—श्रीमान् बा० रूपलालजी वै० वनस्पति विज्ञ बनारस]

अनेक भाषा के नाम

मूषाकर्ण्याखुपर्णी च वृष पर्ण्याखुकर्णिका।

भूमिचरी द्रवन्ती च शम्बरी भूधरा श्रया॥

मूसाकर्णी, आखुपर्णी, वृषपर्णी, आखुकर्णिका, भूमिचरी, द्रवन्ती, शम्बरी, भूधराश्रया।

आखुकर्णि मूशिका, उदरकर्णिका, चित्रा, लुकर्णी, न्यग्रोधी, मू षेक कर्णिका, बहुकर्णी, वृश्चिपर्णी माता, चरडा, शम्बरी, वेहुपादिका, प्रथम श्रेणी, वृषा, पुत्र श्रेणी। रा० नि०।

मूषिका, अद्विषा। ध० नि०।

मूषकश्रयणी, लीका, भूधरी, भुतिच्छदा, सवशा, वृषकर्णी, भूधराश्रिया। कै० नि०।

पर्णिका, भूधरीजा। भा० प्र०।

अवला, कान्ता। ग० नि०।

हि०—मूसाकानी, मूषाकरनी, चूहाकर्नी, चूहा कानी, मूसाकर्णी।

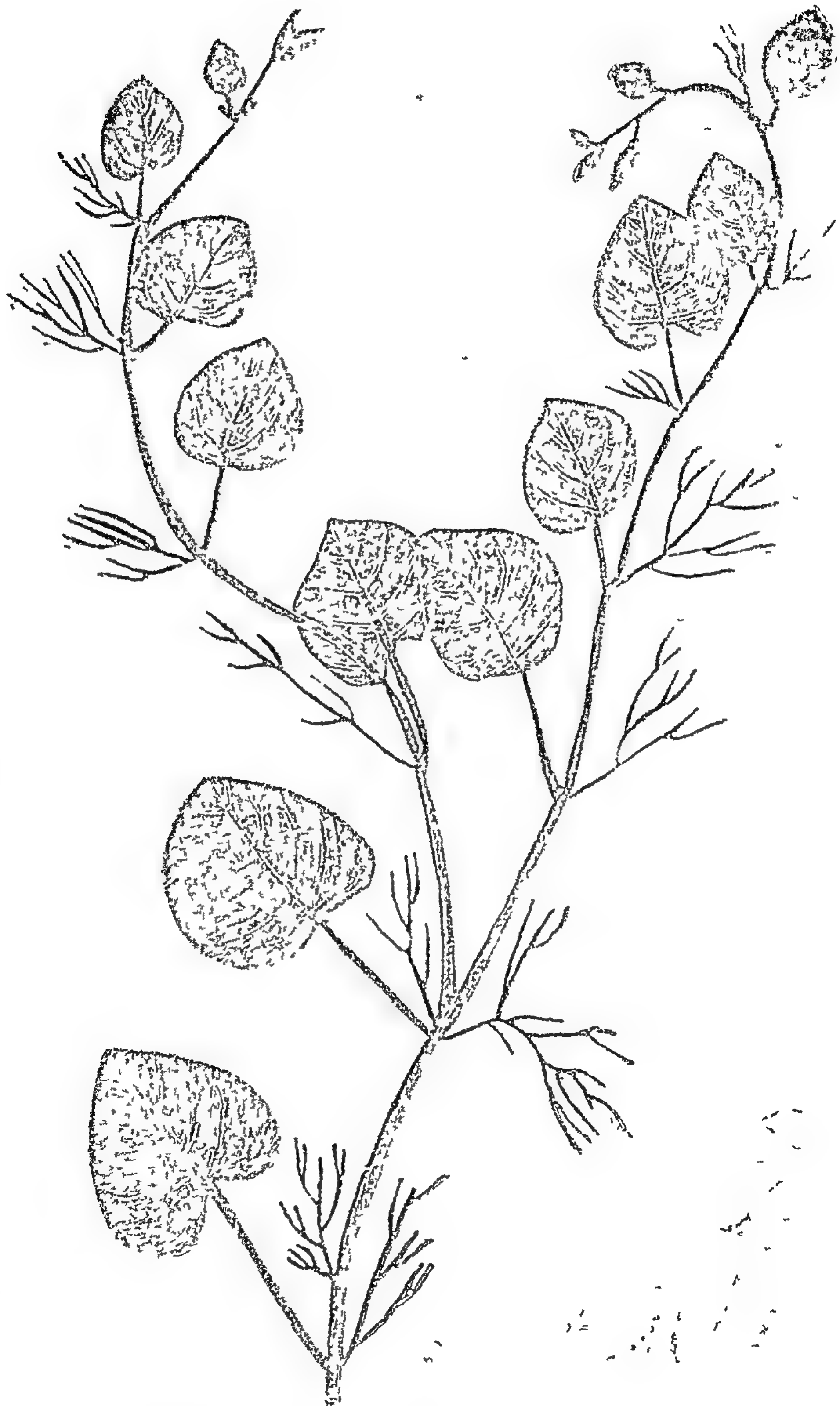
ब०—इन्दुरकानी, इन्दुरकाणी, पाना, मूषाकानी

म०—उन्दिरकानी, भोपनी, उंदुरकानी।

गु०—उंदुरकानी, उदरकानी, उंदरी, उंदरडी उंदरकनी।

क०⋯वलिहरुहे, वलिलह है।

ते०—वलुकचेविचेट्टु, राजुक चविचेट्टु, तोइनचतली।



मूषाकर्णी ।

ता०—पर्तिलोय विरेम।
प०—मूषाकर्णी।
मा०—उन्दरकानी।
गु०—उन्दिरकानी।
फा०—गोशमुष, शतर. गोशमूश।
अ०—अज़ानुलफार, आनुलफार।
पू०—कन्दूम।
ले०—Ipomea reniformis.
Syn —Salvinia cucullata

यह प्रायः सभी प्रांतों में पाई जाती है विशेष कर उष्ण प्रदेशों की गीली जमीन, बिहार राजपुताना, दक्षिण हिंदुस्तान, मध्यप्रदेशादि अनेक स्थानों में उत्पन्न होती है।

यह लता जाति की वनौषधि प्रायः चौमासे में उत्पन्न होती है और घनी शाखाओं युक्त भूमि पर फैली हुई देखने में आती है। इस की लम्बाई १ से ३ फीट या इस से भी अधिक होती है। इसकी शाखायें कभी एक ओर और कभी चारों ओर फैलती हैं। इस की लता, की प्रायः प्रत्येक गांठ से शोरियां निकल कर भूमि को पकड़ती या धसती जाती हैं एवं लता बढ़ती जाती है। पत्ते विषमवर्ती आध से १॥ इञ्च ,के घेरे में लम्बाई की अपेक्षा चौड़ाई में अधिक होते हैं, और वे चूहे के कान के आकार वाले बीच में कमानदार गोलाई लिये हुए, सफेद रोमावली युक्त हरे रङ्ग के होते हैं। इसी कारण इस का नाम मूषाकर्णी है। शाखें और पत्र दण्ड के मध्य कोष से जो बारीक निकलते हैं, उन पर ५—६ फूल आते हैं और उन पर पत्र बहुत छोटे छोटे रहते हैं। फूल घटाकार छोटे छोटे बैंजनी या गुलाबी रङ्ग के दीख पड़ते हैं तथा वे मध्याह्न में खिला करते हैं। फल गोल चने के आकार वाले, सफेद बारीक रोवें सहित, कच्ची अवस्था में हरे या बैंजनी रङ्ग के और पकने पर भूरे रंग के हो जाते हैं। इन को चीरने से उनमें दो खण्ड दीख पड़ते हैं और प्रत्येक खंड में एक एक बीज रहता है। बीज का एक बाजू बाहर निकला हुआ और दूसरा धसा सा सूक्ष्म बिंदु युक्त होता है।

इस के पत्तों का आकार चूहे के कान के समान होने से इस को मूषाकर्णी कहते हैं। इस की बेल की गांठ में से शोरियां निकल कर जमीन में घुस जाने के कारण इस का नाम "भूचरी" पड़ा है। जिस जगह यह घास उत्पन्न होती है, प्रायः उसी के निकट ब्राह्मी भी होती है। इस की कई जातियां होती हैं। इसी नाम से दूसरी कई वनस्पति हैं, उन में से एक का लैटिन नाम "Remotii Flora" है परन्तु यह वह मूषाकर्णी नहीं है जिसका उल्लेख आयुर्वेदमें किया गया है।

आ० म० गुण दोषः—चरपरी, कड़वी, कसेली, शीतल, हलकी, पचने में चरपरी, तीक्ष्ण, दस्तावर गरम, रसायन, तथा मूत्र रोग, कफ रोग, कृमि रोग, योनि दोष पित्त विकार, शूल, ज्वर, ग्रन्थि, सुजाक, प्रमेह, उदर रोग हृदय रोग, विष,पांडु,भगन्दर और कोढ़को नाश करनेवाली है

यू० म० गुण दोष—दूसरे दर्जे में गरम और रूक्ष, मूत्र प्रवर्तक, शोथ का नाशक रोध का उदघाटक, पक्षवध और अपस्मार को गुणकारी, इसकी नस्य विशेष कर अर्दित वात को लाभकारी तथा यह बस्ति को हानि कारक है दर्पनाशक दौनामरुआ, प्रति निधि दौना मरुआ, मात्रा २-३ माशे. सवर्णा।

प्रयोग:—(१) इस के काढ़े को सेवन करने से बालकों के पेट के रोग, खांसी, श्वास, मूत्र-विकार और [illegible] रोग होते हैं एवं स्त्रियों के योनि रोग, शूल, प्रमेह, [illegible], छाती का मर्द, विष, पांडु रोग, [illegible] और कुष्टादि रोग दूर होते हैं। इस में रक्त [illegible] गुण भी है। इस के स्वरस की मात्रा १—२ तोले है। इस के पत्तों का स्वरस सेवन करने से शरीर का बिगड़ाहुआ रुधिर शुद्ध हो जाता है। पित्त विकार पर इस का उपयोग अच्छा प्रभाव शाली होता है। वात रक्तादि पर इस का प्रयोग तीन मास तक करने से उस का गुण देखने में आता है। कितने मनुष्य इस के पत्ते और मरिच को चाह के समान औंट कर पीते हैं। इस के स्वरस में पारे की गोली बनती है।

(२) मूसे के विष पर—इसके काढ़े से दंश स्थान को धोने से, और उसी को पिलाने से लाभ होता है। इसके स्वरस का भी दंशित स्थान पर लेप किया जाता है।

(३) इसके पत्तों के स्वरस में मिश्री मिला कर सेवन करने से प्रमेह आराम होता है।

(४) ज्वर के बाद की निर्बलता पर—मूसाकर्णी, मरिच और गिलोय के काढ़े का सेवन करना चाहिये।

(५) विस्फोटक में इसके काढ़े में मधु मिला कर पिलाने से फायदा होता है।

(६) मूत्रावरोध पर—[illegible], पाषान भेद [illegible] गोखरू, [illegible] और ककड़ीके बीज, इनके काढ़े का [illegible] पर लेप करनेसे और इस काढ़े में मिश्री मिला कर पान करनेसे लाभहोताहै।

(७) [illegible] पर गिलोय और मूसाकर्णी का स्वरस देना हितकारी है।

(८) [illegible] रोग पर इसके स्वरस का [illegible] है।

(९) वातरक्त पर इसका बफारा देना गुणकारी है।

(१०) पीनस रोग में इसके स्वरसमें करऔंगरे का स्वरस मिला कर नाक में टपकाने से लाभ होता है।

(११) सर्प विष पर—इसके स्वरस को दंशित स्थान पर लगाने से और उसी को पिलानेसे उपकार होता है।

(१२) कर्णशूल पर—इसके स्वरस मेंतिल का तेल सिद्धकर कानमें बूंद बूंद डालनेसे अथवा केवल स्वरस को डालने से पीडा शांत होती है।

(१३) मिश्री और मूसाकर्णी के बीजों के चूर्ण को सेवन करनेसे शरीर की उष्णता जाती रहतीहै

(१४) ज्वर में—इसके पत्तों के स्वरस में मधु मिला कर पीने से लाभ होता है।

(१५) अपस्मार अथवा वात विकार से अंगों के जकड़ने पर मूसाकर्णी के एक तोले स्वरस में ३ रत्ती मुसब्बर मिलाकर पिलाना चाहिये।

(१६) उदर कृमि पर—मूसाकर्णी, नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, सहिजना नीम की छाल और वायविडङ्ग, इनका काढ़ा बनाकर सेवन करने से कृमियों का नाश होता है।

(१७) कान के घाव पर इसका स्वरस डालना हितकारी है।

(१८) बालक के श्वास, कास और उदर रोगमें मूसाकर्णी का काढ़ा दिया जाता है।

(१९) बालक के उदर कृमि में इसका रस पिलाना गुणकारी है।

(२०) कृमि रोग पर इसके पत्तों के चूर्ण को आटे में मिला उसकी पूड़ी बना कर कांजी के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

(२१) इसको मरिच के साथ घोंट छान कर पीने से मूत्र का झुल्लाव लगता है।



आयुर्वेद सर्वस्व—द्वितीय खंड, लेखक, और प्रकाशक—श्रीमान् प्रजा वैद्य नटवर लालजी चतुर्वेदी मन्त्री सद्वैद्य सभा मथुरा। साईज २०।३० सोलह पेजी पृष्ठ संख्या २०७ मूल्य १)

इस पुस्तक में धातु, उपधातु, रस, उपरस रत्न उप रत्न का शोधन मारण और उत्पत्ति स्थान तथा लवण, क्षार, के गुण दोष का वर्णन तथा विष, उपविषों का शोधन आदि अनेक रस चिकित्सा के उपयोगी विषय संग्रह किये गये हैं। पुस्तक में लेखक महोदय ने परिश्रम कर आयुर्वेद के रस ग्रन्थों से इसे सग्रह किया है। पुस्तक उपयोगी और संग्रह करने योग्य है। छपाई कागज साधारण।

कवि—केलि—सम्पादक—श्रीमान् अवन्त विहारी जी माथुर 'अवन्त', एम० आई० एम० ए-कविरत्न। प्रकाशक हिन्दी साहित्य हितैषीभवन नव महल ग्वालियर सिटी साईज २०।३० सोलह पेजी पृष्ठ संख्या २५ मूल्य ।)चार आना।

इसमें प्रथम हिंदी कवि सम्मेलन ग्वालियर में पठित प्रसिद्ध कवियों की सुन्दर कविता संग्रह की गई हैं संग्रह उत्तम हुआ है कविता सब प्रसादोत्पादक हैं। मूल्य अत्याधिक है।



दन्त मंजन—

कत्था सफेद २ तोला, माजूफल २ तोला, फिटकिरी २ तोला, नीला थोथा ६ माशे, इलायची बड़ी २ तोला, दाल चीनी १ तोला, इन सब को कूट कर कपड़ छान कर रखले। इसको प्रातः और सायं दाँतों से मलने से दाँत साफ रहते हैं और उनमें किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होने पाता।

"गोहिल"

पसली रोग पर—

शुद्ध जमाल गोटा माशे ३ सोना गेरू ६माशे चना भुने छिलका उतरे हुये (खिल्ला चना) ६ माशे, तीनों को २ पहर मर्दन कर शीशी में रखले मात्रा १ चावल अनुमान माता का दूध वह छोटे छोटे बालकों को जब पसली चलती है जिसको डब्बा रोग कहते हैं उनको बड़ा लाभ प्रद है।

स्वामी कृष्णानन्द परमहंस

दाल का मसाला—

सोंठ ४ तोला, धनियां ४ तोला, सफेद जीरा भुना हुआ४ तोला, इलायची१ तोला, काला जीरा, १ तोला, काली मिर्च १ तोला, मिर्च लाल ४ तोला, नीबू का सत्व १ तोला, नमक सेंधा ६ तोला, काला निमक४ तोला, सूखी कचरिया १० तोला, हींग भुनी ६ माशे इन सब को कूट कपड़ छान कर रखले। यह दाल, शाक, में डाल

कर खाने से उनका स्वाद बढ़ आता है और पाचन भी करता है यदि थोड़ा पानी डाल घोल कर रख लिया जाय तब चटनी बन जाती है । भ्रमण काल में बड़ा काम देने वाला है स्वादिष्ट और पाचन होने से इसे बड़ा पसन्द करते हैं।

"गोभिल"

स्तम्भन वटी—



सिता वर ४ माशे, मूसली सफेद ४ माशे, मस्तंगी ४ माशे, सोंठ ४ माशे, भांग के बीज ८ माशे, निसोथ ८ माशे, तज ४ माशे, हरड़ छोटी ८ माशे, मुंडी ४ माशे, भांगरा ४ माशे, सब को कपड़ छन कर १ तोले घृत में १ पहर मर्दन करे पश्चात् शहत इतना डाले कि गोली बन जाय और मर्दन कर गोली झरबेर के बराबर बनाले। रात्रि के समय मुख में डाल चूसता रहे तब स्तम्भन शक्ति बढ़ जाती है। ;

—एक वैद्य

शीतल अंजन—

काला सुरमा ५ तोला लेकर नीम के स्वरस में ३ दिन भिगोदे पश्चात् निकाल कर उस में ६ माशे कपूर, ६ माशे इलायची के दाने मिला गुलाब जल के साथ घोटे और जब नेत्रों में लगाने लायक सुरमा हो जाय तब शीशी में भर कर रख ले। इससे आंख की रोशनी बढ़ती है और ठन्डी रहती है। नित्य प्रति लगाने के लिये बड़ा उपयोगी है।

"गोभिल"

स्वप्न विनोद—

शीतल चीनी ३ तोला, शिलाजीत ३ तोला भीमसेनी कपूर १ माशे, बंग भस्म १ माशे, अभ्रक सहस्र पुटी १ माशे, रस सिंदूर १ माशे, बबूल का गोंद १ तोला, विधि—प्रथम शीतल चीनी बबूल का गोंद दोनों को कपड़ छन करले और एक खरल में प्रथम तीनों भस्में डाल और मर्दन कर इसमें शेष सब औषधियों डाल खरल करे और ईसबगोल को पानी में भिगो कर लुआब निकाल उसकी भावनादे चना प्रमाण गोली बनावे और प्रातः त्रिफला के क्वाथ के साथ १ गोली सेवन करे तथा सायं एक गोली मधु में मिला कर सेवन करे तब १५ दिन में रोगी स्वप्न दोष से मुक्त हो जावे। अनेक बार का परीक्षित और उपयोगी प्रयोग है।

"गोभिल"

अनुभूत तिला—



कूठ २ तोला, मन्शिल ३ तोला, मीठातेलिया २ तोला, सुहागा चौकिया २ तोला, चमेली के पत्तों का स्वरस ४० तोला, तिल का तैल ४० तोला, विधि—पहले मन्शिल को छोड़ शेष तीनों औषधियों को अच्छी तरह कुचल लें और मन्शिल को बारीक पीस कर चमेली का स्वरस डाल मर्दन करे जब दोनों एक जीव हो जाय तब १ कढ़ाई में तीनों दवा और मन्शिल चमेली का स्वरस तैल सब को डाल मन्द २ अग्नि से पकावें

जब तल मात्र शेष रहे तब उतार कर लोह के बर्तन में धारे और जब एक जीव हो जाय तब उसमें ही छोड़ दे और नितार कर गाढ़े कपड़े में छानले और शीशी में रखले। इसको इन्द्री का अग्रभाग और सीवन छोड़ धीरे २ आध घन्टे मला करे इस तरह ४१ दिन लगाने से और ऊपर बंगला पान बांधने से नपुंसकता जाती रहती है और उपाड़ भी नहीं करता। परीक्षा प्रार्थनीय है।

"गोभिल"

कोष्ठबद्धता पर—

सोंठ, मिर्च, पीपल, दालचीनी, तेजपात, हींग, अजमोद, नमक सेंधा, नमक चूड़ी, सोडा, सुहागा इन सबको समान भाग ले और कूट पीस कर छान ले तत्पश्चात मंजने की भीतर की छाल लेकर उसको कूट कर अर्क निकाल ले और उस अर्क में ऊपर की औषधियों को मिला कर झरबेर के बराबर गोली बनाले। इन गोलियों के प्रातः साय सेवन से कोष्ठ बद्धता नाश होती है भूख खूब लगती है बादी विकार नष्ट होता है और जठराग्नि प्रबल हो जाती है परीक्षित है।

रामगोपाल शर्म्मा

शीघ्र पतन पर—

तुख्म रीहां ६ माशे अकरकरा ३ माशे खांड़ ० माशे इन सब को मिला ६ माशे प्रातः काल और ६ माशे साय काल गो दुग्ध औटे तथा शीतल किये के साथ सेवन करना चाहिये। वीर्य्य दही के समान गाढ़ा हो जायगा।

रामगोपाल शर्म्मा

श्वास रोग पर—

धतूरे का पचांग अर्थात् उसकी जड़ पत्ते, फूल, फल व छाल को लेकर एक साथ में कूट लिया जावे और कुटे हुये को सुखा कर रख लिया जावे। पश्चात् जब २ श्वास का वेग अधिक हो तब इसमें से १॥ माशे पीने तमाकू में मिला कर पीवे। इसको प्रातः साय करे। इससे श्वास वेग मध्यम दशा में आ जाता है।

रामगोपाल शर्म्मा

चेचक—

बन गोभी की जड़, गोला, केशर, यह तीनों एक एक तोला ले जल के साथ सिल पर पीस चना बराबर गोली बना लेवे। एक गोली प्रातः एक गोली मध्यान काल और एक एक गोली साय काल गंगा जल के साथ खिलाने से जिन रोगियों की माता बैठ गई हो उसको देने से माता सर जाती है।

वैद्योपाध्याय देवीशरण गर्ग

शिर शूल पर—

नवसादर डमरूयन्त्र में उड़ा हुआ १ भाग चूना (कलई) बिना बुझा २ भाग पृथक २ पीस कर एक शीशी में भर कार्क लगादे और जिस के शिर में दर्द हो उन्हें सुंघावे। सूंघते ही शिर शूल जाता रहता है।

वैद्य देवीशरण गर्ग



संख्या २२

एक रोगिणी जिस की अवस्था २० वर्ष की है और २-३ सन्तान भी हैं उसको चार वर्ष से छींक आती है। गृहकर्म जैसे चक्की पीसना झाड़ू देना चून छानना आदि से छींक आरम्भ होती है और सौ दो सौ छींकें आती हैं। शरीर दुर्बल है, और शरीर में भड़कन भी रहती है। प्रति समय श्लेष्मा सा बना रहता है उसको प्रतिश्याय समझ चन्द्राक्षफल की नस्य, व्योषादि गुटिका प्रभृति दी गई पर लाभ न हुआ अब तीन चार मास की गर्भणी हैं वैद्यवरों से प्रार्थना है कि इस का निदान और चिकित्सा लिखें।

वैद्यभूषण पं० जगन्नाथप्रसाद

संख्या २३

मुख में रखने से या कमर में बांधने से अथवा हाथ में लेने से स्तम्भन हो ऐसा पारद गुटिका (पारे की गोली) बनाने की विधि लिखिये। मैं पारद की गोली के सम्बन्ध में एक वृहत् लेख चाहता हूं।

टी० जे० मास्टर

संख्या २४

क—मेरी आयु ३५ वर्ष की है और अगले असाढ़ में मेरा गौना होने वाला है किन्तु मेरी गुप्तेन्द्रिय हस्तक्रिया के कारण छोटीऔर पतली तथा बाईं ओर झुकी हुई है। जड़से सुपारी कुछ मोटी है इसके लिये अनुभूत प्रयोग लिखें जिस से टेढ़ापन पतलापन नष्ट होकर दीर्घ और स्थूलता आजावे। प्रयोग ऐसाहो कि ठन्डे और गरम पानी का परहेज न हो तथा किसी तरह की तकलीफ न दे, उपाड़ न करे और अधिक से अधिक २१ दिन में लाभ हो जाय। यदि बनी हुई हो तब अपना पता और मूल्य लिखें।

क—कोई ऐसी जड़ी हो जिस के पास रहने तक वीर्य्य पात न हो सके।

जुगनूलाल पटवारी

संख्या २५

बड़ी कृपा हो यदि त्रिदोष नाश्य रक्तार्श की परीक्षित अल्प प्रयोग से बनने वाली औषधि लिखने की कृपा करें। रोगी वात प्रकृति है उष्ण दवा से लाभ नहीं होता, नाक फूटने लगती है। बादी चीज़ से वात आक्रमण करता है अधिक शरद वस्तु से कफ बढ़ने लगता है। मस्से गुदा की ऊपरली बल्ली में गुदा के मुख पर हैं रोग कई वर्ष का है। दवा करने पर दब जाता है पर मूल से नष्ट नहीं होता यह रोग मेरे घर में ही है। दस्त के साथ सफेद आंव सी निकलती है।

श्रीकृष्ण शर्मा

संख्या २६

क—मैंने पं० शिवदत्त जी मिश्र किसनगर स्टेट भूपाल के पास एक पेलमोनियम की कटोरी देखी थी जो कि दोनों हाथों में दबाने से व किसी मन्त्र के पढ़ने से गरम होने लगती थी वैसे ही दबाने से गरम नहीं होती थी वह उसको भूत बाधा नाशक उपाय बताते थे क्या कोई वैद्यमहोदय यह बतलाने की कृपाकरेंगे कि वह किस प्रकार बनाई जाती है, मन्त्र कौनसा है।

ख—सुजाक की अनुभूत और समूल नष्ट करने वाली औषधि लिखिये जिस से देश का कल्याण हो।

बी० पी० सकसेना

संख्या २७

गत १० साल से सिर में रूसी (सिर की खोपड़ी में तह बतह मैली का जमजाना) जम जाती है, दही इत्यादि से साफ करने पर भी साफ न होती है यह देखा जाता है कि आंख के सामने एक दम की रूसी होते २ ढेर होती है। अब रूसी के बढ़ जाने से खुजलाहट यहां तक मालूम होती है कि इसे किसी शस्त्र द्वारा काट कर फेंक दें।

अब उस्तरा से सारी सिर मुड़वा देने पर कुछ दिन चैन पड़ जाता है। रोगी होमियो० तथा एलो पैं० इत्यादि औषधियां करते २ हताश हो गये हैं। इधर कुछ दिनों से भृङ्गराज तेल व्यवहार में है परन्तु कोई लाभ देखने में न आता है। अब हमारी वैद्य राजों से सार्वजन्य प्रार्थना है कि कृपा कर कोई आयुर्वेदीय योग जो अनुभूत हो कृपाकर धन्वन्तरि में प्रकाशित करने का कष्ट करें।

लाला नन्दकिशोर पटवारी

संख्या २८

मेरा रोगी एक स्त्री है जिसकी उम्र३५ वर्ष की है उसे निम्न लिखित रोग हैं।

उसके शिर में दर्द अति प्रचण्ड होता है मासिक धर्म होने से दो तीन रोज़ पहले दर्द पैदा होता है और कोई औषधि लगाने से दर्द कम नहीं होता क्रमशः प्रत्येक रोज़ बढ़ता है। और शिर में दर्द इतना तेज़ पैदा होताहै जिस से शिर में सूजन आजाता है मासिक खुलासा आजाने पर आप से आप शान्त हो जाता है और पैर में कुछ जलन भी बराबर रहती है मासिक पूरा महिना पर नहीं आता चार पांच दिन कम पर आता है और आर्तव भी दूषित आता था परन्तु आर्तव शुद्धि का दवा दिया गया तीन चार मास तो इस से आर्तव शुद्ध आने लगा परन्तु शिर का दर्द वो महीने में चार पांच दिन कम पर आर्तव आता था वह नहीं गया, और ये मर्ज आठ नव वर्ष से उत्पन्न है। लेकिन अब क्रमशः शिर का दर्द हर मास में विशेषतः पैदा होता है जिससे रोगी बेचैन हो जाता है। वैद्य महोदय कृपा कर निदान तथा अनुभूत प्रयोग साथ २ विधि लिखने की कृपा करें।

प्रयोग सुलभ मूल्य का तथा परीक्षित हो।

प० शिवकरन पाठक वैद्य

संख्या २९

क—एक मेरे मित्र जिन की अवस्था २७ २८ वर्ष की होगी अपनी मूर्खता से पहिले अविवाहित अवस्था में हस्त मैथुन आदि कुटेवों में पड़ने के कारण लिंगेन्द्रिय मूल पतला पड़ गया है स्मर्ण शक्ति न्यून है लग भग सभी लक्षण जोकि हस्तमैथुन के रोगी को होने चाहिये वर्तमान हैं अतः वैद्यों से प्रार्थना है कि इन के लिये अनुभवी और स्थाई तथा तत्कालिक गुणदायक प्रयोग लिखने की कृपा करें।

ख—श्वास रोग जोकि भादों और आसोज में ज्यादा प्रकोप करता है चावल, उरद, दही आदि के खाने से बहुत बढ़ता है उसके लिये ऐसा अनुभूत प्रयोग लिखे जिससे शीघ्र और स्थाई आम हो।

ग—एक स्त्री जिसकी अवस्था लग भग २६-२७ वर्ष की होगी। शरीर कुछ दुबला है ५—६ वर्ष हुए एक कन्या हुई थी तब से कोई सन्तान नहीं हुई योनि से श्वेत पदार्थ मांड की तरह तथा कभी अधिक सुफेदी लिये श्रवता रहता है। मासिक धर्म कभी ४—५ महीने तक बन्द रहता है कभी महीने में दो बार हो जाता है। कामेच्छा कम रहती है लघुशङ्का होने पर मूत्र से कुछ छीछड़े दार सफेदी लिये मूत्र के स्थान पर कभी मिलती है। इस लिये सदय विचार कर परोपकारी विद्वान् वैद्यों से प्रार्थना है कि शीघ्र फलप्रद अनुभूत औषधि और निदान लिख सन्तान सुख मिलने का अवसर प्रदान करें।

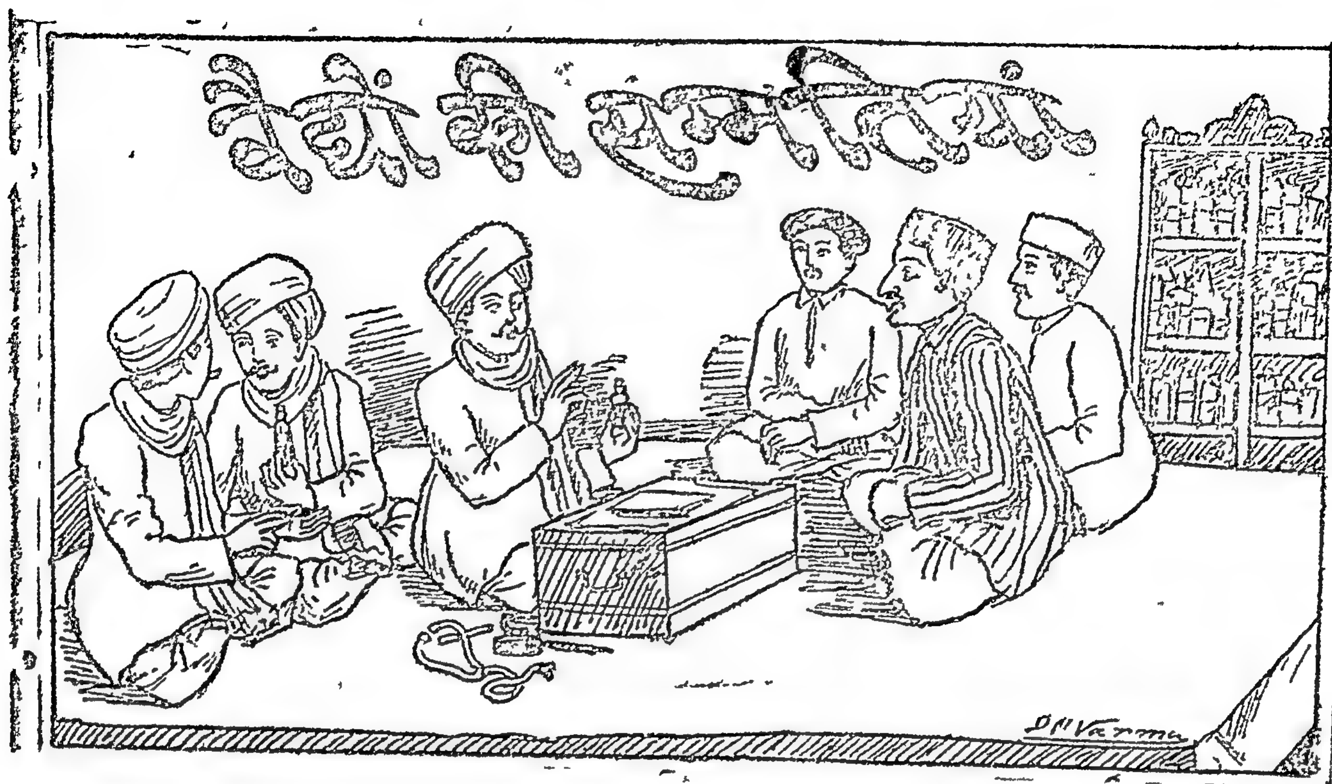
घ—एक स्त्री जिस की अवस्था करीब ३२—३४ वर्ष की होगी उसके १६—१७ वर्ष हुए जब एक कन्या हुई थी तब से कुछ नहीं हुआ मासिक धर्म भी समय पर नहीं होता कभी देर से और कभी जल्दी हो जाता है। मैथुन के समय देर से स्खलित होती है कामेच्छा उचित रूप में है। मैथुन के बाद पील वर्ण सुफेदी लिये चिकना पदार्थ निकलता है, अतः वैद्यों से प्रार्थना है कि अनुभूत प्रयोग लिख कृतार्थ कर उस अभागी के सहायक हों।

कविराज लीलाधर शर्म्मा

संख्या ३०

एक स्त्री जिस की आयु३४वर्ष के लगभगहै उस को अम्लपित्त का रोग हुआ। प्रथमावस्था में रोग का ज्ञान न होने से रोग बढ़ता रहा अन्त में ५ वर्ष हुये रोग बहुत बढ़ गया और ऊर्ध्वगामी व अधोगामी रूप में आया ज्वर भी साथ रहने लगा, ऐसा प्रतीत होता था कि यक्ष्मा हो गया है, खांसी भी थी। उसकी चिकित्सा कराई गई—बृहत जीरकादि चूर्ण—महाराज नृपतिवल्लभ—योगेन्द्ररस कर आदि चूर्ण लीलाविलास से लाभ हो गया किन्तु रोग निर्मूल नहीं हुआ। अब भी कभी २ वमन होता है शिर में पीड़ा २४ घन्टे रहती है भूक कम लगती है—मुख का स्वाद कड़वा रहता है, मेद बढ़ता जाता है। जिस से शरीर शक्ति हीन होता जाता है, शीतवीर्य औषधि से वात भी कुपित हो जाता है अनुभवी व विद्वान् वैद्य वरों से प्रार्थना है कि वे इस की ऐसी चिकित्सा लिखें कि जिस से अम्लपित्त व मेद रोग सम्पूर्णतः।निर्मूल हो जावे। साथ ही इसके पैरों की बिवाई भी फटती है लिखें कि इसका अम्लपित्त से क्या सम्बन्धहै और किस प्रकार यह दूर होगी।

रामगोपाल शर्मा



सम्मति नं० १६

यह रोग मैलेरिया विष के कारण स्नायु शूल है। अधिक स्नायु में खराबी पहुंचने के कारण मूर्च्छा होती है। क्योंकि मैलेरिया विष का प्रभाव स्नायु पर ही अधिक होता है। हाथ पांव की अङ्गुलियों का ठन्डा होना और तमाम शरीर का गरम फिर कुछ देर बाद अङ्गुलियों को गरम होजाना है। मैलेरिया का लक्षण, ज्वर, अनिन्द्रा ज्वाला, रक्तदोष रक्तका दोष पित्त पर पड़ता है। रक्त में पित्त के मिल जाने से रक्त की कमी और पित्त ज्यादा होने के कारण दिल धड़कन और जलन होता है। आप निम्न पते पर १०) रु० भेज औषधि मंगा सकते हैं। रोगमुक्त होने पर पुरस्कार भेजना आपके धर्म्म पर है।

पता—यमुनाप्रसाद कान्दू एम० पी० एल० मुजावलपुर पोस्ट ढोली जिला मुजफ्फरपुर।

संमति नं १७

ख—सुहागे का फूला कर उसको २ दिन घृत कुमारी के रस में मर्दन कर चना प्रमाण गोली बनावे और एक गोली प्रातः और एक गोली सायं काल कुमारी आसव के साथ देने से गले की पीड़ा पेट का दर्द दूर हो जाता है तथा जो ग्रन्थियां प्रसव की असावधानी से उत्पन्न हो जाती हैं वह भी जाती रहती हैं। जब पेट साफ हो जाय तथा मासिक धर्म भी ठीक हो जाय तब प्रदर के लिये अशोकारिष्ट सेवन करा रोगिणी को रोग मुक्त कर यश के भागी बनें। गोभिल

ग—जुलाफा हरड़ १ तोला, उस्तारे रेवान ६ माशा, एलुआ १ तोला, मुनक्का २ तोला। इन की गोली मटर बराबर गरम जल से सेवन करावें तो ५—८ दस्त साफ हो जायेंगे। गोभिल

संख्या १८

क—योगरत्नाकर निर्णय सागर प्रेस के छपे हुए में २४५ पृष्ठ पर कटिशूल का न तो वर्णन ही है और न यह श्लोक ही, अतः पूरा पूरा पता लिखें।

ख—धन्वन्तरि निघण्टु नहीं मिलता किन्तु धन्वन्तरि संहिता वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से मिलती है।

गोभिल

संख्या १९

धन्वन्तरि के ३ रे वर्ष के विशेषाङ्क में स्वप्न दोष नाशक एक विधि छपी है उसका अभ्यास कीजिये और साथ ही मुलेहठी का चूर्ण तीन २ माशे जल अथवा दूध के साथ सेवन कीजिये तब आप को स्वप्न दोष नहीं होगा चाहें आप मैथुन करें या न करें यह एक योगिक क्रिया है स्तम्भन भी इच्छानुसार हो सकता है।

गोभिल

सम्मति नं० २०

क—यह एक प्रकार का अम्ल पित्त है इस के लिये अविपत्तिकर चूर्ण भैषज्य रत्नावली के पाठानुसार बना कर जल के साथ चार चार माशे भोजनोपरांत सेवन करें अवश्य लाभ होगा। दस्त भी साफ लावेगा और पाक भी खट्टा न होने देगा, भूक भी ठीक करेगा और पाचन शक्ति को भी बढ़ा देगा।

गोभिल

ख—लोह भस्म का उत्तम चूर्ण धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ से ४) चार रुपयेसेर में मिल सकेगा उसकी सर्वोत्तम भस्म रसराज सुन्दर ग्रन्थ के अनुसार बन सकेगी। विस्तार भय से उसको लिखा नहीं है। रसराज सुन्दर में विधि छपी हुई है।

ग—ताम्र भस्म शीशा भस्म जस्त भस्म इन की निष्कपट विधि रसायन सार में देखिये।

घ—हाथरस आदि में जो तामे के टूक मिलते हैं वह मध्यम श्रेणी का तामा है। सर्वोत्तम तामा तूतिया से निकलता है। और जो तार बिजली के काम आते हैं उन का तामा भी उत्तम होता है।

ङ०—संखिया, जयपाल, भल्लातक आदि विष उपविषों का धुआं नेत्रों को हानि प्रद है।

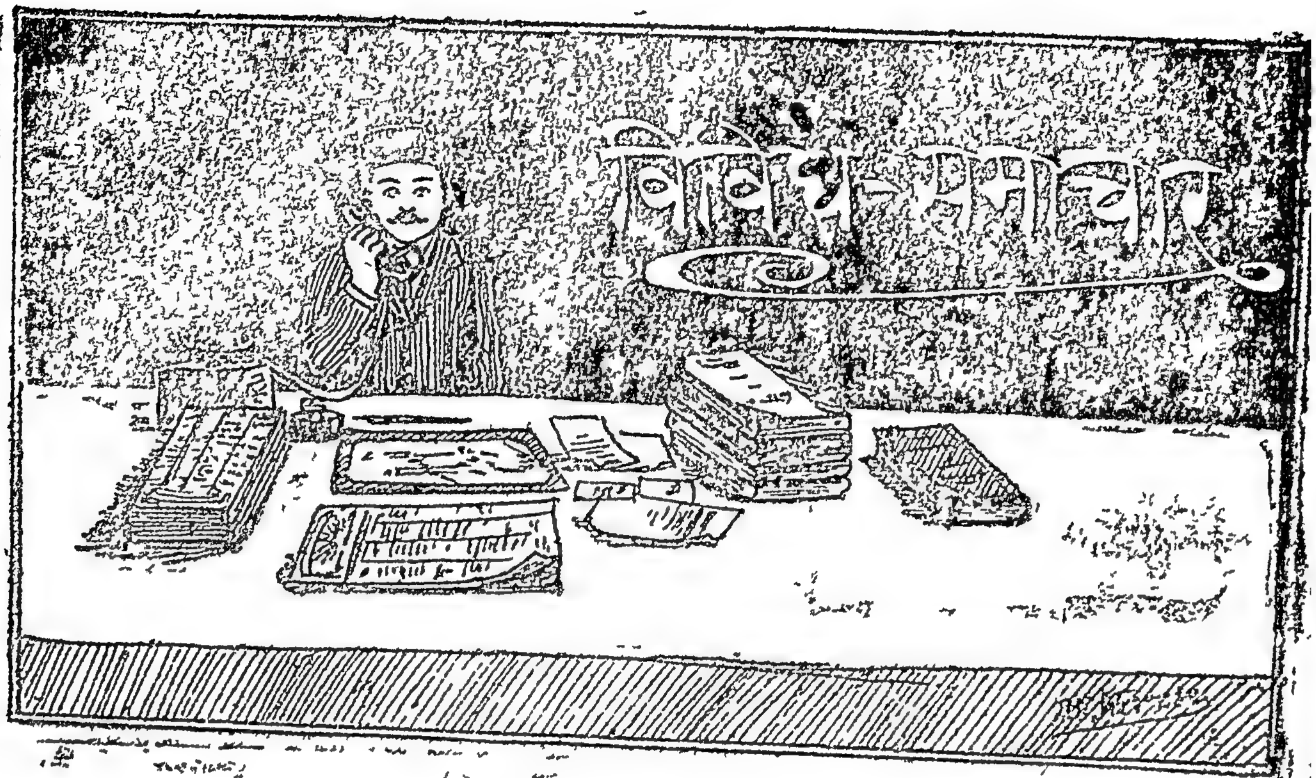
नोट—आपके प्रश्न के उत्तर सच्चे लिखे गये हैं पर पूर्ण ज्ञान तो शिष्य बन योग्य वैद्य की सेवा से ही प्राप्त होता है।

गोभिल

सम्मति नं० २१

अब आपके रावत जी को ज्वर नहीं मालुम देता उनके रक्त में उष्मा बढ़ गई है उससे ही हृदय की चाल बढ़ गई है उन्हें प्रातः साय च्यवन प्राश्य एक एक तोला एक एक रत्ती मोती की भस्म मिला कर चटावें और ऊपर से धारोष्ण दूध पिलावें लाभ होगा।

गोभिल



सम्मेलनाङ्क

धन्वन्तरि का वैद्य सम्मेलनाङ्क ३१ मई को प्रकाशित होगा। तथा धन्वन्तरि का ६ छटा अङ्क १५ जून को प्रकाशित होजायगा। जौलाई अगस्त के अङ्क उनही मास के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित हो जायगे। इस तरह अब धन्वन्तरि ठीक समय पर ही ग्राहकों को मिल जायगा।

प्रयोगाङ्क

धन्वन्तरि का तीसरा विशेषांक सितम्बर में प्रयोगाङ्क के नाम से प्रकाशित होगा।

क्षमा प्रार्थना

इस अङ्क के ब्लाकमेकर की कृपा से तीन रङ्ग का चित्र प्रकाशित न होसका कारण यह ब्लाक उन्होंने अभीतक बनाकर न भेजा अतः वह ब्लाक आगामी किसी अङ्क में प्रकाशित करेंगे, पाठक क्षमा करें।

व्यवस्थापक धन्वन्तरि

स्थगित

वैद्यक एन्ड युनानी तिब्बी कोनफ्रेंस का जो महोत्सव देहली में होने वाला था वह भिन्न२ स्थानों में प्लेग होने के कारण स्थगित करदिया गया है अब जाड़ों में होगा।

विज्ञापनदाता ध्यान दें

मुगेली के खाजूलकस ने बूटी दर्पण में मुद्रित मैनेजर चन्द्रविलास कार्यालय महेन्द्रगढ़ का विज्ञापन देख कण्ठमाला की औषधि मगाई। पर उसने कुछ भी लाभ न दिया और पत्र लिखने पर कार्यालय ने संतोषजनक उत्तर भी न दिया। विज्ञापनदाता ध्यान दें।

वैद्य प्यारेलाल गुप्त मुगेली

पुत्री जन्म

श्रीमान् एस० एस० शांडिल्य केमिस्ट श्री फैस अजमेर निवासी को चैत्र मास में एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई है। बधाई ।

शाखा

पं० भैरवदत्तजी वैद्य, गुप्तकाशी गढ़वाल निवासी ने अपने अष्टवर्ग कार्यालय की एक शाखा देहरादून में अष्टवर्ग फार्मेसी नाम से स्थापित की है । परमेश्वर उन्हें सफलता प्रदान करें।

सूचना

भारतवर्ष की राजधानी देहली में पिछले दिनों हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई है। इसके उद्देश्यों में से एक हिंदी भाषा तथा नागरी लिपि का प्रचार करना है । हमारा विश्वास है कि हिंदी ही भारतवर्ष की राष्ट्र भाषा हो सकती है। अतः देश के प्रत्येक प्रांत और उनके मुख्य २ नगरों में हिंदी भाषा के प्रचार के लिये स्थान २ पर केंद्र स्थापित किये जावें। इस अभिप्राय से हिंदी के प्रेमी सज्जन सैकडों और सहस्रों की संख्या में वाचनालय खोलें। यह सर्व साधारण में और विशेषतया नवयुवक और युवतियों में हिंदी भाषा के लिए अनुराग उत्पन्न करने का बड़ा सरल साधन है । जो सज्जन अपने २ नगर अथवा ग्राम में वाचानालयों के लिये हिंदी समाचार पत्र मगवाना चाहें वे हमसे पत्र व्यवहार करें। उन्हें थोड़े मूल्य में दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र मिल सकेंगे हम ऐसा प्रयत्न कर रहे हैं कि हिंदी समाचार पत्रों के व्यवस्थापक इस कार्य में सहयोग देकर हमारा उत्साह बढ़ाव जिससे नागरी लिपि और हिंदी भाषा का सुगमता से प्रचार हो सके ।

दयाशंकर गुप्त

मन्त्री

हिन्दी प्रचारिणी सभा देहली ।

पता—महारथी कार्यालय,

बनारसी कृष्णा बिल्डिंग, दिल्ली ।

छात्र वृत्ति

आयुर्वेद पढ़ने के अभिलाषी छात्रों को छात्र वृति देने की व्यवस्था की गई है। प्रार्थना पत्र १५ मई तक आजाने चाहिये, जिससे गर्मियों की छुट्टी के बाद वह प्रविष्ट होसके ।

छात्र वृत्ति उनही विद्यार्थियों को मिलेगी जो काशी की व्याकरण प्रथमा पास होंगे । विशेष जानने के लिये "पं रामप्रसाद मिश्र आयुर्वेदाचार्य संस्कृत कालेज अवागढ़ को लिखिये।

गुणागुण

१—पं० ठाकुरदत्तजी शर्मा लिखित लोहबान तैल निमोनिया के ऊपर बहुत अच्छा काम देता है। मैं इसकी १५ रोगियों पर परीक्षा कर चुका हूं।

२—सन्निपात पर धन्वन्तरि भाग १ अङ्क ८—९ पृष्ठ ४४० का अच्छा काम देता है । लेखक महोदय धन्यवाद के पात्र हैं ।

वैद्य लक्ष्मीनारायणजी पाठक

शुभ सम्वाद

बान्दा प्रांतान्तरगत बघेल पन्नालये गौरिहार राज्य स्थित पहरहा ग्राम में संस्कृत संगीत समाज स्थापित है। इस राज के अधर ने श्रीमन् माननीय महाराज श्री गौरिहार नरेश्वर श्री सवाई राजधर श्री प्रतिपालसिंह शर्मा महोदय ने इस समाज के लिए कार्यालय तथा शिक्षासदन बनवा देने का वचन दिया है और साथही सर्वदा के लिये एक किंकर, तैल—दीपक—इन्धन आदि का प्रबन्ध समय २ पर और भी अनेक प्रकार की सहायता देने की अनुमति दी है। कृपा पूर्वक उन्हों ने इस समाज की प्रधान संरक्षकता स्वीकार की है इसलिये यह समाज अपने श्रीमान् महाराजा जी को कोटिशः धन्यवाद देती है और आशा करती है कि इसी प्रकार की देश हितोन्नति व धर्म वीरता का परिचय श्रीमान समय २ पर देंगे और अपने वचनों को सार्थक करके यश व पुण्य के भागी बनेंगे।

समाज संयोजक सङ्गीत जीवन

श्रीकृष्णदत्त शर्मा

करने के लिये हमारे पास अनेक पत्र रोगियों और चिकित्सकों के आये थे इस लिये हमने इस विषय की पुस्तक लिखने का विचार किया था एक समय बाबू किशनलाल जी मालिक बम्बई भूषण प्रेस से बातें हुई थीं उन्होंने कृपा कर इस पुस्तक को हमें प्रकाश नार्थ दी इसका मूल अंग्रेजी पुस्तक में लिखी हुई है। यह उसका अनुवाद है।

इस में मूत्र नली के प्रदाह व उत्तेजना से हुआ शुक्रमेह, हस्त मैथुन, स्वप्न दोष, के अतिरिक्त इन्द्रिय चालना एवं शुक्रमेह के अन्यान्य कारण अश्मरी, और क्रम के कारण, शुक्र मेह विवाहिता अवस्था में अतिरिक्त स्त्री सहवास, अस्वाभाविक रेतः स्खलन का परिणाम, सर्वाङ्ग दोषज शुक्र मेह, श्वास यन्त्र हृदय और अन्यान्य स्थानों के ऊपर शुक्रमेह का प्रभाव, ध्वज भंग का कारण चिकित्सा विस्तार से लिखी गई है साथ ही ताड़ित चिकित्सा का भी समावेश कर पुस्तक और भी उपयोगी बना दी गई है। मू० ॥) आठ आना।

४—दोषधातु विज्ञान (सचित्र)

———:o———

लेखक—श्रीमान् पं० मुरारीलाल शर्मा वैद्यराज

इस पुस्तक मे दोष क्या है वे कैसे उत्पन्न होते है। इनका नाम दोष क्यों कोप करते है किस कारण से दूषित होने से क्या २ हानियां करते है बिना कुपित होने पर चिकित्सक को किस प्रकार चिकित्सा करनी चाहिए आदि २ तथा धातुएं भी बिस्तार रूप से वर्णित है।

इसमें खूबी यह है कि कठिन और गहन विषय होने पर भी लेखक ने बड़ी सीधी साधी और सरल भाषा मे लिखा है। पुस्तक वैद्यक के विद्यार्थियों को अवश्य पढ़नी एवं मनन करनी चाहिये। मू० ||=) दस आना।

५—बालबोधोदय (सचित्र)

———:o:———

इस पुस्तक को कानपुर प्रांतीय श्रीमान् पं० महासुख शर्मा के सुपुत्र श्रीमान् काशीनाथ जी चतुर्वेदी महोदय ने आयुर्वेद के विद्यार्थियों के हित के लिये संस्कृत पद्यों मे बनाई थी पर संस्कृत मात्र होने से अल्पमेधावी विद्यार्थियों को लाभ दायक न हो सकी इस लिये श्रीमान् पं० रघुवरदयाल जी भट्ट काव्यतीर्थ भिषगरत्न आयुर्वेद मार्तण्ड मन्त्री युक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन ने इसकी विस्तृत कुमाराख्या नामक व्याख्या की और हिंदी भाषा भी इस लिये अब यह पुस्तक प्रत्येक विद्यार्थी को उपयोगी हो गई है। इसमें प्रत्येक रोग पर एक २ पद्य लिखा है और उस एक पद्य में ही रोग की प्रधान औषधि का वर्णन बड़ी खूबी के साथ कर दिया है पुस्तक प्रत्येक वैद्य एवं विद्यार्थी को रखनी चाहिये। मूल्य।=) छै आना।

६—सूर्य्यरश्मिचिकित्सा

———.o———

ले०—वैद्य बांकेलाल गुप्त सम्पादक धन्वन्तरि (छपाई सफाई चित्ताकर्षक अनेक दर्शनीय चित्र

सूर्य्य रश्मि चिकित्सा को अंग्रेजी में क्रोमपैथी कहते हैं और अंग्रेज इस चिकित्सा के आविष्करता अमेरिका के डाक्टरों को मानते हैं पर नहीं यह चिकित्सा अति प्राचीन है और हमारे शास्त्रों

७—कामिनी कर्णधार (सचित्र)

लेखक श्री० पं० महावीर प्रसाद जी मालवीय "वीर" वैद्य शिरोमणि भूतपूर्व सम्पादक मनोरमा

इस पुस्तक की उपयोगिता नाम से प्रगट है। इसके सुप्रसिद्ध लेखक ने इस पुस्तक को लिख वैद्य मंडली एवं स्त्री समाज का विशेष हित साधन किया है स्त्री रोग सम्बन्धी सब ही बातो का वर्णन सरल और सुन्दर भाषा मे किया है साथ ही परिशिष्ट लगा कर लेखक ने स्त्रियों के पढ़ने समझने और स्वयं चिकित्सा करने योग्य बना दिया है।

लज्जावश जो स्त्रियां अपने रोग का हाल प्रकट नहीं करती और वह दिन प्रति दिन रोग को भयंकर बना लेती हैं उनके लिये यह पुस्तक बड़े ही काम की है। क्यों कि इस में उन सब रोगों का वर्णन है जो प्रायः स्त्रियों को हुआ करते हैं विशेषता यह है कि आपके प्राय सब ही प्रयोग लेखक के अनुभूत और शीघ्र लाभ देने वाले हैं।

इसमे प्रदर रोग, सोम रोग, बालिका प्रदर योनिरोग. गर्भ काल रोग गर्भ विकृति से होने वाले रोग जैसे मूढ गर्भ, नाल छेदन के समय की असावधानी का भयकर परिणाम, प्रसूत रोग, मकल रोग स्तन रोग बाधापस्मार आदि रोगों का निदान कारण लक्षण चिकित्सा विस्तार के साथ लिखी है। साथ ही विषय को स्पष्ट करने के हेतु भावपूर्ण रङ्गीन और सादे चित्र दे सोने में सुगन्ध वाली कहावत चरितार्थ की गई है। साथ ही पुस्तक प्रत्येक वैद्य एव गृहस्थियों के संग्रह करने योग्य है मू० १।=) एक रुपया छै आना।

८ बालरोग चिकित्सा (सचित्र)

ले० श्री० पं० महावीर प्रसादजी मालवीय "वीर" वैद्य शिरोमणि, भूतपूर्व सम्पादक मनोरमा।

भारत वर्ष मे बालकों की मृत्यु संख्या पर जब दृष्टि डाली जाती है तब बड़ा खेद होता है बालक के उत्पन्न होने से उसका पिता बड़ी बड़ी आशाएं करने लगता है किन्तु उनके पालन पोषण की विधि न जानने से एवं नित्य प्रति होने वाले रोगों से रक्षा न करने से वह अपनी आशा से ही नहीं किंतु बच्चे से हाथ धो बैठता है।

इस पुस्तक मे दूषित दुग्ध पान के लक्षण दुग्ध शुद्धि के लिये स्तन रोग चिकित्सा घृत पान उबटन और स्नान औषधि मात्र उग्रवीर्य और औषधियां बालरोग का परिज्ञान, बालोपयोगी नियम अन्नप्राशन पारगर्भिक रोग, मृत्यु का लक्षण तथा बालकों के समस्त रोगों का वर्णन निदान लक्षण और उनकी परीक्षित चिकित्सा लिखी गई है। पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ के पढने और ग्रहण करने योग्य है। मूल्य ॥।=) चौदह आना।

९ धातु दौर्बल्य

(लेखक—श्रीमान डाक्टर एल० ई० इस्लाम ए० एम० एम० डी० अमेरिका के शिकागो कालेज के आचार्य्य)

इस पुस्तक का विषय पाठक नाम से ही जान गये होंगे इस विषय पर पुस्तक प्रकाशित

में यहां तक कि वेदों मे भी इसका उल्लेख मिलता है। इस चिकित्सा में सूर्य की किरणों से ही रोगियों के समस्त रोग दूर करने का विधान है। हमने पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी है। इसको पढ़ पाठक देखें कि सूर्य्य कितना शक्तिशाली है और उसकी किरणें हमारे शरीरको कितनी लाभदायक हैं और उनके द्वारा रोग किस प्रकार बात की बात में दूर किये जासक्ते हैं जो सुकुमार स्त्री पुरुष औषधि सेवन से डरते हैं उनके लिये मानों अमृत ही मिल गया।

पुस्तक अपने विषयकी पहली ही है और हमने इस पुस्तक की छपाई बड़ी ही चित्ताकर्षक कराई है तथा साथ ही अनेक रंगीन चित्र भी दिये गये हैं तिसपर भी पुस्तक का मू० सिर्फ ॥।)बारह आना है

१० भारतीय भोजन

ले० श्री० पं० हरिनारायणजी शर्मा वैद्यराज
प्रधान अध्यापक बी० एन० मेहता सं० वि०

छपाई सफ़ाई चित्ताकर्षक। पांच दर्शनीय चित्र !

इस पुस्तक मे चरक सुश्रुत प्रभृति ग्रन्थों के आधार एवं आधुनिक डाक्टरी सम्मतियों का सामंजस करते हुए मनुष्य के सात्विक आहारका समय, अजीर्ण भोजन, विधि, मात्रा, भोजन में हंसना, बोलना, मानसिक विचार, तरल और शुष्क भोजन, पहले और पीछे खाने वाली चीज़ों का स्वाद, स्त्री के साथ भोजन, पेट भरना, भोजन का पात्र, भोजन में जल पानकी व्यवस्था, भोजनोपरांत कार्य, मौसमों के पृथक् २ भोजन आदि अनेक विषयों पर बड़ी विद्वत्ता और खोज के साथ प्रकाश डाला है। परिशिष्ट मे चीज़ों के पकने का समय भोजन की परीक्षा, पकाना, उपवास भोजन और शरीर के साथ प्रभृति गहन विषयों पर सरल भाषा में विवेचन किया है। इसके अनुकूल भोजन व्यवस्था रहने से रोगों का डर निःसन्देह जाता रहेगा। लेखनशैली रोचक और पुस्तक प्रत्येक सद्ग्रहस्थ के लिये उपादेय है। मू० ॥।) बारह आ०

११ प्लेग

औपसर्गिक सन्निपात।

ले० स्व० ला० राधावल्लभजी वैद्यराज।

भारतवर्ष से अभी इस दुष्ट रोग का काला मुंह नही हुआ प्लेग के ऊपर छोटी २ पुस्तकें प्रकाशित हुईं परन्तु उनमें शास्त्रीय विवेचन पूरो २ रीति से नहीं है। सर्व साधारण और वैद्यों को इसके विषय में पूरीजानकारी चाहिये। यह पुस्तक वैद्य और आरोग्यकाँक्षी पुरुषों को एक वार अवश्य पढ़नी चाहिये। इसमें प्लेग का इतिहास, प्लेग का आयुर्वेदीय और डाक्टरी मतानुसार विचार का तत्व से सम्बन्ध प्लेग और धर्म संक्रामक रोगों के कारण प्लेग प्रतिबन्धक उपाय प्लेग चिकित्सा आदि विषय विस्तार से वर्णन किये गये हे मू० ।) चाना

मरणोन्मुखी आर्य्य चिकित्सा।

देखो ! देखो !! कहीं मर न जावे !!!

ले०—ला० राधावल्लभजी वैद्यराज।

आयुर्वेदीय चिकित्सा मरने को तैयार है। प्राण सिसक रहे हैं मृत्यु शय्या बिछाई जारही है क्योंकि उनके पुत्र बूढ़ी माता की परवाह नहीं करते क्या मरजाने दें। भारतवासी वैद्यो ? पूछो अपने मनसे इस निबन्ध में आयुर्वेदीय चिकित्सा को जो दुर्दशा है उसको ओजस्विनी भाषा में वर्णन है।

इसमें साहित्य पठन पाठन, ज्ञानोपार्जन कर्त्तव्य निरूपण सामिग्री सम्पादन प्रतिष्ठा स्थापन शक्ति संगठन शीर्षक विचार पूर्ण लेख हैं इस निबंध के पढ़ने से अपनी सच्ची अवस्था मालूम होगी बार २ पछताना होगा मिथ्या अभिमान के कान पकड़े जांयगे एक बार पढ़के देखिये तो सही मूल्य केवल ।) चार आ०

१३ परीक्षित प्रयोग

इसमें स्व०लाला नारायणदासजी तथा राधावल्लभजी वैद्यराज सम्पादक आरोग्य सिंधु तथा वैद्य बांकेलाल गुप्त सम्पादक धन्वन्तरि के अनेक बार परीक्षित प्रयोगों का वर्णन किया गया है एक २ प्रयोग हजारों रुपये का काम देने वाला है जिन को परीक्षित प्रयोगों की तलाश रहती है। उनके तथा नवीन वैद्यों के बड़े काम की पुस्तक है छपाई सफाई देखने योग्य है। मू० ।≈) छै आना।

१४ पंचकर्म विवेचन

ले०—स्व०लाला राधोवल्लभजी वैद्यराज पञ्चकर्म द्वारा चिकित्सा करने की प्रणाली वैद्य लोग भूलगये बहुत थोड़े वैद्य ऐसे मिलते हैं जिन्हें इनका अभ्यास है बड़े पश्चाताप का विषय है कि हम अपने ऋषियों के ज्ञानभण्डार को आंख मीचकर देखते हैं। और डाक्टर लोग हमारी ही विद्यासे तिलका पहाड़ बनाकर दिखाते हैं। डाक्टर कुहनी की जलकी चिकित्सा जिसे नवीन विद्या बतलाते हैं हमारे पञ्चकर्म का ही भेद है।

अब वैद्यों को इस चिकित्सा पद्धति पर ध्यान देना चाहिए यह पुस्तक इसी विषय पर लिखी गई है आज तक इस विषय को सविस्तार वर्णन करने वाली नए ढङ्ग से गहन विषय पर प्रकाश डालने वाली दूसरी पुस्तक नहीं छपी पाठक इसे पढ़कर पंचकर्म का तात्विक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे इस में स्नेहन स्वेदन, वमन, विरेचन, वस्ती आदि पद्धतियों का पूरा २ वर्णन है। १२५ पृष्ठकी पुस्तक का मू० केवल ।≈) छै आना।

१५ रसायन संहिता

भाषाटीका सचित्र।

आयुर्वेदीय साहित्य के अमोल रत्न अपनी आलौकिक प्रतिभा के साथ अन्धकार के आवरण से आच्छन्न है आयुर्वेद प्रेमियो ऋषि महर्षियों की अमूल्य रचना कबतक प्रकाश में न आवेगी। अनेक प्राचीन ग्रन्थोंका नाम मात्रही आज सुनने में आता है। अनेक अमूल्य पुस्तक यंत्र तंत्र पड़ी हुई हैं। जिनके प्रकाशन की बड़ी आवश्यकता है।

प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसाही अमूल्य रत्न है। अनुभवी और विचार शील लेखक महोदयने हिमालय पर्यटन में परिश्रम से इसकी खोजकी है उन्हीं के प्रशंसनीय प्रयत्नसे यह पुस्तक रत्न वैद्य समुदाय का सेवा में उपस्थित कर सके हैं उसमें अनेक अव्यर्थ प्रयोग औषधियों के सत्व प्रस्तुत विधि धातु उपधातु का शोधन मारण प्रभृति अनेक विषय दिये गये हैं इसके प्रकाशन में श्रम और अर्थ व्यय किया है इसकी सफलता गुणग्राही साहित्य प्रेमियों पर निर्भरहै। आयुर्वेद प्रेमियो! आइये अपना कर्तव्य पालन कीजिये इस ग्रंथरत्न को अपनाइये घर २ प्रचार कर लाभ उठाइये। मू० ॥।≈) चौदह आना

१६ दशमूल

ले०—बाबू रूपलालजी वैद्य काशी निवासी छपाई सफाई चित्ताकर्षक ! ग्यारह रङ्गीन चित्रों युक्त। दशमूल किसको कहते हैं किन २ औषधियों से बनता है उन औषधियों की आकृति कैसी है यह विरले ही जानते है इस पुस्तक में दशमूल की दशों औषधियों का सचित्र वर्णन है।

को विधि चन्द्रोदय के भिन्न २ रोगों मे भिन्न २ अनुपान आदि चन्द्रोदय सम्बन्धी सब ही बातो का विस्तार पूर्वक वर्णन है। कीमत ।) आना।

२४ नाड़ी सिद्धांत

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के ज्ञाताओं ने नाड़ी ज्ञान के लिये यन्त्र को आविष्कार किया है और उसके द्वारा नाड़ी परीक्षा की विधि लिखी है हमने उनके सिद्धांत को इस पुस्तक मे लिखा है डाक्टरी में प्रेक्टिस आफ मेडीसन तथा अन्यजो पुस्तक हैं उनसे ही समुचित है। प्राचीन सिद्धांत का भी कहीं २ समावेश किया है। इससे वैद्य अच्छी प्रकार जान सकते हैं कि नाड़ी क्या वस्तु है। नाड़ी से क्या २ ज्ञान प्राप्त होते है। नाड़ी और हृदय का क्या सम्बन्ध है। नाड़ी कौन २ से स्थान की देखी जाता है नाड़ी बन्द होनेका कारण अवस्थानुसार, रोगानुसार नाड़ी की गति, संख्या हृदय गति और नाड़ी की गति का भेद श्वास और नाड़ी गति आदि अनेक विषय चित्रों द्वारा सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। मूल्य ।=) छैः आना।

२५ रोग परिचय

यह पुस्तक श्रीमान् पं० हरिनारायणजी शर्मा वैद्य काव्यतीर्थ द्वारा लिखित है पुस्तक में माधव निदान में कहा हुआ निदान पञ्चक का विस्तार पूर्वक सरल भाषा मे वर्णन है इससे विद्यार्थी एवं वैद्य निदान की विशेष, बातें मालूम कर सकेंगे आयुर्वेद में निदान ही एक वस्तु है। उसकी बारीकियां जानना प्रत्येक वैद्य का कर्तव्य है मू० ॥) आठ आना।

२६ प्राकृत ज्वर

(ले० स्व० ला० राधावल्लभजी वैद्यराज)

प्राकृत ज्वर को फसली बुखार या मलेरिया फीवर कहते हैं। डाक्टर लोग इसके विषय में बड़ी बड़ी बातें मारते है और वैद्य लोग अपने घर की सच्ची बातें भी नहीं जानते यह निबंध इस विषय पर पहिली ही पुस्तक है, इस मे प्रकृति का भाव रोगों की संक्रामकता, उपायोजन, मलेरिया ज्वर आयुर्वेद मत से मेलेरिया पैदा होती है या नष्ट कुनैन से हानियां आयुर्वेदीय चिकित्सा आदि विषय बड़े भाव पूर्ण लिखे गये हैं। इसे पढ़ कर वैद्य लोग ऐसे विषयों का पूरा २ ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे जिसके कारण भारत वासी अनेक कष्ट पाते हैं। सरकार भी जिससे चिन्तित है डाक्टर भी अपने मस्तिष्कों को इसमें लड़ाया करते है। कीमत ।) चार आना।

२७ दोषविज्ञान

[ले० स्वर्गीय ला० राधावल्लभजी वैद्यराज]

वैद्यक मे दोषो का वर्णन बड़े विस्तार से है। दोषो की विषमता रोग और समानताही आरोग्यता है। इस पुस्तक मे दोषों का बड़े विस्तार से वर्णन किया है दोषो का सञ्चय प्रकोप प्रसर स्थान क्षय व्यक्ति भेद आदि विषय सरलता से लिखे गये हैं विद्यार्थियों को इसे पढ़ा देने से वेदोष सम्बन्धी कठिन विषयों को बड़ी अच्छी तरह समझ जाते हैं इस किताब की अनेक विज्ञजनों ने प्रशंसा की है कीमत =)॥ ढाई आना

३४ वैद्यराज जी की जीवनी (सचित्र)

इसमें स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज सम्पादक आरोग्य सिंधु, संस्थापक श्री धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ का जीवन चरित्र है और इसे लिखा है श्रीमान् बाबू मिश्रीलाल जी वकील, एल०एल०बी०ने, जीवनी बड़े अच्छे ढङ्ग से लिखी गई है जिसके पढ़ने से निरुत्साही, आलसी पुरुष भी, उद्योगी और परिश्रमी तथा विद्वान हो सकता है पढ़ने के साथ ही अपना चरित्र उसी ढ ग से बनाने की प्रबल इच्छा हो जाती है। मूल्य सिर्फ ≡) तीन आना।

३५ आयुर्वेद में दार्शनिक तत्व

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट होजाता है। जो विद्वान यह समझते हैं कि वैद्यों के लिये दर्शन शास्त्र पढ़ना निरर्थक है और वह अपने विद्यार्थी को पढ़ाते भी नहीं और न वैद्यक विद्यालयों के पाठ्य क्रम में ही इस विषय को रखते हैं। उन्हें एक बार इसे अवश्य पढ़ाना चाहिये। यह गुरुकुल के साहित्य परिषद् में पढ़ने को श्रीमान् प्रोफेसर पण्डित देवराज जी विद्या वाचस्पति महोदय ने लिखा है पुस्तक प्रत्येक विद्वान वैद्य को पढ़नी चाहिये। मूल्य ।) चार आना।

३६ स्वप्न प्रमेह चिकित्सा
अर्थात्
धन्वन्तरि का विशेषांक
सचित्र

धन्वन्तरि के तीसरे वर्ष का यह विशेषांक है। इसमें स्वप्न प्रमेह पर अनेक विद्वानों के अनुभव पूर्ण लेख हैं। जिनमें स्वप्न प्रमेह का कारण, निदान, लक्षण और अनुभूत चिकित्सा बड़े विस्तार से और सचित्र वर्णित है। वैद्यक, डाक्टरी, होमियोपैथिक और बायोकेमी से स्वप्न प्रमेह को दूर करने के अनेक उपाय लिखे गये हैं, साथ ही योग की क्रिया से बिना औषधि के स्वप्न प्रमेह को दूर करने का अद्भुत और अचूक उपाय लिखा गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि हिन्दी ही नहीं अन्य किसी भाषा में भी ऐसी सर्वाङ्ग पूर्ण स्वप्न प्रमेह पर पुस्तक नहीं। मूल्य १॥) रु० एक रुपया आठ आना।

३७ मलावरोध चिकित्सा
अर्थात्
धन्वन्तरि का विशेषांक
(सचित्र)

धन्वन्तरि के ४ थे वर्ष का यह विशेषांक है इसमें मलावरोध पर अनेक विद्वानों के सारगर्भित और विवेचना पूर्ण लेख हैं। जिनको विद्वान वैद्योंने अत्याधिक पसन्द किया है और पत्र सम्पादकों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है हिंदी भाषा में मलावरोध पर ऐसी सर्वांग सुन्दर पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई। पुस्तक में कारण, निदान लक्षण और परीक्षित चिकित्साक्रम सचित्र और विस्तृत छपा है। अनेक प्रयोग ऐसे हैं जिन्हें पिता पुत्र से और गुरु शिष्य से छिपाते हैं साथही मनोरञ्जक और शिक्षा प्रद तथा सचित्र प्रहसन भी छपा है। पुस्तक प्रत्येक वैद्य, डाक्टर और हकीमों के अतिरिक्त सर्व साधारण के पढ़ने और संग्रह करने योग्य है मूल्य १॥) एक रुपया आठ आना।

३८ आरोग्य सिंधु की फायल

आरोग्यसिंधु स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज संस्थापक धन्वन्तरि कार्य्यालय के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता था और वह अपने समय में सर्वोत्तम वैद्यक पत्र था जिसकी प्रशंसा विद्वान वैद्यराजों के अतिरिक्त पत्र सम्पादकों ने मुक्त कंठ से की थी। जिसमें वेदों में वैद्यक ज्ञान, ज्वर और लंघन मैलेरिया और क्यूनाईन, शरीर रचना, क्षय रोग, रसायन औषधियों से आयु वृद्धि, भूत विद्या मोती ज्वर और उसकी चिकित्सा, शीत ज्वर की चिकित्सा आदि उपयोगी विषयों पर विवेचना पूर्ण लेख हैं। मूल्य सजिल्द २) दो रुपया।

३९ धन्वन्तरि की फायल

(४ थे वर्ष की)

धन्वन्तरि इस समय कैसा निकल रहा है और उसे वैद्य, वैद्यक पत्रों में सर्व श्रेष्ठ कैसे मानते हैं। उसमें कैसे २ उपयोगी और विवेचना पूर्ण लेख रहते हैं। अनुभूत प्रयोग कैसे मार्के के होते हैं। इन सब का उत्तर यह फायल है मंगाकर देखिये और उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर स्वयं पढ़ कर दीजिये। हम तो सिर्फ यही कहेंगे कि ६१० पृष्ठके सजिल्द बड़े पोथे जिसमें ३ विशेषांक और अनेक रंगीन और सादे चित्र हैं। हम सिर्फ ४) रुपये में देते हैं। एक बार अवश्य देखिये।

४० धन्वन्तरि की फायल

यह फायल सिर्फ ३—८ ही हैं शेष और सब हाथों हाथ बिक गई। मूल्य सजिल्द २) रुपये।
नोट—फायलों के मध्य में उपहार की पुस्तकें शामिल नहीं हैं।

वैद्यक पत्रों में सर्व श्रेष्ठ

वैद्य समाज का प्यारा सखा

सरस्वती, माधुरी, आदि प्रसिद्ध पत्रिकाओं के आकार प्रकार का सचित्र

मासिक पत्र

धन्वंतरि

धन्वन्तरि ने अपनी पांच वर्ष की आयु में जितनी उन्नति की है और वैद्य समाज में प्रतिष्ठाप्राप्त की है उतनी किसी भी वैद्यक पत्र ने नहीं की कारण-धन्वन्तरि ने निस्वार्थ और निर्पक्ष होकर सेवाकी है और यही कारण है कि उसकी सेवा से प्रसन्न होकर पाठक उसकी हित कामना किया करते है। क्योंकि वह अपने पाठकों को प्रति मास प्राचीन और अर्वाचीन मतों को लेकर वैद्यक के गहन विषयों पर भाव पूर्ण लेख लेकर उपस्थित होता रहता है साथही अपने पाठकों की ज्ञान वृद्धि एवं मनोरञ्जन के लिये भाव पूर्ण दर्शनीय, मनोहर शारीरिक और वनस्पतियों का तथा रोगियों के चित्र भी भेटकरता है जिससे अल्प ज्ञान वाले वैद्य भी रोग विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और शारीरिक में पूर्ण विज्ञ होजाते हैं एक बार जिसने धन्वन्तर देखा वह उससे अवश्य प्रेम करने लगता है। उसमें स्थायी स्तम्भ यह रहते हैं रोगविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, परीक्षित प्रयोग, वैद्यों से परामर्श, वैद्यों की सम्मतियां, साहित्य ससार, विविध विषय। इनके अतिरिक्त अनेक लेख और चित्र रहते हैं। वर्षभर में अनेक रङ्गीन सादे चित्रों युक्त एक ६५० बड़े पृष्ठ का पोथा होजाता है।

धन्वन्तरि को ४ था वर्ष समाप्त होगया ५वां वर्ष जनवरी सन् १९२८ से चलरहा है उसमें प्रथम अङ्क प्रवेशाङ्क के नाम से प्रकाशित हुआ है जिसमें कई रङ्गीन और सादे चित्र हैं तथा हिस्टेरिया रोग पर अनेक विद्वान वैद्यों के विवेचना पूर्ण लेख हैं। यह प्रवेशाङ्क को यदि हिस्टेरिया चिकित्सा नामक पुस्तक कहे तो अत्युक्त न होगी इस विशेषाङ्क का मुल्य १।) है पर धन्वन्तरि के ग्राहकों को वैसे ही मिलता है। इसके अतिरिक्त इसही वर्ष इसके २ विशेषाङ्क और प्रकाशित होंगे उनमें दूसरे क

नाम वैद्य सम्मेलनाङ्क होगा और तीसरे का नाम प्रयोगाङ्क होगा। यह अङ्क बहुत ही उपयोगी और सग्रह करने योग्य होंगे इन दोनों का मूल्य २) होगा और धन्वन्तरि के ग्राहकों को वैसेही मिलेंगे। अब पाठक विचारलें कि ४) वार्षिक मूल्य दे ग्राहक बनने पर ४) के यह तीन विशेषाङ्क ही मिलजायेंगे। शेष अङ्क मुफ्त में रहे। वार्षिक मूल्य ४)

चिकित्सक, रोगी, निरोगी, ग्रहस्थ,

सबका प्यारा सखा

आयुर्वेद समाचार

मासिक पत्र

इसमें छोटे २ और भाव पूर्ण तथा उपयोगी लेख रहतेहैं जिनसे रोगी, और ग्रहस्थ तथा चिकित्सक सबही लाभ उठा सकते हैं सिर्फ एक रुपये में प्रतिमास अपने ग्राहकोंके पासजा उन्हे आरोग्य रहने के नियम, कुटुंब की रक्षा करने के उपाय, सुलभता से मिलने वाले पदार्थों का उपयोग बतला उनके स्वास्थ्य की रक्षा करता है। इतना सस्ता और अच्छा मासिक पत्र आपको नहीं मिलेगा। मूल्य १) वार्षिक

सिर्फ ३० अप्रैल तक

दोनों पत्र मुफ्त

जो महाशय? ऊपर लिखी हमारी ४०पुस्तकें विशेषाङ्क फायलों मेंसे सिर्फ५) की इच्छानुसार पुस्तकें फायल या विशेषाङ्क खरीदेंगे उन्हें हम एक वर्ष तक धन्वंतरि और आयुर्वेद समाचार मुफ्त देंगे। यह रियायत उन्हीं सज्जनोंको होगी जो३० अप्रैल तक आर्डर भेजदेंगे बादमें किसीको नहीं यह ध्यान रहे

पता—वैद्य बांकेलाल गुप्त, धन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ़ [अलीगढ़]

Printed and published by V. Bankeylal Gupta at the Dhanwantri press Bijaigarh

एक आश्चर्य बात

स्त्री जाति के लिये संजीवनी

"स्त्री सुधा"

बहुत दिनों की खोज के बाद

हजारों स्त्रियों पर

परीक्षा कर

अब वैद्य समाज के सामने पेश करते हैं

स्त्री सुधा से

सब प्रकार के प्रदर, योनि दोष, गर्भाशय विकार
और उनके साथ होने वाले सब
उपद्रव तत्काल नष्ट होते हैं

मूल्य २) रुपया शीशी एक दर्जन २०) रुपया पोस्ट व्यय अलग

पता-मैनेजर धन्वन्तरि औषधालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)



२८ वैद्यराज जी की जीवनी (सचित्र)

::०::

इसमें स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज सम्पादक आरोग्यसिंधु, संस्थापक श्री धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ का जीवन चरित्र है और इसे लिखा है श्रीमान् बाबू मिश्रीलालजी वकील, एल० एल० बी० ने, जीवनी बड़े अच्छे ढंङ्ग से लिखी गई है जिसके पढ़ने से निरुत्साही, आलसी पुरुष भी, उद्योगी और परिश्रमी तथा विद्वान हो सकता है। पढ़ने के साथ ही अपना चरित्र उसी ढङ्ग से बनाने की प्रवल इच्छा हो जाती है। मूल्य सिर्फ ≡) तीन आना।

२९ आयुर्वेद में दार्शनिक तत्व

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट होजाता है। जो विद्वान् यह समझते हैं कि वैद्यों के लिये दर्शन शास्त्र पढ़ना निरर्थक है और वह अपने विद्यार्थी को पढ़ाते भी नहीं और न वैद्यक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में ही इस विषय को रखते हैं। उन्हें एक बार इसे अवश्य पढ़ाना चाहिये। यह गुरुकुल के साहित्य परिषद् में पढ़ने को श्रीमान् प्रोफेसर पण्डित देवराज जी विद्या वाचस्पति महोदय ने लिखा है पुस्तक प्रत्येक विद्वान वैद्यको पढ़नी चाहिये। मूल्य ।) चार आना।

३० स्वप्न प्रमेह चिकित्सा

अर्थात्

धन्वन्तरि का विशेषांक

(सचित्र)

धन्वन्तरि के तीसरे वर्ष का यह विशेषाक है। इसमें स्वप्न प्रमेह पर अनेक विद्वानों के अनुभव पूर्ण लेख हैं जिनमें स्वप्न प्रमेह का कारण, निदान, लक्षण और अनुभूत चिकित्सा बड़े विस्तार से और सचित्र वर्णित है। वैद्यक, डाक्टरी, होमियोपेथिक और क्रामोपेथी से स्वप्न प्रमेह को दूर करने के अनेक उपाय लिखे गये हैं, साथ ही योग की क्रिया से विना औषधि के स्वप्न प्रमेह को दूर करने का अद्भुत और अचूक उपाय लिखा गया है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि हिन्दी ही नही अन्य किसी भाषा में भी ऐसी सर्वाङ्ग पूर्ण स्वप्न प्रमेह पर पुस्तक नहीं। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आना।

३१ मलावरोध चिकित्सा

अर्थात्

धन्वन्तरि का विशेषांक

(सचित्र)

—:०:—

धन्वन्तरि के ४ थे वर्ष का यह विशेषांक है इसमे मलावरोध पर अनेक विद्वानों के सार गर्भित और विवेचना पूर्ण लेख है। जिन को विद्वान वैद्यों ने अत्याधिक पसन्द किये हैं और पत्र सम्पादकों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है हिंदी भाषा में— मलावरोध पर ऐसी सर्वाङ्ग सुन्दर पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई। पुस्तक में कारण, निदान लक्षण और परीक्षित चिकित्साक्रम सचित्र और विस्तृत छपा है। अनेक प्रयोग ऐसे हैं जिन्हें पिता पुत्र से और गुरु शिष्य से छिपाते हैं साथ ही मनोरञ्जक और शिक्षा प्रद तथा सचित्र प्रहसन भी छपा है। पुस्तक प्रत्येक वैद्य, डाक्टर और हकीमों के अतिरिक्त सर्व साधारण के पढ़ने और संग्रह करने योग्य है मू० १॥) एक रुपया आठ आना।

३२ आरोग्यसिन्धु की फायल

आरोग्यसिंधु स्वर्गीय लाला राधावल्लभजी वैद्यराज संस्थापक धन्वन्तरि कार्यालय के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता था और यह अपने समय में सर्वोत्तम वैद्यक पत्र था जिसकी प्रशंसा विद्वान वैद्यराजों के अतिरिक्त पत्र सम्पादकों ने मुक्त कंठ से की थी। जिसमें वेदों में वैद्यक ज्ञान, ज्वर और लंघन मैलेरिया और क्यूनाईन, शरीर रचना, क्षयरोग, रसायन औषधियों से आयु वृद्धि, भूतविद्या मोती ज्वर और उसकी चिकित्सा, शीतज्वर की चिकित्सा आदि उपयोगी विषयों पर विवेचना पूर्ण लेख हैं। मू० सजिल्द २) दो रुपया।

३३ धन्वन्तरि की फायल

(४थे वर्ष की)

धन्वन्तरि इस समय कैसा निकल रहा है और उसे वैद्य, वैद्यक पत्रों में सर्व श्रेष्ठ कैसे मानते हैं। उसमें कैसे २ उपयोगी और विवेचना पूर्ण लेख रहते हैं ? अनुभूत प्रयोग कैसे मार्के के होते हैं ? इन सब का उत्तर यह फायल है मंगा कर देखिये और उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर स्वयं पढ़ कर दीजिये। हम तो सिर्फ यही कहेंगे कि ६५० पृष्ठ के सजिल्द बड़े पोथे जिसमें २ विशेषांक और अनेक रंगीन और सादे चित्र हैं। हम सिर्फ ४) रुपये में देते हैं। एक बार अवश्य देखिये।

३४ धन्वन्तरि की फायल

——— ::o:: ———

(३रे वर्ष की)

यह फायल सिर्फ ३—४ ही हैं शेष और सब हाथों हाथ बिकगईं। मूल्य सजिल्द ३) रुपये।

नोट—फ़ायलों के मूल्य मे उपहार की पुस्तकें शामिल नहीं हैं।

नाम वैद्य सम्मेलनाङ्क होगा और तीसरे का नाम प्रयोगांक होगा। यह अङ्क बहुत ही उपयोगी और संग्रह करने योग्य होंगे इन दोनों का मूल्य २॥) होगा और धन्वन्तरि के ग्राहकों को वैसे ही मिलेंगे। अब पाठक विचार लें कि ४) वार्षिक मूल्य दे ग्राहक बनने पर ४) के यह ३ विशेषांक ही मिल जायेंगे। शेष अङ्क मुफ्त मे रहे। वार्षिक मूल्य ४)

सिर्फ २१ जौलाई तक दोनों पत्र मुफ्त

जो महाशय हमारी ३४ पुस्तकें, विशेषाङ्क, फायलों में से सिर्फ ५) पांच रुपये की इच्छानुसार पुस्तकें, फ़ायल या विशेषाङ्क, खरीदेंगे उन्हें हम एक वर्ष तक धन्वन्तरि और आयुर्वेद समाचार मुफ्त देंगे यह रियायत उन्हीं सज्जनों को होगी जो २१ जौलाई तक ऑर्डर भेज देंगे बाद में किसी के पत्र पर ध्यान न दिया जायगा।

धन्वन्तरि प्रेस

इस में सब प्रकार की रंगीन और सादी छपाई होती है। बोर्डर और टाईपों की सूची मुफ्त मंगा कर देखिये।

वैद्यराज

साप्ताहिक पत्र

यह जेष्ट शुक्ला १० से श्री पं० नारायणदत्त जी वैद्यराज, के सम्पादकत्व में प्रकाशित होगा। वार्षिक मूल्य ३) नमूना मुफ्त मंगाकर देखिये।

बनौषधियां

वैद्यों और पंसारियों के लिये वनस्पतियां भेजने का हमारे यहां विशेष प्रवन्ध है। देहरादून आदि के जंगलों से निकलने वाली समस्त बनस्पतियों के हम कन्टेक्टर भी हैं। बनौषधियों का सूची मंगा देखिये।

पता—मैनेजर श्रीधन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ़ वाया हाथरस जंकशन।

अखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन, और वैद्य सेवा समिति से स्वर्ण पदक और प्रशंसा पत्र प्राप्त, युक्तप्रान्तीय वैद्य सम्मेलन द्वारा निर्धारित प्रस्तावानुकूल, अनेक गण्य मान्य राजपुरुषों एवं वैद्य वैद्यराजों द्वारा प्रशंसित और सन्मानित

तथा

स्वर्गीय लाला नारायणदास, राधावल्लभजी वैद्यराज सम्पादक आरोग्यसिन्धु विजयगढ़ द्वारा स्थापित श्रीधन्वन्तरि–काय्यालय का कुछ सिद्ध

औषधियां

---::o::---

च्यवनप्राश्य

रसायनस्यास्य नरः प्रयोगात् लभेत जीर्णोऽपिकुटी अरा कृतं रूपमयास्य सर्वं बिभ्रति रूपं प्रवेशम नवयोवनस्य ॥

च्यवनप्राश्य—कास, श्वास, स्वरभंग, रक्त पित्त, क्षयरोग, अमलपित्त, संग्रहणी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र आदि रोग में एक चमत्कारिक औषधि है यह सौम्य औषधि होने पर भी अतिशक्ति शाली है इस के सेवन से वृद्ध च्यवन ऋषि तरुणता को प्राप्त हुये थे महर्षि अश्वनी कुमार ने महात्मा च्यवन के लिये प्रथम इसकी रचना की थी इससे ही इस का नाम च्यवन प्राश्य हुआ यह रसायन है इसके सेवन से जो अपूर्व बल और कान्ति आती है वह भारत के सबही महोदय जानते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में स्वादिष्ट और ठन्डी खुराक है। जिन लोगों को गरमी के दिनों में नाक से या मुखसे या दूसरे रास्ते से खून जाता है उनके लिये अमूल्य महौषधि है इसके साथ स्वर्ण

पर्पटी का सेवन करने तथा पथ्य में केवल दुग्ध पान करने से संग्रहणी, अमलपित्त नाश को प्राप्त होते हैं हमने देखा है कि कमज़ोर रोगी भी इसको सेवन कर ५-७ सेर दुग्ध पान कर लेता है। स्त्रियों का वन्ध्या रोग इसके निरन्तर सेवन से नष्ट होता देखा गया है। किसी भी प्रकार की निर्वलता इसके सेवन से नहीं रह सकती मस्तिष्क शक्ति के बढ़ाने में अद्वितीय पदार्थ है। क्षय (तपेदिक) जैसे भयंकर रोग में धातुओं का क्षय रोक कर बल यही देता है। जिन रोगियों के अस्थि भाग शेष रह गये थे वह इसके सेवन से हृष्ट पुष्ट देखे गये हैं। शरीर को मोटा ताज़ा बनाने मे इसके समान औषधि कोई भी यूनानी, मिश्रानी डाक्टरों में नही आविष्कृत हुई है इसकी प्रशंसा आज नही सहस्रों वर्ष से ऋषि महर्षि गाते चले आते हैं आज भी भारत का कोई ऐसा वैद्य नही होगा जो इसके गुणों पर मुग्ध न हो मूल्य १ पाव १।।) आधसेर २॥) १ सेर ४) २॥ सेर७॥)

मकरध्वज वटी

अर्थात

निराश बन्धु

रोगाः क्रान्ता निराशा ये निर्वला वीर्य दोषिकाः।
तेषां निराश बन्धुर्हि बन्धुस्तुल्यो गदो यदः॥

मकरध्वज बटी—आयुर्वेदीय चिकित्सा मे सवसे प्रसिद्ध और मूल्यवान औषधि मकरध्वज अर्थात् चन्द्रोदय है यह गोलियां इस ही अनुपम रसायन द्वारा बनाई जाती हैं इसके सेवन से वीसों प्रकार के प्रमेह वीर्य का पतलापन मूत्र के साथ या स्वप्न के साथ वीर्य का जाना दुर्वलता, नपुंसकता, स्तम्भन शक्ति का नाश, आंखों के सामने अंधेरा होना, शिरशूल, दस्त का साफ़ न होना किसी काम में चित्त न लगना, नसों की कमजोरी, स्त्रियों का प्रदर मूत्र कृच्छ्र, आदि वीर्य्य विकार दूर होते हैं जो लोग चन्द्रोदय के गुणों को जानते हैं वे इन गोलियों के प्रभाव मे सन्देह नहीं कर सकते। अनुमान भेद से यह अनेक रोगों को कर सकती है प्रमेह के साथ हाने वाली खांसी, जुकाम, सर्दी कमर का दर्द, मन्दाग्नि, स्मरण शक्ति का नाश आदि व्याधियों को भी दूर करती है। क्षुधा बढ़ती है शरीर हृष्ट पुष्ट होता है। जो लोग अनेक औषधियां खा हताश हो गये हैं जिनका विश्वास औषधियों से उठ गया है उन निराश पुरुषों को यह औषधि बन्धु तुल्य सुख देती है। मूल्य १ शीशी २॥=)

कुमार कल्याण घुटी

शिशोर्ज्वरातिसारघ्न कास श्वास वमी हरम्।
कासंच विविधचैव सर्व रोगं निहन्तिच॥

बालकों को घुटी देने का रिवाज आज का नहीं बहुत पुराना है और वह रिवाज भी आवश्यक है पर आज कल जो घुटी बाजार में बिकती है अथवा जो प्रायः दी जाती है वह समयानुकूल नहीं। जबकि तरुण पुरुष को जुल्लाव देने में बड़ी सावधानी रक्खी जाती है और बहुत आवश्यक होने पर दिया जाता है तब जो बच्चा सुकुमार है उसे बाजारू घुटी जो कि वास्तव में जुल्लाव है और जिस मे सनाय अमलतास हरड़ कुटकी आदि दस्त लाने वाली अनेक औषधियां पड़ती है। वह विना आगा पीछे सोचे दे दिया जाता है जिस का परिणाम बुरा होता है और बच्चा

अकाल में ही चला जाता है जिन्होंने सरकारी रिपोर्ट देखी है उन से बच्चों की मृत्यु संख्या छिपी नहीं है उसे देख हृदय में जो दुख और खेद होता है यह वर्णन नहीं किया जाता। हमने वर्त्तमान बालकों की हालत देख बड़े परिश्रम से आयुर्वेद में वर्णित और बालकों की रक्षा करने वाली दिव्य औषधियों से यह घुटी तैयार की है इसके सेवन करने वाले निरोग बालक कभी बीमार नहीं होते किंतु पुष्ट हो जाते हैं। यह बालकों को बलवान बनाने की बड़ी उत्तम औषधि है। रोगी बालक के लिये तो संजीवनी है। इसके सेवन से बाल ों के समस्त रोग जैसे ज्वर, हरे पीले दस्त, अजीर्ण पेटका दर्द, अफरा, दस्त में कीड़ा पड़ जाना, दस्त साफ न होना, सर्दी, कफ खांसी, पसली चलना दूध पटकना, सोते में चौंक पड़ना, दांत निकलने के समय के रोग, सब दूर हो जाते हैं। शरीर मोटा, ताजा, और बलवान हो जाता है। पीने में मीठी होने से बच्चा बड़ी आसानी से सेवन करते हैं। मूल्य १ शीशी ।~) बड़ी ॥~) नौ आना।

स्त्री रोगों की अपूर्व औषधि

स्त्री सुधा

श्वेतं रक्तं तथा नीलं पीतं प्रदरदुस्तरम्।
कुक्षि शूलं कटी शूलं देहशूलञ्च सर्वगम्।

हमने इस दवा के बनाने में बड़ा परिश्रम किया है। हम देखते हैं कि प्रायः भारतीय स्त्रियां अशिक्षित होने से साधारण बीमारी की तो कुछ पर्वाह नहीं करती हैं जब धीरे २ रोग शरीर मे जम जाता है तब लाचार होकर चारपाई पर पड जाती हैं या कहती हैं। बीमारी की बढ़ी हुई अवस्था में अगर कोई अनुभवी चिकित्सक मिलगया तो आराम हो जाता है वरना काल के गाल में जाना पड़ता है। है। प्रत्येक वैद्य डाक्टर स्त्रियों का इलाज करही नहीं सकता क्यों कि इस में बड़े तजुर्वे की आवश्यकता है। हमने बड़े परिश्रम और धन व्यय कर इस को बनाया है और फिर हज़ारों स्त्रियों पर अनुभव कर लिया है तब इसे सर्व साधारण पर प्रगट किया है।

जिन स्त्रियों के संतान नहीं होती तब वह ऐसे घृणित कर्म कर बैठती हैं जिससे उनका सतीत्व भी नष्ट हो जाता है और न वह उस समय भला भला की ही पर्वाह करती हैं तथा रुपयों को तो वह पानी की तरह खर्च कर डालती हैं फिर भी जब उन्हें सन्तान नहीं होती तब वह आत्मघात करने को तैयार हो जाती हैं उन्हें यह कभी ध्यान भी नहीं होता कि संतान न होने का कारण क्या है। गर्भाशय में क्या दोष है हमने स्त्रियों की हरबात का ध्यान रख यह औषधि बनाई है।

इसके सेवन से सब प्रकार का प्रदर, योनि शूल, कुक्षशूल योनिदाह मासिक धर्म (माहवारी) की खराबी जैसे अधिक दिन में होना अथवा समय से पूर्व ही हो जाना या मासिक धर्म के समय दर्द होना आदि गर्भाशय के विकार, जैसे गर्भ का रहना और बीच में ही गिर जाना अथवा सन्तान होकर मर जाना या कन्या ही कन्या होना अथवा सन्तान का न होना आदि २ सब शिकायतें दूर हो जाती हैं। गर्भाशय ठीक और पुष्ट हो जाता है, जिससे गर्भ स्थिति हो जाता है शरीर काँतिवान और बलवान हो जाता है। ऐसी अमूल्य औषधि का मूल्य सर्व साधारण के सुभीते के लिये सिर्फ ३) तीन रुपये रक्खा गया है।

विषय सूची

चित्र सूची



अ०भा० अष्टादश वैद्य सम्मेलन फतहपुर के सभापति
श्रीमान् प्राणाचार्य पं० कृष्णशास्त्री देवधर महाशय नासिक



जुजुरुषोनासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतंद्रापि मिवच्यवानात् ।
प्राति रत्नं जहि तस्यायुर्दस्रादित्याति मकृणुतंकनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं० १० अ० १७ सू० ११६

भाग ५] मई सन् १९२८ [अङ्क ५

स्वागत गान

आखिल भारत वर्षीय वैद्य सम्मेलन के लिए

हमारा सम्मेलन है आज ।
बड़े कष्ट से कर पाये हैं यह सम्मेलन काज ॥ टेक ॥
हमारा सम्मेलन है आज ।
वैद्य महोदय सकल पधारे धन्य हमारे भाग ।
सोये थे पर आवाहन सुन गए तुरत ही जाग ॥ १ ॥
हमारा सम्मेलन है आज ।
स्वागत सबका करें आज हम आये हैं अधिराज ।
किस प्रकार से सेवा करके सजदें सुन्दर साज ॥२॥

हमारा सम्मेलन है आज ।
भ्रातृ भाव से मिलजुल कर हम रहे प्रेम में पाग ।
आनन्द सहित आज गाते हैं हम यह स्वागतराग ॥३॥
हमारा सम्मेलन है आज ।
सजा हमने स्वागत का साज ॥

श्री अवन्तविहारी माथुर

"अवन्त"

अखिल भारतवर्षीय अष्टादश वैद्यसम्मेलन फतेहपुर के सभापति श्रीमान्नीग कृष्ण शास्त्री देवधर महाशय का

भाषण

श्लोकः—मूकं करोति वाचालं पंगुंलघंते गिरीन्।
यत्कृपा तमहं वंदे परमानन्द माधवम्॥१॥
नमस्करोमि तं साक्षात् जनतापरमेश्वरम्।
सद्वैद्यवृंदपारिषद्रूपंधृत्वा समागतम्॥ २॥
यस्य सामर्थ्यतो मूकोऽहं वक्तुं चापलायितः
अध्यक्षस्थाननामानम् गिरिमारोढुमुद्यतः ३॥
तं नत्वा परमेशानं प्रार्थयाम्यहमादरात्।
त्वमेव पारं नयमां स्वसहाय्यप्रदापनात्॥४॥
यदि दृश्येत न्यूनत्वं मदसामर्थ्यतःक्वचित
अतस्त्वमेव नाहं स्याम् दोषभागिति मे मतम्॥५

शार्दूलविक्रीडितम्।

यः साहित्यविशारदो विपुलधीर्धन्वन्तरिर्वैद्यके।
यच्च प्राङ्गयुनांतुकालवशतोऽनंगस्वरूपं गतामः॥
दृष्ट्वा वाग्भटवैद्यवर्यरचितामष्टाङ्गसंग्राहिकीम्।
प्राजीवीत्सुविशोध्यटिप्पणीयुता संमुद्यतत्संहितम्

आर्याः—

नत्वा श्रीगुरुचरणौ स्मृत्वा तन्नामपङ्गलं पुण्यम्॥
तर्टेकुलावतंसं गणेशमपरं धिया गणेशमिव॥१॥

श्लोकः—तेषां भागवते ग्रंथे भार्क्ति भगवतीश्वरे॥
धृत्वा हृदि प्रारभेऽहं कार्यं संसन्नियोजितम्॥१॥

अयि सकलभारतीविद्याभूषणालङ्काराःपण्डित प्रकाण्डा आयुर्वेद नभोगमस्तयो महाभागाः प्रथमन्तावत् मपश्यमपि नथ्यमेव वदामि यदहमिमं सभापतिस्थानं समलंकर्तुं राथानथ्येनासमर्थः यतः मत्पूर्वैर्यैर्दत्तामान्य महाधारिणि पण्डित प्रवरैरलं कृतमासीदिदं स्थानं तेभ्यः शुभनामके भ्योऽहं अल्पमतिश्चानभ्यस्तएवास्मिन् सभासम्मेलन विषये। प्रथममेव मया स्वागतसमित्यै पत्रप्रेषणेन नाङ्गी कृतमासीदिदं स्थानं। परं च महाराष्ट्रीयाणां अस्मत्परममान्यानां सर्वेषां वैद्यवराणां भवतां च प्रेमगौरव भयाक्रान्तात् हठाग्रहाच्च निरुद्धोऽहमनिच्छन्नपि भवदाज्ञां प्रमाणीकृत्या आगतोऽस्मि। अतः कृपालुभिर्भवद्भिस्सुमहत्साहाय्य दत्वा भवदारब्धमेवेद सम्मेलनकार्यं अनन्तरायं सुप्रासमहत्फलं कर्तुं यथाहं समर्थः स्याम तथा विधेयम्। तथाचाद्यावधि एकवारमप्यानिर्वाचिताध्यक्षाः ये केचनास्मद्भ्रातरो सिंधवङ्गावादयो भागा विद्यंते तेषामेव प्रथमोयं मानभाग इत्यहं मन्ये प्राप्तैकद्विवाराध्यक्षः समानत्वात् सर्वेपि महाराष्ट्रीयाऽस्मत्सुहृदश्च मन्यन्ते। केवलं तैः साम्प्रतं प्राप्तानेकवाराध्यक्षसम्मानेभ्यो वङ्गादिभागेभ्यः प्राप्तालपमानतया पुनः सम्मानाप्तये आदावेव महान्समुद्यमः कृत इति हेतोः हस्तन्निसृष्ट शरमिवेति मन्वानास्ते सहमता एव सिंधादिभाग वासिभ्य इति निःसन्देहमहं ब्रवीमि। भवतु यद्भाव्य तद्भवतीति मत्वाप्रकृतमनुसरामः।

अयि महाशयाः यथं सर्वेऽप्यायुर्वेदं पुनरपि प्राप्त परमोत्कर्षं दिदृक्षव तदर्थं प्रारब्धानेकशुभप्रयत्नाः समागताः सोऽयमायुर्वेदो ऋग्वेदस्य अथर्ववेदस्य चोपवेदो नित्यत्वाच्चतुराननेन स्मारितः दक्षाश्विनेन्द्रात्रिपुत्रादिपरंपरया सर्वेषां सुरासुरमनुजानामनारोग्यनाशायारोग्यदानाय दीर्घजीविताय च प्रभविष्णुर्भूत्वा महतीं कल्याणपरंपरां साधयित्वा स्ववेदत्वं याथार्थ्यं चकार। तस्मिंश्च शुभमये काले प्रथितयशसोऽस्यायुर्वेदस्याष्टावप्यंगानि वलयन्ति हृद्योयाँसि स्वकार्यकरणसमर्थान्यासन्। तेभ्यश्च स पूर्णावयवेभ्यः सुपुष्टः सुतेजा आयुर्वेदपुरुषः सर्वान् जनपदान् जानपदान् गम्भीरानेकामयगर्ते— निमग्नान् समुद्धारयामास। किमहो तस्य तदानीन्तनो महिमा पराक्रमश्च! यस्य सहाय्यतोऽश्विनौ आयुर्वेदस्मारकस्य प्रजापतेश्छिन्नं शिरः पुनरपि ससाधयामासतुः। ताभ्यामेव च वज्रिणो भुजस्तंभः, पूष्णः शीर्णदन्ताः, भगस्य च नष्टे नेत्रे, शशांकस्य राजयक्ष्मा, चिकित्स्य सर्वेऽपि दिवौकसः सुखीकृताः अतस्तौ स्वप्रभावलतो यज्ञभागिनौ समानत्वेनज्ञातौ। महाभागाः किमेतत्? किंवदन्ती वाऽसत्यप्रलपन वाऽधुनिकानामुपहासास्पदा पौराणिकी वार्तेति भवतां मतम्! वाऽस्त्यत्र सम्पूर्णं सत्यत्व मिति! शिरःसंधानशीर्णदन्तभग्ननेत्रराजयक्ष्मादीनां चिकित्साकरणं चातुरसुखप्रदानमिति तात्कालिकी परमोच्चा यशःसिद्धिरायुर्वेदस्य, तत्त्वदर्गेषु परमपदप्राप्तिरिति मे मतम्। या सिद्धिर्यश्च पदप्राप्तिरद्यापि दृष्टिपथमपि नारोहति रुग्विनाशनसिद्धकौशलगर्वभारभरितस्य पाश्चात्यायुष्संरक्षकशास्त्रस्य। जीवतश्छिन्नशिरस्कस्य पुनः शिरःसंधानमिति विजयो वा सिद्धहस्तता वा शल्यकर्मणः किमतः परं वर्धितं शल्यकर्मणः कर्म यदलौकिकीम् श्रेष्ठतामापादयेत्। सोऽयं विजयः शल्यकर्मणः। अयमपरो नामविजयः आयुर्वेदकायचिकित्सांगस्य यच्छशांकस्य राजयक्ष्मचिकित्सितम्। रोगराड् हि राजयक्ष्मा। महन् दाव इव शरीरम् दहन् क्षीणं करोति जीवितम्।

सर्वशरीरसञ्चालकानां सर्वेन्द्रियकर्मकरणभूतानां चैतन्यपरमाणूनां चैतन्याभावकरणो यक्ष्मपरिकरोऽयं राजयक्ष्मेति सिद्धम्। विनष्टचेतनां शस्य पुनश्चेतनावाप्तिसाधनं चिकित्सा राजयक्ष्मणः। सा चेद्धस्तवशगा अश्विनोस्तदा परमविजयोऽयं कायचिकित्सांगस्यायुर्वेदस्य। नाद्याप्येतादृक् सामर्थ्यं प्राप्तं पाश्चात्याश्विभ्यां, पाश्चात्यशास्त्रेण च। तथा च 'शतायुर्वै पुरुषः', इति वचनेन मानवस्य परिमितायुः केनापि प्रयत्नेन न। वृद्धिमाप्नुयात्साहि परागतिरिति विचारपरंपरया दैवाधीनं नरायुरिति मन्वानानां हतबुद्धिकानां सहजन्मनैव प्राप्तस्य। नियतकालस्यायुषो मर्यादामेकक्षणमात्रेणाऽपि वर्धने वयमनीशा इति निश्चित्य मरणकालमर्यादातटे समागत्य कृतप्रायोपवेशनानां जनानामप्यायुर्वेद ऊर्ध्वबाहुर्भूत्वोद्घोषयति यदायुषः कालवर्धने कृतोद्यमाः प्राप्तसुमहद्यशसः पुरुषकारविजयशालिनो बभूवुरमिता महर्षयो मदीयरसायनांगपरिचरणाश्च श्रेतव्य न वा प्रायोपवेशनं कार्यमिति।

दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः।
प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलं परम् ॥ १ ॥
वाक्सिद्धिं प्रणतिं कान्तिं लभते ना रसायनात्।
लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम् ॥ २ ॥
(चरकचिकित्सास्थानाध्यायः प्रथमः)

अत्र केचिद्विवादयेयुः नेयं भवतां विचारसरणिरस्मद्बुद्धेः प्रहर्षणं करोति। यतः कुत्र वा

अवस्था ब्रह्मा श्वेताश्विनी कदा वा शिरश्छिन्नं कदा वा सन्धितं इति ऐतिह्यप्रमाणपथेन न विश्वासार्हमेतत् । अपरं भवद्भिरस्याः कथायाः दृश्यमानोत्तानार्थः कथितः स कथंचित् कदाचित् गूढार्थप्रतिपादिनी रूपकात्मिकापि स्यात् यथा—भगवतः सहस्रशीर्षेषायाः रूपकं तद्वत् । भवेदेतत् तथापि सुधीभिरिदं विचारमार्गे नेयम् । यदर्थकल्पनां विना तदर्थप्रतिपादकशब्दसम्भवो नसम्भवति अपुत्रः पुत्र नाम न निश्चिनोति 'अस्ति भाति प्रिय रूप नामश्चेतिच पंचकम्' इत्यत्रापिरूपनामयोर्यथाक्रममेव समुद्देशः कृतः । रूपाभावे नामाभावः । रूपसत्त्वे नामसत्त्वम् । अर्थाभावे तद्ग्राहकशब्दाऽभावः । अर्थसत्त्वे तद्योतकशक्तिमतो शब्दस्य सद्भावः यद्यपि कविकुलगुरुणा 'वागर्थाविव संपृक्तौ' इत्यनेन शब्दार्थयोः अभिन्नत्वं प्रतिपादितं तथापि अर्थेभ्यः पूर्वं शब्दानां संभव उत शब्देभ्यः पूर्वं अर्थप्रादुर्भावेतितत्त्वविचारवेलायामेतदेव हृदयाभिमतं भवति यथा जन्मनःसाकं मृत्युसद्भावोऽपि जन्मनः पूर्वं सद्भावः पश्चान्मृत्योः ।

यदि जन्मनः प्रादुर्भावाभावस्तदा विनाशस्याप्यसम्भवः । 'यत्सत्त्वे यत्सत्त्वं यदभावे यदभाव', इत्यनेन न्यायेन शब्दसत्त्वे अर्थसत्त्वं शब्दाभावे अर्थाभाव इति । अनया विचार-सरण्या यदि वैद्यकशास्त्रग्रंथेषु, शिरस्संधानत्व-दीर्घायुत्व शीर्णदन्तभग्ननेत्र चिकित्साकरणत्व-राजयक्ष्मयक्ष्मप्रापणत्वादयः शब्दा अनुत्पन्नार्थज्ञापकाएवेति कथं भाव्यम् । तथैव पुष्पकादिविमानकल्पनासमुद्भावनं युद्धभूमौ एक समयेऽमित जनमारकशक्तीनामनेकास्त्राणां जनयितॄणामभावो सामर्थ्यं विश्वामित्रस्यप्रति-सृष्टिकर्तृत्वसमारम्भ इत्यादयोर्थप्रतिपादकाः शब्दा अपि मूर्खप्रलपनं केवलमिति वक्तुं कथं पार्यते ।

पुरातनो हि भारतदेशः पुरातनी हि महाप्रभावावार्याणां संस्कृतिः । परमवैभवपदारोहावरोहाः सहस्रशः संजाता आर्याणाम् । ज्ञानविज्ञा ⋯ ⋯ दु-शलत्वप्रतिपादका उपभुक्तार्थज्ञापकाश्चेमे शब्दाः सांप्रतं गताभरणकर्णविवरमिवोपहासास्पदीभूताः संजाताः । प्राचीनभाषाशास्त्रविदोऽपि भूतकालीन मानवलोकस्य समाजधर्मवाणिज्यविद्याशास्त्रकला-राजवैभवादीनामनुमापकं प्राचीन भाषाशब्दसमूहं मन्यंते प्रमाणीकुर्वंति । तथाच चरकादिग्रन्थपठितास्त्विमे भूतपूर्वीयाणां वैद्यकशास्त्रे परमप्राविण्यप्रमापकाः शब्दा एवेति मे मतम् ॥ अस्तु ॥ सर्वथापरिपूर्णस्यामितसंहिताप्रकरणसंग्रहग्रन्थभारभरितस्याप्यायुर्वेदस्य इदानीतनां दुःस्थितिं न कोऽपि द्रष्टुं समर्थो भवेत् । अस्यायुर्वेदस्य वैभवधवलगिरेरत्युच्चशृंगतो विनाशगर्तोन्मुखीभवने राजसत्ताराहित्यं सहस्राब्दपर्यंतं परचक्रदुर्लालित्यमित्याद्यनेकान्यपि सन्ति कारणानि । तथापि अस्माकमपि विवेकभ्रष्टत्वं सर्वेभ्यः प्रधानकारणमिति न विस्मरणीयम् । राजसत्ताभावोहि प्रधानतमं कारणम् वर्तते एव । यथा धर्मविद्याकलावाणिज्य शौर्यादयो मानवोत्कर्षसंसूचकाः गुणाः राजसत्तानिगूढा एवेति निःसत्यम् । पाश्चात्यानां स्वराज्यसत्तात्वे सर्वगुणाभिवृद्धिः समजनि । अस्माकं तु सर्वथा हानिर्गुणानामभावात् स्वराज्यसत्ताया इति भानुप्रकाश इव स्पष्टम् । वैद्यशास्त्रस्योद्धारे वा वैद्यानां स्वकर्मकरणेऽपि राजसत्तायाः साहाय्यमावश्यकमेव यतः—

अक्रियायां ध्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत् ।
तस्मादापृच्छ्य कर्तव्यं ईश्वरं साधुकारिणा ॥ २ ॥
(सुश्रुत चिकित्सास्थान अध्याय. ५)

तस्याः स्वराज्यसत्ताया अभावात् महती हानिर्जाताऽऽयुर्वेदस्यैवेति सत्यम्। यवनसत्तायां नैतादृशी हानिर्जाता यथास्यामांग्लसत्तायाम्। यवनसत्ताहि वाणिज्यवृत्तिरहिता नवीनशास्त्रोन्मेषस्याप्रसविनी पराजितजनशरीर एव स्वसामर्थ्यसञ्चालिन्यासीत्। इयंहि आंग्लराजसत्ता प्रखरमैयावती सत्तावाणिज्योद्देशद्वयधारिणी पराससजनशरीरमनर्बुद्धीन्द्रियेष्वपि स्वप्रभावसंस्थापिकेति न विस्मर्तव्यम्। तथा च—'बुध्याहतास्तु नितरां सुहता भवन्ति' इत्यनेन न्यायेनास्मदीयानां सर्वेषामेव बुद्धेर्विघातः कृतः। भारतीया एव वयं भारतीयानामस्माकं सर्वमपि अनुपपन्नमयोग्यमज्ञान मयम् न्हासहेतु (विद्या—कला—नीति—धर्म—भाषावेषादि वेदशास्त्रभारतस्मृतिग्रन्थसमूहादि) न बुद्धिमत्व प्रकाशकमिति मन्याना आत्मघात स्वाचरितं चरन्तः स्वविनाशं स्वयमेव कुर्वन्तस्तमेवोत्कर्षमार्गमितिकल्कैरुद्घोषयन्त आस्म। कश्चन वैदिको वा तर्कादिशास्त्रसंपन्नो वाऽऽयुर्वेदवैद्यो वा प्राचीनोसामजस्यस्य स्थानमिति परिहासविषयएव स्वीयैः कृतः किमुत तमेवोद्देशं हृदि कुर्वाद्भिरस्वैनरैः। अयमेवहि विवेकभ्रंशःयत्स्वस्य स्वकीयत्वस्यच द्वेषपूर्वकोपहासः मरणमर्यादांगतस्यापितस्य सञ्जीवनेऔदासीन्य दर्शनं। तथा चपाश्चात्यैः स्वविद्याकलाशास्त्रप्रसारेण प्रत्यह नूतननूतन तत्वसिद्धान्तोत्पादेन परमाश्चर्योत्पादकातर्क्ययन्त्रशस्त्रादीनामुत्पादनेन निगूढानेकविधशक्तीनां पञ्चमहाभूतानां, भगवतःसहस्ररश्मेः, तरलजीवितमिव चपलस्वभावायाश्चपलायाश्च मानवव्यवहारोपयोगे सुखापादने च नम्रपरिचारकमिव सेवार्थं बद्धांजलितया सदा संमुखीकरणेन, अस्मन्मनीषाऽप्राप्तानामपि अभिरथ—विद्युदयन्त्राविद्युत्कूपयन्त्र—शतमारमारशतघ्नी—नभस्तलगमनसाधन—विमानाद्यनेकविध——तर्कप्रतिष्ठापक——शास्त्रसिद्ध——साधनसंजननेन सर्वं मानवीयं जगत् वयमपि कुण्ठितबुद्धयो भूत्वा स्वीयं सर्वमपि न तर्कप्रतिष्ठापकम् नवैताद्दकं प्रत्युतास्मत्साधकमिति निश्चित्यपरत्र विश्वासासक्ता जाताः इदमप्यपरं कारणमवनतेः। वैद्यकशास्त्रेप्येता—दृश्येवावस्था समजनि। यथमतस्तैःशारीरविचिकित्सां कृत्वा तद्घटकपदार्थानां तत्पदार्थ—स्थितशक्तीनांतच्छक्त्युत्पन्नकार्याणां कार्यकारण—परंपरया वैज्ञानिकशास्त्रसिद्धान्तलक्षणाच—प्रत्यक्षतः संमुखीकरणेन शल्ये शालाक्ये शल्यकर्मणि ये शस्त्राद्यनेक साधनानां अभूतपूर्वाणां निर्मित्या चिकित्सासाधनीभूतखनिजधानस्पत्यादिद्रव्याणां रासायनिकशक्त्युत्कर्षाय—गत्यातस्य योगविभजनोत्पन्न—भिन्नभिन्न—गुणा—वगुणानां परिज्ञानेन च व्याधिपरित्राणकानामौषधानामपि सहजसेव्यत्वादि—सूचीभरणत्वादि—कल्पनावैविध्यसंपादनेन जनमनोहरस्वरूपापादनेन चास्मदीये परमपुरातने सहस्रमपर्यन्तं कृतमानवजीवरक्षणे आयुर्वेदशास्त्रे चाश्रद्धानाः सर्वे वयं संभूताः।

अथ सोयं कालः परमदारुणः समनुप्राप्तःकथं वा वयं स्वधर्मकलाभाषाशास्त्रनयविदानां स्वसंरक्षणयाथरक्षणे समर्थाभवेमेति चिन्ताकुलान्तःकरणवृत्तिर्भवनस्य। परमाधनतः परमाकाष्ठा भाव्युत्कर्षप्रसविनीति सिद्धान्तमुररीकृत्य मोहनिद्रामनुत्साहं कलैव्यं परोपजीवित्वं परगुणपरमाणुसहस्राकरणं च त्यक्त्वा उत्साहवीर्यधारणावलशालित्वमङ्गीकरणेन नितान्तप्रेमरज्ज्वा सन्नद्धा भूत्वा आयुर्वेदोन्नत्यै प्रयत्नयतकरणस्यायमेवकालः

मोदते मे हृदयम् सर्वैर्भारतवर्षप्रभवैर्वैद्यवरैः द्वाविंशतितमाब्दात्पूर्वमेव आरब्धमिदम् सम्भूयोत्थान मूलकं भारतीयवैद्यसम्मेलनाधिवेशनकार्यमिति । अनेन महताकार्येण सर्वेऽपि भारतीयवैद्यश्रेष्ठाः प्रत्यब्दं संमील्य परस्परस्नेहभावं वर्धयन्तः आयुर्वेदोत्कर्षसाधनानि चिन्तयामासुः । सर्वेषामासेतुहिमाचलपर्यन्तानां वैद्यवराणामेकमेव दुःखमेकमेव च सुखोपाय इति सहमतत्वमुत्पन्नम् । निखिले भारते देशे सम्मेलनांगभूतनिखिलभारतीय-विद्यापीठ प्रणीत——शिक्षाप्रणाल्यनुसारेण परीक्षाग्रहणेन चोपाधि दानेनच समकालमेवाध्येतॄणां तुल्यकक्षता संपादिता । आयुर्वेदपठन-पाठन-प्रचारवृद्धिश्च—सम्पन्ना । प्रत्यब्दं सम्मेलन-प्रसङ्गतः तमेवोद्देशमुद्दिश्य सम्भाषण—लेखन—साधनेन सम्पादितया जन—जागृत्या स्थले स्थले प्रांते प्रांते धनिनां दानवृत्त्या कार्यकर्तॄणामुत्साह-सम्पदा उद्घाटिता आयुर्वेद पाठशालाः समुपस्थापिता औषधालया आतुरालयाश्च । वैद्यवराणामपि परस्परमायुर्वेद—महोदधि मथने उत्साहो द्विगुणितः । अनेके पण्डितमति—सन्तोषदायिनः शास्त्रविवादाः समुत्पन्नाः । कालवशाद्धेतमसि निमग्नानामप्राप्तभानु-प्रकाशानामपि स्वयंप्रकाशानां प्राचीन-- ग्रन्थशोधन-मुद्रण-मुद्रापणाद्यादरणीयः प्रयत्नः कैश्चिदारब्धः । कैश्चिच्च विमलविपुलबुद्धिभिर्नवीन-ग्रन्थकरणेनभरितमायुर्वेद भांडागारम् । स्थाने २ च स्थानीयस्वराज्यसंस्थाः जनतारोग्यसम्पादन स्वीय कार्यमायुर्वेदौषधालयैरलङ्कर्तुं प्रवृत्ता । प्रांतीय राजमण्डलान्यपि कुत्रचित् द्रव्यसाहाय्यदानेन कुत्रचिदायुर्वेदसंशोधनसमिति-निर्माणेन कुत्रचिदुत्साहवर्धनार्थं निष्पक्षपरीक्षणार्थं वा महाविद्यालयस्थापनेन आयुर्वेदे स्वीयां वक्रदृष्टिमुत्सृज्य कोपदृष्ट्यानुमतिं दातुं प्रवृत्तानि । अपि महाशयाः एतावता भारतेऽनल्पयशसा सम्मेलनकार्यं संपन्नमिति न मन्तव्यम् । केवलमयं प्रारंभः । कार्यभारभरस्तु वर्तत एवाग्रे ।

अतः सावधानया बुद्ध्या समाहितेन मनसा सुनिपुणमालोच्य तथा वर्तितव्यं यथा शीघ्रमेव कार्य्यसिद्धिफलं स्यात् । तदर्थमपि संक्षेपेण क्रियते किंचिद्विवरणम्—प्रथमं तावदिदं ब्रूमः ये इमे आयुर्वेदीयप्राचीनग्रन्थ-प्रकाशन-शुद्धौषधि-संग्रहण-वृद्धितौषधिनिष्कासन-पठनपाठनप्रचार—पाठ—शालौषधिशालातुरालयोद्घाटन-संरक्षणाद्यनेकविधोपायाः पूर्वाध्यक्षवरैरन्यैश्च महाभागैस्कास्ते सह-प्रवापवास्मारम् । तेतु सर्वथैवादरणीयाः व्यवहारणीयाश्च समयाभावात् केवलं तेषां पुनरुक्तिनिवारनिर्देशं कृत्वा अग्रे सरामि । वृद्धावस्थां यातस्य चतुश्चत्वारिंशदब्दपर्यंतम् आयुर्वेदचिकित्सापरस्य तत्पठनपाठनव्यसनव्यवसिनो मे हृदि चिकित्सारम्भकालादेतावत्काले मर्यादी कृत्यैकं सुमहच्छल्यं वर्तते । चरकसुश्रुतवाग्भटाद्यनेकग्रन्थपारायणपराणां पीयूषपाणिनां चिकित्साकौशलभृतां सिद्धहस्तानां दुर्निवाररोगपङ्कमग्नानेकजनगणोद्धरणसम्पादित-कीर्तिनां वैद्यवराणां राजशासनसंस्थासु एकयापि कपर्दिकया नमूल्यं नवासम्मानप्राप्तिर्नवा प्रमाणत्वेनोपस्कारः उनच पदे पदे मानहानिर्मृत्युतुल्यया पीडया सार्कं भवतीति । त्रिचतुरब्दकालावधिप्रदत्तांग्लवैद्यकविद्यस्य चतुर्विंशतिवयस्क नाद्यापि चिकित्सितया चिकित्सितैकातुरस्याऽप्राप्तानुभवस्य कस्यचिद्यूनो डॉक्टरपदवाच्यस्य या राजशासनसंस्थासु मानदानपद्धतिश्चिकित्साधिकारप्रामाण्यम् नैव तस्य शून्यांशेनापि प्रवृद्धप्रथितानुपभूत लब्धयशसो भिषज इति दृष्ट्वा स्मरणपदवीमुपयाति वृद्धस्य भारतीयस्य स्वकार्यकरणकुशलस्याप्युन्नतिमार्गे पदे पदेऽपमानितस्य कस्यचिद्दृढभृत्यस्य सत्ताकुलजत्वेनैव प्राप्तमुख्याधिकार-

यदेन नूत्नेनोदयोन्मुखश्मश्रुणा केनापि कोमलेनापरिपक्वेन गौरकायेन सादृश्यम् । तदिदं ममैव सर्ववैद्यप्रवरहृद्विदारक शल्योद्धरणं यथाशीघ्रं भवेत्तथा प्रयतितव्यम् । सत्यत्वेन राजसत्ताधारिणामेवैतदाद्यं कर्तव्यम् यत्प्रजाजनानां सर्वांगीणोत्कर्षापादनम् । प्रजाजनेभ्य एव करग्रहणादिना द्रव्योत्पादनं कृत्वा तेषामुद्धारे यदि ते कृतकर्णेन वर्तेरंस्तदा दोषावहमेवैतत् । प्रजाजनोद्धारः स एव येन कयापि कृत्या विद्यया वा केनापि गुणेनोद्योगेन वा प्रजानाम् प्रवर्तते जगच्चक्रे अन्यूनताप्राप्तिः । अस्मदायुर्वेदोपस्कारं कृत्वा तत्पठनपाठनप्राचुर्यविधाने तत्सामर्थ्यस्फुटीकरणे वर्धने च तस्य अखिलजगत्प्रचारणे राजसत्ताशासका एव प्रथमाधिकारिणः । तेषामेवेदमधिमं निसर्गप्राप्तं कर्म । त एव यदि नाशकालं वाञ्छन्तः तिष्ठेयुः तर्हि हन्त भवितं केनेतरेणेति । अस्माभिस्सर्वथा ते आयुर्वेदाभिवृध्यै तत्परिशुध्यै च साहाय्यदानाय याचिताश्चेदशास्त्रीयो भवदायुर्वेद इत्युद्घोषयंति । भवदारोपिताऽशास्त्रीयत्वहानाय तत्सिद्धशास्त्रत्वप्रकटनाय वा भवदभिमतशास्त्रता सम्पादनाय वाऽपेक्ष्यते द्रव्यसत्तासहायमिति कृतप्रार्थनास्ते तमेवाशास्त्रत्वारोपमुपढौकयंति इति विस्मयास्पदं चापमानरोषावहमपि । तानाह्वानं कृत्वा स्पष्टं निवेदयामि अलं परिहासेनोपेक्षया वञ्चनया च । कोनाम दुरवस्थां गतः साहाय्यं विना समुन्नतिमुपैति । बालोपि साहाय्येनैव लब्धविद्यो भूत्वा स्वकुल—स्वदेश—स्वधर्म स्वराष्ट्रोन्नत्यै प्रयतति । भवतामपि जगज्जेतृसामर्थ्यंधरत्वः सर्वापि दृश्यमाना क्रिया सर्वाणि शास्त्राणि च तेषामुत्पत्तिकालपरं राजसाहाय्यं विनैव सम्पूर्णानीति प्रतिज्ञां कृत्वा कथयन्तु भवन्तः । अहं प्रतिज्ञां कृत्वा ब्रवीमि यदस्मदपेक्षितपदत्यनुसारेण द्रव्यसत्तासाहाय्यं भवन्तो वितरेयुः तदा दशाब्दादर्वागेव दर्शयिष्यत्यस्मदायुर्वेदः स्वीयं जगल्लोचनोन्मीलयत्प्रज्ञानतेजः, स्थापयिष्यति च सच्छास्त्रतां प्रतिष्ठामात्मनः ।

आर्यभारतवासिजनेभ्यः दत्तराजसत्ताविभागेषु आगतइदानीमारोग्यरक्षणविभागः । सांप्रतं तत्सत्तासंचालकैस्स्वकीयैर्मन्त्रिभिः आयुर्वेदोन्नत्यै कोपयेतावान् द्रव्यभागो वितरणीयो येन लब्धावकाशा वयमायुर्वेदोत्कर्षं साधयामः एतादृशी वा घटना कार्या या राजसाहाय्यं लब्ध्वा राजशासननियमानुसारेण प्रवर्तितायुर्वेदमहाविद्यालयात् समवाप्तविद्या वैद्यावतंसा राजसम्मानितायुर्वेदपदवीधारका बहिरागच्छेयुः । अत्यंतातिमां वा इमां कांक्षां पूरयेयुः यत्र यत्रायुर्वेदोद्धरणे विद्वांसः कृतद्रव्यत्यागाः प्रयत्नवन्तः आर्यांग्लोभयशास्त्रविदः केवलम् सच्छास्त्रजिज्ञासया प्रेम्णा सम्भूय आरब्धसत्कार्याः उभयशास्त्राध्यापनेन तुलनया च शास्त्रकलावत्तां परीक्ष्य अध्यापनं कुर्वन्तो द्रव्यसहाय्यं विनैवापूर्णसमुद्यमाः मनस्येव विलीयमान—मनोरथाः केचिदातुरालयं वा विद्यालयं वा संस्थाप्य निरलसतया आयुर्वेदसेवां कुर्वंति, तेषां चानेकानाम् जीवनमिव द्रव्यदानवांछापूरणाभयदानैरुत्साहवर्धनं कार्यम् । एतत् अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः इति न्यायेन वरम् । वर्तंते एतादृश्यः तिस्रः संस्था महाराष्ट्रे । एका पुण्यपत्तनस्था आर्यांग्लवैद्यविद्याविभूषितैः संचालिता टिलकमहाविद्यालयांगभूता विद्यालयातुरालयौषधालयशवविच्छेदसाधनोपबृंहिता संस्था । द्वितीया वैद्यवर गुणेशास्त्री डॉ० सप्तर्षिप्रमुखैस्संचालिता तथैव साधनोपेताऽहमदनगरे वर्तते । तृतीया सातारानगरे राजेन्द्ररडकर प्रभृतिभिः प्रवर्तिता । मोहमयीप्रांतीय राजसत्ताधारिभिः नामदार देसाई मन्त्रिभिः

सहायं कृत्वा किमपि स्वकर्तव्यं कर्तव्यम् । तथाच राजशासनमण्डले जनैर्निर्वाचितानां नियुक्तानां सदस्यानामप्येतत्कार्यम् यदायुर्वेदसहायदाने ऐकमत्येन निर्बन्ध कृत्वा राजशासकेभ्यः सहायदापनं । सर्वेषामपि भारतीयानां जनानामिदमावश्यकं कृत्यम् यत्स्वमतदानेन निर्वाचितसदस्यानामायुर्वेदाहितार्थं सावधानतयाराजशासनमण्डले वर्तनमेव पुनस्तत्र स्थलप्रवेशसाधनमिति सविचारप्रकटनम् । सर्वथा सर्वैरपि सएव यत्नःकार्यः येन राजसत्तासहायं आयुर्वेद प्राप्नुयात् । द्रव्यसाहाय्यं अन्यसाहाय्यं बुद्धिसाहाय्यं सर्वमप्यापेक्षतेऽस्मान्निस्तथापि 'सर्वं पद हस्तिपदे निमग्नमिति' लौकिकोक्त्या राजसत्तासाहाय्ये अन्येषां सर्वेषां समावेशात् तत्प्रथममेव यथा लभेत तथा प्रयत्नातिशयस्समादरणीयः ।

तथा वैद्यवरैरपि अधोलिखित विचारपद्धत्याः समादरः कार्यः । अतः परं अगृहीत वैद्यशास्त्रशिक्षणः एकोपि वैद्योमाभवतु ।

अथाच अस्मदीयायुर्वेद-मतिसङ्कालकिरौलितोपि विपक्षैरशास्त्रीयत्वेनारोपितः । सर्वोपि पाश्चात्यशिक्षणशिक्षिता अस्मदीया बंधवोपि आयुर्वेदं अशास्त्रीयतत्त्वोत्पन्न प्रत्यक्षसिद्धप्रयोगाप्रयोगितम् । विश्वासानर्हमितिमन्यंते । स्वीकुर्वन्तिच स्वच्छन्दतया परकीयान्यौषधशतानि । समाद्रियंते पाश्चात्यवैद्यकं । मानयंतिच पाश्चात्यवैद्यविभूषितान् । इयं हि अधुनिकशास्त्रसिद्धे तत्वे विश्वासप्रवर्तिनी शिक्षणपद्धतिः सर्वभारतव्यापिकाचिरान्नैव भविष्यति । अपेक्षतेऽस्माभिरपि जनानां शिक्षणसंपन्नानां प्रत्यक्षदृष्टेवस्तुनि विश्वासप्रवृत्तेः बुद्धेरपि । नायं कालः केवलायाः श्रद्धायाः परं तर्कतर्कितमतिविलासस्य । पूर्वं हतबुद्धीनां प्रत्यक्षावलोकनमेव विश्वासजनकमिति निश्चिन्वतां जनानां आयुर्वेदशास्त्रे विश्वासोत्पादनार्थमस्माभिरपि प्रत्यक्षसिद्ध नूतनतत्वोद्भावितपद्धत्याः स्वीकार कृत्वा तन्निकषोद्घर्षितं तत्तत्पकसंजातविशुद्धं आयुर्वेदशास्त्रसुवर्णं अलङ्करिष्यमाणं यथा झटितिभवेत्तथा विधेयम् । भट्टपाद—कुमारीलाचार्योदाहरणं पुरस्कृत्य स्वसिद्धांतानाम् विपक्षैरपि स्वीकारणाय स्थापनायच विपक्षविश्वासोत्पादनार्थं तत्पुरस्कृततत्वावलंबनं न सत्यत्वेन परमताङ्गीकारःवा स्वीयसर्वस्वत्यागः । अकुतोभयं हि सत्तत्वं त्रिकालाबाधितम् । यदि सततरत्नाकरोऽसदायुर्वेदस्तदातुलनात्मकपद्धत्याः स्वीकारं कृत्वा पाश्चात्यविद्यापद्धत्यैव आयुर्वेदरत्नाकररत्नप्रकटीकरणे काहानिरायुर्वेदस्यैति न ज्ञायते केवलमपेक्षते पूज्यपादभट्टकुमारीलाचार्याणामिव परमाभक्तिः स्वीये आयुर्वेदशास्त्रे सदुज्जीवनेच्छ समतिच परायदा यदस्माकं त्रिदोषतत्वं, पञ्चकर्म, निदानपञ्चकं, रोगानुत्पादनीयविधानं शल्यशालाक्यविधिः, शारीरिककर्म, सिरा—व्यधः, प्रतिरोगं अवस्था विशेषतः—चिकित्साक्रमसरणिः, अनेकविधाश्च चिकित्सोपायाः वाजीकरण रसायनप्रयोगाश्चास्मदीय शारीरशास्त्रमपिपाश्चात्यचिचिकित्सा पद्धत्याविचिकित्सितमपि अनतिदीर्घकालादेव आधुनिक सच्छास्त्रतत्वयुतमेवेति प्रसिद्धिं यास्यन् विश्वासआश्चर्यंचोद्भावयिष्यति विपक्षाणां विश्वेषां जनानामपि । अपेक्षतेचास्माभिः साहाय्यं आंग्ल वैद्यविद्याविभूषितानांप्रथितबुद्धिमतामायुर्वेदशास्त्रे स्वजननीजनकयोरिव भक्ति श्रद्धावतामायुर्वेदविदां शुश्रुतचरकाध्ययनपराणां समानद्रव्यस्वार्थत्यागकर्तॄणां केवलमायुर्वेदोद्धारैक परं जन्मकार्य-



अ० भा० वैद्य सम्मेलन के जन्मदाता—
वैद्यशिरोमणि श्रीमान् पं० शंकरदाजी शास्त्री पदे ।

मिति कृतनिश्चयानां वैद्यवराणां । आयुर्वेदोद्धरण— मेव परं दानं परं पुण्यं परोधर्मः परं तप इति गृहीतधियां धनिकानांच । विविधप्रकारान्तरायनाशनविविधोपकरणोपादाने संजातमानसानां राजशासनाधिकारिणांच । एतैः सर्वैः सह सम्मीलितैर्भूत्वा यदि सुविस्तृतेऽस्मिन् भारते देशे सांप्रतम् एकमेवायुर्वेदमहाविद्यालयं आतुरालयसहितं संशोधन साधनयुतं चालितं चेत् महान् हर्षोत्कर्षावसर इति मे मतिः ।

उपर्युक्तानाँ सर्वेषामेवायुर्वेदोक्ततत्वानां विधीनां चाङ्गानां शक्यते प्रत्येकशो महिमा वर्णयितुम् च तन्निगूढतत्वोद्घाटयितुं । तथापि समयस्यात्यल्पत्वाग्मत्पूर्वैस्सर्वैरपि सम्मेलनप्रमुखैरुपवर्णितत्वाद्भवद्भिस्सुज्ञातत्वाच्चतत्कर्तुमुत्सहे ।

तथैवान्यदपि यद्वक्तव्यं तद्वक्तुमपि स्वल्पाक्षरैरेव निरुपयित्वा स्वकार्यम् साधयामि

१ आयुर्वेदविद्यापीठेन या सांप्रतम् विषयपराशिक्षणप्रणालिः परीक्षाश्रयग्रहणार्थं स्वीकृता सा मे न रोचते । ग्रन्थप्रधानशिक्षाप्रणाल्योपस्कारपरोऽहम् । विवादास्पदोयं विषयस्तथापि स्पष्टमतप्रदर्शनकरणं युक्तमिति मत्वोल्लिखामि । विषयपरायां पद्धत्यां एको महान् दोषो वर्तते । येन छात्रो अनेकग्रन्थखण्डनिर्मितक थाधारकत्वाऽनेकग्रन्थोद्धृत तत्तद्विषयखण्डधारको भवति । तस्यकस्यापि साङ्गग्रन्थस्याध्ययने-पठने-पाठनेच सामर्थ्यं नोद्भवति अस्य महादोषस्य निःसारणं केवलया पूर्वपरंपरा आप्तसाम्प्रग्रन्थपठनपाठनपद्धत्यैव स्यादतस्तस्यास्वीकारः कार्यः । यतः वैद्यवर वाग्भट्टै रपि स्वीयेऽष्टाङ्गहृदयग्रन्थे स्पष्ट मुक्तम् । तद्यथा "एतत्पठन् संग्रहबोधशक्तः—स्वभ्यस्तकर्मा भिषग प्रकंप्यः । आकंपयत्यन्य विशाल तन्त्र कृताभि योगान्यादि तन्त्र चित्रम्" । वा. उ. अ. ४० श्लो. ८२

२ आयुर्वेद पठनपाठनपद्धत्यां नवीनाङ्ग्लविद्यासिद्धानां नित्यकर्मोपयुक्तानां शवविच्छेदनपुरःसर शारीरेन्द्रियस्य प्राप्तिशास्त्राणामन्येषामावश्यकमेव समावेशः कार्यः यतः यत्किंचिदावश्यकं चात्यन्तं पयोगिकं तदन्यतोऽपि ग्राह्यम्, श्रीमद्भिस्सुश्रुताचार्यै रुक्तमेव—"एकं शास्त्रमधीयानो न विद्याच्छास्त्रनिश्चयम् । तस्माद्बहुश्रुतःशास्त्रं विजानीया च्चिकित्सकः,, सु. सू. अ. ४श्लो०७

वाग्भट्टेनोप्युक्तम् अन्योपियः कश्चिदिहास्ति मार्गो हितोपदेशेषु भजेत च । आयुर्वेदशास्त्रं शरीरविचय.

पूर्वक चिकित्सायाः प्राशस्त्यं तत्र तत्रोपवर्णितमेव । तथाच पूर्वाचार्यैं नित्यव्यवहृतान्यनेकानि शस्त्रकर्माणीति स्पष्टमेव । पाश्चात्य विद्यासंग्रहण विषयेऽस्मदीय प्रमाणभूततत्वानां यथा नाशो न भवेदित्येषा सावधानता प्रथमंकार्येति युक्तमेव ।

३ अपरञ्च परमावश्यकमेव प्राचीन ग्रन्थोद्धरण प्रकाशनम् । नवीन ग्रन्थरत्न निर्माणम् च । नवीनग्रन्थ निर्मातृभिरायुर्वेदसत्य सिद्धान्तानां तत्स्वीकृतार्थसंज्ञानां साभिप्रायप्रयुक्त शब्दपरिभाषायाश्च वास्तवत्वं पारंपर्यंच यथाभिरक्षितम् स्यात्तथा प्रयत्नः करणीयः । अथचयैर्यैर्महाभागैः कृता वा मुद्रिता वा संगृहीता ग्रन्थास्तांस्तान् वैद्यवरजाधवजी, पण्डितहरिप्रपन्न, भिषग्रत्न गुप्ते, वैद्यवर हिर्लेकर शास्त्री, वैद्यवर के उगांवकरशास्त्री, डा, भट प्रभृतिमहा यानन्यांश्चाविज्ञातान् सर्वानपि सम्मानपुरस्सरंसंस्मावयामि चमहामहोपाध्यायाद्यनेकपदवीभूषितान् कविराजगणनाथसेनान् संप्रार्थयामि स्वग्रन्थराजद्वयसमापनाय तत्प्रकाशनायच।

४ नितरामनुशोचामि शोकविह्वलान्तःकरणेन विद्वद्रत्नमूर्धन्य डॉ. वामन गणेश देसाई महाभागानामकालाकस्मिकमृत्युना। तैर्हि आयुर्वेदस्यात्यन्तिकी महत्तरा सेवाकृता औषधिक्रिया भारतीयरसशास्त्रमितिमहामूल्यग्रन्थद्वय निर्माणेन उपकृत, समग्रं महाभागैरिदम् भारतम्। तेषां ग्रन्थप्रकाशने च मदीय परमसुहृद्भिः पण्डितप्रवरैः वैद्यवरजाधवजीशमभिः यः सुमहान् समारंभ समारब्ध स्तमपि ते शीघ्र निरवशेष कुर्वन्त्विति तानभ्यर्थये। स विशेषं सम्भावयामिच रसयोगसागरसुंल्लघयितृनायुनुत समुत्साहिनःपण्डित प्रवरन् हरिप्रपन्नान्।तेपि समापितरसयोगसागर सत्पुलं घनाःशीघ्र भवेयु रित्याशासे।

एक मुर्वरितं कष्टतरं कार्यम् कृत्वा समापयामि संभाषणम्। खानदेश निवासिनां धुलेनगर प्रतिष्ठितानां पाद्दालकरोपाव्ह यादवशर्मणाम् चिकित्सक चूडामणीनां तथा मदीयप्रथमान्तेवासिनां कृतानेकशास्त्रावगाहनानां अभ्यस्तवेदानां वेदशास्त्रसंपन्नेति सार्थपदवीभृतां इंदौरनगरस्थान स्तरे इत्युपनामक चिंतामणीशर्मं शास्त्रिणां चाम्रात् शुभनाम धेयानां समुत्पन्नः मृत्युना मतौ ह निर्जातोऽस्माकमिति स्वशोक कथयामि। चैत्रवर्ष खरे शास्त्रिभिः रससमुच्चये रत्नप्रभे गूढार्थप्रकाशनी टीका कृतेति श्रूयत साचेत्प्रकाश यास्यति तर्हि समाचीनं स्यात।

अतःपरम् कालस्याल्पत्वाच्चायुर्वेदस्यानन्तपारत्वात् तथा समारब्ध सम्मेलन—समुपस्थितानां—महत्तरकार्यकरणोद्दिष्टत्वान्नपरं किंचिदपि वक्तु मुत्सहते चेतः। मान्यवराः दूरादूरतःस्थानात् प्रवासजनितदुःखानिसोढ्वा समुपस्थितैर्भवद्भिः स्सावधानःयैतावत् समय मभावि मद्भाषणं तदर्थं नितरां भवदभिनंदन कृत्वा सम्मेलनायवनिकार्यं—करणं बद्धरूपैं सम्माहित शातमानसैर्भाव्यमिति विज्ञाप्य विरमामि।

॥ भिषजां साधुवृत्तानाम् भद्रमागमशालिनाम ॥
॥ अभ्यस्तकर्मणांभद्रम् भद्रंभद्राभिलाषिणाम्॥१॥
अष्टांग हृदयउत्तरस्थानाध्यायः ४० श्लो० ६७

वैद्य सम्मेलन का कर्तव्य ।

ले० हरिनारायण शर्मा वैद्य, काव्यतीर्थ, आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदाध्यापक ।



इस में सन्देह नहीं कि जब से वैद्यसम्मेलन का जन्म हुआ तब से आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली को बड़ी ही उत्तेजना मिली कई आयुर्वेदविद्यालय खुले, कई परीक्षायें होने लगीं; औषधालय, फार्मेसी, रसायन शालायें खुली । आयुर्वेदिक औषधों का प्रचार बढ़ा । वैद्यों की संख्या देश में अधिक हुई, स्वास्थ्य विषयक पत्रों का अत्यधिक आविष्कार हुआ । मध्यकाल की अपेक्षा आयुर्वेदिक चिकित्सा पर जनता का विश्वास अत्यधिक दृढ़ हुआ । वैद्यगण काम करते देख पड़े । यहां तक कि सम्मेलन की चिल्लाहट गवर्नमेन्ट तक पहुंची । फलतः वह भी देशी चिकित्सा को सहायता देने के लिए बाध्य हुई । परन्तु इतने पर भी सम्मेलन की गति कुछ मन्द सी ही रही । मद्रास में सम्मेलन का कार्यालय जाने पर तो सम्मेलन के अस्तित्व में ही सन्देह होने लगा । हां जब से कानपुर कार्यालय आया है तब से वहां के कार्यकर्ता सम्मेलन के कामों के प्रति अधिक दिलचस्पी ले रहे हैं । परन्तु कुछ बातों की ओर हमें और अधिक ध्यान देना चाहिए, तथा वैद्य समुदाय को आन्दोलन करना चाहिए ।

(१) सम्मेलन की तरफ से दो एक ऐसे आयुर्वेदिक विद्वान् जो हर एक शहर में और जिला में वैद्यसभा स्थापित करायें और वह सम्मेलन में शामिल की जाय । तथा विशेष सभाओं या धन्वन्तरि उत्सवों में निमन्त्रित होने पर जाकर आयुर्वेद के महत्व पर भाषण करें ।

अभी खास २ वैद्य तथा तदितर जनता सम्मेलन को जानती है, ऐसा उपाय होना चाहिए जिस से समस्त भारत तथा यूरोप सम्मेलन को सुव्यवस्थित तथा प्रमाणिक समझे ।

विद्यापीठ की परीक्षा के विषय में भी यही बात है, हर एक मनुष्य के हृदय में परीक्षा के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए । अमुक व्यक्ति विद्यापीठ की परीक्षा उत्तीर्ण है यह सुनते ही लोग प्रभावित हो जांय । हर प्रान्त के हर शहर या जिले के लोग सम्मेलन और इस की परीक्षा को भली भांति जान सकें ऐसा प्रयत्न करना उचित होगा ।

विद्यापीठ की परीक्षा भारत के समस्त विद्यालय के छात्र नहीं देते । विद्यापीठ के कार्यकर्ता महोदयों को चाहिए कि प्रत्येक जिला की आयुर्वेदिक पाठशाला का पता लगा कर उन के अध्यक्षों से मिल कर या लिखा पढ़ी कर वहां से विद्यापीठ की परीक्षा दिलाने की कोशिश करें । यह काम जितनी जल्दी हो सके करना चाहिए ।

विद्यापीठ की परीक्षाओं में दो खण्ड या वर्ष कर दिये जांय तो छात्रों को अधिक सुभीता हो ।

यह मानी हुई बात है कि जिस विषय का साहित्य समुन्नति अवस्था में नहीं रहता, उसकी उन्नति वितान का कोना इस एक स्तम्भ के बिना तनाव न होने के कारण झूलता ही रहता है इस लिए आयुर्वेदिक साहित्य की उन्नति के लिये समुचित और मर्यादित प्रबन्ध सम्मेलन की तरफ से सङ्गठित रूप से होना चाहिए । आज तक आयुर्वेदिक साहित्य की छिन्न भिन्न जो उन्नति हुई है उस की सूची बना कर अवशिष्ट कार्य में जल्दी ही हाथ लगाना चाहिए ।

देश में किस श्रेणी के वैद्य कितने हैं,

आयुर्वेदिक संस्थायें कितनी और कहां हैं। इन में कैसा कार्य होता है, इन बातोंका पता लगा २ कर सम्मेलन के रजिस्टर में दर्ज रहना चाहिए और यथावकाश ये सब बातें सम्मेलन पत्रिका में तथा समाचार पत्रों में प्रकाशित की जाय।

देहात के वैद्यगण जो आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के सिद्धान्तों की जानकारी न रख कर बिना गुरुपदेश के स्वयं केवल ग्रन्थ से चिकित्सा करते हैं, उनकी बाढ़ रोकनी चाहिए, किन्तु ऐसे प्राचीन वैद्यों को अपमानित न कर उन्हें भी उचित श्रेणी में रखना ही होगा; क्योंकि देहातमें उस समय जब कि डाक्टर या किसी विशिष्ट वैद्य या हकीम का गन्ध तक नहीं रहता, रोगियों कीवे चिकित्साद्वारा बड़ी सहायता करते हैं। रोगी या उनके परिजनों के लिए वे उस समय तो अवश्य ही कर्णधार हो जाते हैं। देहातियों की हालत से मैं विशेष अवगत हूं। देहातियों को रोग होने पर देहाती वैद्य कुछ प्रतिकार तो अवश्य करते हैं, परन्तु विशिष्ट ज्ञानाभाव के कारण वह उनके लिए पर्याप्त नहीं होता।

देहातिओंमें एक खास बात यहहै कि जबतक वे रोग से पीड़ित हो शय्याशायी नहीं होजाते तब तक वे शहरमें किसी विशिष्ट चिकित्सक के शरणापन्न नहीं होते उस समय उनका रोगइतना बढ़जाताहै कि फिर मुश्किल से दूर होता है।

इधर जो पढे लिखे वैद्य होतेहैं व देहात में रहना पसन्द नहीं करते। यहां तक कि जिस वैद्य का घर द्वार देहात मेंही होता है वेभी वहां नहीं रहते। इस प्रकार खासकर आज हमारे किसान-भाईयों को जिसके-घोर परिश्रम से पैदा किये हुए पदार्थोंसे हमारी समस्त आवश्यकतायें पूरी होती हैं, जिस की वृद्धि और नाश से हम लोगों की वृद्धि और नाश सम्भावित है। रोगाक्रान्त होने पर बड़े ही कष्टका सामना करना पड़ताहै,हमें ऐसे उपाय करना चाहिये जिस से देहातियों को बहुत पर पठित और होशियार वैद्य मिल सकें।

सिद्ध औषधों के मूल्य में भी बड़ी गड़बड़ी हो रही है. कोई च्यवनप्राश ३) रु० सेर देता है तो कोई ४) रु०, कोई १) रु० कोई ८) रु०। इसी प्रकार मकरध्वज का ८०) रु०, ६०) रु०, २४) रु०, ६) रु०, २) रु० तो० का भावहै। नारायण लाक्षादि तेल १६) रु०, ३२) रु०, ८) रु०, १०) रु० सेर इन दो चार दवाओं को यहां गिना दिया है, इसी प्रकार अन्य औषधों के बारे में भी समझ लेना चाहिए। वैद्यगण अपनी २ दवा के भाव के बारे में भी प्रमाण भी भिन्न २ देते हैं।

डाक्टरी दवाओं का रङ्ग रूप एक होता है चाहे वह किसी कम्पनी की बनी हो। परन्तु हमारे वैद्यसमाज में यह बात नहीं किसी कीस्वर्णमालिनी लाल रंग की और किसी की हिरौंजी मिट्टी के रंग की। किसी की चांदी वंगभस्म काली और किसी की सफेद, किसी का च्यवनप्राश गाढ़ा और किसी का पतला। इस प्रकार बहुत सी औषधों के रङ्ग रूप में फर्क जान पड़ता है। तत्तद् वैद्य अपनी २ दवाओं के रंग रूप में प्रमाण भी देते हैं। पर कार्य से आयुर्वेदिक दवाओं की एकता साबित नहीं होती। ये बातें आयुर्वेदिक दवाओं के प्रचारमें बाधक स्वरूप हैं। और आयुर्वेद तथा वैद्य पर जनता का विश्वास श्रद्धा भी नहीं रह जाती। सब दवाओं का रंग रूप एक होना चाहिये चाहे वह किसी औषधालय की हो। हमें इस के लिये प्रयत्न शीघ्र करना चाहिए।

यहभी जाननेकी बातहै कि बहुतसे वैद्य इसी जमानेमें आयुर्वेदके नामपर विदेशी दवाका प्रचार छिपेर अधिक करतेहैं। —सर्वेसन्तु निरामया!

स्वागत गान

अये मद्रं शावतंसाः सत्पथप्रदर्शकाः सांसिद्धिकखेदनिवारकाश्च भवन्तश्श्रीमन्तो विपश्चितोभिषजः विदितमेवतत्र भवतां भवतान्यकृतनिखिलामयानाम् यदखिलसुरमानवैर्विरचनीयार्चनार्हस्या धिगतयाथातथ्यार्थस्यगीः पतेरपि बहुमतमायुर्वेदशास्त्रमस्माकन्तु सुतराम्बहुमतम् । लोकानामाराधनायभूतभावनो जगदीश्वरो धन्वन्तरि रूपेणावततार किलायुर्वेदशास्त्रञ्चालञ्चकार तदधिगततत्वाः भवतोधन्याः, आशास्महेचभवत स्वागतंदर्शनञ्चनोभूतयेऽस्त्विति ।

[१]

अयि भूमि भृतोऽतिभव्यभावा,
भिषजो भावित भाविकाश्चभूपः ।
भवतैं भवभूभय प्रभावाद्,
भवतां स्वागतम स्तुभूतयेनः ।

[२]

नित रामुपयोगिवेद्यविद्या,
मुपकर्तु मुपेयुषां सुदूरात,
विदुषाङ्कृपयाऽपुर्वविशेषाद्,
भवतां स्वागतमस्तु भूतयेनः

[३]

निजनव्यविचार सुप्रचारै,
रचिरादुन्नति शेखरं चिकित्साम् ।
अधिरोहयितुं मिथोऽन्वितानाम्,
भवतां स्वागतमस्तु भूतयेनः ।

[४]

उपदेशवचःसुधा सुधारा,
विसरैस्तर्पयितुं सदस्यकर्णान् ।
सह मित्रगणेन सङ्गतानाम्,
भवतां स्वागतमस्तु भूतयेनः ॥

[५]

अनवद्यगुणावलीसमुद्यत्,
परितश्शुभ्रकीर्ति चन्द्रिकाणाम्
जगदुन्नतयेसहोद्यतानाम्
भवतां स्वागतमस्तु भूतयेनः ।

[६]

त्रिविधौषधितत्वसत्परीक्षां,
वितरीतुं प्रणयादुपस्थितानाम् ॥
अखिलामयदुस्तमोरवीणाम्,
भवतां स्वागतमस्तु भूतयेनः ।

[७]

विकराल गदार्त दीनरक्षा,
व्रतविख्यात दिगंतराल नाम्नाम्
इहलोकहितायसं हतानाम्
भवतां स्वागतमस्तु भूतयेनः ॥

[८]

मिथिलाऽभिजन प्रसिद्ध विद्वद्,
बदरीनाथक विप्रधान शिष्यः ।
कुसुमस्तवकामपवृन्दं,
द्विजनागेन्द्र सुधीरिदं विधत्ते ।

हाल होगा। इस लिये आप की कान्फ्रेंसों को इस ओर ध्यान देना चाहिये और अपने विचार से कोई ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये कि ऐसी औषधियां पूर्ण रीति से तैयार की जासकें। हमारे पूजनीय ऋषियों ने मनुष्य मात्र के हित के लिये और दीन पुरुषों के हित के लिये जङ्गल की जड़ी बूटियों से जो बिना मूल्य प्राप्त हो सक्ती थीं दवाओं का काम लिया। परन्तु शोक से कहना पड़ता है कि इन जड़ी बूटियों से औषधि का बहुत कम काम लिया जाता है कारण इस का यह मालूम होता है कि देश के मन्द भाग्य से यातो इन जड़ी बूटियों की पहचान नहीं रही और या उन से बहुत सी जड़ी बूटियां हमारी असावधानी से जाती रहीं। देश का कोई प्रान्त ऐसा न होगा कि जहां कुछ न कुछ ऐसी जड़ी बूटियां न मिल सक्ती हों। यह अनमोल दवाइयां हैं। एक रोगी को कुछ दिन हुये एक जगल की बूटी ने पीठ के एक बड़े असाध्य व्रण को आराम कर दिया यद्यपि यूरोप के डाक्टर लोग वर्षों से खोज करने के बाद भी अभी तक पूरी चिकित्सा नहीं कर सक्के, इस लिये जहां २ आयुर्वेद की विद्या पढ़ाई जाती है। वहां के गुरुओं और आचार्यों को न केवल अपने शिष्यों को दवाइयों को भली भांति तय्यार करना ही सिखाना चाहिये बल्कि इन बूटियों की पहिचान करना ही सिखाना चाहिये। मेरी तुच्छ बुद्धि में इन बूटियों की पहिचान जङ्गल में होनी चाहिये क्योंकि सूखी हुई बूटियां पहिचान करने के लिये ऐसी अच्छी नहीं है। अवश्य ही यह काम कठिन है, परन्तु आप वैद्यक विद्या को पुनर्जीवन देना चाहते हैं तो आप को यह कठिन काम करने के लिये उद्यत होना चाहिये। और यदि आप आयुर्वेद में पूर्ण विद्वान् बनाना चाहते हैं तो आप इस ओर भी ध्यान देवें कि आपके शिष्य आयुर्वेद सीखनेके पहले संस्कृत विद्या के भी विद्वान् हों। आप कहेंगे कि आपके पूर्ण वैद्य बनाने के लिये धन नहीं है परन्तु मेरा विश्वास है कि यदि शुद्ध अन्तः करण से किसी कार्य्य का बीड़ा उठाया जावे तो उस में ईश्वरीय सहायता प्राप्त होती है और अन्त में वह कार्य सदा सफल होता है, आप को इस बात का ज्ञान है कि इस देश में बहुत सी पाठशालायें विद्यमान हैं जहां सरकारी सहायता बिना साधारण विद्या का दान दिया जा रहा है। फिर यह क्यों समझ लिया जाय कि आयुर्वेद सिखाने के लिये आयुर्वेद पाठशालायें क्यों न स्थापित हों जब कि गांव२ में वैद्यों और डाक्टरों की आवश्यकता है और लोग इस आवश्यकता को जान रहे हैं, बस मेरी प्रार्थना भी आप के विचारों के अनुकूल है।

आयुर्वेद के सतयुग काल में हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने अपनी प्रबल शक्ति के द्वारा हमको बड़ा भारी कोष दे दिया था। और हमारा यह धर्म था कि उस समय से आज तक उस कोष की रक्षा करते और बढ़ाते परन्तु मन्द भाग्य से हम उसको बढ़ाने की जगह उसका बहुत सा भाग खो चुके हैं, मैं पूर्ण आशा करता हूं कि आप सम्मेलन द्वारा इस त्रुटि को पूर्ण कर देंगे।

मैं समझता हूं और आप महानुभाव भी समझते हैं कि हमारे ऋषि मुनियों के लेख के पश्चात् जो अब सहस्रों वर्ष व्यतीत हो गये हैं। कई एक नई बीमारियां इस देश में उत्पन्न हो गई हैं। और वैद्य महानुभाव जान सक्ते हैं कि वह कौन २ से रोग हैं और इन रोगों का निदान और चिकित्सा सम्मेलन द्वारा विचारणीय है।

धन्वन्तरि



अ० भा० प्रथम वैद्य सम्मेलन नासिक के सभापति
श्रीमान् कुमार सरयूप्रसाद नारायणसिंहजी बरांव

हमारे सम्मेलनों को इस ओर भी ध्यान देना चाहिये कि इन नई बीमारियों में बहुत सी बीमारियां उन से उत्पन्न होती हैं जो हमारे ऋषि मुनि ग्रन्थकारों के समय में विद्यमान थीं। और जिन की चिकित्सा उन्होंने अपने ग्रन्थों में नहीं लिखी क्योंकि यह विष अंग्रेजी रसायन शास्त्र सम्पूर्ण होगा जब आपने अब बनाये हैं—और हमारा आयुर्वेद शास्त्र भी इन विषोंको चिकित्सा निकाल लेंगे।

हमारे वैद्य अस्त्र चिकित्सा से इस समय कुछ काम नहीं लेते और यह अस्त्र चिकित्सा देशके जर्राहों के हाथों में है जो आमतौर पर पढ़े लिखे नहीं होते। यह बात कहना ठीक नहीं कि हमारे वैद्यों को अस्त्र चिकित्सा की आवश्यकता नहीं। देश में जर्राहों का मौजूद होना यह बता रहा है, कि अस्त्र चिकित्सा भी रोग नाश के लिये आवश्यकीय है इस लिये आप इस बात का भी विचार करें कि आयुर्वेद पाठशालाओं में अस्त्र चिकित्सा सीखने का भी पूरा प्रबन्ध हो।

मन्त्र चिकित्सा में आज कल लोग विश्वास नहीं करते परन्तु यह हो सक्ता है कि उनका विश्वास ठीक न हो। मस्मरिज़्म का साइंस इस बात का अनुभव करता है कि मानसिक बल (Will-Power) एक बड़ी शक्ति रखता है और हम सब जानते हैं कि हमारे योगी जन इस मानसिक बल को बढ़ाने में कितना प्रयत्न करते थे। और असम्भव नहीं है कि इस मानसिक बल के द्वारा भी बीमारियां नष्ट होती हैं यह मन्त्रविद्या आजकल अनपढ़ों के हाथ में है और आप महोदयों से प्रार्थना की जाती है कि यदि उचित समझें तो इस ओर भी ध्यान दें क्यों कि मन्त्र विद्या हमारे ग्रन्थों में भी लिखी है।

अंग्रेजी डाक्टरी में पशुओं के इलाज के लिये भी डाक्टर हैं और बे ज़बान पशुओं का इलाज करना भी हमारा धर्म है। अंग्रेजी डाक्टरों के सिवाय भी कोई २ सुनी सुनाई दवा देकर पशुओं का इलाज करते हैं। वैद्य लोग इस इलाज को नहीं करते परन्तु यह चिकित्सा भी वैद्यों के हाथ में होनी चाहिये और यदि सम्मेलन भी उचित समझे तो पशु चिकित्सा की ओर भी ध्यान देवे।

यह प्रसिद्ध बात है कि हमारे सन्यासी बहुतसी कठिन बीमारियों का इलाज कर सकते हैं। उदाहरणार्थ कुष्ठ उपदंश आदि। यह लोग इन औषधियों को किसी दूसरे को बताना नहीं चाहते आप इस विषय में भी विचार करें और यत्न करें कि यह औषधियां आपको विदित हो जाय। यह बहुत ही उत्तम हो यदि सन्यासी महा पुरुष इन सम्मेलनों में आये और सम्मेलन के कार्यों में सहयोग दें। पहाड़ों में भ्रमण करने के कारण उनको बूटियों की बहुत पहिचान होती है।

आपका सम्मेलन का कार्य साल के साल तीन चार दिन मिलने पर ही समाप्त न होना चाहिये जो स्टेंडिंग कमेटी (कार्यकारिणी समिति) बनाई जाय। उसे हर वक्त काम करते रहना चाहिये। और इस कमेटी का कर्तव्य होना चाहिये कि एक सम्मेलन से लेकर दूसरे सम्मेलन तक जो कार्य होवे अगले सम्मेलन में बतलाये जाय।

और यह भी अच्छा हो कि एक मासिक पत्र कमेटी की ओर से प्रकाशित किया जाय और उसमें वैद्यक विद्या के प्रत्येक विषय पर यथेष्ट विवाद हो। और उसमें बड़े २ वैद्यराज अपने लेख लिखें और साल के अन्दर जो कार्य हुआ हो वह संक्षेप में आगामी सम्मेलन पर प्रगट किया जाय। मेरा यह विचार है कि अन्य विषयों की कान्फ्रेंसें भी इसी तरह से कार्य कर रही हैं। और नहीं मैं विद्वान हूं न कोई डाक्टर या वैद्य हूं और आशा करता हूं कि यदि मेरे इस लेख में कोई त्रुटि हो तो कृपया क्षमा करें।

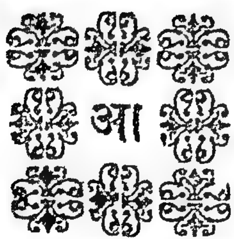
आपके सभापति पं० कृष्णशास्त्री देवधर बड़े विद्वान वैद्य हैं और आशा है कि उनकी सम्मति से जो कार्य होगा वह आयुर्वेद के उद्धार के लिये चिरस्थायी होगा।

अन्त में ईश्वर से मेरी यह प्रार्थना है कि परमपिता इस सम्मेलन के कार्य को भली भांति समाप्त करें।

आपका दास—
(राय साहिब) भोरीमल
दीवान सीकर

आयुर्वेद सम्मेलन

लेखक—क० हेमराज वैद्य विशारद भिषगरत्न एम० ए० एम० लाहौर



जकल संघर्षण का युग है संसार में चारों ओर हर एक विभाग में भिन्न२ प्रकारसे संघर्षण होरहाहै सब मनुष्य समूह अपनी२ स्थिति के अनुसार निज अधिकारों की रक्षा के लिये सामर्थ्य भर यत्न कर रहेहैं इस साधारण नियम के अनुसार वैद्य सम्मेलन का भी भारत में प्रादुर्भव हुआ था और यथा सामर्थ्य चलरहा है तथापि हम इस विषय पर कुछ विचार प्रगट करते हैं।

वैद्य सम्मेलन की आवश्यकता।

वैद्यगणों का भली प्रकार से परस्पर संगठित होना इस शब्द का भावार्थ है। भारत में वैद्य सदासे हैं और परस्पर इनका यथा सम्भव मिलाप भी होता चला आया है परंतु इस युग में भली प्रकार से मिलाप अर्थात् संगठित होने की आवश्यकता यह है कि जिस कार्य को वैद्यगण सदा से करते चले आये हैं उस कार्य या उद्देश्य का समूल नाश होने लगा था अथवा समूल नाश की सम्भावना ने उत्तेजित किया जिससे यह अत्यावश्यक प्रतीत हुआ कि वैद्य संगठित हों।

आयुर्वेद शास्त्र जो अथर्व वेद का उपवेद है जैसे वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से सदैव आर्य संतान का संरक्षण भण्डार है। वैसे ही उसका उपवेद भी रक्षणीय है, रक्षा के साथ ही उसका प्रकाश व प्रचार करना मुख्य उद्देश है। इस

उपवेद आयुर्वेद की रक्षा का विशेष भार उठाना इसके जानने वाले वैद्यों का मुख्य कर्तव्य है। मुख्य कर्तव्यके नाशकी जब कभी सम्भावना हो तब अत्यावश्यक है कि उसके लिये संगठित होकर रक्षा कीजाय।

जबतक भारतवर्ष में कोई किसी प्रकार का भी विदेशी आयुर्वेद नहीं आया था तबतक भारतीय चिकित्सक गण अपने इस अपूर्व रत्नसमुच्चय से न केवल भारतवासी जीवों की प्रत्युत सम्पूर्ण जगत् में निरोग्यता का सञ्चार व प्रचार करते रहे हैं, इतिहास वेत्ता विद्वान यह तो भली प्रकार से जानते हैं कि विदेशों में आयुर्वेद का प्रचार भारतवर्ष से ही हुआ। भिन्न २ प्रदेशों में वहां की स्थिति के अनुसार चिकित्सा का स्वरूप बनता व उन्नत होता रहा कहीं२ सिद्धांत रूप में आयुर्वेद वहांपर भी मूलाधार बनारहा जिससे वे चिकित्साएं फलती फूलती रहीं। और कहीं२ स्पष्ट रूपमें आयुर्वेद के महत्व को स्वीकार करने से मुख फेरकर अपनी अलग ही ढोलक पीटने लगे।

भारत में विदेशी यवन राज्य काल में यूनानी चिकित्सा आई किंतु जब यहां आकर यूनानी चिकित्सकों ने देखा कि यह चिकित्सा पूर्ण रूपमें काम नहीं कर सकती तो आयुर्वेद की शरण लेकर अनेक पुस्तकें फारसी व अरबी भाषाओं में आयुर्वेदके आधारपर लिखी यवन राज्यकी सहायतासे आयुर्वेद परि पालित यूनानी का भारत में खूब प्रचार हुआ। इस अवस्था में भी किन्तु यहां आयुर्वेद का महत्व व सत्कार बना रहा प्रचार में न्यूनता अवश्य हो गई जो यवन राज्य की स्थिति का प्रभाव व संस्कृत विद्याप्रचार का अभाव था।

जबसे भारतमें नूतन यूरोपीयन विज्ञाना भिमानी स्वकीय विज्ञानकी धूम मचाते हुए पधारे और विभागों को छोड़ निज आयुर्वेद विज्ञान विभाग को तो इस प्रकार बल पूर्वक यहां की प्रजा में ठोंसना आरम्भ किया कि मानों मनुष्य जीवन का पूर्णाङ्ग संरक्षक साधन यह ही है इस में सन्देह नहीं, इस विज्ञानके पश्चमी विद्वानो ने भी आरम्भ काल में आयुर्वेद व यूनानीचिकित्साओंके ग्रन्थोंको सम्मुख रख कर निज पुस्तकों का यहां की भाषा व ग्रन्थों में निर्माण करके प्रचार का साधन बनाया राज्य चिकित्सा होने के कारण क्रोडों रुपयों की सहायता पाकर यहां तक भारत में चारों ओर पांव फैलाये कि प्रजा व राज्याधिकारी भी इसी के डंके बजाने लगे।

इस मेंसन्देह नहीं जिस विद्या को राज्य अपनायेगा उसे तो अवश्यही चार चांद लगजायेंगे इस अवस्था में भी वह वृद्ध आयुर्वेद अपने पवित्र विज्ञान अपने पावन प्रभाव से ऐसे आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाता रहा है जो इन नूतन अन्वेशकों के विज्ञानाभिमान का मुख बन्द कर देता रहा है। जिसकी प्रशंसा बड़े २ राज्याधिकारी अथवा इस विज्ञान के निष्पक्ष विद्वान भी समय २ पर करते रहे हैं।

अपने आप को सर्वोपरि मानने वाले एलोपैथिक विद्वानो ने हृदय दाह से आयुर्वेद के विरुद्ध प्रचण्ड अग्नि के फैलाने व घोर विरोध करने का प्रचार आरम्भ कर दिया प्रजा में व राज्याधिकारियों में आयुर्वेद के विरुद्ध इस प्रकार का विरोध

उत्पन्न कर दिया कि प्रजा में से उच्च कोटिके विद्वा-न्, राजाधिकारी गण इसघृणा की दृष्टिसे देखने लगे और समय २ पर समाचार पत्रों व्याख्यानों व राज्य सभाओं में पेसे२ विरोध होने लगे यहां तक कि कई बार आयुर्वेद(देशी चिकित्सा) का समूल सर्व नाश करने के लिये राज्य नियम (कानून) बनने की सम्भावना हुई इस भयानिक अवस्था-को देख आयुर्वेदके परमहितैषी विद्वान् शङ्करदाजी शास्त्री पदे के हृदय में घोर कम्प हुआ स्वकीय सर्व त्याग कर इस परमावश्यकता को वोधनार्थ भारतके नगरोंमें घूमनेलगे और आयुर्वेद कीरक्षार्थ संगठन की परमावश्यकता को दर्शाते २ ही घर से बाहिर हो आयुर्वेद के लिये बलीदान हो गये।

पाठक महोदयो! जिस आवश्यकता को इस महान आत्मा ने आप के सन्मुख रखा वह आवश्यकता इस समयभी वैसी ही उपस्थित है॥

वैद्य सम्मेलन के उद्देश

आयुर्वेद के प्रचार व आक्षेपों से हर प्रकार से रक्षा करना सामान्य रूप में इस सम्मेलन का उद्देश होनाचाहिये इस उद्देश की पूरती के लिये भिन्न२ साधनों का अवलम्बन करना आवश्यक है हम कुछ साधन नीचे लिखते हैं :—

(क)प्रचार के लिये आयुर्वेदीय महाविद्यालयों का खोलना व धनिक पुरुषों तथा राज्य की ओरसे खुलवाने के लिये सामर्थ्य भर यत्न करना उत्तम२ आयुर्वेदिक विज्ञान की पुस्तकों की रचना करना, ऐसी विज्ञानिक पुस्तकें समयानुसार ऐसे विचित्र प्रकारसे तय्यार करवाई जायें जिनके प्रभावसे नूतन आक्षेपों का गम्भीरता से उत्तर देते हुए आयुर्वेद की महत्ताको भली प्रकारसे प्रकाशित कियागयाहो तथा ऐसे२ विषयोंको व्याख्यानों द्वारा व आयुर्वेदीय समाचार पत्रों द्वारा विज्ञानिक प्रकार प्रकाशित करवाया जाय जिन विषयों को विरोधी लोग निजा अन्वेशिता का फल बताते हैं।

(ख) सम्मेलन संस्थापित महाविद्यालयों से ऐसे २ कुशाग्रबुद्धि वैद्य निकाले जायें जो ऐलोपैथिक विज्ञान के विचित्र निर्मांणित सिद्धांतों को आयुर्वेद से निकाल २ कर प्रजाके सन्मुख रक्खें ताकि विदेशीयता में डूबेहुए जन समूह को यह भली प्रकारसे पता लगजाय कि भारतीय महर्षियों के योग बल से प्रकाशित आयुर्वेद बीजरूप में पूर्णाङ्ग है इस लिये यह वैसाही माननीय है जैसे अथर्ववेद माननीय है,

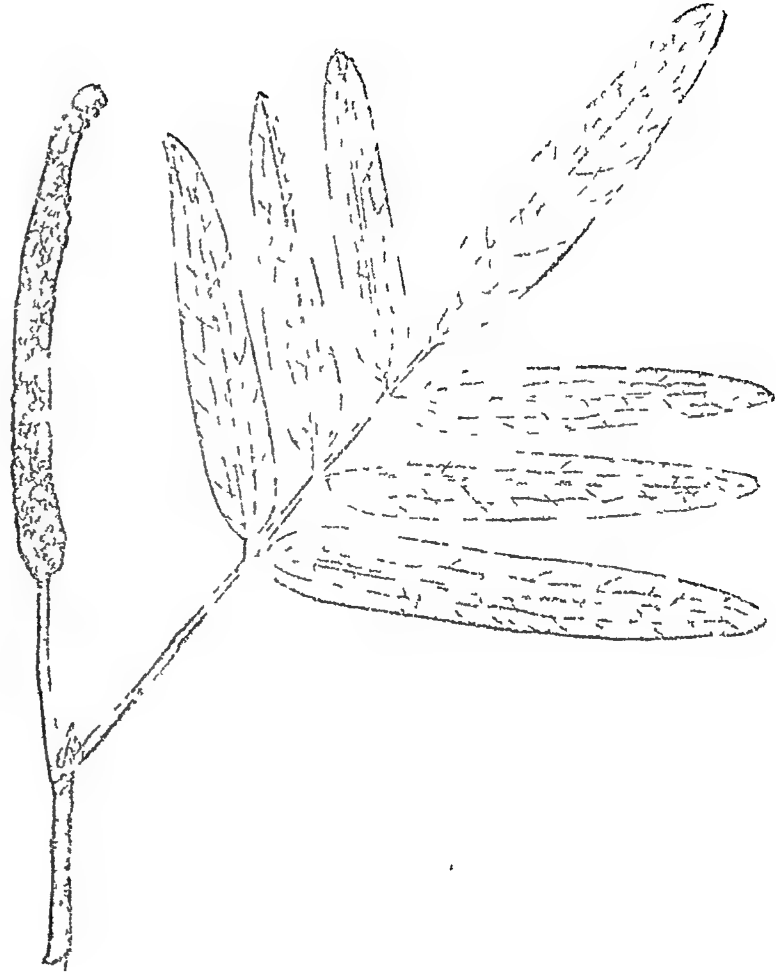
(ग) इस सवर्षण के युग में जब तक खूबजोर से रगड़ पैदा न कीजाय तब तक विद्युत उत्पन्न नही होती विद्युत ही एक तीक्ष्ण व तीव्र गतियुक्त पदार्थ है जो मनुष्य मात्र के हृदय में चमत्कार उत्पन्न करदेता है इसके लिए आयुर्वेद सम्मेलन का कर्तव्य होना चाहिये कि अपने अपूर्व विद्वान् वैद्यों को इस कार्य के लिये नियत करें कि बड़े नगरों में जाकर आयुर्वेद के विरोधियों को सर्व-साधारण में शास्त्रार्थ के लिये बुलावें और निज आयुर्वेद के महत्व पर गम्भीर व सारग भितव्या-ख्यान देकर आयुर्वेद की सर्वोच्चता कोप्रगटकरें

जिन २ विषयों को विरोधी लोग अपनी न्यूनता के कारण न जानते हुये आयुर्वेद की त्रुटी रूप में प्रगट करतेहैं अथवा वैद्य लोगों की जिन न्यूनताओं को बताते हुए अपने गौरव की धूम मचातेहैं उनको भली प्रकार से उत्तर दिये जांय,

विरोधियों के आयुर्वेद में जो २ न्यूनतायें हैं उनको लोकमें व्याख्यानों द्वारा प्रगट करके बताना कि आयुर्वेद इस त्रुटियों से सुरक्षित है इन कार्यो के सम्पादन करनेसे आयुर्वेद सम्मेलन का मान बढ़ेगा प्रजा में श्रद्धा अधिक होगी जिससे आयुर्वेद का खूब प्रचार होगा।



शालपर्णी



पृष्ठपर्णी (लम्बे पत्ता वाली)



लेखक—श्रीमान् आयुर्वेदाचार्य पं०मूलचन्द्रजी शास्त्री आयुर्वेदालङ्कार

पूज्य वैद्यगण जिस विषय को लेकर मैं आज आप लोगों की सेवा में उपस्थित हुआ हूं। उसविषय का वर्णन करना मेरी शक्ति के बाहर है तो भी आज्ञा गुरुणामाव चारणीया, इस उक्ति के अनुसार वनस्पति शास्त्र विषयक दो चार वाक्य निवेदन करना मैं मेरा कर्तव्य समझता हूं। आज कल वनस्पति शास्त्र की जो दशा है वह आपलोगों से छिपी हुई नहीं,

सम्पूर्ण वैद्य शास्त्र का सार चिकित्सा है। और चिकित्सा औषधि द्रव्याश्रित है इसलिये वैद्यक शास्त्र की सफलता बिना औषधि ज्ञान के हो नहीं सकती औषधि द्रव्य सामान्यत ३ प्रकार के होते हैं। उद्भिज्ज, खनिज प्राणिज, इन तीनों में उद्भिज्ज द्रव्य जिन्हें सर्व साधारण लोग काष्ठौपधि कहते हैं। शेष दो प्रकार के द्रव्यों की अपेक्षा प्रभावशालिता में कम न होने पर भी उनसे अल्पतर आयास लभ्य अनपायकारी अर्थात निर्दोष और सत्व प्रधान होने के कारण सर्वसाधारण के लिए अधिक उपयोगी है। इसमें जो २ त्रुटियाँ आगई हैं उनका निराकरण करना आपही लोगों के हाथ है। यदि इस विषय की तर्फ आप लोग भरसक एवं अथाह परिश्रम न करेंगे तब तक अवनति के गर्त में गिरे हुए इस वनस्पति शास्त्र का उद्धार होना कठिन ही नहीं प्रत्युत असंभव है। गरज यह है कि आप लोग सब मिलकर जब तक इसकी उन्नति का उपाय सोचकर तब तक आयुर्वेद शास्त्र अधूरा है यह कहना अत्युक्ति न होगी क्योंकि इसीलिए हमने अपने प्राचीन वैद्यक के अभ्युदयार्थ और सर्वसाधारण की आरोग्य रक्षा के निमित्त इसपर विचार करना भद्रकारी समझा है। निघण्टु में हरेक द्रव्य का गुण वर्णन करने में प्रायः ५ अवस्था बताई जाती जैसे—द्रव्यं रसो गुणोवीर्यं विपाक शक्तिरेवच-

सम्वेदन क्रमादेताः पञ्चावस्थाः, प्रकीर्तिता. इस प्रकार द्रव्य की सभी बातें जान लेने पर उस का प्रयोग होताहै आयुर्वेदकी प्रणालिसे एकही द्रव्यसे औषध बनाई जा सकती है। और अनेक द्रव्योंका संमिश्रण भी होताहै। किसीर प्रयोग में तो ५०-५० तथा १००-१०० द्रव्यों का समावेस हो जाता है। संख्या का कोई नियम नहीं ? ऐसा अवसर बहुत कम होता है कि जहाँ वैद्य लोग कोई नुसखा स्वतन्त्र रूप से लिखें। पुस्तकों में हजारों लाखों नुसखे दिये हुए हैं उन्हीं का प्रयोग प्रायः होता है। हां आवश्यकतानुसार वैद्यलोग उन में कमी बेसी कर देते हैं हैं, जैसा कि लिखा है।

गणोक्तमपि यद्द्रव्या भवेद्व्याधावयौगिकम्
तदुद्धरेद्यौगिकन्तु प्रक्षिपेदन्य यौगिकम्।

उपरोक्त कथनानुसार सिद्ध है कि बिना औषधिज्ञान के प्रयोग से उचित दवा का मिलाना अनुचित का निकालना असम्भव है। और औषध ज्ञान निघन्टु के आश्रित है इस लिये निघन्टु ज्ञान की जितनी आवश्यकताहै वह किसी विद्वान से छिपी नहीं है। जैसे निघन्टु विना वैद्यो विद्वान व्याकरणं विना अनभ्यासेन धानुष्को त्रयो हास्यस्य भाजनम्। अर्थात् वैद्येन पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्यनाम गुणागुणाः तदायत्तं हि भैषज्यं तद्ज्ञाने स्यात् क्रिया क्रमः। भैषज्य ज्ञान के विना सफलता प्राप्त करना दुराशामात्र है। जैसे कि चक्रपाणिने रोगमादौ परीक्षेत, ततोऽनन्तर भेषजं ततः कर्म भिषक् पश्चाद् ज्ञान पूर्वं समाचरेत्। औषधियों का प्रभाव चमत्कारिक है जैसे दिव्यौषधीनां बहव प्रभेदाः, इत्यादि—मुर्दा से जिला कर देने तक का प्रभाव दवाओं में है जैसे सञ्जीवनी बूटी आदि। परन्तु खेद है कि आजकल हमारे आयुर्वेद शास्त्र के जानने में कमती अभ्यास किया जाता है। यदि वैद्यक शास्त्र में पूर्ण अभ्यास करके आलस्य को छोड़कर वैद्यजन वैदिक शास्त्र अनुसार औषधियां तयार करके दीनों को बिना मूल्य और धनिकों से उचित मूल्य लेकर दवा वितरण करें तो वैद्यक शास्त्र की भी उन्नति हो। और वैद्यजनों की भी प्रतिष्ठा दिन २ बढ़े क्यों कि यह समय ऐसा ही करने का है। कारण कि लोगों में आलस्य बहुत है दवाओं को कूटने आदि का झिकट करना नहीं चाहते। इसी से विदेशी दवाइयां लाकर रोगी को देते हैं जिससे शरीर निर्बल होजाता है। क्यों कि जो जहां जिस देश में जन्मता है उसे उसी देश की दवाईयां लाभकारी होती हैं। जैसे—यस्य देशस्य योजन्तु तज्जन्तस्यौषधहित. उचित भी है कि मनुष्य वैद्यक शास्त्रानुसार अपने ही देश में उत्पन्न हुई औषधियों को काम में लावें। और शरीर रक्षा करने में विशेष ध्यान रक्खें क्यों कि शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्। आजकल जो वैद्य चिकित्सा करते हैं उनको ज्ञानोपार्जनकी बड़ी आवश्यकता हैं। संसार में नित्य नये पुष्प खिलते हैं विदेशी नये आविष्कार कर दुनियां को मुग्ध करते हैं। डाक्टर का छोटा बच्चा भी शरीर की एक २ हड्डी और प्रत्येक अवयव समझा देगा। और रोगी के हृदय में अपनी युक्ति की सच्चाई जमा देगा परन्तु कुछ इनेगिने वैद्यों को छोड़कर बहुत वैद्य ऐसे निकलेंगे जिन्हें शरीर किसे कहते हैं। कौन अवयव कहां है, कौन रोग कैसे उत्पन्न होता है। चिकित्सा प्रणाली क्या है, संसार में क्या होरहा है। हमारी चिकित्सा की क्या अवस्था है रासना क्या होती है अग्निमन्थ क्या होता है हस्ति सूंडी क्या होती है, इत्यादि बातों की खबर तक नहीं है। तिसपरभी अपने को वे सर्वज्ञ समझते

हैं। हम फिर भी कहेंगे कि वर्तमान काल में इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि वैद्य लोगों को औषधियों के बारे में ज्ञानशक्ति बढ़े चिकित्सा शास्त्र के प्रधान २ विषयों का ज्ञान हो और वनस्पति शास्त्र की यावच्छक्य तद्गत अवान्तर बातें मालूम हों जिनसे वैद्य विचार पूर्वक चिकित्सा कर सकें। वैद्य कैसा ही विद्वान अनुभवी और क्रिया कुशल क्यों न हो यदि उसके पास अच्छीर सुप्रसिद्ध औषधियों यन्त्र शस्त्र और वनस्पति औषधियां न हों तो वह चिकित्सा नहीं कर सकता। सामग्री सम्पादन बड़ा ही कठिन कार्य है इसके लिये वैद्यों को बड़ा उद्योग करना होगा। बहुत दिन की बिगड़ी हुई दुकान रूठे हुए ग्राहकों को अपना बनाने और समझाने के लिए बड़ा जी तोड़ प्रयत्न करना पड़ेगा। नये २ उपायों की योजना करनी पड़ेगी तभी आर्य चिकित्सा जीवित रह सकेगी परन्तु आर्य चिकित्साकी सामग्रीसम्पादन कैसेहो,इसके लिये आयुर्वेदीयप्रदर्शिनी सामग्री सम्पादन में सबसे आवश्यकीय उपाय है। इससे अनेक स्थानों से सिद्ध अनेक औषधियां यन्त्र शस्त्र पुस्तकशारीरिक उपकरण आदि एक स्थानमेंइकट्ठे होजाते हैं। जिससे वैद्य लोग उनका प्रत्यक्ष ज्ञान लाभ कारक जान सकते हैं क्योंकि कौन वस्तु कहां मिलती है उनका यथार्थ स्वरूप क्या है ज्ञान लाभ होने से वे नकली चीज़ों के ख़रीदने से बचजाते हैं जहां तहां प्रदर्शनी होने लगीहै वैद्य लोग इससे लाभ उठाते हैं इसके पूर्ण प्रचार के लिए वैद्यों की कमेटी चाहे जैसे नियम बनावे। यदि नकली दवा वैद्य न खरीदें तो पंसारी उन्हें क्यों मंगावें यदि उनकी पुरानी नकली दवा सस्ते मूल्य में बिकजाती हैं तब उनका क्या दोष है वैद्य लोगों को अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए ऐसी दवा रोगी को नहीं देनेदें। और पंसारियों को समझा कर अच्छी दवा मंगवाकर बिकवाना चाहिये। बड़े २ शहरों में वैद्यों को मिलकर ऐसी दुकान खुलवा देना चाहिये जिसमें वैद्यों और ग्राहकों को उचित मूल्य में संपूर्ण औषधियाँ मिला करें। सड़ी गली दवा वर्षान्ति में फेंक देना चाहिये। क्रिया कुशल वैद्यों द्वारा सिद्धरसादि औषधियों वनौषधियों, शास्त्रीय औषधियां तैयार रहें।

बहुतसी औषधियाँ ऐसी हैं जिनके तैयार करने के लिये धन समय और बुद्धिमानी खर्चने पड़ती है। पहले से औषधियां तैयार न हों तो रोगी को बड़ी हैरानी और परेशानी उठानी पड़ती है। इसलिये प्रत्येक वैद्य को औषधि संग्रहतैयार रखना उचित है। जिससे आवश्यकता पड़ने पर रोगी को भटकना न पड़े। हमारे प्राचीन ऋषियों ने भी अपने शिष्य वर्ग को रोग होने से पहले ही औषधि संग्रह करने का उपदेश दिया है जैसे—

दृश्यन्ते हि खलु सौम्य नक्षत्र ग्रहगण चन्द्रसूर्या दिशां चा प्रकृति भूतानामृतु वैकारिका भावाः अचिरादितोभूरपि न यथावत् रसवीर्य विपाक प्रभावमौषधीनां प्रतिविधास्यति। तद्वियोगाच्चातङ्क प्राप्तता नियता, तस्मात् प्रागुद्धंसात् प्राक् च भूमेर्विरसी भावात् उद्धर सौम्य भैषज्यानि,यावन्तो पहत् रसवीर्य विपाक प्रभावाणि भवन्ति अर्थात्— हे सौम्य!अग्निवेश! आज नक्षत्र मण्डलऔर ग्रहमण्डल प्रभाहीन मालूम पड़तेहैं और दिशायेंभयावनी मालूमपड़तीहैंइससेमालूम पड़ताहैकि जमीन जल्दी ही दवाओंके रस गुणवीर्य विपाक और प्रभाव को यथावत् प्रति पादन नहीं करेंगी इसलिये औषधि विरस होने से पेश्तरही उखेड़ कर रखलो, ताकि मौकेपरकाम आवे और अवसर पड़नेपर भटकनाम पड़ेजिस तरह औषधियां संग्रह करना आवश्यकहै

ऐसेही प्राचीन ग्रन्थोंकी खोजके साथ नवीन ग्रन्थों की रचना होनी चाहिये क्योंकि आजकी नवीन पुस्तकें काल पाकर प्राचीन होंगी । प्राचीन ग्रन्थ नवीन शैलीमें लिखे जांय, उनकी कमी पूरी कीजाय वर्तमान समयके अनुरूप लिखे जाँय, विदेशी चिकित्सा के उत्तम गुण अपने साहित्यमें मिलाये जाँय ? क्योंकि चरक ने साफ २ लिखा है कि—
आचार्योहि बुद्धिमतां लोकः, शत्रुश्चाबुद्धिमतोमिति,
अर्थात् जो कुछ हमें अच्छा गुण मालूम पड़े वह यहीं से संग्रहीत करें ।

नीचादप्युत्तमां विद्या, के अनुसार चाहे एलोपैथिक से या युनानी प्रणाली से उत्तम वाक्य लेकर हमारे आयुर्वेद शास्त्र में मिलाना अतीवोपयोगी जान पड़ता है विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-पुस्तककी सुलभ रचना हो, शरीर वनस्पति निघण्टु, निदान, शास्त्र चिकित्सा, औषधि, निर्माण और रसायन आदि विषयों पर विस्तार पूर्वक विवेचन करने वाले ग्रन्थ का एक २ विषय, जैसे— राजयक्ष्मा, स्त्री रोग, प्लेग, इत्यादि पर विद्यार्थियों के पढ़ने योग्य निबंध लिखे जायें जिससे आयुर्वेदीय साहित्य में नवीन बल होजावे । पहले समय का पठन पाठन बड़ी उच्च श्रेणी का था, गुरुलोग तत्ववित् विद्वान् और शिष्य लोग उत्तम गुणवाले जिज्ञासु होतेथे। इस पर अधिक न कहकर यही कहना पर्याप्त होगा कि तबतक आयुर्वेदीय चिकित्सा भी उन्नति के सच्चासन पर विराजमान थी । जब भारत के अधःपतन के दिन आये तब यह चिकित्सा प्रणाली भी बिगड़ गई छापेखानों से आयुर्वेद के साहित्य की कुछ दशा तो सुधरी, वैद्यों को सुलभतापूर्वक ग्रन्थ मिलने से उपकार हुआ लेकिन पठन पाठन प्रणाली में धक्का भी पहुंचा ।

भाषा टीका किये हुए या भाषा ग्रन्थमात्र कर जिस के मन में आया बिना पढ़े लिखे वैद्य बन बैठा, कौन विद्वान् है कौन अनुभवी है ? इस की जांच न रही, अब वैद्यों की संख्या बढ़ कर जुलाहे तक भी वैद्यराज कहलाने लगे । शास्त्र के अनुसार वैद्य में जो योग्यता होनी चाहिये वह बहुत कम मिलती है । चाहिए यह कि, दक्षः तीर्थात्तशास्त्रार्थो............ऐसे सद्वैद्य आज कल कितने मिलते हैं यहां तो अमृतसागर की एक पोथी खोली और वैद्यराज बन गए, इन्हीं के विषय में प्रधान कवि ने यह छन्द लिखा है ।

घासधतूरे समोय सरे कखरी पुड़की जगवैद्यकहावें, जान नहीं कछु रोग के लच्छन शीत भये पर माठा पियावे । हिंदु वैद्यमहावामन से गुणताके प्रधान कहां लगि गावे, ऐसे ही वैद्यन की करणी बस वैतरणीके के घर आवे ऐसे ही वैद्य वालों के लिये कहा जाता है ।

वैद्यराज ! नमस्तुभ्यं यमराज सहोदर अब अनेक नागरिक वैद्यों का हाल सुनिये । डा० की नकल करने में आप की रुची है । एक बड़े से डब्बे में या छोटे से सन्दूकचे में दश बीस शीशियां रसों की सुसज्जित है । रोगी कोई भी हो स्त्री हो, या पुरुष बाल हो या वृद्ध या युवा तरुण हो, या जीर्ण रोग वाला हो रोग भी चाहे जो हो कुछ हो वैद्य जी रस की एक दो मात्रा से उस को अच्छा करने का उद्योग करेंगे, क्यों महाशय ! आप रस की वर्षा क्यों करते हैं क्या काष्ठादि द्रव्यों का अध्याय ही आप भूल गये । क्या आंखें मूंद कर सब को रस दे देना ही अच्छा है, क्या रसों से कभी हानि नहीं पहुंचती.क्या आपके सभी रस शास्त्रोक्त विधि से बने तथा सिद्ध हैं क्या आप के रस हज़ारों आंच की जगह दो ही तीन आंच से नहीं तैयार कीये गये हैं। और भी क्षमा कीजियेगा क्या आपने सुवर्णाभावे मृत्तिकां समर्पयामि, नहींकिया अथवा १०० पल ह्रुपाने १ पल समर्पयामि, फिर



अ०भा०पंचदश वैद्य सम्मेलन हरिद्वार के सभापति
श्रीमान् आयुर्वेद मार्तण्ड प०यादवजी त्रिकमजी आचार्य
बम्बई



युक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन हरिद्वारके सभापति
श्रीमान् राजवैद्य किशोरीदत्तजी शास्त्री

यदि यही बात है तो डाक्टरों की नाक काटने अपनी धाक जमाने तथा रोगी को ठगने के लिये आप रस प्रयोग क्यों करते हैं, मैं मेरे अनुभव से यह बात दृढ़ता पूर्वक कह सकता हूं कि—१०० में ९९ रोगी काष्ठादियों द्वारा अच्छे हो सकते हैं। हां रस उस समय के लिए रखना चाहिये—जब काष्ठादि दवा पच नहीं सकती हो। अथवा रोग प्रबल हो गया हो साधारण रोगोंमें रस दे दे कर रोगी का मादाक्यों बिगाड़ते हैं। इसी लिए ताकि फिर साधारण उपाय असफल करे और बार बार आप का शुभ स्मरण किया जाय।

यद्यपि आयुर्वेदीय दवाइयां हमारी प्रकृति के अनुकूल होतीहैं और प्रायः सस्ती भी मिलती हैं। तथा उनका कुछ न कुछ ज्ञान सबको होता है तथापि शुद्ध दवाओं का मिलना कठिन होता है। वनस्पतियों के तोड़ने तथा खोदने का एक समय नियत होता है। परन्तु वे समय पर नहीं ग्रहण की जाती हैं हमें पंसारी पर भरोसा करना पड़ता है। और वह दस २ वर्ष की पुरानी सड़ी कीड़ों की खाई हुई जो चीज चाहताहै देदेताहै। धातुओं तथा उप धातुओं का मिलना और भी कठिन है। वैसे तो आप कोई भी द्रव्य मांगे उसके नाम पर वह कोईन कोई द्रव्य देही देगा। परन्तु स्मरण रखना चाहिये कि आपको प्रायः शुद्ध वस्तु नहीं मिलेगी। अभ्रक लोह स्वर्ण माक्षिक हिंगुल आदि द्रव्य बाजार में किसी काम के नहीं मिलते। इसी लिये उनका शास्त्रोक्त गुण नहीं होता,

हर्ष की बात है कि काशी विश्व विद्यालय के औषधालयके सञ्चालकोंने और श्रीयुत प्रतापसिंह जी ने अच्छा प्रबन्ध कियाहै वह अमेरिका यूरोप आदि अन्य देशों से शुद्ध धातु द्रव्य मगाते और विश्व विद्यालयके व्यवहार वैज्ञानिक कार्या-लय में उनकी परीक्षा करवाते हैं। तब वे उन द्रव्यों का प्रयोग स्वयं करते और अन्य वैद्यों के हाथ बेचते भी हैं। इस प्रकार असली और नकली द्रव्यों का अन्तर देखना अत्यावश्यक है। काष्ठादि औषधों की तैयारी तो अल्पायास से हो सकती हैं पर रसों की तैयारी में अधिक धन श्रम समय तथा ज्ञान व अनुभव का आवश्यकता है हर एक वैद्य के पास इतना साधन होता नहीं। उसे या तो स्वयं ही कच्चा पक्का किसी प्रकारका रस बनाना या रोजगारी रस विक्रेताओं से खरीदना पड़ता है। आप समझ सकते हैं, इन विक्रेताओं का प्रधान लक्ष्य धनोपार्जन है। नकि रसों का शास्त्रोक्त शुद्ध निर्माण। हां इश्तिहार नोटिस बड़े तड़क भड़क होते हैं। डाक्टरों को इस बात का सुभीता होता है कि उन्हें अपनी प्रणाली की शुद्ध दवाइयां मिलती हैं मूल्य चाहे जो कुछ लगे। इस कठिनता को दूर करने का प्रब-न्ध भी काशी विश्वविद्यालय ने किया है बेचने के लिये अनेकों रस शास्त्रीय विधि से बना कर तैयार रखे जाते हैं। अस्तु यह औषधिशास्त्र आयुर्वेद का मुख्य अङ्ग और वैद्य का प्रथम आवश्यकीय कार्य है क्यों कि सम्पूर्ण क्रिया कर्मों की मूल चिकित्सा ही है। और चिकित्सा का मूल औषध शास्त्र अर्थात् निघन्टु है।

इसीसे सर्वत्र लिखा है कि निघन्टु के बिना वैद्य २ नहीं है, जो वैद्य केवल रोग के ज्ञान को जानते हैं। औषधि शास्त्र को नहीं जानते उन की संसार में कदापि प्रतिष्ठा नहीं होती। क्यों कि लिखा है—जो केवल निदान ही को जानते हैं। और भेषज को नहीं, वे लोग जिस तरह योग से भ्रष्ट हुआ योगी तद्वत हैं। इत्यादि—

अथच, निदानं केवलं वेत्ति भेषज्यैनवहि तत्वतः। नस सिद्धि मवाप्नोति योग अज्ञेय निर्णया। विना औषधि जाने यदि-औषधि का प्रयोग किया जावे तो वह विष के समान काम करती है, जैसे लिखा है कि—

यथा विषंयथाशस्त्रं यथाग्नि दश निर्सया।
तथौपधमविज्ञात विज्ञान ममृतंयथा॥

गरज यह है कि वनस्पति शास्त्र का ज्ञान जितना वर्तमान समय में दुर्लभ है—उतना ही आवश्यक है। एतद् विषय ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमारे सामने एक ही अनुकूल मार्ग है। वह यह है कि प्रतिवर्ष हम लोग एकत्रित होकर के जड़ी बूटियों की नई२ खोज और पहिचान करें। यद्यपि कार्य ईश्वर की अनुकम्पासे प्रतिवर्ष होता ही है। पर हमें जितना इस से ज्ञानोपार्जन करना चाहिए उतना नहीं कर पाते वजह यह है कि जो विषय ६ महिनों में भी आना कठिन है उसे आप लोग सिर्फ ३ दिन में ही हमारे दिमागों में घुसा देना चाहते हैं। क्या यह मुमकिन है कि देश देशान्तरों से आई हुई जड़ी बूटियों को ३ दिन में ही देख कर हम लाभ उठालें कभी नहीं मेरा तो खयाल है, यदि हम १—१ औषधी की पहिचान गुण उपयोगादि सीखें एवं अध्ययन करें तो १५ दिन से कम नहीं लग सकते। अब आप हिसाब लगा सकते हैं कि निघन्टु में जो दवा लिखी है और जो नयी खोज की गई है उन सब को ३ दिन में देख कर हम जो लाभ उठाते हैं वह नहीं के बराबर है अतः अन्तमें मेरी यह करबद्ध प्रार्थना है कि सम्मेलन के अवसर पर जो प्रदर्शिनी दिखाई जाय वह उस नगर में कम से कम ६ मास तक स्थिर रखी जाय तो मैं उम्मेद करता हूं कि वनस्पतिशास्त्र का बहुत कुछ उद्धार हो सकता है, आशा है इस मेरी प्रार्थना पर विचार किया जाय तो मेरा अरण्यरोदन न होगा और आयुर्वेदके सुदिन भी आजाय जिस के आश्रित मानव जीवन है।

इति शम्

शालपर्णी और पृष्ठपर्णी ❀

अष्टादश वैद्य सम्मेलन फतेपुर में शालपर्णी पृष्टपर्णी के लिये दो दिन बैठक हुई पर बाद विवाद के अतिरिक्त कुछ खास न हुआ अन्तमें श्रीमान् पं० हरिप्रपन्नजी आचार्य्य बम्बई से कहा गया कि जो आप निश्चित करें वही रहे अतः आपने निम्न लिखित शालपर्णी पृष्टपर्णी को निश्चित किया और वही जबतक कि दूसरी बार कुछ निश्चित न होजाय तबतक मानी जाय।

❀ हम सम्मेलन में उपस्थित न होसके थे अतः अपने मित्रों की बातचीत से उपरोक्त शालपर्णी पृष्टपर्णी को स्वीकृत समझ उनका यहाँ वर्णन करते हैं। सम्पादक।

शालपर्णी (सरिवन)

सं० शालपर्णी शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी अंशुमती, इत्यादि, हि० सरिवन, सालवन शालवन, गौरीसर. दिपरोथ,व० शालपानि, शाल-पान, छालानी म० शालवण, सालवण, डाघ, प० सरिवन, समेर, क० मुई रोवरा. मुइ सेवरा,मुरुवल होने, मुरल होन्ने, मुरुल होन्ने, काड गांजि, तै० सप्पा कुपोव, सप्पा कपोवा, शिया कुपना, मुख्यो कुपोला, ब० शारपाणि ।

L. Desmodium Gangeticum

L. Hedysarum gangeticum

सरिवन क्षुप जातिकी वनौषधि ३-४ फीटऊंची होती है इसका क्षुप और प्रांतोंकी अपेक्षा कोकण, बङ्गाल और मध्य प्रदेश में अधिक पाया जाता है । इसके पत्ते डेढ़ इंच लम्बी डण्डियों पर बेल के पत्ते के समान एक २ सींक पर तीन २ लगते हैं । ये पत्ते कालापन लिये हुये रङ्ग के होते हैं । डडियां पौधे पर विषमवर्ती २—३ इंच के फासले पर लगी रहती हैं और डण्डियों की जड़ के पास पुष्प कोष के समान हरियाली लिये लाल रंग के कोमल धनहरे लगे रहते हैं । इनके भीतर का सार भाग अंकुर के समान दीख पड़ता है । टहनियों के अग्र के भाग थोंथ के समान ८—६ इंच तक फूल और फलियों के गुच्छे से भरे रहते हैं । ग्रीष्म ऋतुके सिवाय प्रायः सब ऋतुओं में इसके फूल फल देखे जाते जाते हैं । फूल छोटेर आसमानी रंग के और फलियां चिपटी, पतली, प्रायः आध इंच से पौन इंच लम्बी होती हैं और ये ६ से ८ सूक्ष्म दानों से जड़ी रहती हैं । यह जङ्गल झाड़ियों में आपसे आप उत्पन्न होता है । गर्मी के दिनों में इसके पत्ते और कोमल टहनियों को बकरी आदि पशु खाया करते हैं इस लिये उन दिनों इसके पौधे पत्र विहीन सूखे समान प्रतीत होते हैं । बरसात के पानी पड़ने पर जड़ों से नवीन टहनियां निकल कर फिर पौधे तैयार होजाते हैं । विशेष कर इसकी जड़ औषधि प्रयोग में आती है और इसके अभाव में पंचांग ही ग्रहण करते हैं । जहां यह प्रचुर परिमाण से नहीं मिलती वहां वसन्त ऋतु में इसको जड़ से काट कर संग्रह करना चाहिये, क्यों कि ऐसा करने से दूसरे साल इन्हीं जड़ों से पौधे तैयार होकर फिर से संग्रह करने के लायक होजाया करते हैं ।

अब मैं उस पिठवन का वर्णन करता हूं जिसको विहार चंपारन, बङ्गाल, बनारस, आदि प्रांतों के वैद्यगण व्यवहार में लाते हैं । यह उक्त प्रांतों के जङ्गल झाड़ियों में तथा बांस के पुराने खेतों में अधिक मिलती है । चिकित्सक चूड़ामणि कविवर,पण्डित चन्द्रशेखर मिश्र राजवैद्य रत्नमाला वगहा, चंपारनने इसी पिठवनको अपनी वाटिका में लगा रक्खा है श्रीमान पण्डित व्रजविहारी चौबे राजवैद्य बांकीपुर पटना इसी की प्रशंसा किया करते हैं । यह किसी प्रकार उक्त पिठवन से हीन गुण वाली नहीं है । इसका क्षुप उक्त पिठवन की समान एक—डेढ़ हाथ तक ऊंचा होता है। जब इसके बीज अंकुरित होते हैं तब इसके पत्ते उक्त पिठवन से दीख पड़ते हैं. किंतु जब इसके पौधे कुछ बढ़जाते है तब पत्तों का आकार भी बदल जाता है । ग्रंथकारों ने इसके विषय में यों लिखा है पत्ते गोल बेलदार सिंह की पुच्छ की समान लम्बे और चित्र विचित्र होते हैं, और फूल गोल, सफेद किंचित् नीलापन लिये जटा सहित लगतेहैं । पौधेपर सींकें उक्त पिठवन के समान विषमवर्ती लगती हैं प्रत्येक सींक पर

सात २ पत्ते (तीन जोड़े और एक छोड़ पर) लगते हैं। किसी २ सींक पर पांच ही पत्ते देखे जाते हैं। ये पत्ते अंगुली के समान लंबे चौड़े और बहुत खरदरे होते हैं। जब ये बाल्यावस्था में रहते हैं तब गहरे हरे रंग और बीच का हिस्सा सफेदी मायल होता है, परंतु ज्यों २ ये पुराने होते जाते हैं त्यों २ इनका रंग फीका पड़ता जाता है और अंत में किंचित् हरियाली लिये खाकी रंग के होजाते हैं किंतु बीज का हिस्सा सफेद ही रहता है। इसकी जटा और फूल उक्त पिठवन के समान ही होते हैं। वर्षान्त के अंत तक इसकी जटा पककर उनसे छोटे २ सफेद रङ्ग के बीज निकल कर आने लगते हैं। जाड़े के दिनों में यह क्षुप तेजहीन और पत्र भंग दीख पड़ता है और प्रायः सूखासा प्रतीत होता है किंतु इसकी जड़ भूमिके भीतर सजीव रहती है। इससे जो बीज गिरते हैं वे वर्षाव का पानी पाकर अंकुरित होते हैं।

जो पौधे उत्पन्न होते हैं उनको तैयार होने में एक वर्ष से दो वर्ष लगता है। बसन्त ऋतु में पुरानी जड़ों से नवीन अंकुर निकल कर फिर पौधे तैयार होजाते हैं। इसकी भी जड़ ही औषधि प्रयोग में लेनी चाहिये परन्तु सैकड़ों वृक्षों को समूल नष्ट करने पर भी अर्थ सिद्ध होते नहीं दीखता, इसलिये इसका पंचांग ही लेते हैं। बसन्त ऋतु तथा ग्रीष्म ऋतु में जब पौधे पूर्ण तैयार होजांय, तब इसकी भूमि में घुसी हुई जड़ को छोड़कर पौधे काट लेने पर फिर दूसरे साल इन्हीं जड़ों से पौधे तैयार होजाते हैं।

उपरोक्त दोनों प्रकार की पिठवन को वैद्यों ने गुणों की परीक्षा करके सफलता प्राप्त की है यह दोनों एक जाति की ही प्रतीत होती हैं। परन्तु कोंकण और गुजरात देश वासी अपने यहाँ के भिन्न २ क्षुप को पिठवन मानते हैं।

कोंकण देश वासी जिस क्षुप को पिठवन कहते हैं उसका पौधा २—२॥ हाथ ऊंचा होता है पत्ते दोहरे बरछीनुमा डंठल के पास सिकुड़े और बीच में किंचित खण्ड देकर ऊपर की ओर चौड़े होते जाते हैं। ये पत्ते ५—६ अंगुल लम्बे होते हैं ऊसर भूमि में इस के क्षुप अधिक पाये जाते हैं, इन पर चिपटी और किंचित् मरोड़दार फलियां लगती हैं।

गुजरात की पिठवन नदी किनारे ३—४ फीट ऊंची बड़े २ वृक्षों की छाया में उत्पन्न होती है इस के पत्ते विषमवर्त्ती ऊपर नीचे २—२ इंच लम्बे और एक डेढ़ इंच चौड़े होते हैं ऊपर की ओर सुन्दर और चिकने होते हैं पर नीचे की ओर सूक्ष्म रोम सहित रहते हैं। इस पर वर्षाऋतु के अन्त में छोटे २ लाल फूलों के गुच्छे लगते हैं और सफेद रंग की जोड़ वाली सी में लगती हैं और इन के भीतर लोबिया के समान बीज होते हैं।



विशूचिका (हैजा)

लेखक—श्रीमान् पं० महावीर प्रसादजी मालवीय 'वीर'



शूचिका संक्रामक रोग है। डाक्टरी मतानुसार भी यह रोग एक प्रकार के कीटाणुओं द्वारा उत्पन्न छूतदार (दूसरों को उड़कर लगने वाला) माना जाता है अनुवीक्षण यंत्र से देखने पर हैजा से पीड़ित मनुष्य के मल में अंग्रेजी के कामा (,) की आकृति के अत्यन्त सूक्ष्म कीटाणु दिखाई पड़ते हैं इसी से डाक्टर लोग उन कृमियों को—'कामावासिलस या कालरामाइक्रोब, कहते हैं। इस कीटाणु की गति बड़ी चंचल होती है और सुविधा जनक स्थान पाने पर बड़ी शीघ्रता से वृद्धि करता है। जब यह कीटाणु मनुष्य के रक्त में प्रविष्ट होता है तब उसको अनुकूल स्थान और सामग्री मिल जाती है। ये कीटाणु एक घण्टे में बढ़कर लगभग पन्द्रह लाख की संख्या में पहुँच जाते हैं। अनियमित भोजन और अधिक जागरण आदि कुपथ्य करके मनुष्य अपने शरीर को उन कामाओं के टिकने का केन्द्र बना लेता है।

यहाँ प्रश्न उठता है कि बाहर उत्पन्न होने वाला यह कीटाणु मनुष्य के शरीर में क्योंकर प्रवेश कर जाता है ? इसकी बहुत कुछ छानबीन, वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा हो चुकी है। भारतगवर्नमेंट

के अधीन प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर मेजरग्रेग ने अनुसंधान करके हालही में अपनी सम्मति इस प्रकार प्रकट की है—'विशूचिका ग्रस्त मनुष्य के मल मूत्र और वमन से निकल कर कामाकीटाणु जल तथा दूध को दूषित कर देता है जिसके व्यवहार से उदर में हैजे का विष पहुंच जाता है जिस स्थान में हैजा फूटने वाला होता है उस स्थान के जल और खाद्य पदार्थों में कामाकीटाणु अधिकता से पाया जाता है। यह कीटाणु अत्यंत सूक्ष्म होता है जो सुई की नोक पर एक सहस्र से अधिक संख्या में आसकता है। इन कीटाणुओं को आंख से देखकर जल, दूध अथवा खाद्य वस्तुओं को बचा रखना सर्वथा असंभव है। इस बात की शङ्का सदा बनी रहती है कि न जाने यह कब और कैसे उनमें प्रवेश कर सकता है संप्रति के अनुसंधानों से यह भी पता चला है कि हैजे के कीटाणु केवल खाद्य पदार्थ, जल और दूध ही द्वारा नहीं फैलते वरन् उनके विस्तार के और भी अनेक मार्ग हैं। हैजा से मुक्त हुए रोगी के मल मूत्र में वर्षों तक कामा का निवास बना रहता है किंतु उनसे उस रोगी को कुछ क्षति नहीं पहुंचती। दूसरे स्वस्थ मनुष्य पर आक्रमण करने में वे कीटाणु बड़े दक्ष होते हैं। ग्रेग महाशय तथा अन्यान्य डाक्टरों की सम्मति है कि जिसको हैजा होताहै उसके 'पित्तकोष, में असंख्यों कामा पहुंच जाते हैं। जब मनुष्य आरोग्यता लाभ करता है तब अकर्मण्य होकर उसके शरीर से कामा स्वयमधीरे धीरे निकल जाते हैं, क्योंकि उन को वंशवृद्धि करने की वहां सामग्री नहीं मिलती इसी से बाहर आकर दूसरे मनुष्यों में प्रविष्ट होते हैं। परस्पर संसर्ग, सहवास और वायु द्वारा इन कामाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुंच हुआ करती। इनको यत्रतत्र फैलाने में मक्खियां उत्कृष्ट साधन है वे रोगी के मलमूत्र और वमन पर बैठती हैं तथा अपने पैरों में अगणित कामाओं को फंसा कर ले उड़ती हैं और अन्य वस्तुओं पर बैठ कर उनको छोड़ देती हैं, जहां बहुतसे मनुष्य इकट्ठे होते हैं वहां गन्दगी होती है और जहां गन्दगी वहां अधिक संख्या में मक्खियाँ रहती ही हैं। यही कारण है कि प्रायः तीर्थस्थान के मेलों में हैजा अधिक फूटताहै। जाड़ेके दिनोंमें मक्खियाँ कम हो जाती हैं इसी से हैजे की संक्रामकता शिथिल पड़ जाती है परन्तु इस कथन का यह तात्पर्य नहीं है कि जाडे में हैजा होता ही नहीं। जिस प्रकार गरमी के दिनोंमें हैजाका प्रकोप बढ़ता है उसी प्रकार यह जाड़े में भी उग्ररूप धारण कर सकता है।

सन् १९१८ ई० में विसूचिका रोग का देश व्यापी भयङ्कर प्रकोप हुआ था और इस की भीषणता भारत के कोने २ में व्याप्त हो गई थी। उस समय जिस निर्दयता के साथ इस ने जन संहार किया था उसको स्मरण करते ही रोमाञ्च होआता है। चारों ओर आर्तनाद ही सुनाई पड़ता था और खेत, बाड़ा, पुराने तलाव, नदी के कछारों में मुर्दों के ढेर दिखाई पड़ते थे कितनीही लाशें घरोंमें सड़ गयीं और वे पुलिस के प्रबन्धसे दफ़नाई गयी या नदियों में बहाई गयी थीं। डाक्टर और वैद्यों के छक्के छूट गये थे सौ में किसी के दश रोगी अच्छे होते थे और किसीके दो चार। उस समय ईश्वरानुग्रह से हैजे की चिकित्सा में हमें आशातीत सफलता प्राप्त हुई थी प्रतिशत ८५ रोगी आराम हुए थे। कुछ तो ऐसे रोगी अच्छे हुए जो मृतक प्रायः हो चुके थे। यहां के डिप्टी कलक्टर (वर्तमानकलक्टर) का अर्दली सहदेवो बारीकी नाड़ी छूट गयी और शरीर बर्फ के समान शीतल संज्ञा-

हीन हुआ मिनट दो मिनट का मेहमान हो रहा था चिरानुभवी स्वर्गीय डाक्टर बाबू रूपकिशोर ने असाध्य कह कर चिकित्सा से हाथ मोड़ लिया। ऐसी अवस्थामें मैं चिकित्सार्थ बुलायागया यद्यपि मुझे भी उस के आरोग्य होनेका कोई भरोसा नहीं था फिर भी ईश्वर का नाम लेकर एक मात्र मल्ल चन्द्रोदय अद्रक के स्वरस से दिया गया जिससे एक घड़ी के पीछे नाड़ी ऊपर आ गयी; और रोगी को होश हो आया। चार पांच दिन की चिकित्सा से वह चङ्गा हो गया और अब तक वर्तमान है॥ इसी प्रकार और भी कई एक घटनाएं घटी थीं उस चिकित्सा प्रणाली को इस लेखमें हम लोकोपचारार्थ यथातथा प्रकाश करतेहैं और हढ़विश्वास है इस के अनुसार उपचार करने में चिकित्सक को पूर्ण सफलता के साथ अनन्त यश लाभ होगा।

विसुचिका के लक्षण।

बार बार पानी के समान पतला दस्त आता है और वमन होता है। मल का रंग चावल के धोवन के समान अथवा मांड़ के सदृश हो जाता है। किसी के आरम्भ ही से और किसी के दो तीन दस्त-वमन आनेके अनन्तर ऐसा होता है। किसी को दस्त—वमन दोनों और किसी को केवल पतला दस्त ही आता है। आंखें भीतर को घुस जाती हैं और आकृति भयङ्कर हो जाती है। शरीर शिथिल हो कर हाथ पांव तथा समस्त शरीर शीतल होकर ऐंठन उत्पन्न होतीहै। सर्वाङ्गमें तीव्र वेदना, पेट में पीड़ा, दाह, प्यास, मूत्रावरोध और सन्निपात हो कर प्राण नाश होताहै। रोगीके शरीरमें सुई कोंचन के समान पीड़ा होती है इसी से वैद्यवरों ने इस को विसुचिका रोग कहा है। जिस के ओंठ, दांत, और नख काले पड़ जाते हैं, स्वर क्षीण हो जाता है, शरीर के बन्धन ढीले पड़ जाते हैं, नाड़ी डूब जाती है, आंखें नीचे की ओर घुसी हुई जान पड़ती हैं, शरीर पीला हो जाता है और त्रिदोष के लक्षण प्रकट होते हैं ऐसा रोगी प्रायः मृत्यु को प्राप्त होता है। हैजा के रोगी को जब कम्प, निद्रा का नाश, बेचैनी, मूत्रावरोध और मूर्च्छा ये पांचो उपद्रव दृढ़ता से ग्रस लेते हैं तब वह असाध्य समझा जाता है।

रोगी की रक्षा।

हैजा के रोगी को दस्त के लिये दूर न जाने देना चाहिये और कच्चा पानी कदापि न पान करावे क्योंकि उससे रोग बढ़ने की सम्भावना रहती है प्यास लगने पर पकाया हुआ शुद्ध जल थोड़ा २ पीने को देना चाहिये, किंतु वमन की अधिकता में यथासाध्य कम जल पिलाना हितकर होता है। एक सेर शुद्ध जल में एक तोला सेंधानोन और दश बारह बूंद नीबू का रस डालकर यही पानी थोड़ा २ पान कराने से प्यास का उपद्रव शमन होता है। बर्फ चूसने से भी प्यास में कमी आती है। हाथ पांव गरम रखने के लिए बार २ ऊनी वस्त्र अथवा फूलालैन गरम कर लपेटते रहें, किंतु जब हाथ पांव में पर्याप्त गरमी आजाय तब वस्त्रादि लपेटने की आवश्यकता नहीं रहती। वर्षा और शीत काल में रोगी का कमरा बन्द रहना चाहिये और गरमी में सब द्वार खुला रक्खे जिसमें स्वच्छ वायु का गमनागमन सरलता से होता रहे। जब तक दस्त वमन का वेग बन्द न हो और मूत्रावरोध दूर न होजाय तब तक अन्नादि खाने को न देना चाहिये। मूत्रावरोध में शुद्ध शीतल जल पान कराना हितकर है। रोगी का वस्त्र और रहने कास्थान खूब साफ रखना चाहिये। छै सात वर्ष की अवस्था वाले बालक

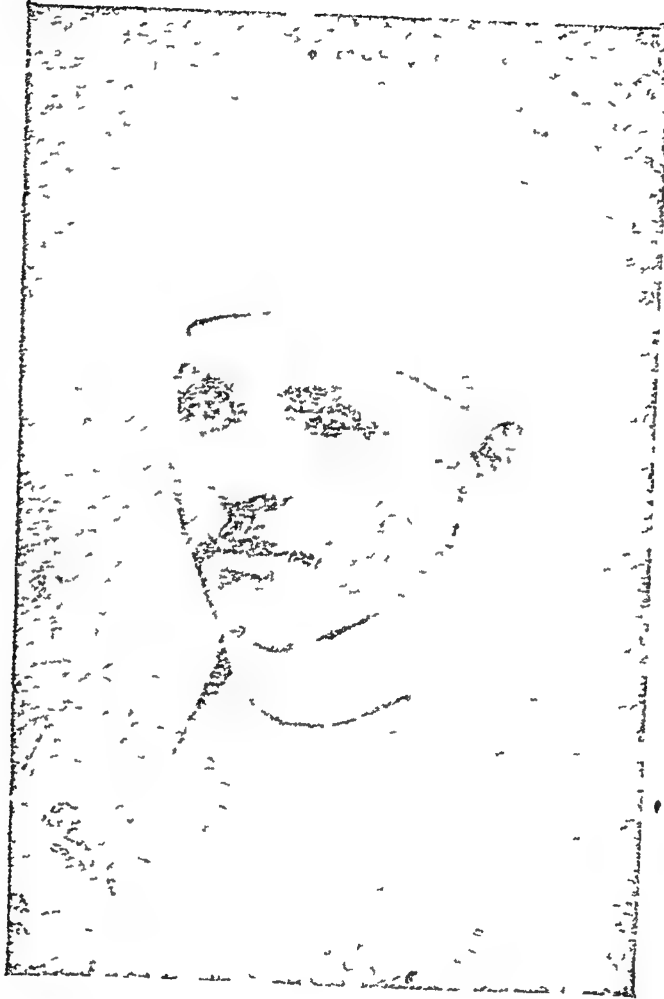
इस रोग में ग्रस्त होकर कम ही अच्छे होते हैं अतएव इनके रोग ग्रस्त होने पर बड़ी सावधानी रखने की आवश्यकता रहती है।

हैजा के रोगी का वस्त्रादि कुआँ, तालाब और नदी आदि में धोने से कीटाणुओं को दूर तक फैलने का अवसर मिलता है अतएव रोगी का मलमूत्र अग्नि से जला डाले अथवा फेनाइल मिलाकर धरती में गाड़ देना चाहिये। एक घर में एकही रोगी रखना चाहिये दो चार का रखना ठीक नहीं और रोगी की सेवा करने के पीछे हाथ पांव साबुन से मल गरम पानी से अच्छी तरह धोकर स्वच्छ कर लेना चाहिए। जिस घर में रोगी रहता हो उसमें खाने पीने के कोई पदार्थ तब तक न रहने देना चाहिए जब तक वह अच्छी तरह आरोग्य न होजावे। रोगी की परिचर्या करने में भय का कोई कारण नहीं रहता परन्तु डरपोक मनुष्य बालक और स्त्रियों को पास में न जाने देना ही अच्छा है। हैजा रोग में प्यास बहुत बढ़जाती है और ज्यों ज्यों रोगी जल पीता है त्यों त्यों वमन का वेग बढ़ता जाता है इसलिये आरम्भ ही से परिष्कृत जल का उपयोग करना श्रेष्ठ है।

छोटी इलायची का दाना एक तोला। लवङ्ग १॥ तोला, पोदीना और सौंफ दो दो तोले इन चारों को कुचल कर तीन सेर पानी में पकावे आधा जल रहजाने पर नीचे उतार छान कर मिट्टी के पात्र में रखदे। शीतल होजाने पर थोड़ा यही जल पान कराने से प्यास और दाह की अधिकता घट जाती है। दस्त गाढ़ा होता है और बेचैनी मिटती है। शुद्ध जल में अर्क गुलाब, अर्कपियाज मिलाकर उस में कपूर डाल कर पिलाने से लाभ होता है। अर्कसौंफ, अर्कपुदीना, अर्क कासनी का ... लाभकारी है।

हैजा की चिकित्सा।

इस रोग में चार प्रकार के प्राण नाशक उपद्रव होते हैं। (१) दस्त और वमन। (२) मूत्रावरोध। (३) शीतांग अर्थात् हाथपांव तथा शरीर का शीतल होना ऐंठना। (४) पथ्यकी गड़बड़ी इन चारोंमें से किसी एक में समय पर असावधानी होने अथवा यथोचित उपचार न करनेसे रोगी की तत्काल मृत्यु हो जाती है। तीन माशे से एक तोले पर्यन्त पियाज का रस निकाल उसमें बराबर भाग मधु मिलाकर पन्द्रह २ मिनट के अनन्तर से ३ चार बारपिलाना चाहिये, इससे दस्त औरवमन का होना अवश्यमेव बन्द होजाता है। यह हैजा रोग की अव्यर्थ महौषधि है। यदि दस्त-वमन का वेग पूर्णतया शान्त न हो तोनिम्न वटी सेवन कराने से अवश्य ही लाभ होगा। उड़ाया हुआ कपूर ६ माशे। शुद्ध अफीम और शुद्ध सिंगरिफ एक २ तोला। तीनों औषधियों को अदरक के रससे घोट कर बाजरे के बराबर गोली बना ले। मात्रा एकसे तीनगोली पर्यन्त अर्क गुलाब, अर्क सौंफया केवल शुद्ध जलके साथ निगलजावे। यदि प्रथम वमन के द्वारा निकल जावे तो दश मिनट के बाद पूर्वोक्त प्रकारदूसरी गोली खिलानेसे अवश्यही दस्तवमन का वेग रुकजाता है इस वटी के प्रयोग से चार पांच महीने के बालकों से लेकर छःसात वर्ष की अवस्था वाले कितने ही शिशु आरोग्य हुए हैं किंतु बच्चों को चौथाई से आधी गोली कीमात्रा दी जाती है। हैजे को जीतने के लिये यह वटी अमोघ रामबाण है इसमें जरा भी अत्युक्ति का समावेश नहीं है। हमारा तो यहां तक विश्वास है कि यदि इन गोलियों से हैजा रोग शमन न होगा तो कदाचित् ही दूसरी औषधियां उसे पराजित करने में समर्थ हो सकेंगी। इसके



अखिल भारत वर्षीय षोडश वैद्य सम्मेलन
जयपुर के सभापति
माननीय
पं० मदनमोहन जी मालवीय।

समस्त अर्क कपूर आदि हैजे की प्रसिद्ध औषधियों को नतमस्तक होना पड़ता है।

विशूचिका नाशक प्रलेप

सज्जी २ तोले। जौ का आटा आधपाव। दोनों को पानी में गूंद रोटी बना एक ओर अग्नि से पकाकर पसलियों पर एक घड़ी तक बांध रखने से दस्त वमन का वेग शांत होता है। इसी प्रकार राई का पलस्तर बिना गरमाये कागज़ पर फैलाकर पेट पर रखने से लाभ होता है। किंतु इससे जलन होती है जब रोगी सहन न सके तब उतार वस्त्र से पोंछ उस स्थान पर थोड़ा घी का लेप कर देने से जलन मिटजाती है।

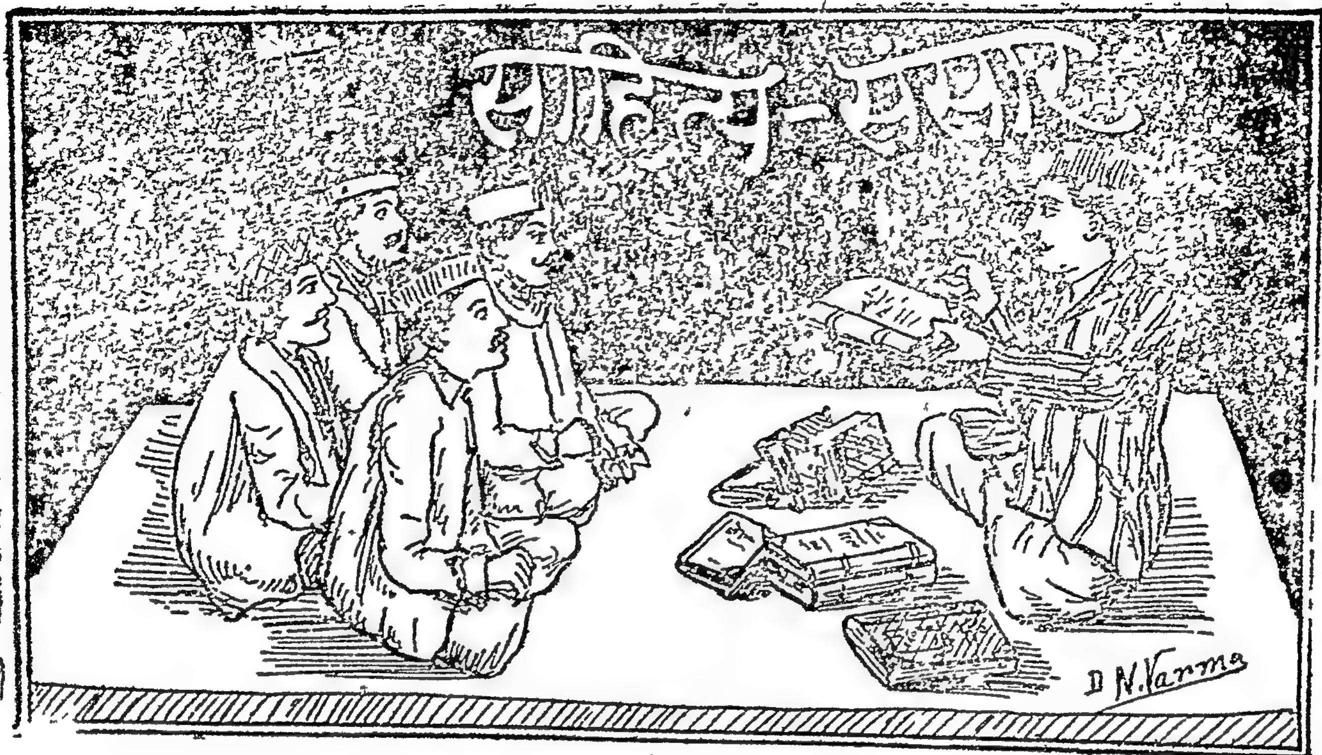
शीताङ्ग निवारण

किसी २ रोगी के दस्त, वमन बन्द होते ही शरीर बर्फ के समान ठण्डा होजाता है हाथ पांव और सर्वाङ्ग में ऐंठन उत्पन्न होती है यदि तावड़ तोड़ इसका योग्य उपचार न होतो तत्काल रोगी का प्राणांत होजाता है। कड़ु तेल गरमाकर हाथ पांव और छाती में गरम ही मर्दन करने से शीत दूर होकर शरीर में उष्णता आती है और बेचैनी नष्ट होती है। यदि तैल में लहसन और हींग पका कर मर्दन किया जावेतो अधिक लाभ कारी होता है अथवा अजवायन, कायफल, भांग, भुना हुआ चना और सोंठ दोर तोले। सबके बराबर कंडेकी राख कपड़छान करके धुरा करनेसेशरीरमें गरमाहट आती है। इसी प्रकार अन्य शीत को दूर करने वाले उपचारों से इस अवस्था में लाभ होता है। जब रोगी स्वस्थ दिखाई दे और नाड़ी की गति तीव्रहोजाय तब यह क्रिया बन्द करदेनी चाहिये

मूत्रावरोध का उपचार

दस्त और वमन बन्द होने पर पेशाब उतरने का उपचार करना परमोपयोगी है। कलमीशोरा और पलाश का फूल चार २ तोले पानी से निकपट महीन पीस चार २ पेड़ू पर लेप करने से पेशाब आजाता है। दो दो दाना शीतल चीनी पानी से पीस थोड़े जल में घोल कर पिलादे। इसी प्रकार चार पांच बार के पिलाने से मूत्रावरोध दूर होता है। यदि इन उपायों से सफलता न हो तो बोतल में गरम पानी भर कर पेट पर फेरना अथवा राई का पलस्तर चढ़ाने से मूत्र खुल जाता है।

इस के अतिरिक्त कितने ही अनुभूत और सिद्ध औषधियों का उल्लेख हमने चिकित्सा चमन नामक पुस्तक में किया है जो छापने के लिये प्रेस में जा रही है वह कालान्तर में पाठकों के समक्ष उपस्थित हो सकेगी, किन्तु हैजा रोग को दूर करने के लिये इस लेख में जितनी औषधियों का वर्णन किया गया है वे ही पर्याप्त हैं। अब पथ्यापथ्य के सम्बन्ध में कुछ लिखकर इस निबन्ध को हम समाप्त करते हैं। विशूचिका रोग से मुक्त हुए रोगी को पथ्य देने में बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है, क्योंकि थोड़ा भी कुपथ्य होने से वह यमालय का पथिक बनजाता है। पहले मूंग की दाल का पानी अथवा पतला साबूदाना स्वल्प मात्रा में देना चाहिये दूसरे दिन पतली मूंग की दाल पान कराकर पाचनशक्ति बढ़ानेके लिये लवण भास्कर चूर्ण वा नमकसुलेमानी आदि सेवनकरावे प्रतिदिन पथ्य में पांच ७ बूंद नीबू का रस और सेंधानोन डालना परमावश्यक है। जब देखे कि पचने में कोई शिकायत नहीं है तब तीसरे दिन दो तीन तोले दाल चावल की फुलाई हुई खिचड़ी फिर दाल भात और फुलकी का छिलका क्रमशः पाचन शक्ति के अनुसार थोड़ा २ बढ़ाकर देने से आरोग्यता प्राप्त होती है।



हिंदी श्रद्धानन्द । श्रद्धेय देशभक्त सावरकर द्वारा सम्पादित वार्षिक मूल्य ३) रुपया । हिंदू सङ्गठन—अछूतोद्धार—शुद्धि के विषयों पर इसमें गम्भीर तथा भाव पूर्ण लेख रहते हैं — वर्तमान युग में इस पत्र की बड़ी आवश्यकता है इसको स्वराज्य संग्राम का पथप्रदर्शक कह सकते हैं। श्रीयुत सावरकर एक आदर्श वीर व्यक्तिहैं उनकी लेखनी से लिखे लेख वीर भावों कोजाग्रति करते हैं हम हृदय से इस पत्र का स्वागत करते हैं। पत्र मंगाने का पता—हिंदीश्रद्धानन्द सटाव भुवन बम्बई। गौड़ हितकारी साइज २०। ३० पृष्ठ संख्या २४ मूल्य वार्षिक २) रुपया

मथुरा से प्रकाशित - गौड़ ब्राह्मण जातिका यह मासिक पत्र है, जातियों का आज कल कोई ठिकाना नहीं है, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य के अन्तरगत बहुतसी जातियों की शाखायें हैं इसी प्रकार गौड़ .ों में भी कई प्रकार के गौड़ हैं परन्तु खान पान शादी इत्यादि में विभिन्नता है गौड़ हितकारी का ध्येय सब प्रकार के गौड़ों का सगठन प्रतीत होता है यह ध्येय आदर्शनीय है पत्र गौड़ ब्राह्मणों में जातीय प्रेम विद्या का प्रचार करता है फर्वरी का अङ्क हमारे सामने है, इस का लेख सब ब्राह्मण नेता विचार करें विचारणीय है। गौड़ ब्राह्मणों को इसे अपनाना चाहिये।

अनुभूत योग माला :—

पं० विशेश्वरदयालु जी वैद्यराज द्वारा सम्पादित बरालोकपुर से प्रकाशित अनुभूत योग माला आयुर्वेद की पाक्षिक पत्रिका है, हमारे सामने इस पत्रिका का प्रमेहांक है। प्रमेह रोग आज कल ७५ फीसदी फैला हुआहै। और मनुष्य को निर्बल करने की दुख दायनी व्याधि है-वीर्य शरीर का राजा है और इसी के अनियमित स्राव को प्रमेह रोग कहते हैं-जब वीर्य ही बल है और वीर्य ही ..व होता है तब इस के वश के

साव होने का फल प्रमाद अकमण्यता, निर्बलता रोग-दुख-पुरुषार्थ नाश है अत: प्रमेह रोग की विवेचना—इस का निदान व चिकित्सा हर वैद्य व गृहस्थी को जाननी आवश्यक है, इस विषय पर यह विशेषाङ्क निकाला गया है निदान की अपेक्षा प्रयोग अधिक हैं जिन में बहुत से प्रयोग अनुभूत हैं हम पत्रिका की हृदय से उन्नति चाहते हैं पत्रिका का साईज २०×४० वार्षिक मूल्य ३) इस अङ्क का १) मैनेजर अनुभूत योगमाला बरालोकपुर इटावा से प्राप्त।

आयुर्वेद संदेश—

सायज १८। २२ पृष्ठ संख्या ४८ वार्षिक मूल्य १।' रुपया

यह पत्र श्रीमद्दयानन्द आयुर्वेदिक कालिज लाहोर की छात्र सभाका त्रैमासिक पत्र है जैसा कि सम्पादकीय विचार से ज्ञात होता है दयानन्द कालेज के जन्मदाता महात्म हंसराज जी के ही पुरुषार्थ का फल है कि वर्तमान आयुर्वेदिक कालेज पंजाब बहुतेरे प्रान्तों के छात्रों को वैद्यक शिक्षा दे रहा है, उसी आयुर्वेदिक कालेज ने इस आयुर्वेद सन्देश को जन्म दिया है, प्रथम अंक ही के लेखों से अनुमान होता है कि भविष्य में यह पत्र वैद्यक सहित्य का उज्वल रूप होगा, हम श्री सुरेन्द्रमोहन जी प्रिंसीपिल को इस सत्साहस के लिये बधाई देते हैं। मैनेजर आयुर्वेद सन्देश लाहौर से प्राप्त।

कवि केलि :—

२०। ३० सोलह पेजी २५ पृष्ठकी कविताओं का संग्रह यह पुस्तिका है बा० बसन्त बिहारीलाल जी माथुर ने इस का सम्पादन किया है इस में ४ समस्याओं की पूर्ति की गई है रूपकरूपेण इसके गुणा गुण को तो काव्य मर्मज्ञही जान सक्ता है किंतु कविताओं के भावों को वराका छवि को देख कर कहना पड़ता है कि संग्रह उत्तम हुआ है यह संग्रह हिंदी कवि सम्मेलन में सुकवियों द्वारा पढ़ा गया है हम पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वह इस संग्रह को पढ़ें जिस से सभ्य कविता का प्रचार बढ़े मू० ।) चार आना हैं। मैनेजर हिन्दी साहित्य हितैषी। भवन ग्वालियर से प्राप्त

मनोरमा —

हिंदी साहित्य के जाज्वल्य मान नक्षत्रों में से एक २०। ३० सायज की अठपेजी मासिक पत्रिका का अप्रैल का अङ्क साहित्य की एक धरोहर है प्रस्तुत संख्या अप्रैल की है पृष्ठ १२१। इसके लेख सामाजिक जीवन की रक्षा प्राचीन इतिहास, वैज्ञानिक मनो—रञ्जकता, काव्य प्रगति, स्त्री धर्म शिक्षा पर अच्छा प्रकाश डालते हैं पौधोंमें सजीवताऐसा लेखहै जो त्रिवादास्पद है एतद् विषय के जिज्ञासुओं के पढ़ने योग्यहै चित्र सादे, रंगीन चित्ताकर्षक, भावपूर्ण हैं सम्पादक हैं श्री भक्तशिरोमणि मू०वार्षिक ६) साहित्य प्रेमियों को ग्राहक बन लाभ उठाना चाहिए।

व्यायाम—

सम्पादक रा०दत्तात्रय माहेश्वर काटदरे सायज २०। २६ अठपेजी पृष्ठ संख्या २४ वार्षिक मू०२॥)

जीवन यात्रा को सुचारू रूपसे चलाने के लिये व्यायाम मुख्य वस्तु है इस पत्रमें व्यायामके तरीके भिन्न २ प्रकार के बतलाये जाते हैं पत्र समय के अनुकूल है गृहस्थियों और विशेष कर विद्यार्थियों के पढ़ने योग्य है।



शृङ्ग्यादि चूर्ण—(१)

काकड़ासींगी, सोंठ, कालीमिर्च, पीपलछोटी भारङ्गी, बड़ी हरड़ की छाल, आमले की छाल बहेड़े की छाल, आमले की छाल, बड़ी भटकटैया, पोहकरमूल, समुद्र नमक सेंधा नमक, कालानमक बिड़ नमक, जवाखार, यह सब चीजें बराबर भाग लेकर पीसले और कपड़छन कर शीशी में रख डार. जगारे समय पड़ने पर काम में लावे मात्रा १ माशे से तीन माशे तक रोगी की आयु बल देखकर—अनुपान गरम जल मधु वगैरा गुण—यह चूर्ण कफ का छाती पर जमना-श्वास हरप्रकार की खांसी कब्ज बच्चों के दांत निकलने के समय की पीड़ापसली चलना हरेपीले दस्त ज्वर वगैरा पर काम आता है और इनको दूर करने में लाभदायक सिद्ध हुआ है। वैसे तो गुण यह सब के ऊपर लिखे दुखों को हरता है चूंकता नहीं परंतु बच्चों के लिये तो रामबाण है हमने बहुत बच्चों को इससे लाभ किया है वैद्य लोग इससे लाभ उठावें और यश के भागी बनें, इस प्रयोग की सब औषधियां नई व साफ लेनी चाहिए केवल पीपल पुरानी लीजावें घुनी न हों

ज्योतीस्वरूप गुप्त वैद्य भूषण

बालामृत—(१)

नाग फनी थूहर के डोंडे जो कि पक कर अच्छी तरह सुर्ख हो गये हों अन्दाजन ऽ१ सेर ला कर थोड़े दिन से घास में डाल कर जलाये बाद जलाने के देखें कि उन फलों के ऊपर के कांटे जल कर साफ हो गये या नहीं अगर नहीं तो फिर जलावें कांटे जलजाने पर पानी से उन्हें साफ धोवें कि कूड़ा करकट साफ हो जावे बादको लोहे के खरल में डाल कुचिल कर मजबूत खादी के कपड़े में रखकर निचोड़े इसी तरह फिर दुबारा करे करीबऽ॥ अर्क बिलकुल लाल रङ्ग का निकलेगा



अष्टादश अ० भा० वैद्य सम्मेलन पटना के सभापति-
श्रीमान् पं० जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल आयुर्वेद पंचानन ।

धन्वन्तरि प्रेस विजयगढ़ ।

इस अर्क में पीपल ५॥ तोला अतीस २॥ तोला काकड़ाश्रंगी २॥ तोला नागर मोथा २॥ तोला को ऽ१ सेर पानी में औटा कर ऽ। अवशिष्ट रहा हुआ पानी मिला दे इस ऽ॥ अर्क में ऽ॥ शक्कर या मिश्री डाल कर चाशनी तय्यार करे चाशनी तय्यार होने पर कपड़े में छान कर बोतलों में भर कर ६ माशा रेक्टीफायड स्प्रिट [Rectified Sprit] मिलाकर रखदे व हिलादे, इस शर्बत में, ५ वर्ष तक के बालकको ३—३ माशा ३—४ मर्तबा दूध या पानी में मिलाकर पिलावे बुखार खांसी अतिसार वगैरा को अच्छा फायदा करता है बालकों को हृष्ट पुष्ट भी करता है—उम्दा चीज है मेरा खुदका ईजाद है

वैद्य भागवत प्रसाद मिश्र

दर्ददांत (कृमिपर)

Parmagnat of Potass परमेंग्नेट ऑफपुटास ४ चावल महीन पीसकर कृमि की खाई हुई खोखली दाढ़में सावधानीसे भरदे थोड़ी देर में दर्द शर्तिया बन्द होगा फिर गर्म पानी से कुल्ली करे, असावधानी सेदवा दूसरी जिह्वावगैरा पर न गिरे यह ख्याल रक्खें,

वैद्य भागवतप्रसादमिश्र

स्टेरंस हैडेक क्योर —

दर्द सर की दवाई। अमेरीकामें एक कम्पनी इस को बनाती है और शहर लंडनमें इन का एजेंन्ट भी है, १२ टिकियों का बक्स नौ आने को और १ टिकिया १ आना को बिकती है यह सरके दर्द के लिये अकसीर दवा है।

सेवन विधि—एक टिकिया को पानी पर छोड़दें जब बालाई की तरह नरम होजावे तोपानी के घूंट से निगल लें टूटे नहीं यदि आराम नहो तो १ घंटे के बाद एक और खालें परन्तु दो से ज्यादा कभीन खावें। नुसखा १०० टिकियों का एण्टी फेवरिन Anti febrine ३६२ ग्रेन केफियन Caffeine ४८ ग्रेन शुगर आफ मिल्क Sugar of milk ४६० ग्रेन ऊपर वाली तीनो दवाइयाँ मिलाकर एक तरह के कागज में बड़ी सफाई से बन्द होती है यह कागज चावलों से बनाया जाता है और पानी में भिगोने से बलाई की तरह नरम होजाता है इस तरह से दवाई की कड़वाहट नहीं मालूम होती है यदि वह मशीन जिसमें ऐसी टिकियां बनाई जाती हैं न मिले तो इन दवाइयों को मिलाकर गोलियां बनाले या सफूफ की तरह फांकलें तो लाभ हर दशामें होगा यह जरूरी नहीं है कि इस तरह से वेफर (Wafer) [चावलों के कागज को कहते हैं] में बन्द हो स्टेरंज हेडेक क्योर हर रोज दुनियाँ के हर हिस्से में खूब बिकता है और दर हकीकत लाभदायक भी है इसी वास्ते लोग इसको पसन्द भी करते हैं नुसके पर ध्यान देने से मालूम होता है कि इसकी कीमत लागत से बहुत ज्यादा है। और ख्याल गुजरता है कि इसके तय्यार करने वालों को कितनी आमदनी होती होगी परन्तु यदि आप ज्यादा दाम खर्च करना पसन्द नहीं करते हो खुद तय्यार कीजिये विलायती टिकिया बनाने की मशीन भी बिकती है वह न मिले तो सफूफ की तरह या गोलीकी शक्लमें काम में लाना बुरा नहीं है फायदा दोनों हालतों में बराबर होगा। १२ टिकियों की लागत ३ तीन पैसे से भी कम है।



संख्या नं० ३१

एक स्त्री की अवस्था २० साल की है सं०१९८४ के भाद्रपद मास में उनका पहला प्रसव लड़का पैदा हुआ पहले से तबियत अच्छी थी बादको दो महिने के उनके पेटमें दर्द होना शुरू हुआ, अग्नि मन्द होगई भूख हटने लगी टट्टी भी साफ न होती रही, पेट में गुल्म रूप सा डला होगया इलाज साधारणतः वायु शांति का अग्निवर्द्धक किया गया कुछ फायदा न हुआ। बाद को अग्नि कर्म दाह वगैरह किया तो भी कुछ लाभ नहीं रोग प्रतिदिन बढ़ताही जाता है, अरुचि, खाने से कभी कभी हिचकी तथा उल्टी होजाती है रजः प्रवृत्ति नवान्न तथा विशिष्ट चीजोंके खानेसेहोतीहै।

दिन को कुछ चैतन्यता रहती है परन्तु रात को सर्वदा ही पेटमें दर्द शूल बढ़जाता है, गुड़गुड़ाहट नाभी से नीचे कभी नाभी में कुछ लम्बे आकार के कभी १ कभी २ कभी ३ डले से मालूम पड़ते हैं जब वे ऊपर को फड़कते हैं, उस समय शूल बहुत तीव्र होता है, कमजोरी बहुत है चलने फिरने की ताकत नहीं चिकित्सा गांव के पुराने वैद्यों ने चूर्ण गुटिका आदि से बहुत किया किंतु निस्फलता रही। बस्ति का प्रयोग इधर नहीं होता है। विरेचन भी मामूली तरह पर दिया गया था। बच्चा कुशल है गौका दूध तथा अन्न खाता है। वैद्यवरों से प्रार्थना है कि इस रोग को सम्यक् विचार कर बहुत ही शीघ्र अच्छे अनुभूत सुलभ प्रयोग तथा चिकित्साक्रम लिखनेका कष्ट करें। देर करनेसे हानि होगीक्योंकि रोग को बहुत दिन होचुके हैं हालत कमजोर है।

निवेदक—जगतराम मैठाणी

संख्या नं० ३२

क—चन्द्र प्रभा गुटिका में पहली दवाई कपूर है या कचूर शार्ङ्गधर के टिकाकारोंने कचूर लिखा है आपसे निवेदन है कि क्या पड़ना चाहिये जिस से कि औषधि पूरी गुणदायक हो।

लाला प्यारेलाल

संख्या नं० ३३

धन्वन्तरि भाग ४ अङ्क १० अक्तूबर सन् १९२४। पृ० सं० ५४३ पंक्ति २३ सर्पोंके स्थान मे, सपेरों ने चाहिये और पंक्ति २४ अतः के बाद आप की नाग दमन बूटी वह कौन सी है जिस की जड़ आप बतलाते हैं उसका नाम रूप जन्म स्थान बतलानेकी कृपा कीजियेगा। नवीन प्रश्न गायकों का गला न पड़े कोकिल कण्ठ हो ऐसी दवा कौन है।

ख—एक रोगी को सर्वदा जुकाम सर्दी बनी रहती है। हमेशः नाक से पानी टपकता रहता है रातमें शुष्क खांसी आतीहै। कुछ२ कफ निकलताहै। श्वासभी कभी२ चलने लगताहै शरीर नाजुक है न शरद हवा सह सकता है न गरमी ग्रीष्म में रोग कम हो जाता है वैद्यवर दवा लिखें

श्रीकृष्णदत्त शर्मा शास्त्री

संख्या नं० ३४

बूटीदर्पण वर्ष ३ संख्या १ में किसी के एक वर्ष तक गर्भ स्थिति नहो इसके प्रश्न केउत्तर में चौबे रामप्रताप मय पुलिस इन्सपेक्टर दीपा बड़ौदा कोटा स्टेट राजपूताना ने उत्तर दिया कि मेरे पास एक महात्मा की बताई बूटी है जो १ गोली १ बार खाने से १ वर्ष तक बच्चा न होगा पोस्टव्यय ही आने पर मुफ्त भेजी जाती है पर उनसे प्रार्थना करने पर भी आपने प्रकाशित करने से सङ्कोच किया अतः अन्य महाशयों से प्रार्थना है कि उपरोक्त प्रकार का प्रयोग जानते हैं तो देशवासियों के लाभके लिये प्रकाशित करादें। नोट—लेकिन योग ऐसा होना चाहिये कि जिससे गर्भ धारण शक्ति नष्ट न करदें। { शिवप्रसाद प्र० आहम नाथद्वार

रोगिणी का वृत्तान्त।

संख्या नं० ३५

मेरे एक मित्र की बहिन जिस की आयु २५ वर्ष की है। इस के २० वर्ष की आयु में एक बालक उत्पन्न हुआ था; जो १॥ वर्ष की आयु में मृत्यु मुख प्राप्त हुआ; फिर २ वर्ष के अनन्तर एक लड़की उत्पन्न हुई जो अब तक जीवित और तन्दुरुस्त है। फिर तीसरा गर्भाधान होने के ४ मास के अनन्तर से गर्भिणी को पहिले शीतज्वर और शिर दर्द आरम्भ हुआ और वह १२ वें दिन उतर गया. परन्तु उन्माद के लक्षण दिखाई देने लगे। और इसके साथ ही साथ मोतिझरा निकल पड़ा जिस की फुन्सियाँ २ मास तक बनी रहीं। मोतिझरा की फुन्सियाँ बिलकुल आराम हो जानेपर भी उन्मादक लक्षणोंमें कुछभी कमी न हुई। उन्माद की अवस्थामें रोगिणीके एक लड़की संतानउत्पन्न हुई जो१ मासके बाद मरगई थी उन्मादके लक्षणों में आरम्भसे लेकर अब तक कुछभी कमीनहीं है। परन्तु प्रलापमें कभी कमी और कभी अधिकता होती रहती रहीहै। उन्मादके लक्षणनीचे लिखेहैं।

रोगिणी दिन रात निरन्तर अनाप सनाप जो मन में आवे निरन्तर बोलती रहती है। भूत पिशाच तथा सर्प आदि की ध्वनि बनी रहती है। नींद आरम्भ से लेकर अब तक एक क्षण के लिये भी नहीं आती। रोगिणी के सामने कोई भी भोज्य सामग्री लाने पर उस को मांस आदि अभक्ष्य बताकर दूर फेंक देती है या खानेमे मना करती है रोगिणी अकसर इच्छा पूर्वक कुछ भोजन करने को नहीं मांगती और न खाती ही है। परन्तु जब बीच २ में भोजन करने लगती है तब पूर्ण आहार से भी अधिक भोजन कर लेती है। सब प्रकार की चिकित्सा होकर अबतांत्रिक चिकित्सा हो रही है पर लाभ नहीं इस समय रोगिणी के लिये मांसी कषाय का एक अञ्जन नस्य और धूनी तथा महाचैतस घृत व बृहत् चन्दनादि तैल (अं० १०) तय्यार किया जारहाहै वैद्य महानुभाव अनेक अनुभूत प्रयोग लिखें जिनके प्रयोग से लाभ होगा उनको स्वर्ण पदक प्रदान किया जावेगा।

वैद्य प० सत्येश्वरानन्द शर्मा



सम्मति नं० २२—

रोगिणी स्त्री को निम्न प्रयोग सेवन करावें शीघ्र रोग शांत होगा, सोंठ, कूठ, पीपल, बेलके जड़की छाल, मुनक्का इन के कल्क को खूब बारीक पीस कर गोघृत में सिद्ध कर लिया जावे पश्चात् इस घृत की नस्य दी जावें छींकें आना अथवा स्वच्छ रोग नष्ट होगा।

रामगोपाल शर्मा

सम्मति नं० २४—

क—हस्त मैथुन से जो व्याधि आप को उत्पन्न हुई है उन के लिये मकरध्वज वटी अनंगाङ्कुश आसव कामदीपक तिला का प्रयोग करें इन से आप को अवश्य लाभ होगा इन औषधों को आप धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ से मंगा सकते हैं यह औषधियां परीक्षित हैं।

ख—तुलसी की जड़ व जिमीकन्द को पान में रख कर खाने से स्तम्भन होता है।

रामगोपाल शर्मा

सम्मति नं० २५

त्रिदोष जन्य रक्तार्श की चिकित्सा कठिन है इसके लिये साधारणतः ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि कोष्ठ बद्धता न हो और गर्म चीजें तो खाई ही न जावें हर तीसरे मासमें हल्का जुलाब दिया जाय शीशम का बुरादा सनाय महंदी के पत्ता गुलाब के फूल बूरा व शहद, शहद को छोड़ कर अन्य सब चीजों को आठ तोले ले बूरा दो २ तोले ले सब कूट छान कर बूरा मिला कर जितने शहद में लड्डु बन सकें दो २ तोले के लड्डू बना लें, एक लड्डू रात को गरम जल में भिगोकर प्रातः काल छान कर पिलावें और इसी प्रकार प्रातः काल का



अ०भा०अष्टादश वैद्य सम्मेलन फतहपुर के स्वागत कारिणी के प्रधान मंत्री

श्रीमान साहित्यरत्न डा०रामजीवनजी त्रिपाठी एम०आर०ए०एस०



अ०भा० वैद्य सम्मेलन की स्थाई समिति आयुर्वेद महामण्डल के प्रधान मन्त्री

श्रीमान चिकित्सक चूड़ामणि पं०रामेश्वरजी मिश्र वैद्यशास्त्री

भिगोया शाम को । इस शीतल जुलाब से कोष्ठबद्धता हटती रहेगी रोगिणी को शङ्कर-लोह व अभयारिष्ट का सेवन करावें लाभ होगा ।

देवीशरण गर्ग

सम्मति २६

(क)—कटोरी गरम होने को मन्त्रकी तासीर से आपने लिखा है यह ठीक नहीं है जिस प्रकार से पं० शिवदत्तजी मिश्र कटोरी गरम कर दिखाते हैं आप भी कर सकते हैं विधि—यह है कि एक एलमोनियम की साफ कटोरी लीजिये उसमें थोड़ासा दाल चिकना लेकर पीसकर कटोरी में भीतर लगा दीजिए कटोरी के मुख को हथेली पे दबाने पर कटोरी गरम हो उठेगी इतनी गर्म कि आप सह नहीं सकेंगे। दाल चिकना बेसन्स की वस्तु है एक प्रकार की जहरीली चीज, जहर के लइसंसदार से मिलसकती है ।

रामगोपाल शर्मा

(ख)—सुजाक रोग पर अनुभूत योग-चन्दन का शुद्ध तैल-शुद्ध विरोजाका तैल सम भाग मिलाकर प्रातः व्याप मिश्री में २० बूंद सेवन करने से पुराना से पुराना प्रमेह सुजाक ४० दिन में नष्ट होजाता है। दवा खा के ऊपर से अगर होसके तो पाव-भर दूध में आध पाव जल मिलाकर पी सके हैं ।

(२) प्रथम इन्द्री जुलाब देना चाहिए शीतलचीनी, इलायची, कलमी शोरा, श्वेतजीरा और मिश्री को आधसेर जल मिश्रित दूध में २ तोले से १० तोले तक प्रातः काल में फिर बाद २-४ रोज के चन्द्र प्रभावटी खा के ऊपर द्राक्षासव या चन्दना सव पीना सायङ्काल में चन्द्रप्रभावटी गुरुच के सत्व १ तोले में ६ माशा शुद्ध शहद मिला कर सेवन करना और बकरी का दूध रसौत मिला कर लिंग में दिन भर में २—३ बार पिचकारी लगाना उपरोक्त प्रयोग के सेवन से अवश्य लाभ होगा। पथ्य हलका भोजन दूध आदि

वैद्य प्यारेलाल गुप्त रसशास्त्री

सम्मति २७

आप के रोग के लक्षणों से खालित्य रोग का होना पाया जाता है आप प्रथम जुलाब की व्यवस्था करें पश्चात् शिर के बाल निवा-कर जोंक लगवादें—कुपित रक्त के निकलजाने पर भृङ्गराज तैल की मालिश करावें और इसी तैल को सुघावें शीर्षासन के करने से भी लाभ होगा।

देवीशरण गर्ग

सम्मति २८

मासिक धर्म बराबर नहीं होनेसे यह सब उपद्रव है अब जो शिर का दर्द है वह रक्त की अधिकता सेतथा रक्त का सञ्चालन उचित रूप से नहीं होरहा है। इसके लिए अनुभ-वीत चिकित्सा लिखता हूं इस चिकित्सा से अभी एक रोगिणी जो इसी तरह थी आरोग्य होगई है। प्रथम जुलाब देकर कोठा शुद्ध करलें बाद प्रातः काल ६ माशे अशोक घृत में मिश्री मिलाकर सायंकाल में अश्वगंधा-रिष्ट जल के साथ पेट तथा सब शरीर में चन्दनादि तैल की मालिश शिर में शुद्ध

आंवला का तैल भी दोनों समय भोजनो-परांत दाड़िमादि चूर्ण या और कोई दवा डालने की लाशक्ते हैं।

परीक्षित प्रयोग—

बहुत दिन हुए एक रोग के विषय में वैद्यों से कई बार परामर्श किया था परंतु खेद है कि किसी वैद्य महाशय नेउत्तर न दिया। अस्तु मैं तो इसके लिए अनुसंधान करता ही रहा अतः मुझे जो योग प्राप्त हुआ है वह वैद्यों के सम्मुख निष्कपट रूपसे प्रकाशित करता हूं।

रोग लक्षण—

छोटे २ बच्चों के शरीर में गांठ जैसे सूजन फोड़ा (विशेष कर सन्धि स्थान में) होजाता है प्रथम एक फोड़ा होता है बाद में कई एक फोड़े उत्पन्न होजाते हैं और वह पकजाता है किसी २ का नहीं पकता इससे बालकों की मृत्यु होजाती है जिस बच्चे को या रोग ने ग्रसित किया फिर उसका जीवन अन्तिम होजाता है चिकित्सा करने से सैंकड़े पीछे ३-४ बच्चे बच जाते हैं। यह रोग विशेष कर २—३ वर्ष तक के बच्चों को ही होता है और यही भय प्रद रहता है इसकी चिकित्सा गर्भावस्था में ही करना चाहिए यहां तक देखा गया है कि एक सन्तान को यह रोग होजाने से पुनः जितनी संतान होंगी सब को ही होजाता है। छत्तीसगढ़ प्रांत में इस रोग को "गठिवन" कहते हैं।

कारण—

इस रोग का मुख्य कारण उपदंश जन्य विष है जिसके माता पिता को उपदंश या सुजाक रोग हुआ है उसके ही सन्तान को यह रोग होता है कहीं २ ऐसा भी होता है कि जिसके माता पिता को उपरोक्त कुछ भी रोग नहीं हुआ है और उसके संतान को यह रोग होगया है इसका कारण छूत है जिस बच्चे को गठिवन का रोग होगया उस समय गर्भवती स्त्री को उसके छूत से बचना चाहिये अन्यथा इस रोग का होजाना सम्भव रहता है।

चिकित्सा—

गर्भिणी स्त्री को प्रथम मास में लज्जा-वंती (लचकुर) की जड़ को गौ दुग्ध या जल से ३ दिन सेवन करावे इसी तरह तीसरे मास पांचवे मास सातवे मास और नवे मास तक सेवन करावे इससे गठिवन रोग का बिलकुल भय नहीं रहता।

गठिवन रोग होजाने पर बच्चे को केवटी जड़ी पीस कर पानी में पिलाना तथा थोड़ा सा माता को भी पिलाना और उसी जड़ को पानीमें घिसकर सूजन पर लेप करना तथा शुद्ध अरण्डी तैल का जुलाब देते रहना जिससे कि दस्त बराबर होवे कब्जियत नहीं रहना चाहिए।

इस रोग पर औरभी कई एक चमत्कारिक औषधियां प्राप्त हुई हैं उसे भी क्रमशः प्रकाशित करूंगा।

वैद्य प्यारेलाल गुप्त



प्रवेषांक पर सम्मति

धन्वन्तरि का प्रवेषांक उपहार सहित प्राप्त कर अत्यन्त हर्ष हुआ। आपके उत्साह को देखते हुए विश्वास होरहा है कि वैद्यक संसार में धन्वन्तरि एक मात्र पत्र होगा। परमात्मा इसकी दिनों दिन वृद्धि करे। ग्राहक संख्या बढ़ाने का यथासाध्य मैं प्रयत्न करूंगा।

श्री सीतावर शरण वैद्य डि० पो० आ० औषधालय
शरफुद्दीनपुर (मुजफ्फरपुर)

२ जनवरी—फरवरी सन् १९२८ के धन्वन्तरि का प्रवेषाङ्क अवलोकन कर बडी प्रसन्नता हुई कवर पृष्ठ पर श्रीधन्वन्तरि भगवान के नयनाभिराम दर्शन, हिस्टेरिया रोगिणी का तिरङ्गा चित्र और हिस्टेरिया प्रहसन ये तीनों चित्र पत्र की शोभा बढ़ाने के साथ २ सार्थकता प्रगट कर रहे हैं। भिन्न २ प्रांतीय चिरअनुभवी और विद्वान् वैद्यराजो के योषापस्मार के सम्बन्ध में गवेषणा—पूर्वक लिखे हुए निबंध समुदाय ही इस अङ्क के प्रमुख विषय हैं। इसमे संदेह नही कि सागर का पानी गागर में भरा गया है। हिस्टेरिया जैसे कठिन और भयानक रोग को आरोग्य करने में एक साधारण चिकित्सक भी यदि इस अङ्क की निबध-मालाओ को अच्छी तरह मनन करके कार्य करेगा तो वह पूरी सफलता प्राप्त कर सकेगा। धन्वन्तरि के द्वारा वैद्य समाज का जो अभूतपूर्व उपकार होरहा है वह वैद्यों के लिए सादर अभिनन्दनीय है आशा है कि हमारे वैद्य वन्धु इस प्रकार के महोपकारी पत्र को उन्नति शील बनाने में कोई बात उठा न

रक्खेंगे। ग्राहक वृद्धि होना ही पत्रों का जीवनाधार है और इससे प्रकाशक उत्साहित होकर पत्र को अधिक उपयोगी बनाने में प्रयत्न शील होंगे। एक एक ग्राहक बढ़ा देना कुछ बड़ी बात नहीं।

महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य (वीर)
भू० पू० सम्पादक मनोरमा

बोर्ड आफ़ इन्डियन मेडीसिन

भारतीय—औषधि—समिति की एक बैठक गत २५ फरवरी को लखनऊ में हुई थी उसमें यह तै हुआ कि नौ मेम्बरों की एक दान-उपसमिति बनादी जाय और वह समिति यूनानी और आयुर्वेदिक औषधालयों को सहायता देने के काम नहा तमा करें यूनानी और आयुर्वेदिक औषधालयों को किस परिमाण मे सहायता दीजाय, इसका कोई निर्णय नहीं किया गया सहायता प्राप्तिके लिए जितनी अर्ज़ियां आयें, उन पर विचार किया जायगा और उनकी पात्रता के ख्याल से ही सहायता दीजायगी इस वर्ष आयुर्वेदिक वैद्यों की ४१४ और यूनानी हकीमों की २७४ प्रार्थनाएँ सहायता के लिए आई थीं। इन में से २१४ वैद्यों और १३० हकीमों को सहायता दीगई। ५०,०००) रुपये में से ३०९२०) वैद्यों का और १९०८०) हकीमों को बांटे गए। बोर्ड की अगली बैठक जून मास मे नैनीताल मे होगी।

गोकरणनाथ मिश्र सभापति बोर्ड आफ इन्डियन मेडिसिन

श्री इन्द्रप्रस्थीय वैद्यसभा दिल्ली का निर्वाचन

मिती वैशाख शुक्ला १० दशमी रविवार सं० १९८५ तारीख २९ अप्रैल सन् १९२८ को रात्री के ७॥ बजे से श्री इन्द्रप्रस्थीय वैद्य सभा का वार्षिक चुनाव पं० शिवनारायण जी वैद्यराज के सभापतित्व में सानन्द समाप्त हुआ।

निम्न लिखित पदाधिकारी सम्मति से चुनेगये

प्रधान
पं० बालकरामजी वैद्य

उपप्रधान ३
१ पं० चिरञ्जीलालजी वैद्य
२ प्रिंसपिल तिबिया कौलिज हरिरंजन जी मजूमदार एम० ए०
३ प्रो० निवारणचन्द्रजी भट्टाचार्य

प्रधानमंत्री
पं० शिवनारायणजी वैद्य (नन्नेजो)

मन्त्री
पं० मन्नूलाल शर्मा वैद्य

ज्वाइन्टसैक्रेटरी
पं० परमानन्द वैद्य

कोषाध्यक्ष
पं० गोपीरमणजी देवाचार्य

आयव्ययनिरीक्षक
पं० काशीनाथजी वैद्यमन्त्री

निवेदक मंत्री मन्नूलाल वैद्य गली अनार

देहली—के आल इंडिया वैद्यक एण्ड यूनानी तिव्वी कान्फ्रेंस का अधिवेशन प्लेग के कारण स्थगत होगया अब शरदऋतु में होगा।

परीक्षाएं—भारती विद्वत्परिषद अजमेर की परीक्षाएं तारीख ११। १२। १३। जून १९२८ को होगी। आवेदनपत्र ३१ मई तक मंगवा सकते हैं।

—मंत्री

मान परिभाषा पर भी ध्यान रहे

प्रायः आयुर्वेदग्रंथों की जितनी हिंदी टीकायें तथा हिंदी की पुस्तकें आज कल देखने में आती हैं। उनमें मान परिभाषा की ओर ध्यान नहीं है। जैसे—

वस्थादिमानमारभ्य द्विगुणं तद्रवार्द्रयोः
मानं तथा तुलायास्तु द्विगुणं नक्वाचितस्मृतम्

हमारी समझ में नहीं आता कि इस परिभाषा को क्यों नहीं ध्यान दिया जाता। देखिये श्रद्धास्पद वङ्ग देशीय वैद्यराजों ने इसका अनुकरण पदपद में किया है। और मैंने भी इसके अनुकूल तैल अरिष्ट तथा आसव को बनाकर देखा है। कोई त्रुटी नहीं पाई जाती। आशा है वैद्य महोदय तथा सम्पादक जी ध्यान दे उत्तर देने की कृपा करेंगे।

इलाहाबाद

बाबू कन्हैयालालजी हकीम खान्दानी १०) त्रपोलिया इलाहाबाद में अच्छे प्रकार से चिकित्सा करते हैं उनकी औषधि इत्र त्रयाक उलदर्द पीड़ा पर अच्छा गुण करती है इलाहाबाद के तथा निकटस्थ ग्रामीणों को लाभ उठाना चाहिये।

युक्तप्रान्तीय षष्ठ वैद्यसम्मेलन हरिद्वार

प्रातःकाल देहरामेल से ८ बजे सभापति राजवैद्य पं० किशोरीदत्तजी शास्त्री कानपुरी वैद्य मण्डली सहित पधारे और आपका स्वागत स्वागतकारिणी की तरफ से स्टेशन पर किया गया और साथही स्टेशन से ऋषिकुल समारोह के साथ लाये गये। १० बजे सम्मेलन की बैठक हुई और प्रथम स्वागत कविताएं पढ़ीगई और स्वागताध्यक्ष वैद्यराज पं० हरिप्रसाद शर्मा सहारनपुर निवासी का भाषण छपा हुआ बांटा गया और पढ़ा गया पर अध्यक्ष महोदय ने अपना छपा हुआ भाषण तो न्यून किंतु मौखिकही भाषण अधिक किया पर उससे वैद्य मण्डल सन्तुष्ट न हो सका उसके बाद सभापति महोदय के लिये प्रस्ताव हुआ और समर्थन अनुमोदन के बाद सभापति महोदय ने आसन ग्रहण कर अपना छपा हुआ भाषण पढ़कर सुनाया (बांटा भी गया) उसके बाद मंत्री पं० रघुवरदयालजी भट्ट काव्यतीर्थ वैद्यशास्त्री ने लिखी हुई रिपोर्ट * पढ़कर सुनाई पर हिसाब नहीं सुनाया गया कारण १)

* मैनेजर साहेब का आपने जो उल्लेख किया है उसके उत्तर के लिये पं० शालिगराम शास्त्री लखनऊ कृत आयुर्वेद महत्व भी है उसका उल्लेख भी होना चाहिये। यह बात पं० हरिशङ्करजी शर्मा वैद्यराज निवासी ने मंत्री महोदय को लिखकर दी पर उसकी अपेक्षा कर दीगई।

कानपुर निवासी पं० कन्हैयालाल जी जैन वैद्य ने समर्थन और डाक्टर रामनारायणजी वर्मा कानपुर ने अनुमोदन किया और यह स्वीकार कीगई। उसके बाद पं० ठाकुरदत्त वर्मा वैद्यराज लाहौर ने आयुर्वेद महत्व पर प्रभाव शाली भाषण दिया उसके बाद सभा विसर्जन हुई और रात्रि को विषय निर्वाचनी सभा की बैठक हुई; दूसरे दिन पुनः प्रातः काल सम्मेलन की बैठक हुई और अनेक प्रस्ताव उपस्थित किये गये। और वह अनुमोदन समर्थन के बाद पास हुए। उसके बाद पं० रामप्रसादजी राजवैद्य पटियाला पं० दीनदयाल जी व्याख्यान वाचस्पति पं० दुर्गादासजी पन्त महोदय के व्याख्यान हुए और प० भैरवदत्त जी शर्मा वैद्यरत्न से अष्टवर्ग कार्य्यालयाध्यक्ष महोदय ने अष्टवर्ग आदि बूटी दिखलाई। और सभा विसर्जन हुई। सम्मेलन सफलता पूर्वक होगया प्रतिनिध संख्या १५—२० के अनुमान होगी सभापति स्वागत के व्याख्यान और प्रस्ताव किसी आगामी संख्या में देने का प्रयत्न करेंगे।

सम्पादक—

कूठ (कुष्ट) असली कूठ काश्मीर प्रदेश में उत्पन्न होता है और वह लाखो रुपयों का विदेश जाता है भारतवर्ष में उसे कोई एक तोला भी नहीं रख सकता ऐसी गवर्नमेंट और काश्मीर नरेशकी आज्ञा है। जिस औषधि का आयुर्वेद में वर्णन है और जो भारतीय वैद्यों की सम्पत्ति है जिससे भारतवासियों के स्वाथ्य में खासी मदद मिल—सकती है वही औषधि वैद्य नहीं रख सकते अब तक विष और सुरा आदि मादिक पदार्थों का ही निषेध था अब यह काष्ट औषधि भी न रख सकेंगे यदि इसी तरह धीरे २ सब वनौषधि वैद्यों से छीनली जायगी तब वैद्य और आयुर्वेद रसातल को चला ही जायगा क्या वैद्य सम्मेलन इधर ध्यान देगा और आन्दोलन कर वैद्यमात्र को कूठ रखने का अधिकार प्राप्त करावेगा?

पं० हरिदत्त शर्मा वैद्य

—:०:—

नवीन टाइप

धन्वन्तरि प्रेस का सब टाइप खराब होगया है इस कारण छपाई बड़ी भद्दी और अशुद्ध होती है इससे हमारे अनेक ग्राहक असन्तुष्ट हैं अतएव हमने नया टाइप मंगाया था पर वह अभी नहीं मिला लाचार इस अङ्क को पुराने टाइप में ही छापा है आशा है कि नवीन टाइप इसी मास में आजावेगा और जून का अङ्क उसी नवीन टाइप और उत्तम कागज पर छपेगा चित्रभी रङ्गीन नयनाभिराम छपेगा। यदि किसी कारणवस टाइप आने में विलम्ब हुआ तब यह जून का अङ्क जरा विलम्ब से निकलेगा अथवा जून जौलाई का संयुक्त अङ्क प्रकाशित किया जायगा। पाठक क्षमा करें।

अनेक पदक

प्रयोगाङ्क

धन्वन्तरि का तीसरा विशेषाङ्क प्रयोगाङ्क के नाम से सितम्बर में प्रकाशित होगा उसमें भारत के प्रसिद्ध और विद्वान वैद्यों के अनुभूत प्रयोग और चित्र रहेंगे अतः विद्वान वैद्यों से प्रार्थना है कि वह अपने २ चित्र का ब्लाक और अनुभूत प्रयोग ३१ जुलाई तक भेजदें।

बच्चों के आरोग्य रखने की

एक मात्र दवा

कुमार कल्याण

कुमार कल्याण क्या है ?

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान से बनी हुई बालकों के समस्त रोगों की एक मात्र दवा है।

कुमार कल्याण से क्या होता है ?

कमजोर बच्चे हृष्ट पुष्ट बलवान बन जाते हैं।

कुमार कल्याण किन रोगों को विशेष लाभ करता है ?

बच्चों के हरे, पीले, दस्त, कफ, खांसी, सर्दी, पसली चलना ज्वर, दूध का न पचना, सोते में चौंकना, सूखा रोगादि

कुमार कल्याण का स्वाद कैसा है ?

मीठा, जिसको बच्चे बड़े चाव से पीते हैं।

कुमार कल्याण का रहना—

प्रत्येक घर में वैद्य का काम देता है।

कुमार कल्याण का मूल्य ।-) बड़ी शीशी ॥=) दस आना।

मैनेजर—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ जिला अलीगढ़।

Regd. No A.-1215

Printed and published by Vaidhya Bankeylal Gupta at the Dhanwantari Press Bijaigarh,

भाग ५] जून जौलाई सन् १९२८ [अङ्क ६, ७

श्री

धन्वन्तरि

आविर्भूतः कलशं दुग्धवार्धेः पीयूष पूर्णं मथनात् कृते सुराणाम् ।

सञ्जात लोकेषु जनता जनित प्रमोदः ,, धन्वन्तरिः ,, समाकलन भविकाशयमयात्



संस्थापक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज,

सम्पादक—

वैद्य बांकेलाल गुप्त

वार्षिक मूल्य ४) साधारणाङ्क ।=) विशेषाङ्क का १॥)

धन्वन्तरि प्रेस बिजयगढ द्वारा मुद्रित ।

भैषज्यरत्नावली भाषा टीका सहित ?

परिवर्द्धित संस्करण

आयुर्वेद के ग्रन्थों में भैषज्यरत्नावली का आज कल कितना मान है यह तो हर एक सज्जन को मालूम ही है परन्तु चिरकाल से इसका कोई भाषानुवाद नहीं मिल रहा था और विशेष कर विद्यार्थियों तथा साधारण संस्कृत जानने वालों को इस के पढ़ने में बड़ी कठिनाई थी इसी को दूर करने के लिये हमने यह संस्करण सरल भाषा टीका सहित छपवाया है, इस संस्करण में विशेषता यह है (जो आज तक किसी भी संस्करण में नहीं) कि लाहौर के सुप्रसिद्ध भिषग्रत्न कविराज श्रीयुत नरेन्द्रनाथ जी मित्र ने इसका संशोधन किया है तथा आपने हर एक औषधि की मात्रा (doses) को समयानुकूल बना दिया है। आयुर्वेद की प्राचीन पुस्तकों में प्राचीन समय के अनुसार औषधियों की मात्रा बहुत ज्यादा है जो इस समय उलटी हानि कर देती है- विशेष कर साधारण वैद्यों को तो मात्रा देने में कठिनाई का सामना ज्यादा करना पड़ता है। इसी लिये कविराज जी ने प्रयत्न करके इस त्रुटि को दूर कर दिया है तथा इसकी सरल भाषा टीका भी अपनी देख रेख में ही सुयोग्य आयुर्वेदाचार्य श्रीयुत जयदेव जी विद्यालङ्कार द्वारा ही कराई है। पुस्तक स्वच्छ चिकने कागज पर छपी है मूल्य दोनों भाग ५)

बूटी प्रचार ॥

यह वैद्यक का छोटा सा ग्रन्थ अपने ढंग का निराला है इस पुस्तक को महात्मा महन्त सुखरामदास जी ने अपने जीवन भर अनुभव किये हुये चुटकलों से भरा है इसमें प्रत्येक छोटे और बड़े रोगों के बहुत ही सुगम उपाय लिखे हैं इस पुस्तक के पास रहने से मनुष्य अपने घर पर तथा विदेश में अपना और अपने साथियों का रोग दूर कर सकता है बार २ वैद्य हकीमों के पास दौड़ने की आवश्यकता नहीं रहती इस लिये इसकी एक प्रति अवश्य पास रखनी चाहिये इसमें धातुओं के मारण मारण की विधि जङ्गल की जड़ी बूटियों द्वारा बहुत ही सहज लिखी है जिन२ जड़ी बूटियों का प्रकाश इस पुस्तक में पड़ा है उन सब के ऐसे सुन्दर चित्र दिये हैं मानो अक्स ही खींचदिया है यह चित्र प्रायः ३०० से अधिक हैं पुस्तक के अंत में नागेश्वर यन्त्र बालुका यन्त्र मूषाङ्ग यन्त्र आदि के कितने ही अद्भुत और उपयोगी चित्र दिये हैं इस तरह सब मिलाकर यह पुस्तक प्रायः ३००पृष्ठ में सम्पूर्ण हुई है मूल्य १)

मीज़ान तिब्ब॥

यह ग्रन्थ यूनानी हिकमत काउर्द से अनुवाद किया गया है इसमें सिर से पांव तक के सम्पूर्ण रोगों के पर्वरूप निदान, लक्षण, और चिकित्सा बड़ी विलक्षण रीति से लिखी गई है, इस पुस्तक के सहारे छोटे-मोटे रोगों का इलाज स्वयं भी कर सकते हैं पुस्तक ३५० पृष्ठों में मोटे चिकने कागज पर बम्बई टाइप में छाप कर तैयार की गई है। मूल्य १॥)

पता-वैद्य बांकेलाल गुप्त धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

जर्राही प्रकाश

हिंदी भाषा में यह ग्रंथ अपने ढङ्ग का बिलकुल ही नया है। इसमें शरीर की त्वचा पर होने वाले फोड़ा, फुन्सी, चोट आदि के घावों का इलाज, मरहम पट्टी, चीर फाड़ आदि का वर्णन है। इस पुस्तक के चार भाग किये गये हैं। ग्रंथ के आदि में मनुष्य के शरीर सम्बन्धी बहुत से चित्र दिये हैं प्रथम-भाग—में जिस स्थान पर फोड़े होते हैं। उनके चित्र ब्लाक बनवाकर छापे गये हैं और उनके साथ२ ही इलाज मरहम आदि का वर्णन है दूसरे भाग—में चीरने फाड़ने में काम आने वाले आयुर्वेदीय रीति से अस्त्र शस्त्रों के चित्र, उनका वर्णन और डाक्टरी मतानुसार टूटी हुई हड्डी, पसली, टांग, हाथ, पहुंचा आदि को जोड़ने की विधि और पट्टी बाधने के नियम दिये गये हैं। तीसरे भाग—में उपदन्श सम्बन्धी घाव सुजाक, प्रमेह और गठिया आदि के इलाज हैं।
चौथे भाग—में नेत्र रोग सम्बन्धी इलाज लिखे हैं पुस्तक बहुत मोटे चिकने कागज पर छापी गई है मू०१॥)

वैद्यजीवन

(लोलिम्बराज) भाषा टीका तथा संस्कृत टीका सहित इसमें कवि लोलिम्बराज ने अपनी स्त्री को अनेक प्रकार के सम्बोधनों से कहे हैं जिस से वैद्यक शास्त्र का उपदेश किया है इसके चुटकले तीर के समान काम कर जाते हैं अनकी बार श्लोकों के ऊपर अन्वय के अंक भी दिये हैं जिससे कम पढ़ा भी श्लोक लगा सके मू०१॥)

बृहत रसराज सुन्दर

यह अमूल्य रत्न ग्रन्थ बहुत समय से खोगया था इसके लिये हमारे पास अनेक ऑर्डर जो दस १०) रुपये तक में लेने को तैयार थे पर पुस्तक अप्राप्त थी। यह अधिक समय से बम्बई में छप रहा था अब छप कर तैयार होगया है। मूल्य वही रक्खा गया है पुस्तक थोड़ी छपी हैं। अतः शीघ्र मंगा लीजिये अन्यथा पछताना होगा मूल्य ३॥)

॥ रसक मंजू ॥

यह पुस्तक आयुर्वेद की प्राचीन अपूर्व पुस्तक है जिसकी चर्चा धन्वन्तरि में २ वर्ष से चल रही थी दो जिल्दों में छप कर तैयार है एक जिल्द उपकरण धातु संग्रह मूल किया यह तीन पाद जिसका मू०५) है दूसरी जिल्द में चिकित्सा है जिसका मू०४) है दोनों का मू०६) है। पो०० प्रथक ग्राहक के कुल में होगा शीघ्र ही मंगालें अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी।

नपुंसक-सञ्जीवन

भाषा टीका सहित। जो मनुष्य हस्त आदि कुक्रियाओं से नपुन्सक बन गये हैं उनको बनाने वाले और शरीर में बल बढ़ाने वाले प्रयोग एक से एक बढ़ कर लिखे हैं। वैद्यक डाक्टरी ग्रन्थों के आधार पर इसकी रचना गई है। कीमत प्रथम भाग का ।=) द्वितीय भाग ।=)

पता... वैद्य बांकेलाल धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

नित्य अकबर ... अकबर अलोखा
... लिखित तथा वैद्य ... हिंदी भाषा अनुवादित। इसके ... में शिर से पैर तक के ... रोगों की उत्पत्ति निदान ... लक्षण और यूनानी मत से ... चिकित्सा वर्णित है। यह अपने ढंग का ... ग्रन्थ है मू० ३)

सचित्र स्वास्थ्यशिक्षा

भूमिका लेखक प्रो० राममूर्ति नायडू कलयुगी भीम। यदि आप भी ... के समान बलवान हुआ ... आरोग्य और ... करना बुढ़ापे से जवान बनना, तेल की मालिश करना, आरोग्य मनुष्य ... ब्रह्मचर्य ... सन्तान उत्पन्न करना व साधन शरीर रचना ... काम शास्त्र सम्बन्धी बातों के वर्णन के अतिरिक्त ... गुलाब आदि विषयों ... सचित्र जीवन ... पढ़ना चाहते हैं तो इस पुस्तक को ... । अधिक लिखना व्यर्थ है सचित्र ... पुस्तक पुस्तक का मू०)

रस परिज्ञान

लेखक ... जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल। इसमें पदार्थों की उत्पत्ति से लेकर रसों की उत्पत्ति भेद कारण, पहचान गुण, अवगुण, कार्य, शक्ति, आदि ... विषय सन्निवेशित हैं दाम ॥=)

भारतीय रसायन शास्त्र

हिंदी वाले यदि मनो निवेश पूर्वक इसका अवलोकन करेंगे तो इसे विषय की खोज का महत्व ... मालूम पड़ेगा और विद्वानों को इस विषय में मन लगाने का उत्साह होगा। इससे मालूम होगा कि हमारी रसायन विद्या कहां कहां बिखरी पड़ी है और उसमें कौनसा विषय है। इसमें सन्देह नहीं कि यह पुस्तक अपने विषय ... है। दाम पहले भाग का ॥) और दूसरे भाग का ॥=) आना

निघण्टु शिरोमणि

यह आयुर्वेद ... के लिये बहुत उपयोगी है राज निघण्टु, गुणनिघण्टु धन्वन्तरि नि० भाव प्रकाश आदि ... र और सर्व मान्य बड़े२ वारह निघण्टुओं का सब ... एकत्र करके यह निघण्टु बनाया गया है ऐसा उत्तम निघण्टु इस समय दूसरा नहीं है। यह आयुर्वेद विद्या पीठ की परीक्षा में नियुक्त है। दाम १)

रसायन-सार

यह श्री० पं० श्यामसुन्दराचार्य रसायन शास्त्री ... द्वारा लिखित पुस्तक है इसमें अनुभूत पारद गुटिकाविधि चन्द्रोदयादि हजारों रस निर्माण प्रकरण सब धातु शोधन, मारण, गंधक जारण आदि विधियां ... हजार रु० व्यय करके जाना ... गई है यह बिना संकोच के ... सरल और हिन्दी टीका सहित लिखी गई है। अनेक चित्र द्वारा नवीन प्रकार की भट्टी आदि बनाने की विधि लिखी गई है। मू० ६)

पता-वैद्य बांकेलाल गुप्त धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

जर्राही प्रकाश

हिंदी भाषा में यह ग्रंथ सरल ढङ्ग का बिल्कुल नया ही बना है। इसमें शरीर की त्वचा पर होने वाले फोड़ा, फुन्सी, कोढ़ आदि के घावों का इलाज, मरहम पट्टी, चीर फाड़ आदि का वर्णन है। इस पुस्तक के चार भाग किये गये हैं। ग्रंथ के आदि में मनुष्य के शरीर सम्बन्धी बहुत से चित्र दिये हैं

प्रथम-भाग—में जिस स्थान पर फोड़े होते हैं। उनके चित्र ब्लाक बनवाकर छापे गये हैं और उनके साथ२ ही इलाज मरहम आदि का वर्णन है

दूसरे भाग—में चीरने फाड़ने में काम आने वाले आयुर्वेदीय रीति से अस्त्र शस्त्रों के चित्र, उनका वर्णन और डाक्टरी मतानुसार टूटी हुई हड्डी पसली, टांग, हाथ, पहुंचा आदि को जोड़ने की विधि और पट्टी बांधने के नियम दिये गये हैं।

तीसरे भाग—में उपदन्श सम्बन्धी घाव सुजाक, प्रमेह और गठिया आदि के इलाज हैं।

चौथे भाग—में नेत्र रोग सम्बन्धी इलाज लिखे हैं। पुस्तक बहुत मोटे चिकने कागज पर छापी गई है मू०१॥)

वैद्यजीवन

(लोलिम्बराज) भाषा टीका तथा संस्कृत टीका सहित इसमें कवि लोलिम्बराज ने अपनी प्यारी स्त्री को अनेक प्रकार के सम्बोधनों से कार्य है जिस से वैद्यक शास्त्र का उपदेश किया है इसके चुटकले तीर के समान काम कर जाते हैं इसकी बल्कि श्लोकों के ऊपर अन्वय के अंक भी दिये हैं जिससे कम पढ़ा भी श्लोक लगा सके मू०१॥)

बृहत् रसराजसुन्दर

यह अमूल्य ग्रन्थ ... समय से अप्राप्य होगया था इसके लिए हमारे पास अनेक जो दस (१०) रुपये तक में लेने को तैयार आते थे पर पुस्तक अप्राप्त थी। यह अधिक समय से बम्बई में छप रहा था अब छप कर तैयार होगया है। मूल्य वही रक्खा गया है पुस्तक थोड़ी छपी है। अतः शीघ्र मंगा लीजिये अन्यथा पछताना होगा मूल्य ३॥)

॥ रसकामधेनु ॥

यह पुस्तक आयुर्वेद की प्राचीन अपूर्व है जिसकी चर्चा धन्वन्तरि में २ वर्ष से चल रही थी दो जिल्दों में छप कर तैयार है एक जिल्द उपकरण धातु संग्रह सूत क्रिया यह तीन पाद जिसका मू०५) है दूसरी जिल्द में चिकित्सा है जिसका मू०४) है दोनों का मू०८) है। पो०८ प्रथम ग्राहक के रूप में होना शीघ्र ही मंगा लीजिए या दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी।

नपुंसक-सञ्जीवन

भाषा टीका सहित। जो मनुष्य हस्त क्रिया आदि कुचरित्रों से नपुंसक बन गये हैं उनको बनाने वाले और शरीर में बल बढ़ाने वाले प्रयोग एक से एक बढ़ कर लिखे हैं। वैद्यक और डाक्टरी ग्रन्थों के आधार पर इसकी रचना की गई है। कीमत प्रथम भाग का।=) द्वितीय।=)

पता...वैद्य बांकेलाल धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

तिब्ब अकबरी

...आजम अकबर अलीखां लिखित तथा देवीप्रसाद कृत हिंदी भाषा अनुवादित। इसके ... अध्यायों में शिर से पैर तक के ... रोगों को उत्पत्ति निदान कारण ... लक्षण और यूनानी मत से ... रोगों पर ... (चिकित्सा) ... है। यह अपूर्व ग्रन्थ वैद्य मात्र को उपयोगी है मू० ७)

सचित्र स्वास्थ्यशिक्षा

———

भूमिका लेखक प्रो० राममूर्ति नायडू कलियुगी भीम, यदि आप भी ... के समान पलवान ... स्वास्थ्य और द्रव्य उपार्जन करते बड़े से बड़े ... तेल को ... आरोग्य मनुष्य ... मनइच्छित सन्तान उत्पन्न करने के साधन शरीर रचना तथा काम-शास्त्र से सम्बन्धी बातों के वर्णन के अतिरिक्त राममूर्ति, ... गुलाम आदि विख्यात २ पहलवानों का सचित्र जीवन सचित्र पढ़ने के इच्छुक हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। ... लिखना व्यर्थ है स० चि० ... पृष्ठ की पुस्तक का मू० ...)

रस परिज्ञान

——:*:——

लेखक वैद्य पं० ... जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। इसमें पदार्थों की उत्पत्ति से लेकर रसों की उत्पत्ति भेद करण, पहचान, गुण, अवगुण, कार्य शक्ति आदि २४ विषय सन्निवेशित हैं दाम ॥=)

भारतीय रसायन शास्त्र

हिंदी वाले यदि मनो निवेश पूर्वक इसका अवलोकन करेंगे तो उसे विषय की खोज का महत्व ... मालूम पड़ेगा और विद्वानों को इस विषय में मन लगाने का उत्साह होगा। इससे मालूम होगा कि हमारी रसायन विद्या कहां कहां बिखरी पड़ी है और उसमें कौनसा विषय है। इसमें सन्देह नहीं कि यह पुस्तक अपने विषय और ढङ्ग से निराली तथा पहली है। दाम पहले भाग का ।) और दूसरे भाग का ॥=) आना।

निघण्टु शिरोमणि

यह अपूर्व ग्रंथ वैद्यों के लिये बहुत उपयोगी है, राज निघण्टु, गुण निघण्टु, धन्वन्तरि नि० भाव प्रकाश आदि मिश्र २ और सब मान्य बड़े २ बारह निघण्टुओं का सर्व ... एकत्र करके यह निघण्टु बनाया गया है ऐसा उत्तम निघण्टु इस समय दूसरा नहीं है। यह आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षा में नियुक्त है। दाम ...)

रसायन-सार

यह श्री० पं० श्यामसुन्दराचार्य रसायन शास्त्री काशी द्वारा लिखित पुस्तक है इसमें अनुभूत पारद बुभुक्षाविधि चन्द्रोदयादि ... रस निर्माण प्रकरण सब धातुशोधन, मारण, ... जारण आदि विधियां ... हजार रु० ... खर्च कर ... प्राप्त हुई है यह बिना संकोच के ... सरल और हिन्दी टीका में ... लिखी गई है। अनेक चित्र द्वारा नवीन प्रकार की भट्ठी आदि बनाने की विधि लिखी गई है। मू० ...)



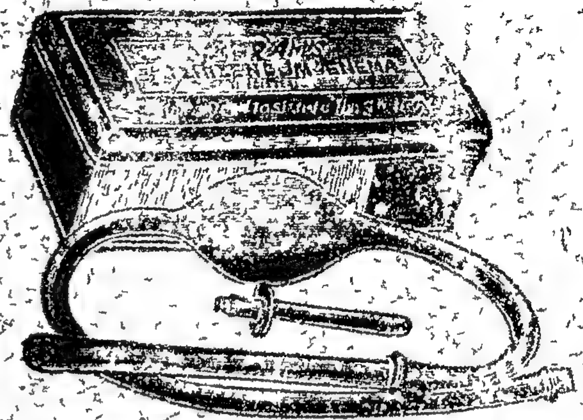
खरल—यह काँच के, चीनी के दवा मिलाने और घोटने के कामके होते हैं और पत्थर के मोती कज्जली आदि घोटने के होते हैं और लोह पीतल के कूटने के काम आते हैं। लोहे के दो प्रकार के होते हैं एक डेगसार के ढले हुए और दूसरे गोल जिस में पारद आता है।

चीनी के—जिसमें ३-४ औंस पानी आवेगा चह२)
जिसमें ८-१० औंस पानी आवेगा ४॥)
जिसमें सेर तीन पाव पानी आवेगा ८)
कांच—जिसमें ३-४ औंस पानी आवेगा ३॥)
जिसमें ८-१० औंस पानी आवेगा ५)
जिसमें आध सेर २॥ पावपानी आवेगा ८)
पीतल के-यह तोलकर विकते हैं जिसका वजन२॥) सेर होगा उसका मूल्य ५) होगा अर्थात दो रुपये सेर के भाव मिलेगा।
लोहके-ढले हुए ॥) सेर और पारे के ॥।) आने सेर
×पत्थर का—यह स्याह पत्थर जिसे तामड़ा कहते हैं उसका बना हुआहै। कड़ी से कड़ी औषधि घोटने पर भी नहीं घिसता मू०१५) २०) रुपया

पिचकारी—यह अनेक प्रकार की आती हैं। उनमें हम यहां दो प्रकार की का भाव देते हैं एक कांच की, दूसरी पीतल की कांच की १ औंस ।=) दो औंस ॥-) ४ औंस की बढ़िया २॥)
पीतल की २ औंस की ४॥) ४ औंस ६) ८ औंस ८) औरतों की पिचकारी ॥) से २) तक आँख में दवा डालने की पिचकारी १ का ।) आना

डूस (पेट साफ करने का)
२ पाइन्ट ३॥) ४ पाइन्ट ... सिर्फ रबड़ की नली ।-) फुट

एनीमा



(पेट में भरे हुए कठिन मलको निकालने वाला)४॥)





थरमा मीटर-(तापमापक यंत्र) मूल्य १), १॥)

स्टेथिसकोप

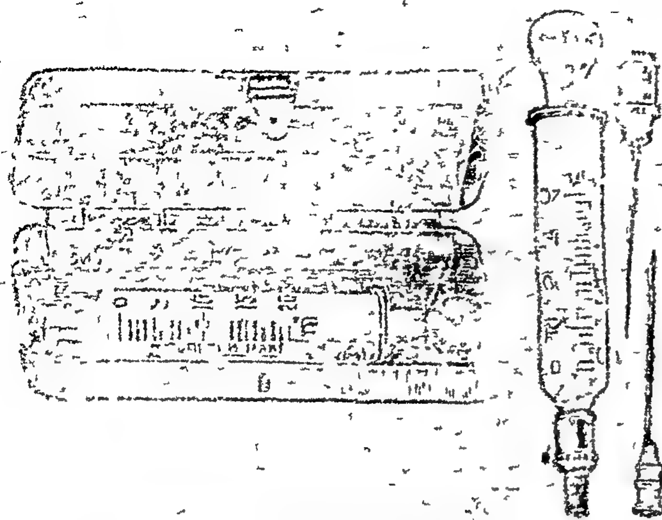


फेफड़े आदि देखने को रबड़ का नल वाला ४)

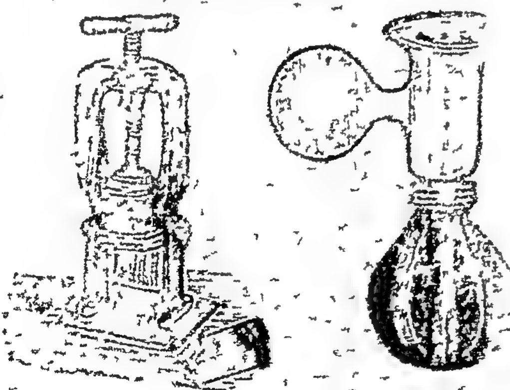
पता—मैनेजर श्री धन्वन्तरि औषधालय मालीवाड़ा देहली।

* यह सामान हमारे हेड आफिस धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ की शाखा मालीवाड़ा देहली से मिलता है।

इंजेक्शन सिरिंज।



सिरिंज (सूची वेधन यन्त्र) इस से त्वचा से दवा की पिचकारी दी जाती है। मू० २॥) ३॥) नोट—यह अनेक प्रकार के आते हैं। देशी साधारण ।=) से लेकर २॥) तक विलायती जो मेजर पर रक्खा जाता है ५) से लेकर २१०) रुपये तक के होते हैं पर वैद्यों के लिये ५) रुपये वाला अथवा २५) वाला ही यथेष्ठ है।



आंख धोने का गिलास मू० ।।)



होशियार, चालाक और बुद्धि बनाने वाली

रेलवे सीरीज

इस सीरीज में घन्टे दो घन्टे का फजूल समय व्यतीत करने के लिये प्रति मास बड़े२ धुरन्धर नामी लेखकों द्वारा लिखित जासूसी उपन्यास प्रकाशित होता है प्रत्येक उपन्यास ५०..६० पेज में ही सम्पूर्ण कर दिया जाता है। साथ ही प्रत्येक उपन्यास में स्थानर पर रंग विरंगे दो तीन चित्र भी रहा करते हैं कागज, लेख, छपाई साफ और सुन्दर होते हुए भी इसके प्रत्येक नम्बर का मूल्य ।) ही आना रक्खा गया है तथा जो महाशय २॥ रुपया भेज कर इस सीरीज के एक वर्ष के लिये ग्राहक बन जाते हैं उन्हें हर महीने एक नई पुस्तक प्रकाशित कर भेज दी जाती है डाक खर्च भी नहीं देना पड़ता।

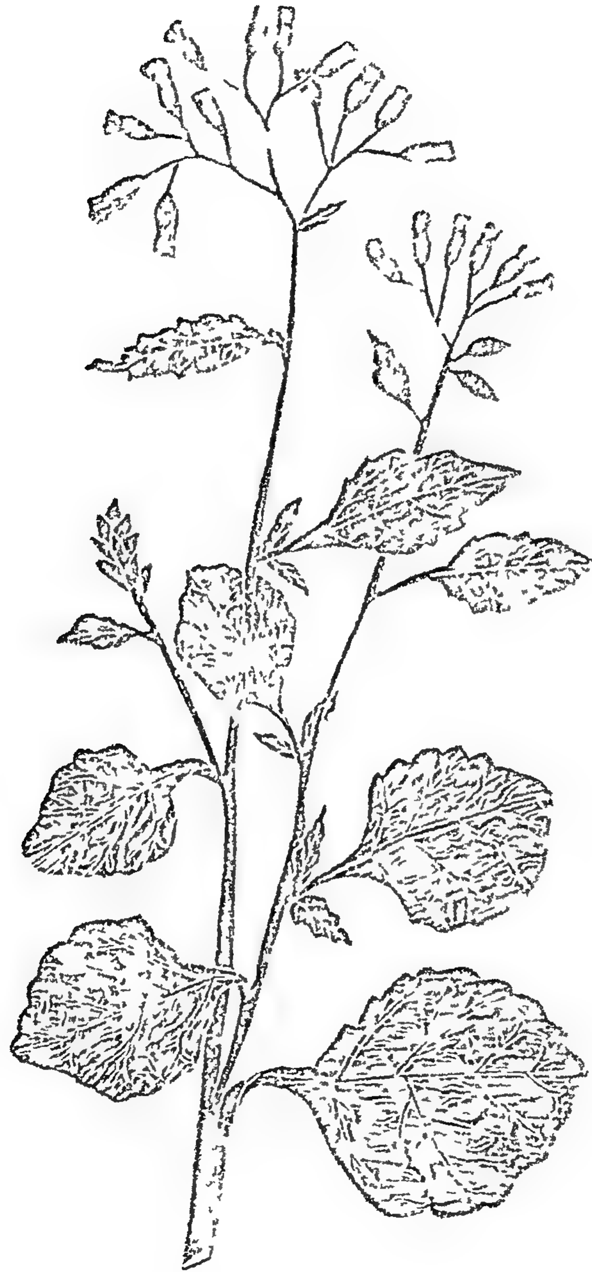
अब तक इसके छः अंक निकल चुके हैं (१) भीषण भ्रातृ हत्या (२) गुप्त खून (३) डबल (४) खूनी दारोगा (५) खूनी अन्दर (६) ... इसकी रोचकता देखकर हिन्दुस्तान के प्रत्येक प्रान्त में ४००० से भी ऊपर ग्राहक हो चुके हैं। आशा है कि आप भी कम से कम ।) आने टिकट भेजकर एक प्रति नमूने की अवश्य मंगा पसन्द होने पर इसके एक वर्ष के लिये ग्राहक बन अपने इष्टमित्रों को भी ग्राहक बनने की अनुमति देंगे।

पता—वर्द्धन कम्पनी, नं० १ नारायण बाबू लेन अफीम चौरास्ता, कलकत्ता

* यह सब सामान हेड ऑफिस विजयगढ़ ... में मिलता, हेड ऑफिस में सिर्फ देशी औषधियां ही

यदि आपको किसी दवा की टिकिया ... रुपया ३) सेर मजदूरी देकर विजयगढ़ से बनवा सकते हैं।

सूची



बैंगनी फूल की सहदेवी



जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतं द्रापि मिवच्यवानात् ।
प्राति रतं जहि तस्यायुर्दस्रादित्यति मकृणुतं कनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं० १० अ० १७ सू० ११६

भाग ५] जून जौलाई १९२८ [अङ्क ६, ७

औषधि--सेवन

लेखक—श्रीमान् कविराज, कृष्णप्रसाद जी बी० ए० आयुर्वेदाचार्य्य ।



जिस तरह हथियार किसी कार्य के लिये साधन होते हैं, उसी तरह औषधि रोग को हटाने में साधन मात्र है! उस का अच्छा उपयोग किया जाय तो अच्छा लाभ होताहै अन्यथा नुकसानी उठानी पड़ती है। दूसरे शब्दो में कह सकते हैं कि शस्त्र या अग्नि के समान औषधि की स्थिति है। जिस तरह शस्त्र किसी के जीवन की रक्षा करने में सहायक होते है और प्रसंग पर उसी शस्त्र से जीव हिंसा भी की जाती है, या जिस तरह आग अन्न को पकाती है एंजिन आदि यंत्रो को चलन शक्ति पहुंचाती है। और मौका पाकर जान माल को स्वाहा कर जाती है उसी तरह औषधि भी प्रसगानुसार रक्षक या,

सहारक बन जाती है। अतएव औषधियों का उपयोग करनेमें अत्यंत दक्षता एवं ध्यान की आवश्यकता है। औषधि प्रयोग के पूर्व काल, स्थान, तथा रोगी के बलाबल का विशेश अनुसधान कर लेना परमावश्यक है।

कई लोगो का कथन है कि "औषधि से रोग दूर नहीं होता, वह केवल दब जाता है।| अत एव रोग शमनार्थ औषधियों का उपयोग न करें केवल नैसर्गिक (प्राकृतिक Natural) उपायों का अवलब करें , बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि, ऐसा जिन का मतव्य है, उन्होंने शायद औषधयोंका शास्त्रोक्त, योग्य रीतिसे व्यवहारही नहींकि याहे यथायोग प्रमाण में, योग्य काल तथा अवस्था मे योग्य औषधि का उपयोग कभी हानि कर नहीं होता। हम नैसर्गिक उपचार पद्धतिके विरोधी नहीं हैं। कारण निसर्ग या प्रकृति की वगैर सहायता के हम कदापि यशस्वी या सफल मनोरथ नहींहो सकते। यह हमारा सिद्धांत है।

जिस प्रकार किसी बड़ी नदी का प्रवाह अटूट गति से बराबर वहा करता है तो भी स्थान विशिष्टता या कोई अन्य कारणो से उसके किसी भाग का जल विकृत, विशेष-विकृत, मधुर विशेष-मधुरादि हुआ करता है। उसी प्रकार यद्यपि निसर्ग का कार्यकलाप, अविच्छिन्न रीतिसे एक समान सबकी भलाईकेलिये होतारहताहै, तथापि स्थल, कालादि सयोग सस्कार विशेषताके कारण संसार में, भिन्न २ जीवों की भिन्न २ प्रकृति या शारीरिक और मानसिक स्थिति (हालत) हुआ करतीं हैं। कदाचित् जीवों की इस भिन्नावस्थाकी ओर नैसर्गिक पद्धति मात्र के उपासको का ध्यान न जाने से वे औषधि व्यवहार में कृतकृत्य न होते हों। किंतु प्रत्येक क्रिया कुशल वैद्य इस प्रकृतिकी भिन्नावस्था की ओर ध्यान देते हुये, निसर्गकी सहायता करता है। औषधियों का दुरुपयोग निसर्गके रोग शमन रूपी कार्य में बाधा डाल सकता है, किंतु उनका सदुपयोग कदापि बाधा नहीं पहुंचाता प्रत्युत् उसके कार्य में सहायता पहुंचा कर रोग को शीघ्र ही हटाता है।

वैद्य का प्रथम मुख्य कर्त्तव्य रोग की परीक्षा या निदान करना है तदनतर उपयुक्त औषधि का उपयोग है। " रोग मदौपरीक्ष्यैव ततोऽनंतरमौषधम् " ॥ अर्थात् औषध की योजना करने के पूर्व, रोगके कारण, पूर्वरूप, लक्षण, उपशय, और सप्राप्ति का ध्यान से निश्चय करे। अनिश्चित दशा में, या निदान का पूर्णरूप से निश्चय न हुआ हो तो किसी भी औषध की योजना कर देना ठीक नहीं कभी २ रोगी जब विकट स्थिति में होताहै, बेहोश या मूर्छितावस्था में होता है या किसी भयकर वेदना से व्याकुल होता है तब निदान का ठीक२ निश्चय होना टेढी खीर है, ऐसी अवस्थामें तत्काल बेहोशीको दूर करने वाली या वेदना शामक औषध का प्रयोग करना अत्यावश्यक हो जाता है। विकट स्थिति के दूर हो जाने के पश्चात् फिर रोगी परीक्षा करनी चाहिये।

केवल लाक्षणिक चिकित्सा करना कदापि योग्य नहीं। मूल कारण को ढूंढना चाहिये। रोग में प्रायः एक ही मूल कारण के अनेक लक्षण देखने में आते हैं अतएव रोग परीक्षा करने का उद्देश मूल कारण या कारणो का ढूंढ निकालना है। कारण या कारणो की चिकित्सा करने से उन के माया रूपी लक्षणो का विस्तार स्वय नष्ट होजाता है।

सर्वेषामेव रोगाणां दोषाः क्रुद्धाहि कारणम् ॥

कुपित हुये दोष ही सब रोगों के कारण होते है। यह आयुर्वेद का त्रिकालावाधित सिद्धांत है। अतः रोग के लक्षण जिन दोषों से उत्पन्न हुये हों, उन २ दोषों का विचार करके औषध सेवन करना या कराना चाहिये। अर्थात् लक्षणों के द्वारा दोष या दोषों का पहिचान कर, वह दोष शरीर के जिस स्थान में दूषित या कुपित हुआ हो उस स्थानमें वह प्रधान है या गौण है, स्थानिक है या आगतुक है, इस बात की जांच करनी पडती है! यदि दोष आगतुक होकर बलवान् हो तो प्रथम उसे औषधि द्वारा समन कर स्थानिक दोष की चिकित्सा करनी होती है। यदि आगंतुक दोष निर्बल हो तो प्रथम स्थानिक दोष को जीत कर फिर आगतुक या गौड़ दोषको चिकित्सा करें किंतु ऐसी स्थित में प्रायः, गौड दोष को कोई निराली चिकित्सा करनेका मोकाही नही आता स्थानिक दोष के शमन हो जाने पर, वह स्वय शमन हो जाता है।

दोष के साथ ही साथ देखना आवश्यक है कि दूष्य कौन २ से विकृत हुए है? रोगी सशक्त है या अशक्त? ऋतु कौन सी है? रोगी की जठराग्नि कहां तक तीव्र है या मद? उसकी प्रकृति कैसी है? यहां प्रकृति से मतलब रुचि या स्वभाव है, किसी के प्रकृति को दूध विल्कुल सहन नही होता, किसी को तक्र नहीं भाता, किसी को कड़वी औषधि या कोई भी द्रव्य नहीं सहन होता इत्यादि प्रकृति का ध्यान औषधि देने के पूर्व करना आवश्यक है क्यों कि इस प्रकृति दोषके कारण, कई बार योग्य से योग्य औषधि भी कुछ लाभ पहुचाने में समर्थ नहीं होती। इसी प्रकार रोगी की उमर कितनी है, उस में धैर्य या सहन शक्ति (सत्व) कहां तक है उसे कौनसी वस्तु सात्म्य है, इत्यादि बातो की ओर भी ध्यान देना हमें आवश्यक है।

उक्त प्रकार से रोगी तथा रोग की परीक्षा के पश्चात् उसके लिये दी जाने वाली औषधि का प्रमाण निश्चत करना विशेष महत्व की बात है। किसी रसशास्त्र में ऐसा कहा हुआ है:—"मात्रया भक्षितदेवि विषमस्यमृतायते।" अर्थात् निश्चत प्रमाणानुसार सेवन किया हुआ विष भी अमृत के समान लाभ दायक हो जाता है। कई बार देखा गया है कि बड़े प्रमाण में सेवन की हुई औषधि अपायकारक होती है, तथा उसी को अल्प प्रमाण में देने से लाभ होता है। पारदकल्प या जिस में पारा मिश्रत है ऐसी कोई भी औषधि कदापि अधिक मात्रा में नहीं देनी चाहिये। ऐसी औषधियों को किंचित् प्रमाण में किंतु कई बार देने से पारद अपना बहुत आच्छ सतोष दायक कार्य करता है। विरेचक या जुलाब की औषध को भी यथा योग्य मात्रा में ही देनी चाहिये।

औषधि के प्रमाणादि का निश्चय कर लेने पर भी निम्नलिखित बातोंकी ओर यदि वैद्य ध्यान न देवे तो कुछ लाभ नहीं होताः—पहिली बात यह है कि रोगी के लिये हितकारी योग्य पथ्यापथ्य का निर्णय कर देना, जिस से उस को शारीरिक प्रतिकार शक्ति कायम रहे। यह बहुत महत्व की बात है। कहा भी हैः—"पथ्येऽसाति गदार्तस्य किमौषधि निषेवणैः" यदि योग्य पथ्य का सेवन न करावे तो औषधि का सेवन कराना व्यर्थ है। रोग की कई ऐसी अवस्थायें होती हैं, कि जिन में रोगी को केवल लंघन कराना ही हितकारी होता है, विशेषतः आमावस्था में तो

लंघन ही कराना श्रेष्ठ है. पथ्य की व्यवस्था करते समय रोगी की शक्ति क्षीण न होने पावे इस बात की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। कारण शक्तिक्षीण हो जाने पर रोग का बल बढ़ जाता है. तथा उस के कष्ट दायक उपद्रव आरंभ हो जाते हैं. और फिर औषधि का कुछ वश नहीं चलता।

दूसरी बात यह है कि-रोगी के मल. मूत्र. स्वेद आदि का उत्सर्ग नित्य यथायोग्य होता है या नहीं इस की भी योजना औषधि सेवन के पूर्व या साथ ही में हो जानी चाहिये। ध्यान रहे, शरीरान्तर्गत रोग का संबन्धि विष मल मूत्रादि के उत्सर्ग के द्वारा ही बहुत कुछ शरीर के बाहर निकलता है. या निकाला जा सकता है। मूत्र में का क्षार योग्य प्रमाण में बाहर निकलता है या नहीं इसकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि योग्य प्रमाण में वह मूत्र के साथ नहीं निकलता हो. तो उस को प्रथम चिकित्सा करनी चाहिये। विशेषतः ज्वर की अवस्था में इस बात की ओर अवश्य ध्यान रखना चाहिये अन्यथा योग्य प्रमाण में मूत्र के न उतरने से. तदंतर्गत क्षार शरीर में ही शोषित होकर रोग को प्रबल कर देता है। इसी प्रकार से मलोत्सर्ग भी ठीक प्रमाण में होने की आवश्यकता है। रोगी ने कुछ खाया नहीं. उस के पेट में कुछ नहीं. मल कैसे उत्सर्ग होगा. इत्यादि कल्पित बातों पर विश्वास कर बैठना बहुत धोखे का है। जो कुछ भी अल्प प्रमाण में रोगी पथ्य का सेवन करे. उसे यथायोग्य प्रमाण में मलोत्सर्ग होना ही चाहिये। बड़े भयंकर रोग भी मलशुद्ध होते रहनेसे दूर होजाते हैं इसके लिये यदि हो सके तो बस्ति विधि की योजना करना श्रेष्ठ है ऐसे ही प्रस्वेद (पसीना) निकलते रहने की भी आवश्यकता है। इस के द्वारा भी बहुत कुछ रोगांतर्गत विष निकल भागता है। प्रस्वेद के लिये यदि हो सके तो बाष्पस्नान या बफारा देना बहुत ठीक होता है।

तीसरी महत्त्व की बात यह है. कि-रोगी को सुखपूर्वक विश्रांति या निद्रा की आवश्यकता है। इस के लिये हमारा प्रथम कर्त्तव्य यह होना चाहिये कि यदि रोग के विशेष तीव्र लक्षण या लक्षणों के कारण यदि रोगी को निद्रा न आती हो तो. रोग की मुख्य चिकित्सा की अविरोधी. उस लक्षणशायक चिकित्सा को करें। ऐसा करने से रोगी को कुछ विश्रांति प्राप्त हो जाती है. औ उस की प्रकृति रोग को पछाड़ने में स्वयं समर्थ होजाती है।

यदि रोगी को विश्रांत न मिलने का कारण अन्य कोई परिवार या कुटुम्ब संबंधि गड़बड़ सड़बड़ हो तो हमें अपनी अधिकार युक्त वाणि से उसे दूर करना परम अभीष्ट है।

अब आगे विशेष २ औषधियों के गुण तथा धर्मों का विवेचन यथावकाश किया जावेगा।

क्या आयुर्वेदिक भूत कीटाणु हैं ?

"पथ-प्रदर्शक" की ५वीं और ६ ठी संख्या में प विश्वेश्वर दयालु जी वैद्य के विचार को खण्डित करते हुये पथ-प्रदर्शक के सम्पादक ने लिखा है:— "हमारे विचार में तो आयुर्वेद में जहां भी "भूत" शब्द आया है इन अर्थों में आया है वहां जीवाणु विशेष का ही ग्रहण करना उचित है।" यदि भूत, शब्द जीवाणु वाचक है तो उन उन स्थलों के अति प्राचीन और सर्व तन्त्र स्वतन्त्र टीका कारोंने इस विषय पर कुछ भी प्रकाश क्यों नहीं डाला? टीका कारों की बात जाने दीजिये," सिद्धान्त निदान" में जब तक वैकल्पिक भाव से 'भूत" शब्द का अर्थ जीवाणु नहीं प्रतिपादित हुआ था, तब तक शायद हमारे वैद्यक के आचार्यों का ध्यान इस ओर कभी भी नहीं गया था! युक्ति सगत बातों का स्वीकार और प्रचार जिस तरह लाभ दायक है, उसी तरह आग्रह, अनुगमन या पॉडित्यके बलसेखींचा तानी करके प्राचीन और मान्य ग्रन्थों का अर्थान्तर करना भी अनुचित और हानि कारक है।" विषम ज्वर", जिसे आज कल, मलेरिया, कहते है, जीवाणुसे ही उत्पन्न होता है यह मान लेने पर भी प्राचीन आचार्यों के ग्रन्थों का इसी रूप में समन्वय करना, तबतक सगत नहीं कहा जा सका जब तक उसके प्रमाण दोष- रहित न हों। यह भी कुछ आवश्यक नहीं है कि प्राचीन ग्रन्थों की सभी बातें भ्रान्ति शून्य ही मानी जांय सम्भव है, प्राचीन आचार्यों ने, विषमज्वर, के वैकल्पिक कारण, भूताभिषङ्गको ठीक ठीक नहीं समझा हो या मिथ्या ही समझा हो, परन्तु ऐसे स्थलों में, शब्द का प्रयोग उन्हों ने कीटाणु के अर्थ में किया है, यह बात स्वीकार करने के पहले साधक बाधक प्रमाणों की ओर दृष्टि पात करना चाहिये।

वैज्ञानिकों ने' मलेरिया का कारण जीवाणु को माना है, यह ठीक है और इस में संशय की आवश्यकता नहीं है, परन्तु इसी कारण से यह सिद्ध नहीं होसकता कि, ऐसेस्थलो में" भूतशब्द प्रयोग प्राचीन आयुर्वेद ग्रन्थ- कारों ने जीवाणु के ही अर्थ में किया है। खींचा तानी करके प्राचीन औरनवीन ज्ञानका समन्वय करनेकी अपेक्षा" सर्व सर्व न जानाति" को स्वीकार कर लेना ही ज्यादे लाभ दायक है। पथ- प्रदर्शक, के सम्पादक को जैसे, भूतों, के रूप, शक्ति और क्रियाकी जिज्ञासा ऐसे स्थलों में हुई है, उसी तरह" भूत सामान्य लक्षण मलाः कुप्यति" इस वाक्य के समन्वय की जिज्ञासा किसी को होसकती है या नहीं? क्या सम्पादक जी कृपया यह प्रकाशित करेंगे कि, "हास्य रोदनादि" किन जीवाणुओं के कार्य है? यदि जीवाणु कृत ज्वर की उग्रता के कारण इन लक्षणो का सद्भाव माना जायतो फिर कुछ विशेषता नही रह जाती? सभी ज्वरों की उग्रता में चिन्त का भ्रमसम्भव है।" सुश्रुत" के व्यज्येत बाल व्यजनैः"' इत्यादि श्लोकों को लिख कर आंख में धूल झोंकने की पूरी चेष्टा की गई है? इस प्रकरणमें "आधिदैविक" और- विशिष्ठ आगन्तुक बाधाओं से व्रणितों की रक्षा के उपाय बनाये गये हैं, जिन में कीट नाशक द्रव्यों के विविध उपयोगों के साथ साथ; रक्षोघ्न" उपायों का

भी निर्देश किया गया है और उपसंहार में यह लिखा है:— "अनेन विधिना युक्तमादा वेव निशाचराः" इत्यादि इसी लिये "सर्पपारिष्ट पत्रा भ्याम; इत्यादि श्लोक की व्याख्या में "मक्षिकादीनां रक्तादीनांच रक्षार्थ धूपमाह" यह प्रतीक दिया है। हम सम्पादक जी से यह पूछना चाहतेहे कि-

इन स्थलों में राक्षस, भूत इत्यादि शब्दो का-अर्थ यदि "जीवाणु" ही समझते है तो निम्न लिखित सन्दर्भों का समन्वय कैसे होगा ?

(क) सिहा विहाराणि महा वीर्याणि रक्षाँसि पशुपति कुबेरानुचराणि क्षतज निमिन्त प्राणिनक्षुप सर्पन्ति जिघासू नि वाकदाचित।।

(ख) ते तु सन्तर्पिता आत्म वन्त न हिंस्युः।

(ग) तेषां सत्कार कामानाम् इत्यादि।

आप पूछते है कि, वह कौन से राक्षस है जो वच कुष्ठादिसे नष्ट होते है,। इस जगह पर आपको स्मरण रखना चाहिये:-" अचिन्त्यो हिमणि मन्त्रौषधीनां प्रभावः।"। ग्रन्थोंमें बहुतेरे ऐसे प्रयोग हैं जिनसे दृश्य और अदृश्य आप दाओ का नाश होता है। उन प्रयोगों में जो द्रव्य हैं उनके गुण दृश्य और अदृश्य भी है। ऐसी हालत में पहले से जिन गुणो का अनुमान किया जाता है। दृश्य गुणो की प्रधानता से उनकी उपेक्षा नही की जा सकती। शिशु- रक्षा विधान में जह हम सूति, कागार के प्रबन्ध में, रक्षोघ्न" द्रव्यो का प्रयोग देखते हैं वहां ही "द्वारेच मुसल देहली मनु तिरश्चीन न्यस्त कुर्याति "यह भी देखते है। अगर हम यह पूछें कि, इस मुसलन्यास से कीटाणुओं का नाश होता है या नही तो शायद अनुचित न होगा हमारा तात्पर्य यह है कि, जिन सर्षप इत्यादि द्रव्यों में कीटाणु नाश करने की शक्ति हैउनमें और भी कुछ शक्ति हैं। ग्रन्थो में शताधिक स्थलों पर "भूत" शब्द का प्रयोग हो आया है परन्तु उनको जीवाणु वाचक सिद्ध करना बहुत ही कठिन हैं और किसी तरहसिद्ध करने पर भी उन ग्रन्थों का समन्वय करनानितांत असम्भव है। मलेरिया का कारण कीटाणुनहीं है और भूताभिषङ्ग कारण है यहहमारा तात्पर्य नहीं हैं हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि, प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रथो के द्वारा "भूत" शब्द कीटाणु के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ हैं। प्रत्युत देवियोनि विशेष के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है - उन लोगों की यह धारणा गलत होसकती है और सही भी, समय अनंत है, आविश्कार भी नित्य नये होते ही जाते है और उनके प्रभाव से जिस बात को हम कल असम्भव समझते थे आज उसी के सत्य समझने के लिये विवश हुये हैं। कोन कह सकता था कि, इस बीसवी शताब्दी में युरुप के बड़े बड़े विद्वान और प्रोफेसर श्री राम दास गोड जैसे प्रतिभा शाली और सत्य प्रेमी विद्वानो के परिमार्जित विचार में "भूत योनि" और उसके विलक्षण धर्म इस तरह सत्य मालूम होगे।

पाण्डेय पराशर भट्टाचार्य्य (वैद्य) चतुर्भुज
शारदा भवनमुज्जफरनगर



जल चिकित्सा की जान

प्रातः चार बजे के अवसर ,
जल- विराट का खुलता द्वार।
सकल जलों को एकतार कर ,
व्यापक होते जल सरकार ॥

'क्षीर सिन्धु' से लेकर' नीचे-
अतल- तलातल होता एक ।
बूंद -बूंद- 'जल- विष्णु विराजे-
प्रातः काल का यही विवेक ॥

सूर्य- उदय से प्रथम जाग कर .
धोकर मुख. कर कुल्ले चार।
औषधि- रूप मान उस जल को ,
एक पाव पीजे ,हरवार ॥

धीरे धीरे उसे बढ़ाना ,
हो जावेगा वरन् जुकाम ।
उसको केवल जल मत जानो ,
उसमें व्यापक थे- श्रीराम ॥

सुधा सिन्धु–सम, धन्वन्तरि जल,
क्षीर-सिन्धु की एक लकीर ॥
सेवन करते चतुर ग्रही जन,
सेवन करते, सकल फकीर।

श्रद्धा युत विश्वास भाव से,
सेवन का कीजे व्यवहार ॥
तन के तीन ताप हट जावें-
दुष्ट 'तपैदिक' हौवे क्षार ।

मन के पाप सकल छुट जावें,
विकसित होवे सात्विकि- बुद्धि ॥
जो जन, प्रातः जल के सेवक,
उनकी हो जाती है शुद्धि ।

चिन्ता, कोप और भय छूटै
हो' अकाल- मरना, भी दूर ॥
चमकेगा मुख, चन्द्र- किरण सा,
चाल चलन में टपके नूर ॥

"नयन जी"



रोगी परीक्षा ।

या (Case taking)

लेखक—श्रीमान् स्नातक योगीराज जी आयुर्वेदालंकार, गुरुकुल कांगड़ी ।



ब रोगी प्रारम्भ में आये तब उससे निम्न लिखित प्रश्न करे परीक्षा दो प्रकार की हैं एक प्रश्नात्मक (Interrs gative द्वितीय परीक्षात्मक (Physical Examination)

प्रश्नात्मक

(1) परिचय-

१—नाम

२—आयु

३—जाति

४—पेसा

५—विवहित या अविवाहित

६—पूरा पता

(2) मुख्य शिकायत क्या है और कैसी हैं

(क) कब आरम्भ हुआ

(ख) किस प्रकार आरम्भ हुआ

(ग) भिन्न भिन्न लक्षण किस क्रमसे आरम्भ हुवे

(घ) अब कौन २ से मुख्य लक्षण हैं जो उसे पीड़ित कर रहे हैं ।

(ङ) रोग की क्या २ चिकित्सा की जाचुकी है।

(3) रोगी का इतिवृत्त-

(क) शारीरिक अवस्था कैसी थी

(ख) वह क्या २ भोजन करता रहा है। तमाकू चाय मदिरा आदि का सेवन करता है या नहीं

(ग) इससेपहलेभी यदि रोग हुआ था तब कितने समय रहा था।

(4) परिवारिक

(क) रोगीकेमाता पिता कैसे हैं यदि जीवितहै तबउनकी आयु तथा शारीरिक अवस्थाकैसी है। यदि मृत हैं तब कैसे और कब मरे।

(ख) भाई बहिन कितने हैंऔरकितने थे यदि मृत्युहुई तब किस रोग से हुई।

(ग) रोगी के बाल बच्चे कितने हैं।

आयुर्वेदीय सामान्य परीक्षा

निम्न लिखित बातों की परीक्षाकरें—।

(1) रोगी की साधारण मानसिक और शारीरिक अवस्था

(ख) रोगी की प्रकृति।

प्रकृतिः—

(१)- वातिक प्रकृति—धृति,स्मृति,सौहार्द तथा चेष्टायें अनवस्थित होती हैं तीव्र तृष्णा बुभुक्षा युक्त होताहै।

२-पैतिक—उत्कृष्ट बुद्धि,वबोलनेमें निपुण स्वप्न में विद्युतऔरउल्का आदि देखताहै

कफात्मक प्रकृति—

शरीर का भारीपन, आवाज़ का भारीपन चाञ्चल्य नहीं होता। स्वप्न प्रायः नदी आदिमें तैरने के आते हैं।

मानसिक और शारीरिक अवस्था

(2) पाचन शक्ति

(3) ऋतु काल

(4) मुख की आकृति और मुख के भाव-

(5) मुख का रूप रंग या मुख पर शोथ पाण्डु आदि के लक्षण

(6) रोगी की आखें।

(7) रोगी में किस दोष की प्रधानता है। यदि सारे अंग में तोद, शूल, श्यामता, खरता या शीतता,शोष सुप्त ता परुषता हो और यदि सम्पूर्ण देह व्यापी हो तब वातज दोष होगा।

(8) पित्त दोष में—दाह,राग, पाक,कोथ, ताप, प्रलाप मूर्छा आदि लक्षण होते हैं।

(9) कफ दोषमें—गुरुता, उत्सन्नता, स्निग्धता स्तिमितता कण्डुता (जो ओजक पदार्थों से हट जाये) रोग की चिर स्थायिता, आदि लक्षण होते है।

(10) यदि रोगी लेटा खड़ा या चलता हो तब उसकी क्या क्या अवस्थायें होती हैं। इनका निरीक्षण करें।

(11) रोगी के खड़े होने पर क्या अवस्थायें होती हैं।

Physical Examination

(परीक्षात्मक)

"प्रश्न तथा परीक्षा दोनों शामिल हैं"

[यह परीक्षा ५ संस्थानों द्वारा की जाती है]

Alimentary System (महा स्तोतस) सम्बधी रोगो की परीक्षा के प्रश्न—

(1) भूख साधारण है या घटी हुई है अथवा अधिक है।

(2) प्यास कैसी लगती है।

(3) भोजन क्या क्या कितनी मात्रा में और किस समय किया जाताहै।

(4) यदि आमाशय में वेदना, गुरुता, अरति होती है तब भोजन से कितनी देरबाद शुरू होती है। और किस प्रकार के भोजन से यह लक्षण अधिक हो जाते हैं।

(2) क्याकेवल अरुचि ही रहतीहै या वमन भी होजाता है और उसमें क्या २ निकलता है।

(6) यदि वमन में रक्त आता है तब वहद्रव होता है या जमा हुआ, राशि क्या होती है।

(7) वमन के अतिरिक्तडकार आती हैं या नहीं उनका स्वाद क्या होता है।

(8) आद्मान होता है या नहीं— यदि होताहै तब केवल भोजन के पीछे होता है या हर समयहोता है।

(6) वायु मुख तथा गुदा द्वारा निकलती ह या नहीं।

(10) मल कैसा आता है— मल वन्ध है तब कितनी देर वाद आता है यदि अतिसार है तब दिन में कितनी वार आता है।

(1) मुख का स्वाद क्या रहता हैं।

महा स्तोतस सम्बन्धि जनों की परीक्षा—

(१)मुख(२)दांत(३) मसूड़े (४) जिह्वा (५) गला पृथकर देखकरइनकी व्यवस्था लिखें।

(2) कोष्ठ का निरीक्षण करें।

(१)–दर्शन (InPsection).

(२)–स्पर्शन (Pal pation)

(३)–टकोर द्वारा (Percussion)

(४)–गुदाकीपरीक्षा(Rictal Palpation)

(3) वमन तथा मलादि की परीक्षा करें।

CirculatoryHsystem (रक्त संस्थान) सम्बन्धि रोगों की परीक्षा के प्रश्नः—

(1) कृच्छ्र श्वास है या नहीं— होता है तो लेटने के समय होता है या काम करने के समय होता है।

(2) हृदय प्रदेश पर दर्द होता है या नहीं यदि होता हो तब रोगी के अरुस्थान पर हाथ रखवायें। क्या वेदना एक स्थान पर होती है या फैलती है।

(3) हृत्कम्प होता है यानहीं–होता है तोउसका भोजन से सम्बन्ध है या नहीं

निरंतर होता है या श्रम करने पर मदर होता है या स्पष्ट तथा अनुभव ।

(4) निद्रा अच्छी रह आती है या नहीं यदि स्वप्न आते हैं तब किस तरह के।

(5) सिर में चक्कर आते हैं या नहीं।

(9) थोड़ा श्रम करने के बाद शरीर शिथिल होताहै या नहीं।

(7) पैर सूजते हैं या नहीं

(8) नकसीर फूटती है या नहीं।

रक्तसंस्थान सम्बन्धि अङ्गों की परीक्षा।

(1) नाड़ी परीक्षा—

(क)नाड़ी की गति १ मिनिट में क्या है।

(ख)गति नियमित है या अनियमित ।

(ग)नाड़ी का दबाव कैसा है ।

(घ)नाड़ी का बल।

(ङ) नाड़ी किस दोष की सूचक है।

(च)नाड़ी मृत्यु की सूचक है या नहीं।

(2) हृदय परीक्षा—

*(क)इसमें Apex (एपेक्स)का स्पन्दन तथा गति को देखें।

(ख)हथेली से धमन का अनुभव करें।—

(ग)टकोर द्वारा, हृत्सीमाका पता लगायें।

(घ)श्रवण करें एपेक्सपर और दायीं ओर कीदूसरी पर्शुका के नीचे (Aortic-value)काशब्द सुनेंयदि कोई फूत्कार सुनाईपड़े तबउसकी दिशा को जांचें।

(?) रक्त परीक्षा

(क) सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा रक्ताणुओं तथा श्वेताणुओं आदि का निरीक्षण करें।

Respiratory System(श्वास सस्थान) सम्बन्धि रोगों के प्रश्नः—

(1) कास सूखी या है गीली कितती बार आती है।किस समय आती है। खांसने के साथ वेदना होती हे या नही। वमन होती हे या नहीं।

(2) कफ यदि आता हो तब राशी,रंग, गाढ़ा तथा पतलापन तथा उस में रक्त का काला या लाल रंग तथा झाग दार आने का पता चलायें।

(3) वक्षस् में वेदना होती है या नहीं जैसे श्वास ज्वर (Pneumonia) तथा पार्श्व शूल (Pleuricy) में दर्द निरन्तर होती है या ठहरर कर अथवा श्वांस लेने पर होती हे।

(4) कृच्छ्र श्वास है तब क्या वह निरंतर रहता है या कभीर वेगों में होता है या केवल कुछ श्रम करने पर आता है।

श्वास सम्बधी अङ्गों की परीक्षा :—

(1) श्वास की प्रति मिनट सख्या

(2) नासिका गाल ओष्ठ आदिका रंग क्या है

* नोट—हृदय की एपेक्स वक्षस में ५वीं तथा ६वीं परशुका के बीच में होती है जहा हृदय शब्द सुनाई पड़ता है।

नासिका में चेष्टा होती है या नहीं ?

वक्षस् की दर्शन परीक्षा :—

(क) आकृति

(ख) फैलने की शक्ति

(ग) दोनों पार्श्वों की तुलना।

स्पर्शन परीक्षाः—
छाती पर होने वाले कंपन हथेली से अनुभव करें।

टकोर परीक्षाः—
इस से छाती के ठोस पन और खोखलेपनका अनुभव करें।

श्रवण परीक्षाः—
फुप्फुस की भिन्न २ ध्वनियों को सुनें।

मूत्र संस्थान सम्बधी रोगों की परीक्षाः—

urinary sysytem

(1) कमरमें कहीं दर्द होता है या नहीं एक ही स्थानपरहै या फैलने वाली,यदिफैलने वालीहै तब किस दिशामें फैलती है

(2) सिर दर्द वमन तथाबेचैनी के दौरे होते हैं या नहीं। तथा कठिन श्वास होता है या नहींजैसे मूत्र विषसंक्रमण (Uraemia) में केवल प्रात. ही आंखों की सूजन होती है या नहीं।

(3) मल कैसा आता है।

(4) मूत्र रात्रि में कितना आता है। दिन रात्रि में कितना। साफ़ होता है या गदला है यदि गदला होता है तब गाद पहले आती है या पीछे।

(5) मूत्र करते समय दर्द या जलन होती है या नहीं।

मूत्र संस्थान सम्बधि अङ्गों की परीक्षाः—

(1) वृक्क की परीक्षा।

(2) मूत्र परीक्षा :—

(क) मूत्र का रंग
(ख) मूत्र की मात्रा
(ग) मूत्र की घनता जैसे मधुमेह में १०२५ सेऊपर होगी।
(घ) प्रतिक्रिया अर्थात् क्षारीय है या अक्षारीय है।
(ङ) गन्ध

मूत्र के पदार्थों की परीक्षा :—

(क) निक्षेप (Precipilatis)
(ख) रक्त
(ग) खांड़
(घ) Alhumine (एल्ब्युमिन)
(ङ) Phosphates (फौस्फेट)
(च) Uratis (यूरेट्स) आदि,

Nervous system वातसाँस्थानिक रोगोंकेप्रश्न

(1) वात साँस्थानिक रोगका वश में आक्रमण हुआ है या नहीं।

(2) रोगी शीसे, संखिया पारदआदि के कार खाने में काम करता है या नहीं।

3 कभी फिरङ्ग रोग हुआ है या नहीं।

4 मदिरा पान करता है या नहीं तथा चिरस्थायी पान कर चुका है ?

5 मृगी के वेगों में कितना अंतर होता है।

6 वेग जागृत अथवा शयनावस्था में आते हैं। वेग से पहिले उद्वर्त होते हैं या नहीं। यदि होते हैं तब कितनी देर पहले। (ख) वेग सहसा आरम्भ होता है,

1 या क्रमिक।

2 वेग में आक्षेप होते हैं या नहीं।

3 यदि होते हैं तब वेस्थानिक होते हैं या व्यापी।

4 चोट लगती है या नहीं।

वात संस्थानिक रोगों की परीक्षा।

1 रोगी की सामान्य बुद्धि स्मृति शक्ति कैसी है

(2) भिन्न २ शारीरिक प्रति क्षेप (Reflexes) कैसे हैं। होते हैं या नहीं जैसे-निम्न लिखित प्रति क्षेप शरीर में मिलते हैं

(क) (Planter Reflex) इस में पादतल पर गुद,गुदी से पञा सिकुड़ता है।

(ख) यदि आमाशय प्रदेश पर खुजलाया जाय, तब त्वचा का(Spasm)सकोच होता है।

(ग) यदि कोष्ठ को ऊपर से नीचे मलें तब नाभी प्रदेश का तनाव होता है।

(घ) अगर सोते हुवे की आंख के अदर छुवा जाय तब मनुष्य आंखें बंद कर लेता है

(ङ) यदि प्रकाश आदि द्वारा अक्षि कनीनिको को उत्तेजित किया जाय तब तारक संकुचित न हो जायेगा।

(च) यदि तालू को स्पर्श किया जाय तब निगलने की प्रकिया अपने आप होती है।

(छ) यदि (Buttocks) चूतड़पर स्पर्श किया जाय तब सारी मांस पेशी अपने आप हिल जायेगी।

(ज) उसके अंत तथा सन्मुख देश की त्वचा को यदि हाथ लगाया जाय तब उस ओर का अण्ड कोश प्रति कोप करता है।

(झ) यदि दोनों पार्श्वस्थि (Acaprboc) के बीच में क्षोभ पैदा किया जाय तब दोनों असं फलको की मांस पेशियां संकुचित हो जाती है।

(ञ) एक घुटने पर दूसरे घुटने को रख पैर लटका कर उपर के घुटने पर आघात से (वह स्वतः हिलना है यह बहुत प्रसिद्ध है। समाप्त

(ख) Abdominal Reflex

(ग) Umbilical reflex

(घ) Conjunctinal reflex

(ङ) Pupil refle

(च) Palatal reflex

(छ) Eluteal reflex

(ज) Cremestric reflex

(झ) Scapuler reflex

(ञ) Knee jerk

श्रीधन्वन्तरि वन्दनम्

:---पु० गीतिका---:

(अजब हैरान हूं भगवन) इत्यनुश्रितरीत्या

वयम्वन्दामहे धन्वन्तरे ! पादार विन्दन्ते ।
सुरासुर मर्त्य जनसंसेवितम्पादार विन्दन्ते ॥
त्वायायुर्वेद विद्यायाः प्रदत्तं ज्ञान मनुकम्प्य ।
अतो धन्वन्तरे ? पूज्यं सदापादार विन्दन्ते ॥
परम्बहु विस्मृतञ्चिरकाल यानादत्त विज्ञानम् ।
अतोभूयः समागच्छे द्विभो पादार विन्दन्ते ॥
यदामट वैद्यत्रयौ शल्प विज्ञौ कीर्त्तितावास्ताम् ।
अनर्हत्येव तत्कालङ्कथम्पादार विन्दन्ते ॥
सुषेणस्येव वैद्यान्मुन्यवापयितुं हिशीघ्रेण ॥
कृपाम्भूयः करिष्यत्यत्र किम्पादार विन्दन्ते ॥
धियो हीनोपि वाञ्छत्येष रविदत्तो दयासिन्धो ?
भुवम्भूयोप्यल कुर्याद्विभो ! पादार विन्दन्ते ॥

लेखक---रविदत्त शास्त्री देहली



रुदन्ती

(रुद्रवन्ती)

लेखक—आयुर्वेदमहामहोपाध्याय रसायन शास्त्री भागीरथ स्वामी आयुर्वेदाचार्य (कलकत्ता)



रुदन्ती का धन्वन्तरि में छपा हुआ चित्र मैंने देखा है। वह ठीक रुदन्ती का मालूम होता है इस की साधारण परीक्षा है, इस की पत्ती चने के समान धनी होती है। चाखने से लवण पूर्ण रूप से मालूम होता है। इसी लिये इस का नाम लाणा बूटी है। इस के नीचे का भाग तैल-सिक्त या जलसिक्त (तर) रहता है। गर्मी की ऋतु में उस के नीचे चींटियां रहती हैं। इस का कारण उसके तल भाग में शीतलता है। यह श्वेत, लाल पीले, काले फूल के भेद से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र नाम से चार प्रकार की कही जाती हैं। इस को ढक कपड़े में बांध कर रखने से २—३ दिन के बाद खोलने से तर पानी में भीजी हुई सी निकलती है। यदि धोय डाली जावे या इस पर अच्छी वर्षा हो जावे तो लवण का स्वाद नाममात्र भी नहीं रहता। १०—१५ दिन में फिर लवण हो जाता है। यह खड़ी हुई पुरुष जाति वाली (रुदती) बिल कुल जमीन पर बिछी हुई छातके दार रुदंती स्त्री जाति होती है। स्त्री जातिवाली

औरस्वेत पुष्प की या काले फूल वाली रसायनी लोग उत्तम समझते है। इस की जड़ में सफेद कौड़ी रखने से पीली होना बताया जाता है। तथा मध्यान्ह में उस पर खड़े होकर आकाश को देखने से नक्षत्र (तारां) का दृष्टिगत होना बताया जाता है रुदती कल्प में लिखा है कि दरिद्रियों को देखकर यह बूटी रुदन करती है हाय मेरे रहते हुये ससार में यह दरिद्री क्यों है। इससे सोना भी बनताहै ! एक महात्मा ने एक साधु रूप में गन्ड की के तट पर भजन करने वाले एक ज्योतिषी को पुन्य कर लिखा हुआ प्रयोग दान में दिया था। इस का जिकर एक दिन फरुखाबाद के नारायण-सिंह जी से किया। कुछ काल के पश्चात एक गरीब ब्राह्मण पुत्री के विवाह के लिये कुछ याचना करने आया तब वह पर्चा नारायण को दिया गया उसने उसके अनुसार पारद भस्म बना कर ५२तोला पाव रत्ती के हिसाब से सोना बनाया उससे सोना बन गया जिससे ब्राह्मण का काम हुआ यह पर्चा नारायणके हीपास रहा फिर १५वर्ष बाद नारायण ने वह प्रयोग बनाया पारद की भस्म तो हो गयी परतु सुवर्ण न हुआ। इसी प्रकार नारायण के हट से २ बार मैंनेभी बनाया। पारद भस्म न हुआ उड़ गया परतु हमने जब परचा मांगा तो विचारे ने बहुत ढूंढा नहीं मिला प्रयोग इस लिये नहीं लिखाहै कि लेख व्यर्थ बढ़ता है यदि पाठकों की भी रुचि होगी तो प्रकाशितकर दिया जायगा इस चित्र में केवल इतना ही सन्देह हैं कि यह रुदती स्त्री जाति का क्षुप नहीं किंतु पुरुष जाति का क्षुप है। स्त्री जाति वाली ब्राह्मण वर्ण की रुदंती अंधेरी रात्रि में स्वेताभ, चमकती मालूम होती है। इसके लिये फकीर साधू लोग खागा (प्रयाग)के पास जाकर काम करते हैं वहीं यह होती हैं ।

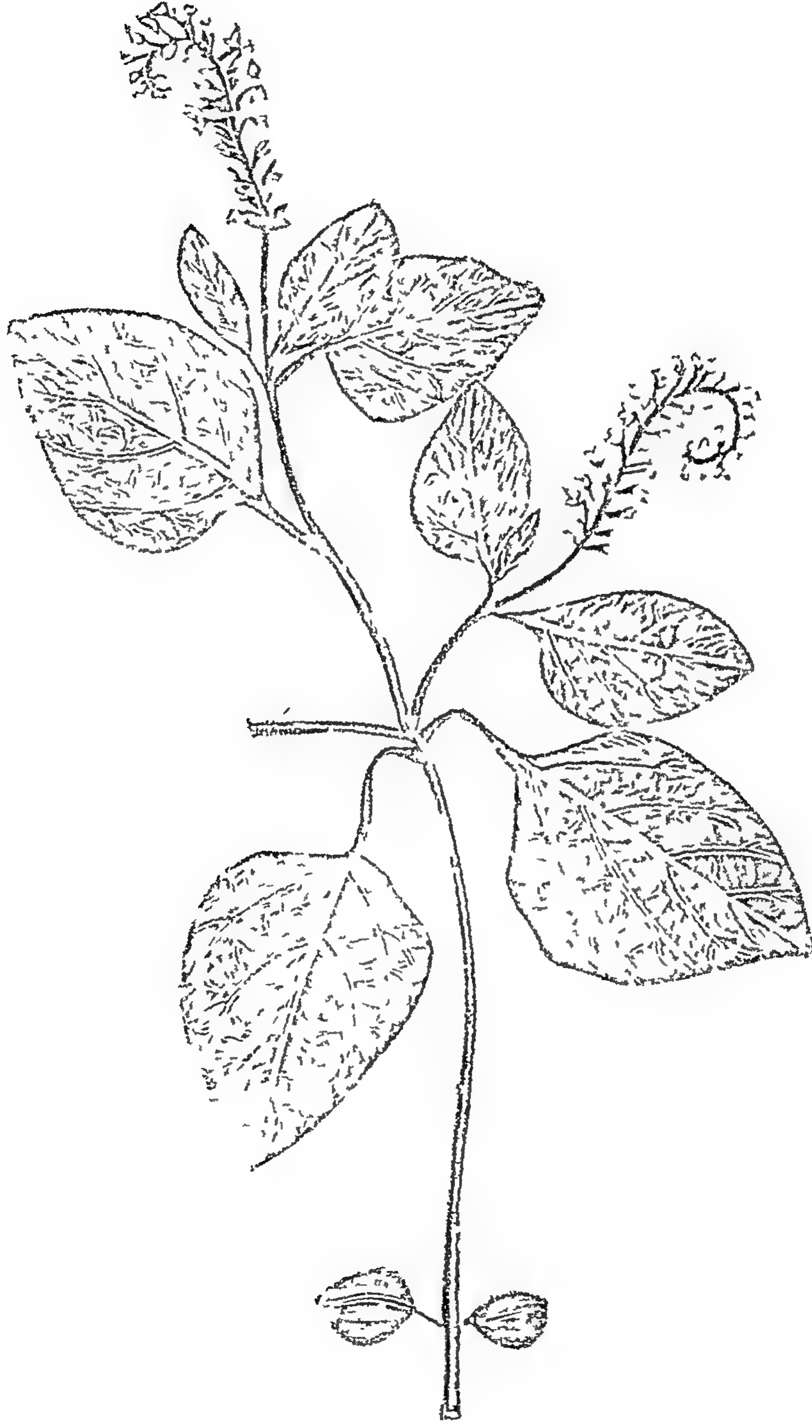
रुद्रवन्ती ।

यह बूटी जिला फतेहपुर हसुआ में एक तालाब के किनारे पाई जाती है,और यह रात में चमकाभी करती है । किंतु इसको उखाडते समय यह स्मरण रखना चाहिये कि जिसस्थान पर वह चमकती है उस स्थान पर रात्रि में कोई निशान रख देवें ताकि दिन मे जाकर उस जगह के आस पास जो तालाब में खुश्क हो जाने से दरार पड गई है। उन दरारोंको चिन्हत करदे ताकि रात्रि में उन चिन्हत दरारों के अन्दर से चमकती हुई रुदवन्ती प्राप्त हो सके। अन्यथा वहां पर से प्रायः मनुष्य ऊपर से उखाड़ लेते हैं। वह रुदवन्ती है। और रुदवन्ती के बराबर गुण नहीं रखता यह जाड़े की मौसम में ज्यादा पाई जाती है। और इस तालाब के किनारे जाड़े की मौसम में अनेक साधू तथा कीमियागरआकर रहते हैं तथा रसायन वगैरा बनाते भी हैं । उप-रोक्त उखाडने की रीति मुझे वहीं पर एक साधु से मालूम हुई थी।

(काला भांगरा)—लकड़ी स्याई मायल बैंजनी पत्ते मामूली भांगरे के से, फूल का स्याई मायल बैंजनी होता है पत्तों की नसें स्याई मायल होती हैं वह जि० फतेहपुर तहसील गाजीपुर मौजा दौलान में ज्यादा मिक़दार में पैदा होता है।

लखड़िया

यह एक वृक्ष विल्व के समान जिसका कि पत्ता गूलर के पत्ते से बहुत कुछ मिलता हुआ एक फ़कीर की मढ़ी मौजा टहपरागनीमत में रिछा रोडरेलवेस्टेशन से (काठगोदाम ब्रांच R. K. R.)



हस्त शुंडी

पूर्व दिशा में सात मील की दूरी परहै। इस वृक्ष के नीचे हमेशा दो चार कुष्ठी पड़े रहते हैं। और इस वृक्ष की २ पत्ती और उसके बराबर ही काली मिर्च डाल कर घोट घोट पीते हुए तीन चार मास में हो स्वस्थ हो अपने घर चले जाते हैं। इस वृक्ष को उस गाँव वाले लखडियां नाम से पुकारते हैं। इस वृक्ष का पत्ता मैंने परीक्षार्थ, तथा संस्कृत नाम द्वारा प्रकाशनार्थ (धन्वन्तरि) कार्यालय में भी भेजा है। और भी वैद्य भाई परीक्षार्थ मंग सकते हैं। मै उनको पत्र आते ही फौरन् भेजूंगा। लेखक–शांतिप्रकाश चन्द्र B. S.

हस्ति शुंडी

हस्तिनी हस्तिशुंडा च शुंडी धूसर पत्रिका [रा० नि०]

सं०–हस्तिनी, हस्तिशुंडा, हस्तिशुंडी, धूसर पत्रिका, महाशुंडी।

हि०–हाथीसूंडी, कड़ेड़ा, उँठजीरा।

गु०–हाथीसुंडा, भुरूंडी, सिरयारी, हट सुए, हाथी सुए।

म०–हस्तिशुंडी, नेलवाल।

त०–हस्तिशुंडे।

कर०–जलदावरे।

ले०–Heliatropium Indicum

वर्णन–इसका क्षुप १—३ फिट तक उंचा बहुत सी शाखाओं युक्त, पत्ते नागरपान के आकार के लम्बे गोल सफेद रूएंदार खरदरे सफेदी मायल हरे रंग के होते हैं। फूलों की मंजरी १–२ इञ्च तक लम्बी बहुधा पत्तों के विरुद्ध दशा में निकल कर हाथी के सूंड़ के अग्रभाग के सदृश मुड़ली जाया करती है। जड़ पृथवी में गहरी समाई हुई बादामी रंग की होती है। यह बूंटी माघ फाल्गुण तक सुख जाती है और बिना बोये ही पुनः वर्षा काल में बहुतायत से दीख पड़ती है।

गुण—त्रिदोष ज्वर, शोथ, विषहर है॥

उपयोग-प्रयोगः—

(१) इसकी जड की मूसलियों को उखाड कर बिच्छू के काटे पर लेप करने से लाभ होता है।

(२) इसके पत्तों के रस में हाथ भिगोकर फिर सुखाने और फिर बिच्छू पकड़ने से वह डक नही मारता।

(३) सब प्रकार के व्रणों पर इसके पत्तों का अर्क तैल में जला कर लगाना।

(४) बावले कुत्ते के काटे पर इसके पत्तों का लेप करना।

(५) ५ तोले इसके पत्तों को कूट कर पोटली बना कर बारी के ज्वर आने के ६ घंटे पहले सूंघना।

(६) (करीन्द्र शुडयादि सन्निपात विध्वंस रस) सिंगरफ उत्तम आधासेर लेकर उससे पारा निकालकर उसे सेंधेनमक की पोटलीमें बांध कर केवल जल से ३ पहर स्वेद करना। पुनः उस पारद को दोनो कूधियों के रस में खरल कर उतना ही गंधक शुद्ध डाल कर हाथीशुंडी के रस में ७ दिन खरल कर फिर बालुयंत्र में पचा कर निकाललो। उसको त्रिकुटे के रस की भावना देना ७ दिन, पुनः उससे आधी स्वेत ताम्रभस्म और उतना ही शुद्ध विष मिला कर खरल कर शीशी में रखना। इसकी १ चावल भर मात्रा अद्रक केअर्क और मधु के साथ देने से सन्निपात को शांत करता

है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से रोगों में यथानुपान देने से अच्छा गुण करता है। यह एक अनुभव सिद्ध प्रयोग है ॥

"बूटी दर्पण"

बैंगनी फूल की सहदेवी

इसे हिन्दी में लाल वरियाला और बंगला में लाल बरेला कहते हैं। इसका विहार और कहीं २ सयुक्त प्रान्त में व्यवहार होता है यह क्षुप जाति की वनौषधि हैं और सब ही प्रान्तो में सब ही ऋतुओं में मिल जाती है किन्तु वर्षा और शीत काल में अधिक मिलती है यह एक फीट से २ फीट तक ऊंचा होता है इसके पत्ते पोदीना के पत्ते के समान किन्तु उससे कुछ चौड़े होते हैं तथा विषम वर्त्ती लगते हैं फूल बैंगनी रंग का बाल दार घुंडी से, ककरोंदा के फूलों के समान होते हैं। यह उपदंश, गठिया तथा सर्प विष नाशक है। रसायन शास्त्री प० भागीरथ स्वामी आयुर्वेद महामहोपाध्याय कलकत्ता प्रवासी ने धन्वन्तरि के गत किसी अंक में सर्प विष नाशक प्रयोग में इसे ही लिखा है।　　　गोभिल—



रसायन—मासिक पत्र। सम्पादक डा० गणपति-सिंह जी वर्म्मा एम०डी०एच० एन्ड० एम० एम० एम०डी०एस चौंटला (हिसार) वार्षिक मूल्य ३)

इस मासिक पत्र का मई मास से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ है और हमारे सामने इसका पहला अंक है लेख और सम्पादन शैली उत्तम और सराहने योग्य है। हमें यह कहने में संकोच नहीं कि वर्त्तमान व्यापार सम्बन्धी पत्रों में यह सब से अच्छा पत्र है। रसायन और कला' व्यापार के अभिलाषियों को संग्रह कर सम्पादक के उत्साह को बढ़ानाचाहिये।

कमल—पाक्षिक पत्र। सम्पादक-मुकट विहारी गोभिल, कृष्णनारायणमाधव, बरेली।

यह पाक्षिक पत्र २ वर्ष से प्रकाशित हो रहा है। हमारे सामने इसका "रामाङ्क" है। इस में अनेक छोटे२ और साहित्यक लेख हैं। लेख प्रसिद्ध और प्रभावशाली लेखकों के लिखे हुए हैं। सम्पादन अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य—मासिक पत्र सम्पादक डाक्टर ब्रजेन्द्रनाथ जी गांगुली, एम, बी, उपसम्पादक बाबू जयमगलप्रसादसिंह जी। १०१ कर्न वालिस स्ट्रीट कलकत्ता। वार्षिक मूल्य २) रुपया।

इस मासिक पत्रका जेष्ठ मास से ही प्रकाशित होना आरम्भ हुआ है। अभी इसके तीन अंक प्रकाशितहुए हैं। तीनो अंकोंमें छोटे२और गृहस्थो-पयोगी मार्के के लेख हैं। हम सहयोगी का सहर्ष स्वागत कर भगवान धन्वन्तरि से इसके चिरायु होने की प्रार्थना करते हैं। वैद्यों और गृहस्थो को इसके ग्राहक बन अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

कलावैभव—मासिक पत्र। सम्पादक-श्रीमान् पं० कृष्णरमाकान्त जी गोखले३० अपर चितपुर-रोड कलकत्ता। वार्षिक मूल्य २)

यह मासिक पत्र उद्योग, कला विषय का है, लेख अच्छे और पढ़ने योग्य हैं। हम इसकी उन्नति चाहते हैं।

आरोग्य रत्न—मासिक पत्र। सम्पादक-श्रीमान् आयुर्वेदाचार्य्य छोटेलालजी जैन। प्रकाशक-ज्ञानचन्द्र वैद्यशास्त्री दुर्गागंज इटावा वार्षिक मूल्य १) नमूना मुफ्त।

यह मासिकपत्र २० × २६ आठ पेजी के २ फार्म का है। लेख साधारण हैं पर यह अभी प्रकाशित हुआ है इससे हमें आशा है कि आगे के अङ्क अच्छे ढंगसे प्रकाशित होंगे।

आरोग्यसिन्धु—मासिक पत्र। सम्पादक-प्रकाशक, श्रीमान् प० लक्ष्मी नारायण जी शर्म्मा वैद्यराज, आरोग्यसिंधु कार्य्यालय फिरोजाबाद जिला आगरा। वार्षिक मूल्य ३)

इस मासिक पत्र का जोलाई माससे प्रकाशित होना आरम्भ हुआ है अभीतक २अंक प्रकाशित हुए हैं। दोनों अंकों का सम्पादन बड़ी योग्यता से हुआ है, लेख सब एक से एक बढ़ के निकले हैं। लेखों का चुनाव उत्तम और पढ़ने योग्य हुआ है छपाई, कागज, भी उत्तम हैं हमें इस के २हर अंक पढ़ और देख यह आशा होती है कि यह पत्र वर्त्तमान के सब पत्रों से श्रेष्ठ होजायगा यदि सम्पादक जी इसी प्रकार प्रयत्न करते रहेंगे। पर साथही हमें जब वैद्य समाज की उदासीनता और ग्राहकों की कमी का स्मरण होता है जिससे अनेक वैद्यक पत्र बन्द हो चुके हैं तब आशा निराशा मेंपरिणित हो जाती है हम वैद्यों से अनुरोध करते हैं कि वह इसके ग्राहक बनें और प्रकाशक के उत्साह को बढ़ावें।

आन्ध्रमेड़ीकल जनरल—मासिक पत्र। सम्पादक श्रीमान् डाक्टर प० लक्ष्मीपति, बी० ए०एम०बी० एन्ड०सी०एम०गिपम्रत्न मद्रास। वार्षिक मूल्य२)

यह इंग्लिश का मासिक पत्र है। सम्पादक वैद्य समाज के उन वैद्यों से परिचित्त हैं जो प्रायः वैद्य सम्मेलनों में सम्मिलित होते रहते हैं। आप के सम्पादन में यह पत्र बड़े अच्छे ढगसे प्रकाशित हो रहा है जो वैद्य इंग्लिश जानते हैं उन्हें इसे अवश्य मगाना चाहियें। इसके जून के अंक में "फुफ्फुस का नाड़ी व्रण" शीर्षकलेख बड़े महत्वका है।

रेलवे सीरीज़—सम्पादक व प्रकाशक बाबू बनारसीप्रसाद जी वर्मा- बनारस। मासिक। सीरीज़ सायज़ २० × ३०सोलह पेजी।

इस सीरीज़ के प्रत्येक अंक में छोटे२ उपन्यास रहते हैं- उपन्यास मन बहलाने और शिक्षा ग्रहण करने के लिये अच्छे साधन हैं- छपाई- कागज और चित्र चित्ताकर्शक होते हैं- उपन्यास प्रेमियों के लिये रेलवे सीरीज़ के ग्राहक बनना चाहिये।- वार्षिक मूल्य २॥) एक प्रति का ।) आना।

ब्राह्मणसर्वस्व—मासिक पत्र- सम्पादक श्री ब्रह्मदेव शास्त्री. काव्यतीर्थ प्रकाशक-ब्रह्मप्रेस इटावा वार्षिक मूल्य ३)

यह सनातम धर्म सम्बन्धी मासिक पत्र १५ वर्ष से प्रकाशित हो रहा है, इसने जो सनातन-धर्म की सेवा की है वह सनातनधर्मावलम्बियों से छिपी नहीं है- हमारे सामने जनवरी २५वें वर्ष का प्रवेशाङ्क नामक विशेषाङ्क है-इसमें अनेक महत्व पूर्ण लेख व कवितायें हैं-सनातनधर्मियों को इसके ग्राहक बन प्रकाशक के उत्साह को बढ़ाना चाहिये।

अमृत—श्रीयुत धजाराम जी वैद्य के सम्पादकत्व में देहली से यह साप्ताहिक पत्र निकलने

लगा है- जहां इस पत्र से आयुर्वेद का प्रचार होता है वहां व्यापार व्यवसाय योलीटीकिल व सामाजिक लेख भी रहते हैं चन्दा वार्षिक ४)है व छै माह का२।।) पत्र को अपना कर सम्पादक जी के उत्साह की वृद्धि करनी चाहिये।

वैद्य परिचय—यह १८ × २२ अठ पेजी साइज़ की त्रयमासिक पत्रिका है। इसके सम्पादक पं० विश्वेश्वरदयाल जी वैद्यराज बरालोकपुर वाले हैं। इस पत्रिका का मुख्य ध्येय वैद्योंका परिचय जनता के सन्मुख रखना है यह काम भी बड़े महत्व का है, और वैद्यों के लिये विशेष उपयोगी है इसमें कुछ चिकित्सा वर्णन भी रहता है—वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में अनुभूत योग माला भी निकलती है वैद्यो को इस पत्रिका में अपना परिचय अवश्य देना चाहिये। प्रवेश फ़ीस केवल।) है ।

संत—यह २० × ३० अठपेजी पत्र श्रीयुत बाबू शिवव्रत लाल जी द्वारा सम्पादित होता है मूल्य १२नम्बरों का ४।।)-संत एक समाजिक व धार्मिक पत्र है इसका परिचय इतने हीसे होसका है कि इस पत्र के सम्पादक एक उच्च कोटि के विद्वान जिज्ञासु व धार्मिक पुरुष हैं। उनकी योग्यता पजाब व यू०पी में आदर्शनीय है हमको पूर्ण विश्वास है कि इस पत्र के पढ़ने से भक्ति-ज्ञान व प्रेम का मनुष्य मात्र में सचार होगा जो सज्जन राधा स्वामी समुदाय के हैं उनके लिये तो बड़े महत्व की पत्रिका है मैनेजर संतश्रीरगज चौक न० ८२ इलाहाबाद से प्राप्त।

सरोज—सायज २० × ३०चौपेजी मूल्य वार्षिक४) छै माह का २।) सम्पादक-श्रीनवजादिकलाल जी श्री वास्तव व श्री रामप्रसाद जी पाण्डेय हैं। ज्येष्ठ की सख्या हमारे सामने है-इसके सभी लेख पढ़ने और विचारने योग्य है। चित्र भी सुदर व मनमोहक हैं आज कल राष्ट्र भाषा की उन्नति की ओर विद्वानों का अधिक ध्यान है। यह प्रसन्नता का विषय है कि प्रस्तुत पत्र आजकल के अच्छेकोटि के पत्रों में गणना करने योग्य है हमें आशा है कि भविष्य में यह अधिक उन्नति करेगा।



बालकों का पीलिया रोग—

छोटे २ बच्चों को यह रोग होता है और उन्हें ही भय प्रद है। लक्षण—प्रथम २–३ दिन तक बच्चे अधिक रोते हैं उसके बाद शरीर पीला पड़ जाता है दस्त पेशाब बराबर होता रहता है यह रोग १ दिन के बालक से लेकर १ महीने तक के बालकों को होता है उसके लिये हमारा अनुभूत प्रयोग यह है कि सौंफ और बकायन की पत्ती इन दोनों की दिन भर में ५–४ बार धूनी दे। इससे १–२ दिन में ही आराम हो जाता है यदि दस्त न होता हो तब थोड़े से जल में थोड़ा साबुन फेंट कर अथवा करेले की पत्ती या नमक का गुदा मार्ग से चढ़ा देने से दस्त हो जाता है।

वैद्य प्यारेलाल गुप्त रस शास्त्री

जुकाम का हुलास—

वर्क तिब्बत, उद खद्दूस, बनफसा इलायची-छोटी के छिलका, समान भाग ले कपड छन कर शीशी में रखले। इसमें से जुकाम वालों को १–२ रत्ती सुंघा दे तो छींक आकर तथा मलगम निकल कर मस्तिष्क हलका हो जाता है तथा शिर का दर्द भारापन नष्ट होजाता है अनेक बार का अनुभूत है प्रत्येक गृहस्थी और वैद्य को बनाकर रखना चाहिये तथा फला फल धन्वन्तरि में प्रकाशित कराना चाहिये। गोभिल—

चन्द्रेश्वर धूप—

मोर पंख, नीम के पत्ते, कटेली के फल, मिर्च-स्याह, हींग, जटा माँसी, बिनौले, बकरे के बाल,

सांप की कांचली, बिल्ली का विष्ठा, हाथी के दांत का बुरादा. इन सब को बराबर ले घी में मिलाकर रखले, दिनमें कई मरतवा धूनी दे तो बालकों की भूत बाधा दूर हो। अनुभूत।

शान्ति प्रकाशचन्द्र बी० एस०

पीनस की दवा—९

घोड़े की लीद का अर्क निकाल लेवे पांच-काली मिर्च गेर कर घोट लेवे फिर पांच बूंद एक स्वर में ऐसे ही दूसरे स्वरमें तीन रोज टपकावे एक दिन में दो मरतवा टपकावे हुक्मी दवा है।

शान्तिप्रकाशचन्द्र बी० एस०

फोड़ा पकाने वाली फुल्टिस—९

गेहूं का आटा, सुहागा, अंजीर, अलसी, आकास वेल गट्टा, से धानमक, अमलतास, घी, डालकर पकावे जब लेई तयार होजावे तब कच्चे व्रणपर बाँधे, बड़ी ही तेजी से व्रण को पका कर मवाद निकालदेता है।

फोड़ा पकाने वाली हलकी फुल्टिस—९

गेहूं का आटा, सुहागा, अमलतास का गूदा, इन तीनों चीजों को पका कर फुल्टिस बनावे। यह भी जल्द पकाती है।

भवदीय शान्तिप्रकाश चन्द्र B. S

सर्पदंश चिकित्सा—

क—नीला थोथा ४ तोला हुक्के का गुल ४ तोला खासन के बीज ४ तोला जामुन की छाल ४ तोला जामुन के पत्तों का अर्क १० तोला नागरमोथे की जड़ २ तोला कालीमिर्च ८ तोला तिपतिया ४ तोला निर्विसी ४ तोला बांझककोड़े की जड़ ४ तोला आक का दूध ४ तोला इन सब दवाओं को पीस कर चूर्ण बना लेवे, जामुन का अर्क आक का दूध इन में खूब घोटे छायामें सुखा कर रख लेवे। जिस किसी को सर्प ने काटा हो ६ मासे की फ.ी लगा कर १० तोला मट्ठा पिला देवे इस के सेवन से वमन तथा विरेचन होगा और विषउतर जावेगा अगर कै और दस्त न हों तो ६ मासे की और फकी करावे। जब वमन और विरेचन हो चुके तो गाय का घी ४ तोला कालीमिर्च एक टका भर पिला देवे। तीन दिन गेहूं चने की रोटी देवे। जो कि अलूनि होय और कुछ खाने को नहीं देना चाहिये। बैल को यदि साँप ने काटा हो तो सात पैसे भर दवा एक सेर तक्र में देवे। घोड़े को आठ पैसे भर। भैंसे को दस पैसे भर सेर भर मट्ठे में देवे एक पहर आदमी को चारपहर भैंसे को पांच पहर घोड़े को पानी न देवे, जानवरों को पाव भर घी मिर्चस्याह ४ तोले देवे।—

ख—जामुन के पत्तों का अर्क एक सेर नीला-थोथा छटाँक भर दोनों को मिला कर पकालेवे। जब तिहाई रह जावे तब उतार लेवे मनुष्यों को चार पैसेभर जानवरों को दस पैसेभरपिला देवे। ज़हर उतर जायगा। घी ४ तोला काली मिर्च १—तोला देवे ऊपर से इस दवा के सेवन से भी कै तथा दस्त होते हैं।

शान्तिप्रकाश चन्द्र बी. एस।

वाचस्पत्याख्यरस—

शुद्ध पारा, गन्धक, विष, शख, कौडी, सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, चिर्चिटा खार, इमली खार, पीपल खार, तिल क्षार, कदली क्षार, अर्क-क्षार सेहुंड क्षार, पलाश क्षार, सोंठ, मिर्च, पीपल, ज़ीरा, काला ज़ीरा, अजवायन चीता चव्य पीपला मूल, लौंग, छोटी इलायची, जायफल,

सेंधानमक, साँभर, कचलौना, समुद्र झाग, काला नमक, हींग, बड़ी हरड़ दालचीनी, नागकेसर, जाविञी, यह सब दवायें तीन:२ मारो;लेवे, चूका ३ तीन तोला लालमिर्चा ५ मारो, नीबूकेअर्क में घोट कर मटर वरावर गोली बनालेवें। एक गोली गरम पानी के साथ देवे। चार २ घटे के वाद अवस्थानुसार मात्रा घटा बढ़ाईभी जासकती है। तथा समय भी बढ़ाया तथा घटाया जा सकता है। यह प्रयोग मेरा पन्द्रह रोगियों पर अनुभूत हैं। तथा जब कि डाक्टरों ने (हाइपरटोनिकसोल्टसल्यूशन) का इजैक्शनकर रोगी त्याग दिया मगर ईश्वर की कृपा तथा आप लोगो की दुआ से उन रोगियो पर इस औषधि से विजय पाई। प्यास लगने पर लोग का पकाया हुआ पानी देना चाहिये, तथा आवश्यकता समझ कर चिकित्सक साथ २ कस्तूरी का भी प्रयोग देता जावे।

मारवेन-दुरटी—

मुर्दासिन १ तोला गेरू १तोला रसोत १ तोला तीनो को पानी में घोट कर झड़वेरी के वरावर गोली बना लेवे एक २ गोली एक २ घटे में देता जाय, विशूचिका दूर हो कैसी ही हालत क्यों न हो।

हलकून की दवा—

शालपर्णी के पत्ते चिलम में रख कर पीवे हलकून को फायदा हो।

मसान की गोली—

दालचीनी, पठानी लोध, इंद्र जौ, पोस्तदाना खूबकला, पतलीतज, गोरोचन, मृगीचड़ा, मुरगी अडा ये सब दवायें हम वजन लेलेवे इन सब के वरावर सूखी हुई भेड़िये की जयान लेवे। सब दवायें खरलकर रख लेवे मसान वाले को दिन में ३ या ४ मरतवा धूनी;देवे अवश्य लाभ होगा।

नतुवा डिब्बे की दवा—

शुद्ध पार,शुद्धगन्धक, हरिताल, सोंठि, मिर्च पीपल, त्रिफ़ले का छिलका–सुहागा–तरबूज के बीज–रेंहा के पत्तों का रस–सब वरावर लेकर आंगरे के रस में तीन दिन घोटे वाद मूंग प्रमाण गोली बना लेवे–१ गोली रोज देवे तो बालको के पसली का रोग जाय।

प्लेग पर—

पीपल १ मा० मिर्च स्याह २ मा० आक के फूल २ मा० तलजीके पत्र २ मा०, खूबकला २ मा० नीम के पत्ते २ मा० इन सब को घोट कर मारो २ भर की गोली बना लेवे एक गोली रोज खावे तो प्लेल का भय जाता रहता है।

शान्तिप्रकाशचन्द्र बी० एस०

व्रण पर–१

मेरा यह अनेक बार का हर प्रकार के व्रण पर परीक्षित प्रयोग है। प्रयोग–पुराना साफ कपड़ा ले २–३ परत कर सरसों के तैल में भिगो कर व्रण पर रक्खे और तैल सरसो का हर समय थोड़ा२ डालता रहे जिसमें कपड़ा तर रहे और दिन में ५–४ बार कपड़ा भी बदल दिया करें।

डा० जे०पी०काढू एम०पी०एस०



सख्या ३६

क—कोई मनमोहन चूर्ण जैसा मीठा स्वादिष्ट चूर्ण लिखने की कृपा करें।

ख—दाद का गरुड़ छाप जैसा उत्तम मलहम लिखने का कष्ट करें।

ग—धातुपुष्टकी मदन मंजरी जैसी गुटिका लिखिये।

घ—सर्व ज्वर नाशक उत्तम गोली लिखिये।

ङ—बढ़िया भूत नाथ जैसा तेल बनाने की विधि लिखिये।

च—नेत्रों के लिये कोई बढ़िया सुरमा बनाने की विधि लिखिये।

पं० लोकमणि जैन।

सख्या ३७

वैद्य महाशयों से प्रार्थना है कि १२-१४ वर्ष के एक लड़के को जो खाट(चार पाई) पर सोते में मूत्र (पेशाव कर) लेता है उसके लिये अनुभूत-प्रयोग लिखें।

प० रामखिलावन तिवाडी।

संख्या ३८

स्त्रियों को तपेदिक होता है या नहीं अनुभव तथा शास्त्रीय प्रमाण लिखें। वैद्यों की बड़ी कृपा होगी।

कृष्णदत्त वैद्य।

सख्या ३९

रोगी की उम्र २५। २६ वर्ष की है। वात प्रकृति है। पूर्व वायु लगने से तथा कोई वातिल पदार्थ के व्यवहार से वा उपवास (व्रत) करने से सर्वाङ्ग में वा किसी विशेषाङ्ग में वात प्रकुपित होजाता है। थोडासा व्यतिक्रम होने पर प्रतिश्याय (जुकाम) आक्रमण कर लेता है। शरीर सुस्त रहता है किसी काम में जी नहीं लगता दस्त साफ नहीं उतरता विबंधाधिक्य है। स्मरण शक्ति ठीक नहीं है। इसके शरीर में

सर्वदा नही रहती। रोग यह है कि स्वप्न दोष से स्खलित वीर्य अण्ड कोषों में जितनी जगह पर लिपट जाता था उतने स्थल पर जैसे कि मकरी (ऊर्ण नाभि) दब जाने से व मकरी का मूत्र पड़ जाने पर शरीर में पीले२ बड़े सेहरीदार छाले पड़ जाते है वैसे ही छाले पड़ कर ५-६दिन में अच्छे हो जाते थे और पपणी (सूखे हुये छालों की-खाल) झड़ जाने पर ज्यों के त्यों पोते निकल आते थे पर अब पपड़ी झड जाने पर उनके नीचे (पपड़ीकी जगह पर) छोटे २ सरसोंके मानिन्द रवेपड़जाते हैं औरवे आपसमें मिलकर सेहरीदार बड़े२ छाले होजाते हैं। और पपड बनकर झड जाते हैं और फिर वही क्रम जारी हो जाता है। सरसों से छाले पड़ना-चढ़ना, झड़ना फिर पैदा होना अब समस्त पोतों में है, पर विशेष कर पोतो की ग्रन्थियां जितनी खाल से लटकी रहती है उतनी खाल पर यह क्रिया विशेष रूप से होती हैं लिङ्गका जितना भाग पोतों से छिपटा रहता था उतने लिङ्गस्थिल में सेहरी पड़आती थी पर मेंने कटिमें एक पट्टी बांधकर लिङ्ग को पेटे की तरफ बॉधने लगा तब से उसमे सेहरी पड़ना बन्द होगई केवल लिङ्गके जड में१ अङ्गुल मात्र यह रोग होता रहता है लिङ्गमात्रमें वीर्य के चिपटनेसे कुछ भी विकार नहीं होता न सुपारी में कोई विकार हैं न डांड़ी हीमें और नत्वचा मेंही केवल पोते में-ही यह क्रिया होती है और जहां अन्ड कोपो का मवाद लगजाता है (जैसेरान जांघ) तो वहां कुछ पतली, सेहरी निकलकर चकत्ता हो जाता है पर अन्यस्थल वीर्य लगजाने से यह हाल नहीं होता सिर्फ पोतों को छोड़ कर वीर्य में मुरदे की सी दुर्गन्ध हैं निकलते समय जलन कुछर होती है बहुत गरम निकलता है रङ्ग पीला है श्वेत रङ्ग की थोडी सी आभा रहती है कुछ फुटकियां श्वेत रहतीं हैं। कर्णिक आदर्स बम्बई का दादका मरहम लगाने से अच्छा होजाता है पर वीर्य स्खलित (स्वप्नसे)होनेपर फिर होजाते हैं स्वप्न दोष के बाद जगने पर धोडालने से जोर नहीं करता पर सेहरी जरूर पड़ आती है पर इस हालत में अगर मल-हम न लगाया जाय तो बढ़ने लगजाता है रोगीका विवाह होगया है पर स्त्री के पास नहीं जाता वह डरता है कि कहीं गर्भाशय में यह वीर्य विकार न पैदा करदे हमने कई प्रकार से अनुभव कर लिया है यह रोग वीर्य के ही लगजाने से अन्ड कोपो में उतपन्न होता है परन्तु ग्रिन्थियों के लटकने की नीचे की खाल में वीर्य लगे या नलगे कभी २ सरसों सी फुन्सियां होने लगती हैं फदक उठता है अब कुछ दिनो से राग आदि मुलायम स्थान में वीर्य लगजाने से विकार उतपन्न हो जाताहै॥ अब मेरी प्रार्थना है कि वैद्य समुदाय कृपा कर इस रोग की अनुभूत चिकित्सा लिखने की कृपा करें।

उपरोक्त रोगी को धन्वन्तरि औष-धालय का बना हुआ निराशबन्धु (मकरध्वज वटी) सेवन कराया जाय तो लाभ होसकता है या नहीं इस पर वैद्य समुदाय अपनी२ राय प्रकट करने की कृपा करें।

भवदीय श्रीकृष्ण वैद्य—

संख्या ४०

क—एक ऐसे प्रयोग की आवश्यकता है, जिस के सेवन करने शिर का दर्द ततक्षण दूर हो जाय।

ख—एक ऐसे भी प्रयोग की जरूरत है जिस के सेवन करने से एक ही मात्रा में शरीरके किसी

स्थान का भी दर्द हो दूर हो जाय।

प्रश्न—उत्तर वही सज्जन लिखने का कष्ट उठावे जिन के पास सरल अनुभूत प्रयोग हों कभी फेल न जाय। प्रयोग सरल वो सुलभ हो।

प्रभूदयाललोल वैद्य

संख्या ४१

एक स्त्री की उमर २० साल। करीब १२ महीनेसेबीमारहै पहिले उसको बुखार दोमाहतक आया था दवाई वगैरह देने से उस का बुखार बंद हो गया जब से उस को हिचकी शुरू होगई हर रोज हिचकी दिन भर में ३०-४० आजाती हैं। दो २ चार २ घंटे के अंतर में १०-५ हिचकी आती हैं दवा देशी व डाक्टरी किया लेकिन फायदा नहीं हुआ और रात को निद्रा में हाथ व पैर को भी पटकती है लेकिन उसको कुछ भी नहीं मालूमहोता है वैद्यमाहाशयोंसे मेरीप्रार्थना है कि इस प्रश्नकीदवा धन्वन्तरि में छपवा देने की कृपा करेंगे। आप की सम्मति की दवा से अगर फायदा हो गया तो मैं आपको १०) दस रुपये फीस का भेजूंगा मेरे लिखने पर आप विश्वास करेंगे।

रामनारायण मा० गु०

संख्या ४१

क—प्रश्न संख्या नम्बर २३ जो पारे की गोली के बारे में है उसका जो सज्जन समाधान कारक उत्तर धन्वन्तरिमें छपावेंगे उनको हम १० रुपये इनाम देंगे ५ रुपये धन्वन्तरि मासिक को देंगे, इस प्रश्न के उत्तर देने में वैद्यराज महावारप्रसाद जी मालवीय को भी ध्यान देना चाहिये कारण आप से इस बारे में पत्र व्यवहार हो चुका है औरआपने बिना किसी धातु के सयोग से पारे की गोली बनाने की रीत बतलाने का वायदा किया है।

ख—जैतुन के तेल के मराठी, हिंदी अंग्रेजी मारवाड़ी नाम लिखने की कृपा करें और यह कहाँ पर किस भाव से मिलता है। कौन भेज सकता है वगैर स्पष्ट लिखें।

ग—१९२७ धन्वन्तरी प्रश्न संख्या ९५ के करने वाले सगीत जीवन श्री कृष्णजी त्रिपाठी वैद्य जीको चाहिए कि आपको देवदत्त जी शर्मा ने (९५ क) का उत्तर दीया है उस का गुणा गुण लिखने की कृपा करनी चाहिए औरदेवदत्त जी शर्मा को चाहिए कि हम को उपरोक्त उत्तर वाली जन्म भर बाल न उगने वाली दवाका नमूना भेजने की कृपा करे नमूना आने से उसका अनुभव करके गुणागुण छपवा देंगे और आप को ५ रुपए इनाम भेजेंगे, अगर आप इतना तुच्छ उपहार लेना नहीं चाहते हों तो आप जो कोई धर्मार्थ कार्य्यालय में लिखोगे तो वहाँ भेज देंगे।

वै० पं० बलदेवप्रसाद मदनलाल शर्मा

संख्या ४२

प्रार्थना है इस मौसमी ज्वर के लिए कोई परीक्षित औषधि लिखने की कृपा करें औरदवा अर्क रूप में हो कीमत भी अधिक न लगे और सैकड़ा ९० पर फायदा (आराम) करने वाला हो कोई हानि भी न करे। मुझे पूरी उम्मेद है कि आप लोग जरूर प्रयोग लिखने का कष्ट करेंगे।

वैद्य कृष्णाचार्य्य

संख्या ४३

मेरी माता को कभी २ वात पित्त से चक्कर आते हैं विशेष कर शरदऋतु में और ग्रीष्मऋतु में

अधिक पीडा रहती है। चक्कर आने के पहले हाथ, पाँव ढीले पड़ जाते हैं चित्त घबराता है और कभी कम्प भी होता है। पश्चात् संज्ञान हीन हो जाती है तब पीपर पानी में घिस कर चटाने से तथा म्लेच्छकंद (गाँदरी) सुंघाने से मूर्च्छा खुल जाती है किसी समय मूर्च्छितावस्था आध घन्टे से एक घन्टे पर्यन्त ठहरती है। तब पीपल के साथ रससिन्दूर भी घिस कर देनापड़ता है तब चैतन्यता आती है इस के लिये कोई वैद्य कृपा कर ऐसी औषधि लिखें जिस से रोग समूल नष्ट हो जावे।

प० भोलेदास दुवे।

संख्या-४४

(क) विद्वान वैद्यों से प्रार्थना है कि वे कोई ऐसा शतशोऽनभूत योग शीघ्र से शीघ्र लिखने की कृपा करें जिसके सेवन से दस्त साफ हो. ताकत बढ़े और स्मरण शक्ति इतनी तीव्र होजावे कि कोई भी पुस्तक आदि एक दो बार के पढ़ने से सदैव ज्यों की त्यों स्मरण बनी रहे। औषधि बनाने में सहल हो और उसकी औषधियां प्रत्येक जगह मिलसकें और सब प्रकृति के मनुष्यों को सब ऋतुओं में समान गुणकारी हो। आप लोगों की इस कृपा के लिये मैं सदा आप लोगों का कृतज्ञ बना रहूगा।

(ख) मुझे भारतवर्ष भर के समस्त होमियोपैथिक कालेजों की सूची की आवश्यकता है जिसमें समस्त होमियोपैथिक कालेजों के नाम और पूरे पते दिये होवें ज्ञाता सज्जन उत्तर देने की अवश्य कृपा करें कि इस प्रकार की सूची कहां से किस मूल्य में प्राप्त हो सक्ती है। यह भी लिखिये कि उन कालेजों में से कौन२ कालेजोंमें बिना किसी शर्त के निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

गोबिन्दप्रसाद अग्रवाल

संख्या ४५

एक स्त्री जिसकी उम्र ३२-३४ वर्ष की है करीब दस वर्ष का हुआ बच्चा पैदा हुआ बाद को पेचिस की बीमारी होगई कुछ इलाज करने से १ माह में आराम हुआ तभी से नीचे लिखे बीमारी जारी है, सो वैद्य महाशयों से प्रार्थना है कि बिलकुल परीक्षित प्रयोग मय पथ्यापथ्य के बतलाने की कृपा करें।

रजस्वला होना बिलकुल बन्द है जब गर्भ धारण का समय आता है तो एक दो बार होता है इसी हालत से तीन बच्चा भी होगये अब सफेद पानी बहता रहता है कभी२ गर्मी होने पर चूनाके माफिक पेशाब में जम जाता है सभोग के समय अधिक सफेद पानी निकलता है हाथ पांव कमर वगैर में दर्द होता है अब यह बीमारी दिन प्रति दिन बढ़ती पर है सो परीक्षित प्रयोग बतलाने की कृपाकरें।

एक ग्राहक—

संख्या४६

आयु इस समय करीब २३ साल की है-परन्तु पहली मर्तबा गर्भवती २० साल की आयु में हुई सामन स० ८२ में पुत्री उत्पन्न हुई। और छै दिन तक तबियत ठीक रही बाद को सातवें दिन शाम के वक्त बादल हो रहे थे उस समय वह पेशाब को बाहर निकली उसको एक सफेद कपड़ा पहिने हुये औरत मालूम हुई, दिखाई दिया कि मेरे ऊपर चढ़ बैठी फौरन चीखमारकर बेहोश होगई, दाँती भिच गई लार गिरनिकली, दांत काले होगये, लोगो ने मामीली चिकित्सा की दांती खुल गई होश में आने पर उसने ऊपर लिखा हुआ ब्यान किया—

दूसरे दिन चारपाई पर फिर चिल्लाई और यह कोर बातें करने लगी- कि कोई मुझे पकड़ता है उस समय कई आदमी पकड़ते थे मगर भागती थी यह हालत करीब एक माह तक रही फिर दिन में अकेले बैठे२ हाथ पैर हिलाना चलना हंसना रोना बातें करना, जब किसी ने आवाज दी तो चौंक पडी और उठ बैठी जैसे कि ख्वाब की हालत होती है पूछने पर कहा कि सर में दर्द है खाने के वास्ते सब चीज चाहती है और जब खाना आया तो कडवा बतलाया जी मिचलाता है इसी तरह से दो २ दिन तक खाना नहीं खाती थी।

मासिक धर्म नियत समय पर न होना और मिकदार से ज्यादा दिन तक रहना- गर्ज यह है कि जिस तरह बैठी है तो बैठी है खडी है तो खडी गाती है तो गाती ही है चिल्लाती है तो चिल्लाती ही है उसे चेतन्य किया तब ठीक हुई कार्य वर्तन फोड़ना कपड़े फाड़ना कहने पर नाराज होना, गाली बकना, जिद्दी ज्यादा थी इसी तरह से दो साल बीत गये दिन में ऊपर लिखे अनुसार रात्रि को चीखना भागना इत्यादिः—

वर्तमान अवस्था—

वह एक मकान में बंद है कभी औंधी लेटती कभी सीधी कभी खड़ी, कभी बैठी हसना, चिल्लाना गाना, चुप होजाना, दो दो तीन२ दिन तक खाना नहीं खाना। न दस्त जाना अगर गई तो बहुत कमी के साथ, शरीर सफेद है खून बदन पर नहीं है दांत काले हैं। सूरत डरावनी कपड़े वगैरह का ध्यान नहीं है अगर नंगी है तो नंगी ही है आदमी की पहचान नहीं है।

मैं गरीब आदमी हूं और वैद्य समाज मुझे दीन समझ अपनायेंगी और मेरी बहन को कष्ट से बचा कृतार्थ करेंगी। —(अचलसरन शर्म्मा वशिष्ठ)



सम्मति नं० २९—

क—सिद्ध मकरध्वज १ तोला शुद्ध कुचला एक तोला, कस्तूरी १ मासे, तीनों को पान के रस में २ दिन मर्दन कर दो दो रत्ती की गोली बना कर छाया में सुखा शीशी में भरले। एक गोली प्रातः काल और १ गोली रात्रि को दूध के साथ निगलनी चाहिये। साथ ही निम्न तिला या धन्वन्तरि औषधालय का कामदीपक तिला भी लगाते रहें— तिलाः—वीर बहुटी २ तोला केंचुआ २ तोला, रंगा माई २ तोला माल कांगुनी २ तोला, संखिया १ तोला, श्वेत कन्नेर की जड़ की छाल २ तोला सब को ले पाताल यन्त्र से तैल (तिला) निकाल ले और शीशी में भर कर रखदे। व्यवहार विधि—सुपारी (अग्रभाग) और सीवन (नीचे का भाग) छोड़ कर शेष स्थान पर उंगली से धीरे२ मले और पान को चमेली के तैल से चुपड़ कर और सेक कर ऊपरसे बांध दे इस तरह बराबर २१ दिन लगाता रहे यदि उपाड़ मालूम हो और वह सहन न हो सके तब घी (घृत) कपूर मिला कर लगावे इससे जलन, उपाड़ शान्ति हो जायगा जब शान्ति हो जाय तब २-३ दिन बाद पुनः लगाना आरम्भ करदे इस तरह बराबर लगाते रहें अवश्य लाभ होगा। (अनेक बार का अनुभूत प्रयोग है।

गोभिल—

ख—श्वास रोग भयकर व्याधि है इसके लिये सब से प्रथम स्नेहन, स्वेदन, वमन यह तीन कर्म करा देने चाहिये पश्चात चिकित्सा आरम्भ करें यदि यह तीनों कर्म नहीं करा सकें तब २०—२५ दिन तक प्रातः शौच जाने पश्चात गुनगुने जल में निमक डाल कर पीलेना और पश्चात उंगली या नीम की सींक डाल कर वमन कर देनी चाहिये। यह क्रिया

कम से कम २०-२५ दिन करता रहे तथा औषधियां सेवन करता रहे। औषधियां- प्रातः और सायंकाल- वसंत कुसुमाकर एक एक रत्ती शहद में चाट ऊपर से कनकासव एक एक तोला पानी आधो२छटांक मिल कर पिलावें रात्रि को कंटकारी अवलेह १तोला चटावें। वसंत कुसुमाकर कनकासव का प्रयोग भैषज्यरत्नावली में और कंटकारी अवलेह शार्ङ्गधर संहिता में देखें ६१दिन के प्रयोग से अवश्य लाभ होगा।

सम्पादक—

ग—स्त्री को प्रदर रोग है उसके लिये प्रातः और रात्रि को मधुकाद्यावलेह एक एक तोलाखिला ऊपर से अशोकारिष्ट दो दो तोला पानी मिलाकर पिलावे रात्रि को फलघृत २तोला मिश्री २तोला मिलाकर चटावे। १०१दिन में निरोग हो पुत्र वती होने योग्य हो जायगी। प्रयोग भैषज्य रत्नावली में देखिये।

सम्पादक—

घ—प्रातःऔर साय काल दो दो तोला फलघृत मिश्री मिलाकर सेवन करावें रात्रि को सोते समय नागकेशर असली १माशे शहत में चटा ऊपर से गौ दूध पिलावे। अवश्य लाभ होगा।

सम्पादक—

सम्मति नं०३०—

प्रातः साय लीलाविलास रस चार चार रत्ती सेवन करा ऊपर से निम्न क्वाथ दें।—बांसे के पत्ता ८ माशे, [illegible] ८ माशे सब को पावभर पानी में औटावें जब छटांक भर पानी शेष रहे तब छान कर सतगिलोय माशे२ डालकर पिलावें।

सम्पादक—

सम्मति नं०३१—

स्त्री को गुल्म रोग है उसके लिए प्रातः और सायं गुल्म कुठार एक एक गोली खिला ऊपर से कुमारी आसव दो तोला, पानी मिलाकर पिलाना चाहिये और दिन में तीन चार बार दशर बूंद शंखद्राव पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये। इस से लाभ होगा।

गोमिल—

सम्मति नं०३२—

चन्द्रप्रभा गुटिका में पहली औषधि "चन्द्रप्रभा,, है। निघन्टु में कचूर को न तो चन्द्रप्रभा ही कहते हैं और न चन्द्रवाची नामो में ही गणना है और न प्रमेह रोग की प्रधान औषधि ही है।

भैषज्य रत्नावली के टीकाकार कविराज विनोद लाल सेन जी ने चन्द्रप्रभा में सोमराजी(बावची) ली है किन्तु निघन्टु में इसको भी चन्द्रप्रभा नहीं कहा सिर्फ शालिग्राम निघन्टु भूषण में बावची के जो नाम लिखे हैं उनमें एक नाम चन्द्रप्रभा भी लिखा है पर और किसी निघन्टु मे नही है।

प्राय. सब निघन्टुओं में कपूर के चन्द्र वाची समस्त नाम दिये हैं और कपूर प्रमेह के लिये उत्तम भी है तथा शीतवीर्य भी है अतः चन्द्रप्रभा का अर्थ कपूर करना, चाहिये। मेरी सम्मति में कपूर की जगह कचूर गलती से छपगया है और टीका कारों ने उस का ही अनुकरण आंख मीच कर लिया है। बाकी कोई वैद्य कचूर और कोई बावची तथा कोई कपूर का व्यवहार करते हैं पर मेरी सम्मति में कपूर ही ग्रहण करना चाहिये।

सम्पादक—



वार्षिकोत्सव—सस्कृत सगीत समाज का छठवां वार्षिकोत्सव पहरहा में बड़े धूमधाम से साथ सम्पूर्ण हुआ अनेक उपयोगी प्रस्ताव और कार्य्य हुए जो स्थानाभाव से नहीं प्रकाशित कर सके—

सम्वाद दाता

वैद्य सम्मेलन—जम्बू (काश्मीर) में एक वैद्यक एन्ड युनानी सम्मेलन का उत्सव हुआ उस में निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

प्रस्ताव नम्बर १—यह असाधारण सम्मेलन सर्व सम्मति से केप्टेट-कर्नल जे० जे० हौर नलसन महोदय के उस लेख के प्रति जो उन्होंने ६ जौलाई सन् १९२८ के सिविल मिलट्री गजट में प्रकाशित करवा कर अपनी अज्ञता और क्षुद्र हृदयता प्रकट करते हुए आयुर्वेद और युनानी चिकित्सा के विरुद्ध विष वमन किया है। घृणा और असन्तोष प्रकट करता है।

नोट—स्थानाभाव से सब प्रस्ताव यहां नहीं मुद्रित कर सकें।

कुष्ठ—कूठ—हमने कुष्ठ के लिये ३ वर्ष आन्दोलन तथा धनव्यय और कष्टसहन कर सफलता प्राप्त करली है। ६-५-२८ को बृटिस गवर्मेन्ट ने नम्बर १५६०७के सरक्यूलेसन में यह आज्ञा प्रकाशित की है। कि हर एक व्यक्ति जितना चाहे कूठ बेच और रख सकता है।

वैद्य ज्ञानचन्द पठानकोट

निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन—

निखिल भारतवर्षीय वैद्यों का १९ वां सम्मेलन सन् १९२९ ई० के फरवरी मास में नासिक नगर में होने वाला है। १८ वें वैद्य सम्मेलन के प्रसग पर अध्यक्षस्थान के लिये न्यायकी लड़ाई लड़ महाराष्ट्र ने वह स्थान सुप्रसिद्ध वृद्ध वैद्य प्राणाचार्य देवधर शास्त्री को प्रदान करा यश

सम्पादन किया था तब भी महाराष्ट्र को योग्य मान की इच्छा के साथ ही योग्य कर्तव्य की जानकारी थी। उस जानकारी का लाभ ले सब लोगो ने उसी समय कहा था कि महाराष्ट्र की ओर से वैद्य सम्मेलन को आमंत्रित किया जाय। अतः फतहपुर के सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले महाराष्ट्रीय प्रमुख वैद्यों की सम्मति से प्राणाचार्य वेवधर शास्त्री जी ने सम्मेलन को समाप्त करते हुए १६ वें वैद्य सम्मेलन को नाशिक के लिये आमन्त्रित किया, और सम्मेलन ने आमन्त्रण भी स्वीकार कर लिया।

इसके पूर्व ८ वें वैद्य सम्मेलन पूना को, वैद्य पचानन कवडे शास्त्री आदि प्रमुख वैद्यो ने अधिक परिश्रम कर, लोक मान्य तिलक के आशीर्वाद और सर्व प्रकारकी सामर्थ्य युक्त सहायता से महाराष्ट्र की कीर्ति के अनुरूप ही यशस्वी किया था वह दृश्य दृष्टि के सम्मुख रख १६ वें वैद्य सम्मेलन को सफल बनाने की इच्छा है। इस सम्मेलन में प्रत्यक्ष रूप से लोकमान्य का सहाय न होने पर भी उनकी सदिच्छा को ही महान् आधार मान उन के स्मृति दिवस को आशीर्वाद के स्थान पर उपयोग कर कार्यारम्भ करने का आयोजन किया गया है।

आयुर्वेद की जागृति के लिये स्वर्गीय पदे शास्त्री ने वैद्य सम्मेलन का आज से २२–२३ वर्षपूर्व आरम्भ कार्य्य किया था। और अब यह १६ वां वैद्य सम्मेलन होने जा रहा है। इतने दिन से, सम्मेलन का कार्य जिस पद्धति से होता आया है उस का फल, यह हुआ है हिन्दुस्थान के वैद्यवर्ग में जागृति, व सामान्य जनता और सरकार की सहानुभूति प्राप्ति हुई है सम्मेलन को इस जागृति की दृष्टि को स्थाई रखना है। पर सब भार इसी पर न रखें कारण अधिक गुरुतर और स्थायी कार्य करने का अवसर सम्मेलन को प्राप्त हुआ है। इस के बाद से राजकीय सभाओं के जैसा ठाट बाट का स्वरूप सम्मेलन न रख आयुर्वेद की शास्त्रीय दृष्टि से उहापोह करने का कार्य वह अपने हाथ में ले। और यही उचित भी है।

महाराष्ट्रीय प्रमुख वैद्योंकी भी यही कल्पना है कि महाराष्ट्र में होने वाले इस सम्मेलन में अवश्य ही कोई विशेषता रहे। अतः स्वागत मण्डल ने निम्न लिखित आयोजना कामको लाने का निश्चय किया है:—

१ आयुर्वेद के मूलभूत आधार में त्रिधातु किंवा त्रिदोष की गणना है। इन त्रिधातुओं का वर्णन आधुनिक विद्वानों और जनता को प्रत्यक्षतः आजकल शक्य न होने के कारण मान्य नहीं है। यही कारण है कि आयुर्वेद को अशास्त्रीय कहा जाता है। इस आरोप से आयुर्वेद को मुक्त करने के लिये आयुर्वेदीय प्राचीन (चरक सुश्रुत संग्रह व वाग्भट) ग्रन्थो के आधार 'त्रिधातु सर्वस्व' इस विषय पर निबंध मंगवाने का निश्चय किया गया है। इसनिबन्ध में चार प्रकरण किंवा विभाग रहेंगे। प्रकरणों में (१) त्रिधातु आकृति (२) त्रिधातु प्रकृति (३) त्रिधातु विकृति और (४) चिकित्सा। इन चार विषयो का समावेश रहेगा। इस निबन्ध के लिखने में उपयोग आने वाला विस्तृत दिग्दर्शनरूप प्रसिद्ध करके निबंध लिखने वाले को दिया जायगा। यह निबंध सरल एव सुबोध

संस्कृत गद्य में लिखना होगा। एक व्यक्ति अथवा आयुर्वेदीय संस्था यह दोनों ही निबंध लिख सकते हैं। और समस्त भारत से निबंध लिख कर भेजे जाँयगे ऐसी अपेक्षा है।

इस प्रकार से प्राप्त निबंधोंमें से जो यशस्वी होगा उसे ५००) रु० का पारितोषिक देने के लिये स्वागत मंडल ने निश्चय किया है। परीक्षा समिति में भारत के नामांकित वैद्यों की नियुक्ति होगी। और उनके नाम उचित समय पर प्रकाशित किये जायगे। सन् १९२९ के फरवरी मास के अन्त तक निबंध के सम्बन्ध में सब प्रकार का पत्र व्यवहार वैद्य प्र० ग० नानल ६९५. सदाशिव पेठ पूना से करना चाहिये। और निबंध मात्र मंत्री, स्वागत मंडल नाशिक के पते पर भेजना चाहिये।

२ स्वागत मंडल ने दूसरा कार्य यह करने का निश्चय किया है वह इस प्रकार है।
संदिग्ध वनस्पतियों का निर्णय (१) रास्ना, (२) दन्ती किंवा दन्ती मूल (३) शालपर्णी और (४) पृश्निपर्णी इन चार संशययुक्त वनस्पतियों के भारतमें मिलने वाले नाना प्रकारों केनमूने पहिले से मंगा कर संग्रह कर लिया जाय और निघंटु में दिये गये गुणधर्म केअनुसार उन रोगों पर उन २ वनस्पतियों के सर्व प्रकार एक २ प्रयोग द्वारा गुण धर्म का अनुभव कर वनस्पति का निश्चय करने के लिये तिलक महाविद्यालयपूना, ग० छ० औषधालय यवल आयुर्वेद औषधालय नगर और आरोग्य विद्यालय पनवेल इन चार धर्मार्थ औषधालयों की और उनके चालकों की आयोजना कर उन के लिखित अनुभव का संग्रह किया जाय।

खनिज द्रव्यों में से खर्पर अथवा कलखापरी, गोदन्ती हरताल इनके नमूने मंगा कर इनके विषय में ग्रन्थों में कहे गये गुणों का अनुभव कर ये दो पदार्थ सम्मेलन के समक्ष निश्चित करना।

४ सिद्ध औषधियों में से ताम्र,वंग और लोह इन को रससमाधव नामक ग्रन्थ में कहे गये अनेक प्रकारों में से एक प्रकार से शुद्धकरा और भस्म करा स्वागत समिति अपने व्यय से सिद्ध करावे और पाठ के आधार पर सिद्ध की गयी भस्में भारत के अन्य स्थानों से मंगाकर उनकी परस्पर एक रूपता करना यह पाठ निम्न लिखित तालिका के अनुसार है।

आयुर्वेद प्रकाश

ताम्रशुद्धिः	श्लोक	११२
ताम्रमारणं	श्लोक	११४–१२१
वंग शुद्धिः	श्लोकः	५१ पृष्ठ ११५
वंगमारणः	”	१७०–१७२पृष्ठ१२८–१२९
लोह	”	२०६ पृष्ठ १३३
लोहशोधनं	”	२२९–२३२ पृष्ठ १३७
लोहमारण	”	२५१–२५३पृष्ठ १४०–१४१

आयुर्वेदप्रकाशः वैद्यजाधवजी विक्रम जी आचार्येनु दितः १९१३ ख्रिस्ताब्दे निर्णयसागरे।

इसके अतिरिक्त आयुर्वेद महामंडल की स्थायी समिति ने यदि आज्ञा दी तो (१) शरीर चर्चा मंडल, (२) मूल चर्चा मंडल, (३)सिद्धौषधिचर्चामंडल,(४)निदान चर्चा मंडल, (५) और चिकित्सा चर्चा मण्डल इस प्रकार पांच चर्चा

मण्डल पहिले से ही प्रकाशित कर उन २ मण्डलों की कक्षा में आने वाले कई नियमित विषय पहिले प्रसिद्ध कर चर्चा जारी कर देने का स्वागत मण्डल का अत्यन्त उत्कट हेतू है। स्थायी समिति से आज्ञा लेने के लिये प्रयत्न हो रहा है। सम्मेलन के साथ ही आयुर्वेदीय वस्तुओं और वनस्पतियों के प्रदर्शन करनेका निश्चय किया गया है। इस प्रदर्शन के सचालन भाव प्रकाश के हरीतक्यादि,निघट के अनुसार उसे संयोजित करने का प्रयत्न करेंगे। उसी प्रकार के संस्कार प्रत्यक्ष कर दिखायेजाना यदि शक्य हुआ तो वह भी करने की योजनाकी जा रही है।

सारांश यह कि१६ वें वैद्यसम्मेलन में आयुर्वेद की सेवा की दृष्टि से अपना कार्य स्थायी और महत्वपूर्ण हो और उसके कारण सम्मेलनको नवीन बल मिले इच्छा से जहां तक हो सकेगा प्रयत्न कर उसे सफल बनाने का आयोजनकिया गया है इस लये महाराष्ट्रके सभी वैद्यों तथा आयुर्वेद के प्रेमी सज्जनों को प्रत्यक्ष सहानुभूति दिखाकर हमें कार्य समर्थ बनावें ऐसी विनति कर यह पत्र समाप्त करते हैं। जो कुछ कहा यही विनति।

आपके जिज्ञासू

वामनशास्त्री दातार, विष्णुशास्त्री केलकर डॉ० द० व० खाडीलकर डॉ०वि०म०, भट्टशिवशङ्कर शास्त्री शौचे, मंत्री १६ वां वै० स० नाशिक व गङ्गाधर शास्त्री जोशी, मोहनलाल त्रिभुवनदास, प्रह्लाद वष्णु काले, महादेव गणेश पाठक, मंत्री प्रदर्शन विभाग १६ वां वैद्यसम्मेलन नाशिक।

निबंधविषयक पत्र व्यवहार के अतिरिक्त सर्व पत्र व्यवहार मंत्री वामन शास्त्री दातार १६वाँ वैद्य सम्मेलन नाशिक से कीजिये।

स्थान चाहिये—एक प्रसिद्ध विद्वान और अनुभवी वैद्य किसी धर्मार्थ चिकित्सालय में नौकरी करना चाहते हैं जो आयुर्वेद के विद्वान होने के साथ ही युनानी और जल चिकित्सा तथा मेस्मरेजम के भी अच्छे अभ्यासी हैं, जिन्हें आवश्यकताहो निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

मैनेजर—धन्वन्तरि विजयगढ़(अलीगढ़)

वैद्य की आवश्यकता—मध्यमा या शास्त्री परीक्षा व्याकरण की पास हो आयुर्वेद का ज्ञाता हो तथा निपुण वैद्य हो मासिक ३०) रुपये और रोटी खर्च मिलेगा। वैद्य को जो बाहर से आमदनी हो उसका आधा आश्रम को और आधा वैद्य को मिलेगा। रहने का स्थान तथा सेवक भी मिलेगा उसको विद्यार्थीयों को पढ़ाने और चिकित्सा करने का काम करना होगा। धर्मात्मा और आश्रम को अपना समझने वाला हो।

व्यवस्थापक ब्रह्मचार्य्याश्रम

C. off. मैनेजर धन्वन्तरि औषधालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)

क्षमा प्रार्थना

धन्वन्तरि ठीक समय पर प्रकाशित न हो सकाइसकाकारणनवीनटाइप न आसका था,पुराना टाईप अत्यधिक खराब हो गया था छपाई बड़ी भद्दी होती थी पाठकों को पढ़ना कठिन हो जाता था सम्मेलनाङ्क उसका प्रत्यक्ष उदाहरणहैइससे हम पुराने टाइपमें धन्वन्तरि नहीं छाप सके और धन्वन्तरि को लेट करना पड़ा इधर नये टाइप का ऑर्डर हम दे चुकेथे और आशा थी कि वह शीघ्र ही ढल कर आजायगा पर टाईप फौन्ढर की कृपासे

हमें अत्यधिक विलम्ब से मिला और हम धन्वन्तरि को छापने से लाचार रहे अब धन्वन्तरि का जून, जौलाई, का अंक सेवा में भेजा जाता है और अगस्त का अंक भी शीघ्र ही छाप कर भेजा जायगा साथ ही सितम्बर- अक्टूबर का अंक, संयुक्त अंक जो प्रयोगाङ्क के नाम से प्रकाशित किया जायगा। पाठक और ग्राहक हमारी विवशता देख विलम्ब के लिये क्षमा प्रदान करेंगे।

प्रयोगाङ्क

धन्वन्तरि का तीसरा विशेषाङ्क बड़ी सज धज के साथ प्रकाशित होगा उसमें भारत के प्रसिद्ध२ विद्वान वैद्यों के अनुभूत प्रयोग जो पिता पुत्र से छिपाते हैं विना सकोच प्रकाशित किये जायेंगे एक२ प्रयोग सैंकड़ों रुपये मूल्य का होगा। प्रयोगसब उत्तम और कभी बेकार (निष्फल) न जाय ऐसे प्रकाशित किये जायगे साथ ही कागज भी बढ़िया लगेगा छपाई भी उत्तम की जायेगी चित्र भी दर्शनी होंगे पाठ्य विषय के पृष्ठ भी अनुमान दो सोपोने दोसौ होंगे मूल्य होगा १।||) पौने दो रुपये। किन्तु जो ग्राहक हैं और होंगे उन्हें यह अंक, साधारण अंक की भांति ही मिलेगा यदि वह इसकी एक प्रति के अतिरिक्त अधिक प्रतियां लेना चाहें तब उन्हें वह प्रतियां एक एक रुपये को ही मिलेंगी जो धन्वन्तरि के ग्राहक नहीं उन्हें १।||) अंक ही मिलेगा।

लेखकों से प्रार्थना

प्रयोगाङ्क के लिये प्रयोग वही भेजने चाहिये जो उनके अनेक बार के अनुभूत हों और जो कभी निष्फल न हो साथ ही उनके बनाने की विधि पूरी२ लिखें और सेवन विधि मात्रा अनुपान आदि सब लिखें साथ ही किस२ रोग की कौन२ सी अवस्था में उन्होंने अनुभव किया है यह लिखना भी न भूलें। यदि प्रयोग वैद्यक शास्त्र का हो तब उस ग्रन्थ का नाम भी लिखदें। चित्र-प्रयोगाङ्क में प्रयोग भेजने वालों के चित्र भी प्रकाशित करनेका विचार है अतः प्रयोगों के साथ ही अपने चित्र का ब्लाक भी भेजदें। जिनके पास ब्लाक न हों वह चित्र और ७) सात रुपये ब्लाक खर्च के भेजदें हम ब्लाक बनवं लेंगे और छापने के पश्चात ब्लाक उन्हें वापिस भेज देंगे। चित्र,ब्लाक, प्रयोग, हमें ३० अक्टूबर तक मिल जाने चाहिये।

व्यवस्थापक-धन्वन्तरि

शोक समाचार

श्रीमान् पं० कृष्णदत्त जी शर्म्मा वैद्यशास्त्री पहरसा निवासी के भ्राता का असमय और अकस्मात स्वर्ग वास होगया। बात यह हुई कि आप एक रिस्तेदार रोगी की चिकित्सा कर रहे थे और रोगी को सन्निपात था यह उसकी चारपाई के पास ही सो रहे थे। रोगी ने उठ कर उन पर प्रहार किया और उन की मृत्यु होगई। हमें इस मृत्यु से बड़ा शोक हुआ साथही वैद्यों-चिकित्सकों को इस मृत्यु से उपदेश भी मिला। हम भगवान धन्वन्तरि से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति और सम्बन्धियों को धैर्य प्रदान करें।

सम्पादक--

हमें यह बड़े ही दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि श्रीमान राज वैद्य लाला नन्दकिशोर जी के पुत्र का आसामयिक देहांत होगया। हम वैद्यराज जी के इस दुःख से सम्वेदना प्रकट करते हैं।

एक-कर्मचारी।

हिन्दु का उपहार

कट्टर सनातनधर्मी हिन्दु मासिक पत्र का तृतीय वर्ष जौलाई में समाप्त होगया। अगस्त चतुर्थ वर्ष का प्रथमाङ्क भेजा जावेगा उसी के साथ में ग्राहक को उपहार भी दिया जावेगा। धन्वन्तरि, कट्टर सनातनधर्मी पत्र है और चिरकाल से सनातनधर्म की सेवा करता आरहा है। हम धन्वन्तरि के ग्राहकों को भी उपहार देने को तैयार हैं जिस ग्राहक को मंगवाना हो वह अति शीघ्र हमारे यहां मांग भेजदे।

उपहारी पुस्तकें

नियोग १), श्राद्ध निर्णय ।=), वर्ण व्यवस्था ।=), दयानन्द मत विद्रावण ।) ये चार पुस्तकें उपहार में रक्खी गई हैं इनका उपहारी मू० १) रु और डाक महसूल पांच आने है।

यह उपहार केवल उन्हीं मनुष्यों को मिलेगा जिनकी मांग १५ अक्टूबर तक आजावेगी।

मैनेजर हिन्दु

मु० पो० अमरौधा जि० कानपुर

सर्कार परीक्षित
भारत [सरकार] तथा
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

१००००० प्रतिवर्ष सारा बिकना दवा की सफलताका सब से बड़ा प्रमाण है।



(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है जिसके सेवन करने से कफ, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएन्ज़ा, इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २ तक ।=)



दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४घन्टे में आराम दिखाने वाला सिर्फ यही एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ, डा, खर्च १ से २ तक ।=) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।



दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगा कर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।॥) डाक खर्च ।)

पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कं० मथुरा,

निरोगी रहने के लिए

और सिद्ध वैद्य बनने के लिए

अनुभूत योगमाला।

पाक्षिक पत्रिका प्रत्येक को पढ़नी चाहिये नमूना मुफ्त मंगाकर देखो।

मैनेजर—अनुभूत योगमाला

आफिस बरालोकपुर-इटावा यू०पी०

दस रुपया रोज कमालो।

यदि आप अमेरिका, जर्मनी, जापान की अमूल्य दस्तकारियां व व्यापार के गूढ़ रहस्य सीख कर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहें तो आज ही ३) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजकर सचित्र मासिक पत्र "रसायन" के ग्राहक बन जाइये। अगले मास ग्राहक होने वाले से वार्षिक मूल्य ४) चार रुपये लिया जायगा।

मैनेजर 'रसायन,

चौटाला (हिसार)

गवर्नमेन्ट भारतीय माल-एंटी मलेरिया कमेटी के मेम्बर इलाहाबाद के

पं० शिवराम पांडे

वैद्य का-

[illegible] तैल।

सिर दर्द [illegible] दिमाग को [illegible] कर आंख [illegible] शर्तिया [illegible] रुपया

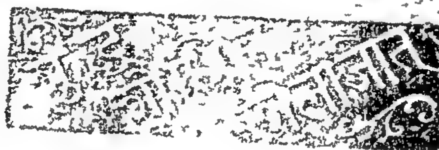
ज्वर वटी

जाड़ा, बुखार, मलेरिया, विषमज्वर, और अन्तरा, तिजारी, चौथय्या कमजोरी की बेजोड़ दवा की० १) रुपया

पता——पी० पी० पांडे वैद्य शिवराम औषधालय प्रयाग।

श्री [illegible] आश्रम की [illegible] संजीवनी

नक्कालों से सावधान



नक्कालों से सावधान।



सर्वो[illegible] की चौगनी कीमत फेर देंगे

पं० [illegible] शास्त्री, [illegible] आयुर्वेद महौषधालय सिकन्दराबाद लिखते हैं [illegible] वर्षों से फौरसी रुपये [illegible] आपसे लगा चुका हूं मैंने जलन्धर [illegible] यहां तक कि [illegible] लाभ [illegible] पाया। जलन्धर और मुज- [illegible] के रोगियों में तो यह [illegible] सफल हुई होगी जिसके मेरे पास साल भर में ३५० से अधिक [illegible] आमवात या मलेरिया के बुखारों से जो यह रामबाण सदृश है निस्सन्देह [illegible] बतलाये गये हैं उनके अनुसार सेवन करने से लाभ की [illegible] इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपका शिला-जीत बहुत शुद्ध [illegible] । जो सज्जन शिलाजीत से विश्वास उठा चुके हैं वे एकबार हमसे मंगाकर अवश्य परीक्षा करें नं०१ का १॥) फ० तोला नं०२ का १) तो० ५तोला एक साथ लेने पर एक तोला मुफ्त नं०३ का अग्नि से शुद्ध १०) फ० सेर [illegible] ३) रुपये सेर।

पं० [illegible] शर्मा [illegible] पो० [illegible] प्रयाग (घ) [illegible]

५] अगस्त, सितम्बर सन् १९२८ अङ्क ८, ९

धन्वन्तरि



संस्थापक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज

सम्पादक—

वैद्य बांकेलाल गुप्त

वार्षिक मूल्य ३) }

{ साधारणाङ्क ।=)
{ विशेषाङ्क का १॥)

धन्वन्तरि प्रेस विजयगढ़ द्वारा मुद्रित

भाग ५] अगस्त, सितम्बर सन् १९२८ अङ्क ८, ९

धन्वन्तरि



संस्थापक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज

सम्पादक—

वैद्य बांकेलाल गुप्त

वार्षिक मूल्य ३) | साधारणाङ्क ।=) | विशेषाङ्क का १॥)

धन्वन्तरि प्रेस विजयगढ़ द्वारा मुद्रित

श्रीमद्भगवद्गीता-जयन्ती-के अवसर पर

गीता-प्रदर्शनीका अपूर्व समारोह।

कई वर्षों से भारतवर्ष के अनेक नगरों में श्रीमद्भगवद्गीता-जयन्ती का उत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है। भारतवर्ष के लिये यह बड़े ही सौभाग्य की बात है। ये [illegible] उन्नति के चिन्ह हैं। भारत के लिये इस समय यदि कोई परम औषध है तो वह श्रीमद्भगवद्गीता ही है, ऐसे हमारे परम औषध इस अलौकिक धर्मग्रन्थ की अवहेलना का [illegible] यदि हम भारतवासी [illegible] लगें और देश-देशान्तर में इसका प्रचार करके इसमें वर्णित उपदेशों के अनुसार चलने का प्रयत्न करें तो शीघ्र ही भारत की विजय वैजयन्ती [illegible] फहराती हुई दिखाई दे सकती है। अस्तु—आगामी मिति मार्गशीर्ष शुक्ला ११, रविवार [illegible] दिसम्बर को कलकत्ते में भी श्रीमद्भगवद्गीता-जयन्ती का उत्सव मनाने का विचार किया गया है। इसी अवसर पर श्रीमद्भगवद्गीता-प्रदर्शनी भी बड़े समारोह के साथ करने का आयोजन हो रहा है। इसके लिये संसार की भिन्न २ भाषाओं की सब प्रकार की गीताएं संग्रह हो रही हैं और संस्कृत, हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी, कनाड़ी, अंग्रेजी, जर्मनी आदि भाषाओं की कुछ गीताएं आ भी गई हैं।

सब भाइयों से सविनय निवेदन किया जाता है कि वे नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर शीघ्र ही हमें लिख भेजें, जिससे कि हम गीता संग्रह करने में सहज ही सफल हो सकें।

१ श्रीमद्भगवद्गीता पर किसी प्रकार का—

क—भाष्य, टीका, टिप्पणी, व्याख्या, अनुवाद, पद्यानुवाद आदि।

ख—लेख, व्याख्यान, समालोचना, निबन्ध, सार-संग्रह आदि।

२ श्रीमद्भगवद्गीता-हस्तलिखित-ताड़पत्र, या भोजपत्र आदि पर लिखी हुई, प्राचीन गीता, गीता सम्बन्धी चित्र आदि।

३ श्रीमद्भगवद्गीता को छोड़कर भिन्न २ दूसरी गीताएं।

४ राजा, महाराजा या पब्लिक के बड़े २ पुस्तकालयों के अध्यक्ष एक सप्ताह तक श्रीमद्भगवद्गीता प्रदर्शनी में रखने के लिये उपर्युक्त गीता सम्बन्धी सब प्रकार की सामिग्री हमें किन २ शर्तों पर दे सकते हैं। इत्यादि—उपर्युक्त प्रश्नों के सम्बन्ध में सर्वसाधारण जनता, पुस्तकाध्यक्ष, पुस्तक विक्रेता और गीता प्रेमी सज्जन जो कुछ भी जानते हों (उनके नाम, पते मूल्य आदि विवरण) हमें यथासाध्य शीघ्र ही लिख भेजने की कृपा करें। विद्वान् लोग इस विषय में अपनी सम्मति शीघ्र ही प्रकट करें। जिससे कि हम इस सम्बन्ध में उचित सुधार कर सकें।

उपर्युक्त जो सामिग्री बिकाऊ होगी, उसे प्रदर्शनी के लिये उचित मूल्य में खरीदने का भी प्रबन्ध किया गया है विक्रेता को पूरे विवरण सहित शीघ्र सूचना देनी चाहिये।

—भवदीय उत्तराभिलाषी मंत्री—गीता-प्रदर्शनी-विभाग। श्रीमद्भगवद्गीता-जयन्ती-उत्सव।

पता—श्रीगोविन्द-भवन कार्यालय ३० बांसतल्ला गली, कलकत्ता।

रेलवे सीरीज़

इस सीरीज़में घन्टे दो घन्टे फिजूल समय व्यतीत करने के लिये प्रति मास बड़े २ धुरन्धर नामी लेखकों द्वारा लिखित जासूसी उपन्यास प्रकाशित होते है प्रत्येक उपन्यास ५० ६० पेज में ही सम्पूर्ण कर दिया जाता है। साथ ही प्रत्येक उपन्यास में स्थान२ पर रंग विरंगे दो तीन चित्र भी रहा करते हैं कागज ब्लेज़ छपाई साफ और सुन्दर होते हुए भी इस के प्रत्येक नम्बर का मूल्य ।) ही आना रक्खा गया है तथा जो महाशय २॥) रुपया भेज कर इस सीरीज़ के एक वर्ष के लिये ग्राहक बन जाते हैं उन्हे हर महीने एक नई पुस्तक प्रकाशित कर भेज दी जातीहै डाक खर्च भी नही देना पड़ता।

अब तक इस के छः अङ्क निकल चुके हैं (१) भीषण भ्रातृ हत्या (२) गुम खून (३) डबल लाश (४) खूनी दारोगा (५) खूनी अक्षर (६)मानव पिशाच। इन की रोचकता देख कर हिंदुस्तान के प्रत्येक प्रांत में ४००० से भी ऊपर ग्राहक हो चुके हैं आशा है कि आप भी कम से कम।) आने का टिकट भेज कर एक प्रति नमूने की अवश्य मगावेंगे पसंन्द होने पर इसके एक वर्ष के लिये ग्राहक बन अपने इष्ट मित्रों को भी ग्राहक बनने की अनुमति देंगे।

पता—बर्मन कम्पनी नं० १ नारायण प्रसाद बाबू लेन अफीम चौरस्ता, कलकत्ता

दस रुपया रोज कमालो

यदि आप अमेरिका, जर्मनी, जापान का अमूल्य दस्तकारियां व्यापर के गूढ़ रहस्य सीख कर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहें तो आज ही३) रु० मनीआर्डर द्वारा भेज कर सचित्र मासिक पत्र "रसायन" के ग्राहक बन जाइये। अगले मास ग्राहक होने वाले से वार्षिक मूल्य ४) चार रुपये लिया जायगा।

मैनेजर 'रसायन,
चौटाला (हिसार)





जुजुरुषोनासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतंद्रापि मिवच्यवानात् ।
प्रास रतं जहि तस्यायुर्दस्त्रादित्यति मक्रणुतंकनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं० १० अ० १७ सू० ११६

भाग ५] अगस्त सितम्बर सन् १९२८ [अङ्क ८,९

सूचिका भरण--इंजक्शन

लेखक-श्रीमान् भिषक्मणि कविराज प्रतापसिंह जी सुपरिन्टेन्डेन्ट आयुर्वेद फार्मेसी हिन्दू विश्वविद्यालय काशी

सूचिका भरण-इंजक्शन (Injection) बहुत बार उत्तेजक व शामक औषधियों को तत्काल ही रक्त में पहुंचाना आवश्यक होता है। जब किन्हीं विशेष स्थानों के शस्त्र कर्म के पश्चात् रोगी को दारुण पीड़ा होती है। अथवा वृक्काश्मरी इत्यादि रोगों में जब रोगी को बिल्कुल निद्रा न आती हो तो मार्फिया का इजेक्शन किया जाता है इसीप्रकार हृदयावसाध (Failure of heart) में डिजिटेलिस व स्ट्रिकनीन (Digitalis or Strychuine) का इजेक्सन दिया जाता है, इसी प्रकार कई रोगो

में आधुनिक चिकित्सा के अनुसार औषधियों का केवल इंजेक्शन ही के द्वारा प्रयोग किया जाना है

इंजेक्शन विशेष कर तीन प्रकार के होते हैं-१ अधस्त्वक इन्जेशन [२] अन्तर्पेशी इन्जेक्शन और [३] अन्तीर्शरीय इजेक्शन ।

अधस्त्वक (hypodermic Injection) साधारणतया इस ही प्रकार का इन्जेक्शन अधिक दिया जाता है । इस के लिये एक या दो शीशी की सिरिन्ज काम में लाई जाकती है, जिस के आगे की ओर एक सुई लगी रहती है जो भीतर से खोखली होती है। वह सिरिंज कई प्रकार और कई कम्पनियो की बनी हुई होती है । बरोज़ वैल्कम (Burroughs Welcome &. co.) कंपनी की बनाई हुई सपूर्ण कांच की सिरिंज बहुत उत्तम होती है। यह सिरिंज तीन भागों में टूट जाती है जिस से उस के भीतर किसी प्रकार के मैल के जमा होने की समावना नहीं होती और प्रत्येक भाग अत्यन्त सुगमता से स्वच्छ हो जाता है । दूसरी रिकार्ड सिरिंज [Record Syringe] कहलाती है जिन का बीच का भाग जिस में औषधि भीरहती है कांचकाहोता है और शेषसारासाग निकल धातु का होता है । जहां इनका प्रयोग बहुत बार करना पड़ता है वहा रिकार्ड सिरिंज ही ठीक रहती है, क्योंकि वह शीघ्र टूटती नहीं; किन्तु चिकित्सक स्वयं अपने निजी काम के लिये सपूर्ण कांच की सिरिंज को पसन्द करते हैं, यह सिरिंज एक शीशी से लेकर २५ शीशी तक की होती है ।

प्रयोग करने से पूर्व सिरिंज को पूर्णतया स्वच्छ कर लेना चाहिये । इस के लिये सिरिंज के सब भागों को प्रथक २ करके उन को जल में कम से कम २० मिनट तक उबालना चाहिये । उस ही प्रकार सूचिका को भी जिस के द्वारा इन्जेक्शन देना है उवालना आवश्यक है बाजार में सिरिंज को रखने के लिये कुछ ऐसे बकस व शीशी आती हैं जिन में सदा स्पिरिट भरी रहती है, और उन को उलटा करने से भी नहीं गिरती । सिरिंज को एक बार शुद्ध कर के इस के भीतर रेक्टीफाइड स्पिरिट रखदेते हैं, और वह सदा प्रयोग के लिये तैयार रहती है । प्रत्येक बार इजेक्शन से पूर्व जो उस को उबालने में समय नष्ट होता है वह बच जाता है ।

जिन वस्तुओं का इजेक्शन देना होता है वह या तो छोटी २ टिकियों के रूप में आती है। अथवा द्रव रूप छोटी २ कांच की निलिकाओं में जिन को एमपूल (Ampoule) कहते हैं, भरी हुई बाजार में मिलती है, यदि टिकी को प्रयोग करना होता है तो उसको एक छोटी चम्मच में में रख कर थोड़ा सा जल जितना सिरिंजके भीतर आ सके, चम्मच में डालकर उस को स्परिट लैम्प की ज्वाला में रखते हैं जिससे जल गरम हो कर टिकी को घोल लेता है । इस को सिरिंज में भर कर प्रयोग किया जाता है । यदि एमपूल को प्रयोग किया जाता है तो उस की लम्बी गर्दन के एक किनारे को रेती से रेत कर तोड़ देते हैं और उस में के द्रव को सिरिंज की सूचिका के द्वारा सिरिंज में खीच लेते हैं ।

इजेक्शन करने के समय चिकित्सक शुद्ध हाथों में शुद्ध की हुई सिरिंज को ग्रहण करता है। यदि उसके सबभाग भिन्न२ हैं तो उसको मिलाकर सिरिंज को संपूर्ण कर लेता है और उस के आगे की नोक पर सूचिका को दृढता पूर्वक लगा देता है जिससे इन्जेक्शन देते समय वह सिरिंज से भिन्न न हो जाय । इस प्रकार सूचिकाको लगा कर वह

यदि ऐमपूल है तो उस को तोड कर उस में से अथवा चम्मच में से द्रव को सिरिंज के पिस्टन को पीछे की ओर खींच कर सूचिका द्वारा सिरिंज में भर लेता है। इस ही समय में चिकित्सक का सहायक रोगी के उस स्थान पर के चर्म को जहां इन्जेकशन देता है शुद्ध कर देता है। साधारणतया रेक्टीफायड स्पिरिट में बने हुये टिंचर आयडीन का दो बार लेपकर दिया जाता है, किन्तु यह याद रखनी चाहिये कि टिंचर चर्म पर केवल उस ही समय लगाना चाहिये जब वह पूर्णतया खुश्क हो।

टिंचर के लगाने पर उस के खुश्क हो जाने के बाद चिकित्सक अपने बायें हाथ के अंगूठे और तर्जनी उंगली से रोगी के थोड़े से चर्म को पकड़ ऊपर को उठा लेता है और अपने दाहिने हाथ में सिरिंज को थाम कर सूचिका को इस प्रकार चर्म के नीचे प्रविष्ट कर देता है कि वह चर्म के समानान्तर रहती है। अर्थात् सूचिका को गहराई की ओर नहीं प्रविष्टकिया जाता जिससे सूचिका पेशी में नहीं पहुंचती। तब सिरिंज के पिस्टन को दबा कर भीतर भरी हुई सारी औषधि चर्म के नीचे पहुंचा दी जाती है और सिरिंज को बाहर की ओर खींच लिया जाता है जिस से सूचिका भी निकल आती है। तापश्चात कोलोइडियन व टिंचर बेंजोइन की (Tr Benzoine Co.) में एक छोटे से कपड़े को भिगोकर चर्ममें सूचिका के द्वारा उत्पन्न हुये छिद्र के ऊपर रख दिया जाता है जिस से वह छिद्र बन्द हो जाता है साधारणतया सूचिका को निकालने के पश्चात् केवल टिंचर आयडिन व रेक्टीफायड स्पिरिट का मल देना ही पर्याप्त होता है। क्यों कि वह छिद्र स्वयम् ही बन्द हो जाता है।

अन्तर्पेशीय इंजेक्शन (Intermascular Injection) अन्तर्पेशीय इजेक्शनके लियेजो सूचिका प्रयोग की जाती है वह बड़ी और दृढ होती है प्रायः जोवस्तुयें अन्तर्पेशीय इन्जेक्शन के द्वारा प्रविष्ट कीजाती है उनकी मात्रा भी अधिक होती है इसलिये बड़ी सिरिन्ज प्रयोग की जाती है।

इस इन्जेकशन के लिये ऐसा स्थान चुना जाता है जहां पेशी अधिक और मोटे होते हैं। साधारणतया नितव के प्रान्त में यह इन्जेक्शन दिया जाता है क्यों कि वहां पेशी अधिक होते हैं जिससे सूचिका के अस्थि पर टकराने का कोई भय नहीं होता। दूसरा स्थान स्कन्ध चुना जाता है जहां वह असाच्छादनी पेशी से ढका हुआ है।

स्थान को चुन कर उसको भली भांति शुद्ध करके (नितव मलद्वार के पास होता है इस कारण उसको अत्यन्त सावधानी से शुद्ध करना चाहिये) चिकित्सक सिरिन्ज के भीतर जिसको पूर्व बताये अनुसार शुद्ध करली गई है औषधि भर कर उसको दाहिने हाथ में ले लेता है और बांये हाथ से उस स्थान को जहां इजेक्शन देना है शुद्ध स्थिर कर लेता है। तत्पश्चात सिरिंज की सूचिका की नोक को चर्म पर रख कर सीधा भीतर की ओर दबाता है। भार धीरे२ देना चाहिये जिससे सूचिका झटके के साथ प्रवेश करके रोगी को पीड़ा न पहुंचा सके। इस प्रकार सूचिका दो व ढाई इंच भीतर प्रवेश कर चुकती है तो चिकित्सक ठहर जाता है और सिरिंज को दाबकर सारी औषधि को भीतर पहुंचा देता है तत्पश्चात सूचिका को बाहर खींच लेता है और इजेक्शन समाप्त हो जाता है। इसके समाप्त हो जाने पर चर्म के छिद्र

को कौलोडियन व टिंचर वैन्जोइन से वन्द कर देना चाहिये। जब नितव में इन्जेक्शन दिया जावे तो वहां विशेष स्वच्छता की आवश्यकता है क्यों कि वहां मलद्वार से व मलत्याग करते समय संक्रामक का पहुंच जाना बहुत सहज है।

अधस्त्वक व अन्तर्पेशीय में यदि पश्चात में पीड़ा हो तो उस स्थान पर ऊष्मस्वेद कर देना चाहिये।

अन्तीर्शरीय इन्जेक्शन (Inter Vinovs Injection) द्वारा औषधि सीधी रक्त में पहुंचती है और अपना प्रभाव बहुत जल्दी दिखाती है फिरंगरोग व सिफ़लिस (Syphilis) में जो नियोसाल्वर्सन व सालवर्सन इन्जेक्शन दिया जाता है वह शिरादी के द्वारा दिया जाता है।

शरीर में किसी भी स्थान पर की शिरा को चुन सकते हैं किन्तु प्रायः कुहुनी के सामने की भीतर की शिरा (Median Basirtivein) ही को इस इन्जेक्शन के लिये चुना जाता है। रोगी को मेज या तख्त पर लिटा कर कुहुनी से ऊपर बांहु में एक टूर्निके बांध दिया जाता है और उससे मुट्ठी खोलने और वन्द करने को कहा जाता है इससे शिरा फूल जाती है। इस स्थान को पहिले ही से शुद्ध करके रक्खा जाता है। यदि पहिले शुद्ध करने का अवसर नहीं मिला है तो केवल टिंचर आयोडीन व रेक्टीफाइड स्पिरिट द्वारा शुद्ध किया जा सकता है।

इस इन्जेक्शन के लिये प्रायः दस शीशी की सिरिन्ज प्रयोग की जाती है। यह भी सम्पूर्ण कांच की अथवा कांच और धातु की होती है। कुछ धातु और कांच की ऐसी भी सिरिन्ज आती है जिन में आगे का सूचिका को लगाने का भाग जिस को नाजिल (Nozzle) कहते हैं बीच में न होकर एक ओर को होता है इससे यह लाभ होता है कि इन्जेक्शन देते समय सिरिन्ज को टेढ़ा नहीं करना पड़ता है। वह धातु के चर्म के साथ मिली हुई रहती है। प्रयोग से पूर्व सिरिन्ज को पूर्णतया शुद्ध कर लेना चाहिये। इस के साथ जो सूचिका प्रयोग में लाई जाती है वह भी अधस्त्वक की अपेक्षा बड़ी और दृढ़ होती है। इस को भी शुद्ध कर लेना चाहिये।

प्रयोग के समय चिकित्सक प्रथम सिरिन्ज में द्रव को भरता है। द्रव को भरने के पश्चात् वह सिरिन्ज को ऊपर की ओर करके जिस से पिस्टन का शिर नीचे को होजाता है। और सिरिन्ज की नाजिल ऊपर को होजाती है पिस्टन को ऊपर को ओर को दावता है जिससे सिरिन्ज की सारी वायु वाहर निकल जाती है। वायु का जो कण भी द्रव व सिरिन्ज के भीतर रह जाता है, वह स्पष्ट दिखाई देता है। सिरिन्ज को हला कर पिस्टन के दावने से उस को निकाला जा सकता है। इस प्रकार चिकित्सक सिरिन्ज से वायु के अंतिम कण तक को निकाल देता है। क्यों कि यदि यह वायु वा कण शिरा के भीतर पहुंच जाता है तो वह मस्तिष्क में पहुंच कर वहां के किसी शिरा व केशिक में पहुंच कर अवरोध (Embolism) उत्पन्न कर देता है जिससे रोगी के प्राणों पर आ वनती है।

इस प्रकार चिकित्सक सिरिन्ज में द्रव को भर करके अपने दहिने हाथ के पास ही एक ट्रे में रख लेता है जिस से वह उसको समय पर सहज में शीघ्र ही उठा सके। तत्पश्चात् वह इस ही सिरिन्ज की सूचिका को दाहिने हाथ में लेकर रोगी की शिरा को जो टूर्निके के प्रयोग से इस समय तक काफी फूल चुकी है वेधन करने को तैयार होता है अपने

बांए हाथ के अंगूठे और तर्जनी उँगली के बीच में सूचिका को पकड़ कर उसको शिरा के ऊपर बाहु के ऊपर की ओर झुकती हुई रखता है अर्थात् सूचिका को शिरा पर सीधी नहीं रखता किन्तु आड़ी रखता है और उसकी नोंक को शिरा के भीतर की ओर दबाता है। तनिक भीतर प्रविष्ट करके फिर उसको ऊपर की ओर को अधिक प्रविष्ट करदेता है जिससे सूचिका शिराकी दूसरी ओर की भित्ति को वेधन करके कहीं उसके पीछे के तन्तुओं में न पहुंच जावे।

ज्यों ही सूचिका शिरा के ऊपर की भित्ति को वेधन करके इसके भीतर पहुचती है त्यों ही सूचिका के बाहिरी सिरे से रक्त निकलने लगता है ऐसा होने पर चिकित्सक सूचिका को तनिक अधिक ऊपर की ओर को प्रविष्टकरके छोड़ देता है। और धीरे से द्रव भरी हुई सिरिन्ज को उठा कर उस के नोजिल को सूचिका के बाहरी छिद्र से मिला देता है। इसी समय सहायक टूर्निके को धीरे से ढीलाकर देता है जिस से रक्त का प्रवाह फिर से होने लगे। चिकित्सक अत्यन्त धीरे२ सिरिन्ज के पिस्टन को दाब कर द्रव को शिराके भीतर प्रविन्ट कर देना है। द्रव के समाप्त हो चुकने पर सिरिंज को बाहर की ओर खींच लिया जाता है शिराओं में जो छिद्र होता है उससे रक्तकी कुछ बूंदे निकलती हैं। वहां पर कौलोडियन व टिंचर बेंजोइन का फाया लगा देना चाहिये और उसके ऊपर से हलका सा पत्रणोपचार कर देना चाहिये।

इस इन्जेक्शनके प्रायः कुछ समय पश्चात तक रोगी कोज मेज तख्त परसे उठने नहीं दिया जाता।

ताप मान यंत्र--Thermometer.

लेखक--श्रीयुत प्रोफेसर पं० बालकराम जी शुक्ल आयुर्वेदाचार्य।

मनुष्य के शरीर का ताप परिमाण करने के लिये जो यन्त्र व्यवहार में लायाजाता है उसकोदेहताप परिच्छायक तापमान यत्र (Clinical Thermometer) कहते हैं। आगे इसका चित्र चित्रित है। उसको देखने से उसकी आकृति, और, गठन के विषय में ज्ञान उत्पन्न होसक्ता है। यह कांच का बना हुआ होता है। इस के गात्र में जितने क्रम लिखे रहते हैं। वे क्रम ठीक२ संख्या से निर्दिष्ट हैं वे सब डिग्री बडी२ रेखाओं से सूचित की जाती हैं। एक२ डिग्री में इसी रूपवाली एक२ सब से बड़ी रेखा खिंची होती है। इन सबबड़ी२ रेखाओं के व्यवधान में जो छोटी रेखायें दिखलाई देती हैं वह एक२ डिग्री का पञ्चमांश मात्र है। शरीर ताप मान यत्र दो विभागों में विभक्त है इसका निम्नांश (क) कोष (Valve) और उर्ध्वांश (ख) नल नाम से कहा जाता हैं। इसके नल अंश की अपेक्षा कोषांश संकीर्ण है इस नल के अन्दर लम्बी एक सूक्ष्म नली है। कोष के निकट में आकर वह इतनी संकीर्ण हो जाती है कि वह सहसा जानी नहीं जासकती है। इसी सूक्ष्म नली के अन्दर में पारद के उत्थान, और पतन से नल की संख्याओं में शरीरिक ताप का परिमाण प्रति फलित होता है।

प्रयोग प्रणाली

शरीर की गरमी जानने के लिये, तापमान यत्र को प्राणियों के, बगल, मुख, और गुदा, वा, योनि, इन चार स्थानों में लगाते हैं. कोई २ चिकित्सक उरु देश के ऊर्ध्वांश में, और जानु सन्धि के अभ्यन्तर भाग में लगाने के लिये कहते हैं। तापमान यत्र प्रयोग करने पर विशेष सावधान रहना चाहिये। कारण यह है कि सामान्य कारणों से स्वाभाविक ताप की कमती बढ़ती होजाती है। इस लिये रोगी को आध घंटातक चार पाई पर शान्त भाव से लिटा कर शरीर तापमान यत्र लगाना चाहिये। मुख, और गुदा, आदि स्थानों की अपेक्षा बगल, में तापमान यत्र स्थापन में विशेष सुविधा होती है मुख विवर में अधिक तर स्वभाविक ताप का परिमाण निर्दिष्ट करने में उतनी सुविधा नहीं है। गुदा और योनि में, सब काल में ताप का परिणाम ठीक२ मालूम होता है। परन्तु यत्र स्थापन में बडी असुविधा होती है इन सब कठिनाओं को हटाने के लिये सदा बगल में ही यत्र लगाया जाता है। परन्तु रोगी के स्थिर न होनेपर और बेहोश हो जाने पर, योनि, अथवा गुदा में ही ताप निरूपण करने में विशेष सुविधा होती है। कक्षा बगल में यत्र सस्थापन करने के समय यंत्र जिस तरह से शरीर के साथ सलग्न२ है इस विषय में विशेष दृष्टि रखनी चाहिये जिस स्थान में पसीना होवै। उसको कपड़े से पोंछ लेवे रोगी कपड़ा पहिने होवै तो उसको खोलकर कक्षा देश खुला रक्खे और हिमसेक, पंखा, धूप, अग्नि सेवन, व्यायाम, प्रभृति व्यापारों से ताप का स्वाभाविक परिमाण घट बढ़ जाता है। अतःआध घंटा के लिये ये सब काम बन्द कर देवे। तो शरीर की स्वाभाविक ताप फिर उत्पन्न हो जाती है। फिर यंत्र

स्थापित करना चाहिये। जिस कक्षा में यंत्र लगावें रोगी उसी तरफ को लेटे अपनी बाहु उसी तरफ फैलाये रक्खे इस अवस्था में तापमान यंत्र कितने समय तक सन्निवेशित रक्खे। इस विषय में चिकित्सक मात्र को ज्ञान होना आवश्यक है। सुप्रसिद्ध डाक्टर स्वार्ट का सिद्धान्त है कि प्रायः ५ मिनट रखने से कार्य की सिद्धी होती है। डाक्टर वामरू का मत है कि रोग का निर्णय कठिन होने पर ताप का स्वाभाविक परिमाण ठीकर निर्णय करना चाहिये। ऐसी अवस्था में, गुदा में ३ मिनट से ६ मिनट तक मुख विवर में ८नवमिनट से ११मिनट तक और बगल में १० मिनट से ४० मिनट तक यंत्र सन्निवेशन रखना चाहिये। रोगी के शोणित सञ्चालन की गति कम होने पर इस से भी अधिकसमय लगाना चाहिये।

व्यवधान, व, अन्तर,

कितने समय के अंदर ताप का निर्णय करना चाहिये। इस विषय में चिकित्सक का विशेष ज्ञान होना चाहिये रोगी की प्रकृति के अनुकूल इस का निर्णय होता है। दिन में एक बार ताप का परिमाण लेना आवश्यक है अनेक समय पूर्वाह्ण में और अपराह्ण में तापका निरुपण करने से प्रयोजन सिद्ध हो जाता है। किन्तु कभी २ दिन में अनेक बार ताप परिमाण लेना होता है यहां तक कि घन्टे २ में ताप निर्णय करना आवश्यक होता है। ऐसी अवस्था होने पर रोगी के परिचारकको ताप निर्णय करने के लिये यंत्र प्रयोग में शिक्षित करना आवश्यक है। ऐसा करने से चिकित्सक को अधिक कष्ट नहीं होता है।



थरमा मीटर—(ताप मान यंत्र)

अवस्था भेद से ताप का भेद।

तापमापक यंत्र के प्रयोग करने के समय दो विषयों में विशेष दृष्टि रखनी चाहिये।

(१) ताप का स्वाभाविक परिमाण, नल के मध्य में पारद के ऊपर उठने से सूचित होजाता है

(२) पारद का उत्थान वेग, ताप की मृदुःता, और तीक्ष्णता के ऊपर निर्भर है। इस के साथ साथ नाड़ी, और श्वास, प्रश्वास की गति, और मूत्र परिमाण की परीक्षा करना आवश्यक है। इस स्थल में यह कहना आवश्यक है कि देश, काल, अवस्था, और शरीर के स्थान भेद से स्वस्थ अवस्था में भी ताप की घटती बढ़ती होती है स्वस्थ अवस्था में कक्षा के ताप का परिमाण ९८. ४० फ,। कभी यह ९७. ३० डिग्री से भीनीचे आजाता है। और कभी कभी९९. ५०डिग्री से १०० डिग्री तक ऊपर चढ़ जाता है। इस में किसी प्रकार की शङ्का नहीं करनी चाहिये। किन्तु दो निर्दिष्ट सीमा के नीचे, वा ऊपर गमन करने से स्वस्थ नहीं समझना चाहिये। निम्नलिखित विषयों पर ध्यान रखना चाहिये। (१) शरीर स्थान (२) वयः (३) दिनका समय (४) ऋतु काल (५) भोज्य और पेय (६) व्यायाम और मानसिक अवस्था

१—शरीरके गम्भीरांश में ताप की अधिकता देखी जाती है और कक्षा की अपेक्षा, मुख और गुदा में, ताप की अधिकता देखी जाती है

(२) युवा पुरुष की अपेक्षा शिशु और बालक का ताप अधिक होता है। कोई २ कहते हैं कि वृद्धावस्था में भी ताप बढ़ जाता है।

३—पूर्वह्न की अपेक्षा अपराह्न में ताप की अधिकता होती है सूर्योदय के बाद पृथवी के बाहर की वाष्प का ताप बढ़ जाता है। क्रम से दुगनाह काल में ४ या ५ बजे तक ताप बढ़ता रहता है। उसके बाद क्रमशः घटता है। और प्रातः काल ४-५ बजे तक सब से कमसोमा पर पहुंचजाता है

४—शीत और आतप, के संस्पर्श से ताप घटता, बढ़ता है। इस लिये शीत प्रधान देश की अपेक्षा ग्रीष्म प्रधान देश वासियों का शारीरिक ताप कुछ अधिक होता है।

(५) भोजन से परिपूर्ण हो जाने पर कुछ समय तक तापकम हो जाता है। और भोजन के परिपाक काल में वह बढ़ जाता है उपवास करने से ताप घट जाता है। सुरापान करने पर ताप कम हो जाता है। किन्तु यह क्षणिक है। दूसरे क्षण में फिर बढ़ जाता है। चाय, काफी, पीने से ताप बढ़ जाता है।

(६) व्यायाम में विशेष कर हाथ, पांव, के चलाने से जब तक शरीर में क्लान्ति नहीं पैदा होती है। तब शरीर का ताप बढ़ता है। अधिक पढ़ने से मानसिक कठोर परिश्रम करने से शरीर का ताप कम होजाता है।

प्रसिद्ध अध्यापक गैरड कहते हैं। कि खुले हुए गात्र की अपेक्षा, आवृतगात्र में ताप की कुछ अधिकता पाई जाती है।

पीड़ा में तापमान यंत्र का प्रयोग

ज्वर में शरीर का ताप बढ़ जाता है। और ज्वर शान्त होजाने पर ताप कम होजाता है। अधिकतर ज्वर सब रोगों का अनुसङ्गी होता है। अधिकतर सब रोगों में अल्पाधिक परिमाण में ताप की वृद्धि देखी जाती है। उस बढ़ते हुए ताप का प्रकृति परिमाण निर्णय करने के लिये तापमान यंत्र की आवश्यकता होती है।

तापमान यंत्र, रोग निर्णय, भावीफल निरुपण, चिकित्सा इन तीन विषयों में अधिक सहायता देता है।

रोग निर्णय

पहिले यह जाना जाता है कि ज्वर है कि नहीं है। ज्वर यदि है तो उसकी प्रकृति कैसी है यहभी जानना चाहिये। यदि किसी व्यक्ति के शरीर का ताप १०४ व १०६ फ, डिग्री बढ़ गया है परन्तु पूर्व दिवस में ज्वर का कोई लक्षण नहीं था। ऐसी अवस्था में जानना चाहिये कि रोगी किसी प्रकार के विषम ज्वर (मलेरिया) से आक्रान्त है। इसके बाद यदि उसका ताप उसी भांति शीघ्र कम हो जावे। तो निश्चय करके जान लेवे कि रोगी विषमज्वर से आक्रान्त है। सहसा शरीर का ताप कम होजावे और शरीर हिमाङ्ग हो जावे तो रोग की प्रकृति सहज में ही जानी जा सकी है मेरु दन्ड के ऊपरी भाग में गुरुतर आघात लगने से और मेरु दण्ड, और मस्तिष्क में किसी पीड़ा के होने से शरीर का ताप सहसा कम होजाता है। ऐसे ही अनाहार अति शोणित क्षय और क्षय कारी जीर्ण रोग में ताप का ह्रास देखा जाता है। हृदय की पीड़ा में और पुरातन एलब्यूमिन्यूरिया रोग में ज्वर होने पर भी अनेक समय ताप बढ़ता नहीं है। विशूचिका रोग में शरीर का बाह्यताप अधिक परिमाण में कम हो जाता है। किन्तु अन्दर में वह वीर्धत अवस्था में रह-

ता है। शरीर के भिन्न २ अङ्गों में ताप की विभिन्नता देखकर जानना चाहिये। और यह भी जानना आवश्यकीय है, कि शिशु और अभिमानी रमणी का शारीरताप सहज में ही अत्याधिक परिमाण में बढ़ जाता है और ऐसेही सहज में उसका ह्रास देखा जाता है इसलिये इनके रोगनिर्णय करने में वैद्य को विशेष सतर्कता अवलम्बन करनचाहिये

भावी फल

रोगी के शरीर ताप के निरूपण से रोग का भावी फल जाना जाता है इसके साथ २ नाड़ी, श्वास, प्रश्वास, मलमूत्र, और अन्यान्य लक्षणों में भी दृष्टि रखनी चाहिये। अति वृद्ध का शरीर ताप अति तीव्र वेग से अत्यन्त बढ़ जावे। उसके साथ मलमूत्रादि निकले। तो जानना चाहिये कि पीड़ा कठोर प्रकृति की है। शरीर ताप का अभावनीय आकस्मिक परिवर्तन- अनेक समय में किसी उत्कट उपसर्ग की पहिले सूचना कर देता है। टाइफाईड ज्वर (आन्त्रिक ज्वर) में ऐसा होने पर शीघ्र ही रोगी के अन्त्र मण्डल से प्रसूत परिणाम में शोणित स्राव होते हुये देखा जाता है। ऐसी ही प्रतिदिन सध्या और प्रातःकाल में शरीर के ताप का ह्रास होवे। तो शुभ लक्षण समझना चाहिये। किन्तु पूर्व वर्ती सध्या की अपेक्षा परवर्ती प्रातः काल में ताप की वृद्धि होनेसे रोगी की वृद्धि सूचित होती है। श्वसनक ज्वर (न्युमोनियां) आन्त्रिक ज्वर, आदि रोगों में शीघ्र हीताप कम होजाती है। और उसी साथ में नाड़ी औरश्वास,प्रश्वास की सख्या बढ़ जाती है। ऐसी अवस्था में रोग का भावी फल खराब होता है। रोग की शीताङ्ग अवस्था मे ताप अधिक मात्रा में कम हो जाने पर विपत्ति की शङ्का हो जाती है। तब कभी २ ऐसे सङ्कटसे रोगी को उद्धार किया जा सक्ता है किन्तु उसका शरीर ताप ९३ डिग्री सेनीचे आ जाने पर प्रायः मृत्यु ही हो जाती है।

रोग की प्रकृति, अवस्था, और भावीफल निरूपित होने से चिकित्सा में सुविधा रहती है।



एलोपैथिक संक्षिप्त रोग विनिश्चय

(लेखक—पं० सत्येश्वरानन्द लखेड़ा आयुर्वेद विशारद)

रोग विज्ञान के विषय में आधुनिक चिकित्साविज्ञान "जीवाणु तत्व" बैक्टीरिया लोजी आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिये कुछ महत्व नहीं रखता क्योंकि आयुर्वेद की रोग विज्ञान विधि से उसका कोई सबन्ध न हैं और न जुड़ सकता है यद्यपि जलवायु के विकृत होने से कुछ भिन्न प्रकृति के जनसमुदाय में सहसा किसी जन पदध्वंसकारी रोग के आविर्भाव और उस की संक्रामकता के कारण कभी २ मंसुलमान आयुर्वेदिक चिकित्सक उस को जीवाणु जन्य कहने में हिचा बोधन करे परन्तु आयुर्वेद में इस विषय में स्पष्टतया कोई चर्चा न होने से सहसा "गतानुगतिक" होना आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिये कोई महत्व की बात नहीं मानी जासकती। जबकि-वात श्लेष्मि ज्वर(इनफ्लूऐंजा) के प्रकोप के समय जीवाणु तत्व के अनुसार विवेचन न करते हुये भी वात, कफ प्रकृति के अनुसार रोग निर्णय और चिकित्सा करने में आयुर्वेदिक चिकित्सकों को आशातीत सफलता हुई थी, इस लिये हम इस निबन्ध में जीवाणु तत्व की कोई चर्चा न कर के डाक्टरी मत के अनुसार रोग निर्णय की केवल वे ही विधियां पाठकों के सन्मुख रखना चाहते है। जिनका आयुर्वेदिक के रोग विनिश्चय के साथ घनिष्ट सबन्ध ही नहीं, बल्कि व्याख्या मात्र कही जा सकती है।

आयुर्वेद में यद्यपि रोग विनिश्चय की ये नीचे लिखी सब विधियां मिलती हैं; फिर भी वे इस तरह क्रम बद्ध और विस्तृत न होने के कारण ही यह निबन्ध लिखा गया है इस से यह बात नहीं जाननी चाहिये कि आधुनिक विज्ञान इस विवेचन में कुछ अग्रसर हुआ ही नहीं है बल्कि उसने इस विषय की काया पलट कर दोषवाद से हटा कर शरीर संस्थानवाद में परिवर्तन कर आशातीत सफलता हासिल की है। चाहे जो हो अब हम नीचे क्रमशः डाक्टरी मत के अनुसार रोग विज्ञान की विधियों का वर्णन करते हैं।

रोग का निर्णय व उसका निवारण या दूर करना चिकित्सा शास्त्र का प्रधान उद्देश्य है। इसके अनुसार यह शास्त्र दो भागों में विभक्त है। पहिला चिकित्सा विज्ञान वा प्रिन्सिपलस आफ मेडिसन्" दूसरा रोग प्रति विधान वा "प्रैक्टिस ऑफ मेडिसन्" हम यहां पर निम्न में इनमें से सिर्फ प्रथम विभाग अर्थात् रोग विज्ञान के विषय में वर्णन करेंगे।

रोग विज्ञान (प्रिन्सिपलस ऑफ मेडिसन्):—

रोग क्या है, किस प्रकार से यह शरीर में प्रविष्ट होकर किन२ परिवर्तनों को करता है, इसके लक्षण किस प्रकार के होते हैं, और वह किस प्रकार से परिसमाप्त (निवृत्त) होता है यह सब बातें रोग विज्ञान के अन्तर्गत होती हैं। प्रत्येक रोग के विषय में पूरा२ ज्ञान लाभ करने के लिये उसका कारणतत्व (इटियालाजि) निदान (प्याथोलाजि) लक्षणतत्व (सिमटमो लाजि), निर्णयतत्व डायग्नोसिस्) और प्रज्ञानतत्व (प्रग्नसिस) इन सबका आनुपूर्विक अध्ययन व अनुशीलन करना आवश्यकीय होता है। अतःएव निम्न में इन सबका क्रमशः वर्णन किया जाता है।

रोग।

—*—

रोग कहने से स्वास्थ्य के विपरीत अवस्था का भान होता है। यदि शरीर व इसके अंगोपांगोंकी क्रिया के स्वाभाविक होते रहने को स्वास्थ्य कहा जाय तो इस क्रिया के किसी प्रकार न्यूनाधिक विपरीत होने को रोग कहाजा सका है यह स्वास्थ्य यथोचित पोषक पदार्थ व अनुकूल विहार(व्यायामआदि)के ऊपर इतना निर्भर करता है कि यदि उनका समावेश व सामञ्जस्य ठीकर न हो, तो स्वास्थ्य भी नहीं रह सकता परञ्च इस प्रकार के स्वास्थ्यकर आहार विहार का हर एक को हर समय नियमित प्राप्त होना दुर्लभ होता है। इस लिये प्राकृतिक स्वाभाविक स्वास्थ्य भी दुर्लभ है, क्यों कि पिता माता से सम्पूर्ण स्वस्थ्य शरीर उत्पन्न होने पर भीनिरोग, रहकर जीवन यात्रा निर्वाह करना मुश्किल होता है ।

रोग जीवन की सुख स्वच्छन्दता में विघ्न उत्पन्न करके क्रमशः रोगी को निस्तेज, निष्क्रिय बना कर अन्त में उसका जीवन शेष तक कर देते हैं। शरीर व इसके किसी अंग प्रत्यंग के विधान (स्ट्रकचर)व कार्यप्रणाली में सामान्य मात्र विकार होने पर उसके मालूम न पड़ने की सम्भावना हो सकी है। परन्तु रोग के उत्पन्न होनेपर उसका कार्यफल स्पष्ट प्रतीत न होने पर भी वह गुप्त भाव से शरीर में रहकर बहुत दिन तक कार्य कर सक्ता है और समय २ पर इस प्रकार कोई भयानक रोग में परिणित होकर इस प्रकार छिपे२ रहकर रोगी को विपद ग्रस्त कर देता है।

नसलोजी

रोगों के श्रेणी विभाग, नामकरण व निर्वाचन को "नसलॉजी" कहते हैं।

श्रेणीविभाग (क्लासिफिकेशन):—

साधारणतः रोग दो भागों में विभक्त किये जाते है। सार्वाङ्गिक (जनरल) और स्थानिक (लोकल्) सार्वाङ्गिक रोग समस्त शरीर में परिव्याप्त होकर रहता है। परन्तु रोगों की विभिन्नता के अनुसार इसका कार्य शरीर में स्थानस्थान विशेष रूप से प्रकाशित होता है। स्थानिक रोग शरीर के किसी एक स्थान में उत्पन्न होता है। यह किसी प्रकार के सार्वाङ्गिक रोग से उत्पन्न नहीं होता। किन्तु समयर पर स्थान विशेष में यह सार्वाङ्गिक रोग के लक्षण स्वरूप भी प्रकाशित होता है इसी प्रकार बहुत से स्थानिक रोग आर्गेनिक व फंक्श्यान्याल् इन दो भागोंमें विभक्त होते हैं। आर्गेनिक रोग से किसी शारीरिक यन्त्र का निर्माण विकार और फङ्क्यान्याल् से यंत्र की क्रिया विकार मालूम होता है। इसके अतिरिक्त रोग समूह कारणवप्रकृति भेद से स्पेसिफिक् इरप्टिम्, इन्फेक्शस् इत्यादि भेद से भी श्रेणिबद्ध होते हैं

रोग इतने विभिन्न प्रकार के हैं, कि उनको यथावत् श्रेणिबद्ध करना बहुत ही कठिन कार्य है बहुत से सार्वाङ्गिक रोग सम्भवतः स्थानिक रोगों से उत्पन्न होते हैं और जो रोग स्थानिक निश्चित हुए हैं। उनमें से भी कितनेक सर्वाङ्गिक रोग के बाह्य लक्षण मात्र होते हैं। ट्यूबरक्लोसिस् (फुस्फुसक्षय) व कैन्सर (Cançer) पहिले सार्वाङ्गिक रोगों में गिने गये थे अब वे स्थानिक रोग निश्चित हुए हैं। ट्यूबरक्लोसिस् एक तरह के आणुवीक्षणिक उद्भिज्ज से उत्पन्न होता है। ये उद्भिज्ज फेफड़े व अन्यान्य स्थानो में आश्रय ग्रहण करते हैं तदनन्तर इनके प्रभाव से स्थानिक विध्वंस होता है। इससे ही क्रमशः सारा शरीर जीर्ण शीर्ण हो जाता है। इसी प्रकार कैंसर भी एक प्रकार का स्थानिक रोग निश्चित हुआ है। यह रोग शरीर में किसी एक जगह पर हो जाने पर और२ जगह में भी हो जाता है और इसके प्रभाव से सारा शरीर विशीर्ण व विवर्ण हो जाता है।।

यद्यपि आर्गेनिक रोग से यन्त्र का निर्माण विकार और फङ्क्श्यान्याल् रोग से क्रिया विकार जाना जाता है। परन्तु आर्गेनिक रोग में कार्यविकार बिल्कुल नहीं होता यह नहीं कहा जा सकता। रोग यदि सामान्य हो तो उसके आरम्भ में कार्य विकार नहीं भी दिखाई देसकता, परन्तु बहुत जगह वह बहुत दिनतक गुप्त नहीं रह सकता, पारिक स्थान में न्यूनाधिक कार्यविकार होही जाता है। इसी तरह जो रोग फङ्क्श्यान्याल् निश्चित हुए हैं उनके निर्णायक विधान में किसी न किसी तरह की अस्वाभाविकता रहने की सम्भावना रहती है जो रोग स्पेसिफिकवा इरप्टिम् हैं उन में से अधिक सरयक संक्रामक वा स्पर्शात्मक होते हैं। कभी२ एक रोग से दूसरा रोग उत्पन्न होता है; जैसे — यकृत के "सिरोसिस्" से "असाइटिस्" और सूक्ष्म ग्रन्थि के पुराने रोग से हृत्पिण्ड का "हाइपारट्राफि" उत्पन्न हो जाता है इन सब स्थानों पर प्रथम रोग "प्राइमरि" वा प्राथमिक और उससे उत्पन्न रोग को "सेकेण्डरि" द्वैतियिक कहा जा सक्ता है।

नाम करण वा नोमनक्लेचर :—

रोगों का नामकरण किसी निर्दिष्ट नियम के अनुसार नहीं हासक्ता। नामकरण बहुत सम के कारण अथवा इस के कार्य फल के उप निर्भर करता है। कहीं२ पर किसी एक विशे लक्षण वा विकृति के अनुसार रोगका नाम रक्खा जाता है। इसी प्रकार कहीं पर किसी अनुमेय

कारण के अनुसार नाम करण होता है। इस के अतिरिक्तब्राइटस् डिजीज़ कार्टास् फुट् आदिरोगों का नाम करण उन के नाम के अनुसार ही होता है। इन रोगों के नाम करण में कार्य कारण का कोई भी सम्बन्ध नहीं होता।

निर्वचन वा डेफिनेशन :—

रोगों का निर्वाचन भी किसी एक निश्चित नियम के अनुसार नहीं होता। कहीं२ पर नाम करण ही इस का प्रकृति निर्देशक हो जाता है:इसी तरह पर कहीं २ रोग को उत्पन्न करने वाले कारण व कुछ विशेष लक्षण वर्णन कर के रोग का निर्वाचन होता है जहांपर इस प्रकार के निर्वाचन से रोग की प्रकृति स्पष्ट नहीं होती — वहां पर रोग का आनुपूर्विक विवरण ही इस का निर्वचन होता है

कारणतत्व वा इटियलाजी।

रोग का कारण क्या है यह किस क्रम से उत्पन्न हुआहै जानलेने से सहज में ही उसके निवारण के उपयोगी उपाय अवलम्बन किया जासक्ता है। बहुत जगह इसके ऊपर ही रोग का निर्णय व उपयुक्त चिकित्सानिर्भर होती है।

साधारणतः—रोग जिस प्रकार उत्पन्न होते हैं, उसको देखने से स्पष्टही मालूम होता है कि जो कारण एक व्यक्ति के ऊपर सहज में ही जो काम कर सक्ता है, दूसरे के ऊपर उस प्रकार नहीं कर-सक्ता। एक व्यक्ति साधारण सर्दी लगने से ही रोगी हो जाता है, इस के विपरीत दूसरे पुरुष को अधिक से अधिक शीत लगने पर भीकुछ अपकार नहीं होता। इसी तरह ठण्ड के लगने से सबको एक सा रोग नहीं होता; इस के प्रभाव से किसी को तो साधारण प्रतिश्याय (जुखाम) होता है, और किसी २ को ब्रोकाइटिस् (छाती का दर्द) प्लुरिसि (फुस्फुसावरण प्रदाह) वा निमोनिया और किसी किसी को रिमेटिज़्म (शरीर में दर्द) वा पेरिका-र्डाइटिस् हो जाता है। ये सब रोग किसी के तो सामान्य चिकित्सा से आरोग्य हो जाते हैं, और किसी २ के उपयुक्त चिकित्सा होते रहते भी रोग उत्तरोत्तर कठिन हो जाता है। इस प्रकार प्रायः ही दिखाई देता है, कि कुछ लोग आ-हार के सामान्यअनियम सेविविध प्रकार के उदर रोग व और २ रोगों से पीड़ित हो जाते हैं, दूसरे पक्षमें कितनेकव्यक्ति उत्तरोत्तर अधिक भोजनकर के स्वस्थ रहते हैं। इसी प्रकार दिखाई देता है, कि एकही कारण एक जगह बिलकुल निष्क्रिय होता है और वही स्थानान्तर में भिन्न २ रूप से कार्य कर ता है। इन सब बातों को देख कर स्पष्ट ही मालूम होता है, कि साधारणतः जो उत्पादक कारण मालूम होते हैं, इन के अतिरिक्त और कोई कारण भी शरीर के भीतर गुप्त भाव से रह कर कार्य करता है। जहां पर गुप्त कारण नहीं रहता, वहां पर प्रकाश्य कारण बहुत भारी होने पर भी समय २ पर कोई भी काम नहीं कर सक्ता।

इन सब बातों पर विचार करने से, साधारणतः कारण दो भागों में विभक्त किये जा सक्ते हैं। जैसे—"प्रिडिस्पोजि" वा पूर्वप्रवर्त्तक और "एक्साइटिं" वा उत्तेजक।

पूर्वप्रवर्त्तक कारण :—जिस कारण से शरीर रोगी बन जाता है, उसको ही पूर्वप्रवर्त्तक (प्रिडिस्पोजि) कारण कहते हैं।

उत्तेजक कारण :—जिस कारण से रोग प्रवर्त्तित वा उन्मेषित होता है उसको प्रवर्त्तक वा उन्मेषक कारण कहते हैं। बहुत समय इन दोनो तरह के कारणो में कोई विशेष भेद नहीं होता :—

जो कारण पहिले पूर्वप्रवर्त्तक रूप से कार्य करता था, वह ही प्रवर्त्तक रूप से कार्य कर के, रोग को उन्मेषित कर देता है।

अभ्यन्तरीण व वाह्य (इन्ट्रिन्जिक व एक्सट्रिन्जिक) कारण :—कारण स्थिति के अनुसार भी विभक्त किये जासके हैं। कुछ कारण अभ्यन्तरीण अर्थात् केवल शरीर के अस्वाभाविक परिवर्त्तन आदि से होते है। ये सब कारण इन्ट्रिन्जिकज् वा अभ्यन्तरीण कहे जाते हैं। शारीरिक दुर्वलता धातु प्रकृति वा "टेम्परामेण्ट," शरीरका वैचित्र्य वा "इडियोसेनक्रेसि" आदि व्यक्ति गत अवस्था बहुत जगह अनेक तरह के रोगों के उत्पन्न करने में सहायता करती है। बहुत समयनिःस्राव्य (शरीर-से बाहर निकलने वाले)पदार्थों के अच्छी तरह से न निकलने से भी रोगी होना पड़ता है: यहां तक कि यही समय २ पर रोग उत्पादन करने का प्रधान कारण हो जाता है। गठिया (गाँठ)वायू का दर्द (र्यूमेटिज़्म) आदि रोग प्रकृत धातुगत मालूम होता है। इनकी उत्पत्ति और वृद्धि अभ्यन्तरणि अस्वास्थ्यकर परिवर्त्तनों से होती है। स्त्री, पुरुष व अवस्था भेद से भी रोग का पार्थक्य व न्यूनाधिकता देखने में आती है। वाल्यावस्था में "टिसुजो" सेलों, के परिस्फुरण के अभाव से रोग का आक्रमण सहज ही में होजाता है। इसके विपरीत वृद्धावस्थामें टिसुओं के अपजनन (क्षय)के कारण रोगोंकी वृद्धि हो जाती है। पूर्णवयस्कों (जवानों)को रोग सहज में आक्रमण नहीं कर सकता, परन्तु असमयमें उत्तेजककारण प्रबलता (जोरों)के साथ कार्यकरते है, इसमे यदि कोई रोग गुप्तावस्था में हो, तो वह समय पर प्रस्फुटित (प्रकट) हो जाता है।

वाह्यकारण वा एक्सट्रिन्ज अधिकांश में संवेष्टक अवस्था वा अनियमित शारिरिक क्रियाओ पर निर्भर करते हैं। वायू व निवास स्थान की दूषित अवस्था, अनियमित व अपथ्य भोजन, परिश्रम व आलोक (प्रकाश) की न्यूनता वा अधिकता शीत उष्ण आदि अथवा सस्पर्श आदि वातें बहुत सी जगह रोग उत्पन्न करने के प्रवल वा प्रधान कारण होते हैं इस के अतिरिक्त फास्फरस्, सखिया आदि विषाक्त पदार्थों के अन्यथा प्रयोग से भी समयर पर रोग उत्पन्न होजाते हैं।

ये सब वाह्य व आभ्यन्तरिक कारण कहीं २ पर शरीर को रोगी वना देते, और कहीं २ पर गुप्त रोग को परिस्फुट (प्रकट) कर देते हैं। इस लिये इन को भी पूर्व प्रवर्त्तक "प्रीडिस्पोजि" और प्रवर्त्तक वा "एक्साइटिक" कारणों के अन्तर्गत सामिलकिया जा सक्ता है।





चित्रक

(लेखक ला० रूपलाल जी वैश्य लोको आफिस बनारस छावनी)

सफेद, काले और लाल फूलों के भेद से चित्रक तीन प्रकार का होता है। कोई कोई पीले फूल का चित्रक बतलाते हैं। परन्तु इसका उल्लेख किसी पुस्तक में देखा नहीं गया है काले चित्रकका उल्लेख पाया जाता है किन्तु मेरे दृष्टि गोचर नहीं हुआ है। निवेदन है कि यदि किसी पाठक के पास काले और पीले फूलों का चित्रक हो तो भेजने की कृपा करें।

अनेक भाषा के नाम :—

स०—चित्रक, पाठी, व्याल और ऊष्ण तथा अग्नि वाचक समस्त शब्द चीता के पर्याय है।

हि०—चीत, चीता, चित्रा, चित्रक, चित्ता, चितरक, चितउर।

ब०—चिता चितु। म०—चित्रकु। मु०—चित्रक।

क०—चित्रमूल, चित्रकमूल, चित्रमूल। प०—चित्रा।

ते०—चित्रमूलमु, चित्रमूल, तेल्लाचित्रा मो०—वेंचितिर, कोदिवेल्ल। द्रा०—चित्रमूल। उ०—धुवचिता। तु०—वोलडु।

गु०—चित्रो, चित्रापीतरो। मलाया०। टपकोदुवलि, कोदुवेलि।

सिंहली०—सुदुनीतुल। ब्रह्मी०—कन् खेन्-फिउ, किन-खेन-इन।

फा ०— बेखबरंदा, बेखबरंदह, शीतरह, बेखबुरिंदा, शीतरक।

अ ०— शितरज, शितरभ,शीतरज हिन्दी, शतरज।

लै० — Plumbago Zeylanica.

Syn " Ouriculata.

उत्पत्तिस्थानः — यह इस देश के प्रायः सब प्रान्तों में पाया जाता है विशेष कर संयुक्त प्रान्त विहार, बगाल और कुमाउं के पहाड़ों पर बहुत मिलता है यह आप ही आप जगली उत्पन्न होता है तथा कहीं कहीं वाटिकाओं में भी लगाते हैं।

विवरणः—इसका क्षुप दो से पांच फीट तक उच्च रहता है। यद्यपि इसके पौधे बारहो मास पाये जाते हैं। तौभी गर्मी के दिनों में इस पर कम पत्ते देखने में आते हैं। बर्सात में जब इसकी नई२ टहनियां निकलती हैं तब इनके गांठों के नीचे लाल लाल छोटी खड़ी रेखायें दीख पड़ती है, परन्तु पुराने पौधों पर ये रेखायें नहीं दीख पड़ते। पत्ते विषमवर्ती १॥ से ३॥ इञ्च लम्बे तथा १-१॥ इञ्च चौड़े, अंडाकार और किंचित नुकीले होते हैं। वे कोमल और चिकने होते है। प्रायः जाड़े के दिनों में इस पर फल फल आते हैं। फूल चमेली के फूल के आकार वाले अत्यन्त श्वेत वर्ण होते है। बीज कोष जव के आकार वाले लम्बे, कच्चे में हरे और पकने पर धूसर रंग के सूक्ष्म तथा चिपचिपाहट रोवों से भरे होते हैं। जो ताड़ने से आपस में सट जाते हैं और हाथ स छूने से लसीले जान पड़ते हैं।

इनके बीजों से ही पौधे उत्पन्न होते हैं। १०—२० बीजों में २-४ अकुरित होकर पौधे रूप में परिणत होता है। गर्मी के दिनों में प्रायः व्यापारी लोग इसकी जड़ से डठल काट कर संग्रह करके पसारियों से बेचते हैं। बर्सात के पानी पड़ने पर उन्हीं जड़ों से अनेक शाखें निकल कर बढ़ती हैं। कहीं२ जड़ से ही इसको खोद कर उपाड़ लेते हैं ऐसी अवस्था में उससे दूसरे पौधे नहीं होते किंतु यदि मोटी२ शोरियां शेष रह जाय तो उनसे दूसरे पौधे भी तैयार होजाते हैं।

आयुर्वेदीय मतानुसार गुणदोषः—पाक में हलका, चरपरा, रूखा, गरम, पाचक, ग्राही, कडवा, रुचिकारी, रसायन, अग्निदीपक तथा संग्रहणी, कोढ, बवासीर, सूजन, कृमि, खांसी वात, कफ, बादी की बवासीर, वातोदर, खुजली यकृत, श्वास, क्षय, कफपित्त और उदर के रोगों को दूर करने वाला है।

चित्रक—अपने चरपरे रस से कफ का कड़वेपन से पित्त का और उष्णता से वात का नाश करने वाला हैं इस प्रकार यह त्रिदोष नाशक है।

चीते का अर्क—अग्निप्रदीपक तथा खांसी, संग्रहणी, कफ और शोष का नाश करने वाला है।

यूनानी मतानुसार गुणदोषः—तीसरे दर्जे में गरम और रूक्ष, पाचक, स्वच्छकारक, त्वचा में व्रणों को उत्पन्न करने वाला ओज को बलकारी पिच्छिल दोषों का रेचक, स्वर को शुद्ध करने वाला, शिराओं के कफ का नाशक, आमवात को नष्ट करने वाला, ओज को धारन करने वाला, इसका लेप दागों को गुणकारी तथा यह फैफडे और कलेजे को हानिकारक, दर्प नाशक बबूर का गोंद और मस्तगी तथा गुलाब का फूल, प्रतिनिध नरकचूर और मजीठ, मात्रा १ से ३ मासे तक।

डाक्टरी सम्मतियां—चीते की जड़ प्रायः औषधि के काम में आती है। यह अग्नि प्रदीपक सुधा वर्द्धक तथा मन्दाग्नि, अर्श, आमातिसार, अतिसार और चर्म रोग में हितकारी है। यह विषम ज्वर में भी लाभप्रद। बाहरी प्रयोग (लेप-कर्म) से यह फोड़े उत्पन्न करता है। आमवात और तिल्ली में उपकारी है। बाहरी प्रयोग के लिये इस को दूध, अगूरी सिर्का, नमक और पानी के साथ पीस कल्क बनाकर कुष्ठ और चर्म्म रोग पर लेप करते हैं। यह लेप फोड़े उत्पन्न होने तक छोड़ दिया जाता है।

कोंकण में आध्मान युक्त सन्धिवात की पीड़ा पर इसका भीतरी प्रयोग (खाने को) इस प्रकार किया जाता है:—चित्रक मूल-हरड़, काली हरड़, पीपल, पीपला मूल, नमक आदि का चूर्ण तैयार कर ६ माशे की मात्रा से रात्रि में सोते समय गरम जल के साथ सेवन कराते हैं। कच्छू और बुरे घावों पर इसका दधिया रस लगाया जाता है।

प्रयोग:—(१) चीते की हरी जड़ की छाल पानी में पीसकर शरीर के किसी अग पर लेप करने से वहां की खाल जल जाती है। इस में दाह युक्त सूजन और फोड़े उत्पन्न करने की शक्ति पाई जाती है। आतशक के कारण शरीर में फोड़े उत्पन्न हो फूट कर चट्टे पड़ जाते है। उन चट्टों और कोढ़ पर चीते की सूखी जड़ का उपयोग दक्षिण भारत में बहुत किया जाता है और यह लाभ दायक होता है। इसकी हरी जड़ से दूध के समान जो रस निकलता है वह "अभिष्यन्द" नामक नेत्र रोग में उपयोगी है।

सफेद फूल के चित्रक की जड़ में वेही गुण पाये जाते हैं जो लाल चीते की जड़ में हैं परन्तु सफेद चीते में लाल की अपेक्षा हीन शक्ति है।

(२) इस की जड़ की छाल को पीस कर लेप करने से फोड़े और घाव आदि शीघ्र पक कर फूट जाते हैं, विशेष कर पीप वाले घावों को फोड़ने के लिये इस की छाल का लेप किया जाता है। (३) कफ के उपद्रव पर इस के चूर्ण का सेवन कराते हैं। (४) गठिया की पीड़ा पर इस का लेप हितकारी होता है। (५) तिल्ली में घीकुवार के गूदे में इस की छाल का चूर्ण मिला कर सेवन करने से लाभ होता है। (६) कोढ़, त्वचा के रोग और गठिया की शोथ पर चीते की छाल को दूध युक्त या नमक और जल के साथ पीस कर इतना समय तक बांध रखना चाहिये जितने में छाला न उठे। (७) बिगड़े घाव पर इस का दूध लगाना चाहिये (८) खुजली में इस के दूध लगाने से लाभ होता है। (९) इस के काढ़े और कल्क द्वारा सिद्ध किया हुआ घी का सेवन करने से संग्रहणी आराम होती है। (१०) अर्श में इस की जड़ को पीस कर लेप करने से अथवा जड़ की छाल के चूर्ण को दही या तक्र के साथ सेवन करने से फायदा होता है। (११) इस के चूर्ण को आमले के स्वरस की तीन भावना देकर गोघृत के साथ रात्रि में सेवन करने से पांडु रोग आराम होता है। (१२) नकसीर बन्द करने के लिये इस के चूर्ण को मधु के साथ सेवन करना चाहिये। (१३) मण्डल कुष्ठ पर इसका मर्दन या लेप हितकारी होता है। (१४) सुख पूर्वक प्रसव कराने के लिये चीते की जड़ के एक तोले चूर्ण को मधु के साथ देना चाहिये। (१५) मूसे के विष पर इस की जड़ के चूर्ण को तेल में पका कर तलुए पर उस तेल की मालिश

करने से लाभ होता है। (१६) अर्श रोग में—चीते की जड़ को पीस एक मृत्तिका के पात्र में लेप कर, उस में दही जमा, उसको उसी में मथ कर, उस छाछ को पिलाने से उपकार होता है। (१७) श्लीपद पर चीता और देवदारु को गो मूत्र में पीस कर लेप करने से लाभ होता है।

रक्त चित्रक (लाल चीता)

अनेक भाषा के नामः—

सं०—रक्तचित्रक, रक्तचित्र, काल, कालमूल, अतिदीप्य, मार्ज़ार, अग्नि,दाहक,पावक,चित्राङ्ग महाङ्ग इत्यादि।

हिं०—लालचीत, लाल चीता, लालचित्रक, लाल चितउर इत्यादि।

बं०—एड़चित, रक्तचितो।

मैं:—रक्तचित्रक।

क०—केंपिनचित्र मूल, लालचित्रक मूल।

ते०—एराचित्र, येर्रचित्रमूलम्।

ता०—शिवप्पुचित्रिर, शिवप्पुचित्तिर, शिड कोडि वयली।

उ०—रक्तचिता, रकतचिता।

मला—स्वेट्टीकोडिवली, चूवेंडाफोड्ड अवली

ले०—Plumbago Rosea।

उत्पत्ति स्थानः—यह सिक्कम और खसिया पहाड़ की तराईयों में पाया जाता है। सफेद चीते की अपेक्षा लाल चीता कम मिलता है। इस कारण लोग वाटिकाओं में यत्न से लगाते हैं। परन्तु यहां पर यह अधिक समय तक नहीं ठहरता और प्रायः थोड़ी असावधानी से नष्ट हो जाता है। लगभग ६ वर्ष हुए यहां के सिविलियनो के क्लब घर के अहाते में लाल चीते का एक पौधा लगा हुआ था। भारत धर्म महा मण्डल के एक सन्यासी ने इस को वहां से उपाड़ कर अपने यहां रोपण किया किन्तु कुछ समय के बाद यह वृक्ष नष्ट हो गया और अब यह इस प्रान्त में दुर्लभ सा हो गया है। यदि किसी पाठक के पास इस का क्षुप हो तो कुछ बीज भेजने की कृपा चाहता हूं

विवरणः—लाल चीते का क्षुप २-४ फीट तक ऊंचा होता है और वह सदा हरा भरा दीख पड़ता है परन्तु गर्मी के दिनों में कुछ पुराने पत्ते सूख जाते है। जङ्गली वृक्षों की अपेक्षा वाटिकाओं में उत्पन्न हुए वृक्ष बहुत सुहावने दीख पडते हैं क्योंकि सूर्य्य की ताप से जङ्गली वृक्ष के पत्ते आकार में विविध प्रकार के सकुचित और सूखे से प्रतीत होते हैं। इस की जड़ मट मैले पीले या हरे रङ्ग की भूमि के भीतरकहीं २ दो फीट लम्बी पायी जाती है। पत्ते विषमवर्त्ती, अण्डाकार और चिकने होते है फूल गन्ध हीन लाल रङ्ग के आते हैं जिन के ऊपर का हिस्सा चमकीला लाल, प्रायः और गुलाबी रङ्ग और नीचे का हिस्सा धूरापन युक्त लाल होता है। बीजकोष उक्त चीते के समान छोटे रोमयुक्त और लसीले होते हैं।

आयुर्वेदीय मतानुसार गुण दोषः—लाल चित्रक गुणों में चीते की समानता रखने वाला परन्तु उसकी अपेक्षा अधिक प्रभाव शाली एवं तेज़ और तीव्र गुण सम्पन्न है विशेष कर रुचिकारी, रसायन शरीर को नवीन और स्थूल करने वाला पारेको बाँधने वाला, लोहे को बेधने वाला

तथा कुष्ठ रोग का नष्ट करने वाला है।

डाक्टरी सम्मतियां:-लाल चीते की जड़ फोड़ा उत्पन्न करने वाली है। कुचली हुई जड़ चरपरी और उत्तेजक होती है किन्तु किसी मीठे तेल के साथ इस को पीस कर आमवात और पक्षाघात पर लगाने से लाभ होता है। इस की थोड़ी मात्रा--उक्त रोग नाशनी किसी दूसरी औषधि के चूर्ण में मिला कर सेवन करना चाहिये।

जड़ की छाल को पानी में खूब बारीक पीस कर लगाने से १२ से १८ घंटे में फोड़ा उत्पन्न हो जाता है। इस की थोड़ी मात्रा उत्तेजक और अधिक मात्रा तीव्र मदकारी विष के समान हानिकारी होती है।

दक्षिण भारत में इसकी सूखी हुई जड़ कोढ़ और उपदंश की दूसरी अवस्था में बहुत अच्छी औषधि समझी जाती है।

अभिष्यन्द पर इस के दूधिये रस का बाहरी (लेप) उपयोग किया जाता है।

प्रयोगः-(१) इस में अति दाहक गुण रहने से इसकी जड़ को कपड़े में लपेट गर्भाशय में धर रखने से गर्भपात हो जाता है परन्तु साथ ही यह भी बात है कि यदि किसी कारण से गर्भाशय में से अत्यन्त रुधिर स्राव होता हो तो वह इस से बन्द हो जाता है। यह प्रयोग बड़ी सावधानी से विचार कर करना चाहिये। इस की जड़ का चूर्ण खाने से जीते अथवा मरे हुए गर्भ का पतन हो जाता है। इस की जड़ की अधिक मात्रा खाने से विष के समान असर होता है।

(२) अजीर्ण में लाल चीते की जड़, सेंधा नमक, हरड़ और पीपल, इन के समभाग चूर्ण की ३ से ६ माशे तक की मात्रा गरम जल से सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होती है। (३) वातव्याधि पर इसकी जड़, इन्द्रजव, पाढ़ी की जड़ कुटकी अतीस और हरड़ के सम भाग चूर्ण को ३ से ४ मासे सेवन करने से लाभ होता है। (४) खाज, दाद, फोड़ा, फुन्सी इत्यादि पर इस की जड़ की छाल को चटनी के समान पीस माखन में मिला कर एक थाली में रख थाली टेढ़ी कर धूप में रख दे। धूप की गर्मी से जो बूंद २ द्रव पदार्थ निकले उसे शीशी मे संग्रह करना चाहिये। इस में से लगाने से उक्त रोग का नाश होता है। (५) स्तन कान या किसी स्थान की सूजन और गिल्टी पर इसकी जड़ को पानी में पीस कर लेप करना चाहिये। (६) सर्पविष पर—लाल चीते की जड़ काले बेल का कन्द और कठूमर की जड़ सम भाग ले पानी में पीस कर थोड़ी २ देर के बाद तीन बार पिलावे। फिर रोगी को गोबर के ढेर में बिठा कर शिर पर शीतल जल की धार छोड़ता रहे इस क्रिया से दो पहर में विष उतर जाता है फिर रोगी को आध सेर घी पिलाना चाहिये। (७) चूहे के विष पर-इसकी जड़ के चूर्ण के साथ पकाये हुए तिल के तेल को तालू पर उस्तरे से बारीक चीरा देकर मर्दन करने से लाभ होता है। (८) सब प्रकार के उदर रोग पर इस की जड़ और देवदारु के कल्क को दूध में घोल कर पिलाना चाहिये। (९) चर्म पर इस की जड़ को नीबू के रस में पीस कर लगाने से फायदा होता है। (१०) खाज और फोड़े पर इसको

ताज़ी जड़ को कूट कर उसका रस निचोड़ ताज़े नारियल के दूध में मिलाकर अग्नि पर पकावे। और उसमें से जो तेल निकले उसको लगावे तो खाज और फोड़े आराम होते हैं। (११) मण्डल कुष्ठ पर इसकी जड़ को पीस कर लेप करने से और पुनः उसको पोंछ कर उस पर निर्गुण्डी के बीज को पीस कर लगाने से लाभ होता है। (१२) प्रमेह में मूत्र त्याग करने के समय तीव्र वेदना होने पर इसकी जड़ के चूर्ण का तिल के तेल के साथ देने से उपकार होता है। (१३) लाल चीते की जड़ के काढ़े का सेवन करने से खुजली आराम होती है। (१४) यकृत और प्लीहोदर में इसके क्षार को मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है (१५) बवासीर में लाल चीते की जड़, सुहागा, हलदी और गुड़, इसको समभाग पीस कर मस्से पर लगाने से फायदा होता है (१६) गठिया और पक्षाघात पर इसकी जड़ को तेल में पीस कर मर्दन करने से लाभ होता है।

काला चित्रक।

अनेक भाषा के नामः—

सं० कृष्ण चित्रक, नील चित्रक इत्यादि।

हि० न०—काला चीता, काला चित्रक, काला चित्रवर इत्यादि।

काले चीते का फूल काले रंग का होता है। कहते हैं कि इसको खाने से बाल काले होजाते हैं और यदि गौ इसके क्षुप को केवल सूंघ ले अथवा इसकी जड़ दूध में डाली जावे तो दूध का रंग काला होजाता है। बाज़ों की सम्मति है कि जिस काले चीते को गौ ने सूंघ लिया हो उसको लाकर दूध में डालने से दूध काला होजाता है।

(बूटीदर्पण)



कल्याण — सचित्र मासिक पत्र। सम्पादक—श्रीमान् बा० हनुमान प्रसादजी पोद्दार।

प्रकाशक श्रीमान् बा० घनश्याम दास जी व्यव, स्थापक कल्याण गोरखपुर। वार्षिक मूल्य ४)रु० भक्तांक का मूल्य १॥) सायज धन्वन्तरि के समान।

हमारे सामने कल्याण का भक्ताङ्क है जिस में १५ रंगीन और ४६ सादे चित्र तथा २४६ पृष्टपाठ्य विषय के हैं। कल्याण का यह अंक विशेष महत्त्व पूर्ण प्रकाशित हुआ है हमें विश्वास है कि अब तक जितने पत्रों के विशेषांक प्रकाशित हुये हैं उन में यह सब से उत्तम प्रकाशित हुआ है लेख एक से एक बढ़िया मनन करने योग्य और भक्ति पूर्ण है।

चित्र नयनाभिराम और भाव पूर्ण समह किये गये हैं हम सहयोगी को सर्वाङ्ग पूर्ण देख परम सन्तुष्ट और प्रसन्न हैं साथ ही अपने उन ग्राहकों से जो कल्याण के इच्छुक हैं ग्राहक होने का आग्रह करते हैं।

राकेश — मासिक पत्र। सम्पदक-प्रकाशक श्री प० रुपेन्द्र नाथजी वैद्य शास्त्री बरालोकपुर—इटावा वार्षिक मूल्य १॥) साईज २०। २६ अठपेजी।

इस नाम का आयुर्वेदीय मासिकपत्र सितम्बर से प्रकाशित होने लगा है लेख और छपाई साधारण है हम सहयोगी की उन्नति के इच्छुक हैं

यादव — मासिक पत्र। सम्पादक श्री मान् चौधरी राजित सिंह जी यादव। प्रकाशक — बाबू शिव वचन सिंह जी यादव, यादव कार्य्यालय गोरखपुर।

यह अखिलभारत यादव महासभा का मुखपत्र है यह जातीय पत्र होने पर भी ज्ञान, कर्म, भक्ति प्रेम और साहित्य सम्बन्धी विविध लेख प्रकाशित करता है प्रत्येक यादव को इस का ग्राहक बनना आवश्यक है।

प्राणाचार्य—मासिक पत्र। सम्पादक प्रकाशक—डाक्टर रामनारायण जी वैद्य-शास्त्री कानपुर। वार्षिक मूल्य १) साईज २०×३० सोलह पेजी।

इस में आयुर्वेद और डाक्टरी विषयों के छोटे २ और लाभकारी लेख चुटकिले अनुभूत प्रयोग रहते हैं। हम सहयोगी की हृदय से उन्नति के इच्छुक हैं।

औषधि विज्ञान—अर्थात् एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका। अनुवादक—डाक्टर महेन्दुलालजी गर्ग। प्रकाशक—श्रीमान् पं० क्षेत्रपाल जी शर्म्मा अध्यक्ष-सुख संचारक कम्पनी मथुरा। साइज २०×२६ आठ पेजी। पृष्ठ संख्या करीब ६५० छपाई कागज जिल्द उत्तम मूल्य ६) छः रुपया।

इसमें परिभाषा, औषधियों की तोलनाप नुकसा बनाने की विधि, ब्रिटिसफार्मोकोपिया की औषधियां, औषधि और उन का प्रयोग, धातु सम्बन्धी भिन्न२ गुण अंग्रेजी और देशी औषधियों के गुण, मात्रा और उन के व्यवहार करने की विधि सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई है जिस से साधारण हिन्दी जानने वाले वैद्य भी डाक्टरी की औषधियों के पूर्णज्ञाता हो सकते है। जो वैद्य डाक्टरी नहीं जानते और डाक्टरी औषधियां व्यवहार करते है और उन से कभी २ वह हानि भी उठा जाते हैं उन के लिये यह पुस्तक बड़े काम की है इस से वह डाक्टरी औषधियों सम्बन्धी प्रायः सब ही बातें जान सकेंगे। वैद्य इस के द्वारा अनेक नई और आवश्यक बातें जान सकेंगे। पण्डित जी ने इस पुस्तक को प्रकाशित कर चिकित्सा साहित्य की एक कमी पूरी कर दी है। हम अनुवादक और प्रकाशक जी को ऐसी उत्तम पुस्तक प्रकाशन के लिये धन्यवाद देते हैं।

भैषज्य भास्कर—लेखक, श्री रामचरणाचार्य्य मिश्र, प्रकाशक—पं० जगदीश्वर दत्त जी मिश्र स्थान मयरप्री पोस्ट सिसोलर प्रान्त हमीरपुर। साइज १८×२२ आठ पेजी पृष्ठ संख्या १७० मूल्य १।) रु०

इस पुस्तक में चिकित्सा सम्बन्धी विविध विषयों का वर्णन किया गया है।

विषहरण—लेखक श्रीमान पं० रामचरणाचार्य्य मिश्र प्रकाशक—जगदीश्वर दत्त जी मिश्र स्थान मयरप्री पोस्ट सिसोलर प्रान्त हमीरपुर। साईज २०×३० सोलह पेजी ८८ पृष्ठ मूल्य ।=)

इस पुस्तक में विष, उपविष, जंगम, स्थावर, सब ही विषों के लक्षण और उपचार लिखे गये हैं। पुस्तक साधारणतः अच्छी है।

सन्तति रहस्य—लेखक—कविराज डा० रामनारायण जी एल०एम०एस सन्तति रहस्य आफिस मनीराम की बगिया कानपुर। पृष्ठ संख्या १०० मूल्य ॥।)

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है और लेखक हैं एक प्रसिद्ध विद्वान और अनुभवी चिकित्सक इससे ही पुस्तक की उपयोगिता पाठकजान सकते हैं।

मलेरिया-विषमज्वर—लेखक और प्रकाशक उपरोक्त श्रीमान् डा०रामनारायण जी हैं। मूल्य ॥) पृष्ठ संख्या ६३।

इस पुस्तक में मलेरिया का आयुर्वेद और डाक्टरी सिद्धान्त से वर्णन किया गया है। साथ ही कारण निदान लक्षण और चिकित्सा भी लिखी गई है पुस्तक बड़ी उपयोगी होने के कारण अखिल भारत वर्षीय वैद्य सम्मेलन ने एक पदक भी दिया है वैद्य मात्र के पढ़ने और सग्रह योग्य है।

बालोपयोगी वीर्य्य रहस्य—लेखक और प्रकाशक उपरोक्त श्रीमान् डा०रामनारायण जी वैद्य शास्त्री है। इसमें बालकों को वीर्य्य सम्बन्धी जो शिक्षा देना आवश्यक है वही निबन्ध रूप में वर्णित है। प्रत्येक गृहस्थ को एक एक पुस्तक खरीद अपनेर बालकों को देनी आवश्यक है।

अनुपान विधि—और अनुभूत योग लेखक-स्वर्गीय रसायन शास्त्री श्यामसुदराचार्य्य प्रकाशक वा. पंचमलाल उमेदीलाल वैश्य रसायन शाला गायघाट बनारस सिटी। मूल्य ॥।) साइज २०।३० सोलह पेजी पृष्ठ ८३

इसमें चन्द्रोदय और सब प्रकार की भस्मों की सेवन विधि-अनुपान मात्रा तथा अनेक अनुभूत प्रयोग लिखे हैं-अनुभूत प्रयोग उत्तम और व्यवहार योग्य हैं। पुस्तक वैद्यों के काम की है।

बिच्छू विष चिकित्सा—लेखक प्रकाशक-बाबू सोहनलाल जी कोठारी देश नोक (बीकानेर स्टेट) मूल्य=)॥ पृष्ठ संख्या २४

पुस्तक में बिच्छू के विष के लक्षण और उसकी चिकित्सा का वर्णन है पुस्तक उपयोगी है पर मूल्य अधिक है।

यमका दूत—अर्थात् प्लेग या ताऊन का हाल। लेखक—वैद्यराज गोपीनाथ जी सम्पादक आरोग्य दर्पण प्रकाशक-स्वास्थ्य सदन हल्दौर (बिजनोर) मू०-) पृष्ठ २२

इसमें सादी और सरल भाषा में प्लेग का वर्णन और उससे बचने के उपाय लिखे गये हैं। पुस्तक सर्व साधारण के पढ़ने योग्य है। दाताओं को धर्मार्थ बांट यश और पुण्य सचय करने योग्य भी है।

जीवाणुवाद—लेखक माधव प्रसाद जी शास्त्री वैद्यरत्न बड़ोदा स्टेट। मूल्य लिखा नहीं।

यह पुस्तक गुजराती भाषा और लिपि में लिखी गई है। इसमें जीवाणु वाद बड़े अच्छे ढग से वर्णित है। उत्तम लिखे जाने के कारण ही लेखक को गुजरात प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन ने इनाम दिया था। हो सका तब इसका हिंदी अनुवाद कर धन्वन्तरि में प्रकाशित करने का प्रयत्न करेंगे।

वार्षिक विवरण—सप्तम और अष्टम सं० १९८३ और१९८४ का श्री.अ.भा.जीवदया प्रचारणी सभा आगरा का वार्षिक विवरण है। इसके पढ़ने से

सभा ने जो महत्व पूर्ण कार्य्य किये हैं उनका पता लगेगा और आपको उनके संचालकों बिना धन्यवाद दिये न रहा जायगा हम इस सभा के मंत्री लाला बाबू राम जी बजाज को धन्यवाद देते हैं। जिनके कठिन परिश्रम से सभा अपना उद्देश्य पालनकर हजारो मूक जीव प्राणियोंका हितकर रही है साथ ही हमें धर्म्माचार्य्य जगतगुरु श्री शङ्कराचार्य्य जी महाराज के पत्र में "हम बिनाकिसी सकोचके प्रगट करते हैं किऐसे खूनकेप्यासे देवऔर देवियों का पूजन करना अवश्य हिंदू धर्म के विरुद्ध है" यह वाक्य पढ़ कर महान खेद हुआ। कोई भी देव और देवियां उन्हें बलि चढ़ाने के लिये आदेश नहीं देती उन्हें बलि देकर हम लोग ही अनुचित कृत्यकरते हैं यदिहम उन्हें बलि न देकर चावल फूल दीप धूप चंदन से पूजा करें तब भी वह ग्रहण करेंगे ही और अत्यधिक प्रसन्न होंगे फिर देव देवियों का पूजन करना हिंदू धर्म के विरुद्ध क्यों ?



दद्रुहरिवटी—१

मिश्री, कत्था, फिटकिरी, सुहागा, गन्धक-आमलासार ये पांच औषधि समान भाग ले नीबू के रस में १ दिन मर्दन कर गोली बना छायो में सुखावे व्यवहार विधि—रात्रि को सोते समय दाद को साबुन से खूब धोकर उस को कपड़ा से अच्छी तरह पोंछले और गोली को पानी से पत्थर पर घिस कर लेप सा कर लें। यह लगती नहीं है और ५-७ दिन में हानि लाभ हो जाता है धना र्थो को बनाकर अपने यहां बांटनी चाहिये।

गोभिल

स्तम्भन वटी—१

छायामें सुखवाये हुये भटकटैया के बीज, नकछिकनी का पञ्चांग, बहेड़े की मींग, केशर, अफीम, रूमीमस्तगी, जावित्री, जायफल, अकरकरा सफेद राल, उटंगनके बीज यहसब एक एक तोले और अफीम, केशर, छोड़ कर सब को कपड़छन कर एक खरल में यह कपड़छन चूर्ण और अफीम, केशर तथा १ माशे कस्तूरी डाल शहद के साथ ४-६ घंटे घोट कर बेर के बराबर गोली बनालें। मैथुन से १ घंटे पूर्व १ गोली दूध के साथ सेवन करने से १०।१५ मिनट स्तम्भन होता है

—गोभिल

जून परमे-पर—१

बेलफल की चाटनी दूध में मिला कर उस में ककोल चूर्ण और मिश्री सम भाग मिला कर सेवन करे। इस के सेवन से अभ्यंतरिक त्वचा में ठंडक पहुंचती है। मूत्र साफ होता है और स्राव कम होता है।

कास और जुकाम पर—१

तुलसी कीमंजरी (फूल) १ तो० शहद १ तो० सौंठ आधा तो० और कांदे (प्याज) का रस आधा

तो० ये सब एकत्र कूट पीस कर चटावे। शीघ्र ही खांसी जुखाम प्रतिश्याय आदि मस्तक विकार दूर होते हैं।

पीनस—१—७

नाक में से पीप बहती हो दुर्गंध आती हो तो—सब्ज या शुष्क तुलसी के पत्तों का चूर्ण

१ भाग

Acid Tannic—$\frac{१}{६}$ भाग

" Boric $\frac{१}{६}$ भाग

Bismuth Carb—1 भाग

वच चूर्ण—$\frac{१}{७}$ भाग

युकिलप्टस तेल—४ बूंद

ये सब एकत्र कर नस्य करे तो नासिका सबंधी नाना प्रकार की व्याधियां नष्ट होजाती हैं। कई बार का अजमाया हुआ है।

लेखक—वैद्य कृष्ण प्रसाद त्रिवेदी बी० ए० आयुर्वेदाचार्य्य।

नेत्र रोग पर—

जीरा सफेद १ माशे, लोधपठानी ३ माशे, रसोत शुद्ध ४ माशे, हरड छोटी नग ३, लौंग नग १, हल्दी १ माशे, फिटकिरी ४ रत्ती, अफीम १ रत्ती विधि—सब को जो कुट कर बीच में अफीम रख १ पोटली बना ले कपड़ा सफेद और स्वच्छ ले। उसे गुलाब जल में भिगो २ कर आंख पर बार २ लगाने से गरमीके दिनो में आने वाली आंख (दुखती हुई आंख) और हरदाऊ के क्वाथ में भिगो कर नेत्रों से लगाने पर शरदऋतु में आई आंख अच्छी हो जाती हैं. अनेक बार परीक्षित प्रयोग है।

गोभिल :—

मलावरोध पर—७

अजमायन ५ तोला ले उस को साफ कर पानी का मांईया लगा (थोड़े पानी में भिगो कर) २ घन्टे रखदे बाद को हाथो से मल कर ऊपर का छिलका अलग कर मींग निकालले और उन्हें छाया में सुखा दे। हरड़ छोटी ५ तोला ले १ घन्टे पानी में भिगो कर धो डाले और फिर कपड़ा से पोंछ घी एक वर्त्तन में डाल अग्नि पर रक्खे और जब गरम हो जाय तब उस में हरड़ डाल कर भून ले इस से हरड़ फूल जायगी तथा रङ्ग भी सफेद हो जायगा। अबइन दोनो हरड अजमायन को आध सेर नीबू के अर्क में डाल दे (हरड बहुत छोटे २ टूंक कर के डाले) और काला निमक ५ तोला, काली मिरच ४तो० हींग भुनी ६ माशे कपड़ छन कर भी डाल दे और धूप में रख दें जब खुश्क हो जाय तब शीशी में रख ले।

व्यवहार विधि—भोजनोपरांत तीन२ माशे सेवन करने से अग्नि बढ़ेगी भोजन शीघ्र पच जायगा। पेट का शूल, अफरा बन्द हो जायंगे दस्त साफ होगा अनेक बार का परीक्षित है।

गोभिल—



संख्या ४७

एक रोगी जिसकी अवस्था ३२ वर्ष की है पिछले दिनों एक वर्ष पहिले खूब मोटा ताजा बलवान था। कार्तिक में ज्वर आया फिर ऊष्मा रक्त में ठहर गई यकृत कुछ बढ़ गया रोगी दुर्वल होता चला गया बहुत इलाज कराये जाड़े भर यही दशा रही कभी १० दिन को अच्छा रहा फिर ज्वर आजाता जाड़ों के बाद १ महीने तबियत ठीक रही फिर ज्वर जुकाम होकर आगया है यकृत भी सुस्त है। निवेदन है कि कोई ऐसा प्रयोग हो जिससे प्रतिश्याय व ज्वर की आशंका दूर हो पर शरीर में रक्त मांस की वृद्धि हो। यकृत की क्रिया ठीक हो प्रयोग अनुभूत हो।

—प०सागरमल रामचन्द्र शर्मा वैद्य

संख्या ४८

एक रोगी जिन की आयु करीब ५० वर्ष की होगी शरीर स्थूल, वात पैत्तिक स्वभाव, कद लम्बा, पेट में कुछ मेद, शारीरिक परिश्रम कुछ न कुछ करते कोस दो कोस रोज भ्रमण करते अब उनकी अवस्था यह है—दाहिने बाजू गरदन बायें तरफ को ऐंठती जाती है यह रोग उन्हें पांच वर्ष से प्रारम्भ हुआ है क्रमशः गरदन दाहिने बाजू से बायें तरफ को झुकती गयी है अब करीब २॥ वर्ष से ऐंठन अधिक है दिन प्रति दिन ऐंठती हुई दीखती है चिकित्सा प्रायः करते ही रहते हैं। चलते वक्त बाये तरफ हाथ से रोके बिना चल ही नहीं सकते या बैठे नहीं रह सकते हर दम बाये हाथ का सहारा या कोई लकड़ी या छाते का सहारा लेना ही पड़ता है इन्हें करीब २५ वर्ष हुए जब सुजाक हुई थी अब भी कभी२ गुप्तेन्द्री के ऊपर चमड़े पर घावसा हो जाता है और प्रायः आप से ही अच्छा हो जाता है। प्रायः इन्द्री में खुजली जायदा होने से खुजलाहट से चमड़ा फट

जाता है और स्वयं हो अच्छा हो जाता है डाक्टर कहते हैं कि पेशाब में शक्कर जाने से इस किस्म की व्याधि हो जाती है डाक्टरों ने चिकित्सा भी की पर लाभ न हुआ। अब प्रायः दोनों समय में तीन पाव के हजम होता है किसी कदर का मलावरोध भी रहता है। पेशाब ठन्डक में सुफेद दोपहर को पीलापन गर्म होना है अन्न में रुचि अब कम होती है कुछ नपुंसत्व दोष भी अब कुछ ही थर्सा एक मास से देख पड़ता है। कृपया अनुभूत चिकित्सा क्रम और निदान, रोग निर्णय कर कृतार्थ करें।

वैद्य गंगाप्रसाद पांडेय

संख्या ४९

एकस्त्री की अवस्था २८सालकी है जिसका द्विरागमन संवत् १९७५ जेठ माह में हुआ था उसके दो संतान लड़की जिनमें एक की उमर चार वर्ष और दूसरीकी २वर्षकी है संतान होने के बाद इसके छै माह में इसकी मासिक धर्म एक दम बंद होगई है तबसे इसका शरीर दुर्बल होता चला आया है आगे संमत १९८४मिती पूस के महीनेसे बुखारमध्यान कालसे शुरु होकर रात्रिके दसबजे तक साफ होजाता है दवा इस बीमारकी कई वैद्य करचुके हैं पर बुखार नहींजाताहै इसलिये वैद्य समाज की शरण में विनय पत्र भेजा जाता है कि इसकी अनुभूत औषधि निर्णय करके जो वैद्य इसकी दवा लिखेंगे ईश्वर उन्हें अनेक धन्यवाद देंगे रोगिणी गरीब है उसका पति १५)रु० मासिक का मास्टर नायब है घर में खाने वाले छै आदमी हैं शांति की समेर हैं। आपको अनेक धन्यवाद हैं।

दि०—रामाधीन पुरुषोत्तम

संख्या ५०

उमर ६० साल कद मामूली रंग गेहुआ शरीर साधारण बीमारी नाभि के ऊपर एक गोला है उस गोले से एक प्रकार की वायु निकलती है जिसका निकलना प्रतीत होता है–फिर वह वायु सीने को जलाती हुई बायें कन्धे को जलाती है और नीचे बायें पुट्ठे को जलाती है बाद शिर में धका देती है और तलुये में से गरमीपैदा होती है जिससे दिल घबड़ाता है और बेचैनी होती है एक जगह ठहर नहीं सकते न बैठ सकते न लेट सकते लाल चहरा हो जाता है-पैरों में झलझलाहट पैदा होती है पेशाब को बार२ जाना पड़ता है और थोड़ा२ उतरता है गला सूखता है और एक नकुआ रुकता है अपान वायु बन्द रहती है पेशाब की रुकावट होती है यह बीमारी सुबह ४ बजे से शामतक कभी २ रात को भी कोईर रोज कम कोईरोज ज्यादह रहती है अपानवायु के खुलने से कुछ शांति हो जाती है अपान वायु गर्म निकलती है दस्त ढीला वो गर्म होता है पेशाब गर्म व रुकावट से उतरता है गोला को दवाने से दर्द व जलन पैदा होता है यह बीमारी सन् १९०८ में हुई थी बरसात ऋतु में बाद ४-५ माह के शांत होगई इसही बार सन् १९१७ में कुंवारसे फागुन तक हुई बाद शांत होगई तीसरी बार सन् १९२३ में १२-१३ माह रही अगहन माह में शुरु हुई थी अब करीब ६माह से फिर शुरु हुई है कोई परिवर्तन नहीं हुआ इस वक्त जब कि बीमारी हुई थी उस वक्त कोष्ट शुद्धि के लिये इच्छा भेदीका जुलाब दिया ४रोजतक २०दस्त हुए बाद नियम पूर्वक रहे फिर हाजमे के चूर्ण महाशंखवटी लवणभास्कर तथा दूसरे चूर्ण जिनमें हींग पड़ी हुई थी दीयेगये मगर कोई फायदा नहींहुआ

संख्या ५१

एक सौभाग्यवती स्त्री को मासिक धर्म के समय पेडू और नितम्ब के मध्य भाग में प्राणान्तक पीड़ा हुआ करती है। वैद्य महानुभावों को इस रोग का कारण निदान और अनुभूत प्रयोग लिखने की कृपा करनी चाहिये।

कमलेशचन्द्र उपाध्याय

संख्या ५२

विज्ञजन निर्णय लिखें कि क्या करना चाहिए जबकि—छोटे से प्रान्त में प्रबल हैजा फैला हो वहां के रोगी तथा स्वस्थ मनुष्य प्रति दिन एक न एक नई बात निकाल ते हैं और एक केक हने से सारे गांव में हल चल मच जाता है जो २ बात वह कहते हैं वही सब लोग(पढ़े लिखे और प० कहलाने वाले भी) करने लगजाते हैं चाहे वह योग्य हो या अयोग्य। कोई मेंढ़ा बकरा मांगता है तो कोई घिंटुटा (शूअर) का बच्चा-बस लोग कहकर चलेजाते हैं देवियों के मन्दिर में इस बलिदान के कारण पूजन पाठ हवन करना भी कठिन हो रहा है जब उन्हें हम समझाते हैं तब समझते नहीं और नऔषधि ही कराते हैं उल्टे हमें धमकाते हैं चूं कि विप्लव;होरहा है इधर विशूचिका अपना और भी प्रभाव बढ़ाता जारहाहै गांव का सहार होरहा है, हम ऐसी स्थति में क्या करें विद्वान् अनुभवी उपाय बताने कीकृपा करें

श्री कृष्णशर्म्मा पहरहामटौध बांदा

संख्या ५३

मेरा रोगी एक पुरुष है जिस की आयु ४० वर्ष की है उसे निम्न लिखित रोग है कमर सेनीचे दोनों पैरों में दर्द वो चिलक सर्दी करके पैदा होता हुआ इसके बाद नारायण तैल मर्दन वो योगराज गुगुल सेवन एक मास करने से दाहिने पैर तथा दाहिने कमरका दर्द अच्छा होगया। परन्तु बांया पैर कमर पर्यन्त कुछदर्द न्यून होकर पैर सूख गया कुछ त्वचा शून्य भी होगया तथा चलने में बांये पैर का सुपली मोड़ा नहीं जाता है। और बल हीन होगया था इस के बाद डाक्टरी प्रयोग बिजली का बैटरी और इन्जेक्शन तीन बार दिया गया। जिस से कुछ दर्द कम होगया। ये रोगडेढ़ वर्ष से शुरु है वैद्यमहोदय तथा सम्पादकजी कृपा कर निदान तथा अनुभूत प्रयोग साथ२ विधि लिखने की कृपा करें। जिस से रोगी रोगसे मुक्त हो कर आप महानुभावों का गुण कथन करे। प्रयोग सुलभ मूल्य काआयुर्वेदी तथा डाक्टरीपरीक्षितहो

प० शिवलखन पाठक वैद्य

संख्या ५४

एक बालक रोगी है जिस की उम्र तीन वर्ष की है उसे पहले परिगर्भिक रोग हुआ था तथा दवा सेवन से कुछ अच्छा होगया इस के बाद दस्त होने लगा कभी मल पतला कभी गाढ़ा दिन रात में मिलकर २० बार आने लगा तत्पश्चात डोंगरे का बालामृत सेवन कराया गया दो मास तक दस्त का वेग न्यून होकर पांच सात बार आने लगा पथ्य के गड़बड़ तथा अचार आम का अधिक सेवन होने से शरीर समुचा सूज गया इस के बाद सिंगौ का मठा भात का पथ्य कराया गया जिस से दस्त तीन बार आने लगा। बालक रोगी दो वर्ष से है जिस से बल हीन होकर पाखाने केसमय कांच निकलआता है वैद्यमहोदय निदान तथा अनुभूत प्रयोग साथ२ विधि लिखने की कृपा करें प्रयोग सुलभ मूल्य का अनुभूत डाक्टरी तथा आयुर्वेदीय होय।

प० शिव लखन पाठक वैद्य

संख्या ५५

वैद्यमनोरमा संस्कृत श्रीमान् यादव त्रिकुम जी आचार्य्य बम्बई द्वारा प्रकाशित पुस्तक में कामला धिकार में यह श्लोक आया है विद्वान् वैद्य इस की हिन्दी टीका कर अनुग्रहीत करें।

अञ्जकटा सहितस्तत्र कल्को जपति कामलाम्
रसो वा भृङ्गराजस्य निषिक्तो भूरिमूर्धनि ॥

विनीत—रामेश्वर शर्मा, नरेना

संख्या ५६

आयु २८ वर्ष की है विवाह होगया है संतान भी है खून खराव है परन्तु कुष्ठ की बीमारी है अर्क उसवा वगैरह रक्त शोधक वहुत दवा दी गई पर पूर्ण लाभ नही हुआ अब तीन साल से श्वास (दमा) की बीमारी भी होगई है अब इस वर्ष से सुजाक भी होगई है। अब यदि शरद दवा देते है तब श्वास वढ़ कर मरणासन्न होजाता है और गर्म दवा देते हैं तब सुजाक प्रकोप करता है अतः विचार कर योग्य अनुभूत प्रयोग लिखने की कृपा करें।

निवेदक — रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी

संख्या ५७

एक रोगी को कमीर पैरों में सूजन वढ़ जाती है कब्ज बना रहता है फील पांव का मर्ज मालूम होता है रोगी—सवल है यह हाल उस का तीन साल से है कोई अनुभतप्रयोग लिखनेकी दया करें रोगी गरीब है।

निवेदक—पं० रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी

संख्या ५८

एलेक्ट्रोहोमोपैथिक कालिजकहां २ हैं सबका पूरा पता जिन्हे—मालूम हो लिखने की कृपाकरें।

नि—एक ग्राहक—

संख्या ५९

१—मेरा वय- २६ वर्ष का है मुझे २१ वर्ष की अवस्था में यह रोग हुआ था। ५ महीना डाक्टरी इलाज कराया, पुनः देशी दवा ६ माह कराई, पुनः हवा वदला १ मास, किन्तु कुछ शांतिन मिली, पुनः देशी दवा खाई ६ मास, वाद स्वर्णपर्पटी, पाचन वटी खाया। किन्तु कुछ अच्छा नहीं हुआ पुनः डाक्टरी ईलाज कराया३ मास, इस तरह कर हेर फेर कर. पुनः वैद्य का इलाज मेरे अब कुछ शान्ति है। कृपया इस रोग नाश के लिये गल पथ्य किया जाय।

२—प्रथम २१ वर्ष की अवस्था में "अर्श" हुआ अन्तर्वली में किन्तु कुछ मालूम नहीं दिया, केवल दस्त समय जलन दर्द होती रहीनियमानुसार २ वार होता रहा, १९२४ ई० में २ मास ऐसा रहा बाद १ रोज ज्यादे अतीसार हुआ आम ज़्यादे आया, पुनः पथ्य लेने पर, ग्रहणी दुष्ट हो गई, सर्वदा अपक्वमल आम साथ गिरने लगा करीब ५–७ दस्त प्रायः लग जाया करते थे। इस तरह १ मास रहा, वाद हिस्टेरिया प्रकोप होने लगा केवल चेतना नष्ट प्रायः नही होती, ज्यादा अतीसार होने पर फीटस होता था। प्रलाप भ्रम सब होता था फीटस शांति होने पर एक दो वार मूत्र खुल कर होता था और अतीसार बन्द हो जाता था मूत्र सङ्ग चूना सादृश्य धातुसा गिरता था। ५ मास ऐसी दशारही, वाद आयुर्वेदीय दवा, रसराज, काल चतुर्भुज, लवण भास्कर खाया फीटश आनन्द हुआ, पर ग्रहणी ठीक नहीं हुई, बाद १ मास हवा बदल दिया, पुनः ६ मास लवण

भास्कर मधु सङ्ग खाया अतीसार में कुछ कमी, किन्तु उद्‌गार, अम्लपित्त, अधोवायु रुकर२ कर होने लगा" अर्श" कामस्सा कुछ वाहर आने लगा तदनन्तर काशीजी श्रीमान्‌त्र्यम्बक शास्त्री द्वारा" स्वर्णपर्पटी,, पाचन पर्पटी, ७० दिन खाया इससे ज्यादह हानि हुई दुग्ध नहीं पचने लगा पुनः डाक्टरी इलाज किया करीब १२ इन्जेक्शन लिया किन्तु मुर्दा तुल्य होगये। अतः अतीसार वढ़ता गया चित्र विचित्र रंग का होने लगा अस्थिमात्र शेष रहा चोवलका धोमना सहशा स्वप्न दोष प्रति दिन होने लगा। चारपाई से उठना स्वप्न वन हो गया मृत्यु तुल्य होगये। पुनः परमात्मा का ध्यान कर श्री मान्‌ पं० व्रजविहारी चतुर्वेदीय आयुर्वेदाचार्य्य – पटना में इलाज शुरु किया। यह मुझे मूल, अर्श" उपद्रव अतीसार, अम्लपित्त शुक्रमेह कह कर दवा दिये कुटजारिष्ट जगदीश्वर, भुज प्रभा वृध पीपल्यादि तैल, अर्श हरलेप विजय चूर्ण' अशोक चूर्ण स्वर्ण मालनी वसन्त, अश्वगन्धारिष्ट, शिला जतुवटी, आदित्य वटी, रत्नेश्वर रस, चन्द्रोदय, इत्य नाना दवा खिला कर कुछस्वास्थ पाये इनकी दवामें करीब २वर्षरहे अववास्थ कुछ है शरिकान्ति तन्दुरुस्त है पर जड़ रोग का नहीं छूटा सम्प्रति यहदशा है किशरी रहष्ट पुस्ट है कोई वस्तू कड़ा नहींपचता है अर्श से मवाद सफेद कफ सदृश गिरता है। कभी २ वार टट्टी कभी ६—४ वार टट्टी प्रायः अपक्क होजाता पाचने समय सर्वदा जलन देकर उद्‌गार होता है। मूत्र सग कभी धातुपान प्रथम या पीछे होना कभी२ महीना में १वार स्वप्नदोष होता है ज्यादह कष्ट २-३ वार दस्त लगने से वायु पेडू में ज्यादह जमता है दर्द करता है इस समय जल से उवाला आटा का रोटी घृतसंग तरकारी थोड़ागौ दूध पचता है मिट्ठा खट्टा मिर्च इत्यादि वस्तें नहीं पचती है श्री मान्यवर महोदय शास्त्री महाराजाओं से प्रार्थना है कि कोई अनुभूत योग लिख कर कष्ट से वचावें वहुत फल होगा कोई" अर्श, ग्रहणि, मंदाग्नि, अम्लपित्त सुक्रमेह के परीक्षित प्रयोग हो लिखकर पथ्यअनुपान सग ग्रन्थकोनाम सहित प्रकाश यशी होइये मेरा स्वभाव ज्यादे गर्म, शर्द नही वरदाश्त करता, अद्रिक, हिंगु, शुंठी ज्यादे खराव करता है ध्यान कर दवा लिखी जाय

निवेदक—प० राजेश्वरी प्रसाद सिंहवैद्य



सम्मति नं० २७—

अप्रैल के अङ्क के पृष्ठ २०६ संख्या २७ का उत्तर—नीम की सूखी पत्ती १ भाग, आमला १ भाग, खेरसार १ भाग, तीनों को कूट कर पानी में मिला सिर पर २ समय मालिशकर थोड़े पानीसे धोना और आमलासार गंधक, रक्तचन्दन, आमला, समान भाग ले चूर्ण कर शकर (मिश्री) मिला रक्खे एक २ मासे प्रातः और सायं जल के साथ सेवन करे।

छगनलाल लल्लु भाई
वायुमुक्त कार्य्यालय

सम्मति नं० २८—

शिरदर्द को—रोगीको सूर्य्योदय से पहिले जगाना—प्रवाल भस्म सूर्य्य पुटी गुलाब जल की और स्वर्ण माक्षिक भस्म समान भाग लेकर शक्कर (मिश्री) और घृत मिला चटाना। दर्द के समय कुम्हार के यहां की बरतन के वास्ते तैयार की हुई १ पाव मृतिका (काली मट्टी) ले कपड़ा के अन्दर रख मस्तक पर लेप के माफिक बांध आध घन्टा रखना शिरदर्द तुरन्त कम होगा और रात्रिको सोते समय घृत १ तोला जल तोला ५ की चाह की तरह गरम कर प्रवाल स्वर्ण माक्षिक मिला कर पी जाना इस प्रकार दूसरी पाली(पारी) आजाय जब तक करना।

छगनलाल लल्लु भाई

सम्मति नं० ३०—

वमन और जहर बाद (अमल पित्त) के लिये—कपूर कचरी, शुद्ध गेरू (घी में करना) सोंठ पीपल, हरड़ का वक्कल, सफेद जीरा, संचर निमक, समान भाग लेना एक मास तक शहद के साथ देना और गरमाला पचक क्वाथ (धान्य पंचक क्वाथ) देना।

छगनलाल लल्लु भाई।

सम्मति नं० ३१–

उदर रोग—अग्नि तुंडी की दो २ गुटिका गरमाला पञ्चकक्काथ या उदर रोग का भाव प्रकाश का देवदारू चित्रकादि क्वाथ के साथ प्रातः और साय काल ८ दिन तक देना। दोपहर के २ वजे गौदन्ती हरिताल भस्म को घी ग्वार के गूदे के साथ देते रहना।

छगनलाल लल्लु भाई।

सम्मति नं० ३२–

जुकाम और खांसी में—भाव प्रकाश में कफ ज्वर में जो अष्टांग चूर्ण का प्रयोग है उसे व्यवहार करना और तालू भाग में घी मालिशकरना और अष्टांग के साथ खडी शकर (मिश्री) चोपट मिलाय के कुरली करना।

प्रश्न नं०–३५–४३–४६ इन तीनों के लिये वायुमुक्ता का उपयोग करना तुरन्त औषधि नहीं बनेगी। धन्वन्तरि का विज्ञापन देखें और प्रश्न नं० ४० के लिये उत्तर जो सम्मति न० २७ में है उस के अनुसार उपयाग करना।

छगनलाल लल्लु भाई।

सम्मति नं० ३३–

क–गाने वालों को गला न पड़े और स्वर मधुर तथा तेज रहे इस के लिये असगंध, माल कांगुनी, वच, शखपुष्पी, ब्राह्मी समान भाग ले ब्राह्मी के स्वरस में ४ चार दिन मर्दन करे और खुश्क कर रख ले। चार २ रत्ती पान में रख दिन में २–३ वार गाने वाले को सेवन करावें।

गोभिल।

ख–सिद्ध मकरध्वज, अफीम शुद्ध, जायफल आबिश्री, कपूर, इला।ची छोटी के बीज, दालचीनी मुलहटी का सत्व, बबूर का गोंद, समान भाग ले पान के स्वरसमें ३दिन मर्दन करमटर बराबर गोली बना प्रातः और रात्रि को गौ दूध के साथ सेवन करने से जुकाम, खाँसी, कफ, निर्बलता, नाक से पानी गिरना आदि शिकायतें दूर हो जाती हैं।

वैद्यशास्त्री देवीशरण गर्ग

सम्मति न० ३४

मैथुन के अनन्तर स्त्री तत्काल उठ कर गुनगुने जल से जिस में थोडा नमक पड़ा हो जननेन्द्रिय को साफकरे और४रत्ती,की एक डली सेंधेनमक की पानी से धोकर जननेन्द्रियमें रक्खे इस तरह व्यवहार करते रहनेसे गर्भस्थिति नहीं होता।

गोभिल।

२–हम श्रीमान् चौबे रामप्रताप जी सव पुलिसइन्सपेक्टर दीया वड़ोदा कोटास्टेट राजपूताना से सविनय, साग्रह प्रार्थना करते हैं कि देश के लिये वह अपना प्रयोग प्रकाशित करवा प्रश्न कर्त्ता कोसन्तुष्ट करें। सम्पादक—

सम्मति नं० ३५ क

रोगणी को उन्माद हो है इस लिये प्रातः और साय ब्राह्मी घृत दो दो तोला मिश्री दो दो तोला में मिला करचटावें ऊपर से अश्वगन्धारिष्ट तोले १ सारस्वतारिष्ट तोले १ पानी तो लेर मिला कर पिलावे १बजे दिन के और रात्रि को सोते समय (अर्थात् ९–१० बजे रात्रि को) महाचेतस घृत तोले एक एक मिश्री दो दो तोला मिला कर सेवन करावे। शिर के बाल कतरवा कर प्रातः ब्राह्मी घृत में कपूर मिला मालिश करें और शाम

को—नारायण तैल की मालिश कर एकलंट पानी को कुछ गरम कर धार बांध कर शिर पर डाले इस तरह ३-४ महीने सेवन कराने से लाभ होगा आशा है कि रोगणी के परिचारक इस व्यवस्था का उपयोग कर फल फल धन्वन्तरि में प्रकाशित करावेंगे और आराम होने पर अपने सामर्थ के अनुसार दान पुण्य करेंगे।

गोभिल

सम्मति नं० ३५ ख

रोगणी को भूतोन्माद के लक्षण मिलते हैं। इस पर हम अपना विशेष अनुभूत योग लिखते हैं उन्मादगजांकुश (धन्वन्तरि सग्रह)—शुद्ध पारद को धतूरे, मुलेहटी, कुचला इन तीनों के प्रथक २ रस में तीन तीन दिन क्रम से भावना दें। सम्पूर्ण वजन के समान भाग गधक आमलासार मिला कर टिकिया बना सराव सम्पुट में कपरोटी कर सुखाय आंच में पकावे शीतल होनेपर चूर्ण कर के शुद्ध धतूरे के बीज, अभ्रकभस्म, गधक शुद्ध, शुद्ध वत्सनाभ, समान भाग मिला ३दिन खरल कर ३रत्ती की गोली बनालें। व्यवहारविधि — प्रातः काल और सायकाल महा चेतस घृत अष्टमांस शहद के साथ चटावें दुपहर रात्रि को गोली जल के साथ दे बृहत चन्दनादितैल की मालिश दिन में तथा रात्रि में बृहत् नारायणतैल की मालिश करावे अवश्य लाभ होगा। यही योग प्रश्न नं० ४५ वाला कर्त्ता उपयोग करावें वह दीन अधिक हो तब मेरे यहां चला आवे में १मास में मुफ्त दवा देकर आरोग्य कर दूंगा।

पं०—रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी
गोतौना हैदरगढ़

सम्मति नं० ३६

क —मनमोहनचूर्ण न हमने देखा और न सेवन किया और हमें आशा है कि धन्वन्तरि के अन्य ग्राहकों ने हमारे समान इस चूर्ण को न खाया और न देखा होगा अतः प्रश्नकर्त्ता महोदय प्रथम सब को थोड़ा २ चूर्ण बटवा दें तब उस के समान मीठा स्वादिष्ट चूर्ण कोई लिख भी सकता है।

—गोभिल

ख— सफेदराल १तोला, चौकिया सुहागा १ तोला पारा १तोला गधक आमलासार १ तोला तूतिया १०आना भर। पहले कज्जली कर फिर दवा सब मिला घोटे दाद को घी डाल कर मलहम तैयार कर डिब्बी में रक्खे। इस के लगाने से दाद शीघ्र ही आराम होता है।

श्री चूल्हाय मिश्र वैद्य

ग — मदनमजरी गुटिका— सोंठ काली मिर्च पीपर छोटी, यह तीनों चार भाग ले और, पारद १भाग, वंग २भाग इन सब की बराबर, शितावर तज, पत्रज, नागकेशर, इलायची, जायफल, मिर्च पीपर, सोंठ, लोंग, जावित्री, इन सब को २ भाग ले फिर इन सब को महीन पीस मिश्री, शहत, घी में गोली पांच टक के अनुमान बांधे फिर एक गोली नित्य खाय ऊपर से गौ दुग्ध पीवे। वृद्ध भी तरुण हो यह मदनमजरी गुटिका योगतरंगिणी में है। शहत घी बराबर न लें।

श्री चूल्हाय मिश्र वैद्य

घ — सर्व ज्वर नाशक गोली— भैषज्यरत्नावली के पाठानुसार – सर्व ज्वर हरि लोह नामक गोली बनालें यह सर्व ज्वर में लाभ कारी है पर सच बात यह है कि एक बूटी ज्वर की समस्त अव-

स्थाओं में लाभ कारी हो नहीं सकती है हा- थोड़ा चोलो फिर भी अनुपान भेद से अनेक रोग नाशक है।

—गोभिल

ङ—शुद्ध नारियलका तैल १ सेर, रग इच्छानुसार चदन कातेल१ औंस, ओटोदीरोज आधा औंस जैसमिन २ड्राम यह सव चीज एक में मिलाय वोतल में भर कार्क लगा १सप्ताह रक्खा रहने दें बाद काम में लावें। अत्यन्त ही सुगंधित मन मोहन तैल तय्यार होगा।

च— योग चिन्तामणि का नयनामृत सुरमा (नयनामृतांजन) बनालें। यह सुरमा नेत्र रोग के लिये मुफीद और उत्तम है।

श्री चूल्हाय मिश्र वैद्य

सम्मति नं० ३७

धनियां को पानी के साथ सिल पर महीन पीस थोड़े जल में घोल मिश्री मिला छान कर प्रातः काल सेवन करावे इस प्रकार ३१-४१ दिन के सेवन से निद्रावस्था में वालकों को शय्या पर मूतनो बन्द हो जाता है

—गोभिल

सम्मति नं० ३८

स्त्रियों को भी तपेदिक होता है यह हमारा ही अनुभव नहीं किन्तु अनुभवी प्रसिद्ध २ वैद्य डाक्टरो का मत है आयुर्वेद शास्त्र में भी कहीं यह नहीं लिखा कि यह पुरुषों के ही होता है स्त्रियों को नहीं।

सम्पादक

सम्मति नं० ३९

१—बीमार को मकरध्वजवटी अवश्य लाभ करेगी—

पं०—रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी

२—वीर्य्य लगने पर जो फुन्सियां तथा पपणी पड़ जाती है वह वीर्य्य में जहरपैदा होगया है इस से ही यह सब उपद्रव हैं। यह बड़ी बुद्धिमानी का काम है कि एसे समय में रोगी स्त्री प्रसग नहीं करता स्त्री प्रसग करने पर रोग बढ़ जाता है और स्त्रीको भीरोग होना सम्भव है। इस रोगका कारण वीर्य्य विकार है। चिकित्सा—मकरध्वजवटी तो लाभ पहुंचा सकती है परन्तु कुछ गरमी करे इस लिये चन्द्रप्रभावटी गिलोय के स्वरस के साथ प्रातःकालसेवन करें। सायंकाल में वसंतकुशमाकर १ रत्ती ६ मा० च्यवनप्राश्य में मिला कर खांय ऊपरसे दूध पीवे। मध्यानमें द्राक्षासव जल मिला करलें। शक्ति अनुसार रोज व्यायाम करना चाहिये पर गरिष्ट भोजन भूल कर भी नहीं करना चाहिये।

वैद्य प्यरे लाल रसशास्त्री

३—वैद्यरत्न का न्यग्रोधादि चूर्ण और भैषज्य रत्नावली का सारिवासव ये दो दवा ४०रोज तक बराबर इस्तैमाल करें पूर्ण लाभ होगा। यदि ३ महीने तक सेवन करें तब रोग समूल नष्ट होजायगा।

श्री चूल्हाय मिश्र वैद्य

सम्मति नं० ४०

क — कुमारी रस में कीगई कपर्द भस्म एक एक माशा गौ दूध के खोया (मावा) १तोला में सेवन करने से तत्काल बन्द हो जाता है। दोनों समय कुछदिन सेवनसे पुराना शिरदर्द भी जाता रहता है मेरा शतशोनुभूत है।

सम्मति नं०४१ क

१–हिचकी रोग — मयूरचन्द्रिका (मोर के पर की चान्द्रिका) की भस्म एक एक माशे शहत के साथ दिन में दो दो घन्टे बाद देते रहें जब तक हिचकी बन्द न हो। खाने को कुछ न दें पीने को सिर्फ गौदूध थोड़ी मात्रा में दीया जाय अवश्य लाभ होगा मेरा अनुभूत।

पं०–रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी

२–क्लो लोन्वाटर का पांच टीपा (बूंद) बतासे में देने से दो या तीन दिन में आराम होजाता है। दिन में तीन बार देना। मेरा बहुत रोगियों पर अजमाया हुआ है।

वैद्य दामोदर स्वामी
शाहपुर रंगीलापोल—

सम्मति नं० ४१ ख

ख—पारद की गोली तूतिया के सयोग से बनाने की विधि हम प्रकाशित कर सकते हैं पर प्रथम १०) हमें और ५) धन्वन्तरि को देने का वचन है वह धन्वन्तरि के सम्पादक के पास जमा करदें क्यों कि हम देखते हैं कि अनेक प्रश्नों में पुरस्कार की बात छपी, रहती है पर मिलता किसी को भी नहीं।

—गोभिल

ख—जतन का तल वट्टो कृष्णपाल चीनापट्टी कलकत्ता से मिलेगा

—गोभिल

ग—पाठकों को ध्यान देनाचाहिये और उत्तर भेजने चाहिये —सम्पादक

सम्मति नं० ४२

१—दारुहल्दी, देवदारु, इन्द्रजो ,मंजीठ, अमलतासकागूदा, पाठा, कचूर, पीपल,खस,चिरायता गजपीपल, त्रायमान, पद्माख, काकड़ासिंगी, धनियाँ, सोंठ, मोथा, निशोथ, पियावांसा, हरड़, कटेरी, पित्तपापड़ा, कुटकी, जवासा, गिलोइहरी, पुष्करमूल ये सब दवा समान भाग लें महीन कूट १६ गुने जलमें रातको भिगोए प्रातः मन्दाग्नि से पकावे आधा बाकी रहे तब उतार कर छानले पुनःसोखता कागज (ब्लोटिंगपेपर) में छाने। बोतल में भरकर रखलें फी बोतल में आधा औंस रेक्टीफाइट स्प्रीट डालकर कार्क लगा अच्छीतरह बन्द करदें। बोतल का मुख बराबर बन्द रहना चाहिये। मात्रा–१ वर्ष के आयु वाले को १५ बूंद २ से ४ वर्ष तक को २०बूंद। ५से ८ वर्ष की आयु वाले को ३० बूंद। ६ से १२ तक १ ड्राम। १२ से ऊपर की आयु वालों को २ ड्राम। अनुपान जल दिन में ३ वार।

नोट–यदि स्प्रिट न डालना चाहें तब औषधि के बराबर उत्तम मधु डालें यह मेलेरिया ज्वर की रामबाण दवा है।

श्री चूल्हाय मिश्र वैद्य

२—चिरायता और पित्तपापड़े को समान भागले द्विगुण गूमा मिला वारुणी यन्त्र से अर्क निकालो यह औषधि १०० पीछे ६६ रोगी–मौसमी ज्वरके अच्छे करती है।

प० रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी

सम्मति नं० ४३

क—मूर्छा को-प्रातःसायं अश्वगन्धारिष्ट जल के साथ। मध्यान और रात्रि को कनकसुन्दरासव

भोजनोपरान्त गधकवटी या और कोई हाजमें का चूर्ण देना चाहिये। मूर्छित दशा में चैतन्य के लिये नवसादर और चूना मिलाकर सुंघाना चाहिये। या पिपरमेंट का सत्व, अजमायन का फूल, कपूर इन सबको मिलाकर शीशी में रक्खे समय पड़ने पर एक एक बूंद नाक में टपकाने और थोड़ा मस्तिष्क और हृदय में लगा दे। यह उपरोक्त प्रयोग मेरे परीक्षित हैं।

वैद्य प्यारेलाल गुप्त रसशास्त्री

सम्मति नं० ४४

क—ब्राह्मी, सोंठ, वच, मुड़ी, पीपल छोटी, समान भाग लें चूर्ण करें द्विगुणशहत के साथ सेवन करें। ब्रह्मचर्य्य से रहें। मिर्चा, तैल, खटाई का परेज रक्खे अवश्य लाभ होगा।

पं० रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी

क—जो मनुष्य अपने शरीर को तन्दुरुस्त रखना चाहते हैं दस्त साफ हो-स्मरणशक्ति बढ़े ताकत हो उन्हें निम्न लिखित नियम पालन करने चाहिये, प्रतिदिन शक्ति के अनुसार कसरत करना, हलका भोजन करना। ब्रह्मचर्य्य पालन करना आदि २।

यदि आप औषधि चाहते हैं तो द्राक्षासव अथवा च्यवनप्राश्य सेवन करें।

वैद्य प्यारेलाल रस शास्त्री

ख—मेरे अनुभव से यह नहीं मालूम होताकि समस्त होमियोपैथिक कालेजों की सूची आपको मिले और यह भी असम्भव है कि इसकी शिक्षा निःशुल्क दीजानी हो। हां आयुर्वेदपाठशाला ऐसी है जहां पर निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

वैद्य प्यारे लाल रसशास्त्री

सम्मति नं० ४५

१—यहरोग अस्थिस्राव का हैइसमें प्रायः ठन्डी और सकोचक औषधियां लाभदायक हैं। शुद्ध मोती, स्वर्णमाक्षिक भस्म एरड तैल से की हुई, स्वर्ण वर्क, समानभाग ले घोट कर दो दो रत्ती प्रातःसाय सेवन करे। तैल, मिर्च, खटाई, मैथुन से परहेज रक्खें। इन्द्रीय को खूब साफ रक्खें। जामुन के पत्तों का अर्क निकाल उसमे भुनी हुई फिटकरीलाल व कशीस छ २ माशे ले और अर्क पावभरले सबको मिला रखलें इससे इन्द्रीको दो तीन वार धोना चाहिये। अवश्य लाभ होगा।

पं०रामेश्वरी प्रसाद द्विवेदी

२—गूलर के फलों को सुखाकर उन्हें महीन पीस उसमें बराबर की मिश्री और मधु डाल एकटक प्रमाणगोली बनावे और एक२ गोलीप्रातः सायं गौ दूध के साथ सेवन करें भोजन के बाद २तोला अशोकारिष्ठ ५ तोला ताजीपानी मिलाकर पीवे। रात्रि को प्रदरारि लोह भैषज्य रत्नावली का दाभ की जड़ के जल के साथ लेवे। दवा ४० दिन बराबर ले परहेज रक्खे।

श्री च्यूल्हाय मिश्र वैद्य

३—यह सोमरोग मालुम होता है। इस के लिये अशोक घृत, प्रदरान्तकरस, फलघृत, का सेवन कराना चाहिये। शरीरसे चन्दनादितैल या लाक्षादितैल की मालिश करावें। भोजनोपरान्त अग्निवल्लभ क्षार दें।

वैद्य प्यारेलाल रसशास्त्री

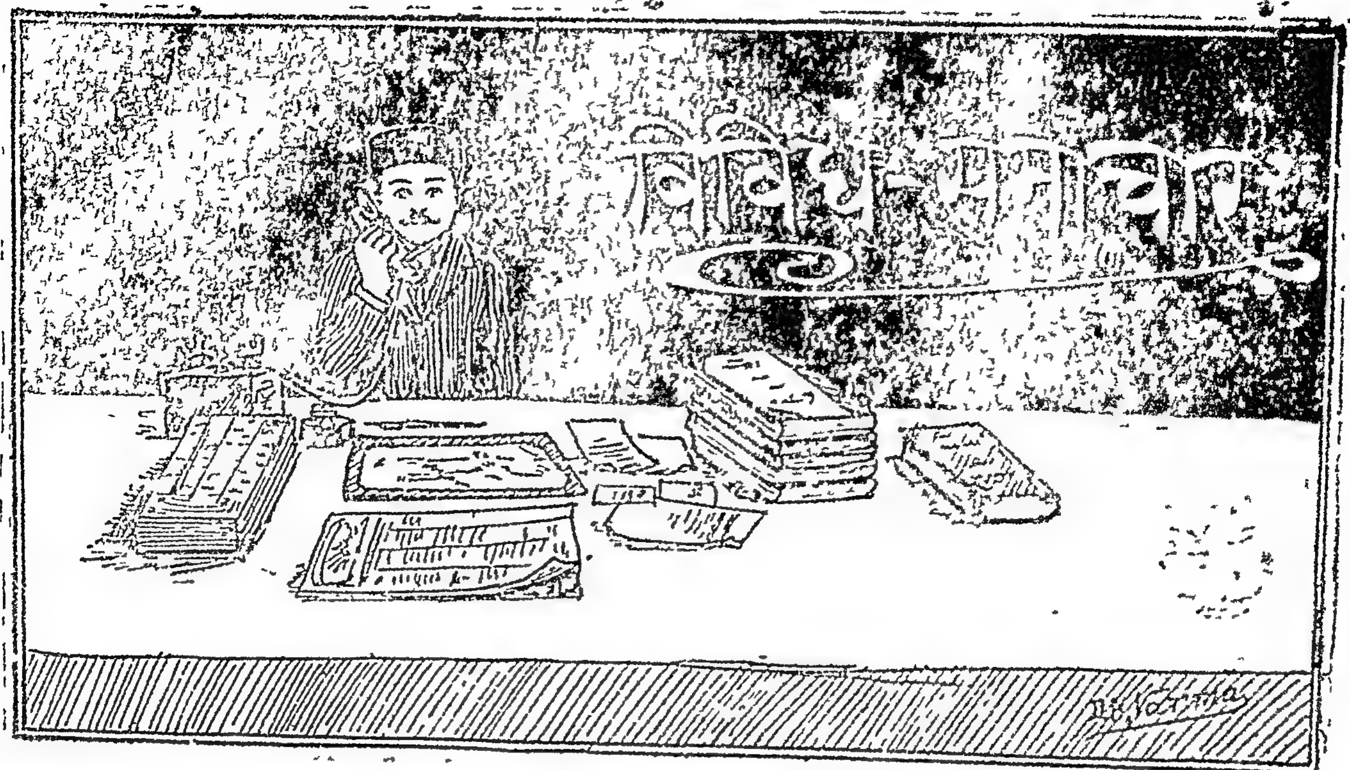
सम्मति नं० ४६

१—इस रोगिणी को हिस्टेरिया मालुम देताहै इसके लिये धन्वन्तरि का विशेषाङ्क हिस्टेरिया वाला पढ़ना चाहिये।

वैद्य प्यारेलाल गुप्त रस शास्त्री

२—सम्मति नं० ३५ को पढ़िये यही योग आपके काम का है।

प० रामेश्वरप्रसाद जी द्विवेदी



असत्य खंडन—मैनेजर चन्द्र विलासकार्य्यालय महेन्द्रगढ़ से लिखते हैं कि" श्री युत प्यारे लाल वैद्य ने हमारी औषधि के बाबत अपरैल के धन्वन्तरि में जो प्रकाशित कराया है वह बिलकुल असत्य है क्यों कि वह हमारी बीसियों रोगियों पर परीक्षा की दवा है विश्वासार्थ हम धन्वन्तरि के ग्राहकों को १ पैकट मुफ्त देंगे जो चाहेंमगालें और परीक्षा करलें "

शोक समाचार—पं० रामप्रसादजी मिश्र वैद्यराज नागौर निवासी की धर्मपत्नी जिन की आयु ३० वर्ष की थी। सुमुख और मृदु भाषी तथा गृह कर्म में दक्ष तथा साक्षात लक्ष्मी थीं गुल्म रोगसे स्वर्ग वासी होगई आपकी मृत्युसे पडितजी को बड़ी व्यथा हुई है पर ईश्वरेच्छा बलीयसी, अब धैर्य्य के अतिरिक्त दूसरा उपाय नहीं। हम भगवान धन्वन्तरि से मृतात्मा की सद्गति के लिये और पंडित जी को धैर्य्य धारण करने के लिये प्रार्थना करते हैं साथ ही पडित जी से सम्वेदना भी प्रकट करते हैं।

क्षमा प्रार्थना-धन्वन्तरिका यह अगस्त सितम्बर संयुक्ताङ्क ग्राहकों को भेज रहे हैं और अक्टूबर कार्ङ्क शीघ्र ही भेजा जायगा उस के बाद नौम्बर. दिसम्बर का संयुक्ताङ्क–प्रयोगाङ्क के नाम से प्रकाशित होगा उसअङ्क को हम सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने का प्रय न कर रहे हैं और आशा भी है कि वह पहले सब विशेषांकों से निराला ही निकलेगा पृष्ठ संख्या भी यथेष्ट होगी चित्र संख्या भी पर्याप्त। अनुभूत प्रयोग भी बड़े मार्के के होंगे हमें पूर्ण आशा है कि उस अङ्क को देख पाठक विलम्ब के दोष को भूल जायेंगे।

इन दो अङ्कोंमें जो पृष्ठ संख्या कम रही है वह कसर भी उस ही विशेषाङ्कमें निकाल दी जा यगी।

लेखकों से प्रार्थना—प्रयोगाङ्ककी प्रायः सब तैयारी समाप्त होने को है अतः अपनेर अनुभूत प्रयोग जो अव्यर्थ हों बिना संकोच प्रकाशित करने को भेजिये उन के प्रकाशन से आप का यश और कीर्ति बढ़ेगी तथा पुण्यहोगाहानि कदापि नहीं प्रयोग वही भेजेजांय जो विशेष अनुभव में आये हों उनके गुण चमित्कारिक हों जिससे सर्व साधारण का विशेष उपकार हो और जो बनाकर व्यवहार करें वह आपकी प्रशंसा के पुल बांध दें साथही उनकी

सेवन विधि, व्यवहार विधि, मात्रा, अनुपान पूर्ण रीतिसे लिखें। लेखकों को चाहिये कि प्रयोगो के साथ ही साथ अपने२ चित्रों के ब्लाक भी भेजें जिन के पास ब्लाक न हों वह अपना चित्र भेज दें पर चित्र साफ और सुन्दर हो। चित्र के साथ ब्लाक का चार्ज भी ७) सात रुपे भेजदें चित्र छाप ब्लाक उन को वापिस भेज दिया जायाग आशा है कि लेखक ध्यानदेंगे। —सम्पादक

धन्वन्तरि महोत्सव—प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी धन्वन्तरि कार्य्यालय में भगवान धन्वन्तरि का महोत्सव बड़े धूम धाम के साथ मनाया गया।

मुरादाबाद में—

कार्तिक कृष्णात्रयोदशी(धनतेरस)के दिन यहां की वैद्य सभा की तरफ से बड़ी धूम धाम के साथ धन्ववतरि जयंती मनाई गई प्रथम भगवान धन्वन्तरिका पूजन स्तवन आदि होकर साड़ेतीन वजे से महत्व पूर्ण सार्वजनिक अधिवेशन आरम्भ हुआ। सभापति का आसन मुरादाबादके सर्व मान्य नेता भूतपूर्व आनरेविल वावूब्रजनंदन प्रसाद एम. ए. एल. एल. बी. महोदयने सुशोभित किया था। सभामें समस्त वैद्यों के सिवा शहर के अनेक गण्य मान और प्रतिष्ठित पुरुष सम्मिलित हुएथे गानेबजानेकाठाठभी अच्छा था। सभा स्थान के बाहर स्थानीय ऋषि कुल के ब्रह्मचारी अपना वैंड बजा रहे थे पहले पंडित प्रवर श्री वैजनाथ जी शास्त्री ने मंगला चरण करके सभा का आरम्भ किया। पश्चात् वैद्यराज पंडित रामधन जी मिश्र वैद्यराज पंडित भवानी शंकर जी शर्मा, वैद्यराज पंडित घनानन्द जी पंत, वैद्यराज पंडित सतलाल जी शर्मा, वैद्यराज प० हरिहर-नाथ जी सख्याचार्य, महोपदेशक पंडित कन्हैया लाल जी तन्त्र शास्त्री आदि सज्जनों के भगवान धन्वन्तरि का अवतरण, धन्वन्तरि प्रशंसा धन्वन्तरि जयती मनाने की आवश्यकता, आयुर्वेद का महत्व, देशी चिकित्सा की सर्व श्रेष्ठता आयुर्वेद कीवर्तमान अवस्था और उसकी उन्नति के उपाय आदि भिन्न२ विषयों पर बड़े प्रभाव शाली व्याख्यान हुये। प्रत्येक व्याख्यान के अन्त में प० पुरुषोत्तम जी व्यास का वैद्यक विषयका एक सुन्दर भजन होता जाता था। अन्त में सभापति महोदय ने अपने छोटे से किंतु अति सारगर्भित भाषण के द्वारा आयुर्वेद और वैद्य सभा की प्रशंसा करते हुये वैद्यों को बड़ा ही सुन्दर उपदेश दे कर सभा विसर्जित की।

सभा के कामों में वैद्यराज प० कृष्णदत्त जी शस्त्रधार, प० हरिहर नाथ जी सांख्याचार्य प० बुद्धसैन जी वैद्य और मुनीम ब्रजलाल जी अग्रवाल ने हमारी बड़ी सहायता की थी। अतः हम आप महानुभावों कोअत्यन्त धन्यवाद देते हैं।

वैद्यशंकर लाल हरि शंकर
मन्त्री—वैद्य सभा—मुरादाबाद

शरफुद्दीनपुर में—आयुर्वेदाचार्य्य प० श्रीसीतावर शरण शर्म्मा काव्यतीर्थ के उद्योग से भगवान् धन्वन्तरि" का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। गणयमान सज्जन सभी इकट्ठे थे।

श्री नरसिंह शर्म्मा वैद्यभूषण

आरा-शाहवाद में—वैद्य भूषण सेठ परमेश्वर-दयाल जी रामनारायण जी वैद्य परमेश्वर शक्ति औषधालय के अध्यक्ष द्वारा श्री धन्वन्तरि भगवान का जन्मदिवस बड़े ही समारोहके साथ ता० ८।११।२८ रात्रि को ८ वजे के बाद मनाया गया। और कर्मकाण्डा चार्य श्री प० हरिद्वार जी पाठक काव्यतीर्थ अध्यापक टाऊन स्कूल जी ने विधि पूर्वक पूजन करवाया एवं इसवात से बड़ी ही प्रसन्नता है कि आरा में इतने वैद्य महानुभाव होते हुए भी किसी वैद्यों के यहां इतना समारोह नहीं होता है जितना उक्त औषधालय के अध्यक्ष

जी ने किया। आपके यहां यही पूजन परम्परा से चला आरहा है और इस अवसर में यहां कई एक आयुर्वेदाचार्य्य वैद्य महानुभावों ने ललित तथा ओजस्वी भाषण से धन्वन्तरि कथा कहकर उपस्थित जनता को आनन्दित किया आरा के गण मान्य वैद्यराज आयुर्वेदाचार्य्य आदि भी उपस्थित थे जिसके लिये हम सर्वमण्डली परमेश्वरशक्ति औषधालय अध्यक्ष जी को सहर्ष कोटिशः धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वह इसही प्रकार आयुर्वेद उद्धार में संलग्न रहें। निवेदकः

वैद्यराज श्री कृष्णाचार्य गौड़ वे० शास्त्री

आगरा में—स्थानीय श्री सद्वैद्य सभा ने ता० १।११।२८ शुक्रवारको श्रीभगवान् धन्वन्तरि महाराज की जयन्ती (धनतेरस) को बड़े धूम धाम से मनायी। सभापति का आसन प्रयाग निवासी भारत के प्रसिद्ध वैद्यराज श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद पंचानन ने सुशोभित किया। शुक्रवार को १॥ बजे स्थान आगरा सिटी स्टेशन से सभापति जी का जुलूस बड़ी शान से निकाला गया जिसमें आगरा के बड़े २ रईस व प्रतिष्ठित गणमान्य सज्जन तथा सभा वेद्य सम्मिलित थे। सभा मण्डप ब्राह्मण स्कूल पीपल मन्डी में सजाया गया था। ठीक ३बजे से सभा का कार्य प्रारम्भ हुआ। मङ्गला चरण के बाद सभापति का निर्वाचन हुआ और साथही सभापतिके करकमलों द्वारा श्री धन्वन्तरि महाराज का चित्राद्घाटन हुआ आगरेके लब्ध प्रतिष्ठ वैद्यश्रीमान् प०ब्रह्मानन्द जी ने स्वागत समिति के अध्यक्ष की हैसियत से अपना बड़ाही हृदय ग्राही और मनोरञ्जक भाषण पढ़ा आपने आगरे की प्राचीन और अर्वाचीन आयुर्वेद विषयक चित्रव चित्रित किया तथा आयुर्वेद [illegible] उपायों का समावेश सामयिक रीतिपर करना चाहिये इस पर संक्षेपमें प्रकाश डाला इसके बाद कुछ वैद्यों ने स्वनिर्मित कवितायें और व्याख्यान दिये उसके बाद सभापति जी ने अपना महत्व पूर्ण एवं सारगर्भित भाषण पढ़ा; आपने बहुतसे आवश्यक विषयों पर वैद्य समाज का ध्यान आकर्षित किया और साथ ही अपने२ अनुभव सामयिक आयुर्वेद विषयक पत्रों में प्रकाशित करते रहने का अनुरोध किया! इसके बाद अनेक महत्व पूर्ण प्रस्ताव पास किये गये। जनता पर इस सभा का बड़ा ही उत्तम प्रभाव रहा—

१—प्रस्तावः—यह सभा आयुर्वेद के प्रचलित प्रमुख पत्रों से अनुरोध करती है कि वे विधेयात्मक कार्य की ओर वैद्यों के ध्यान को आकर्षित एवं प्रोत्साहित करने के लिये सामयिक लेख प्रकाशित किया करें। तथा ऐसे प्रयोगों को न छापा करें जिससे आयुर्वेद के महत्व में न्यूनता आवे है।

२—यह सभा समस्त वैद्यों व आयुर्वेद प्रेमियों से सानुनय अनुरोध करती हैकि सब आयुर्वेद का तुलनात्मक अध्ययन किया करें और समयानुकूल शल्य चिकित्सा में भी दक्षता उपलब्ध करनी चाहिये।

३—यह सभा समस्त वैद्यों से अनुरोध करती है कि आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण विधि में उचित परिवर्तन करें और ऐसे वैज्ञानिक यन्त्रों का आविष्कार करें कि जिससे बनी हुई औषधियों का सम्यक रूप में परीक्षा करके उसकी विशुद्धता का निर्णय किया जासके।

४—यह सभा सरकारी आयुर्वेद समिति द्वारा निर्मित पाठ्य क्रम को आयुर्वेद की उन्नति के लिये पर्य्याप्त साधन नहीं समझती है क्यों कि उसके द्वारा आयुर्वेद का ज्ञान सम्यक् नहीं होसकता। सभा की सम्मति में भारतवर्षीय आयुर्वेद सम्मेलन की पाठ्य विधि आदरणीय है वैद्यों को सम्मेलन को अपनाना चाहिये।

वैद्य सुखदेव शास्त्री आयुर्वेदाचार्य्य
मन्त्री श्री सद्वैद्य सभा आगरा



वर्षाऋतु खराब है ?

(१) दाद के रोगियों को

(२) पेट की (कब्ज) शिकायत वालों को

वर्पात शुरू होते ही दबा हुआ दाद भी जोर पकड़ आता है और नये दाद होजाते हैं और बड़ा दुख देते हैं खुजातेर दाद का रोगी बेदम होजाता है और यह हठीला रोग बड़ी तेजी से सारे बदन को सड़ा देता है और सक्रामक होने की वजह से एक से दूसरे को लगकर सारे कुटुम्ब में फैल जाता है और कचन जैसे शरीर को कोडियों का सा कर देता है। इसका एक मात्र निश्चित उपाय यह है कि दाद होने का जराभी शक हो व आपके पुराना दाद हो तो फौरन उस पर " दाद का काल" लगादो और दाद को जड़ से नष्ट करदो वरना यह विपैला रोग शरीर को बर्बाद कर देगा मूल्य फी शीशी ।) आना डाक-खर्चा १ से ६तक ।=) आना

" १४ शीशी २=) रु० डाकखर्च माफ

वर्षात में हाजमा ठीक नहीं रहता है पाचनशक्ति कमजोर होजाती है भूक लगती नहीं है और खाने में अरुचि होती है पेट भारी बना रहता है और तबियत कुंद रहती है यह सब कब्ज के दोष हैं।

इस मौसम में इसके लिये पीयूष सिंधु दिन में तीन बार लेना परमोपयोगी है पीयूषसिंधु बदहजमी को एक ही खुराक में दूर करता है और पाचनशक्ति को ठीक करता है मू० फी शी ।।।) आना डाक खर्चा जुदा

असली नमक सुलेमानी भोजन के बाद ३ माशे खाने से खाना जल्दी हजम होकर भूख जोर की लगती है इस बार का नुसखा वर्षात के लिये खास तौर से तैयार किया है मू०फी बोतल २।।) नमूने की फी शी० ।।। डाक खर्चा जुदा

कब्ज कुठार तो इसकी रजिस्टर्ड दवा है। कैसा ही कब्ज क्यों न हो थोड़े दिन हीमें सेवन से नष्ट होता है पाचनशक्ति बढ़ती है और भूख खूब जोर की लगती है नया खून बनता है बल और वीर्य्य को बढ़ाता है।

मूल्य फी बोतल ४।।=) नमूना की शीशी १) डाक खर्च जुदा।

पता—सुन्दर श्रृंगार औषधि विभाग नं०२ मथुरा।

वैद्य

(सब से श्रेष्ठ सब से सस्ता और सबसे पुराना)प्राचीन और अर्वाचीन वैद्यक सम्बन्धी सर्वोपयोगी मासिक पत्र मूल्य १।।) नमन मुफ्त

वैद्य ऑफिस मुरादाबाद

वैद्य बन्धुओं के लिये

अलभ्य लाभ

गिलोय सत (अमृता सत्व) पौंड १(तोला ४०) कीमत ५) रु० डाक खर्च अलग विशेष दवाओं केलिये लिस्ट मंगा लीजिये।

पता—मैनेजर

श्री गुरुराजफार्मेसी

जामनगर (गठियावाड़)

स्वदेशी कुनैन

यह देशी कुनैन हमने बड़े परिश्रम से तैयार की है विलायती कुनैन खाने से गर्मी अधिक उत्पन्न होती है किन्तु हमारी कुनैन में यह अवगुण नहीं है। मलेरिया ज्वर के लिये रामबाण है १औंस ।।=) चार औंस का २)

पता—मैनेजर श्रीधन्वन्तरि औषधालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)

सम्मेलन की प्रकाशित पुस्तकें

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की पुस्तकों का प्रकाशन "सुलभ साहित्य-माला" "साहित्य-रत्न-माला" "विज्ञान-रत्न माला" और "साधारण पुस्तक माला" द्वारा होता है। इन मालाओं का उद्देश्य सुंदर और सस्ती पुस्तकों का प्रकाशन करना है इन में प्राचीन साहित्यिक, दार्शनिक, सामाजिक राष्ट्रीय आदि उत्तमोत्तम ग्रंथ सिद्धहस्त लेखकों से लिखाये और प्रकाशित कराये जाते हैं। अब तक निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

१—हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास-हिंदी भाषा के साहित्य के प्रकाश विकाश का पता इस से चलता है। मूल्य ।=)

२—भारतगीत श्रद्धेय श्री पं० श्रीधर जी पाठक द्वारा रचित। मूल्य ≡)

३—भारतवर्ष का इतिहास —प्रथम खंड ६००० संमत् पूर्व से ५०० संमत् तक का वर्णन है। मूल्य १॥)

४—राष्ट्र भाषा— हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के सम्बन्ध में प्रसिद्ध नेताओं की सम्मतियों का संग्रह। मूल्य ॥)

५—शिवाबावनी—भूषण कविकृत मूल्य =)

६—सरलपिंगल —पिंगल के नियमों को सरल और सुन्दर भाषा में समझाया गया है मू० ।)

७—सूरपदावली—मूल्य ।)

८—भारत वर्ष के इतिहास— २भाग ६००सम्मत पूर्व से १२५० सम्मत् तक की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य २)

९—संक्षिप्त सूरसागर—५२० पद्यरत्नों का संग्रह है। मू० २)

१०—बिहारी संग्रह-कविवर बिहारी के कुछ चुने हुए दोहों का संग्रह है। मू० ≡)

११—ब्रजमाधुरी सार — ब्रजभाषा की कविता का सार संग्रह किया है। मू० १।)

१२—पद्मावत पूर्वार्द्ध —मू० १॥

१३—सूरदास जी विनय पत्रिका— मू० ≡)

१४—रहिमन विनोद—मू० ॥) सजिल्द १)

१५—नवीन पद्य संग्रह—मू० ॥=)

१६—कविवर सत्यनारायण—मू० १)

१७—हिंदी काव्य में नवरस—मू० २)

१८—अकबर की राज्य व्यवस्था—मू० १)

१९—सूर्य्य सिद्धान्त—मू० १)

२०—इतिहास तत्व—मू० ≡)

२१— हिंदी-भाषासार—मू० ॥)

२२—प्रथमालंकार निरूपण—मू० =)

२३—हिं० सम्मेलन के सभापति का भाषण-मू० ।)

२४—तृतीय " " " मू० ।)

२५—मद्रास में हिंदीप्रचारक का व्यवरण-मू० -)

२६—हिंदी विद्यापीठ—मू० -)॥

२७— नागरी अंक और अक्षर—मू० ≡)

२८—हिंदी का सन्देश-मू० -)

२९ —वृत्तचन्द्रिका—मू० =)

३०—तेरहवें हिं० सा० स० के सभापति का भाषण मू० =)

३१—प्रश्नपत्रों का संग्रह प्रत्येक सेट का मू० ।)

३२—सरल शारीर विज्ञान मू० ॥)

३३—महात्मा टालस्टाय के विचार—मू० ।-)

३४—सनयात सेन—मू० ।)

३५—संजीवनी—मू० ।-)

३६—इतनो तो जानो—मू० ।-)

३७—महात्मा गान्धी के निजी पत्र—मू० ।-)

पता-मन्त्री हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

मकरध्वज वटी
मकरध्वज वटी
मकरध्वज वटी
मकरध्वज वटी
मकरध्वज वटी
मकरध्वज वटी
मकरध्वज वटी
मकरध्वज वटी
मकरध्वजवटी मकरध्वजवटी

भाग ५] अक्टूबर सन् १९२८ [अङ्क १०

धन्वन्तरि



उज्जाते क्षीराब्धिमथनाज्जितमथांसो धन्वन्तरिः समभवत्स्वविकायमथाता।

आविर्भूतकलशं दधिवान्यः पीयूष पूर्णं समरस हरो दुराणाम्।

संस्थापक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य ४) } वैद्य बांकेलाल गुप्त { साधारणाङ्क ।=)

धन्वन्तरि प्रेस विजयगढ़ द्वारा मुद्रित

विषय-सूची

—— ० ——

आवश्यक-



धन्वन्तरि का अक्टूबर का अङ्क सेवा में भेजा जा रहा है। नोम्बर दिसम्बर का संयुक्त अङ्क विशेषाङ्क रूप से प्रयोगाङ्क के नाम से प्रकाशित होगा उसका मेटर १ फरवरी को प्रेस में दिया जायगा अतः प्रार्थना है कि जिन्हें अनुभूत प्रयोग और चित्र छपाना हो वह उससे पूर्व भेजदें बाद में हम छापने से लाचार रहेंगे। और २८ फरवरी को वह ग्राहकों को रवाने किया जायगा अतः पाठक भी नोट करलें और इससे पूर्व नोम्बर दिसम्बर के अङ्क के लिये तकाज़ा न भेजें। विलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थना है। यह अङ्क अब तक के सब अङ्कों से निराला और वैद्यों का प्यारा होगा पाठक इसे देख विलम्ब को भूल जायगें ऐसी आशा है—

व्यवस्थापक धन्वन्तरि

प्रमेह, शीघ्रपतन आदि को नष्ट कर बल-वीर्य बढ़ाने वाली

काम कल्पद्रुम वटी

इस वटी के विधि-पूर्वक सेवन करने से प्रमेह स्वप्नदोष वीर्य का पतला पड़ जाना आदि सम्पूर्ण धातुरोग समूलनष्ट होते है। क्लीवत्व, शिथलता और शीघ्र पतन को दूर करने में यह सिद्ध रामबाण महौषधि है। हाथ पांव में जलन होना, शिर में चक्कर आना, नेत्रों के सामने अकस्मात अंधेरा सा छा जाना, प्यास की अधिकता, स्मर्ण शक्ति की न्यूनता और थोड़े परिश्रम से अधिक थकावट मालूम होना इत्यादि इससे अवश्य ही निर्मूल हो जाते है। शरीर पुष्ट होकर बल-वीर्य की अतिशय वृद्धि होती है। अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ परीक्षा प्रार्थनीय है। मूल्य ६० गोली की शीशी का केवल १) रुपया।

अग्नि दीपक चूर्ण

यह चूर्ण पाचन शक्ति को बढ़ाता है और समस्त उदर रोगों को शमन करता है। जिनको सदा मलावरोध की शिकायत रहाकरती है उनके लिये अत्यन्त लाभ कारी है। विरेचनीय औषधियों के निरन्तर सेवन करने से आमाशय निर्वल पड़ जाता है, परन्तु इससे किसी प्रकार का विकार कोठे में नहीं उत्पन्न होता। मलावरोध को नष्ट करके जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। क्षुधा उत्पन्न होती है और अरुचि निर्मूल होती है। मलावरोध से उत्पन्न होने वाले अजीर्ण उदरपीड़ा और कच्ची डकार आना तत्काल दूर होता है ज्वरमुक्त रोगी के लिये इसका सेवन अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। मूल्य आधपाव की डिब्बी का॥)

कुन्तल विहार तैल

इस तैल को शिर पर मलने से पित्त जनक पीड़ा तत्काल दूर होती है। बातों का भूलना, शिर में चक्कर आना, रूक्षता, गरमी और दिमाग की कमजोरी नष्ट होती है। स्मरणशक्ति बलवान होती है। आंखों में तरावट आती है और ज्योति बढ़ती है। बाल बढ़ते और मुलायम रहते हैं। जिनको पढ़ने लिखने सोचने विचारने का काम करना पड़ता है उन्हें इस तेल का व्यवहार अत्यन्त उपयोगी है। इस में विदेशी द्रव्यों का मेल नही है. केवल तिल के तेल और देशी जड़ी बूटियो द्वारा तैयार किया जाता है। लगाते ही चित्त प्रसन्न होता और चौबीस घड़ी तक सुगंधि बनीरहती है। मूल्य चार औंस की शीशी का ॥।) और दो औंस की छोटी शीशी का।=) आना मात्र है।

इसके अतिरिक्त विविध रोग नाशक अवलेह, आसव, चूर्ण, वटी, भस्म आदि उत्तमोत्तम आयुर्वेदीय औषधियां इस औषधालय में सदा प्रस्तुत रहती है।

औषधियों के मिलने का पता—पं० महावीरप्रसाद मालवीय वैद्य,
स्वदेशबन्धु औषधालय, ज्ञानपुर-बनारस स्टेट।


सूची



जुजुरुषोनासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतंद्रापि मिवच्यवानात् ।
प्रात रतं जहितस्यायुर्दस्र दित्पति मकृणुतंकनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं० १,० अ० १७ सू० ११६

भाग ५] अक्टूबर सन् १९२८ [अङ्क १०

प्रातः–जागरण

बुद्धि न होगी मन्द, शान्ति से हीन न होगा ।
घर में होगी सुमति, द्रव्य से दीन न होगा ॥
मात–पिता–गुरु-और, मित्र का कोप न होगा ।
राजा का प्रिय पात्र, दण्ड आरोप न होगा ॥
वे रख सकेंगे प्यार में, अपने सुन्दर बदन को ।
सूर्योदय से प्रथम उठ, जो जन सेवित पवन को ॥

नयनश्री ।

त्रिदोष-समस्या

लेखक-वैद्यरत्न पं० व्रजभूषणलाल जी चतुर्वेदी

"आयुर्वेद के मूल भूत आधार में त्रिधातु किंवा त्रिदोष की गणना है इन त्रिधातुओं का वर्णन आधुनिक विद्वानों और जनता को प्रत्यक्षतः आज कल अक्षम होने के कारण मान्य नहीं है यही कारण है कि आयुर्वेद को मुक्त करने के लिये आयुर्वेदीय प्राचीन (चरक सुश्रुतसंग्रह वाग्भट्ट) ग्रन्थों के आधार त्रिधातु सर्वस्व इस विषय पर निबन्ध मंगवाने का निश्चय किया गया है"। उपरोक्त अवतरण धन्वन्तरि के हाल के युगमाङ्क में प्रकाशित निखिलभारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन के आगामी अधिवेशन में विचारणीय मन्तव्यों में पहिला और प्रधान मन्तव्य है। हर्ष की बात है कि वैद्य समुदाय को उक्त विषय परप्रकाश डालने और उसका वैज्ञानिक स्वरूप स्थिर करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है यह लेख केवल उन आरोपों का संग्रह मात्र है जो कि त्रिदोष सिद्धान्त के खंडन में आधुनिक विद्वानों और विचारशील जनता के द्वारा उपस्थित किये जाते है आशा है कि इससे उन सज्जनो को सहायता अवश्य मिलेगी जो उपरोक्त प्रकार के निबन्ध लिखने की इच्छा रखते हैं। लेख को शृंखलाबद्ध और आकर्षक बनाने के लिये ही मैंने समस्त आरोपों को एक स्वतन्त्र निबन्ध के रूप में सम्मिलित किया है यथार्थ में मेरे निज के विचार उक्त विषय में कुछ और ही हैं और यथावसर विद्वानों की सेवा में उपस्थित किये जायगे।

आयुर्वेद चिकित्सा मे मुख्य आधार तीन दोष सात धातुओं का सदैव से माना जा रहा है इनके बिना वैद्य को रोग की कल्पना करने तक का साहस नहीं होता चिकित्सा तो दूर की बात है। आश्चर्य है कि यद्यपि शरीर औषधि निदान और चिकित्सा सम्बन्धी सभी बातें मनुष्य के शोध और विचार पर ही अवलम्बित है तथापि दोष और धातुओं को सिद्ध करने में पुराने आचार्यों ने कोई प्रयास नहीं किया और न आज कल भी उस विषय में किसी को तर्क करने की उत्कंठा होती है। जिस प्रकार धार्मिक बातों को बिना प्रमाण के ही लोग श्रद्धासे मान लेते हैं और उनपर अधाधुंध विश्वास करने के कारण आर्थिक और सामाजिक क्षति उठा कर हास्यास्पद बनते है इसी प्रकार त्रिदोष के विषय को भी अकल की दखल से दूर रख कर उसे श्रद्धा पूर्वक किन्तु बिना समझे सोचे ही स्वीकार कर लेते हैं निश्चय ही आयुर्वेद के जन्म दाताओं की यह इच्छा नहीं थी कि उनके सिद्धान्त इस अधाधुंधी के साथ अपनाये जांय। मनुष्य के शरीर में जिन विकारों का उन्हें पता लगा, उनका आदि कारण समझाने का उत्तर दायित्व उन्हें अस्वीकार न था इसी के प्रयत्नमें उन्हें तीनदोषों की कल्पना करनीपड़ी जिन के न्यूनाधिक और विकृत के कारण ही शरीर में नाना प्रकार की व्याधियां प्रकृत रूप से उत्पन्न हो सकती है ऐसा जान पडता है कि उक्त कल्पना का आधार उन्हें उनके दैनिक, सांसारिक अनुभवों से प्राप्त हुआ प्रकृत रूप से उत्पन्न होने वाली व्याधियों में ज्वर और खांसी का बाहुल्य सदैव ही रहा है ज्वर में वमन और खांसी में श्लेष्मा को शरीर का विकृत पदार्थ और रोग का कारण

मानकर अवश्य ही वे पहिले सहस्रों वर्ष पित्त और कफ, शरदी और गरमी के दोषों में ही सन्तुष्ट रहे होंगे परन्तु सभ्यता के साथ साथ मनुष्य के खान,पान,रहन,सहन इत्यादि में भेद होनेके कारण कुछ ऐसी व्याधियां भी उत्पन्न हुई जिनमें न तो वमन ही होता था और न कफ। अवकाश प्राप्त अथवा विचारशील रोगियों में उन्हें डकार (उद्गार) और अपान निःसरण नामक लक्षणों को देख वायु दोष की कल्पना हुई। कोई भी इस विषय पर विचार करके देख सकता है कि यदि वह एक ऐसी समाज में पहुंच जावे जहां कि सभ्यता का अधिक विकास नहीं हुआ है,जहां जीवन अत्यन्त सरल और सात्विक है और जहां के लोगों की दैनिकचर्या, अकृत्रिम और सामाजिक जीवन आरम्भिक अवस्था में है वहां उसे कितने प्रकार के रोग दृष्टि गोचर होंगे वह सहज ही अनुमान कर सकता है कि वहां अधिकांश लोग स्वस्थावस्था में रहते हैं और वह यदि कभी बीमार भी होते हैं तो बीमारी का पूर्वरूप ज्वर अथवा खांसी से अथवा अवकाश प्राप्तधन, धान्यसम्पन्न लोगों में अजीर्ण,अतिसार जैसी व्याधियोंसे होगा सारांश यह है कि ज्वर, खांसी और कुपच की साधारण वा प्राचीन से प्राचीन व्याधियों में शरीर से बाहर आने वाले असाधारण पदार्थों को ही रोग का कारण समझने आरम्भिक आधार माना गया। आयुर्वेद के अधिष्ठाता आचार्यों ने भी इन प्रचलित विश्वासों की अवहेलना नहीं की किन्तु उन्हें लोक मत के नाते स्वीकार करके उस पर ही अपनी भित्ति निर्मित करनी पड़ीऔर उसे वैज्ञानिक स्वरूप देने के प्रयास में सभी रोगों को इन तीनों कारणों के अन्तर्गत लाना पड़ा और प्रत्येक दोष के अनेक भेद जैसे वायुमें पांच अर्थात् प्राण, व्यान, उदान,समान और अपान पित्त में भी पांच अर्थात् पाचक, रंजक, साधक,आलोचिक और भ्राजक इसी प्रकार कफ में भी पांच अर्थात् स्नेहन,रसन , क्लेदन, अवलम्बन और विश्लेषण भेद मानने पड़े है। उक्त वर्गी करण को देखने से ज्ञात होगा कि पुराने आचार्यों ने शरीर की क्रियाओं तक को इन्ही दोषो के आश्रित मान कर उसी बुद्धि का परिचय दिया है जिस बुद्धि से कि पुराणकारों ने सृष्टि के अनेक व्यापारों को देवी,देवताओं के क्रीडोत्पन्न क्रियाओं का रूप दिया है जिस प्रकार राजा इन्द्र पाताल स्थित बलि राजा को चिरकालीन द्वेष केवशीभूत होकर जो बांण मारते हैं वही विद्युत पात है ? उसी प्रकार हमारे हृदय कीधड़कन क्यों होतीहै इसका कारण हृदय में रहने वाली प्राणवायु अथवा रस से रक्त कैसे बनता है इसका कारण यकृत में रहने वाला रंजक पित्तमानलेने से सब बखेड़ामिटजाता है वैज्ञानिक शोध की जरूरत ही रह जाती पर ध्यान रखना चाहिये कि जिन लोगो ने विद्युत से आज संसार की कायापलट करदी है और देश वा काल पर शासन प्राप्तकरलिया है वे विद्युत का कारण पुराणोक्त कथामानने वाले नहीं है और न हमें आशाही है कि रंजक पित्त को रस से रक्त बनने में सहायक तत्व मानने वाले कभी रंजक पित्त की सहायता से रक्त हीन प्राणी को पुष्ट और सबल बना सकेंगे। आज तक किसी विद्वान ने आयुर्वेदमहामण्डल में इस आशय का प्रस्ताव तक उपस्थित नहीं किया कि इसबात का पता तो लगाया जाय कि यह रंजक पित्त है क्या बला इस विषय पर साहित्य सामिग्री शोध और विचार

करना तो दूर की बात है। आज पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र के मर्मज्ञ अपने सिद्धान्तों से सन्तुष्ट न होकर हार्मोन (१) और वाइटाइमिन (२)¹ जैसे अत्यन्त सूक्ष्म, गूढ़ और प्रभावशाली तत्वों का अनुसन्धान का प्रयत्न करण कर रहे हैं और उनका चिकित्सा में समुचित उपयोग करके संसार को आश्चर्य में डाल रहे हैं। ऐसा जान पड़ता है मानो शरीर की रचना इन विद्वानों की सलाह से की गई हो दूसरी ओर हम वात, पित्त, कफ-वात, पित्त, कफ, रटने में ही अपना और रोगियों का तारण तारण समझ बैठते हैं वात पित्त और कफ रूप वैज्ञानिक ढग से समझाने की चेष्टा कुछ विद्वानों ने हाल में की है परंतु उसमें उन्हें बहुत कम सफलता मिली है यह इस पर से ही जाना जा सकता है कि उनके मतानुसार चिकित्साशास्त्र में कोई विस्तृत साहित्य तैयार नहीं हुआ। यदि सचमुच ही समस्त रोग वात, पित्त तथा कफ के ही कारण होते हैं तो रोगों की चिकित्सा की सफलता इनके असली रूप समझने पर ही निर्भर है और जब तक लोग इनका यथार्थ स्वरूप न समझकर उन्हें बाबा वाक्यं प्रमाणम् ही मानते रहेंगे तब तक चिकित्सा में कोई विशेष उन्नति न हो सकेगी और आयुर्वेद अपनी वर्तमान अवस्था में रहते२ समय के पीछे पड़ जावेगा और जंगलियों की चिकित्सा, अविचार्य युक्तचिकित्सा, सिद्धान्त हीन चिकित्सा इत्यादि के नाम ठकुराया जाकर कुतूहल मात्र के लिये भविष्य की स्मृति में शेष रहेगा।

हम जानते हैं कि प्रचलित संस्कारों को छोड़ना मनुष्य को अप्रिय होता है और वह भर सक उस का विरोध करता है, हम जानते हैं कि इस लेख के पाठकों में बहुत से ऐसे निकलेंगे जो एक दम कह उठेंगे कि आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा कुशल वैद्य गण अनेक चमत्कारी कार्य दिखा कर उक्त पद्धति का विरोध के रहते हुए भी शिर ऊंचा कर सके हैं वे भी वात, पित्त और कफ आधार पर ही चिकित्सा करते हैं, तब क्यों न मान लिया जाय कि उक्त आधार विश्वसनीय, वैज्ञानिक और अकाट्य है साथ ही वह कहेंगे कि यदि आयुर्वेद का यह आधार विश्वसनीय नहीं है तो आरम्भ काल से ही सहस्रों वर्ष तक केवल आयुर्वेद मत का प्रचार रहते हुए जिन लोगों ने बीमार हो कर आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा स्वास्थ्य लाभ किया है उन संख्यातीत नर, नारियों की साक्षी इस विषय के निर्णय में क्या स्थान रखती है? वात, पित्त, कफ कल्पना मात्र होते हुए भी उस के आधार पर की हुई चिकित्सा और उस चिकित्सा से वह

---

(१) हार्मोन—शरीर की गिल्टियों में अनेक ऐसे रस उत्पन्न होते हैं जो हमारे शरीर पर विलक्षण प्रभाव रखते हैं। वह अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा में रहते हुए भी हमें स्वस्थ और सशक्त बनाये रहते हैं।

(२) वाइटामिन—शाक, भाजी और अनेक खाद्य पदार्थों में कुछ ऐसे तत्व रहते हैं जो हमारे शरीर के स्वास्थ्य और पुष्टि में विशेष रूप से सहायक होते हैं इनके अभाव में शरीर की पुष्टि अधिक भोजन करने पर भी नहीं होती और शरीर रुग्ण होने लगता है आज कल ऐसे अनेक रोगों की चिकित्सा वाईटामिन युक्त खाद्य सामिग्री के उपचार द्वारा की जाती है। लेखक।

भी एक दो बार ही नहीं प्रत्युत लाखों प्राणियों पर सहस्रों वर्ष तक प्राप्त हुआ फल और अनुभव तो काल्पनिक नहीं है और यदि यह फल और अनुभव हितप्रद, रुचिकर और संतोष जनक न होता तो क्या उस का आज तक निरन्तर प्रचार हो सकता था । ऐसे पाठकों को लेखक अत्यन्त नम्रता पूर्वक यह समझा देना चाहता है कि किसी मतका विचार पद्धति अथवा रिवाज़का अधिक काल से प्रचार रहनाउस का औचित्य तथा यथार्थत्वनहीं सिद्धकरता सहस्रों वर्षों से लोग समझते थे कि जल एक तत्त्व है अग्नि भी एकतत्त्व है और वायु भी १ तत्त्वहै परन्तु रसायन शास्त्र की उन्नति के साथ साथ इस बात का पता लगा कि जल कोई तत्त्व नहीं है किन्तु हाइड्रोजन तत्त्व के दो अणु और आक्सिजन तत्त्वके एक अणु के अनुतापानुसार यौगिक है और आज इस रहस्य केखुल जाने से हमें [illegible] और सुविधा की ऐसी अनेक वस्तुएं प्राप्त होसकी हैं जिन्हें जिस को तत्त्व मानने वाले नहीं देसके इसीप्रकार विज्ञान ने यह भी बतलाया कि अग्नि न तो कोई तत्त्व है और न किसी तत्त्व का यौगिक इस की स्थिति स्वाधीन नहीं है वह पदार्थ की एक दशा मात्र है इसी प्रकार वायु में भी अनेक तत्त्व यौगिक होकर मिश्रण रूप से पाये जाते हैं। यदि वायु को तत्व मानाजाता तो आक्सिजन तत्व की न तो अलग कल्पना ही होती न, उस की सम्प्राप्ति और न चिकित्सा शास्त्र में उस का आश्चर्य जनक उपयोग और अनेक बहुमूल्य प्राणों में की रक्षा इसी प्रकार दूसरी बात समझने और ध्यान देने की यह है कि वैद्यकीय सिद्धान्त आरम्भ में ही वैद्य के सहायक और पथप्रदर्शक होते हैं उन सिद्धान्तों पर चल कर वैद्य कभी सफल होता है और कभी असफल कभी उसे यश मिलता है और कभी अपयश, वैद्य की कुशलता उस असफलता और अपयश की नीव पर ही स्थापित होती है । तथापि उसका स्वार्थ उसे उन काल्पनिक अथवा प्रत्यक्ष कारणमें से दूररहने केलिये विवश करताहै जिससे कि उसे असफलता वा अपयश की आशंका होती है परिणाम यह होता है कि वैद्यकी जिह्वा सर्प जिह्वा के समान दुहरी होजाती है एकसे तो वह रोगियो को सन्तोष देते हैं और उन के सन्मुख पुराने आचार्यों के निदान विषयक वाक्यों को दुहरा कर वात,पित्त, कफ का हिसाब समझा देते हैं और दूसरी से अपने आप अनुभव का पाठ करते हैं और अन्त में चिकित्सा चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट अथवा चक्रदत्त के मत से न करके अपने ही मत से करते हैं। वे वैद्य अनुभवी नहीं है जो वात,पित्त और कफ के अनुसार तोचिकित्सा करते हैं और उसमें विश्वास रखते हैं परंतु जब उन्हे सफलता नहीं मिलती तब प्रायः यह समझ कर सन्तोष करते हैं कि निदान ठीक नहीं हुआ नहीं तो ऐसा कहीं हो सकता है कि दोषादोष देखकर चिकित्सा की जाय और लाभ न हो अनुभवी वैद्य अपने अनुभव की यह कीमती बात कि वात,पित्त और कफ का आधार चिकित्सा में कोई विश्वसनीय आधार नहीं है दूसरों से छिपाकर रखते हैं और व्यर्थ का विरोध मोल लेने से बचते हैं। वे यदि धतूरे के कल्क से युक्त ज्वर अच्छा कर सकते हैं तो विना इस बात की परवाह किये कि ज्वर वात,ज कफज अथवा पित्तज है उसको ही व्यवहार करेंगे जबतक कि उनका अनुभव ही

यह न कह देगा कि उक्त प्रकार के ज्वर में धतूरे की अपेक्षा हरिताल अथवा मल्लभस्म का यौगिक ही विशेष गुणकारी होगा।

रस चिकित्सा में औषधिनिर्वाचन दोषा-दोष के आधार से केवल अनुपान स्थिर करने में ही होता है परंतु जो औषधियां प्रायः अनुपान रूपमें दीजाती हैं वे बिना रस, धातु के इतना क्षीण प्रभाव दिखलाती हैं कि उनके विषय में स्वतन्त्र प्रयोग द्वारा यह नहीं सिद्ध किया जा सकता कि किसी दोष विशेष की शामक अथवा उत्तेजक है और अनुपान के अभाव में जहां वैद्यराज जी केवल शहद से काम लेते हैं वहां तो अनुपान की महत्ता और भी समझ में नहीं आती तथापि रस-चिकित्सा के चमत्कारी प्रभाव और उसकी उप-योगिता को कोई अस्वीकार नहीं करता यदि वैद्य किसी एक रस के विषय में यथेष्ट अनुभव रखता है और साथ ही रखता है सच बोलने का साहस तो वह स्पष्ट कह देगा कि किसी व्याधि विशेष में उक्त रस का उपयोग वह दोषादोष के ज्ञान से नहीं किन्तु स्वानुभव से ही करता है। बहुत सी वनस्पतियों का उपयोग अरण्य नि-वासी तथा ग्रामीण निरक्षर प्रजा बिना वैद्यकी सम्मत्ति के करते रहते हैं और उनसे प्रायःउतना ही सन्तोष जनक लाभ होते देखा गया है जितना कि किसी वात, पित्त, कफ के मर्मज्ञ वैद्य के वैज्ञा-निक ! उपचारों द्वारा। बहुत से वैद्य तो निदान से केवल इतना ही आश्रय लेते हैं कि शरीर की कौनसी धातु किस दोष के अन्तर्गत क्षीण हो रही है यदि दोष और धातु का इस प्रकार उन्हें कुछ भी आभास मिल जाता है तो वह अपने परिमित ज्ञान से उनकी चिकित्सा भी प्रारम्भ कर देते हैं रोग निर्णय की कोई आवश्यकता ही नहीं सम-झते उनके मत से रोग का कोई जुदा स्वभाव नहीं होता। परंतु प्रत्येक अनुभवी वैद्य यह जान-ता है कि रोगों की विशेष अवस्थायें होती हैं जि-नमें वे विशेष प्रकार का आचरण करते हैं और कुछ काल तक अपनी विशेषताओं का प्रदर्शन करने के पश्चात् उग्र रोग तो प्रायः शान्त होजाते हैं वैद्य जी के उपचार की कुछ अपेक्षा नहीं करते और जीर्ण रोग शरीर के कुछ अवयव विशेष में ऐसा परिवर्तन उपस्थित कर देते हैं जो कि सहज में दूर नहीं होता अब इन रोगों की चिकित्सा में हम जिन औषधियों द्वारा चिकित्सा करने में समर्थ होते हैं यदि वे पित्त शामक हैं तो व्याधि पित्त के कारण और यदि वे वात शामक हैं तो व्याधि वात के कारण और यदि वे कफ शामक हैं तो व्याधि कफ के कारण उत्पन्न हुई मान-ली जाती है तात्पर्य यह है कि औषधि के दोषों से रोग का दोष और रोग के दोषों से औष-धि का दोष परस्पर मान कर वैद्य गण दोषों की रक्षा करते जारहे हैं और पुरानी लकीर को पीटते जारहे हैं वे यह कभी विचार नहीं करते कि सच-मुच में दोष मनुष्य के शरीर में वर्तमान हैं अथवा केवल कल्पना मात्र हैं। आज तक किसी भी पोस्ट-मार्टम (शवच्छेदक्रिया) में कोई दोष (वात,पित्त-कफ] नहीं प्राप्त हुआ और न कोई वैज्ञानिक अणु वीक्षण यन्त्र द्वारा शरीर की किसी भी धातु में उसे सिद्ध कर सका है इसी प्रकार औषधियों में जो दोष नाशक गुण मान लिये गये हैं वे रोग पर उनका प्रभाव देख कर ही माने गये हैं को

स्वतन्त्र पद्धति ऐसी नहीं है जिसके द्वारा किसी भी द्रव्य को हम बता सकें कि यह वातनाशक है कि पित्तनाशक अथवा कफनाशक किसी तरह हमारी समझ में यह आजाता है कि अमुक व्याधि वात के कारण है हम अपने अथवा दूसरों के अनुभव द्वारा सिद्ध कोई औषधि विशेष देकर उसे अच्छा कर देते हैं और मान बैठते हैं कि अमुक औषधि वात नाशक है। यदि वास्तव में शरीर की समस्त व्याधियां तीन दोषों के ही कारण होतीं हैं और यदि सचमुच यही तीन दोष हमारे शरीर की सातों धातुओं पर आक्रमण करके हमें बीमार कर देते हैं तो हमें अधिक से अधिक तीन प्रकार की और कुल मिलाकर २१ औषधियां ही चाहिये चरक और सुश्रुत के अधिकारियों को सोते न रह कर आयुर्वेदनिघंटु में वर्णित हजारों औषधियों में से इन २१ औषधियों को छांट लेना चाहिये अथवा उन्हें २१ खंडों में विभाजित करके आयुर्वेद चिकित्सा को सरल, सुगम और युक्तिसम्मत बना देना चाहिये था इसी प्रकार निदान में यदि सभी व्याधियां केवल दोषों के अन्तर्गत हैं तो प्रचलित रोगों की सूची भी दोष और धातु के अनुसार २१ खंडों में विभाजित करके बनाली जानी चाहिये पर सब से बड़ी कठिनता तो रह जाती है प्रत्यक्ष निदान की लक्षणों को तो हम किसी न किसी खंड में रखदे सकते हैं परन्तु नाड़ी का विषय अत्यन्त चपल है या तो हमारी अंगुलियां ही प्रायः झूठ बोला करती हैं अथवा हम स्वयं ही कुछ का कुछ कह दिया करते हैं। एक वैद्य नाड़ी को देख कर रोगी की चेष्टा और लक्षणों का ध्यान न रख कर यदि वात दोष बतलाता है तो दूसरा वैद्य उसे कफ, पित्त की संज्ञा देता है ऐसी अवस्था में सिवाय इसके कि जो वैद्य रोगी पर अपना अधिक प्रभाव डाल सके वही चिकित्सा करे अन्य कोई साधन नहीं रह जाता यह निर्णय करनेके लिये कि बात किसकीठीक थी बहुत से सफल यशस्वी वैद्य यह कह कर कि यह बडा गूढ़ विषय है और बहुत बड़े अनुभव के बाद प्राप्त होता है बात उसी तरह टाल देते हैं जिस प्रकार बहुत से नकली योगी कान में रक्त के सचार का शब्द होने की क्रिया को अनहत स्वर कहकर उसका बड़ा बखान करते हैं।

यदि सचमुच में नाड़ी द्वारा तीनों दोष स्पष्ट देखे जा सकते हैं और उनके स्थान जुदे२ हैं तो क्यों नहीं ऐसा यन्त्र तैयार होता जो कि इन दोषों को उसी प्रकार स्पष्ट और निर्विवाद रूप में दिखला सके जिस प्रकार कि थर्मामीटर से ज्वर मालूम हो जाता है। स्वनामधन्य जगदीश चन्द्र जी वसु ने अपने जगद्विख्यात आविष्कार से वनस्पति के ज्ञान तन्तुओंमें होने वाली क्रियाओं को सिनेमा के परदों पर हजारों आदमियों के सामने प्रत्यक्ष दिखला दिया है अब कोई मनुष्य उनके सिद्धान्तों में शका उपस्थितकरने कासाहस नहीं कर सकता यदि वात, पित्त, कफ यथार्थ में नाड़ीस्पन्दन द्वारा ज्ञात होसकते हैं और जब कि हमारी अंगुलियां ही इनका अनुभव करले सकती हैं तब ऐसा यन्त्र बनाना क्या कठिन है परन्तु इस क्षुद्र लेख के लेखक का अनुमान है कि वात, पित्त, कफ का विषय आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र पर एक जबरदस्ती का ढेंगा है न तो रोग ही दोषों के कारण होते हैं और न औषधियां ही दोष विशेष

के शमन करने का गुण रखती है और न नाड़ी स्पन्दन में दोष स्पष्ट और निर्विवाद रूप से पाये जाते हैं।

अन्त में विद्वान पाठकों से मेरा यही निवेदन है कि यह लेख किसी द्वेष अथवा हठधर्मी के कारण नहीं लिखा गया है और न आयुर्वेद का तिरस्कार करना ही इसका उद्देश है लेखक स्वयं वैद्य है और आयुर्वेद को सच्चे हृदय से उन्नति चाहता है। उसके मत से कि पुरानी लकीर को पीटते रहने से ही आयुर्वेद की उन्नति नहीं होसकती आवश्यकता इस बात की है कि आयुर्वेद का प्रत्येक महत्व पूर्ण विषय चिकित्सक और वैज्ञानिकों के सामने लाया जाये और उसकी यथेष्ठ मात्रा में चर्चा और समीक्षा हो जो विषय निःसार और भ्रमात्मक हों वे निकाल दिये जायें और जो अपुष्ठ और अनुन्नत दशा में हों उन्हें आधुनिकविज्ञान की सहायता से समयोपयोगी बनाये जावें और जो विषय आयुर्वेद में अबतक नहीं पाये जाते उनका इसमें समावेश किया जाये तभी यहपद्धति संसार की अन्य चिकित्सा पद्धतियों से स्पर्धा कर सकेगी और उसका तथा उसके अनुयाइयों का मस्तक संसार में ऊंचा हो सकेगा।

(वायु)

लेखक–कविराज हेमराज विशारद वैद्य—एम०ए० एम० लाहौर।

पाठक महोदय गण !

मनुष्य जीवन को निरोग्य, दीर्घ व स्थिर रखने के लिये (१) शुद्ध वायु (२) स्वच्छ जल (३) उत्तमभोजन (४) अनुकूल वस्त्र (५) सुन्दर रहने का स्थान (६) व्यायाम, शरीर की पवित्रता तथा शुद्ध आचरणों की अतीव आवश्यकता है, हम इन आवश्यकताओं में से प्रत्येक का संक्षिप्त रूप से क्रम पूर्वक वर्णन करेंगे आज सब से प्रथम वायु का कुछ वर्णन करते हैं क्यों कि वायु मनुष्य जीवन के लिये सब से अधिकतर उपयोगी पदार्थ है।

वायु संयुजित पदार्थ है इस में सौमें बीस भाग तो केवल शुद्ध वायु पदार्थ है और अस्सी भाग पृथिवी जल आदि केभाग मिले हुए है, शुद्ध वायु के आधार पर ही मनुष्य का जीवन स्थिर है इसी के द्वारा फुप्फुस में रुधिर पवित्र होता है यह ही मनुष्य शरीर की ऊष्णता को बनाये रखता है तथा शरीर इसी की सहायता से प्रत्येक कार्य्य करने में सामर्थ्यशाली बना रहता है इसी के द्वारा से अग्नि प्रज्वालित होती और दीपक प्रकाशमय होता है। वायु के इस भाग का कोई रंग कोई गन्ध न कोई स्वाद नहीं होता तथापि यह इतना

तीक्षण होता है अगर वायु में इस के अतिरिक्त और काइ पदार्थ संयुजित न होते तो श्वास तक लेना कठिन तर हो जाता।

वायु के ८० भाग मिल कर इस २० भाग को सूक्ष्म व हानि रहित बना देते है और इस की तीक्ष्णता इस से निर्बल होजाती है जिस से जीव धारी श्वास प्रश्वास क्रिया भले प्रकार से करसकते हैं। जोवायु श्वास द्वारा फुप्फुस में जाती है, वहप्रश्वास द्वारा जब बाहर आती है तो रुधिर के अपवित्र प्रमाणु चौथाई भाग मिलकर आते हैं जोकुछ विषैले होते हैं तंग स्थान में अथवा जहां बहुत जन समूह इकट्ठा हो वहां पर लोगों के भीतर से यह विषैले पदार्थ अधिक निकलकर अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न करता है यह वायु का विषैला भाग अग्नि के जलने व दीपकआदि के जलने से भी उत्पन्न होताहै कईबार कई स्थानों परमनुष्यों को विष वत घातक सिद्ध हुआ है परन्तु यह ही विष वनस्पतियों के लिये तो अमृत होता है।

(विशेष वर्णन)

(१) ग्रीष्म ऋतु में वायु हल्की व अधिक गतिवान होती है और शीत ऋतु में भारी शिथल गति शाली होती है।

(२) चौबीस घन्टों में एक मनुष्य के लिये तीन मन वायु की आवश्यकता होती है जो श्वास के द्वारा अन्दर जाती है और कुछ गन्दे पदार्थ साथ लेकर बाहर निकलती है मनुष्य जीवन के लिये और कोईपदार्थ नित्य इतनेअधिक परिणाम में आवश्यक नहीं है।

(३) जो वायु मनुष्य के अन्दर से निकलती है वह एक मिन्टमें साढ़े तीन फीट चोकोर स्थान को अशुद्ध करती है इसी हिसाब से आठ फीट लम्बे और दश फीट चौड़े कमरे की शुद्ध वायु को एक मनुष्य तीन घंटे दो मिंट व एकावन सैकिन्ड में वे काम करदेता है।

(४) जिस जल में स्नान किया हो या कुल्ली की हो जैसे उस जल को कोई नहीं पीता परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि प्रश्वास द्वारा जो अशुद्ध वायु बाहर आती है वह घातक होने पर भी तंग व बन्द स्थानों में बहुत से मनुष्य जो इकट्ठे रहते हैं वे पुनः उस को श्वास द्वारा अपने भीतर लेजाते हैं और इस प्राण घातक वायु से बिल्कुल घृणा नहीं करते।

(५)मनुष्य के मुखका पीलापन बलकारक खाने पीने के पदार्थों से कदापि दूर नहीं होता इस के दूर करने के लिये यह सिद्ध योग है कि शुद्ध पवित्र वायु में श्वास लिया करें जो बड़े २ नगर निवासियों को प्राप्त नहीं होता। एक मिनट में मनुष्य को १६ बार श्वास लेना पड़ता है यदि तीन चार मिनट तक इस को रोका जाय तो मृत्यु होजाय।

(६) जो आलसी लोग सदा घर में बैठे रहते हैं और शुद्ध वायु के सेवन खुले मैदानों में जाकर नहीं करते उन के शिर को या गरदन को कुछ ठन्डी वायु लग जाय तो वे झट जुकाम में फंस जाते हैं शीतल वायुमें घूमने व शीतल जलको शिर तथा ग्रीवापर डालकर स्नान करनेके जो अभ्यासी होते हैं उनको जुकामका कष्ट बहुत न्यून होता है,

(७) शुद्ध पवित्र वायु के न मिलने तंग व अंधेरे मकानों में रहने और व्यायाम न करने से ग्रामों की अपेक्षा नगरों में मृत्यु अधिक होती है, दूसरे इन्हीं कारणों से नगरों में यक्ष्मा के रोगी बहुत होते हैं यक्ष्मा रोग को दूर करने के लिये शुद्ध पवित्र वायु का मिलना बहुतही उपयोगी है।

(८) शुद्ध वायु जीवन दाता और अशुद्ध वायु मृत्यु का हेतु है यह ही कारण है पहाड़ों, मैदानों व साफ़ सुथरे मकानों में रहने वाले लोग उन लोगों की अपेक्षा जो बहुत भारी बसे हुए नगरों, तंग मकानों व गन्दे स्थानों में रहते हैं, निरोग्य, बलवान, सुन्दर, चतुर व बुद्धिमान और मेल मेलापी होते हैं इस लिये प्रत्येक को शुद्ध पवित्र वायु में रहने का यत्न करना चाहिये।

(९) जीवन दाता वायु को अपवित्र करने से सदा बचते रहना चाहिये। ऐसी परमोपयोगी वस्तु को अपवित्र करना महा पाप है इस लिये यत्न करें कि अधोलिखत कारणों के आप हेतु न बनें।

(क) मनुष्यों के प्रश्वास से जो अशुद्ध वायु निकलती है वह पवित्र वायु को गन्दा कर देती है, इस लिये मुखको ढांप कर सोना, एक कमरे में सोना, एक कमरे में जो छोटा या बंद हो उसमें बहुत से मनुष्यों का होना व सोना स्वास्थ्य के लिये बहुत ही हानिकारक है।

(ख) लकड़ी, दीपक, लैम्प तथा ऐसे ही और बहुत से जलने वाली वस्तुओं के लिये शुद्ध वायु की आवश्यकता है इससे जो वस्तु जलती है उसमें से अशुद्ध वायु खारज होती है जो सब वायु को खराब कर देती है इस लिये बन्द कमरे में अग्नि दीपक व मट्टी के तैल के लैम्प आदि के जलने से वहां की वायु बहुत गन्दी होजाती है।

(ग) मृत शरीर व साग पात आदि थोड़े काल में ही सड़ने लग जाते हैं उनकी दुर्गन्ध वायु में मिलकर उसे भी दुर्गन्धित कर देती है हमारा घ्राणेन्द्रिय तत्काल ही उसे जान लेता है ताकि हम उसके हानिकर प्रभाव से बचें और उस दुर्गन्धी को दूर करें इस लिये श्मशान व कबरस्थान का नगर के समीप होना, सबजी, तरकारी के टुकड़े और फलों के छिलके व गुठलियां आदि का पड़े रहना स्वास्थ्य के लिये बहुत ही हानिकारक होते हैं, ऐसे ही पशुओं का गोबर लीद व मूत्र तथा मनुष्यों का मलमूत्र आदिकी दुर्गन्धि वायु को गन्दा करती व स्वास्थ्य को बिगाड़ती है, रसोई के स्थान की वस्नानागार की अस्वच्छता भी वायु को गन्दा करती है।

(घ) कई प्रकार के काम भी वायु को खराब करते हैं जैसे मांस की दुकानें रंगरेज आदि तथा कई प्रकार के कारखानों का धूम भी वायु को अस्वच्छ करता है।

(शुद्ध वायु कैसे प्राप्त हो सकती है)

हम ऊपर बता चुके हैं हमारे निवास स्थानों की वायु हमारे श्वासप्रश्वास से, अग्नि व दीपक आदि के जलाने से मनुष्य व पशुओं के मलमूत्र से गन्दी हो जाती है इस लिये अधोलिखत उपायों द्वारा शुद्ध वायु प्राप्त करनी चाहियें।

(१) श्वासप्रश्वास का होना अत्यावश्यक है इस लिये निवास स्थानों में वायु के आने जाने के लिये ऐसाउत्तम प्रबन्ध होना चाहिये जिस से हर समय शुद्ध वायु आती रहे और गन्दी वायु का निर्गमन होता रहे परन्तु कमरों में वायु के झोंके नहीं आने चाहियें।

(२) एक कमरे में बहुत से मनुष्यों को बहुत काल के लिये इकट्ठे नहीं होना चाहिये।

(३) घरों में चूल्हों के धूम निकलने के लिये जो अंगीठी हो उसका मार्ग खुला रहे क्यों कि उसके द्वारा भी वायु का गमनागमन बना रहता है इससे हर रोज़ एक बार तो शुद्ध वायु का गमनागमन हो जाता है।

(४) घर के हर एक कमरे के दरवाजे हर रोज प्रातः खोल देने चाहियें ताकि स्थान को शुद्ध वायु प्रविष्टहोकर शुद्ध करे।

(५) शुद्ध वायु की जैसे जगते समय आवश्यकता है वैसे ही सोने के समय भी इस लिये सोने के समय वायु के मार्ग को बन्द नहीं कर देना चाहिये शीतकाल में भी वायु के सब मार्गों को बन्द नहीं करना चाहिये।

(६) अन्धेरे स्थानों की वायु सदा दुर्गन्धित रहती है जैसे यह प्रसिद्ध है कि जिस घर में धूप नहीं वहां पर रोग का राज्य रहता है इसलिये हर एक कमरे में रोशन दान होना चाहिये ताकि प्रकाश का प्रवेश नित्य होता रहे।

(७) अगर किसी स्थान में प्रवेश करते समय दुर्गन्धि आये तो जानलो कि यहां की वायु खराब है और यहां शुद्ध वायु की आवश्यकता है इस लिये इस का उसी समय प्रबन्ध करना चाहिये।

(८) मनुष्यों व पशुओं के मल मूत्र को जननिवास से दुर फेंकवाना चाहिये।

(९) पशुओं को रहने के स्थानों से अलग रखना चाहिये इन के मल मूत्रसे इन के प्रश्वास वायु को बहुत ही गन्दा करते हैं।

(१०)मनुष्य का मल मूत्र घर में भूमि पर नहीं पड़ा रहना चाहिये, अच्छा तो यह है कि मल मूत्र का त्याग जन निवास से दूर करना चाहिये यदि घरों में करना हो तो शौच स्थान पत्थरादि का बना हो या मल पात्र रोगनी होने चाहिये, शौच स्थान को दोनों समय धुला देना अच्छा है इस के अतिरिक्त साफ व खुशक पत्ती या रेत अथवा चूना नित्य डलवा देना चाहिये। रसोई का स्थान व स्नान गृह को नित्य शुद्ध रखना शरीर व सोने के वस्त्र पवित्र रखने इन सब उपायों से वायु शुद्ध रहती है और अनेक प्रकार के रोगों से रक्षा करती है।

(११) यह तो स्पष्ट है कि मकानात व कमरों की अपेक्षा खुले स्थानों की वायु शुद्ध पवित्र होती है। फुलवाड़ी खुले मैदानों व पर्वतो की चोटियों आदि की वायु बहुत ही पवित्र होती है समुद्र के तट की वायु सब से अधिक हलकी पवित्र व निरोग्यता कारक होती है। घर से बाहिर ऐसी पवित्र वायु में जितना काल व्यतीत हो बहुत ही लाभ कारी है और कभी २ जल वायु के परिवर्तनार्थ ऐसे २ उत्तम स्थानों की यात्रा अवश्य ही करना चाहिये जिस से स्वास्थ्य बना रहता है।

(१२) वायु को पवित्र करने के अनेक प्रकार के प्राचीन व नूतन उपाय हैं इन सब से उत्तम और परमोपयोगी उपाय ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार दोनों समय का अग्निहोत्र का करना है यदि प्रत्येक घर में प्रातः साय शुद्ध पवित्र सुगन्धित पदार्थों द्वारा नित्य हवन किया जाय तो मनुष्य व पशु द्वारा अपवित्र की हुई वायु हर समय अपवित्रता रहित रहेगी इस लिये इस ईश्वरीय आज्ञा का पालन करने से बहुत से लाभ होंगे।

(१३) खुले मैदानो में नदी के तट पर पहाड़ की चोटियों पर नित्य भ्रमण करने दीर्घ श्वास लेने प्राणायाम करने से नूतन शुद्ध पवित्र रुधिर मनुष्य में उत्पन्न होता है इस से शरीर बल पुष्ट

सार्थ व कांति उत्पन्न होती है मुख कावर्ण रक्त हो जाता है। सहन शीलता तो आश्चर्य्यदायक हो जाती है

जन निवास से दूर खुले मैदान आदि में आ-कार खड़े रह कर या बैठ कर अपने भीतर की वायु को बहुत ओर से नासिका द्वारा बाहिर निकाल दें और ऐसे ही धीरे२ नासिका द्वारा अन्दर लें इसी प्रकार कम से दस पन्द्रावार नित्य करें ऐसे करने से थोड़े ही दिनों मुख कावर्ण सुरख होजायगा जो नित्य प्राणायाम करते हैं उन की तो बहुत ही शक्तियें बढ़ जाती हैं प्राणायाम बिना सीखे के नहीं करना चाहिये।

दीर्घ श्वास भी अधिक लेने से शिर में खुशकी उत्पन्न कर के निद्रा का नाश कर देते हैं इस लिये हमारा अनुभव है दश या पन्द्रावार करने से कोई हानि नहीं होगी बल्कि लाभ ही लाभ होता है।

स्वास्थ्य का मूल्य !

एक दिन, करने सिंह-शिकार, चले अकबर दिल्लीश, हजूर।
विपिन में पहुंच गये जब दूर, वहां पर देखा—एक मजूर॥
वृक्ष की चोटी पर था खड़ा, काटता था लकड़ी मजबूत।
पसीना बहे, जेठ की घाम, बदन काला, लगता था–भूत॥
शाह यों बोले–" सुन मज़दूर, हमारे साथ चलो–तत्काल।
सिपाही मैं अकबर का एक, बुलाते हैं तुमको–भूपाल॥
शाह के सिर में रहता दर्द, न मिटता–हारे वैद्य-हकीम।
मिला अब कामिल एक फकीर, लाल–मस्जिद में हुआ मुकीम॥
बताया उसने एक उपाय, अगर कोई राज़ी हो जाय।
दर्द सिर का वे देंगे बदल, मन्त्र बल से देंगे–पलटाय॥
चलो तुम संग हमारे–दीन, दर्द सिर ले लो, ए–मजदूर।
मिलेंगे तुम को, एक करोड़, कष्ट होगा तेरा सब दूर॥
न करना होगा भीषण काम, न सहनी होगी तीक्ष्ण घाम।
न चढ़ना होगा अर्द्धाकाश, न काला करना होगा चाम॥
बना 'श्रीमान्, चलो मम संग, ऐश कर लेना हस,पर्यंत।
भाग्य जागा है तेरा आज, मधुर चितवन चितये भगवन्त॥
सुना सब अकबर का व्याख्या, नकहा उसने "सुनिये श्रीमान्।
स्वास्थ्य बिन सब भारत का राज, मिले तो भी वह धूल-समान॥

'मयम श्री'



राजयक्ष्मा

लेखक-भिषक-विशारद कविराज पं० हरिवल्लभ जी सिलाकारी, आयुर्वेद-उपाध्याय

इस रोग को हिंदी में क्षयी अथवा तपैदिक कहते हैं वैद्यक में क्षय, राजयक्ष्मा और इंग्लिश में थाइसिस या कञ्जम्पशन, फारसी में हुम्मा और अरबी में शिल, शिहा कहा जाता है- वैद्य और रोगी द्वारा अच्छे प्रकार से यत्न पूर्वक यक्ष अर्थात् पालन किया जाता है इस कारण शब्द शास्त्रज्ञाता विद्वान इसको देववाणी में "यक्ष्मा" कहते हैं।

प्रथम राजा चन्द्रमा के यह रोग उत्पन्न हुआ था इस कारण इसको विद्वान "राजयक्ष्मा" कहते हैं। प्रचलित भाषा में इसको राजरोग भी कहा करते हैं, राज-संज्ञा होने के कारण, यह रोग सर्व रोगों में उच्चता द्वारा श्रेष्ठासन पर विराजमान है तथा चन्द्रभगवान के इस रोग द्वारा ग्रसित होजाने से आचार्यों ने इसकी राज संज्ञा की है अर्थात् राजयक्ष्मा नाम निरुक्त किया और यह सर्व रोगों का राजा है। अब मैं आगे इस भयङ्कर महाव्याधि का संक्षिप्त में वर्णन करता हूं, यद्यपि उक्त रोग पर बड़े२ ग्रन्थ एवं निबन्ध लिखे जा चुके हैं, किन्तु राजयक्ष्मा जैसी व्याधियों पर प्रत्येक वैद्यों को विवेचना पूर्ण पुनः विचार कर अपने अनुभवों को प्रकट कराना नितान्त आवश्यक है। यह मैं जानता हूं कि मेरे लेख में अनेक त्रुटियां होंगी किन्तु विज्ञान वैद्यों को उस पर ध्यान न देनाचाहिये और मुझे क्षमा करना चाहिये

क्षय का कारण—

वेगरोधात्क्षयाच्चैव साहसाद्विषमाशनात् ॥
त्रिदोषोजायतेयक्ष्मागदोहेतुचतुष्टयात्॥१॥भा०प्र०

अर्थ—अधोवायु आदि वेगों को रोकने से क्षयरोग उत्पन्न होता है, चरक में भी कहा है कि,

ह्रीमत्वाद्वाघृणीत्वाद्वा भयाद्वावेगमागतम् ॥
वातमूत्रपुरीषाणांनिगृह्णातियदानरः॥१७॥च०चि०

अर्थ—जब मनुष्य लज्जा, घृणा या भय से वात,मूत्र और मल के वेग को रोक लेता है,तब वेगों के प्रति घात द्वारा कुपित हुई वायु कफ और पित्त को उत्तेजित कर ऊपर, नीचे अथवा तिरछे स्थानों में गमन कर रोग को उत्पन्न करता है। जैसे-रक्तपित्त कास, श्वास, ज्वर इनके बहुकाल विना चिकित्सा के रहने से क्षय के रूप को व्याधि धारण करती है। इसमें कफ का प्राधान्य रहता है, त्रिदोष कुपित हो रस वाहिनी शिराओं को रुद्ध करता है तब उससे क्रमशः रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र क्षीण होता है कारण रस ही सर्व धातुओं का सृष्टि कर्त्ता है उसी रस की गति रुद्ध होजाने से किसी धातु का पोषणनही होसक्ता अथवा अधिकाधिकमैथुनसे शुक्र क्षयहोनेपरअन्यान्य धातु उसकी क्षीणता पूर्ण करने के लिये असमर्थ रह क्रमशः क्षय को प्राप्तहोती हैं। एव यह रोग निरन्तर क्रम पूर्वक बढ़ता है, तब वह मनुष्य कृषता को गृहण करता हुआ अति निर्वल होजाता है,

क्षय का पूर्वरूप—

क्षय के प्रकट होजाने से प्रथम प्रतिश्याय अर्थात् जुकाम की उत्पत्ति होती है, फिर क्रम से श्वास, कास, शरीर में दर्द, कफ थूकना, तालु का सूखना, वमन, अग्निमान्द्य, नम्रा सा बना रहना, पीनस, नेत्रों का श्वेत (सफेद) रङ्ग होना, मांस भक्षण तथा मैथुनेच्छा, भोजन करतेर भीबल एवं मांस का क्षय होना, एकान्तवास की इच्छा, निद्राधिक्य, अदोषभावों में दोष दर्शन, स्वप्न में पक्षी पतग, कुत्ता, व्याघ्र जन्तु उसको आक्रमण कर रहे हैं, केश हड्डी आदि के ढेरों पर खड़े होना, नदी-कुआ-को सूखा देखना, पर्वत टूट पड़ा है, आकाश के तारे टुट पड़े गिर पड़े हैं आदि दुःस्वप्न देखता है।

क्षय का लक्षण—

प्रतिश्याय, कास, स्वरभेद, अरुचि, पार्श्वद्वय संकोच, दर्द होना, रक्त आना, और मल भेद यही सब लक्षण होते हैं। जिसको जिस दोषका आधिक्य रहता है उसको उन्हीं दोष के लक्षण अधिक प्रकाशित होते हैं।

वाताधिक्यसे—स्वरभेद, कधा-दोनों पसलियो का सकोच व उनमें दर्द होना।

पित्ताधिक्यसे—ज्वर,-सताप, अतिसार, मलमूत्र का रङ्ग पीला होना तृषा लगना।

कफाधिक्यसे—कफ का थूकना, जुकाम, खांसी, अरुचि, शिर में वेदना, मुंह का स्वाद मीठा रहना अङ्ग मर्दन आदि लक्षण प्रदर्शित होते हैं।

त्रिदोषाधिक्यसे—ज्वर कम हो, आहार पच कर क्षुधा लगती हो, शरीर में शक्ति हो, कधो तथा पसलियों में पीड़ा, किंवा हाथ-पैरों में दाह, अंग जकड़ता हो, उक्त त्रिदोष क्षय की प्रथमावस्था

अब होतो-रोग साध्य है अर्थात् अच्छा हो सका है

क्षय के विशेष लक्षण—

अंसपार्श्वाभितापश्च तापः पादकरस्यच ॥
ज्वरःसर्वाङ्गगश्चेति लक्षणं राजयक्ष्मणः॥४८॥च०चि

अर्थ—कंधा और पसलियों में संताप यद्वा पीड़ा होना, हाथ-पैरों का तपना, निरन्तर ज्वर रहना, यह तीनों राजयक्ष्मा के मुख्य लक्षण हैं।

क्षय का साध्यासाध्यत्व—

यह उत्पन्न होने से ही दुःसाध्य है. रोगी का बल अग्नि, मांस, ये क्षीण न हुये हों तब उक्त जुकाम इत्यादि ११रूप प्रकाशित भी हों तो भी आरोग्य होने की आशा कर सक्ते हैं परन्तु,यदि बल ,मांस क्षीण हो जायं तो उक्त एकादश रूप प्रकाशित भी न हों तब भी असाध्य समझना, तथा खांसी, अतिसार, पसली दर्द, स्वरभङ्ग, अरुचि, और ज्वर ये छः लक्षण दिखलाई देवें अथवा श्वास, खांसी, और रक्त का थूकना ये तीन दोष प्रकाशित हों तो असाध्य समझना अथवा अधिक आहार करने पर भी क्षीण होवे अथवा उपद्रव युक्त अतिसार हो साथ में अन्डकोष और पेट पर सूजन हो यद्वा दोनों नेत्र सफेद,अरुचि,ऊर्ध्वश्वास, कष्टसे शुक्र श्राव होना इनमें से यदि कोई एक उपद्रव यक्ष्मा रोगी को होवे तो असाध्य जानना।

यक्ष्मा रोगे सामान्योपचारः

क्षयी रोगी को प्रथम वमनकारी औषधि देकर वमन कराना तत्पश्चात् मृदु विरेचन देना अगर खांसी न जायतो कुछ अन्तर परपुनः द्वितीयकिंवा तृतीय वार वमन कराकर शुद्ध करा देवें। छाग मांस, घृत, दूध बकरी का, तथा छाग, हिरण (ताम्रवर्णी) इनको गोद में लेना, और बिस्तरों के समीप रखना बहुत उपयोगी है। मृग छाला पर रोगी को बैठना उठना उत्तम है ग्रीष्म ऋतु में पीपल वृक्ष के नीचे खुले मैदान में रोगी को शयन करावें एवं पीपल के अंकुर खिलावें तो क्षयी को लाभ होता है। यदि रोगी दुर्बल हो तो शहद, मिश्री, मक्खन इनमें स्वर्ण वर्क मिलाकर खिलाना। मस्तक, पार्श्व, कन्धों में दर्द हो तो लाक्षादि तैल की मालिश कराना यदि श्वास, खांसी, जुकाम, ज्वर, अरुचि, अग्निमांद्य होवें तो द्राक्षारिष्ट के साथ सितोपलादि चूर्ण दिन में तीन बार चटावे तो क्षय जावे। उक्त तीनों प्रयोग और शास्त्रीय चिकित्सा का वर्णन आगे किया जायगा। रोगी के परिचारक अच्छे होने चाहियें जो कि चिकित्सक की नियुक्त की हुई मर्यादा पर रोगी को बाध्य करते रहें। रोगी के लिये शुद्ध वायु तथा शहर से बाहिर खुले मकान में रखे, जल ताजी स्वच्छ छना हुआ पीने को देना चाहिये, ब्रह्मचर्य से रहे, बन्द मकान दुमजला जो कि शहरों की कुलियों में होते हैं उन को त्याग दे तथा जिस स्थान पर अधिक शीत वा सीड़ हो उस जगह रोगी न रहे तो अच्छा है, रोगी की शय्याको साबुन से धोकर धूप में सूर्य किरणों द्वारा सुखलावे, परिचालकों का प्रधान कर्त्तव्य है किवह रोगी की स्वच्छता पर अधिक ध्यान रक्खें कारण इस रोग के कीटाणु होतेहैंऔर यहअधिक संसर्ग से थूक के ज़रिये दूसरे कोहोजाना सम्भव होता है।

क्षय की चिकित्सा—

बलिनो बहु दोषस्य पंच कर्माणि कारयेत् ॥
यक्ष्मिणः क्षीण देहस्य तत्कृतं स्याद्विषोपमम् ॥
३९ भा० प्र०

अर्थ—बलवान् तथा बहुत दोषों से युक्त राजयक्ष्मा वाले रोगी को पच कर्म अर्थात् वमन विरेचन, नस्य, निरुह,वस्ति और अनुवासन वस्ति स्वेदन स्नेहनये कर्म कराने चाहिये परन्तु क्षीण देह वाले पुरुष को यह पच कर्म विष को समान् अपकारीहोते हैं कारण कि मनुष्यों का बल मल के ही आधीन है, तथा जीवन वीर्य के आधीन है इस से रोगी के वीर्य की एव मल कीइस रोग में यत्न पूर्वक सर्वदा रक्षा करनी चाहिये। विरेचन आदि का कराना रोग के आरम्भ काल में हितकारी हैं। अब चिकित्सक को निम्न कथनानुकूल रोगी की चिकित्सा-सावधानी से करना चाहिये, माधव निधान में कहा है कि—

ज्वरानुबन्ध रहितं बलवन्तं क्रियासहम् ॥
उपक्रमेद स्मवन्तं दीप्ताग्निम कृशंनरम् ॥ १३ ॥

अर्थ—जो क्षय रोगी ज्वर पीड़ा से रहित, बलवान्, तीव्र औषधियों को सह सके, यत्नवाला धीरज वान, प्रदीप्त अग्नि वाला, निर्बल भी न हो, ऐसे रोगी की चिकित्सा विद्वानों को करना चाहिये।

क्षय पर क्वाथ—

धनियां, पीपल, सौंठ, सरिवन, दोनों कटाई की जड़, गोखुरु, बेल की छाल, सोना की छाल, पाढ़ा की छाल, गंभारी इन सब द्रव्यों का क्वाथ पिलाने से—पार्श्वशूल, ज्वर, श्वास, तथा पीनस आदि रोगों को लाभ करता है।

चूर्ण—

लवङ्गादि—लौंग, कवावचीनी, खस की जड़, लाल चन्दन, तगर, नीलकमल, जीरा, इलायची पीपर, अगर, दालचीनी, नागकेशर, सौंठ, जटामांसी, मोथा, अनंत मूल, जायफल वंशलोचन, ये १—१ तोला मिश्री ८तो० का चूर्ण कर कपड़ छन कर रखले। मात्रा-४रत्तीसे २माशे तक। अनुपान-शहद अथवा शर्वत गुलवनफशा। समय—सायं प्रातः चाटकर ऊपर से ﾉ= के अन्दाज बकरी का दूध पिलाना चाहिये, इस के उपयोग से यक्ष्मा, कास, श्वास, अरोचकता, ग्रहणी, ये शान्त होकर रोचक, बलप्रद, शुक्रजनक, अग्नि दीपक है और त्रिदोष नाशक है।

सितोपलादि— १६) मिश्री, ८) वंशलोचन, ४) पीपल छोटी, २) इलायची छोटी, १) दालचीनी, इन का चूर्ण करले पश्चात् २) गुड़बेल का सत्व मिला कपड़छन कर शीशी में रक्खें। इसे मधु द्वारा चटाने से—ज्वर, श्वास, कास, मन्दाग्नि, अरोचक वमन, जुखाम, क्षय, एवं दाह इन का विनाश होता है, इसे बलानुकूल मात्रा में सेवन करावें। इस के अतिरिक्त द्राक्षादि चूर्ण और उशीरादि चूर्ण भी हितकर है।

वटी—

व्याधिहरणी—हरिताल भस्म, अतीस, सुहागा, हरड़, आंमले की कलीं, चित्रक, जमाल गोटा शु० गन्धक शु०, अकलकरा, समुद्र फल, जाठोन, अन्ड की जड़, वायविडंग, पीपलामूल, दारु हल्दी श्वेतव-च्छनागशुद्ध, पीपल, खुरासानी अजवायन, इलायची छोटी, जायपत्री (जावित्री), अहिफेन शुद्ध, जायफल सैंधा निमक, कूठ, हींग लहसुन ये सम भाग लेकर ३ दिन धमरा रस में खरल करना, फिर ३ रत्ती प्रमाण वटी निर्माण करना अनुपान मधु और पीपल के चूर्ण के साथ या वासादि क्वाथ के साथ या बकरी के दूध के साथ। इससे-राजयक्ष्मा एवं तज्जन्य उपाधियां शीघ्र नाश होती हैं।

रस—

यक्ष्मारि लौह—सुवर्ण माक्षिक भस्म, शिलाजीत शुद्ध, वायविडग चूर्ण लोह भ० एकत्र मर्दन करके रोगी का बलाबल प्रकृति विचार मात्रा और अनु-पान भेद के द्वारा सेवन कराने से-उग्रक्षय नष्ट होजाता है।

राजमृगाङ्क—३) रस सिंदूर १) सुवर्ण भस्म १) ताम्र भस्म २) मैनशिल, २) हरिताल २) गन्धक। यह सर्व द्रव्य एकत्र खरल कर बड़ी कौड़ी में भरकर उसका मुंह बकरी के दूध में सुहागा पीसकर उससे बन्द करना। पश्चात् एक हांडी में रख उसकी कपड मिट्टी द्वारा मुखमुद्रा कर गजपुट में फूंकना स्वाङ्ग शीतल होने पर घोंट लेना मात्रा-२ रत्ती पर्यन्त। अनुपान-घृत शहद तथा १० पीपल या १९ दाने कालीमिर्च के साथ। इससे-प्रायःसमस्त प्रकार का क्षय रोग अवश्य-मेव आराम होता है।

कांचनाभ्र—राजमृगाङ्क, सुवर्ण पर्पटी, लोकनाथ रस, रत्नगर्भ पोटली, इनको सम भाग ले खरल करै, यह दोषानुसार अनुपान के साथ देने से क्षय श्वास, कास, प्रमेह, आदि रोग शमन हो बलवीर्य बढ़ता है। इसके अतिरिक्त मृगाङ्क रस, महामृगाङ्क रस, सुवर्ण वसंत मालती, रत्नगर्भ पोटली रस, सर्वाङ्ग सुन्दर रस जयान्तक रस, कुमुदेश्वर रस से भी राजयक्ष्मा आरोग्य होता है।

तैल—

लाक्षादि—लाख, चन्दन, बला, खस, ये प्रत्येक ६४) लेना ऽ१३ जल में पकाना चतुर्थांश शेष रहने पर उसमें १२८) तिल्ली-तैल डाल देना, रक्तचंदन उशीर, जाठोन, शतावर, कुटकी, देवदारु, हल्दी, कूट, मजीठ, अगर, मोथा, असगन्ध, बला, दारु-हल्दी, मूर्वा, इलायची, दालचीनी, नागकेशर रास्ना, लाख, कालो निर्गुन्डी, चम्पा शिलारस; अनन्तमूल विड निमक, सैंधव निमक. इनका कल्क करै ३¼ सेर बकरी का दूध लेना, विधिवत् सिद्ध करले।

राजयक्ष्मा को हरण कर्त्ता, कास, श्वास रक्तपित्त सर्व ज्वर, दाह, वमन, कण्डू. विस्फोटक, शिरो-रोग, पीनस, और पाण्डुरोग को लाभ कर शक्ति एव कान्ति उत्पन्न करता है।

इसके सिवाय बृहत्किरोतादि तैल, तथा महा-चन्दनादि तैल मर्दन कराना।

घृत--

अजापञ्चक—बकरी का घी ५४ बकरी की लेंडो को रस ५४ बकरी का मूत्र ५४ बकरी का दूध ५४ बकरी का दही ५४ एकत्रित कर पाक लेवे और ५१ जवाखार मिलाकर उतार लेना मात्रा-१) तक, यह घृत पान करने से राजयक्ष्मा, श्वास और खांसी का आराम होजाता है। जीवन्त्याद्य घृत बलागर्भ घृत भी क्षयी को विशेष लाभप्रद हैं।

अरिष्टावलेह--

द्राक्षारिष्ट—मुनक्का दाख ५० सेर, जल १२८ सेर, शेष ३२ सेर, गुड़ २५ सेर दालचिनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, फूल प्रियङ्गु, वंशलोचन, काली मिर्च, पीपल, वायविडङ्ग, में प्रत्येक ४-४ तोला ले चूर्ण कर उस काढ़े में मिलादेवे। इसको एक मास पर्यन्त किसी पात्र में बन्द कर देवे पश्चात् छान कर उपयुक्त मात्रा में सेवन करने से उरक्षत रोग, राजयक्ष्मा कास श्वास स्वरभेद अङ्गदाह ये सम्पूर्ण दूर होते हैं, और यह रक्त एवं बल की वृद्धिकर मलको साफ करता है। दशमूलारिष्ट बबूलारिष्ट पिप्पल्यारिष्ट च्यवनप्राशावलेह वासावलेह द्राक्षासव योगराजासव ये भी राजयक्ष्मा रोगी को अतिहितकारी हैं।

पाग--

पाकों में गुडूचीपाग पिप्पल्यादि पाग लवङ्गादि पाग राजयक्ष्मा वाले को उत्तम हैं। अन्य पाग शकरदत्त जी शास्त्री पदे कृत "बृहत्पाग संग्रह"में हैं। किन्तु उपयुक्त पाग भी मेरे अनुभव में आये हुए हैं।

१-यवक्षार १ सेर अधिक मालुम होता है-सम्पादक

क्षय में पथ्य--

रोगी का अग्निबल यदि क्षीण न हुआ होवे तो गेहूं का आटा घुली मिले हुए की तथा जौ की घुरी के आटे की पतली बनाई हुई रोटी, पुराने चावलों का भात, धुली मूग की दाल, बकरी के सब पदार्थ (मांस, मक्खन, घृत, दूध, और मलाई) गौ दूध, परवल, बेंगन, कच्चा केला, कटहर, गूलर कुम्हड़ा, सैंजने की फलियां आदि की शाक, गरम जल शीतल करके पिलाना। पका केला, आम छुहारा, अङ्गूर, नारियल, आदि प्रायः सब प्रकार के फल, कफ प्रकोप में दिन के वक्त भात न देकर रोटी खाने को देना। अग्नि बल क्षीण होजाने से दिन को भात दाल अथवा शाक रोटी देना तथा रात्रि के समय थोडा दूध मिलाकर साबुदाना अथवा बार्लि आदि खिलाना चाहिये। यदि यह भी अच्छी तरह हजम न होसके तो दोनों समय में साबुदाना, दरिया-दूध, आरारोट एवं मुनक्का दाख आदि फलों का हल्का आहार करानीचाहिये और बकरी के दूध की खुराक बढ़ाना चाहिये। अनार का शर्बत्, अंगूर का शर्बत्, शितोपलादिलेह द्राक्षावलेह दिन में ३ बार पान कराना चाहिये। प्रातः साय शुद्ध वायु का सेवन। लाक्षादि तैल का मर्दन करा के शीतकाल में उष्णजलसे तथा ग्रीष्म कालमें शीतल जलसे स्नानकराना। जङ्गली जानवरों का मांस रस विशेषतः बकरी हरिणादि का सेवन। चन्द्रमा की चांदनी, सुगंधित पुष्पों की माला, होम, दान, देव-पूजन, विद्वान ब्राह्मणों का यथोचित सत्कार करता रहे, तो रोगी को शान्ति प्राप्त होती है।

अपथ्य--

मल मूत्र आदि के वेग को रोकना, रूखे अन्न का भोजन, भोजन पर पुनः भोजन. तथा अनियमित समय पर न्यूनाधिक भोजन, अधिक पान खाना और तमाखू पीना, दूध और मछली को मिलाकर खाना दही, आलू, सेम, ककड़ी, मूली, कुल्थी, लहसुन, प्याज, घुइय्याँ तथा पत्तों के शाक उड़द, रायता, तैल, मिर्चा बांस की कोंपल अधिक निमक, हींग, सब तरह के अचार एवं सिरका खट्टे, तीखे, कसैले, कडवे, ये सब रस, क्षार, इत्यादिक विदाही द्रव्य भोजन इस रोग में अनिष्टकारी हैं। तीव्र विरेचन, मैथुन, रात्रि जागरण नेत्रों में अंजन व्यवहार, पसीना लेना, व्यायाम, पैदल कोसों चलना, अधिक श्रमजनक कार्य्य का करना. वन्द मकान अथवा गर्म स्थान में निवास, शोक, चिन्ता, क्रोध, ईर्षा, भय, इनमें मन का लगाना। शुक्रक्षय से उत्पन्नहुई व्याधि में वैद्य को विशेष सावधान रहना आवश्यक है। जिस कार्य से मनमें कामोद्वेग उपस्थित होने की सम्भावना हो उस कार्यसे हर समय दूर रहना चाहिये

क्षय रोगी की जीवन अवधि--

जिस रोगी में राजयक्ष्मा के उक्त कहे हुए सम्पूर्ण लक्षण मिलते हों, वह रोगी चार माह तक जीता है और यदि कुछ रोगी शरीर से बल सम्पन्न हुआ तो छःमाह पर्यन्त जीता है। ऐसा विद्वानों का कथन है। भावमिश्र आचार्य्य जी का मत है कि—

पर दिनसहस्रन्तु यदि जीवति मानवः ॥
सभिषग्भिरुपक्रान्तस्तरुणः शोषपीडितः॥१६॥ भा०प्र

अर्थ—क्षय रोग द्वारा पीड़ित मनुष्य जो तरुण हो एवं उत्तम चिकित्सक द्वारा चिकित्सा की जाय तो एक हजार दिन पर्यन्त जीवित रहता है, यह राजयक्ष्मा रोगी की परम अवधि कही है।

क्षय रोगी का पूर्वकर्म विपाक--

ब्रह्म हत्या, अभक्ष्य भक्षण, पर वस्तु अभिलाषा, दूसरे की भूमिहरण, मनुष्य हत्या, शास्त्र को न जानते हुए सभा में धर्मशास्त्र प्रायश्चित्तादि विषयों पर विवाद करना, विद्वानों के हृदय को दुःख पहुंचाना।

क्षय रोग का परिहार--

षडब्द्व्रत, प्रायश्चित्त, सुवर्ण की कदली मय फल पत्र के बना यथा विभवविस्तार पूर्वक वस्त्रालङ्कार द्वारा भूषित कर उत्तम ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान देवें, और अधोलिखित मन्त्र का पाठ सादर ब्राह्मणों द्वारा अथवा स्वयं करें।

ॐ हिरण्यगर्भ पुरुष परात् पर जगन्मय।
रंभादानेन भोदेव क्षय क्षपय मे प्रभो ॥

इस के अतिरिक्त १८०)रु० दान करावे यदि इतने दान की शक्ति न हो तो ९०) रु० तथा ४५) रुपये तक करा सकते हैं परन्तु इस से अल्प दान प्रदान कराने की मर्यादा नहीं।

एलौपैथी-ट्रीटमेन्ट—

दर्द की जगह जोंक। (२)लेटी विलस्टर बांधना अथवा राई की पुल्टिस लगाना १५ मिनन्ट के भीतर पुल्टिस निकालना चहिये। (३) काड लिवरआयल ३०मिनम, टिंचरओपियाई १० मिनम एकत्रकरडिकाक्सन सिनकौना के साथ २-३बार

देना यदि डिकोक्सन सिनकोना न हो तो डिकाक्स्न चिरायता के साथ २॥ तोला की मात्रा से देना (४) टिंचर क्यास्फर कपो जिट्स १५ थ्यैंव । टिंचर ओपियाई १० थ्यैंव, इपिका कोएना वाइन १० थ्यैंव, टिंचर स्किली १० थ्यैंव एकत्र कर क्यास्फर मिक्श्चर के साथ २—३ वार देना चाहिये । (५) काड लिवर आयल डाल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड के साथ किंवा गौंद के वा चिरायते के डिकाक्सन के साथ में देना [६] साईरप फराई हपोपास्‌ चोह वाले चम्मच भर के अन्दाज़ा पीजाना चाहिये । [७] फराई अमोनियां सायट्राय इस की १-१ रत्ती की पिल्स कर दिन में ३ वक्त देना, शक्ति वर्धक व हल्का भोजन खाने को देना चाहिये ।

यूनानी इलाज—

[१] पोश्त खश खश ३० गुलबनफशा, गुलगाज़वां, गुलनीलोफर, वर्ग गाज़वां, ये सब मुनक्का दाना २० सिपिस्ता दाने ३० असले सूस मकरार २ माशे शक्कर सफेद २० माशे इन सबका शर्वत बना कर आर्क वेद मुश्क साधाइस के साथ दिन में ३—४ वार देना । (२) गुलकन्द आफतावी रोगी जितना खास के उतना खिलाना । (३) जगली जानवरों का शोरुवा और सफूफ अनुपान युक्त देना चाहिये ।

(४) दात क्षय पर—पोश्तवेख अन्जीर १ माशा, दम उल अखवेन २ माशे को हब्वाशमई ७ माशा मुरवारीद नासुफता १ माशा, सरेशमाही १ माशा ऊदसलीव ५ माशा, रुब्बेसूस २ माशा, खूनफरुमी २ माशा, सरतान सोख्ता ३ माशा, निशास्ता गन्दुम ३ मा०, समग़ अरवी ३ माशा, कतीरा ३ माशा, मग्ज़बादाम शीरीं ३ माशा, अफयून १॥ रत्ती ज़ाफरान १ माशा, काफूर २ माशा इन का चूर्ण ७ भाग कर के १ प्रातः काल बकरी के दूध के साथ व १ सायकाल में खावे । शीरखारतग या समग अरवी में देने से खिलमर्ज़ को अच्छा फायदा होते देखा गया है ।

नोट—

पाठक महोदयों से नम्र प्रार्थना है कि वो मेरे दिये हुए परम्परागत सिद्ध योगों को स्वानुभव में लावें, और गुणागुण द्वारा सूचित कर मेरे किये परिश्रम को फली बनावें ।

जनता का आरोग्य-चिन्तक—

प० हरिवल्लभ सिलाकारी चिकित्सक ।

ऐलोपैथिक संक्षिप्त रोगविनिश्चय

(लेखक—सत्येश्वरानन्द लखेड़ा आयुर्वेदविशारद)

गताङ्क से आगे

वैशेषिक वा "स्पेसिफिक" कारण—कुछ रोग पृथक२ विशेष कारण से उत्पन्न होते हैं और उन२ कारणों से एक ही रोग उत्पन्न होता है । इनको स्पेसिफिक वा वैशेषिक रोग वा कारण कहा जाता है । टाइफस वा प्रलापक सन्निपात (१४ दिन का म्यादि ज्वर) टाइफाइड फीवर वा दण्डाहस-

त्रिपात (२१ दिन का म्यादी बुखार) हाईड्रोफोबिया वा विक्षिप्त श्वान दंष्ट्र विष (पागल कुत्ते का जहर) आदि रोगों का कारण बाहर से शरीर के भीतर प्रवेश करते हैं। ये कारण बहुत जगह आनुवीक्षणिक (सूक्ष्म) जान्तव वा उद्भिज्ज पदार्थ होते हैं। इन पदार्थों के विष से रोग उत्पन्न होता है ये प्रायः ही अतिशय स्पर्शाक्रामक वा छूत से फैलने वाले (कण्टेजियस) होते हैं। अधिकांश भयानक रोग इन ही सूक्ष्म वा माइक्रोआर्गानिज़म् द्वारा उत्पन्न होते हैं।

निदान वा पेथेलोजी

रोग के कारण शरीर के भीतर जिस प्रकार से काम करते हैं और इनके प्रभाव से शरीर की क्रिया व निर्माण में जो परिवर्तन होते हैं उन सब को "पेथेलोजी" या "मर्विड्फिजियालोजी" कहा जाता है। इस प्रकार जो अस्वास्थ्य सूचक परिवर्तन होते हैं, उनको मर्विड् वा पेथोलौजिकल एनाटोमि कहकर निरूपण किया जाता है। इन क्रियाओं व परिवर्तनों को "विकृतिविज्ञान" भी कहा जा सक्ता है। क्रिया विकार व निर्माण विषयक परिवर्तन समूह रोग व्यञ्जक लक्षण आदि से प्रकाशित होते हैं परंतु मर्विड् एनाटोमि मृतदेह की परीक्षा से ही अच्छी तरह मालूमहो सक्ता है

पेथेलोजी दो भागों में विभक्त होती है, प्रथम साधारण वा जेनरल, द्वितीय विशेष या स्पेशल पेथेलोजी। जो परिवर्तन सर्वाङ्ग में होते हैं या भिन्न२ रोगों में होते हैं वे सब जेनरल पेथेलौजी में वर्णन किये जाते हैं। उदाहरण के लिये॥ कलकेरियस व फटिडिजेनाशरेन" इस स्थान पर उल्लेख किये जासक्ते हैं। साधारण"रक्ताधिक्य वा कञ्जेक्शन जो सब जगह ही होसक्ता है, वह भी इस श्रेणी के अन्तर्गत किया जाता है। प्रत्येक रोग में जो विशेष परिवर्तन होते हैं उस को विशेष वा स्पेशल पेथेलोजी"कहा जाता है। चेचक (शीतलामाता) रोगी की त्वचा में एक प्रकार का विशेष प्रदाह होकर स्फोटक (दाने) निकलतेहैं शीतला के ये स्फोटक और किसी रोग में नहीं दिखाई देते। टाइफाइड रोग में इलियस में प्रदाह व क्षत (घाव) होना एक विशेष विकृतावस्था होती है।

लक्षणतत्व वा सिम्टमोलॉजी

लक्षण:—जिससे रोग समझा जा सके, उसके ही लक्षण कहते हैं। लक्षण रोग से पृथक नहीं होता यह रोग का ही एक अंश होता है इस लिये रोग की जो अवस्था इसके व्यञ्जक रूप से कार्य करती है वह लक्षण कहकर वर्णन किया जाता है

लक्षण भी साधारणतः दो भागों में विभक्त किये जाते हैं, जैसे—आधिकरणिक वा सबजेक्टिम् व वैषयिक वा अवजेक्ठिभ् भेद से।

आधिकरणिकलक्षण:—रोग की जिन घटनाओं को रोगी के अतिरिक्त और कोई भी नहीं जान सक्ता उनको आधिकरणिक कहते हैं, जैसे—जलन वेदना आदि। बहुत जगह विशेष करके गूंगे व शिशु बालकों के रोगों में चिकित्सक इन लक्षणों को बहुत ही कम जान सक्ते हैं जो रोगी अपने ऐसे गुप्त लक्षणों को बोल कर प्रकट भी कर सक्ते हैं ऐसे वयः प्राप्त पुरुष भी समय२ पर अपनी अवस्था ठीकर नहीं वर्णन कर सक्ते, इससे यहां तक कि चिकित्सक को भी भ्रम में पड़ना पड़ता है। कोई२ अपनी प्रकृति के अनुसार बहुतसमय अपनी यथार्थ अवस्था को बहुत बढ़ाकर या गुप्तरखकर वक्रप्रकृत भाव से वर्णन करते हैं। इस से यथार्थ अवस्था समझना अति कठिन होजाता है इस-

लिये आधिकरणिक लक्षण यद्यपि बहुत समय रोग निर्णय करने में बहुत सहायता करते हैं तौ भी चिकित्सक सब जगह ही इनके ऊपर निर्भर नहीं करता।

वैशयिक लक्षणः-

जो लक्षण चिकित्सक के इन्द्रियग्राह्य हों अर्थात् चिकित्सक दर्शन व श्रवण आदि से परीक्षा कर जान सके उन सबको वैशयिक लक्षण कहा जाता है। चिकित्सक को बहुत जगह विशेष करके वैषयिक लक्षणों के ऊपर ही निर्भर करके चलना पड़ता है।

वैशेषिक वा स्पेसिफिक लक्षणः—जो लक्षण किसी विशेष रोग को निर्देशक हो, अर्थात् जो लक्षण किसी एक निर्दिष्ट रोग के अतिरिक्त और किसी रोग में न हो, उसको वैशेषिक लक्षण कहते हैं। इसको "पथग्नमनिक" लक्षण भी कहा जाता है। माता के स्फोटक और टयूवर क्लोसिस् के वेसिलास संयुक्तसफ्यूटम वा कफ देखकर रोग निर्णय करने में और कुछ सदेह नहीं रहता इसी तरह पर वैशेषिक लक्षण बहुत जगह रोगनिर्णायक वा डोयग्नष्टिक होते हैं, केवल इसके द्वारा ही रोग स्पष्ट रूप से मालूम होजाता है अथवा समकक्षीय रोगों में पार्थक्य किया जाता है।

लक्षणों की प्रकृति सम्पूर्ण रूप से समझाने के लिए जेनरल्, लोकल्, सिम्पथेटिक, प्रिमनिटरि आदि और भी कितनेक शब्द व्यवहार किये जाते हैं।

जेनरल् लक्षणः—जिस लक्षण से शरीर की सार्वाङ्गिक अवस्था सूचित होती है वह साधारण वा जेनरल लक्षण नाम से कहा जाता है जैसे ज्वर।

लोकल लक्षणः—किसी पीड़ित स्थान के अवस्था ज्ञापक लक्षण को स्थानिक लक्षण कहा जाता है। जैसे—प्रदाहित जगह पर लालिमा, वेदना व सूजन।

सिम्पेथेटिक् लक्षणः—शरीर में सब जगह ही परस्पर सहानुभूति का सम्बध रहता है। यह सम्बन्ध स्थान२ पर अधिक देखने में आता है। इस तरह सम्बन्ध रहने से शरीर में किसी एक जगह रोग होने पर उसका लक्षण सहानुभूतिक जगह पर भी प्रकट हो जाता है। रिनल् कैल्कुल से वमन, हिपजमेन्टर रोग में जधा में और यकृत (जिगर के प्रदाह में) कन्धे में दर्द होना सिम्पेथेटिक लक्षण का उदाहरण है।

प्रिमनिटरि लक्षणः—रोगके विकास होने के पहिले उसके निर्देशक लक्षण समय२ पर प्रकट होते हैं। इस प्रकार के लक्षणों को प्रिमिनिटरि वा पूर्व-निर्देशक लक्षण नाम से उल्लेख किया जाता है। जैसे—ज्वर होने के पहिले शरीरका शिथिल होना।

कुछ ऑवजेक्टिभ समटेम्स साइनस नाम से कहे जाते हैं। डायग्नष्टिक और प्थिगूनमिक लक्षण भी साधारणतः साइनस कहे जाते हैं। विशेष करके चेष्ट (छाती) अवडोमेन आदि स्थानों में फिजिकल परीक्षा से जो कुछ लक्षण मालूम किये जाते हैं वे भी साइनस नाम से वर्णन किये जाते है। जैसे—वक्षस्थल में अभिघात करने से डलनेस अथवा सुनने से फाइनक्रिपिटेसन सुनाई देता है।

रोग के लक्षणों को वर्णन करने के साथ२ उसकी आक्रमण प्रणाली, गति, स्थायित्व, आनुषङ्गिक रोग, परिणाम व फलावशेष आदि विषयों की आलोचना होती है कोई २ रोग अकस्मात आ-

क्रमण करते हैं, और कोई२ धीरे२ प्रकट होते हैं। वैशेषिक रोगों मे रोगका विष कितनेक दिन शरीर के भीतर गुप्तभाव से बढ़ता व परिस्फुरित होता है इसकेबाद रोगके बाह्यलक्षण प्रकटहाते है। रोग के इस गूढ़ विकाश काल को पीरियड् "ओफ् इनकुवेशन" कहा जाता है। इस समय रोग का पूर्वनिदर्शक कोई न कोई लक्षण अवश्य रहता है। रोग के प्रकट होने के पहले क्षुधामान्द्य शरीर का अवसाद (ढीलापड़ना) आदि लक्षण न होकर कभी२ रोग के लक्षण एक दम प्रकट हो पड़ते हैं। चेचक न पुनरावर्त्तक ज्वर में शरीर का उत्ताप थोड़ेसमय में ही ऊंची सीमा तक पहुंच जाता है। परंतु टाइफाइड् ज्वर में इस तरह नहीं होता। इस ज्वर में शरीर का ताप एक निश्चित क्रम के अनुसार तीसरे वा चौथे दिन में ऊर्द्ध सीमा तक उठता है। इसके बाद ये सब रोग एक निश्चत गति से और बहुत जगह एक निश्चित समय में समाप्त होजाते हैं। कोई २ रोग स्वभाव से ही थोड़े समय में दूर होजाता है। इस के विपरीति कुछ रोग बहुत दिन तक रहे बिना आराम नहीं होते ।

रोग को बल व स्थिति के अनुसार एकिऊट सब एकिउट या क्रानिक नाम से कहे जाते हैं। जो रोग आरम्भ से ही प्रबलता लिए प्रकट हो उस को एकिऊट वा तीव्र प्रकृति का कहा जाता है। इस से विपरीत (मृदु गति) प्रकट हो, उस को सब-एकिऊट वा अतितीव्र कहा जाता है। जो रोग बहुत दिन टिकाऊ रहे, उस को क्रानिक वा पुराना कहा जाता है। पुराने रोग प्रायः ही मृदु प्रकृति के हुआ करते हैं, परन्तु इसके बहुत दिन तक स्थाई रहने से इस का अनिष्ट कारक प्रभाव अधिक होते देखा जाता है। एकिऊट रोग को बल कम होने पर बहुत समय पर वह पुराना पड जाता है। इसी प्रकार समय २ पर बात रोगों को एकिउट, सब एकिउट व क्रानिक होते देखा जाता है।

कोई२ रोग पर्यायान्विक वा परक्सिस मेल होते है अर्थात् रोग एक बार प्रकट होकर शान्त होजाता है, फिर दूसरी बार यहां तक कि ठीक निश्चित समय पर प्रकट हो जाता है। मलेरिया-ज्वर प्रायः इसी प्रकार से पर्याय क्रम से होते हैं विराम काल यथेष्ट होने पर, रोग सविराम वा इण्टर मिटेन्ट कहा जाता है। विराम काल थोड़ाहोने पर रोगरेमटेंट वा स्वल्प विराम कहा जाता है। रोग का बल (तीव्रता) समान भावसे होने पर उस को अविराम वा कण्टिनिउड कहा जाता है।

रोग की दशा में उस रोग के ऊपर एक दूसरा रोग (उपद्रव) उपस्थित होकर शरीर की विपदावस्था को बढ़ा सकता है। इस प्रकार के अनुषङ्गिक रोग को कम्प्लिकेशन कहा जाता है। इस का नाम उपसर्ग भी दिया जा सकता है। कम्प्लिकेशन द्वैतीयक रोग के रूप में प्रगट होता है भिन्न २ रोगोंमें कम्प्लिकेशन हुआ करते हैं जैसे टायफायड ज्वर में स्थान २ पर शरीर में एवसेस और थायसिस रोग मे हिम्मपरिसिस प्रायः नहीं होते हैं।

रोग का समूल दूर करना ही इच्छित होता है परन्तु यह जगह पर ही नहीं होता, कहीं२ पर आंशिक रूप से रह जाता है। इसी तरह से बहुत से पुराने रोगों की उत्पत्ति होती है। किसी२ रोग के दूर होने के बाद भी उसके प्रकट होने के समय शरीर में जो अस्वास्थ्य सूचक परिवर्त्तन हुए थे

वे कुछ थोड़ा बहुत रह जासक्ते हैं। पूर्व रोग के फलस्वरूप इन सब अवशिष्ट लक्षणों को "सिकुइलि" कहा जाता है। नैशेषिक रोगों में इस तरह का फलावशेष वा सिकुइलि अधिक देखने में आता है रोग जब मृत्यु में समाप्त होता है उस समय शरीर की क्रियायें एकाएक बन्द न होकर धीरे२ बन्द होती हैं।

मृत्यु:—साधारणतः तीन प्रकार से मृत्यु होती है हृत्पिण्ड (दिल) फुस्फुस (फेफड़े) व मस्तिष्कि (भेजा) इनमें से किसी एक अंग के निष्क्रिय होने पर शारीरिक क्रियायें बहुत शीघ्र बन्द हो जातीहैं यह मृत्यु सूचक निष्क्रिष्टि भाव हृत्पिण्ड से आरम्भ होनेपर सिनकोप, फुस्फुस से होने पर "यूश फिकसिया" और मस्तिष्क से आरम्भ होनेपर "कोमा" से मृत्यु कही जाती है। इन सब यत्रों में सहानुभूतिक सम्बन्ध अधिक होता है, इसी लिये एक के विकृत होने पर और दूसरे भी विकृत हो जाते हैं बहुत बड़ी भारी चोट के लगने से अकस्मात मृत्यु होने पर स्यानुमन्डली के साथ शरीर के और२ अंश भी एकदम निष्क्रिय होजातेहैं परन्तु किसी और सामान्य कारण से क्रमर से मृत्यु होनेपर ऊपर लिखित तीनों यत्रों में से किसी एक के विकृत होने पर अन्य दो यत्रों में भी न्यूना धिक विकृति स्पष्ट प्रतीत होती है ऐकसइचन में इसी प्रकार मृत्यु होती है।

सिनकोप:—हृत्पिन्ड के निष्क्रिय होने से दो तरह में मृत्यु होती है रक्तशून्यता वा एनिमिया और दौर्बल्य वा एसथिनिया। रक्तस्राव होने पर एनिमिया से मृत्यु होती है एसथिनिया में हृत्पिड की दुर्वलता के साथ शरीर में साधारण दुर्वलता दिखाई देती है, + पुराने रोगोंमें प्रायःऐसाहोता है

यूश फिकासिया वा एपूनिया:—वायू का अभाव दूषित वायू से इस प्रकार की मृत्यु होती है। किसी कारण फुस्फुसों में रक्तसञ्चालनका अभाव होने से, वायू के नियमित रूपसे प्रविष्ट होते रहने परभीउससे शारीरिकरक्तशोधन काकाम नहींहोने पाता, ऐसे मौके पर एपूनिया सेमृत्यु हुईसमझना चाहिये। फुस्फुसीय धमनी (पलमनरि आर्टरी) में खून का छिछड़ा जमजाने से भी इस प्रकार जीवन शेष कर सक्ता है।

कोमा—इसमें रोगी का मस्तिष्क निष्क्रिय होता है और सज्ञाशून्य (बेहोश) होकर मौत के घाट उतर जाता है।

रोग निर्णय वा डायगनेसिस्

साधारणतःरोग के लक्षणोंको संग्रह, श्रेणिबद्ध व उन सबके कारणों काअनुसरण कर रोगका निश्चयकिया जाताहै कोई नैशेषिक वा पेथाग नामक लक्षण होने पर रोग निर्णय करना सहज होजाता है। इसके साथ रोग प्रकाशक और२ सहायक अवस्था रहने पर रोग निश्चय करने में फिर कोई सन्देह नहीं रहने पाता। समान प्रकृति के रोगों के लक्षणों का पार्थक्य परिज्ञान(आपस में फरक) करना विशेष आवश्यकीय होताहै, परन्तु ऐसे लक्षणों का पृथकीकरण वा डिफारेनशल डायग्नेसिस एक तरह से मुश्किल ही होता है।

रोग के लक्षण आदि को नियम पूर्वक परीक्षा करने पर भी बहुत समय रोग की प्रकृति समझ में नहीं आती। ऐसे अवसर पर किसी ऐक अनुमेय कारण को लक्ष्य कर चिकित्सा प्रणाली अवलम्बन की जाती है। तदनन्तर चिकित्सा का फल या रोग की स्थिति को देख कर रोग का स्वभाव प्रतीत होजाता है। इस तरह से कभीर रोग आरम्भ में बिलकुल ही समझ में नहीं आता अथवा पहिले कुछ थोड़ा बहुत जान लेने के बाद क्रमशः वह सबका सब यथावत् समझ में आजाता है।



आयुर्वेदोक्त औषधि क्रिया।

लेखक—श्रीमान् वैद्यराज कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी बी० ए० आयुर्वेदाचार्य।

रस वैद्यक, मृतिका वैद्यक, शस्त्र वैद्यक और सिद्ध वैद्यक ऐसे चार भेद, आयुर्वेदोक्त औषधि क्रिया संबन्ध में, आयुर्वेद के किये जाते हैं। ये भेद वास्तविक में कालानुक्रम से उत्पन्न हुये भिन्न २ परम्परा एवं परिस्थिति में इन भेदों के उत्पन्न होने से, आयुर्वेद के आदि ग्रन्थों में (चरकादि में) ये सब नहीं पाये जाते। वाग्भटादि अर्वाचीन ग्रन्थों में ये सब भेद पाये जाते हैं।

आज हमारे दुर्दैव से अन्त के दो भेद (शस्त्र वैद्यक और सिद्ध वैद्यक) आयुर्वेद संसार में लुप्त प्राय होगये है। जो दो भेद (मृतिका और रस वैद्यक) आज प्रचलित हैं उनकी भी स्थिति शोचनीय है। रस वैद्यक की ओर, व्यय बाहुल्यता तथा समय बाहुल्यता के कारण जैसा चाहिये तैसा ध्यान नहीं दिया जाता है।

चिकित्सा संसार में रस वैद्यक का सर्व प्रथम प्रचार करने वाले हमारे महापना आयुर्वेद हितैषी सिद्धना गुर्जुनादि महापुरुष थे। आज एलोपेथी आदि भिन्न२ चिकित्सा पद्धतियो में जिन २ खनिज द्रव्यों का उपयोग किया जाता है उन का सर्व प्रथम उपयोग हमारे यहां के सिद्ध पुरुषो ने ही किया था। हाय! आज हमें धिक्कार है कि हमने जिस प्रकार से अपनी शस्त्र वैद्यक को खो दिया सिद्ध वैद्यक से हाथ धो बैठे उसी प्रकार

से धीरे२ रस वैद्यक की क्रिया भी हमारे हाथ से जारही है। जनता किसी वैद्य के द्वारा बनाई हुई 'रसायन, से घबड़ाती है। यह हमारा ही दोष है। हमारे यहां के ऊंट वैद्यों ने न मालूम कितनों की जानें अपनी अशुद्ध 'रसायनों" से लेली है। अस्तु अब भी समय है हम चेतें और अपने रस वैद्यक का सुधार करें।

ध्यान रहे रस वैद्यक की चिकित्सा अत्युत्तम-विपरीतार्थकारी चिकित्सा है। रोग निदान के समान धर्म वाली होने पर भी जो चिकित्सा अपने प्रभाव से रोगको शांत करदेती है उसे विपरीतार्थकारी चिकित्सा कहते हैं। रस चिकित्सा में रस अर्थात् पारद अथवा धातु उपधातुओं की विशेषता होती है ये सब अपनी स्वाभाविक अवस्था में रोग को भड़काने वाले तीव्र विष का कार्य करते हैं, किन्तु जब इन पर कई संस्कार किये जाते हैं त. व ये स्व प्रभाव से अन्त में रोग को शीघ्रही हटाने में समर्थ होते हैं।

किसी भी द्रव्य में दो क्रिया या शक्ति प्रायः स्वाभाविक तौर पर रहती है। द्रव्य की प्रथम क्रियाशक्ति रोग को बढ़ाने वाली या उत्तेजित करने वाली और द्वितीय क्रियाशक्ति रोग को शमन करने वाली होती है। किन्तु यह कोई सर्वमान्य सिद्धान्त नहीं है। हम सस्कार द्वारा द्रव्य की इन विपरीत क्रिया शक्तियों को अपने अनुकूल कर सकते हैं। यदि योग्य सस्कार उन पर न किया जाय तो वे अपनी प्रथम क्रिया शक्तिद्वारा ही रोगी का अन्त कर देती हैं। उदहारणार्थ उचित संस्कार न किया हुआ पारद का सेवन मारक ही होता है। उचित सस्कार न किया हुआ हरड़ा का सेवन प्रथम रेचन करेगा, अन्त में अन्तडियां निर्बल होजावेंगी और दस्त रुक जावेगा। यदि हरड़ों को घृत में अच्छी तरह पका लिया जाय तो उन का धर्म बदल जाता है वे पौष्टिक गुण युक्त होजाते हैं (देखो वाग्भट उत्तर स्थान अ ३६ श्लोक १४७) इसी प्रकार पारद या धातु उपधातुओं पर यथोचित संस्कार करने पर वे अमृत तुल्य हो जाते हैं।

कोई२ महाशय सिद्धान्त स्वरूप में प्रति पादन करने की चेष्टा करते हैं कि प्रत्येक द्रव्य में ही नहीं प्रत्युत प्रत्येक आयुर्वेदोक्त चिकित्सा में भी उक्त प्रकार की दो विपरीत धर्म वाली क्रिया शक्ति होती है। द्रव्य के विषय में हरीतकी का उदहारण (जो कि ऊपर हम दर्शा चुके हैं) वे देते हैं। हम कहते हैं यह आप का सिद्धान्त गोखरू में लगा कर देखिये। गोखरु मूत्रल है आप के सिद्धांतानुसार जिस प्रकार हरड़ के अत्यन्त सेवन से प्रथम खूब दस्त होकर पश्चात् दस्त रुक जाते हैं उसी प्रकार गोखरु के अत्यन्त सेवन से प्रथम खूब मूत्र होकर पश्चात् मूत्र होना रुक जाना चाहिये! कहिये पाठक गण! क्या

---

* हरीतकी सर्पिषि संप्रनाप्य सभी नतस्ततिय वतो वृंतच।

भवेच्चिरस्थायि वलं शरीरे सन्ह त्कृतं साधुयथो कुनत्ते॥

आप को कभी ऐसा अनुभव हुआ है ? हमें तो यह सिद्धान्त निराधार मालूम देता है। चिकित्सा के विषय में जलोदरकी शस्त्रचिकित्सा का उदहारण दिया जाता है। कहा जाता है कि शस्त्र क्रिया द्वारा शरीरांतर्गत जल को बाहर निकाल डालने पर भी पुनः पूर्व की अपेक्षा अधिक वेग से जल उस स्थान में भर जाता है। अब जरा सूक्ष्मता से इस कथन की जांच करने से विदित हो जावेगा कि जलोदर की आधुनिक शस्त्र चिकित्सा तथा आयुर्वेद का प्राचीन शस्त्र चिकित्सा में महान्तर हैं। जलोदर की आधुनिक शस्त्र चिकित्सा में एक दमसे एकबारगीसनावद्द सबजल निकालिया जाता है, किन्तु आयुर्वेदोक्त शस्त्र चिकित्सक एक बारगी ही सब जल निकाल डालना अपाय-कारक मानते थे। अतएव वे प्रथम रोगी के पेट को वात नाशक तैल से अभ्यक्त कर गर्म जल से स्वेदादि कर कुक्षी तक पेट को मजबूती से वेष्टित कर नाभी के नीचे चार अंगुल पर रोमावली छोड़ कर बायीं ओर व्रीहि मुख शस्त्र से अंगुठे की सुवाई की समान गहरा वेध करते थे और उस छिद्र में दोनों ओर से खुली ऐसी परवने की या रांगा आदि की नली लगा कर दूषित जल के केवल अर्धभाग को पेट से निकालते थे। फिर नली निकाल कर छिद्र के मुख पर तैल और सेंधा नमक मल कर बांध देते थे। एक ही दिन में सब दूषित जल नहीं निकालते थे क्यों कि ऐसा करने से तृषा ज्वर, अतिसार आदि रोग पैदा हो जाते हैं और रोगी का पेट फिर से दूषित जल से फूल जाता है ऐसा उन्हें अनुभव था— सुश्रुत जी ने कहा है:—नचैकस्मिन्नेवदिवसे सर्वं दोषोदकमपहरेत्। सहसाह्यपहृते तृष्णा ज्वरांगमर्दातीसारश्वास पाददाहा उत्पद्यन्ते ऽऽपूर्यते वा भूयतरमुदरमसजात प्राणस्य तस्मात् तृतीय चतुर्थ पचम षष्ठाष्ठमदशम द्वादश षोडश रात्राणान्मयतरमतरी कृत्य दोषोदकमल्पाल्प भव सिंचेत्॥"

अतएव तीसरे, चौथे, पांचवे, छटे, आठवें, दशवें, बारहवे, तथा सोलहवे, दिन अन्तर देकर, रोगी को विश्राम देते हुये दूषित जल थोड़ा २ निकालते थे। (देखो सुश्रुत चि० स्था० अ० १४ तथा वाग्भट चि० स्था० अ० १५ श्लोक ११३ से ११७ तक)

उक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट है कि प्रत्येक द्रव्य या चिकित्साविधिमें दोषविपरीत क्रिया शक्ति का होना नहीं पाया जाता। "रोगस्तु दोष वैषम्यं दोष साम्यंस रोगता" दोषों की विषमता ही रोग है तथा उनकी समानता निरोगी अवस्था है प्रत्येक शरीर की उत्पत्तिके समय निरोगीअवस्था में दोषों का जो प्रमाण रहता है वही उस शरीर की दोष समानता है। इसी समानता में जब न्यूनाधिक भाव आजाता है तब उस अवस्था को रोग कहते हैं आयुर्वेद में भिन्न२ कारणों से दूषित हुये वात, पित्त, कफ से अलग २ या मिश्रित द्वि दोषज, त्रिदोषक रोगों की उत्पत्ति बतलाई हुई है। वात, पित्त तथा कफके कर्म और उनकी क्षय वृद्धि के लक्षणो को निश्चित कर, उन लक्षणो का प्रमाण, भिन्न२ रोगों में जैसा दर्शित हुआ उसी के हिसाब से उन रोगों कोकफात्मक, वातात्मक, पित्तात्मक, कफ पित्तात्मक इत्यादि कहा गया है रोगोत्पत्तिकी जो कल्पना निश्चित् की गई है तद-

नुसार ही उनके औषधों के गुणधर्म भी शास्त्रकारो ने निश्चित कर रक्खे हैं। किन्तु केवल व्याधि विपरीत औषधि से हो सब रोग दूर नहीं होसकते, क्यों कि दूषित हुये दोषों से और भी अन्य रोगो की उत्पत्ति होजाती है, इस बात का अनुभव कर, उन्होंने हेतु व्याधि विपरीत(Conttraria Contrarus Curantur)चिकित्साकार्यो- जनाकी आगे विज्ञानयुक्त औषधिप्रयोग करतेरयह पता लगा कि कई द्रव्य निदान और रोग के विपरीत न होते हुये प्रत्युत् उन के समान धर्मों होते हुए भी अन्त में वे रोग नाश करने में समर्थ होते हैं, अतएव आर्य वैद्यक में हेतु व्याधि विपरीत औषधि,क्रिया के समान ही हेतुव्याधि विपर्यस्तार्थकारी चिकित्सा का विधान किया गया। आधुनिक होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति इसी Simili Similibus Curantur (हेतु व्याधि-विपर्यस्तार्थकारी) एक क्रिया पर अवलम्बित है।

अस्तु अब हम यहां औषधियों के गुण धर्म का कुछ विवेचन करेंगे। आयुर्वेद या वैद्यक शास्त्र के मुख्य तीन अङ्ग हैं। ( )हेतु अर्थात् निदान रोगोत्पत्ति कारण (२) लिङ्ग अर्थात् लक्षण, रोग के लक्षण (३) औषधि ज्ञान अर्थात् रोगों की औषधि क्रिया का ज्ञान। ये तीनों अङ्ग महत्व के हैं किन्तु तीसरा अङ्ग विशेष महत्व का है। रोग निवृत्ति इसी अङ्क पर अवलम्बित है। क्रमशः

वन धनियां

(जल धनियां)

यह वनेली राज्य में अधिकतरमिलता है इस को वहां के निवासी वन धनियां और कोई२ जल धनियां कहते हैं। इस के फल पान के बीडा में खाने से शुक्रमेह नाश होता है। जड़ को काली मिर्च के साथ पानी में पीस छान कर पीने से अर्श को लाभ होता है ; पत्ते चबाने से प्यास बन्द होती है एक पाव सवापाव पचांग सिलपर पीसकर खाने से भूक ३ दिन तक नहीं लगती है। इसका आयुर्वेद शास्त्र में कौनसा नाम है तथा डाक्टरी में यह काम आती है या नहीं यदि कोई वैद्य महानुभाव इससे परिचित हों तब लिखने कीकृपाकरें

—एक ग्राहक

जल धनियां



भारत भैषज्यरत्नाकर—द्वितीय भाग। लेखक—श्रीमान् रसवैद्य नगीनदास छगनलाल जी शाह। टीकाकार—श्रीमान् वैद्य गोपीनाथ जी भिष० ग्रत्न, सम्पादक आरोग्यदर्पण। प्रकाशक—ऊंझा आयुर्वेदिक फार्मेसी रीचीरोड अहमदाबाद। २०।३० आठ पेजी साईज के ५७८ पृष्ठ मूल्य ६॥) हाल में ५) भाषा टीका युक्त।

भारत भैषज्यरत्नाकर के प्रथम भाग की समालोचना हम धन्वन्तरि में प्रकाशित कर चुके हैं यह उसका दूसरा भाग है इसमें गकार से लेकर तकार तक के आयुर्वेदीय पुस्तकों के सब प्रयोगों का संग्रह बड़ी उत्तमता के साथ किया गया है साथ ही हिंदी टीका भी बड़ी सरल भाषामें शुद्धता पूर्वक किया गया है। इस एक ही पुस्तक के पास रहने से अनेक पुस्तकों का संग्रह अपने पास रहेगा किसी भी ग्रंथ का प्रयोग इस पुस्तक में बड़ी आसानी से देख सकेंगे साथ ही वह प्रयोग किन२ ग्रंथों में है और उनमें पाठा फेर है या पृथक२ प्रयोग और कौनसा उत्तमप्रयोग रहेगा। किसे व्यवहार करना चाहिये आदि सब इस पुस्तक के द्वारा ही मालूम हो जायगा लेखक प्रकाशक ने इस पुस्तक को वैद्य समाज के सन्मुख रख धन्यवाद के योग्य कार्य्य किया है। छपाई सफाई कागज, बायडिंग उत्तम,

सूर्य्य किरण चिकित्सा—लेखक प्रकाशक—श्री० गोविन्द बापूजी टोंगो। साईज २०।३० सोलह पेजी पृष्ठ संख्या २०१ मूल्य १॥)

इस पुस्तक में सूर्य्य की किरण से चिकित्सा करने की विधि विस्तार से और सरल भाषा में लिखी गई है। पुस्तक सूर्यरश्मि चिकित्सकों को अवश्य देखनी चाहिये।

कल्पवृक्ष—मासिकपत्र । सम्पादक-श्रीमान् पं० दुर्गाशंकर जी नागर । सहकारी सम्पादक—बाबू पन्नालाल जी वर्मा । कल्पवृक्ष कार्यालय उज्जैन (मालवा) वार्षिक मूल्य ३॥) साइज आयुर्वेद समाचार का ।

यह अध्यात्म विद्या का मासिक पत्र है ६ वर्ष से निरन्तर प्रकाशित होरहा है सातवे वर्ष में चल रहा है पर अभीतक इसके यथेष्ट ग्राहक न होने से संचालक बराबर हानि सहन कर रहे हैं हांला कि पत्र बड़ी योग्यता से सम्पादन होरहा है तथा यह अध्यात्म विद्या का हिंदी भाषा में इकला ही पत्र है इसमें अनेक यौगिक क्रिया और आरोग्यभिलाषीयों के लिये अनेक यौगिक साधन प्रकाशित होते रहते हैं पत्र अपने ढंग का एक ही पत्र है । हम धन्वन्तरि के ग्राहकों से एक वार देखने का अनुरोध करते है ।

सुधानिधि—मासिकपत्र । सम्पादक श्रीमान्—आयुर्वेद पंचानन पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल भिषग्मणि । प्रकाशक-पं० शिवनाथ जी दीक्षित दारागंज प्रयाग । वार्षिक मूल्य ३।) ।

यह मासिक पत्र २० वर्ष से प्रकाशित हो रहा है । इसने वैद्य समाज में जो जाग्रति पैदा की है वह सराहनीय है । सम्पादक—महोदय ने जो निस्वार्थ आयुर्वेद की सेवा की है वह भी वैद्य समुदाय जानता है फिर भी इसे ग्राहकों का अभाव ही रहता है यह वैद्य समाज के लिये लज्जा की बात है । इसमें वैद्यक सम्बन्धी अनेक महत्व पूर्ण लेख रहते हैं ।



क्लीव हरितिला—

सिंह की चरबी, मालकांगुनी, अकरकरा, सोंठ, जावित्री, कुचला, दालचीनी, लोहवान, कोड़िया, हरितालतबकी, जमालगोटा, पारदशुद्ध हाथी दांत का चूरा, गन्धक आमला सार कटेरी के फल, सफेद चौंटनी, केसुआ, जायफल, सफेद कन्नेर की जड़, अजमायनखुरासानी, प्याज के बीज, असगन्ध, सफेद सूलिया अंडी की मींग कालीजीरी, कालाअगर, यह एक२ तोला और मुर्गी के अन्डा नग ५ की अरदी। विधि—सब को बारीक दरदरी कूट कर उसमें अन्डे कीजरदी की भावना लगा कर पाताल यन्त्र से तेल निकाल लेना चाहिये। इस को इन्द्री का अग्र भाग और सीवन छोड़ शेष स्थान पर उंगली से धीरे२ मलना चाहिये और ऊपर से पान को अग्नि पर सेक कर चमेली का तेल चुपड़ कर बांधना चाहिये। इन्द्री पर पानी न पड़ने पावे यह ध्यान रहे। उंगली जिस से तिला लगाया हो उसे साबुन या गोवर से मल कर धोडाले और तेल चुपड़ ले। इस के १ महीने के प्रयोग से नपुंसकता चाहे वह हस्त मैथुन गुदामैथुन आदि से ही क्यों न उत्पन्न हुई हो अवश्य जाती रहती है।

गोभिल—

कामोत्पादक बटी—

आयफल, अक़रकरा, सफेद चन्दन, कवोल मिर्च, छोटी इलायची, जावित्री, अफीम शुद्ध, यह सब एक२ तोला सौंठ मा० ६, तज मा० ६, भांग

घुली ३मा० अभ्रक सहस्र पुटी ४मा०, रससिंदूर २मा०, कपूर ३मा०, धतूरे के बीज३मा०, कस्तूरी २मा०, कुचला का सत्व २रत्ती विधि—अफीम केशर, रस सिंदूर, अभ्रक,कपूर, कस्तूरी को छोड़ शेष सब को कूट कर कपड़ छन कर ले फिर १ खरल में शेष बची औषधियों को अफीम छोड़ कर डाल बकरी के दूध में घोटे अच्छी प्रकार घु ट जाय तब वह कपड़ छन चूर्ण भी डाल दे और पुनःघोट कर अलग रखले उसके बाद ६ छु हारे ले उन की गुठली निकाल उस में अफीम भरदें और डोरा (सूत) से वह छुहारे लपेट बकरी के दूध में औटावे जब छुहारे नरम होजाय तब छुहारे निकाल कर सुखाले और पहली घुटी भई दवा में यह भी कूट कर मिलादे। उस के बाद बकरी के दूध की भावना लगा और घोट कर उरद बराबर गोली बनालें इन गोलियों को दूध के साथ सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह नाश हो बल वीर्यकी वृद्धिहो शरीर कान्त मान हो कमोत्तेजहो।

—गौमिल

पाक—

यह पाक बड़ा स्वादिष्टऔर बलवीर्य्य को बढ़ाने वाला, स्तम्भन कर्त्ता, तथा प्रमेह आदि वीर्य विकार को दूर करने वाला है।

प्रथम ५तोला भांग को लेकर पानी में ३ घंटे भिगोदे उस के बाद मलकर पानी से धोडाले उस के बाद पाव भर गौ के घी में पूड़ी की तरह अग्नि पर सेक ले (तल ले) उस घी को कपड़ा में छान अलग रक्खें भांग को फैंकदें या दूसरे किसी काम में ले आवें।

उस भांग के घी में १ सेर खोवा को भून कर कुन्दी करले और१।।। सेर मिश्री की चासनी करें चासनी के समय १तोला उत्तम केशर गुलाबजल में घोट कर डाल दे जब चासनी होजाय तब उतार उस घी में भुने खोवा को डाले तथा नीचे लिखी मेवा और दवा डाल कर पाक बनालें मेवा-बादाम की मींग ५तोला, पिस्ता ५तोला, किसमिश ५तोला, गोला ५तोला, चिलगोजा ५तोला। दवा—जायफल, जावित्री, उटंगन के चिरवा, गोखरु, कौंच के बीज, मूसली सफेद इलायचीछोटी यह सब एक एक तोला। बंग भस्म मासे १, चांदी भस्म मासे १। खुराक २।। तोला। दूध के साथ।

—गोमिल

नेत्र रोग हारि—

फिटकिरी, अफीम, शुद्ध रसोतलोध, हरड़ छोटी, जीरा सफेद, समान भाग ले अच्छी तरह कूट कर अष्टगुण गुलाबजल में २दिन भिगो कर कपड़ा में छानले फिर उसे खोलता में छान कर शीशी में भर कर रखलें। इस की २—३ बूंद नेत्रमें डालने से नेत्र की लाली ,पानी का गिरना, आंख में दर्द होना, आंख का सूजना आदि शिकायतें दूर होती हैं। दूखती आंखें २—३ दिनमें ही ठीक हो जाती हैं।

—गौमिल

सूचना—इस अङ्क की विषय सूची टायटिल के २रे पेज पर है। विज्ञापनों के पेज में विषय सूची गत अगस्त दिसम्बर के अङ्क की भूल से छपगई है। पाठक उसे रद्दी समझें। —व्यवस्थापक



संख्या ६०

योग रत्नाकर पृष्ठ संख्या २२८ पर कटि शूले दशमूलादि में हल्लावादि गुटिका है उस का पाठ निम्न लिखित है। वैद्य महानु भाव कृपा कर इस की हिंदी टीका कर धन्वन्तरि में छपा कृतार्थ करें

हल्लाव खासमं खाद्यं, खजूरं मेथिका तिला:।
मिशि द्वयंच भल्लास्थि, वातामं बब्बुलं तथा॥
सारं चैव पल ग्राह्य, गुडो ऽधिक कुडवस्तथा।
घृतं द्विकुडवं चैव, लड्डुकान्कारयेद्भिषक्॥
द्वि कर्षं भक्षयेत् प्रातः, कटि शूल विनाशनः।

विनीत— रामेश्वर शर्मा
नरेना

संख्या ६१

किसी वैद्य महानुभाव को कोई ऐसा प्रयोग जो कोकीन के समान, प्रभाव करे और मादक द्रव्य भी न हो. यदि हो तब अति न्यून। मालूम हो तब प्रकाशित कर अनुग्रीहत करें

जी॰ एस॰ शर्म्मा

संख्या ६२

एक मनुष्य जिसकी उम्र २५ साल प्रकृति पित्त कफ निम्न रोग से पीडित है कृपया वैद्य गण इस रोग का निदान तथा अनुभूत चिकित्सा प्रकाशित करने का कष्ट उठावें॰

अर्सा ५—६ वर्ष का हुआ तब से प्यास का ज़ोर है यानी रात्रि दिवस में प्रमाण से ज्यादे पानी पीता है प्रातः काल से ९वजे तक हृदय में कुछ मीठा मीठा ऐंठता हुआ सा दर्द हुआ करता है हल्लास भी होता है अगर ९ बजे के पूर्व ६—७बजे कुछ भक्षण कर लीया जावे तो दर्द बन्द होजाता है यह अवस्था ३—४ वर्ष से है मूत्र शुक्ल वर्ण का किसीर समय रक्त पीताभ॰ विशेष प्रमाण में होता है यानी जितना पानी पीया जाता है उतना ही प्रमाण में मूत्रोत्सर्ग अधिक होता है वीर्य द्रवता —प्रधान है प्रगाढ़ता तथा सान्द्रता नहीं है शरीर प्रत्यक्ष में हृष्ट पुष्ट है किसी प्रकार की कुव्वत

(ताकत जिस्मानी यानफ्सानी) में कमी नहीं है।

रोगके पैदा होनेके पूर्व भांग, गांजाका सेवन किया है परन्तु बाद में नहीं।

कृपया वैद्यगण रोग का नाम और अनुभूत चिकित्सा लिखने की कृपा करें—

वैद्य भगवत प्रसाद मिश्र

संख्या ६३

(१) मेरे मेदे में कमजोरी है खाना कम हज़म होता है जिस की वजह से दस्त साफ नहीं होता सुबह को दो मरतवा जाना पड़ता है।

(२) वादी चीज़ें मसलन दाल उर्द की, अरबी बुय्यां कम हजम होती हैं पेशाव में धातु भीजाती है कभी आगे पेशावके और इन्ही वजूहात से स्वप्न दोष हो—कमजोरी है वदन पर रौनक़ नहीं—विषय करने पर वीर्य्य पात बहुत जल्दी होजाता है। अर्सा १४ वर्ष का होचुका इस वक्तमेरी उम्र ३४ साल के करीव है मैं मुलाज़िम पटवारी हूं मेरी प्रार्थना है कि सहल नुसखा जो मैं कर सकूं और आप साहवानकापरीक्षित प्रयोग हो तहरीरकीजिये मैं आपका हमेशा दुआगो रहूंगा।

द्वारिका प्रसाद पटवारी



सम्मति नं० ३७

लड़के को प्रातः सायं उत्तम शिलाजीत सेवन करावें और बटलोई में दाल डालते समय जो दाल चुल्हे पर गिर पड़ती है उसके ७सात दाने रोज़ उठा कर और यह ध्यान करते हुये खा लिया करे कि हे धन्वन्तरि भगवान मुझे इसरोगसे शीघ्रमुक्त कीजिये। यह मेरा अनुभूत है,

अथवा—सोते समय अपना नाम लेकर यह कहें कि पेशाव लगे तव जगा देना। ऐसा कह कर सोने से पेशाव लगते ही आंख खुलजाती है और उठ कर पेशाव कर सकता है।

वैद्यभूषण बी. पी० सकसेना

सम्मति नं० ४१

आप स्त्री को प्रातः सायं सुदर्शन चूर्ण गरम जल से सेवन करावें और रात्रि को सोते समय रूमी मस्तगी, दालचीनी, बराबर ले चूर्ण कर ४रत्ती गरम दूध के साथ सेवन करावें मोर के चदोवों को जलाकर रखदें उसे दिन में २०।२५ वार थोड़ा२ चटावें अवश्य रोग दूर होगा।

वैद्यभूषण वी०पी० सकसेना

सम्मति नं० ४७

प्रातःकाल—जाती फलादिचूर्ण माशे १,वसंत-कुसुमाकर रत्ती १, शहत माशे ६ में मिलाकर चटाना। सायंकाल ४ वजे—विषमज्वरान्तक लोह पुटपक रत्ती २ शहत माशे ६में चटा ऊपर से अमृतारिष्ट तोले १ पानी तोले१ में मिलाकर चाटना रात्रि को सोते समय—जातीफलादि चूर्ण माशे१ वसंतकुसुमाकर रत्ती १ शहत माशे ६ में मिलाकर चटाना ऊपर से बकरी के दूध का क्षीरपाक बना कर पिलाना। इन औषधियों के प्रयोग भैषज्यरत्नावली में देखिये। —गोसिल

सम्मति नं० ४८

आप अपने रोगी को प्रथम ५-७ दिन स्वेदन करावे और उसके बाद उन की गरदन तथा गरदन के आस पास की जगह मोम के तैल की मालिश करावें और गुनगुने पानी से धार डाल कर सेकें तथा दूसरा आदमी उस जगह को मलताजाय तथा खाने को प्रातःसिद्ध मकरध्वज१ रत्ती कुचला शुद्ध १रत्ती जायफल पिसा हुआ ४ रत्ती,

मिला कर दूध के साथ ले इसी प्रकार रात्रि को सोते समय भी सेवन करावें ४१ दिन के प्रयोग से यथेष्ट लाभ होगा १०० दिन के प्रयोग से आराम हो जायगा। हमारा परीक्षित है।

वैद्यशास्त्री देवीशरण गर्ग

सम्मति नं० ४९

स्त्री रोगिणी को—अशोकारिष्ट दो दो तोला प्रातः और साय थोड़ा पानी पिलाकर पिलावै रात्रि को सोते समय मालतीवसंत रत्ती आधी मुलेहठी का चूर्ण माशे १ शहत माशे ६ में मिलाकर चटावें ऊपर से बकरी के दूध का क्षीर पाक कर पिलावें। भोजन के बाद-लवणभास्कर माशे दो दो जल के साथ दें। एक महीने सेवन करा रोगी का हाल पुनः धन्वन्तरि में छपावें।

—गोभिल

सम्मति नं० ५१

इसे कष्टार्तव कहते हैं। इसके लिये प्रातःऔर साय कुमारी आसव दो दो तोला पीना चाहिये। भोजन के बाद एक एक गोली संखवटी सेवन करावें। रात्रि को सोते समय अशोकघृत २तोला दूध में डाल कर पिलावें १-१॥ महीने के सेवन कराने से ही रोगिणी अच्छी हो जायगी।

वैद्यशास्त्री देवीशरण गर्ग

सम्मति नं० ५३

वात व्याधि-प्रातःऔर सायंकाल—मल्लसिंदूर रत्ती एक एक दूध की मलाई के साथ सेवन करावें। रात्रि को सोते समय एरंड पाक २॥तोला खिलावें ऊपर से दूध पिलावें। मोम के तैल की मालिश करावें। भोजन में सिर्फ दूध तथा मेवा-बादाम, पिस्ता गोला, चिलगोजा, यह दें। अब और जलनदें तब ४१ दिन के प्रयोग से ही आराम हो जायगा तथा पैर पर गरम पानीभी डालाकरें।

सम्पादक—

सम्मति नं० ५५

आप बालक को प्रातः और सायं काल दोदो रत्ती महागंधक भैषज्य रत्नावली के पाठानुसार बना कर सेवन करावें।

—गोभिल

सम्मति नं० ५६

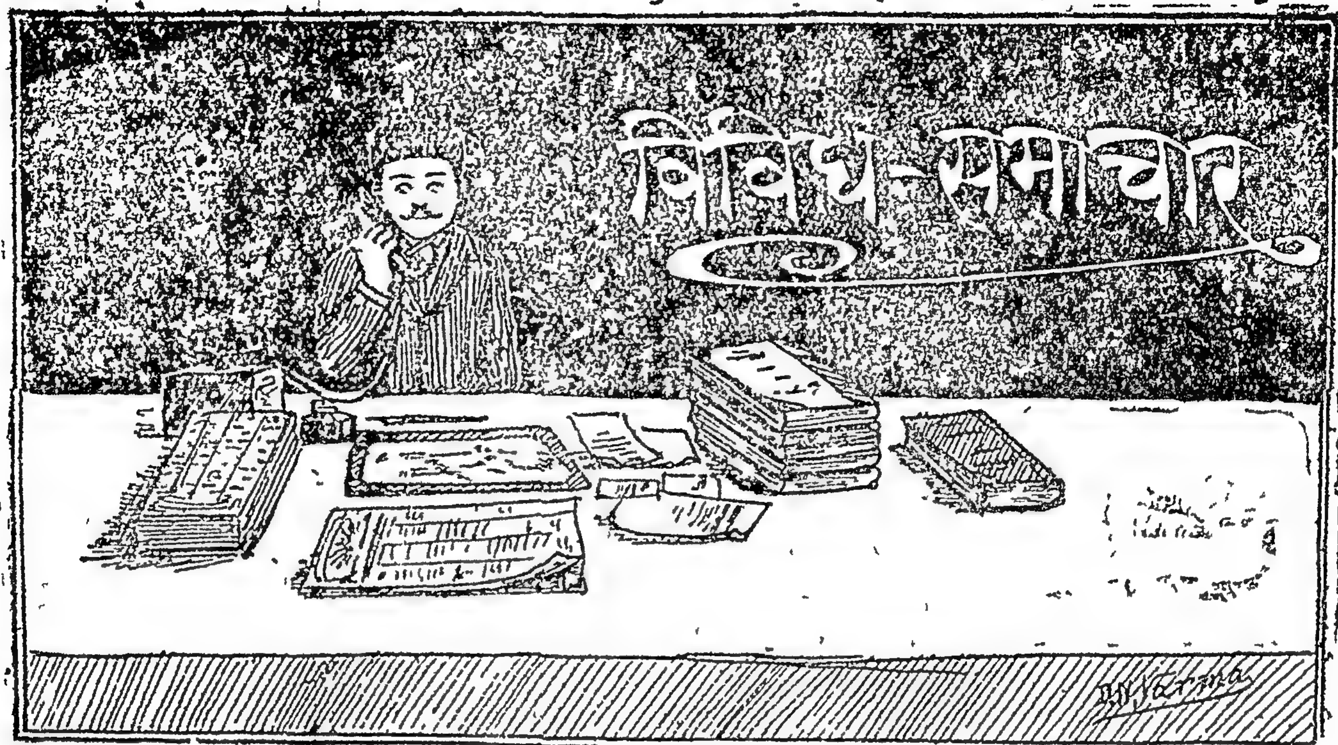
प्रातःकाल शौच जानेके बाद पावभर गुनगुने पानी में थोड़ा निमक डालकर पीना चाहिये उनके बाद ऊंगली से या नीम की सीक वा कमल की डंडी से वमन करलें उस के बाद कुल्ला बगेरह कर तालकेश्वर रस रत्ती १ शहत माशे ६ गौ का घी माशे ३ में मिलाकर चाटें ऊपर से खदरारिष्ट तोले २ पानी मिलाकर पीलें उस के बाद १ पान खालें। शाम को—कुशावलेह २तोला, स्वर्णबंग रत्ती १ मिलाकर चाटें रात्रि को सोते समय स्वर्ण भस्म आधी रत्ती जायफल १ रत्तीमिलाकर शहत में चाटें। इस प्रयोग के बराबर २—३ मास के सेवन से लाभ होगा। १५-२० दिन औषधि सेवन करो पुनः धन्वन्तरि में हाल छपावें।

—गोभिल

सम्मति नं० ५७

प्रातः काल पुनर्नवादि क्वाथ पुनर्नवाद मांडूर गोली २ खा ऊपर से पीना। सायंकाल-किशोरगूगल गोली १ ऊपर से मजिष्ठादि क्वाथ पाना इस तरह ४१ दिन सेवन करावें पैरों की सूजन फील पावको लाभ होगा।

—गोभिल



पंजाब प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन—का आगामी वार्षिकोत्सव रावल पिंडी में ता० २६, ३०, ३१ मार्च सन् १९२९ को होगा।

देहली—के वैद्यक एंड यूनानी तिब्बी कालिज में बड़ी गड़ बड़ी चल रही है, हिन्दू विद्यार्थियों के साथ पक्षपात होता है। आयुर्वेद विभाग की बड़ी उपेक्षा होरही है। धन्वन्तरि द्वार का नाम बदल कर जाली नूश गेट रक्खा गया है आदि अनेक अनुचित कार्रवाहियां हो रही हैं उस की प्रबन्ध कारिणी सभा को चाहिये कि वह उस का शीघ्र प्रबन्ध करे जिस कालेज की नीम डालते हुये स्वर्गीय हकीम साहब ने हिन्दू और मुसलमान को अपना एकसाही भाई समझा था और वैद्यक तथा यूनानी का, समान भाव से देख प्रथक् २ एक ही समान जिस की कार्य प्रणाली थी इस कारण ही हिन्दू रईसों और राजा महाराजों ने जिस के लिये दिल खोल कर लाखों रुपये दिये थे उन के ही कौम (जातीय) के छात्रों के साथ अत्याचार करना कहां तक उचित है। आशा है कि हमारी इस थोड़ीसी टिप्पणी से ही प्रबन्धकारिणी सचेत होजागी अन्यथा आगामी किसी अङ्क में हमें उन के संचालकों को अनुचित पूर्ण सब ही कार्यवाहियो को जनता के सामने रखना होगा और आन्दोलन बढ़ाना होगा पर हम नहीं चाहते कि हकीम साहब के पीछे उन के स्थापित इस महत्व पूर्ण कालेज को बदनाम किया जाय।

सम्पादक

वैद्यो पर एक नई आपत्ति—अम्बाला के किसी हकीमपर, गवर्नमेंन्टने आसवारिष्ट बनानेके कारण एक अभियोग (Case) चलाया है और यह भी सुना है कि महकमा आबकारी (ExSEDEPTT) आसवारिष्ट बनाने के लिये पंजाब में सर्वत्र यह

क्षुधा करना चाहता है ताकि वैद्य शास्त्रविहित न बना सके वा राज्याज्ञा (License) के बिना न रख सकें। यह सर्वथा अत्याचार है जो गवर्नमेन्ट देशी चिकित्सा पर करना चाहती है। इस के विरुद्ध कालेज के उत्सव पर ३ नवम्बर शनिवार को वैद्यों और हकीमों ने मिल कर निम्न लिखित प्रस्ताव पास किया।

हकीमों और वैद्यों का जलसा बड़ी चिंता से इस बात को सुनता है कि महकमा आबकारी देशी चिकित्सकों के सदियों से प्रयुक्त औषधि आसवारिष्टों पर कुछ बन्धन लगाना चाहता है और गवर्नमेन्ट से प्रार्थना है कि वह वैद्यों और हकीमों के उचित अधिकारोंको रक्षा करें (आयुर्वेदसंदेश)

आयुर्वेदरत्न—अहमदाबाद के वैद्य पं० लक्ष्मीशंकर रामकृष्ण शास्त्री आयुर्वेदोपाध्याय को बड़ौदा राज्य से आयुर्वेदरत्न की उपाधि मिली है। बधाई।

बम्बई में युनिवर्सिटी—बम्बई में एक आयुर्वेदिक युनिवर्सिटी स्थापित करने के लिये ट्रस्टवोर्ड बना है। उसके ट्रस्टयों ने एक युनिवर्सिटी स्थापित करनेकी योजना प्रकाशित की है। बम्बई की लेजिस्लेटिव कौंसिल में भी आयुर्वेद युनानी कालेज उपयुक्त स्थान में स्थापित करने के लिये प्रस्ताव रक्खा गया है।

उद्घाटन—ता० ८-११-२८ को काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में सर सुन्दरलाल आरोग्य भवन हास्पिटल का उद्घाटन संयुक्त प्रान्त के गवर्नर महोदय सर विलियम मालकमहेली के०सी०एस०आई सी०आई०ई०आई०सी०एस०ने किया। इस भवन में आयुर्वेदीय तथा एलोपेथी दोनों प्रकार की चिकित्सा तथा १०० रोगियों के रहने का भी प्रबन्ध है। इस उत्सव में काशी के प्रायः सभी प्रतिष्ठित जन एकत्रित थे। कुल उपस्थिति ५००० थी। आरम्भ में पूज्य मालवीय जो ने वि० वि० आयुर्वेद विद्यालय का संक्षिप्त परिचय सविवरण सुनाया और आरोग्य भवन की उपयोगिता बतलाई। अनन्तर गवर्नर साहब ने भी अपने भाषण में कृतज्ञता प्रगट करते हुए कहा कि यद्यपि मेरी श्रद्धा अधिकतर सार्टिफिक चिकित्सा पद्धति ही की ओर है पर यहां के लोग इसे अधिक चाहते हैं अतः कर दाताओं के सन्तोष के लिये मुझे आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा पद्धतियों की उन्नति के लिये प्रयत्न करना ही चाहिये, अतः मैं इस संस्था की हृदय से उन्नति चाहता हूं इसके बाद आपने उद्घाटन कार्य्य किया।

गुजरात प्रान्तीय सम्मेलन—के मंत्री वैद्य भवाशंकर त्रिवेदी सूचित करते हैं कि हमारे प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन का नाम "अब श्री गुजरात कच्छ काठियावाड़ वैद्य सम्मेलन" नियत किया गया है और इसका चतुर्थ अधिवेशन जनवरी के अन्तिम सप्ताह में बड़ोदरा में होना निश्चित हुआ है।

दार्व्हा जि० यवतमाल में—बरार प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन का तृतीय महोत्सव २रा ३ दिसम्बर को श्री भिकाजी विनायक डेग्वेकर एम०ए०एम्०एस०सी एल०एल्०बी० जबलपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। विशेष विवरण आगामी अङ्क में प्रकाशित करनेकी चेष्टा करेंगे। —वै० स० पत्रिका

विजया पाक

यह पाक निर्बलों के लिये जीवन स्वरूप है इसके सेवनसे स्वप्न प्रमेह धातुक्षय नष्ट होशरीर हृष्ट पुष्ट बलवान और कान्तवान हो जाता है। कब्जी और भारापन नहीं लाता किन्तु भूक बढ़ाता है। दस्त साफ लाता है। हमने इसे विशेष रूप से स्वप्न प्रमेह और शीघ्र पतन के लिये बनाया है।

मूल्य १ सेर १०)

शरदऋतु में सेवन योग्य।

कन्दर्प सुन्दर पाक

निर्बल, बलहीन, निस्तेज, और रोगी मनुष्यों को हृष्ट, पुष्ट, बलवान, तथा स्वास्थता प्रदानकरने वाली शरद ऋतु के समान अन्य ऋतु नही। इस ऋतु में ही बलवर्धक, वीर्यबर्धक, पुष्टकारक पाक सेवन करने वाले वर्ष भर तक स्वस्थ्य रहते हैं तथा रसायन, वाजीकरण औषधि सेवन का भी सर्वोत्तम समय यही है। इस लिये हम सूचित करते हैं कि आज ही उपरोक्तपाक मगा औरसवन कर हृष्ट पुष्ट और बलवान हूजिये। अन्यथा १ वर्ष तक प्रतीक्षा करनी होगी। यह पाक प्रमेह, स्वप्न प्रमेह, नपुंसकता, निर्बलता, नष्ट कर हृष्ट, पुष्टऔर कांतिवान बनाता है। स्तम्भन शक्ति को बढ़ा मोननीय स्त्रियों को सन्तुष्ट करता है। हमने यह पाक ऐसी खूबी से बनाया है कि उपरोक्त गुण होने पर भी कब्ज भारीपन नहीं लाता किंतु दस्त साफ लाता है और शीघ्र ही पचकर भूख और रुचि को बढ़ा देता है। मू० १ सेर ५)

वल्लभ पाक

यह पाक प्रधानतः बड़े, धनिक पुरुषों के लिये बनाया है। इसका गुण शीघ्र होता है, मात्रा स्वल्प होती है खाने में स्वादिष्ट होता है। केशर कस्तूरी, अम्बर, मोती, स्वर्ण लौकांत आदि मिश्रित कर और भी गुणवान बना दिया है। यह मन्दाग्नि, संग्रहणी, क्षय प्रभृति रोगों को भी लाभप्रद है। मू० पावभर १०)

बादाम पाक

यह पाक खास कर उन सज्जनों के लिये जिन्हे मस्तिष्क से जायदा काम लेना पडता है। क्यों कि यह पाक मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने के लिये अद्वितीय हैं। मस्तिष्क की निर्बलता, शिर का घूमना, आंखो की रोशनी का कम होना खुश्की रहना आदि शिकायतों को नष्ट कर मस्तिष्क एवं शरीर को पुष्ट करता है। मू० आध सेर का ५)

---- * ----

एरण्ड पाक

जिनकी प्रकृति वात की अथवा जिन्हे वात सम्बन्धी कोई व्याधि हो जैसे शरीर के किसी स्थान में दर्द, कमर का दर्द, वात, व्याधि, गठिया नासूर, भगन्दर मलावरोध आदि रोगोंके लियेयह पाक विशेष लाभ प्रद है। यह पाक शरीर को बल वान एव वात जन्य रोगो को नष्ट करने के लिये प्रसिद्ध है तथा दस्त साफ लाता है। मू० १सेर५)

सुपारी पाक

यह पाक खास कर स्त्रियोंके लिये विशेष उप योगी है। स्त्रियों के रज दोष, प्रदर, कमर का दर्द योनिशूल आदि रोगों को नष्ट कर बलऔर कान्ति देने वाला है। इसके निरन्तर सेवन से गर्भाशय के विकार दूर कर गर्भ देता है। ४१ दिनके सेवन से स्त्रियों का शरीर हृष्ट पुष्ट हो सौन्दर्य्य देखने योग्य होजाता है। मू० १ सेर ६)

पीपल पाक

यह पाक स्त्री, पुरुषों को जिन्हें ज्वर के कारण निर्बलता हुई है अथवा जिन्हें बार २ निर्बलता के कारण ज्वर होजाता है उनके लिये यह पाक बहुत ही लाभप्रद है। यह ज्वर को दूर करता और भूक बढ़ाता है तथा धातु पुष्ट कर निर्बलता दूर कर बलवान बनाता है। मू० ~~॥ आध सेर ५)

सौभाग्य सुंठीपाक

जिन स्त्रियों को प्रायः प्रसूत घेरे रहता है. शरीर में दर्द रहता है बांयटे आते हैं उन को यह अमृत समान गुण देता है तथा भूक बढ़ाता है, शरीर हृष्ट पुष्ट कर देता है। साथ ही गर्भाशय के विकारों को नष्ट कर देता है जिन्हें मासिक धर्म साफ नही होता उन को भी यह उत्तम है। मूल्य १ सेर ४॥)

नोट—सुपारी पाक,सोभाग्य सुठीपाक,एरन्ड पाक, कन्दर्प सुन्दर पाक,आध २ सेर से कम और पीपल पाक. बिजयापाक, पाव २ भर से कम तथा वसम पाक आधपाव से कम नहीं भेजाजाता है।

पता—मैनेजर धन्वन्तरि औषधालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)

प्रयोगाङ्क—आगामी नोम्बर दिसम्बरका विशे पाङ्क प्रयोगाङ्क के नाम से प्रकाशित होगा उस के लिये चित्र और अनुभूत प्रयोग शीघ्र भेजिये।

व्यवस्थापक—



घर में वैद्य

यदि आप गांव और घर में मिलने वाली जड़ी, बुटियों से ही कठिन रोगों को वान की बात में आराम कर के धर्म, यश, और रुपया पैदा करना चाहते हैं तो" वैद्यक-ब्रह्मानन्द विलास" पुस्तक सदैव अपने पास रखिये। मूल्य ॥), ३ जिल्द १) रुपया" एजेन्ट-चाहिये " कमीशन मिलेगा।

मनुष्य के दो अमूल्य रत्न

स्वच्छ नेत्र



हमारे" कृष्ण सर्प वसाज्जन" से जाला, फूला माड़ा, रोहे, पटल रोग, दृष्टि दोष, आदि समस्त नेत्र रोग नष्ट होकर अन्धा भी देखने में समर्थ होता है, मूल्य फी तो० ५) आधा तो० २॥)

पता—राजवैद्य, कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी रईस, बरौदा पो० पनागर, जबलपुर.

आर्डर देने से लाभ होगा

क्योंकि—

साधु-सर्वस्व—सनातन धर्मका कट्टर पोषक है।
" " —मठ मंदिरों का परम रक्षक है।
" " —महंत मठाधीशों का सच्चा सहायक है।
" " —सच्चे सन्त महात्माओं का अनन्य सेवक है।
" " —एकता का दृढ़ पक्ष-पाती है।
" " —हिंदू हितों का पूर्ण हितैषी है।
" " —स्वदेश पथ का निर्भीक पथिक है।
" " —राजनैतिक क्षेत्र का वीर योद्धा है।
" " —गुलामी का शत्रु और स्वतन्त्रता का विनीत पुजारी है।

इतने पर भी इस पत्र का वार्षिक मूल्य २॥) रुपये मात्र है।

लिखिये—

मैनेजर "साधु सर्वस्व" कार्यालय, डाकोर (खेड़ा)

असली

शुद्ध शिलाजीत

हमने बद्रिकाश्रम से शिलाजीत के पत्थर मंगा कर शुद्ध करवाये है। असलीहोने की गारेन्टी है। मुल्य १तोला १), ५तोला ३॥) २०तोला १०) ८०तो० ३०) रु०

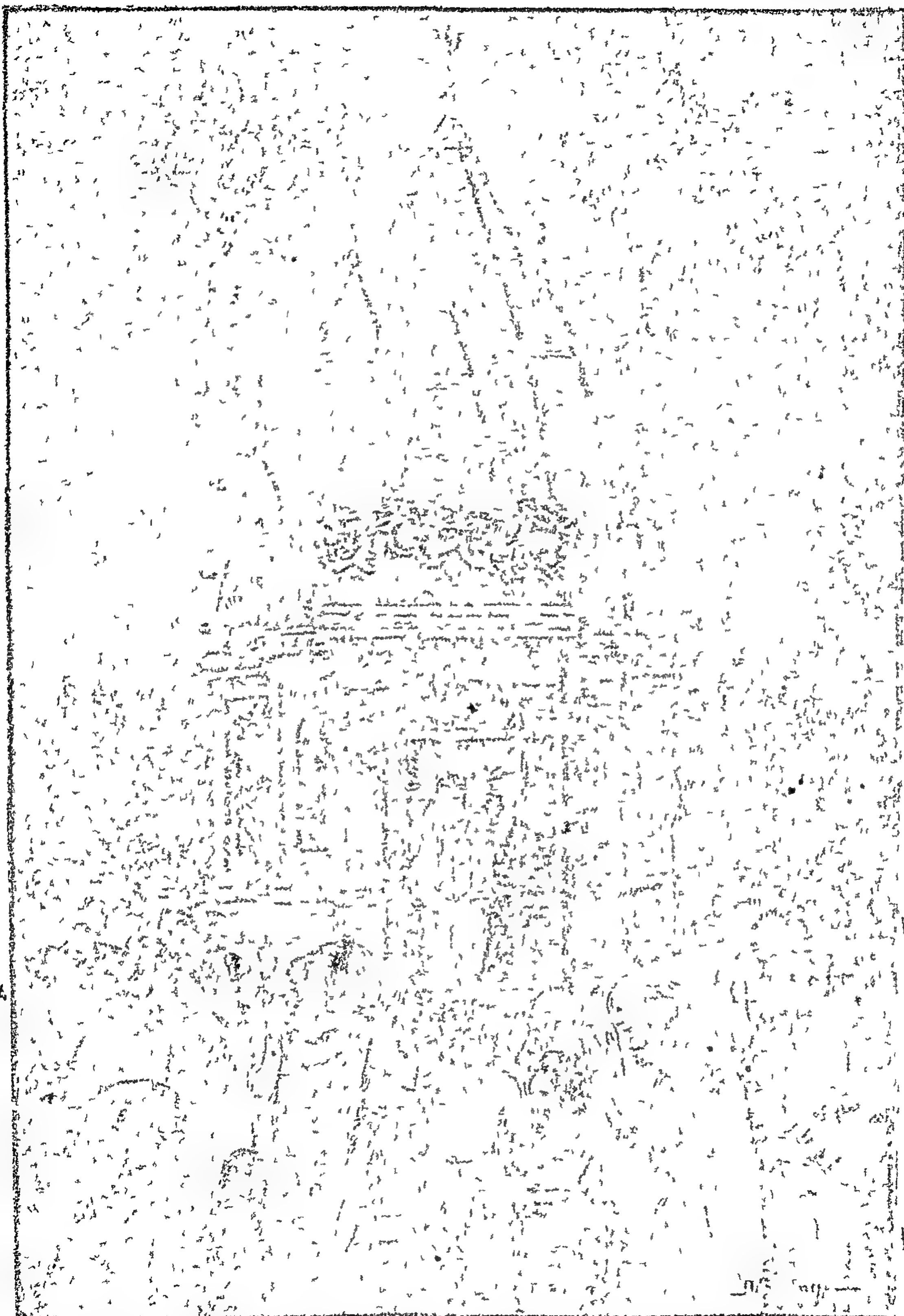
पता—मैनेजर विजयगढ़ केमीकल वर्क्स

विजयगढ़ जिला अलीगढ़



Regd. No. A. 1215

मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वज वटी मकरध्वजवटी मकरध्वजवटी



संस्थापक— स्वर्गीय लाला राधावल्लभजी वैद्यराज

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य वैद्यः बाँकेलाल गुप्त

प्रयोगांकान्तर्गत उत्तमोत्तम-योग सूची

नोट—इसके अतिरिक्त और जो उत्तमोत्तम प्रयोग हैं जिनकी सूची इसमें स्थानाभाव से नहीं दे सके

—सम्पादक



॥ इतिशुभम् ॥

रोगानुसार-प्रयोग-सूची

किस रोग पर — **प्रयोग...किन २ पृष्ठों पर हैं।**

॥ इतिशुभम् ॥

रोगानुसार-प्रयोग-सूची

किस रोग पर — **प्रयोग किन २ पृष्ठों पर हैं।**

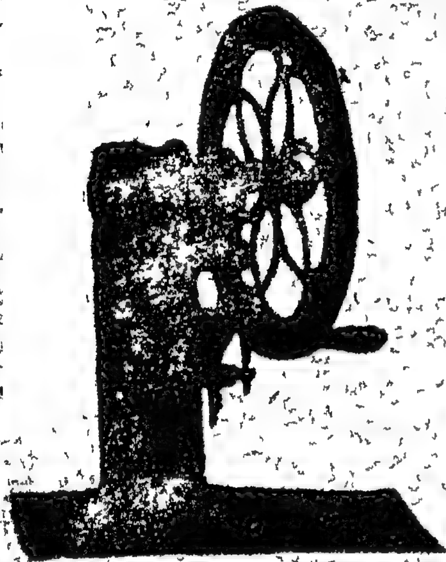
यन्त्र-सूची

श्री धन्वन्तरि औषधालय के संस्थापक, आरोग्यसिंधु के सम्पादक, धन्वन्तरि के प्रवर्तक, स्वर्गीय लाला राधावल्लभजी वैद्यराज के ज्येष्ठ पुत्र चि० देवीशरण के

आयुर्वेद प्रवेश के

उपलक्ष में

उत्तम लोह की बनी, बड़ी मजबूत, सुंदर, टिकाऊ तीन साइज की टिकिया [टेबलेट] बनाने की बड़ी ही उत्तम



मशीन

बिनामूल्य

मिलने के नियम—३१ अगस्त सन् १९२९ से पहिले जो सज्जन हमारे यहां की प्रकाशित निम्न लिखित पुस्तकें, विशेषाङ्क, फायलों में से ५) पांच रुपये का ऑर्डर भेज ग्राहक बनेंगे उन्हें पारसल के साथ एक इनामी टिकट भी भेजी जायगी और उसकी १ कापी हमारे पास रहेगी जब १०० सौ ग्राहक होजायँगे तब इनामी टिकट नामके साथ लाटरी की भांति निकाली जायगी। जिनके नाम के साथ इनामी टिकट निकलेगी उन्हें वह मशीन बिना मूल्य दी जायगी लेकिन मार्ग व्यय ग्राहक के ही जिम्मे होगा।

एक और भी सुविधा—यदि नाम पाने वाले सज्जन को मशीन की आवश्यकता न हो तब वह हमारे यहां की २५०) रुपये की औषधियां थोक भाव से विना मूल्य मगा सकते हैं किंतु औषधियों का मार्ग-व्यय भी ग्राहकों को ही देना होगा।

नोट—अभी तक १०० सौ ऑर्डर पूरे नहीं हुए इस लिये इसकी अवधि बढ़ाकर ता० ३१ अगस्त सन् १९२९ तक करदी गई है तथा कुछ नवीन पुस्तकें भी सम्मिलित करदी गई हैं।

पता...मैनेजर श्रीधन्वन्तरि कार्य्यालय (औषधि विभाग)

विजयगढ़ (अलीगढ़)

पुस्तकों के नाम, मूल्य निम्नांकित हैं ।

१ आसन चिकित्सा सचित्र	२)	३२ हिस्टेरिया चिकित्सा „ [विशेषाङ्क]	१॥)
२ उपदेश विज्ञान सचित्र	१)	३३ आरोग्यसिंधु की फाइल	२)
३ प्रयोग पुष्पावली सचित्र	१)	३४ धन्वन्तरि की ४ थे वर्ष की फ़ाइल	४)
४ दोषधातुविज्ञान सचित्र	॥=)	३५ धन्वन्तरि की ५ वे वर्ष की फ़ाइल	५)
५ बालबोधोदय	।=)	३६ अमृतधारा-गुटिका	॥)
६ सूर्यरश्मिचिकित्सा (द्वितीय संस्क०) स०	॥।)	३७ वैद्यजीवनम्	१)
७ कामिनीकर्णधार सचित्र	१।=)	३८ क्रोमोपेथी	≡)
८ बालरोग चिकित्सा सचित्र	॥।=)	३९ जल के प्रयोग और चिकित्सा	॥)
९ धातुदौर्बल्य	॥।)	४० आरोग्य सूत्रावली	।=)
१० भारतीय भोजन	॥।)	४१ आयुर्वेद सूत्र	१)
११ प्लेग (तृतीय संस्करण)	।)	४२ साधारण नेत्र रोग	१)
१२ मरणोन्मुखी आर्य्य चिकित्सा	।)	४३ प्रयोगाङ्क सचित्र (यही विशेषाङ्क)	१।) व २)
१३ परीक्षित प्रयोग	।=)	४४ रसराज महोदधि पांचों भाग	४)
१४ पञ्चकर्म विवेचन	।=)	४५ तिब्ब अकबर	७)
१५ रसायन संहिता	॥।=)	४६ चारुचिकित्सा प्रथम खंड	॥।)
१६ दशमूल सचित्र	॥)	४७ चारुचिकित्सा द्वितीय खंड	॥।)
१७ त्रयादर्श (द्वितीय संस्करण)	॥।)	४८ आयुर्वेद सूत्रम्	१)
१८ कुमार तन्त्र	।=)	४९ मनुष्य का आहार	१)
१९ तिल्ली [प्लीहा]	।)	५० सचित्र जर्राही प्रकाश	१॥)
२० वेदों में वैद्यक ज्ञान	≡)	५१ इलाजुलगुर्बा भाषा	१॥)
२१ ओज क्या है	-)	५२ बालोपयोगी वीर्य रहस्य	=)॥
२२ शरीर रचना	।)	५३ मैलेरिया	॥)
२३ चन्द्रोदय	।)	५४ भैषज्य गुण रत्नमाला	॥)
२४ नाड़ी सिद्धान्त	।=)	५५ संतति रहस्य	॥)
२५ रोग परिचय	॥)	५६ संतति निरोध रहस्य	॥)
२६ प्राकृत ज्वर	।)	५७ गांधी गीता	=)
२७ दोषविज्ञान	=)॥	५८ संसार सारसंग्रह	=)
२८ वैद्यराज जी की जीवनी	≡)	५९ दुग्ध चिकित्सा	।-)
२९ आयुर्वेद में दार्शनिक तत्व	।)	६० संदिग्ध बूटी चित्रावली	२)
३० स्वप्नप्रमेह चिकित्सासचित्र [विशेषाङ्क]	१॥)	६१ वैद्यामृतम्	॥=)
३१ मलावरोध चिकित्सा „ [विशेषाङ्क	१॥)		

नोट-विशेष विवरणके लिये पुस्तकों की सूची बिनामूल्य मँगाकर शीघ्र लाभ उठावें अन्यथा पछताना होगा।

पता-मैनेजर धन्वन्तरि कार्यालय [पुस्तक विभाग] विजयगढ (अलीगढ)



जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतं द्रापि मिवच्यवानात् ।
प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्रादित्पतिमकृणुतं कनीनाम् ॥

ऋग्वेद मं० १ १ अ० १७ सू० ११६

भाग ५] नवम्बर, दिसम्बर सन् १९२८ [अङ्क ११, १२

मरणासन्न



भगवान धन्वन्तरि की कृपा और ग्राहकों के अनुग्रह से धन्वन्तरि ने अपनी पांच वर्ष का आयु समाप्त की और इस छोटी बाल अवस्था में धन्वन्तरि ने जिस उत्साह के साथ अपना कर्तव्य पालन किया, शायद ही किसी वैद्यक पत्र ने किया होगा। अपनी कार्य्य दक्षतासे धन्वन्तरि वैद्य समाज का प्रिय पात्र बन गया अनेक वैद्य इसकी आगमन तिथि से पूर्व ही इस के आने की प्रतीक्षा बड़ी उत्कन्ठा से करते रहे हैं और इसे वैद्यक पत्रों में सर्व श्रेष्ठ मानते रहे हैं किन्तु हमारी अयोग्यता, अनुभवहीनता, से यह अपना क्षेत्र नहीं बढ़ा सको और सचालकों को ग्राहकों की कमी सदैव अखरती रही और धन हानि सहते रहे। ग्राहकों ने भी अपना २ कर्तव्य नहीं पालन किया। कुछ उत्साही ग्राहकों की कृपा से ही यह अब तक जीवित रहा और उनकी ही प्रेरणा तथा उत्साह दानसे संचालक भी हानि सहते हुए इसकी उत्तरोत्तर उन्नति करते रहे पर चौथे वर्ष पूर्ण उत्साह एव प्रचुर धन व्यय करने पर भी जब यथेष्ट ग्राहक नहीं सके तब बार२ मित्रोंके उत्साहवर्धक वाक्योंसे भी वह उत्साहित न हो पांचवे वर्ष भी येन केन प्रकारेण प्रकाशित करते रहे किन्तु इस वर्ष अनेक त्रुटियां स्वयं संचालकों को भी अखरती रहीं, परन्तु ग्राहकोंको

कमी के कारण हतोत्साहित होने से सुधार नकर सके अब पूर्णरूपेण हतोत्साह हो चुके हैं और इस विशेषाङ्क को प्रयोगाङ्क नामसे निकालइस धन्वन्तरि पत्र की आयु समाप्त करने वाले हैं और निश्चित कर चुके हैं कि अब धन्वन्तरि को वन्द कर आयुर्वेद समाचार नामक दूसरा मासिक पत्र ही २५०० ढाई हजार की सख्या में प्रतिमास प्रकाशित कर वैद्य समाज और सर्व साधारण में स्वास्थ्योपयोगी वैद्यक पत्र पढ़ना कितना आवश्यक है इस का प्रचार कर वैद्यमडल और सर्व साधारण का ध्यान आकर्षित करने को आन्दोलन किया जाय। जब सर्व साधारण की रुचि इसतरफ होगी तब पुनः इस धन्वन्तरि को प्रकाशित कर आयुर्वेद शास्त्र के महत्व पूर्ण विषय सर्व साधारण के सामने रक्खे जांयगे जिस से उन्हे मालुम होसकेगा कि हमारे लिये एक मात्र प्राचीन आयुर्वेद चिकित्सा ही उपयोगी है। एलोपेथी, होमियोपेथी, क्रोमोपेथी आदि सब इस प्राचीन आयुर्वेद शास्त्र के ही रूपान्तर मात्र है वलिक कारणवशात् हानि कर भी सिद्ध हो जाती है। धन्वन्तरि पत्र फिर से ऋषियों को इसी आयुर्वेद शास्त्र की वकालत करेगा तथा भारत की प्राचीन धरोहर भगवान धन्वन्तरि के अमृत कलश का रक्षा करेगा।

जब से हमने अपने उन कृपालु ग्राहक गणों एव लेखकों को जोकि हमें उत्साहित करते रहते थे यह सूचना दी है कि धन्वन्तरि प्रयोगाङ्क के वाद वन्द कर दिया जायगा तब से उनके हमें अनेक पत्र इस आशय के मिले है कि आप धन्वन्तरि को वन्द न करें हम ग्राहक बनानेका प्रयत्न कर रहे है और किन्हीं२ने तो पचास पचास ग्राहक तक बना देने की सूचना दी है। हम अब वड़े असमजस में पड़ रहे हैं कि क्या करें, अपनी तरफ देखते है तब हानि सहने में असमर्थ पाते है और उधर आश्वासन और उत्साहवर्धक मित्रों के वाक्यों की तरफ ध्यान देते हैं तब धन्वन्तरि को प्रकाशित करने का विचार होता है किन्तु विचार करने से यही बात निश्चित होती है कि धन्वन्तरि को वन्द कर दिया जाय कारण आज पांच वर्षों से ग्राहकोंकी कमीहोते हुए भी मित्रा के उत्साह से ही प्रकाशित करते रहे है। अब हमने एक और ही उपाय विचारा है देखें मित्र लेखक, ग्राहक और भी जो पाठक धन्वन्तरि का जीवत रखना चाहते हैं वह कहां तक प्रयत्न करते है और धन्वन्तरि को ग्राहक रूपी सजीवनी दे इसे अकाल मृत्युसेवचाते हैं।

उपाय—धन्वन्तरि के इस प्रयोगांक के साथ एक ऑर्डर फार्म भेज रहेहैं उस पर हमारे मित्र कृपालु ग्राहक एव लेखक तथा पाठक महोदय प्रयत्न कर जितने भी अधिक हो सकें ग्राहक वना और उस फार्म पर उन सव का पता लिख कर हमें भेज दें हम उन सव फार्मों को सग्रहकर देखें गे कि नवीन और पुराने कितने ग्राहकोंने अपना२ शुभ नाम भरा है यदि ग्राहक सख्या तिगुनी भी होगई तव हम उन सव सज्जनों को पत्र द्वारा यह सूचना देदेंगे कि आप की सजीवनी ने अपूर्व लाभ किया और धन्वन्तरि अकाल मृत्यु से वच गया अव वह प्रकाशित होगा वे अपना २ मूल्य मनियार्डर द्वारा भेजदें। मनियार्डर मिलते ही धन्वन्तरि पुनः नवीन उत्साह से नवीन रङ्ग ढङ्ग सेऐसे रूप से प्रकाशित होगा जिसेदेख पाठक मुग्ध होजांयगे। अव तो हमारादृढ़ निश्चय है कि या तो अव इसे सर्वाङ्ग सुन्दर और उत्तमही निकालेंगे या निकालेंगे ही नहीं। यदि फार्म पूरे नहीं भर कर आये तव धन्वन्तरि वन्द कर दिया जायगा और उसकी सूचना आयुर्वेद समाचार द्वारा सेवा में भेजदी जायगी। कृपया ऑर्डर फार्म पर उन्हीं सज्जनों के नाम लिखें जो मनियार्डर भेज सके, व्यर्थ हम उत्साहित करने को नाम न भर कर भेजें यह हमारी विनीत प्रार्थनास्मरण रक्खें।

—व्यवस्थापक धन्वन्तरि

स्व० वैद्यराज पं० मन्नूलाल जी सिलाकारी

लेखक—गल्प-सम्राट श्रीमान् मुन्शी ज़हूर बख्श जी "हिन्दी कोविद।"



इस अभागे देश की छाती पर सर्वदा सर्वनाश की लहरें नृत्य किया करती हैं, और नृत्य करती २ इस दुर्भाग्य पीडित देश के जाज्वल्यमान रत्न उदरसात करती जाती हैं। अकर्मण्य एवं निरुपयोगी जीव मौज करते हैं और कर्मवीर एवं लोक हितरत विशाल आत्माएं अल्प आयु में ही काल के कराल उदर में निमग्न होती जाती हैं, गत ५ मई का दिवस सागर नगर के लियेएक अशुभ दिवस था। इस ही दिन यहां के मनुष्य समाज का एक समुज्वल सितारा सदा के लिये घोर तमोराशि में विलीन हो गया, यद्यपि प० मन्नूलाल जी कोई देश विख्यात सज्जन न थे पर ऐसे नवरत्न अवश्य थे जिन से अनन्त जन-समूह की कल्याण-साधना होती है और अगणित मनुष्य उन्मुक्त हृदय से जिनका सन्मान करते हैं। आप प्रायः उन सभी गुणों से विभूषित थे जिन्हें धारण कर मनुष्य, सज्जन सज्ञाका अधिकारी हो सकताहै, उन का अनुकरण करने से यदि चाहें तो अनेक मनुष्य अपने चरित्र को सुंदरता के सांचे में ढाल सकते हैं। अतः यहां आपका संक्षिप्त परिचय देना अनुचित न होगा।

प० मन्नूलाल जी के पूर्वज मराठी राज्य में सिलेदार पद पर प्रतिष्ठित थे। इसी सिलेदार शब्द से आगे चलकर सिलाकार शब्द की उत्पत्ति हुई। और क्रमशः इस वंश वालों का द्विवेदी आस्पद लुप्त होगया, अस्तु सिलाकारी वंश में प० नन्दीलाल जी एक बहुत ही नैष्ठिक और पौराणिक ब्राह्मण होगये हैं। स्वर्गीय मन्नूलाल जी आप केही सपूत थे आपका जन्म ७ दिसम्बर स. १८८७ ई० को हुआथा। आपके माता-पिता सात्विक ब्राह्मण थे। धर्म-प्रियता और सदाचार-शीलता ही उनके जीवन का अंतिम ध्येय था। अत: विना प्रयास ही बालक मन्नूलाल पर माता पिता के सद्गुणों का प्रभाव पडता रहा। आपने पिता से नैष्ठिकता और तेजस्विता ग्रहण की तथा माता से दयालुता, परोपकार-प्रियता और मृदुल-हृदता



स्वर्गीय प० मन्नूलाल जी वैद्यराज

की दीक्षा ग्रहण की। छः वर्ष की आयु में बालक मन्नूलाल का विद्यारम्भ संस्कार कराया गया। हिंदी मिडिल तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आप संस्कृत का अध्ययन करने लगे। पिता पुरानी चाल के ब्राह्मण थे, अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों की आचार भ्रष्टता देख आपने अपने हृदय धन को इस सर्वनाशकारी बला से दूर रखने में ही उसका कल्याण समझा। संस्कृत-साहित्य की शिक्षा प्राप्त करते समय ही आपकी प्रवृत्ति ज्योतिष की ओर हुई। आपके पिता पौराणिक होने के सिवा नामी ज्योतिषी भी थे अतः आपने उन्हीं से ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किया। ज्योतिष में मन्नूलाल जी ऐसे प्रवीण निकले, कि आपका पांडित्य देख स्वय पिताजी तक चकित होजाते थे। ज्योतिष में इतने कुशल होने पर भी कभी आपने उससे एक पैसा भी उपार्जन नहीं किया। ज्योतिष विद्या प्राप्ति के अनन्तर आपका आयुर्वेद से प्रेम हुआ। आपके श्वसुर सद्वैद्य प० हरप्रसाद षडङ्गयर जो कि स्टेट ग्वालियर के अन्तर्गत जिला मुंगावली एक स्थान है वहां वास करते थे आप एतद्प्रान्त में अच्छे रस वैद्य थे, वहीं कुछ काल वास कर आपने रस प्रक्रिया का अभ्यास किया। फिर सागर आये यहां पर आयुर्वेद के ज्ञाता सिद्धहस्त * प० गणेश भइय्या देसाई को अपना गुरु बनाया।

आयुर्वेद आपका अत्यन्त प्रिय विषय था, आपका अधिकांश समय उसीके अध्ययन, अध्यापन में व्यय होता था।

मन्नूलाल जी को आयुर्वेद का शौक कैसे लगा—इस संबंध में एक अनोखी घटना है। जब आप संस्कृत पढ़ते थे तब आपका कोई आत्मीय रोग ग्रस्त हुआ। उसकी सेवा शुश्रुषा का भार आप पर ही था। बार बार वैद्य के यहां जाना रोगी की दशा सुनाना उस के लिये दवा मांगना अनुपान की विधि पूछना, ये सब बातें आपको बड़ी ही अप्रिय जान पड़ी। आपने सोचा यदि मैं स्वयं वैद्य होता तो इस प्रकार क्यों अन्य व्यक्ति से निहोरा करना पड़ता। बस आपने उसी समय निश्चय किया कि मैं भी आयुर्वेद शास्त्र में निष्णात हुये बिना न रहूंगा। आपकी यह कल्पना संपूर्णतया सफलीभूत हुई। उसी दिन से आप आयुर्वेद के अध्ययन में तल्लीन हुए और आपके निधन के साथ ही आपकी यह आयुर्वेद प्रियता समाप्त हुई।

उन दिनों सागर में इन गणेश भय्या की तूती बोल रही थी। मन्नूलाल जो इन्हीं महोदय से आयुर्वेद की शिक्षा ग्रहण करने लगे। आपने ऐसे मनोनिवेश से अध्ययन प्रारम्भ किया कि थोड़े ही समय में माधव-निदान, शार्ङ्गधर, भावप्रकाश, निघन्टुरत्नाकर, आदि सुप्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ पढ़ डाले। इसके बाद आपने वाग्भट्ट, चरक आदि का अनुशीलन किया, उक्त वैद्य जी के निरीक्षण में ही आप प्रत्यक्ष अनुभव भी प्राप्त करते थे। इस प्रगाढ़ अनुशीलन और अद्वितीय परिश्रम का ही परिणाम यह हुआ कि बीस वर्ष की आयु होते न होते आप एक कुशल वैद्य बन गये।

इसके बाद मन्नूलाल जी ने अपना निजका औषधालय खोला। इस दुर्भाग्य पीड़ित देश में बहुधा ऐसे ही वैद्य पाये जाते हैं जो वैद्यक के दो चार ऊट पटांग नुस्खे सीख, हर्र, बहेरे और आंवले के चूर्ण की शीशियां रखकर वैद्य बन बैठते और जनता को अपरिमित हानि पहुंचाने के साथ

* आपका जीवन चरित्र अप्रैल १९१७ की सरस्वती में प्रकाशित होचुका है।

ही सुशिक्षित एव अनुभवी वैद्यों के मार्ग में रोड़े अटकाया करते हैं। मन्नूलाल जी को भी ऐसे अनोखे जीवों से सामना करना पड़ा। पर लोग ज्यों२ आपके गुणो से परिचित होते गये त्यों२ आपकी प्रतिष्ठा बढ़ती गई त्यों२ आपके कार्य का क्षेत्र विस्तृत होता गया वैद्यक के द्वारा आपका प्रधान ध्येय धनोपार्जन करना नहीं, निर्धन रोगियों की सेवा करना ही था। इस विषय में आपकी उदारता यहां तक बढ़ी चढ़ी थी कि आप निर्धन रोगियों को महीनोंबहुमूल्य औषधियां खिलाते रहतेथे फिर भी आपके माथे बर बल न पड़ते थे। धनी रोगियों से आपको जो मिलता था उसका अधिकांश निर्धनों की सेवा में व्यय हो जाता था।

धनिक रोगियोंके सम्बन्ध में वैद्यराज जीका अनुभव था कि इन में लगभग ७५ प्रतिशत रोगी केवल नपुसकता की व्याधि से ही व्यथित रहते हैं। आप कहा करते थे कि ये लोग अहर्निश दुर्व्यसनों में लित रहते और अपने धन के साथ ही अपनी शारीरिक शक्तियों को भी स्वाहा किये जाते है। ऐसे अकर्मण्य जीवों के धन से यदि निर्धन रोगियों के लिये औषधि न जुटाई जायगी तो निर्धनों का ठिकाना कहां रहेगा? वैद्यराज जीने जो कुछ कमाया, इन्हीं धनिक रोगियों से,और निर्धनों का जो कुछ उपकार किया वह धनी रोगियो के द्रव्य से ही।

मन्नूलाल जी की अपूर्व चिकित्सा कुशलता की स्मृति हृदय को विह्वल कर देती है। एक बार आप बम्बई में अपने एक धनी मित्र के यहां ठहरे हुए थे। उसके पैर में एक भयङ्कर घाव हो गया था। आश्चर्य की बात यह थी कि बम्बई के मशहूर डाक्टर ज्यों२ उसकी चिकित्सा करते थे त्यों त्यों घाव विकराल रूप धारण करता जाता था रोगी की बुरीहालत थी उसे किसी भांति कल न पड़ती थी। अन्त में आजिज़ आकर डाक्टरो ने कहा— विना पेर काटे यह व्याधि दूर न होगी। यह सुन वैद्यराज जी ने कहा-सो न होगा घाव ७ दिन में अच्छा होगा डाक्टर ने व्यग से कहा—वाह! आप ज़रूर अपना चमत्कार दिखाइये वैद्यराज जी ने सचमुच सात दिन में वह घाव अच्छा कर दिखाया। और डाक्टरों को आयुर्वेद की महिमा के सामने नतशिर हो जाना पड़ा।

इसी प्रकार एक बार एक आदमी के गले में फोडा हुआ। उसने क्रमशः ऐसा उग्र रूप धारण किया कि छः मास तक आराम न हुआ। बड़े बड़े डाक्टर परेशान हो गए। इसी बीच रोगी को खांसी चलने लगी। डाक्टर ज्यों त्यों करके घाव में टांके लगाते थे, पर खांसीका दौरा शुरू होते ही टांके टूट जाते थे। वैद्यराज जी ने केवल दो खुराक में उसकी खांसी दूर की और आठ दस दिन में आप के मलहम ने घाव भी आराम कर दिया। छोटे बच्चो के मुंह में दहीरा नाम की एक बीमारी होजाती है। मुह में दही जैसा जम जाता है और अनन्त फुंसियां हो जाती है। बालकज्वर ग्रस्त हो जाता और मुह की पीड़ा के मारे दूध नही पी सकता। रोगक्रांत होते ही भले-चगे बालक दो तीन दिन में ही बाहर निकल जाते हैं। वैद्यराज

जी के पास इस रोग की एक ऐसी औषधि थी कि उसके प्रयोग से दो चार घन्टे में ही यह रोग आराम हो जाता था। इसी प्रकार आपके पास यक्ष्मा, पीलिया, बवासीर, सग्रहणी, इन्फ्लूएंजा, गर्मी, सूजाक आदि अनेक रोगों की रामबाण औषधियां थी।

मन्नूलाल जी की औषधियों के तत्काल गुणकारक होने का कारण यह था कि आप स्वय बड़े मनोनिवेश से तथा अटूट परिश्रम से बहुमूल्य औषधियां प्रस्तुत करते थे। आपकी औषधियों में हरी ही जड़ी बूटियों का प्रयोग होताथा आवश्यकता पड़ने पर आप स्वयं जगलों पहाड़ों की खाक छानते फिरते थे. बहुधा हिमालय की तराई तक सफर करते और कई औषधियां तो वहीं से बना कर लाते थे। फिर आप रोगियों को बड़े सात्विक भाव से औषधि दान देते थे। इतना सब करने पर भी यदि रोगी को लाभ न पहुंचे तो उसका दुर्भाग्य। आपकी चिकित्सा प्रणाली पर मुग्ध होकर कानपुर के निखिल भारतीय आयुर्वेद महामंडल ने आपको अपनी संदिग्ध औषधि निर्णायक समिति का सदस्य चुना था। खेद है कि महामण्डल की यह सूचना आपके देहांत के एक दिन बाद आई।

वैद्यराज जी सिद्ध हस्त वैद्य होने के सिवा बडे विद्याव्यसनी भी थे। आप जैसे विद्याव्यसनी क्वचित ही पाये जाते हैं। आपकी विद्याभिरुचि कुछ ऐसी प्रबल थी कि आपने अपने ही परिश्रमसे अंग्रेजी बगला मराठी और गुजराती की अच्छीयोग्यता प्राप्त करली थी। आप उक्त भाषाओं की पुस्तकें भी बहुत पढ़ते थे। जब हिन्दी संसार में श्री प्रेम चन्द जी की कड़ी आलोचना होने लगी और श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्यायकी प्रशसाके गीत गाये जाने लगे तब आपने कौतूहल वश चट्टोपाध्याय महोदय के मूल उपन्यासों का अध्ययन किया था। मेरे पूछने पर आपने कहा था, कोईरचना केवल बगला अक्षरों में छपी होने से ही सर्वथा उत्तम नहीं-कही जा सकती। यद्यपि शरच्चन्द्रजी के उपन्यास अच्छे हैं पर केवल पाश्चात्य शुष्क कलावाद का चक्कर काट रहे हैं और प्रेमचन्द्र जीकी रचनाओं में हमारा—भारतीय हृदय फड़क रहा है जिनमे भारतीय सस्कृति और भारतीय सभ्यता का चित्र खींचा गया है। प्रेमचन्द्र जी ने हमें हमारा रूप दिखाया है। आप प्रेमचन्द्र जी पर अभिमान कीजिये बगाली-शरच्चन्द्र जी पर अभिमान करेंगे। आप इसी भावनाको लेकर हमारे आलोचक प्रेम चन्द जी की आलोचना करते तो हिंदी साहित्य की गति को कितना बल प्राप्त होता ?।

इसी प्रकार आप स्वामी रामदास के दास बोध की अपेक्षा महात्मा निश्चल दास जी के विचार सागर को और रवि बाबू की रचनाओंकी अपेक्षा कबीर की रचनाओं को अधिक आदरणीय समझते थे। इन रचनाओंपर चर्चा चलातेसमय आप बहुधा कहने लगते थे— क्या कहें हिंदीका दुर्भाग्य है जो हिंदी वाले अपनी अच्छी चीजों को छोड़ कर दूसरों की घटिया चीजों पर रीझते फिरते हैं। इन बातो से आपके हिंदी प्रेम और

स्वभाषाभिमान का पता चलता है।

आपको पढ़ने का बेहद शौक था। स्थानीय पुस्तकालयों की आपने सब पुस्तकें पढ़ डाली थीं यद्यपि आप सभी विषयों को पढ़ते थे पर वैद्यक और आध्यात्मिक विषयों के साहित्य पर ही आपको विशेष अभिरुचि रहती थी। आपने इन विषयों की लग भग १००० बहुमूल्य पुस्तकें भी संग्रह की थीं। आप सांगीत, काव्य, चित्र आदि ललित कलाओं के भी रसिक थे। चित्र कलाके तो आप अपूर्व पारखी थे।

वैद्यराज जी को साहित्य सेवा की भी अभिरुचि थी। यदि आप अत्याधिक समय तक रुग्ण न रहते और असमय में ही काल कवलित न हो जाते तो इसमें संदेह नहीं कि आपके द्वारा अच्छी साहित्य सेवा होती। लग भग सात वर्ष पूर्व आपने निरंजन कोष नामक एक आयुर्वेदिक कोष का संपादन कार्य प्रारंभ किया था। जब आप तन मन धन से इस कार्य में संलग्न थे तब राजयक्ष्मा और मधुमेह से भयङ्कर रुप से आक्रान्त हुये। आप दश २ मिनट पर पेशाव के लिये उठतेथे लोग आपको लिखने पढ़ने से मना करते थे पर आप किसी की न सुनते और लग भग आठ घन्टे तक प्रतिदिन कोष का कार्य करते थे। कोई दो वर्ष में आपने यह वृहत ग्रन्थ समाप्त कर ही डाला आपको बाल्य काल से ही वेदान्त विषयक प्रेम तथा साधु महात्माओं से सत्संग करने का बड़ा चाव था। श्री १०८ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य भगवत्पूज्यपाद श्री स्वामी निरंजनदेव सरस्वती आपके गुरु थे उन्हीं के स्मरणार्थ इस विश्वकोष का नाम उन्होंने "निरन्जन कोष" रक्खा। वनौषधि शास्त्र पर भी आपने एक ग्रंथ लिखना प्रारंभ किया था। उसके लिये सम्पूर्ण सामिग्री जुटाली थी कितने ही आवश्यक चित्र संग्रहीत किए थे पर दैव की प्रतारणा से आपकी यह इच्छा पूर्ण न हुई—सब सामिग्री ज्यों की त्यों पड़ी रह गई।

मन्नूलाल जी राजयक्ष्मा और मधुमेह जैसे भयंकर रोगों से पूरे छः वर्ष आक्रान्त रहे। पर अपनी ज़िद और बदपरहेज़ी से अच्छे न होसके यदि आप में यह दुर्गुण न होते तो आप अवश्य अच्छे हो जाते क्यों कि आपके पास इन रोगों की अचूक औषधियां थीं। अनेकप्रसिद्ध स्थानों में अनेक प्रसिद्ध चिकित्सकोंसेआपनेअपनी चिकित्सा कराईपर विश्वास किसीपर न हुआ। अन्तमें आप अपनी ही औषधियों पर निर्भर रहे और यह आपकी उत्तम चिकित्सा का ही परिणाम था जो आप संयम से न रहने पर भी ऐसे रोगों से इतने दिनों तक सामना करते रहे। उस दिन जब आप पड़े२ अपनी पूज्य माता को महात्मा शम्सतबरेज़की कथा सुना रहे थे तब एकाएक आपकी हृदय गति रुक गई। अस्तु—

मन्नूलाल जी कट्टर देश भक्त भी थे। हिंदू मुसलिम एकता के आप कट्टर पक्षपाती थे। आप का विश्वास था कि हिंदू मुसलिम एकता हो सक्ती है और खूब हो सकती है आपके मित्रों में हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानो की अधिकता थी। आपके जीवन में कभी ऐसा अवसर न आया कि मुसलिम मित्र आपसे रुष्ट हुए हों। समाज सुधार के भी आप कट्टर पक्षपाती थे। आप

भार्गव ब्राह्मण थे और आपकी बड़ी इच्छा रहती थी कि हमारी जाति अवनति के अन्धकार से निकलकर उन्नति के प्रकाश में आवे। उस साल भार्गव ब्राह्मण महासभा में आपने बड़े ज़ोर शोर से सहभोज का प्रस्ताव उपस्थित किया था यद्यपि आपकी वक्तृता सुन कर अधिकांश समाज क्षुब्ध हो उठा था पर जाति में आपका ऐसा अपूर्व प्रभाव था कि अन्त से आपका प्रस्ताव सम्पूर्णतया सफलीभूत हुआ। आपकी मृत्यु पर भार्गव महासभा के भूतपूर्व सभापति प० लक्ष्मीप्रसाद पाठक विद्याभूषण ने अपने एक पत्र में लिखा था-"वैद्यराज जी का न रहना आपके कुटुम्ब के लिये ही नहीं किंतु जाति भर के लिये बड़े दुख की बात है। वैद्यराज जी जाति के ऐसे स्तम्भ थे कि उनकी छाया में न जाने कितने भाइयों की गुजर चलती। वे स्वभाव के मृदु उत्साही एवं पराक्रमी थे। उदारता उनकी प्रकृति का असाधारण गुण था। ऐसे व्यक्ति के खो जाने से समाज की बड़ी क्षति हुई है।" इससे पता चलता है कि समाज में मन्नूलाल जी कैसे सम्माननीय समझे जाते थे।

यद्यपि पाठकजी ने अपने पत्र में आपके स्वभाव का कुछ परिचय दे दिया है, फिर भी हम यह विना कहे नहीं रह सकते कि आपका स्वभाव विलक्षण था। जहां आपमें वीरता जन्य कठोरता एवं निर्भयता थी वहां आप में स्वाभाविक मृदुलता, दयालुता, और उदारता भी पूर्ण मात्रा में प्रस्तुत थी। आप बड़े ही प्रसन्नचित्त और विनोदी भी थे। हमने स्वयं देखा है कि आपके छोटे भाई आप पर बिगड़ उठे हैं पर आप मुस्करा रहे हैं। और जहां उनका क्रोध शांत हुआ नहीं कि आपने ऐसा उग्र स्वरूप धारण किया कि किसी की क्या मजाल जो आपकी ओर देख तो सके। ऐसी ही मृदुलता और उग्रता के मध्य आप अपने भरे पूरे कुटुम्ब पर शासन करते थे। माता, पिता गुरु आदि गुरुजनों की भक्ति करना भी आपकी प्रकृति का एक गुण था।

आपके लघु भ्राता ग्वालियर गवर्नमेन्ट मेडीकल डिपार्टमेन्ट से सम्मानपत्र प्राप्त कविराज साहित्य भूषण श्री रामकृष्ण सिलाकारी शास्त्री जो कि स्टेट ग्वालियर जिला भेलसा में इदानीन्तन सुचारु, रूप से अपनी सिद्ध चिकित्सा द्वारा आयुर्वेद का गौरव बढ़ा जनता को लाभ पहुंचा रहे हैं। इन्हीं के समीप प्रातः स्मरणीय वैद्यराज जी के ज्येष्ठ पुत्र कविराज हरिवल्लभ जी सिलाकारी आयुर्वेद विशारद अनुभव प्राप्त कर रहे हैं।

आपही अपने ज्येष्ठ भ्राता की अनुपस्थिति के कारण अप्रकाशित—आयुर्वेदीय बृहद् कोष का संशोधन कर शीघ्र ही प्रकाशित करने वाले हैं।

मन्नूलाल जी के देहावसान से भार्गव ब्राह्मण जाति का एक सुदृढ़ स्तम्भ आयुर्वेद का एक प्रकांड पंडित एक कुशल वैद्य निर्धनों का एक सहायक और उदारता मृदुलता आदि सद्गुणों का एक भान्डार अग्नि सात हो गया। आज उनके कुटुम्बी उनके लिये विलख रहे हैं भार्गव ब्राह्मण समाज अपने एक सपूत के लिये विह्वल हो रही है उनके मित्र उनको वह अलभ्य मुखड़ा याद कर दुख से चंचल हो उठते हैं वैद्यक पत्र उनकी मृत्यु पर दुख प्रकाशित कर रहे हैं? सच है अच्छे के लिये सभी रोते हैं। प्रभु से यही प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनके आत्मीय जनों को, उनका दुस्सह वियोग सहने के लिये शांति शक्ति और धैर्य।

स्व० वैद्यराज जी के अनुभव सिद्ध प्रयोग

प्रसूत रोग पर—

सेंट परसेंट लाभ करने वाला अमोघास्त्र जो कभी व्यर्थ नहीं जाता है साध्यासाध्य किसीभी स्थति में प्रसूत रोगी क्यों न पहुंच गया हो-इसके प्रयोग से एक सप्ताह में पूर्ण लाभ होता है।

प्रयोग—किनगिच वृत्त जिस की पहचान निम्न प्रकार है, इस का चुप४-५फोट तक लम्बा होता है। तथा कन्जा वृत्त के समान पत्ती एवं कांटे होते है। इसमें जो फली लगती है उसमें के बीज को वाल कहते हैं जिस का तैल में व्यवहार होता है। इसकी दो तोलो पत्ती को गौ दुग्ध में अच्छी तरह बांट कर रोगी को प्रातः सेवन करावे बस एक मर्तबा देने की जरूरत है कि रोग दुमदवा कर सात ही दिन में भाग जाता है परन्तु पथ्य का इस में पूर्ण ध्यान रखना पड़ता है यदि थोड़ा भी अपथ्य हुआ कि रोग अपना पूर्व प्रभाव पुनः प्रदर्शित करने लगता है अतः पथ्यापथ्य पर पूर्णरुपेण ध्यान रखने की अत्यन्त आवश्यक्ता है। पथ्य इस महोषधि के सेवन काल में गौदुग्ध जितना रोगी से सेवन किया जाय ले सक्ता है। गेहू की रोटी (अलौनी) गोघृत, दलिया, दुग्ध आदि यही वस्तु सेवन करनी पड़ती है, अपथ्य में संसार की यावनमात्र वस्तु समझना निमक तो इसमें विषवत् ही समझा जाय। इस प्रकार पथ्य पूर्वक एक सप्ताह पर्यन्त इसका सेवन किया जावे, यदि कुछ त्रुटि देखे तो एक सप्ताह और यथा विधि सेवन करादी जावे। यदि जोड़ों में दर्द व शोथ हो गया हो तो इसी के स्वरस से तैल निर्मित कर मर्दन करे।

मधुमेह पर

रामवाण अव्यर्थ औषधि है, इस औषधि से आपको अपनी रुग्णावस्था में कई वार अच्छा लाभ पहुंचा परञ्च कई अन्तराय के कारण पुनः रोग द्वारा ग्रसित होते रहे। उनका वारम्वार यही कथन था कि सारी चिकित्साओं में यदि २०वर्ष के अनुभव से मुझे कोई प्रयोग दीखातो यही और वास्तवमें यदि देखा जाय तो उन्होंने इसी प्रयोग द्वारा अपनी रुग्णावस्था में रहते हुए भी इसी रोग से पीड़ित चार पांच रोगियों को इस भयङ्कर व्याधि से बचाया, आज वही प्रयोग आप लोगों के समक्ष उपस्थित करता हूं।

मधुमेहासवः—

S=ऊमर के बीज, S=सोठ, S=जामुनकी गुठली S=काली मूसली, S=जायफल, S=जावित्री, S=लौंग, S=नागकेशर, S=चोल सुपारी, S=पीपललाख, S=धवईफूल, S=धानियां, S=नागर मौथा, इनका चूर्ण कर S२॥सेर जामुन छाल, S२॥सेर ऊमर छाल, S१। सेर आम की छाल,

१॥सेर वरिया की छाल, S१ सेर कोहा छाल, S। खैर छाल,S। सेमर छाल,S= कुड़ाकी छाल, S= बेल की जड़,S। त्रिफला,S। आमले की गिरी, S= वांसे के पत्ता, S= एंठनी, S= कंजीफूल, S=लोधपठानी,S। बबूरकी फली,S=वायविडंग, S=सुपारी, S= मौथा, S=जाठौन, S=अनार के बक्कल, S।महुआ इनका काढ़ा, S२८ सेर लेना चाहिये,S१.४सेर शहद मिलाना २५दिन जमीन के अन्दर गढ़ा रहने दे बाद को निकाल साफ कर बोतलों में भर कार्क लगा रखले। मात्रा २ तोला प्रातःकाल २ तोलासायंकाल. अनुपान–जल से लेना।

तूतिया ताम्र भस्म–

S२॥ सेर पक्के तूतिया को कूट कर चलनी में छानलो फिर एक कढ़ाही में बिछाकर रख देना, उस चूर्ण को कपड़े से ढांक देना उस कढ़ाही को एक बड़ी कढ़ाई में रखना, फिर S१० सेर पक्का त्रिफला बिना कुटा रख देना जिससे छोटी कढ़ाई ढक जावे, फिर उसमें एक मन पक्का पानी भर कर खुले मकान में रख देना जहां उस कढ़ाही में सूर्यताप तथा रात्रि में चन्द्र शीत पड़ता रहे, और वायु भी अच्छी तरह लगे एकमास बाद त्रिफला को निकाल कर सुखा देना और त्रिफला का जो पानी है वह उत्तम लिखने की स्याही बनगई। छोटी कढाई के नीचे जमा हुआ S॥ ताम्र मिलेगा, उसे खुर्च कर निकाल ले।

इसकी शुद्धि–आक के पत्तों के स्वरस में सातबार बुझावे और एक सेर पक्के इमली के पत्र, आधासेर सेंधा निमक मिलाकर द घंटे औटावें।

भस्म विधि–एक हांडी को तीन कपड़ मिट्टी कर खूब सुखा लेना फिर उसमें पहिले आधा-सेर आंवलासार गंधक शुद्ध पीसकर बिछादेवे उसके ऊपर शुद्ध किया हुआ ताम्र रखना उपर से आधा सेर शुद्ध गंधक का चूर्ण बिछा देवे सराव सम्पुट कर चूल्हे की राख, चिकनी मिट्टी-सैंधानमक सम भाग ले कपड़ छान कर पानी में सान मुख मुद्रा कर देना,सरावमें धूम निकलजाने को एक छिद्र इतना बड़ा करे जिसमें दुअन्नी निकल सके, जब मुद्रा सूख जावे तब मुद्रा पर सात कपड़ मिट्टी करना। बराबर सूख जाने पर हांडी को चूल्हे पर चढा देना क्रम से मन्द, मध्य तीव्र–अग्नि लगाना, अग्नि बराबर चार पहर लगाना स्वाङ्ग शीतल पर मुद्रा खोल हांडी के तले भाग से ताम्र भस्म निकालना, भस्म का वर्ण नीला होगा। वांति आदि दोष नहीं रहेंगे यदि कुछ रहें तो आक के पत्तों के स्वरस में घोट गोला बना कपड़ मिट्टी ७ बार कर फिर वाराह-पुट मे फूंकना।

वङ्ग अमृती करण—

वङ्ग शुद्ध कर १०१ बार सरसों के तैल में बुझा कर भांग का सम्पुट दे खरल कर शीशी में रख लेवे यदि उष्णता शान्त करनी हो तो केले के वृक्ष के नीचे ४० दिन रख दें, बिल्व फल को खोल कर उसके भीतर भर डाट लगा रख देवे यह अत्यन्त वीर्य वर्द्धक है।

कुष्ठ रोग पर—

पाठकगण कुष्ठ जैसा भयङ्कर है आप लोगों से छिपा नहीं है। आपके पास इस महाव्याधि के अनेकानेक रोगी दूर दूर से आकर लाभ उठाते रहे है। प्रयोग निम्न लिखित है।

महामंजिष्टादि क्वाथको स्पिरटमें डालकार्क बन्द कर१० दिनरखनेके बाद छानकर रखते थे इस में से ३ माशा सुबह ३ माशा शाम को २ तोला ठंडे पानी में मिला पिलाना, और चिट्टों पर अमलतास का गूदा तथा आंवलासार गंधक इन दोनों को जल से बांट कर उन पर लगवाते थे इस प्रकार तीन चार मास के प्रयोग से निश्चयात्मक लाभ पहुंचाता है।

अपथ्य—निमक, तैल, गुड़, खटाई, मिर्च, वादी कर व उष्ण पदार्थ ।

पैरारोग—

अर्थात् विशेष रूप से जो रक्तस्राव होता है, यह प्रयोग शतशोनुभूत है। गेरु मंडलावार दुग्ध द्वारा शोधित१॥माशा, लोध पठानी १॥माशा इनको बांटकर गौदुग्ध व घृत से सेवन करें, यह खुराक एक ही समयकी है इस प्रकार प्रातःसायं विधिवत् सेवन कराना चाहिये।

प्रदर रोग पर—

प्रियवर ! इदानीन्तन स्त्री समाज में प्रदर रोग की विशेषता बहुत देखी जाती है यह ऐसा भयङ्कर दुष्परिणामप्रदरोग है जिसमें अन्य महारोगों की उत्पत्ति सहज ही में हो मृत्युमुख में प्रवेशकरना पड़ता है हमारे प्रातःस्मरणीय वैद्यराज जी का स्वानुभूत सिद्ध प्रयोग प्रकट करता हूँ।

प्रयोग—केला की पकी हुई फली४ नग, दालचीनी १॥तोला, लोध ६ माशा, धवई पुष्प ६माशा, छोटी इलायची के बीज ६ माशा, रसोत ६ मा० किसरुआ ६ माशा, नागकेशर ६माशा, माजूफल ३माशा, आम की गोई ६माशा, आमले की गुठली की मिंगी ६माशा, इमली के बीज की मिंगी ६माशा, सोंठ ३माशा, मिश्री ७तोला, गौघृत८ तोला इनका चूर्ण कर कपड़ छन करके फिर घृत मिलावें, मात्रा—६माशा सुबह एवं ६माशा शाम जल से सेवन कर ऊपर से दो घड़ी बाद पात्र भर गौ दुग्ध मिश्री डालकर पिलावे तो सब प्रकार के प्रदर नष्ट होते हैं।

ज्वरेन्द्रवज्र रस---

यह रस समस्त ज्वरों पर अपूर्व लाभ प्रद सिद्ध हुआ है साम्हरश्रृङ्गभस्म, हिङ्गल शुद्ध, वत्सनाभ शुद्ध, कनक बीज शुद्ध, पीपर, मिर्च, सौंठ, पीपरामूल, हरडा, ये ५-५ तोला और चना के पानी में पकाया हुया खुरहल २ तोला, शुद्ध गोदन्ती-हरताल भस्म १॥ तोला, शुद्ध सुहागा ४ तोला, भुना गटेना बीज १० तोला, करेला पंचाङ्ग रस की भावना, तुलसी स्वरस की भावना, सत्यानाशी कटाई के स्वरस की भावना देना, इसमें १२० तोला कज्जली मिलावे, और धतूरे के पत्तों के रस की भावना व अकौवा के पत्तों के रस की भावना दे १ गुमची (रत्ती) प्रमाण वटी निर्माण करना, मात्रा १ वटी से २ वटी तक, अनुपान-तुलसीपत्र व मधु के साथ उपयोग करने से सब जान का जाड़ा देके आने वाला ज्वर किम्वा विपमज्वर तथा बहुत पुराना ज्वर भी जाता है।

बच्चों के सुखी रोग पर-

फटसेरुआ की जड़ टहनी नील में बांध कर धूप देवे बच्चे के गले में बांधना। रविवार—बुधवार प्रातःकाल बच्चे की माता को प्रथम स्नान कराना बाद में शुद्ध वस्त्र पहिने पीछे बालक को स्नान कराकर कपड़े से पोंछ एक खारक की मिंगी पानी में घिस सर्व शरीर में लगावे कोई जगह खाली न रहे। इस प्रक्रिया से सुखी रोग शीघ्र नाश होता है।

दमा की अनुभूत औषधि

सर्प की पुरानी वमीठी जो प्रायः नगर के बाहर हुआ करती है, जितनी प्राचीन से प्राचीन मिले उसकी मिट्टी मगवाकर एक बड़ी नाद में डाल उस में पानी भरदे और रोज सुबह व शाम एक बांस के डन्डे से अच्छी तरह चला दिया करे, इस तरह पांच दिन करे बाद को छटे दिन युक्ति से उस के ऊपर जो पानी अतरा याय। है उसे कढ़ाई में अतरा कर निकालले फिर चूल्हेपर कढ़ाही रख अग्नि जलादेवे जब जलते२ गाढ़ा लेई के समान होजाय और वह पदार्थ नीचे जम जाय तो कढ़ाई नीचे उतार ले बस उतनी कढ़ाई की गर्मी से वह भी शुष्क हो जावेगा इस तरह एक खार समान पदार्थ तयार हो जावेगा।

इसकी २से ४ रत्ती तक बंगला पान में रख सेवनकरे प्रातःमध्याह्नसाय। परहेज-खटाई, मिर्च, तैल, गुड़ चांवल, भटा, उड़द, मसूर, आदि पदार्थ, त्याग देना चाहिये और गौदुग्ध, दलिया, गेहूं की रोटी लौकी, मेथी की भाजी गिल्की आदि का सेवन रखें।

विरेचन चूर्ण-पाचक-दस्तावर--

|= अजवायन, |= सनाय की पत्ती, |- गुलाब फूल सूखे, |- सौफ, |- कालीमिर्च |॥ सेर विटलवण इनका चूर्ण कर ६ माशा रात्रि में सोते समय उष्ण जल से लेना चाहिये इससे प्रातःकाल एक दस्त साफ होकर हाजमा दुरुस्त होता है।

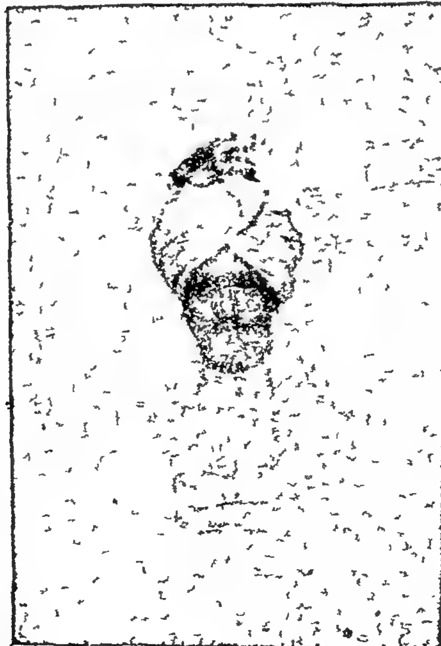


अनुभूत सप्त प्रयोग रत्न

लेखक--स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज सम्पादक-संस्थापक-आरोग्यसिन्धु, प्रवर्त्तक धन्वन्तरि
श्रीधन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ़

वल्लभारिष्ट-१

उशवा ४० तोला, अनन्तमूल ८० तोला, कटेरी की जड़ २० तोला, कचनार की छाल ४० तो०, सिरस की छाल २० तोला, मजीठ २० तोला, चिरायता २० तोला, पित्तपापड़ा २० तोला, गिलोय २० तोला, मुडी २० तोला, सरफोका २० तोला, बबूलकी छाल २० तो० जवासे की जड़ २० तोला, देवदार २० तोला, बकायन की



स्व० लालाराधावल्लभजी वैद्यराज

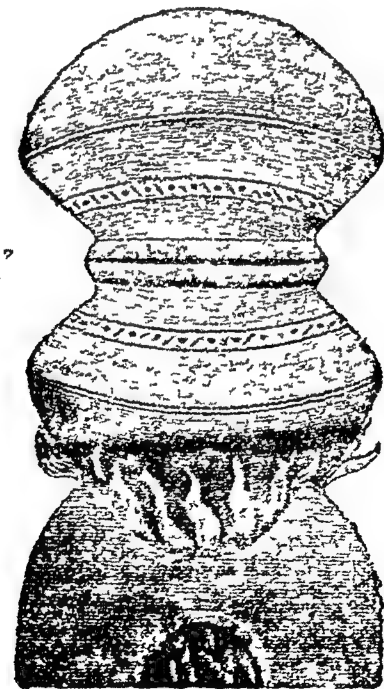
छाल २० तोला, चोबचीनी ४० तोला, इन्द्रायन की जड ४० तोला, इन सबको अधकुट (जौ कुट) कर ५० सेर (सवा मन) पानी में औटाना जब १२॥ सेर पानी रह जाय तब उतार कर छान लेना और उस में निम्न लिखित औषधि अध कुट डालकर एक मट्टी के पात्र में भर कर उस का मुख बन्द कर १ महोने रख अरिष्ट बना लेना चाहिये। कत्था २० तोला त्रिफला ६ तोला, कुटकी २ तो०

उन्नाव २ तोला, मुनक्का २ तोला, नीम के फूल २ तोला, महदी की पत्ती २ तोला चन्दन दोनों २० तोला, गुलबनफशा २ तोला, सितावर २ तोला, धाय के फूल २ तोला, इन्द्रायन की जड़ ५ तोला, वच २ तोला, बावची २ तोला, शहत २ सेर गुड़ २ सेर, मात्रा—१ तोला से पांच तोला तक, बालकों को तथा नाजुक मिजाज़ वालों को १ तोला से २ तोला तक। अनुपान—आधी छटांक पानी और १ तोला सर्वत उन्नाव अथवा शहत १ तोला मिला कर प्रातः और सायकाल पिलाना चाहिये। गुण—इस के सेवन से खूनफिसाद अर्थात् किसी ही कारण से दुष्ट हुआ रक्त, साफ और शुद्ध होजाता है। वात-रक्त कुष्ट, उपदश के चकते इस के द्वारा दूर हो जाते हैं शरीर फोड़ा, फुन्सी रहित कान्तिवान हो जाता है। यह प्रयोग हमारा सैंकड़ो वार का बनाया और हजारो रोगियों पर परीक्षा किया हुआ है। एक वार इसे बना इसके गुण वैद्य महानुभावों को अवश्य देखने चाहिये। +

स्वादिष्ट चूर्ण—७

सोंठ १२ तोला, पीपल छोटी ६ तोला, मिर्च काली १२ तोला, सेंधा निमक १५ तोला, काला निमक १५ तोला, हींग भुनी ३ तोला, जीरा भुना १२ तोला, सखभस्म १२ तोला, नवसादर का जौहर १२ तोला, मूली को क्षार १॥ तोला, इमली का क्षार १॥ तोला, ढाक का क्षार १॥ तो०, आक का क्षार १॥ तोला अपामार्ग क्षार १॥ तोला तिल का क्षार १॥ तोला, चना का क्षार १॥ तोला, यवक्षार २॥ तोला, शोरा कलमी १० तोला, इमलों का सत्व ७॥ तोला, इनका चूर्ण बनाले कपड़ छन कर रख ले।

व्यवहार विधि—भोजनोपरान्त १॥ माशे, गुनगुने जल के साथ सेवन करने से भोजन शीघ्र पचता है अग्नि बढ़ जाती है भूक खुल कर लगती है दस्त साफ होता है। पेट के दर्द को तथा अफरा को १॥ माशे चूर्ण गुनगुने पानी के साथ फांकना। गुल्म, तिल्ली, यकृत में प्रातः साय सेवन कराना चाहिये। नवसादर का जौहर बनाने की विधि-एक हांडी ले उस के पैंदेमें मट्टी का लेप कर सुखा ले और उस में नवसादर को थोड़ा कूट कर डाल दें ऊपर उस हांडी के १ हांडी औंधी लगा कर मुखको मुलतानी मट्टी से कपड़ा द्वारा सन्धि बन्द कर दें ऊपर की हाड़ी पर कपड़ा गीला डाल दें इस यन्त्र को डमरु यन्त्र कहते हैं।



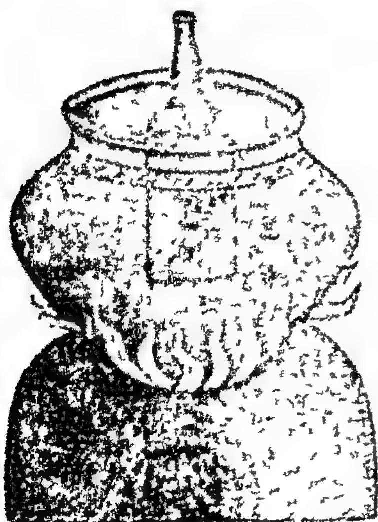
डमरु यन्त्र

+ यह प्रयोग हमारा परीक्षित भी है। हम ने भी इसे बनाकर यश प्राप्त किया है। अतः रक्त विकार के रोगियों को तथा वैद्यों को बना कर अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

—सम्पादक

सन्निपात पर-१

शुद्ध पारद १ तोला, शुद्ध गंधक २ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, लोह भस्म १ तोला, ताम्र-भस्म १ तोला, शुद्ध बच्छ नाग १ तोला, शुद्धहरिताल १ तोला, कौड़ी भस्म १ तोला शुद्ध मन्शिल १ तोला, शुद्ध हिंगुल १ तोला, चीते की छाल १ तोला, हस्त सुन्डी १ तोला, अर्जाम १ तोला, त्रिकुटा ३ तोला, स्वर्णमाक्षिक भस्म १ तोला. विधि प्रथम पारद गंधक की कज्जली करे उस के बाद भस्मों को मिलावे काष्ठौषधि को कपड़ छन कर मिलावे उस के बाद अदरक के रसमें ३ दिन मर्दन करे और निर्गुन्डी के रस मे तथा भांगरे के रस में तीन २ दिन मरदन कर शुष्क करले और उसे " बालुका यन्त्र " में रख २ पहर की अग्निदे स्वांग शीतल होने पर निकाल अदरख के रस में मर्दन कर गोली मूंग बराबर बना लें।



बालुका यन्त्र

बालुका यन्त्र की विधि-एक मट्टी की हांड़ी ले उस के पेंदे पर मट्टी का लेप कर सुखाले उसके बाद उसे भट्टीपर चढ़ादें और उसके भीतर थोड़ी बालू डाल शीशी रक्खे और पुनः बालू डाल नार तक भर दे और भट्टी में अग्नि दें।

व्यवहार विधि-एक एक वटी प्रातः और सायं काल या उपद्रव के समय अद्रक के स्वरस के साथ सेवन करावे। गुण-इस के सेवनसे त्रिदोष दूर हो जाता है सन्निपात के उपद्रव भी जैसे बकना, शीत आना, तन्द्रा, हिचकी, श्वास, नष्ट हो जाते हैं। वैद्यों से प्रार्थना है कि एक बार परीक्षा कर यश प्राप्त कर हमारे परिश्रम को सफल करें।

नेत्र रोग पर-१

एक गज खादी लेकर उसे प्रथम पानी से अच्छी तरह धोकर निचोड़ कर सुखा दें फिर उस कपड़े को नीम के पत्तों के रस में भिगो कर छाया में सुखा ले इस प्रकार ११ बार नीम के पत्तों के रस में, २१ बार त्रिफला के क्वाथ में भिगो २ कर सुखा ले फिर उस की बत्ती बना सरसों के तेल में डाल काजल पारले और उस काजलमें निम्न लिखित औषधि कपड़छनकरमिलाले। काजल १० भाग, सफेदा १० भाग, भीमसेनी-कपूर २ भाग, छोटी हरड़ १ भाग, काली मिर्च १ भाग, फिटकिरी १ भाग, रसौत शुद्ध १ भाग, लवन जोन १ भाग, स्वर्ण माक्षिक १ भाग, सोरा कलमी १ भाग, समुद्र फेन १ भाग, पाठा १ भाग,

यह सूखा रखना हो तब १ कांसे की थाली में, कांसे की कटोरी से गुलाब जल डाल कर छांटे और शुष्क कर रखले यदि गीला करना हो तब सरसों के तैल को पानी में ५०-१०० बार धोकर इस में मिला गीला करलें।

इसको नेत्रों में लगाने से नेत्र सम्बन्धी अनेक रोग नष्ट हो जाते है तथा दृष्टि तेज हो जाती है।

रक्त-श्राव पर -

(क) कमल केशर, नाग केशर असली, लाख, पीपल को, एक एक भाग, मिश्री ३ भाग मिलाकर रख लें। यह रक्त-श्राव को बन्द करने के लिये अति उत्तम औषधि है।

(ख) गौदन्ती हरिताल ५ तोला ले उसे १ सेर नीम के पत्तों के रस में घोट लें और टिकिया बना सराव सम्पुट कर गजपुट में फूंक दे। इस को एक २ रत्ती प्रातः साय सर्वत अनार माशे ६ में मिला कर चटावें।

दन्त मंजन-

बबूर की छाल, मौलसिरी की छाल, सेंधा-निमक, सफेद जीरा अकरकरा, फिटकिरी, लौंग शीतल चीनी, सोंठ, काली मिर्च, पीपल छोटो, त्रिफला, माजूफल, हुलास, बड़ी इलायची, सुपारी मस्तगी, कत्था, लोध, कपूर, बालछड़ इन सबको समान भाग ले कपड़ छन करले और दांतों से मले गरम पानी से कुल्ला करले तब इस से दांत का दर्द, डाढ़ी की टीस, मसूड़ों का फूलना, खून का बहना आदि दांत सम्बन्धी अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं। इसे बना और बेच कर धनोपार्जन कर सकते हैं और रोगी अपनी तकलीफ दूर कर सकते हैं। अनेक बार का परीक्षित और मञ्जनों में सर्व श्रेष्ठ प्रयोग है।

डाक्टरी प्रयोग-

नीम की छाल, चिरायता, कुटकी, गिलोय कड़वे इन्द्रजौ यह पांच औषधियां बीस २ तोला ले जौकुट कर दश सेर पानी में भिगो दूसरे दिन भवका द्वारा अर्क खींचले। यदि पांच सेर अर्क निकले तब उस में निम्न परिमाण में औषधियां मिला लें यदि कम निकले तब कम ले लें। कुईनेन सल्फेट २॥ तोला, एक कांच के पात्र में डाल उस में ऊपर से अर्क में से २० तोला अर्क डाले और २॥ तोला गंधक का तेजाब डाले। तेजाब डालनेसे कुईनेन गल जायगी पानीवत् होजायगी तब उस में ६ माशे कसीस ले कर थोड़े अर्क में खरल कर मिला दें उस के बाद एपसमसाल्ट आध सेर मिला दें तथा टिंचर नक्सवोमिका २ माशे मिलादें और सब को मिला कर अर्क बन जाने पर कपड़ा में छान कर रख ले।

व्यवहार विधि—१ तोला से २॥ तोला तक प्रातः और जूडी के वेग के १ घन्टे पूर्व पिलावे बालकों को थोड़ी मात्रा उनकी आयु के अनुसार दे। गर्भवती स्त्री को नहीं देना चाहिये।

गुण—ज्वर जूडी के लिये राम बाण तिल्ली को भी विशेष लाभ प्रद है। मैलेरिया ज्वर की एक मात्र औषधि है अनेक बार की परीक्षित है। लाल मिर्च, खटाई, तैल, दही, उर्द की दालसे परहेज रक्खें।

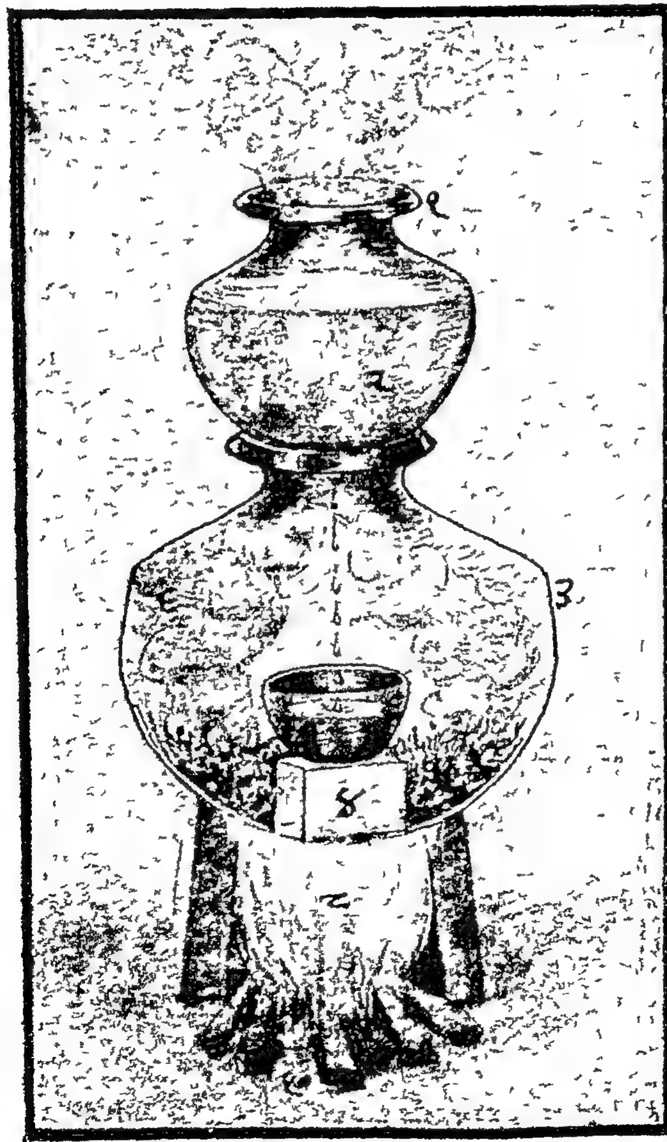
शूल रोग पर—९

निमक पांचों ३७॥ तोला सज्जी लोटिका ७॥ तोला, फिटकिरी २० तोला, नीलाथोथा ७॥ तो० कसीस १० तोला, नोसादर १५ तोला, यवक्षार ७॥ तोला, सुहागा ७॥ तोला, गंधक आमलासार शुद्ध ७॥ तोला, शोराकलमी ६० तोला. हींग ५ तोला, हरताल तबकी शुद्ध ५ तोला, स्वर्णमाक्षिक ५ तो० मन्शिल शुद्ध ५ तो० मूरी का क्षार ५ तो० ताम्र भस्म ५ तोला सब को अधकुट कर "आकाश पातन यन्त्र" द्वाराअर्क निकाल लें। यह एक प्रकार का तेजाब है।

सेवन विधि—दश दश बूंद पानी में मिला कर दिन में ५ बार तक दे सकते हैं गर्भवती स्त्री को नहीं देना चाहिये। बालकों को उनकी अवस्थानुसार थोड़ी मात्रामें देना चाहिये यह दांत से भी न लगे शखद्राव की भांति ही दांत को नुकसान करता है।

गुण—यह खास कर पेट्ट के दर्द के लिये है। चाहें पुराना हो या नया। नये दर्द को १—२ खुराक में ही बन्द कर देता है पुराने के लिये ५—७ दिन सेवन कराना चाहिये। बाकी गुल्म, तिल्ली, यकृत, रोग में भी लाभ दायक है।

आकाश पातन यन्त्र की विधि—प्रथम एक बड़ी हांडी लो, और उसके पेंदे पर मट्टी का लेप कर सुखा दो उस को १ भट्टी या चूले पर रख दो और उसके अन्दर १ ईंट रख दो उस ईंट के आस पास दवा डाल दो उस हांडो के मुख पर १ दूसरी हांडी रख कर उसमें पानी भर दो और ईंट पर एक चीनी या कांच का प्याला रख दो और भट्टी या चूले में अग्नि दो उस से औषधि से अर्क उठकर दूसरी हांडी के पैंदेमें लगेगा और उस से टपक कर प्यालेमें संग्रह होता रहेगा। ऊपर की हांडी का पानी गरम होने पर निकाल कर ठन्डा डाल दो तथा हांडी के ऊपर जो हांडी रक्खी है उसकी सन्धि भी मुलतानी मट्टी और कपड़ा से बन्द कर दो जिस से वाष्प बाहर न निकलने पावे।

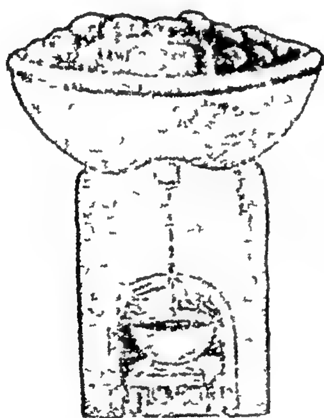


॥ * आकाश पातान यन्त्र * ॥

अद्भुत तिला—७

जायफल, लौंग, सफेद चांदनी, जावित्री अकरकरा, दाल चीनी, सफेद कन्नेर की जड़ की छाल मालकांगनी, केचुआ, बीरबहुट्टी, रेगमाई, कुचला कबूतर की बीट, असगंध, जङ्गली सूअर की चरबी, साड़े की चरबी, बाघ की चरबी, जमालगोटा की मींग, कान का मैल, सब को समान भाग ले। अधकुट करले, और १ दिन बकरी के दूध में भिगोदे दूध इतना डाले कि वह सब को चुपड़ जाय अलग न रहे फिर १ दिन रक्खा रहने दे, बाद को "पाताल यन्त्र" से तेल (तिला) निकाललें।

पाताल यन्त्रकीविधि


पाताल यन्त्र

एक चूले पर एक मट्टी की नांद रक्खे नाद के ऊपर मट्टी का लेप कर ले और नाद के बीच में १ छेद करलें फिर १ शीशी बोतल लेकर उस पर सात कपरोटी करें और सुखालें उस में दवा भर कर तार से या सींकसे उस का मुख बन्द कर दें जिस से दवा बोतल उलटी करने पर न गिरे फिर उस बोतल को नांद के छेद में उस की गर्दन निकाल उलटी रखदें उस शीशी के चारों तरफ एक टीन का डिब्बा बिना ढक्कन और पेंदी का रख उस में बालू भरदें और उस के और पास कन्डा भर कर अग्नि दे अग्नि की गरमी से दवा से तेल निकलेगा और वह शीशी के मुख से सींक या तार के द्वारा बाहर आवेगा अत: चूल्हे में एक ईंट रख उस पर कटोरा रखदें जिस से उस में सब संग्रह हो जाय।

व्यवहार विधि—इन्द्री की सीवन और सुपारी छोड़ बाकी स्थान पर उंगली से धीरे धीरे मले १५–२० मिनट तक। उस के बाद पान को चमेली के तेल में चुपड़ अग्नि पर सेक कर बांध दें ऊपर से कपड़ा लगादें। इस तरह २१ अथवा ३१ दिन के व्यवहार से नपुन्सकता जाती है। यदि फुन्सी हो तब तिला लगाना बन्द करदें जब वह ठीक होजाय तब पुन:लगावें। इस तरह बराबर लगावें अवश्य नपुन्सकता को आराम होगा इन्द्री बलवान और दृढ़ होगी। अनुभूत है परीक्षा प्रार्थनीय है यह प्रयोग बड़ा मूल्यवान और प्रचारणीय है।

अद्वितीय अनुभूत योग

लेखक-कविविनोद, वैद्यभूषण श्रीमान् पं० ठाकुरदत्त जी शर्म्मा
सम्पादक देशोपकारक, तथा अनेक वैद्यक पुस्तकों के रचयिता
अमृतधारा के आविष्कर्ता, लाहौर

योग नम्बर १.

हमारा योग विचित्र प्रकार का है। जिन रोगियों को कुछ मध्यम सा ज्वर रहता है किसी समय या सायं कालको एक आध डिग्री उष्णतांश बढ़ जाता है फेफड़े आदि अङ्ग ठीक प्रतीतहोते हैं परन्तु ज्वर जाता नहीं इसी प्रकार के ज्वर मे डाक्टरों का निश्चय B. Coli का होता है अर्थात् बड़ी आंत में एक प्रकार की सड़ांद होकर वहां ऐसे कीटाणु (Germs)उत्पन्न हो जाते हैं और वे ज्वर का हेतु बन जाते हैं (कई डाक्टर इस बात पर विश्वास नहीं भी करते और वे कहते हैं कि यह सब में होते हैं) उपाय इस का यह कहा जाता है कि विष्ठा से इन कीटाणुओं को लेकर उस से एक सीरम बना कर उसकी जिल्दी (त्वचा में) पिचकारी दी जाती है, और इस से प्राय. लाभ देखा गया है, इस प्रकार की अवस्था में चाहें कीटाणु-पाये जांय अथवा नहीं किन्तु निम्न लिखित योग अद्भुत प्रभाव दि-



श्री प० ठाकुरदत्त जी शर्म्मा वैद्य

खाता है। टाइ फाईड (मोतीज्वर) ज्वर में भी यह योग विचित्र प्रभाव रखता है।

प्रयोग—इमली बाजार से लेकर उसके बीज प्रथक कर देवें, और उसको तवे पर रख ऊपर से प्याला रख, नीचे इतनी आग जलावें कि वह जल कर कोयला होजावें, यह भस्म १ तोला, असली सत्व गिलोइ १ तोला, तवाखीर १ तोला, निमक-मोती १॥ माशा, सब को पीस कर रखलें। मात्रा-२ माशे ठन्डे (ताजे) जल के साथ (कभी आवश्यकता पर अभ्रक भस्म १ रत्ती भी प्रत्येक मात्रा में मिला लेंं)।

निमक मोती बनाने की विधि

अनविंधे मोती एक मट्टी के पात्रमे बन्दकर के १५ सेर उपलों की आंच में रख दें फिर निकाल कर पीस कर जल में मिला दें और कुछ वार हिला कर रख स्वच्छजल नितार लें, इस जल को कड़छे में डाल कर अग्नि पर सुखा लें, श्वेत निमक (लवण) जो कड़छे में रहे उतार कर रख लें। २ तोला मोती

में से १॥ माशे के लगभग निकलना है।

योग नम्बर २-(१)

यह पुराने ज्वरों और दिक के प्रारम्भ में बहुत लाभ दायक है।

प्रयोग—हरिताल वरकी को तीन दिन जल पिप्पिली के जल में खरल करें, फिर दो बराबर के बडे मोती सीपले और उन के भीतर इस खरल की हुई हरताल को लेप करदे दोनो का मुख बन्द करके ऊपर कपरोटी कर के सुखा लेवे, और फिर १२ सेर उपलों के मध्य में रख आंच देदे, स्वांग शीतल होने पर धीरे से निकाल कर मट्टी दूर कर के सोप को पीस रक्खे। मात्रा-१ से २ रत्ती तक, उचित अनुपान से देवे साधारणतः मक्खन, मलाई वा दूध से देते हैं, यदि कफ अधिक होतो शहत पानके रससे अथवा केवल जल से भी दे सकते हैं

योग नम्बर ३-

यह श्वास, कास, की रामबाण औषधि है प्रयोग—उपर्युक्त योग नम्बर २ की विधि से जब हरिताल को दो सीपियों में लेप कर दिया तब उन सीपियों में नीचे लिखी औषधियां जौकुट कर के और डाल दें—फिटकिरी लाल ५ तोला, फिटकिरी श्वेत ३ तोला, पीपल छोटी १ तोला, काली मिर्च १ तोला। सीपियोंमें भर कपरोटीकर सुखा कर ६ सेर उपलों की आंच देदे स्वांग शीतल होने पर सब कुछ पीस कर रखलें। मात्रा—१ से ३ रत्ती। कफ की अधिकता में शर्वत शहतूत या अदरख के रस के साथ देवें।

॥ श्री पतिः पाया त् ॥

धन्वन्तरे !

भवभयार्तिहर ! प्रसीद, वैद्यागमोन्नतिविधौ सततं प्रसीद ॥
शालाक्य शल्य गहने विषये प्रसीदः सीदन्त्यहो तव जगन्ति विभो ! प्रसीद ॥
विख्यातमेतदधुना किल भारतीया. नैरुज्यदा नहि कला विकला त्वदीय ॥
एह्येहि नाथ करुणाकर ! दीनवन्धो। कारुण्यमस्तमिन एतिदयैक सिन्धो ॥
कस्वा वदान्यमधुना मृगयत्वचेता; भेत्तापरिस्थितिमिमांक उदारचेताः ॥
उद्धर्त्तु मुद्धृत करः सवल कनेता, त्वामामनन्ति सुधियः सतत समेताः ॥
माधुर्य्यं धुर्य्यचरणौ स्मरणे ममास्तां, वैद्यागमेष सुमतिश्च मनः समास्ताम् ॥
आयुष्मती च सुखिता जनता सदास्ता, पश्यन्तु तां पिशुनतां नितरां निरस्ताम् ॥

च्यवन प्राश्य का चमत्कारी अनुभव

लेखक-श्री अवन्त विहारी माथुर, "अवन्त,,एम·आई एस·ए,,कविरत्न
(भूतपूर्व सम्पादक "सङ्गीत भास्कर" इत्यादि)

*

वेल को अरनि, खम्भारी और पाटला की-छाल, श्योनाक औ खिरेटी पुनि लोजिए।
शालपर्णी पृष्ठपर्णी, मुग्दपर्णी ,माषपर्णी, पीपल हो छोटी, गोखरू भी साथ कीजिये ॥
काकड़ासिंगी औ आमला कटेरी छोटी बड़ो ; जीवन्ती, मुनका औ अगर, हर्र लीजिए।
ऋषभक,पुष्करमूल ऋद्धि, और जीवक भी; मोथा औ कपूर, मैदा साथ डाल दीजिए॥

* * * *

काकोली औ सांठ जड़ और लाल चन्दन भी; छोटीसी इलायची, विदारीकन्द लीजिए।
जड़ पुनि वांसे, औ काकजघा एक एक ; पल, सब आप साथ साथ मिला दीजिए॥
पञ्चशत आमले हरे, औ जल एक द्रोण ; शेष जल आधा द्रोण, तिल तैल लीजिए।
घृतपल षट , और आधा तोला मिसरी भी , चार पल वशलोचन भी साथ कीजिए॥

* * * *

दालचीनी, द्वै तोला, इलायची भी छोटी, और पीपल भी छोटी द्वै द्वै पल आप लीजिए।
सेज पोत द्वै पल औ नाग केशर भी यही , शहद भी षट पल वहां रख दीजिए॥

विधिः-

छाल वेल कीसे. काकजघा तक अधकुटी , चीनी की कढ़ाई में सभी ये डाल लीजिए।
एक द्रोण जल तथा आमलों को वांध एक कपडे में उस में तुरन्त छोड़ दीजिए॥

* * * *

आधा पानी जल जाय आमले अलग करि , पानी कपड़े में छान दूर रखि लीजिए।
गुठली निकाल ,फेंक गूदा पुनि मन्थ करि , कपड़े में आंवलों को छान छून कीजिए॥
घृत ,तैल डाल खोवा जैसा भूनि ताहि पुनि , तुरत उतार के अलग धर दीजिए।
आंवले उवाले हुए पानी को कढ़ाई डाल, मिसरी मिला के चासनी सी वना लीजिए॥

* * * *

पुनि वशलोचन से लैके नाग केसर लों, औषधि सकल ले कपड़-छन कीजिए।
ठडा हुइ जाइ तव शहद मिलाय अति आनन्द सो युक्त ह्वै 'अवन्त' रख लीजिए॥

गुण—

रक्त, पित्त, क्षय रोग पुनि, अम्लपित्त अरु कास।
उरक्षत संग्रहणी, तथा मूत्र कृच्छ्र अरु श्वास॥

"च्यवन-प्राश" सु नाम है, करै इसे जो ग्रास।
प्रमेह आदिक रोग भी, देवें उसे न त्रास॥

वृद्ध तरुण होजांयगे, खायेंगे यह जौन।
जो सेवन इस का करे, कान्तिवान हो तौन॥

गरमी में स्वादिष्ट अरु शीतल सुख प्रद जान।
इस का सेवन कीजिये, अनुपम औषधि मान॥

वन्ध्यापन जाता रहै, निर्बलता हो दूर।
शक्ति बढ़ै मस्तिष्क की, सेवन हो भर पूर॥

सेवन विधि—

छै माशे से लीजिए, छै तोला परमान।
निर्बल स्त्री पुरुष को छै माशे ही जान॥

किन्तु स्मरण रहे सदा, छै तोला परमान।
इस से अधिक न लीजिए हे भाई विद्वान्॥

दुग्ध परम प्रिय पीजिए गौ माता का लाय।
यदि न मिले तो लीजिए बकरी का भी पाय॥

वह भी यदि मिल नहिं सके, पानी गरम कराय।
सदा गुन गुना गुन गुना, घूंट तीन पी जाय॥

परिशिष्टः—

भूक लगे जब ही तभी, भोजन प्रियवर ! कीजिए।
माफिक आने पर इसे और अधिक लेलीजिए॥

अनुभव मुक्तावली

अर्थात्

अनूठे अनुभूत प्रयोगों का संग्रह

लेखक—श्रीमान वैद्य गोपीनाथ जी गुप्त । भिषग्रत्न सम्पादक आरोग्यदर्पण
अध्यक्ष, स्वास्थ्यसदन, इन्दौर

१—बवासीर और (अर्श) की दवा

रीठेके छिलके को तवे पर जलाकर पीसलें और फिर उस के बराबर पपरिया-कत्था मिला कर खरल करके रक्खें। इस में से १रत्ती दवा मलाई या मक्खन में मिला कर खाने से सात दिन में बवासीर नष्ट हो जाती है इस के सेवन से क़ब्ज़—बवासीर



श्रीमान् वैद्य गोपीनाथ जी गुप्त

अर्श की खाज और मस्सों को बिलकुल आराम हो जाता है खून बन्द हो जाता है यदि हर छठे महीने ७-७ दिन इस दवा का सेवन किया जाय तो अर्श (बवासीर) के फिर उभरनेका डर नहीं रहता। यह प्रयोग एक-सन्यासी को बतलाया हुआ है और इस से सौ में से ९५ रो गियो

को आराम हो जाता है।

परहेज— ३ दिन तक नमक न खाय और सात दिन तक खटाई से भी परहेजरक्खें।

२— दांत और मसूडो के दर्द की दवा

१तोला तूतिया को तवेपर भूनले और १ तोला कत्था को चूल्हे में जला कर कोयला करले फिर दोनों को बारीक पीसलें। इसे मलने से दांतके दर्द औरमसूडों की चीस को तुरन्त आराम हो जाता है। हिलते हुए दांत भी मजबूत होजाते हैं।

३—पान्डु (पीलिया) की दवा

कड़वी तोरई का रस निकालकर नाक के दोनो नथुनों में तीन तीन बूंद डाल दें।

इससे ३दिन तक नाक से पानी बहता रहेगा।

४—(हैजे) का अद्भुत इलाज

यदि विशूचिका (हैजे) के रोगी की नाड़ी छूट गई हो या शरीर ठंडा होगया हो और रोगी के बचने की कोई आशा न हो तब भी हुक्के का सड़ा हुआ पानी एक एक तोला कई बार पिलाने से रोगी बच जाता है।

यदि हैजा शुरू होते ही यह उपाय किया जाय तो तुरन्त लाभ हो।

५— आधा सीसी का उपाय

यदि आधे सिर में दर्द होता हो तो १रत्ती सेंधा नमक को खूब बारीक पीस कर या घिस कर ५ माशे (चालीस रत्ती) पानी में मिला कर जिस ओर दर्द होता हो उस से दूसरी ओर के नथने में (नाक के नसकोरे) में उस को तीन बूंद टपकादें दवा अन्दरतक पहुंच जायगीतोअवश्य आरामहोगा

यह एक अनुपम और राम बाण उपाय है इस के समान दूसरा उपाय मिलना मुश्किल है।

पथ्य— हलवा, जलेबी आदि।

(६) आधासीसी का अन्य उपाय

जमाल गोटा पानी में घिस कर या महीन पीस कर जिस ओर दर्द होता हो उसी ओर भौं से ऊपर माथे पर उस का लेप करदें। लेप बहुत हलका करना चाहिये या सींक अथवा सलाई से पास पास उस की बिन्दियां लगादें या आधे मस्तक पर दो तीन लकीरखींचदें और रोगी से बूझते रहें कि अभी आराम हुआ या नहीं! जब वह कहे कि आराम होगया तो फौरन् भीगे कपड़े से लेप को पोंछ कर उस जगह घी मल दें नहीं तो लेप अधिक देर रहने से छाला पड़ जायगा।

आधा सीसी का यह अद्भुत और अकसीर उपाय है जो अपना चत्मकार दिखलाए बिना नहीं रहता।

नोट— यदि बिन्दी लगाने या लकीर खींचने से आराम न हो तो फिर लेप ही कर देना चाहिये परन्तु इस बात का ध्यान रखना चहिये कि जमाल गोटे का हाथ आंखों को न लगने पावे।

यदि छाला पड़ जाय तो उस से लौनी घी या मक्खन लगावें।

(७) आंख के फूले का इलाज

हर्र की बकली, सफेद बिसखपरा (सांठ) की जड सूखी हुई दोनों को पीस कर ४ पहर तक स्त्री के दुध में खरल करें और वत्तियां बना कर छांह में सुखालें।

सूरज निकलने से पहिले पानी में घिसकर फूले पर लगादें।

इस के लगाने से आंखें दूखनेआजाती हैं और ५ से १२ दिन के भीतर फूले का छेछड़ा आंख से निकल जाता है।

(८) श्वासान्तक शर्बत—

गूलर के पके फल १ सेर, गूलर के पत्ते १सेर, गूलर की छाल १ सेर लेकर अधकुटा कर के ४सेर पानी में ४८ घंटे तक भीगा रहने के बाद पकावें। जब १ सेर पानी रह जाय तो छान कर उस में खजूर से बनी हुई दानेदार १ सेर खांड़ मिलाकर शरबत बनावें। उस में से रोजाना ३ बार २—२ तोले चाट लिया करें। इससे दमा (श्वास) समूल नष्ट हो जाता है।

यह एक अनुभवी यूनानी हकीम साहब का प्रयोग है और उन का कथन है कि स्वयं मुझे दमा था जो इसी शरबत से जातारहा है और ११ साल से अब तक नहीं हुआ।

(६) मधुमेह और गुड़मार बूटी

गुड़मारबूटी एक अद्भुत बनस्पति है। इस के पत्ते चबाने के बाद मिश्री, गुड़ आदि चाहे जो भी मीठा खाया जाय उसमें मिठास मालूम नहीं होता यह बूटी मधुमेह (पेशाब में शकर जाना) के लिए अत्यन्त गुणकारी है।

इस का पंचाङ्ग या सिर्फ पत्ते ३ माशे, सोंठ १॥ माशा और जामन की गुठली १॥ माशा लेकर पीस कर दो पुड़िया बनावे और सुबह शाम एक२ पुड़िया ताजे पानी या फीके दूध के साथ खिलाए। इसी प्रकार लगातार कुछ दिनों तक सेवन करने से रोग नष्ट होजाता है।

(१०) बच्चों के डब्बे की दवा

सत्यानासी के बीज और उसारारेवन्द अर्थात् रेवन्द चीनी का सत बराबर बराबर लेकर पीस कर मसूर के दाने के बराबर गोलियां बनावें।

इस में से बच्चे को १या २ गोली देने से एक दस्त और एक कै होकर आराम हो जाता है।

(१०) उपदंश (आतशक) की दवा—

सत्यानासीकी ताजी जड़ ६ माशे लेकर आधपाव बकरी के दूध में घुटवा कर बिना छाने रोगी को पिलादे, इसी जड़ को बकरी के दूध में घिस कर घावों पर लगावें। इससे ३ दिन में घाव सूखने लगते हैं। दसदिन में आराम होजाता है।

(११) कुकरे अर्थात् रोहों का रगड़ा

नीम के सोंटे (डंडे) में तांबे का पैसा गाढ़ कर एक पीतल के कटोरे में थोड़ासा तिलका तैल डाल कर उस को उस डंडे से घोटें जब तैल गाढ़ा होजाय तो साफ डिबिया या चीनी के बरतन में निकाल कर सुरक्षित रक्खे।

इस से रोहों को शीघ्र आराम होता है और फिर नहीं होते।

यदि अधिक पढ़ने, लिखने से आँखें दुखने लगें तो इसे लगाने से तुरन्त ठन्ड पड़ जाती है।

(१२) आंखों के रोहों और घाव का अकसीर रगड़ा

नीम के सेर डेढ़ सेर हरे पत्ते लेकर हांड़ी में बन्द कर के फूके और फिर राख को पीस कर बारीक करे। इस के बाद उसमें उससे आधा तिल का तैल मिला कर कांसे की थाली में कांसे के कटोरे से २१ दिन तक घुटवावे फिर उसमें पानी

डाल कर हाथ से मलें और पानी निकाल दें। इसी तरह २१ बार धोवें।

इसे सलाई से आंख में लगाना चाहिये रोहों और आंख के घाव के लिये अद्वितीय वस्तु है।

(१३) सांप के ज़हर की दवा–

मोर के अंडे में सफेद मिर्च भर कर मुंह को बन्द करके ४० दिन रक्खा रहने दें और फिर सब को अंडे समेत पीस कर रक्खें।

इसमें से १ रत्ती दवा खिलाने से सांप का ज़हर तुरन्त उतर जाता है रोगी की आंख में यही दवा सुरमे की भांति लगानी चाहिये।

(१४) पसीना लाने की दवा

सौंफ़ को साफ़ करके तवे पर भूनलें और उससे दो गुनी मिश्री को भीगे हुए कपड़े में लपेट कर भूबल में दबादें और थोड़ी देर बाद निकाल कर दोनों चीज़ों को एक साथ पीस लें। इस में से २ तोले दवा गरम पानी के साथ खिलाने से पसीना आकर बुखार उतर जाता है। पेशाब भी खुल कर आता है। और कब्ज नष्ट होकर साफ़ दस्त आता है, जोड़ों का दर्द, बदन का अकड़ाव, शिरदर्द आदि विकार तुरन्त दूर होजाते है।

अंग्रेजी दवा एण्टीफेब्रीन आदि से यह सैकड़ों गुना जियादह काम करता है और उस की तरह इस से रोगी निर्बल भी नहीं होता। यह प्रयोग एक बार श्री पंडित ठाकुरदत्त जी लाहौर वालों ने प्रकाशित किया था और हमने स्वयं इस का अनुभव प्राप्त किया है अत्यन्त गुणकारी है।

(१५) आंख के जाले फूले की दवा–

कबूतर की बीट को साफ़ करके सुरमे की तरह महीन कुटवा कर रक्खें।

इसे सलाई से आंखमें लगाने से जाला, फूली, धुन्ध, पानी बहना और खाज आदि रोग बहुत जल्द दूर होजाते हैं। एक सन्यासी महात्मा का बतलाया हुआ है जिन्होंने इससे सैकड़ों रोगियों को अच्छा किया है।

(१६) अर्श (बवासीर) की दवा–

आकाश बेल के एक छटांक अर्क में ५ कालीमिर्च खूब बारीक घोट कर पिलाएं ईश्वर की कृपा हुई तो तीन दिन में ही फायदा हो जायगा। खूनी और बादी दोनों तरह की बवासीर के लिये लाभदायक है।

(१७) बहरेपन की दवा–

लौंग, अनारकी टोपी और जुन्दबेदस्तर(खटासी) एक२ तोला और सुहागे की खील ३ माशा लेकर सब को तीन तोला बादाम के तेल में अच्छी तरह घोटें फिर उस में दस तोले सिरका मिलाकर एक हलका सा उबाल देकर (थोड़ा पकाकर) शीशी में भरकर रखदें।

इसमें सुबह शाम ४-५ बूंद कानों में डालने से १—२ सप्ताह में बहरापन जाता रहेगा।

नोट— कान में डालने के वक्त दवा को ज़रा गर्म कर लेना चाहिये।

(१८) दूसरा नुसखा

जंगली तुलसी के पत्तों का रस बीस तोला निकाल कर उसमें लाल फिटकरी, केसर, और एलवा ३—३ माशे बारीक पीस कर मिलावें ।

ऊपर वाले नुसखे की तरह थोड़े दिन तक कान में डालने से बहरापन जाता रहता है।

(१९) सोज़ाक की अकसीर दवा

कीकर की कच्ची फली सूखी हुई, कबाबचीनी और सेलखड़ी हरएक १ तोला कमलगट्टे की गिरी, छोटी इलायची के बीज और इन्द्र जौ ६—६ माशे और फिटकरी का फूला ४ माशे लेकर सब को छान, पीस कर रक्खें ।

इस में से ७ माशे दवा प्रातःकाल और सात माशे सायंकाल गाय के दूध की लस्सी के साथ खाने से सोज़ाक बहुत जल्दी नष्ट होजाता है।
नया सोज़ाक तो ३···४ बार खाने से ही बिल्कुल नष्ट होजाता है।

(२०) स्तम्भन वटी—

रूमी सिंदरफ (हिंगलोकरुम), लौंग, केसर, अफीम, हींग, जावित्री जदवार और मस्तगी हर एक १-१ तोला लेकर महीन पीस कर ३ दिन तक प्याज के रस में घुटवावें और झरबेरी के बेर की गुठली के बराबर गोली बनालें।

पहिले दिन आधी गोली दूध के साथ खाकर दो घन्टे बाद स्त्री सम्भोग करें।

दूसरे दिन १ गोली बिना ही दूध के खावें। यह अत्यन्तक वाजीकरण और स्तम्भन दवा है।

(२१) स्तम्भन वटी—

(अफीम रहित रुकावट कीगोलियां)

आक के फूल का जीरा, सफेद कनेर की जड़ की छाल और पठानी लोध हरएक २—२ तोले पखानवेद सत्तशिलाजीत और मस्तगी एक एक तोला। समन्दरसोख, जावित्री, लौंग और केसर ६-६ माशे सब को बड़ के दूध में घोट कर २-२ माशे की गोली बनावें।

सहवाससे १ घन्टा पहिले १ गोली खावें।

अत्यन्त स्तम्भक, वाजीकरण है। किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाती। रोज एक गोली केले के ५ तोले रस के साथ खाने से स्वप्नदोष और वीर्यपतन में अकसीर का काम करती है।

(२२) चेहरे को रङ्ग उज्ज्वल करने के लिए—

यदि रक्त विकार या अन्य किसी कारण से चेहरा श्यामवर्ण होजाय या झाई, धब्बे आदि पड़जांय तो निम्नलिखित उपाय से अत्यन्त शीघ्र चेहरे का पूर्ववत्बल्कि पहिले से भी अधिक उज्ज्वल और चमकदार होजाता है।

उपाय यह है-उन्नाब दस तोले, चोबचीनी नई दस तोले, दोनों को बारीक कूट कर रक्खे और प्रातःसाय ६-६माशे यह चूर्ण २तोले शहदमें मिलाकर चाट लिया करें, अथवा १० दाने उन्नाब और १ तोला चोबचीनी को अधकुटा करके मिट्टी के बरतन में पावभर (२० तोले) पानी में पकाकर आधपाव पानी शेष रहने पर छान कर दोनों समय पीयें। इसके प्रभाव से कुछ दिनों में ही आतशक, खुजली औरगरमी आदि रक्त विकार भी शान्त होजाते हैं।

२३— अतिसार नाशक लेप—

आम की गुठली या छाल को खूब बारीक पीस कर पानी या छाछ में मिलाकर नाभि पर लेप करने से भयङ्कर अतिसार भी तुरन्त रुकजाता है विशेषतः पानी के समान पतले दस्तों में अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। छाल ताजी लेना अधिकउत्तम है और लेप गाढ़ा गाढ़ा करना चाहिए।

(२४)प्रवाहिका तथा आमातिसार—

सोंठका चूर्ण और गुड़ समानभाग लेकर एकत्र मिलाकर कूटलें। इसमें से ३—३ मासे औषधि दिन भर में ४-५ बार गरम पानी के साथ खिलाने से आमातिसार,पेचिस, पेटका दर्द इत्यादि प्रायः १ही दिन में शान्त हो जाते हैं। २-३ दिन में तो अवश्य ही आराम होजाता है। बड़ी गुणकारी वस्तु है।

२४ ब- यदि पेट में आम बहुत अधिक जमा होगई हो तो देवदाली १ तोला अमलतासका गूदा१तोला और गुड़२ तोले लेकरतीनों को यथा सम्भव बारीक पीस कर उस में थोड़ासा अरण्डी या बादामका तेल मिला कर उंगली के बराबर मोटी बत्तियां बनाए। इनमें से १बत्ती रोगी के मलमार्ग में २-२॥ अंगुल तक चढ़ा देने से थोड़ी देर में ही पेट से सब आम निकल जाती है और आमातिसार में होने वाली भयङ्कर उदरपीड़ा तुरन्त शान्त हो जाती है। यदि बत्ती निकल जाय तो उसे धोकर या फिर नई बत्ती बनाकर पुनः लगानी चाहिये जब तक पीड़ा शान्त न होजाय तबतक बार२ बत्ती लगाते रहें।

सरल प्रयोग पंचक

लेखक-श्रीमान् राजवैद्य पं० किशोरीदत्त जी शास्त्री,
सभापति-युक्त-प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन, सम्पादक-चिकित्सक,



प्रथम प्रयोग

पांच तोले अर्क गुलाब में (जो भवका से चुआया हुआ हो) ६ माशे अच्छा अमलतासका गूदा घोल कर थिगा कर छान लेना इस अर्क को जीभ और मुह के छालों में लगाने से अच्छा लाभ होता है।

द्वितीय प्रयोग-

अच्छे मोटे मिलावे मट्टी के खपरे में रख कर जलते कोयलों पर रख देना, जलकर निर्धूम हो जाने पर (कोला हो आने पर) उतारकर रख लेना इन्हें पीस लेना। मात्रा—१ से ३ रत्ती तक। बच्चों को आधी मात्रा। अनुपान-शहत। गुण इससे शीत ऋतु की खांसी में सर्वाधिक लाभ होता है।

नमक लाल मिर्च का परहेज।

तृतीय प्रयोग

काले तिल ५ तोले, काली सज्जी ६ माशे दोनों चीजे बारीक पीसकर थोड़े पानी में पुलटिस की तरह पकाना. इस लेप से गुल्म, आंतो की गांठ का कड़ापन, अफरा निस्सन्देह दूर होता है। लेप गरम किया जाय ऊपर से पत्ता बांधे जाय।



* राजवैद्य किशोरी दत्त जी *

चतुर्थ प्रयोग-

सरसो की खली १० तो०, सेंधा निमक ६ माशे पानी में पीस कर पका कर पुलटिस की तरह लेप करने और ऊपर से अंडी या धरगद के पत्ते बांधने से जोड़ों का दर्द वायु से बधी हुई गांठ और पीड़ा जकड़न निश्चय दूर होती है।

पंचम प्रयोग-

कसीस लेकर शराव सम्पुट में भस्म करना। यह तोल भस्म १ या २ रत्ती प्रमाण से मलाई में खाने से श्वास रोग में बड़ा लाभ होता है।

चमत्कारक दश परीक्षित प्रयोग

लेखक--श्रीमान् कविराज डाक्टर रामनारायण जी वैद्य शास्त्री, कविरत्न
आयुर्वेद विशारद, आयुर्वेद उपाधि परीक्षाओं के परीक्षक, सम्पादक-प्राणाचार्य्य,
तथा अनेक पुस्तक रचयिता-कानपुर,

१ उपदंश पर

संखिया सफेद ६ माशे दाल चिकना १ तोला, रस कपूर १ तोला सिंगरफ रूमी १ तोला।

विधि—

उपर्युक्त सब औषधियों को बारीक पीस कर तीन दिन शराब ब्रांडी में खरल करके छोटी २ टिकियां बनालें। फिर मिट्टी के प्यालों में इन टिकियों को १ करके प्यालों की सन्धि को कपड़मिट्टी कर के बन्द कर दें फिर इस को एक चूल्हे पर रख कर बेरी की लकड़ी की मन्द मन्द आंच दें अंगूठे के बराबर मोटी मोटी लकड़ियां जलती रहे तीन चार घंटे बाद अग्नि को बन्द कर दें। ठंडा होने पर सम्हाल कर खोलें और ऊपर के प्याले में जमी हुई औषधि खुरच कर रखलें।



कविराज डा० रामनारायण जी वैद्य शास्त्री

मात्रा— १ से २ चावल भर मक्खन या मलाई में दें

घी दूध खूब सेवन करें।

रोग—उपदंश और निर्बलता के लिये हजारों निराश रोगियों को इससे लाभ पहुंचता है।

२ कारबोलिक-टूथ-पावडर—

कारबोलिक ऐसिड १ माशा, कपूर २ माशा
छोटी इलायची १ माशा, लौंग १ माशा
मौलसिरी की छाल ६ माशा, कत्था ६ माशा
खरिया मिट्टी६माशा, संगजराहतया सेलखरी२तो०

विधि—पहिले कारबोलिक एसिड और कपूर को खूब मिलाले फिर सब औषधि कूटपीस छान कर उसमें मिलादें और खूब खरल करें।

रोग—दांतों के कीड़ा लगने और मसूड़ों के दर्द में लाभ पहुंचाता है। यह दन्त मन्जन प्रति दिन व्यवहार से बड़ा लाभ करता है।

३ शर्बत जुकाम—

उन्नाब २० नग, सपसतां कलां ६० नग
मुलेठी १ तोला, तुख्म खतमी १ तोला
नीलोफर १ तोला गुल बनफसा १ तो०
बिही दाना १ तोला अडूसा के पत्ते ४०तो०
गोंद बबूल १ तोला कतीरा ६ माशा

विधि—गोंद बबूल और कतीरा को छोड़कर शेष सब औषधियों को कूट कर रात को दो सेर पानी में भिगोदें। सुबह औटाकर मल कर छान लें और १ सेर मिश्री मिलाकर चासनी करें जब शर्बत की तरह होजाय तब गोंद बबूल और कतीरा पीस कर मिलादें। ठन्डा होने पर सम्हाल कर रखें।

मात्रा। ६ माशे से १ तोला तक सुबह शाम।
रोग—कास, श्वास, प्रतिश्याय में हितकर है अन्य औषधियों के साथ अनुपान में भी दे सक्ते हैं। जुकाम के लिये सर्वोत्तम है।

४ नयनामृतांजन—

नौसादर १ तोला फिटकरी भुनी १तो०
समुद्र झाग १तोला लाहौरीनिमक १तो०
नीला थोथा भुना १ माशा

विधि—सब औषधियों को नीम की पत्ती के रस में खूब खरल करें ताकि सुरमा की तरह बारीक हो जाय। सूखने पर रख छोड़ें सलाई से लगाया करें।

रोग—फूला, कुकड़े आदि नेत्र रोगों में हित कर है।

५ सर्वज्वर हारि योग—

अभ्रक भस्म ३ माशा ताम्रभस्म ३ माशा
शुद्ध पारद ३ माशा शुद्ध गंधक ३ माशा
शुद्ध सिंघियो ३ माशे धतूरे के बीज ६ माशे
सोंठ ५ माशा काली मिर्च ५ माशा
पीपल ५ माशा

विधि—पारद गंधक कज्जलीकरके सब औषधियों को पीस लें और मिला कर खूब खरल करें और पानी के साथ एक एक रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा—१ रत्ती सुबह शाम शहद में देने से मैलेरिया, विषमज्वर आदि प्रकार के ज्वरों को दूर करनेवाला परीक्षित प्रयोग है।

गाजर का हलुआ—

गाजर को छील कर कद्दूकस से कसलें१ सेर, दूध गाय का२सेर, घी ।/ पाव भर, शक्कर ।/१॥ पिस्ता ५तोले, जायफल ६माशे, गिरी बादाम५ तोले

चिलगोजा की गिरी ५ तोले,जावित्री ६ माशा,इला यची बड़ी १ तोला,गिरी अखरोट १० तोला,काजू १० तोला,किशमिश १० तोला.इलायचीछोटा १तो० गिरी गोला ५ तोला

मात्रा—गाजर को दूध में पकावे जब खोवा होजाय घी में भून लें। फिर शक्कर की चाशनी करके उसमें गाजर और मेवा तथा सब औषधियां पिसी हुई मिलादें।

मात्रा—२॥ से ५ तोला तक सुबह शाम खावें।

रोग—सब प्रकार की निर्बलता, कास, प्रतिश्याय, नज़ला में लाभदायक है। पाचन शक्ति को बढ़ाता और कोष्टबद्ध को दूर करता है। खाने में भी अत्यन्त स्वादिष्ट है। आज कल गाजर का मौसम है। बना कर लाभ उठाइये।

७ नपुंसकता के लिये—९

आजकल निर्बलता और नपुंसकता का रोग अधिक फैला हुआ है। उसके लिये एक डाक्टरी प्रयोग लिखता हूं।

एकसट्रेक्ट डेमयाना	४ ड्राम
एक्सट्रेक्ट नकसवामीका	२५ ग्रेन
क्लोराइट आफगोल्ड एन्ड सोडियम	३ ग्रेन
फुर्नान मलराम	१ ड्राम
एक्सट्रेक्ट आफ कोका	२५ ग्रेन

विधि—सब औषधियों को मिलाकर १०० गोलियां बराबर २ की बना लीजिये।

मात्रा—१ गोली सुबह शाम भोजन के बाद

रोग—प्रमेह निर्बलता, शीघ्र-पतन, नपुंसकता आदि।

यह वही औषधि है जिसकी खोज में आज कल के नवयुवक रहते हैं। हजारों रोगियों की अनुभव की हुई है।

इसके साथ घी दूध खूब सेवन करना चाहिये

८ उत्तमरक्त शोधक—९

इन्द्रायन की जड़ ५ तोले बावची ५ तोले,नीम की जड़ ५ तोले,गंधक शुद्ध ५ तोले, चोबचीनी १ तो०

विधि—सब औषधियों को कूट पीस छान कर चूर्ण बना रखें।

मात्रा—३ से ६ माशा, सुबह शाम शहद में खावें।

रोग—सब प्रकार के रक्त विकार औरचर्म रोग ४० दिन बराबर सेवन करने से कुष्टभी दूर होजाता है।

९ कोष्ठबद्ध के लिये—९

उसारेरेवन्द १ तोला, दालचीनी १ तोला

विधि—कूट पीस छान कर पानी में खूब खरल करके दो दो रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—१ से ४ गोली तक रोगी का बलाबल देखकर रात को गरम दूध या पानी से दें सुबह पाखाना खुल कर होगा।

१० रक्तार्श के लिये—९

रीठा का छिलका १ तोला रसोत १ तोला

विधि—दोनों को पीसकर पानी में मिलाकर दो दो रत्ती की गोलियां बनालें।

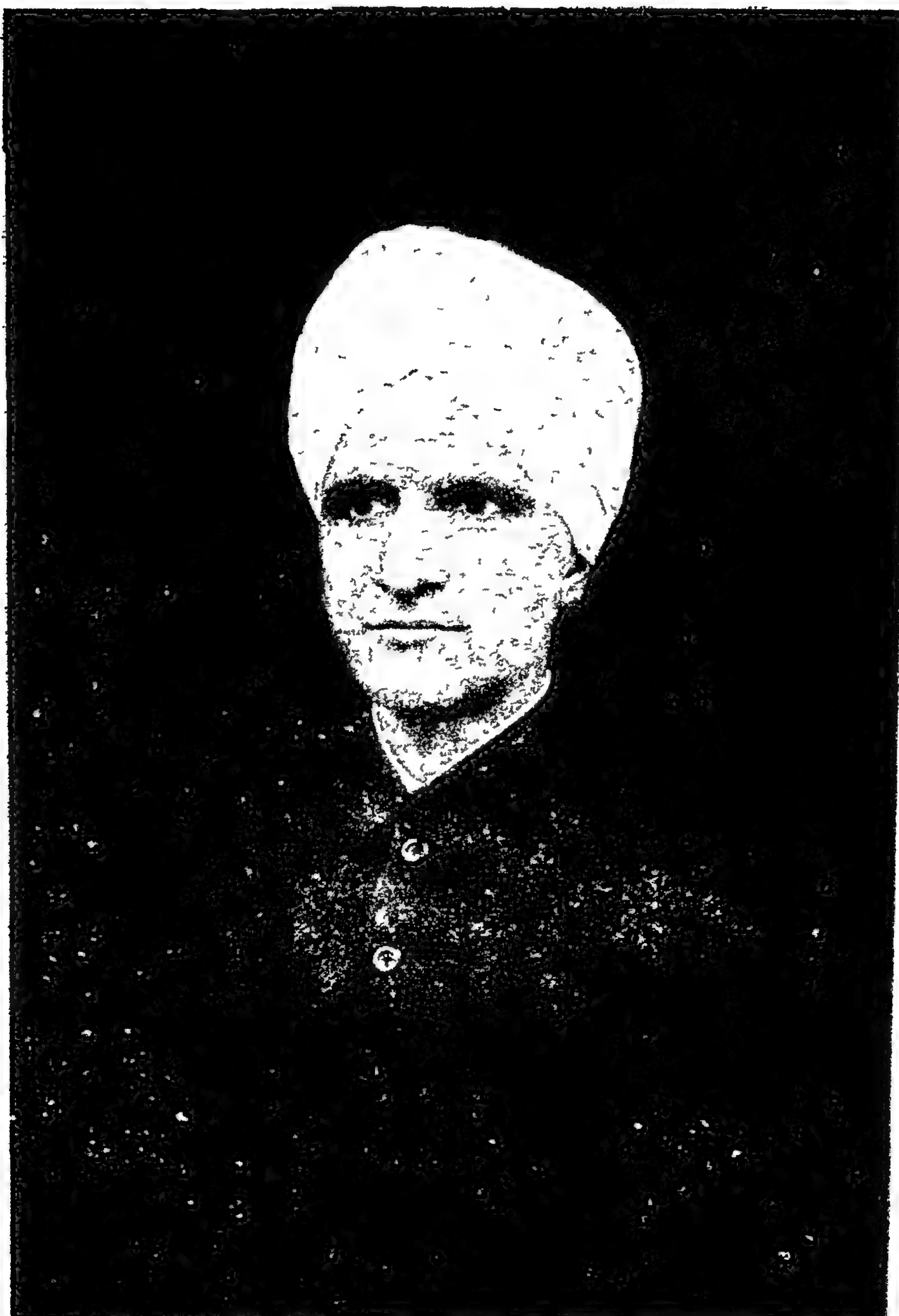
मात्रा—एक गोली सुबह,एक शाम कोपानी केसाथ दें।

अनुभूत प्रयोग पुष्पावली

लेखक—श्रीमान् पं० कृष्णदयालुजी शर्मा, आयुर्वेद पंचानन
सम्पादक घर का वैद्य, अमृतसर

प्रयोग नं० १

कहाजाता है कि दमा दम के साथ जाता है, परन्तु हमारा अनुभव है, कि रोग यदि साध्य है और साथ ही रोगी मन्द भाग्य नहीं तो इस सर्वश्रेष्ठ योग से रोग अवश्य ही नष्ट हो जाता है, यद्यपि यह योग लग भग चार वर्ष



से हुआ है तथापि हमने इसको इस थोड़े से काल में सैकड़ों रोगियों पर प्रयोग करके अति उत्तम पाया है।

आशा है कि धन्वन्तरि के प्रेमी इस को बना कर अवश्य ही लाभ उठावेंगे योग इस प्रकार है।

योग—फिटकरी सफेद १ सेर नीला थो

सखिया सफेद ५ तोला, हरताल वर्किया ५ तो० सब औषधियों को कूट पीस लें, और आकाश यन्त्र द्वारा अर्क खेंच लें, आकाश यन्त्र की विधि इस प्रकार है, तीन बड़ी२ हांडी लेलें, इन में से एक हांडी में औषधियां डाल दें ज्ञात हो कि हांडी इतनी बड़ी होनी चाहिये कि जिसमें कुल दवा पड़ने पर आधा भाग खाली रहे दूसरी हांडी के पेंदे में छोटी अंगुली के समान बीस पचीस छेद निकाल लें और इस हांडी को औषधिवाली हांडी पर दृढ़ता से जोड़ दें फिर इसमें तीन छोटे छोटे ईंट अथवा लोहे के टुकड़े रख कर इन टुकड़ों पर एक इतना बड़ा चीनी का प्याला जिसमें १ सेर पानी आसके धर दें, और तीसरी हांडी को खूब दृढ़ता से प्याले वाली हांडी पर जोड़ दे और इसमें ठन्डा जल भर कर भट्टी पर चढ़ा दे और खूब तीव्र आग जलावें जब ऊपर वाली हांडी का जल गरम होजाये तो उसे निकाल कर नवीन शीतल जल डालदे इसही प्रकार थोड़ी २ देर के पश्चात पानी बदलते रहें, तीन अथवा चार घन्टे तक तीव्र अग्नि जलाकर बन्द करदें और ठन्डा होने पर सावधानी से हांडियों को खोल कर औषधि से भरे हुये प्याले को निकाल लें। और किसी उत्तम बोतल में भरले। इसमें से १० तोले औषधि लेकर किसी बड़ी बोतल में डालें और इसमें सवा सेर अत्युत्तम मधु मिला कर बोतल को खूब हिलावें, बस अब श्वास दमन पूर्ण रूप से तय्यार होगया मात्रा ३ माशा से १ तोला तक परन्तु रोगी को प्रथम रोज केवल तीन माशे ही दें। और फिर क्रमशः बढ़ाते जायें और १ तोला तक ले जायें इसके सेवन के प्रारंभिक १५ दिन तक रोगी को घृत बहुत थोड़ा खाने दे। दो सप्ताह के पश्चात् घृत खूब खिलाना चाहिये। इस औषधि के सेवन काल में रोगी का वर्ण श्याम हो जाया करता है जिससे घबराना नहीं चाहिये। यह रोगी का रोग मुक्त होने का एक लक्षण है रोग मुक्त होने पर रोगी का वर्ण स्वय ही ठीक हो जाया करता करता है पित्त प्रकृति के मनुष्यों को यह औषधि यदि उष्णता करे तो ऐसी अवस्था में रोगी को गाज़बान का अर्क पिलावे घृत खिलावें। यह औषधि अधिक से अधिक दो से चार सप्ताह सेवन की जासकी है प्रायः दो सप्ताह में ही रोगी आरोग्य लाभ कर लेता है।

प्रयोग नं० २

गलगन्ड, गन्डमाल, अपची, और विद्रधि आदि भयकर रोगों पर हमारा विशेष अनुभव है यद्यपि इस रोग के सम्बन्ध में जितने प्रयोग हमारे अनुभव में आये हैं, वह सब प्रायः आयुर्वेदीय ग्रन्थों के ही हैं, तथापि हमारे सेवन कराने आदि का व्यवहार बिलकुल निराला है, और हमारा यह दृढ़ निश्चय है कि इस प्रकार से गलगन्ड, गन्डमालादि के दुःसाध्य से दुः साध्य रोगी भी स्वास्थ्य लाभ कर सक्ते हैं। हमने इस प्रकार से ऐसे२ रोगी अच्छे किये हैं, जो कि तीन तीन बार आप्रेशन कराने और पचास२ गलग्रन्थियां निकालने पर भी वैसे के वैसे हो जाते थे, जिन्हें निरन्तर ज्वर भी रहता था और बड़े२ सिविल सर्जनों से

असाध्य होने का सार्टीफिकेट प्राप्त कर चुके थे और जो स्वयं भी जीवन से हाथ धो बैठे थे, प्यारे वैद्य बन्धुओ क्षमा करना आपको अपने शास्त्रों पर श्रद्धा नहीं रही और सदैव साधु और फ़कीरों से अनुभूत योगों की याचना करते और मारे२ फिरते हैं। सच जानिये आयुर्वेद के निर्माण-कर्ता महा-ऋषियों ने अपने ग्रन्थों में हमारे लिये वह खजाने भरपूर कर रखे हैं जिनकी तुलना आज संसार में कोई भी नहीं कर सकता, आइये आज मैं आपको शार्ङ्गधर में से ही वह रत्न दिखाऊं जो कि माने हुए दुःसाध्य और भयङ्कर रोग गलगंड और गन्ड-मालादि पर शतशः मेरे अनुभव में आचुके हैं, मेरा दिल तो चाहता है कि यहां पर दो, चार, ऐसे रोगियों का विवरण लिखूं जिनको डाक्टरों ने सर्वथा असाध्य जान कर छोड़ दिया था परन्तु स्थानाभाव से मजबूर हूं और केवल योग ही लिख कर बस करता हूं।

हमारा अनुभव इस प्रकार है, १ काञ्चनार गुग्गुल शार्ङ्गधरोक्त, २ विडङ्गारिष्ट शार्ङ्गधरोक्त, ३ लेप भाव प्रकाशोक्त. ४ मुक्तामस्म, ५ मुन्डी और काञ्चनार त्वक का अर्क स्वयं कल्पित (इन पांच औषधियों की आवश्यकता होती है।) काञ्चनार गुगुल के बनाने का प्रकार शार्ङ्गधर में से देख लें, और विडङ्गारिष्ट का योग भी शार्ङ्गधर का ही है, वहां से देख कर तय्यार करलें लेप और अर्क की विधि यहां लिख देते हैं. (लेप) अलसी बीज, सन के बीज, जो (यव) सरसों सफेद, मूलीबीज, सुहांजना बीज, सब औषधियां समभाग लेकर बारीक पीस लें और इसमें गाय के दही की बासी छाछ मिलाकर सिले पर खूब घोट कर मिलालें और इसको गल ग्रन्थियों पर लगावें. । (अर्क) मुन्डी बूटी २ सेर काञ्चनार छाल २ सेर, छाल को यव कुट करलें फिर दोनों को १६सेर पानी में रात्री समय भिगोदें और प्रातः काल यथाविधि इसमें से १२ बोतल अर्क खेंच लें फिर इस अर्क को औषधियों वाली देग में डाल कर १० बोतल अर्क खेंचलें तत्पश्चात १० बोतल अर्क को पुनः देग में डाल दें और आठ बोतल अर्क खेंचलें इसको यावनी परिभाषा में सेह आत्शा अर्क कहते हैं * (तीन बार खेंचा हुआ) इस प्रकार औषधि के सर्व गुण अर्क में आजाते हैं और रोगी को मात्रा भी थोड़ी ही पीनी पड़ती है, लेप का ऊपर वर्णन हो चुका अब खाने की औषधियों का प्रकार सुनिये, प्रातः काल १ माशे से चार माशे तक कांचनार गुगुल रोगी का बलाबल विचार कर २॥ तो० से १० तोले तक उपरोक्त अर्क के साथ खिलावें. इस के १ घन्टा बाद मुक्ता भस्म ¼ रत्ती से ½ रत्ती पर्यन्त २ तोला से २॥ तोला माखन में खिलावें, ज्ञात रहे कि माखन गाय का होना चाहिये इसके २ घन्टे पश्चात भोजन खिलावें, भोजन के ठीक दो घन्टा पश्चात, विडङ्गारिष्ट १। तोले से २॥ तोले पर्यन्त २॥ तोले से ५ तोले उपरोक्त अर्क मिलाकर पिलावें सायंकाल चार पांच बजे के समय प्रातः कालवत् कांचनार गु० अर्क और मुक्ताभस्मादि दें और रात्री के भोजन के पश्चात विडङ्गारिष्ट पिलावे लेप केवल एक ही बार मध्यान्ह काल ही लगाना चाहिये।

कफ प्रधान पदार्थों से रोगी को सदैव बचना चाहिये, दुग्ध और घृतादि गाय का सेवन करावें उड़द की दाल दही छाछ, और खट्टे पदा-

* तीनों बार नवीन२ औषधि डाल कर खींचे तब विशेष गुण प्रद होगा—सम्पादक।

थों से परहेज करावें गेहूं की रोटी मूंग की दाल चणे का झोल, अद्रक और मेथीका शाक कांचनार पुष्पों का शाक आदि-यावन्मात्र कफ नाशक पदार्थ हैं, वह सब रोगी को दें।

प्रयोग नं० ३-७

बहुमूत्र, मधुमेह-रोग में यह योग भी हमारा सैंकड़ों वार का अनुभूत है, रोगी को चाहे दिन रात्रि में सौ वार मूत्र आता हो इस औषधि की एक ही मात्रा से लाभ अनुभव होने लगता है, प्राय एक गोली के सेवन से रोगी को रात भर चैन रहता है।

जायफल, जावित्री, लवङ्ग, केशर धतूरे, के बीज, अफीम, यह सब समान भाग ले और शुद्ध शिलाजीत, सब के समान और उत्तम लोह भस्म शिलाजीत से आधा भाग, ले कूट पीस कर १रत्ती से २ रत्ती पर्यन्त गोली बनावें एक गोली प्रातः और एक सायं गोदुग्ध के साथ दें।

प्रयोग नं० ४-७

इसमें सन्देह नहीं कि आतशक की सैंकड़ों दवायें हैं, परन्तु ऐसी सुलभ और शीघ्र गुणकारी शायद ही कोई औषधि हो, प्रयोग इस प्रकार है—शुद्ध पारा १ तोले लेकर किसी छोटी सी आतशी शीशी में डालें शीशी को खूब कपरोटी करलें और फिर इस में ५ तोले तेजाब गंधक डाल कर शीशी को सुलगते हुए कोयलों की अंगीठी पर धर-दें और खुले मैदान में रखें जब कांच की शीशी के मुख से धुआं निकलना वन्द हो जाय तो शीशी को सावधानी से उठा लें और ठन्डा होने पर शीशी में से श्वेत रङ्ग की पारद भस्म निकाललें, और किसी उत्तम शीशी में रखें, मात्रा १ चावल से ४ चावल तक, हलवे में रख कर निगलवा दे। इस के सेवन से कई रोगियों को वमन, विरेचन भी होते हैं। और कईयों को नहीं भी होते, आतशक का रोगी चाहे कैसा भी गला सड़ा क्यों न हो न्यून से न्यून तीन रोज़ में और अधिक से अधिक एक सप्ताह, मे बिलकुल स्वस्थ हो जाता है।

पथ्यापथ्य—दूध दही से बने हुये पेड़ा बरफी कलाकन्द पदार्थों से सर्वदा परहेज करना चाहिये और इसके अतिरिक्त कोई भी वस्तु वर्जनीय नहीं है, घृत का खूब सेवन करावें यदि रोगी को परहेज न हो तो सुरा और मांस खूब सेवन करावें।

योग नं० ५—

स्तम्भन और पुष्टि के लिये अपूर्व योग—यह योग हमने सहस्रों मनुष्यों को सेवन कराया और बीसों अपने मित्रों को बतलाया इसके सम्बन्ध में कभी किसी ने शिकायत नहीं की, इस की सब सज्जन सराहना करते, खूबी यह है, कि सेवन काल से ५ मिनट के भीतर ही अपना गुण दिखाता है, योग निम्न प्रकार है।

१ सजीवनीसुरा अथवा बरांडी नं० १, तीन छटांक (१५ तोला) उत्तम शुद्ध शिलाजीत १ तोला. केशर कश्मीरी १ तोला, लोबानकौडिया १ तोला, कस्तूरी १ तोला, अम्बर ३ माशा, अफीम ६ माशा, कपूर ३ माशा, सब चीजों को पीस कर सुरा में डाल कर खूब हिलावे, तीन दिन तक पड़ा रहने दे और प्रति दिन दो तीन बार हिला दिया करें। चौथे दिन औषधि को नितार कर किसी कांच की डाट वाली शीशी में सुरक्षित रखें,

मात्रा—५ बूंद से १० बूंद तक दूध के चमचा में मिला कर सेवन करें, इस के ऊपर शक्ति

अनुसार दूध पीवें, यह औषधि वशीकरन से कम नहीं।

योग नं० ६--१

रक्तार्श रोग पर अद्भुत योग--इस की केवल एक दो गोलियों के सेवनसे धारा प्रवाह खून बन्द हो जाता है, और कुछ काल तक निरन्तर सेवन करने से रोग समूल नष्ट हो जाता है, सुगम ऐसा कि पांच मिनट में तयार करलो, योग इस प्रकार है।

शुद्ध रसांजन १ तोला, कपूर १ माशा, दोनो को खूब घोट कर चार पाच रत्ती की गोली बनावे प्रातः सायं एक अथवा २ गोली ताजे जल के साथ सेवन करें, उष्ण और गर्म पदार्थों से परहेज करें।

योग नं० ७--१

इस मलहम को लग भग २५ वर्ष से व्यवहार करते हैं, इस के गुणों का वर्णन करने के लिये तो एक पुस्तक चाहिये परन्तु हम यहां सर्वोपार्थ केवल एक रोगी का हाल लिखते हैं, तीन वर्ष की बात है, कि हमारे अमृतसर नगर के एक रोगी को हमें दिखाया गया जिस की टांग पर एक भयङ्कर व्रण होकर सारी टांगपर फैल गया था, और वह नगर के सब छोटे बड़े डाक्टरो हकीमों और जर्राहों के इलाज करा चुका था, और शहर के बड़े हस्पताल के सिविल सर्जन साहिब ने उसको टांग कटवा देने की सम्मति भी दे दी थी सिविल सर्जन साहिब का कहना था कि यदि टांग को न कटाया जायेगा तो सारे शरीर में विष फैल कर रोगी की जान लेने का हेतु होगा, पाठक वृन्द आप समझ लीजिये कि वह व्रण कैसा होगा परन्तु इस मल्हम के केवल दो सप्ताह लगाने से व्रण आधे से भी अधिक ठीक हो गया, और चार सप्ताह में सर्वथा ठीक होगया, इस मल्हम में विशेष खूबी यह है कि यह व्रणो को फोड भी देता है, और भर भी लाता है।

मल्हम का योग इस प्रकार है—कत्था ५ तोला, राल ५ तोला, तिल तैल ५ तोला, फिटकरी सफेद १। तोला, नीला थोथा १। तोला, जल ५ तो० प्रथम सब सूखी औषधियों को बारीक पीस लें, और तैल, पानी दोनोंको अंगुली से इतना मिलाये कि तक्र की भांति हो जावें, फिर इस में उपरोक्त औषधियां मिला कर दो तीन मिनट अग्नि पर रखें, और हिलाते रहें। बस मल्हम तयार हो गया। व्रण यदि फूट गया हो तो एक कपड़े का फाहा ऐसा बनावें जिस के बीच में छेद करलें, और इसको घाव पर लगावें, प्रतिदिन एक फाहा लगाना चाहिये, और यदि व्रण अभी फूटा न हो तो फाहे में छेद नहीं करना चाहिये, और फाहा लगा कर ऊपर से सेंक करें इस प्रकार करने से एक दो दिन में व्रण अवश्य फूट जायगा फूटने पर पूर्ववत व्यवहार करें।

योग नं० ८—१

सर्व नेत्र रोगों के लिये अद्भुत आयुर्वैदिक लोशन। डाक्टरी लोशन से उत्तम यह लोशन हमारा स्वकल्पित है, नेत्रों के प्रायः सब ही विकारों पर गुणकरता है, विशेष करके दुखती आंखों के लिये तो अमृत तुल्य है, गृहस्थों और धर्मार्थ—

औषधालयों के बड़े ही काम की चीज है, योग इस प्रकार है। अनारदाना ४ तोले गुलाब जल २० तोले अनारदाने को गुलाबजल में रात भर भिगो देवें, और प्रातःकाल मथ कर छान लें फिर इसमें निम्न लिखित चीजें मिलाकर खूब हिलावें। भुनी फिटकरी ६ माशा, नीला थोथा ४ रत्ती, शुद्ध रसाञ्जन ६ माशा, शुद्ध अफीम १ माशा, कपूर देशी १ माशा, सब को पीस कर उपरोक्त गुलाब जल में भिगोदे और दिन में दो तीन बार हिला दिया करें। तत्पश्चात नितार कर रखलें, और ड्रापर से रोगी की आंखों में डालें सर्व प्रकार की नेत्र पीड़ा, खुजली लाली केवल प्रातः सायं दो बार डालने से ही दूर होजाती है, युवा, बाल, वृद्ध स्त्री और पुरुषों के लिये समान लाभ पहुंचाता है।

योग नं० ९—

सुजाकका रोग कैसा हठीला और दुख दायकहै, यह वैद्य बन्धुओं से छिपा हुआ नहीं है, परन्तु जिस अपूर्व अनुभूत योग का हम प्रकाश करने लगे हैं यह सुजाक के लिये रामवाण अव्यर्थ और अचूक है। आशा है कि वैद्य-बन्धु इस योग से एक भारी त्रुटि को पूर्ण करलेंगे और इस, का व्यवहार कर प्रसन्न होंगे, योग इस प्रकार है। १ (खाने की औषधि) कत्था १ तोले, खूब स्यापोशां १ तोले, इलायची छोटी १ तोले, निशास्ता १ तो० शुद्ध बहरोजा ४ तो०, कपूर ४ माशे सबको कूट पीस कर चार चार रत्ती की गोली बनावें एक गोली प्रात. एक सायं बजूरीशर्बत अथवा शीतल जल से सेवन करावें।

२ (पिचकारी की औषधि) गुरदासङ्ग १० तोला फिटकरी १० तो०, रसौत १० तोला, सुरमा १० तो०, कत्था १० तो०, नीला थोथा १। तोला, रस कपूर १। तो०, पानी सवासेर अर्थात १००तो०, सर्वौषधियों को बारीक पीस कर जल में मिलावें इसमें से ३ माशा औषधि लेकर उसमें आठ दस तो० पानी डालकर खूब मिलालें, फिर तीन पिचकारी प्रातः, तीन मध्यान्ह और, तीन रात्री समय करें, इन दोनों अपूर्व औषधियों के व्यवहार से नवीन और पुरातन सबही प्रकार का सुजाक नष्ट होजाता है। दो सप्ताह से अधिक सेवन की आवश्यकता नहीं होती।

योग नं० १०

पामा रोग के लिये यह औषधि हमने सहस्रों ही रोगियों पर परीक्षा की है, शत प्रति शत लाभ करती है। योग इस प्रकार है।

पारा १ तो०, गंधक आंवलासार १ तोला कालीमिर्च १ तोला, नीला थोथा १ तोला, सिंदूर १ तोला, काला जीरा १ तोला, श्वेत जीरा १ तोला प्रथम पारद और गंधक की कज्जली करलें, पश्चात् सर्वौषधियों को बारीक पीस कपड़छान कर कज्जली में मिलालें, और सबके समान गौ घृत मिलाकर व्यवहार करें तीन चार घन्टे बाद शरीर पर गायका गोबर मलकर उष्णोदक से स्नान करें, एक सप्ताह में भयंकर से भयंकर पामा नष्ट हो जाती है।

परीक्षित प्रयोग-भाषा टीका युक्त

लेखक-श्रीमान् चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालु जी शर्म्मा वैद्यराज
सम्पादक—अनुभूत योगमाला और वैद्यपरिचय

भगन्दर रोग पर-१

प्रस्थार्द्धमित चूर्णं चोवचिन्याः समुद्भवम्।
तावन्मानां सितां दत्वां गोघृतं पाद सेरकम्॥
द्वितोल प्रयोज्यस्यात्प्रातःसायंद्दिनेदिने(गोदुग्धानुपानतः) मासमात्रप्रयोगेण भगन्दरमसौ जयेत्॥

चोबचीनी का चूर्ण वल्लपूत ॥ आध सेर, शक्कर ॥ आधसेर मिला कर गो घृत । पाव सेर मिला कर २-२ तोले के, लड्डू बनालें और १-१ प्रातः साय उष्ण गो दुग्ध से लें १ मास के प्रयोग से भगन्दर नष्ट होवेगा और भी उपदंश रक्त, विकार नष्ट करता है।

२-व्रण पर-१

दधिलेप समो लेपो नास्ति ब्रह्माण्ड गोल के।
शूलदाह युतशोथं व्रणस्याशु विनाश येत्॥

दही को कपडे में बांध कर उसका पानी अलग कर फोड़ों पर बांध देने से दाह शूल को नाश करता है निकलते हुये फोड़ेको बैठालता है और निकले को फोड़ता और भर कर अच्छा भी करताहै।



श्री० पं० विश्वेश्वरदयालु जी वैद्य

३-प्रतिश्याय पर-१

पलदर्धिकर्षमित गुडञ्च-त्रिमाषमानंमरिचंतथाहि
प्रभात् कालेतु नरायुभुञ्जन्-मुक्तोभवेत्विकृतपीनसेन

दही ४ तो०गुड़ १ तो० काली मिर्च ३ मा०सब को मिला कर प्रातःकाल तीन दिन देने से बिगड़ा (शुष्क) जुकाम उपद्रवयुक्त (नाक-मुंहमें दुर्गन्ध गलापड़ जाना कांस स्वांस) नष्ट होता है—

४-प्रतिश्याय के लिये-१

यवानिकाया खलु चूर्णकस्य-
गंधंविगाह्य पोटलिकांविधाय
एकेन धसेण सुसिद्ध योगः।
घोरप्रतिश्यायमया करोति॥

देशी अजमायन के चूर्ण को वस्त्र में बांधकर सूंघने से उसी दिन जुकाम नष्ट होजाता है और कोईभी हानि नहीं करता।

५-सर्वोत्थ व्रणे-१

कपालास्थिभवं भस्म कर्षमेकं भिषग्वरः।
टङ्क टङ्कं क्षिपेत्तत्र सूतं गंधं समततः॥
तिलोद्भूते पले तैले सिक्थं कर्षमानकम्।
दत्वामलापहं युक्त्या सर्वं व्रणविनाशकः॥

मनुष्य की खोपड़ी की भस्म का चूर्ण वस्त्रपूत १ तोला, पारा गंधक की कज्जली ६ मासे, तिलतैल ४ तोला, मॉम १ तोला, तैल को गरम कर मॉम मिला समस्त वस्तुयें डाल कर एक दिन घोटना यह असाध्य से असाध्य व्रणों को भरने में प्रसिद्ध है।

प्लीहायां—

सल्फेट आफ मगनेसिया २०,तो० फैराई इट स्लीटरस क्लोराइड ६ माशे. सल्फ्यूरिकएे० २० बूंद फैराई सल्फास ४ माशे,एमोनिया क्लोराइड २ तो० कुनाइन सल्फास ४ मा०, १ बोतल अर्क सौंफ में, उपरोक्त अर्क, किसी डाक्टर द्वारा बनवा लेना, प्रातः २॥ तो० अर्क भोजन के ३ घन्टे बाद २॥ तो० रात्रि को सोते समय-भोजन प्रातः मीठा मिला गोय का दूध, मध्याह्नको दूध भात रात्रि को गेहूं के फुलका वा मूंग की दाल दूध घी ज्यादा, दस्त होने पर मात्रा कम करना।

प्लीहायां—

जलेपलार्धके देय लोहासवन्तु कर्षकम्।
दशबिन्दूनि निक्षिप्य गंधद्राव डिलस्यच॥

मिक्श्चर मग्नेसिय तोल दत्वा मात्रां प्रयोजयेत्।
माषकेनार्क लवणेन प्रातः सायतु रोगिणे॥

कच्छपोन्नताप्लीहा कठोरोदर व्यापिनी।
विलय याति योगेन यथा ब्रह्मणि योगिनः॥

अर्थ—दो तोले जल में एक तोला लोहासव शास्त्रीय (इसका योग नीचेदेखो) और डिल किये हुये गंधकतेजाव के १० विन्दु (एक तोला गधक तेजाब को १ तोला जल में मिला देने से डिल हो जाता है) मगनेसियामिक्श्चर १ तोला (मगनेसिया सल्फास १ सेर को १सेर गरमपानी में घोल कर छान लेने से मगनेसिया मिक्श्चर तयार हो जाता है।) यह एक मात्रा बनजाती है। इसके साथ अर्क लवण १ माशा प्रातः साय देने से थोड़े दिन में बड़ी से बड़ी समस्त पेट में व्याप्त हुई प्लीहा इस प्रकार लय हो जाती है जैसे योगी ब्रह्म में।

८—लोहासव—

लोहचूर्णंत्रिकटुकं त्रिफलां चयवानिकाम्।
विडगं मुस्तकं चित्रं चतुः संख्यापलं पृथक्॥
धातकी कुसुमानांतु प्रक्षिपेत्पलविंशतिम्।
चूर्णीकृत्यततः क्षौद्रं चतुः षष्टिपलं क्षिपेत्॥
दद्यादगुडतुलां तत्र जलद्रोणद्वयं तथा।
घृतभाण्डे विनिक्षिप्य निदध्यान्मासमात्रकम्॥
लोहासवममुं मर्त्यः पिबेद्वह्निकरं परम्।
पाण्डुश्वयथुगुल्मानि जठराण्यर्शसां रुजम्॥
कुष्ठप्लीहामयं कण्डुं कासश्वास भगन्दरम्।
अरोचकंचग्रहणीं हृद्रोगंच विनाशयेत्॥

अर्थ—लोह भस्म १६ तो०, सोंठ, मिर्च, पीपल हर्रा, बहेरा, आंवला, अजवाइन, बाइबिडङ्ग, नागरमोथा, चीतामूल छाल, प्रत्येक १६-१६ तोला धाय के फूल ८० तो० पुराना मधु २५६ तोला, गुड ४०० तोला, जल ३२ सेर में ये दवायें कूट कर डाल दे और घृत भाण्ड में भर कर मुख बन्द करके एक मास तक रक्खा रहने दें बादको छान कर काम में लायें यह लोहासव अग्निदीप्त करता है, पाण्डु शोथ, गुल्म, उदर, रोग, अर्श, कुष्ठ, प्लीहा, खुजली, कास, श्वास भगन्दर अरुचि हृद्रोग संग्रहणी को दूर करता है।

इसमें

प्रथम वमन विधिः

मदन फलस्य चूर्णं पचकर्षमितं सुधी।
मधुकशाल्ययोः क्वाथे द्वित्रिवार विभावयेत्॥
पिष्ट्वासंशोध्य क्वाथेन कर्षारभ्य पलान्मितम्।
बल कालवयो वीक्ष्य मात्रायोज्या भिषग्वरः॥
अनुपाने प्रदातव्यं मधुयष्टिद्विकर्षकम्।
पञ्चपिण्डीत कस्यैवः नीरे प्रस्थमिते पचेत्॥
अर्धावशेषित कृत्वा वमनाय प्रयोजयेत्।
निर्गच्छेत् वहिः पित्त दूषित श्लेष्म निश्चितम्॥
नहिस्यान्निर्मल कोष्ठं अन्येद्युश्चपुनर्ददेत्।
पश्चाद्भेषज दद्यात् वीक्ष्य कोष्ट सुनिर्मलं॥

५ तोला मयनफल चूर्ण में मोरेठी और मैनफल के क्वाथ की २-३ भावना देकर सुखा ले और पीस कर रख ले १ तोला से ४ तोला तक बल काल, उम्र देख नीचे के क्वाथ से दे, मोरेठी २ तोला मदनफल ५ तोला को कूट कर १ सेर जल में पकावे आधा रहने पर उतार छान चूर्ण की फंकी लगा क्वाथ पिला दे इस से वमन आवेगी यदि पीला नीला पित्तका निकलना वन्द न हो अर्थात् कोष्ठ शुद्ध न हो तो एकदिन बीच में देकर पुनःउपरोक्त क्रिया से वमन करावे जब बिलकुल कोष्ट साफ होजाय तब नीचे लिखी दवाइयों का उपयोग करें।

१० वात कफ नाशक योग

पथ्याधात्रिविभीतकापणकणाशृङ्गीञ्चविश्वउमाम्
भार्गीपुष्करमूल पञ्चलवण पञ्चाङ्गकं सिहिनः॥
रम्य चूर्णमिद चकार विधिना त्वष्णेन वाराददेत्
हिक्कां श्वास मरोचकञ्चकसन नाश तणेन व्रजेत्॥

हर्र, आमला, बहेरा की छाल, मिर्च पीपल काकड़ा सिंगी, सांठ अलसी बीज, भारगी, पुष्करमूल, पांचों नमक(सेंधा, काला, सांभर बिड कांच) भट कटैया का पञ्चाङ्ग (फल,फूल, पत्र, शाख; जड़,) का महीन चूर्ण बना कर ३ से ६ मा० तक गरम जल से प्रातः साय देने से हिक्का, कास, श्वास अरुचि नष्ट होती है। वह २१ दिन सेवन करे पुनः निम्न प्रयोग करें।

११ अलसी प्रयोग

बीजन्तुमायास्तु कराहभृष्टं पलप्रमाणशितशर्कराया
कर्षप्रमाण खलुकोल चूर्णं द्विकर्ष मानांमधुनागुटीश्च
साय प्रातः प्रयोज्येयं श्वासनाशाय रोगिणे।
होरामात्रं जल तत्र बुद्धिमान् दूरतस्त्यजेत्॥

अलसी बीज ५ तोला,को कड़ाही में डाल भून ले बाद को महीन चूर्ण बनाले और ५ तोला मिश्री और १ तोला काली मिर्च का चूर्ण मिला शहद से २-२ तोला की गोलियां बना प्रातःसाय दे। गोली खानेके बाद १ घंटे तक जल पीना मना है।

१२ कफ द्रावक

अर्कदुग्धेन संभाव्य लवणानां चतुष्टयम्।
अर्कपत्रैस्तु सवेष्ट्य पुटेत् गजपुटे सुधी॥
स्वांगशीत समादाय श्लक्ष्ण संचूर्ण्य यत्नतः
वनप्सायोगतो गुटिकां निर्माय चणकोन्मिताम्॥
भोजनान्ते गिलेद् युक्त्या एकद्वि वटिकां शुभां।
पंचघटिका मित वारि वार्यतेतु शुभैषिणा॥

अर्थ—चोरशु कम (खारी, सेंधा, काला, सांभर) समभाग लेकर अर्क दुग्ध में एकदिन घोट गोला बनाकर अर्क पत्रों में लपेट शराव सपुट में रख १५ सेर की अग्नि में फूंक दे शीतल होने पर निकाल पीसले और शर्बत वनप्सा (अभावे मधु) में चनाके समान गोलियां बनावे, भोजनके बाद १ या

दो गोली निगल जावें और२घन्टे पानी मपिये जमा हुआ कफ कुछ काल,सेवनसे निकल जावेगा और श्वासादि रोग नष्ट होजावेंगे।

१३—वांसारिष्ट

मृतंसजीवनीतः शत तोलकांहि ।
सिंहीदलोत्थं तुस्वरसं तथाहि ॥
सितापदेया व्योमयुगोन्मिता हि ।
द्रव्याणि दद्याच्चसु निम्न गानि ॥
यष्ठासत्वाविभर्ति कोलकलैवलानील कर्षद्वयम् ।
शाल्केकन्द्रहिफेनकर्कट सुरूपाख्यैककर्षोन्मितम् ।
एतद्भेषजजातकं परिक्षिपेत् संकुट्यमृद्भाण्डके ।
मासाज्जातरसंविगाल्यवभनात् माषत्रयंश्वासनुत्

अर्थ—मृतसंजीवनी सुरा १०० तोला, वासापत्रस्व रस १०० तो०, मिश्री ४० तो०, मोरेठी सत्व, वहेरा की वकली, मिर्च स्याह, लोध, इलायची, तालीसपत्र प्रत्येक २–२ तो०, जायफल, कपूर, अफीम, कांकड़ासिंगी, भारगी, प्रत्येक १–१तो० को कूटपीस कर उक्त दवाइयों में डाल मिट्टी के पात्र में बन्द कर रखदे एक मास वाद निकाल छान कर३–३ माशा की मात्रा से जल में मिला प्रयोग करें यह श्वास रोग की अमूल्य अद्भुत गुणकारी दवा है ॥

१४—दन्त मंजन

बब्बूल काष्ठ संजातं कृष्ण शीतमङ्गारकम् ।
दशकर्ष मितं माया फलं हुक्कागुल्लं तथा ॥
पूग भूतिर्मस्तकी च खादिरः सिन्धु देशजम् ।
पंच कर्षंच प्रत्येक मेलाबीजं चकट्फलम् ॥
प्रथक कर्ष मितं चन्द्रो द्विकर्षश्चूर्णयेद् भिषक् ।
वस्त्रपूतं चतत्कृत्वा काचकुप्यां ततोन्यसेत् ॥
निद्रा पूर्वक्षणे प्रातर्भोजनान्ते चमत्यहम् ।
उभयोर्भाग योरेतत् द्विजानां परिधर्षयेत् ॥
सर्वान् दन्तभवान् रोगान् हंत्येतत् प्रतिसारणम् ।

अर्थ—बब्बूल का कोयला तो० १०, माजूफल, हुक्के का गुल, सुपारीकी राख,रूमीमस्तंगी कत्था, सेंधानमक, ये प्रत्येक ५–५ तो०,इलायची के बीज, कायफल. ये १–१ तो० इनका चूर्ण कर वस्त्र मेंछानकरकांच कीशीशी में रखे,सोने के पहिले प्रातः काल में भोजन करने के बाद यह चूर्ण दांतों के भीतर व जू तथा बाहर की तरफ रगड़ो यह प्रातिसार या सम्पूर्ण दांत के रोगोंको नाशता है ।

परीक्षित प्रयोगावली

लेखक—श्रीमान् वैद्यभूषण श्यामलाल जी सुहृद M., A. I. S.
सम्पादक—सुखमार्ग, बरानन्दी

मूर्च्छा नाशक सुगंधी—७

सन्निपात, हिस्टीरिया, उन्माद, तथा सर्प बिच्छू आदि जानवरों के काटे से जो रोगी मूर्छित पड़ा हो यह सुंघनी उसकी मूर्छा हटा कर चैतन्यता लाती है।

बनानेकी विधिः

कपूर ३ मासे, साफ नवसादर १। तो० बिना बुझा चूना १। सवा तोला सब को कूट छान कर डाटदारशीशी में रखना चाहिये

उपयोग :—रोगी बेहोश पड़ा हो, दांतो मिच गई हो कोई दवा भी न खा पी सक्ता हो, तो ऐसे समय में ये दवा रोगी की नाकके पास लेजा कर सुघावें या फूस की नली द्वारा नाक में अन्दर डाल दें। बस-इसकी गन्ध से मूर्छा हट जावेगी। यदि एक वार में मूर्छा न भी हटे तादुवारा करने से रोगी अवश्य चैतन्यहोकर अपना समाचार कहने लगेगा। किसी को छींक आजाती है किसी को नहीं भी आती, लेकिनरोगी को चैतन्यता अवश्य आजातीहै, और वह रोगभी कम पड़जाता है। मूर्छा हटने पर अपना अन्यउपाय करना चाहिये। यह मूर्छा नाशक सुघनी कितने ही रोगियों पर अपना अद्भुत फल दिखा चुकी है।

* वैद्यभूषण श्यामलाल जी सुहृद *

जूड़ी, बुखार, व तिल्ली की दवा

सल्फेट कोनैन ३ ड्राम, सलफ्यूरिक एसिड ३ ड्राम, टिंचर चिराटा ३ ड्राम, अपसम साल्ट २ औंस, शुद्ध कसीस १ औंस, पानी १० औंस।

बनाने की विधि—कोनैन को ऐसिड में खूब हल कर के टिंचर और पानी को मिला दें। फिर

साल्ट और कसीस पीस कर मिला दें और छान कर कागदार शीशी में रक्खें।

मात्रा—२ ड्राम दवा, १ औंस ताजी जल के साथ शाम सुबह देना चाहिये। यदि ज्वर जाड़ा लेकर बढ़ता घटता हो तो जाड़े से पहले २-२ घन्टे के अन्दर से तीन खुराकें दे देना चाहिये। हर तरह का जाड़ा रुक जावेगा। खाने को दूध साबूदाना दलिया आदि हल्की चीज देनी चाहिये।

मैलेरिया बिगड़गया हो, शरीरकमजोर पीला पड़ गया हो, तिल्ली बढ़ गई हो, भूख न रही हो, और हड्डी ही हड्डी दीखती हो तो इस दवा के इस्तैमाल से बड़ा लाभहोता है। मेरे यहां सैकड़ों ऐसे रोगी इस दवा से प्रति वर्ष आराम होते हैं।

अतीसार-दस्तों की दवा-

अफीम ६ माशे, कपूर ६ माशे, सिन्दरफ़ ६ मा० इन्द्रायन ६ माशे, जायफल दक्षिणी ६ माशे, फूला सुहागा ६ माशे।

बनाने की विधि-सब को कूट छान कर २-२ रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—ताजी जल के साथ १-१ गोली दिन रात में, रोग देख कर ३-४ वार देवें। आंव, खून व हैजा आदि के कैसे ही भयङ्कर दस्त हो उन्हें फौरन रोक देती है और दर्द व अफरा नहीं लाती। मल बांध कर मूत्र अलहदा ला देती है।

हमारे यहां ऐसा कोई दिन खाली नहीं जाता कि जिस में १-२ रोगियों को यह गोलियां न दी जाती हों। यह कपूर रस से मिलती हैं।

रक्तार्श (४)

रसांजन (रसौत) ३-३ माशे जल के साथ खिलाने से २-३ खुराक में ही खून का जाना बन्द हो आता है। जिन रोगियों को बवासीर से पाव पाव भर रक्त गया है, और सब पीले पड़ गये थे शोथ भी आने लगा था, दुर्बलता के कारण उठने बैठने को शक्ति न रही थी, सिर्फ रसौत के सेवन से खून बन्द होकर फायदा हो गया है।

पान्डु के लिये (५)

लोह चूर्ण पुरानी तलवारों का १६ पल, त्रिकुटा १२ पल, त्रिफला—१२ पल, यवासा ४ पल वायविडङ्ग ४ पल, चित्रक ४ पल, मौथा ४ पल शहद ६४ पल, गुड़ १०० पल, जल ५१२ पल,

बनाने की विधि—कूटने वाली औषधियों को चूर्ण कर चिकने मिट्टी के कमोरे में लोह चूर्ण से लेकर जल तक सब चीजों को डाल मुंह बन्द कर के महीने तक जमीन में गाढ़ दे, अथवा दो महीने तक अन्धेरे में रख छोड़े, फिर निकाल छान कर बोतल में भरले। यह वैद्यक शास्त्रों में लोहासव का योग है। लेकिन हम इस में लोह चूर्ण विशेष डलवाते हैं।

मात्रा—इसको १॥ डेढ़ तोला बराबर का पानी मिला कर शाम सुबह पीने से पान्डु कामला रोग दूर होते है। जो रोगी पांडु रोग से पीले पड़ गये थे, सूजन बढ़ गई थी। भूख मारी गई थी ऐसे कष्ट साध्य रोगियों को भी इस ने अपना फल दिखलाया है, पान्डु के जितनेभी रोगी हमारे यहां

आते हैं। सब को यही सेवन कराते हैं, रोग दूर होकर बदन पर सुर्खी आजाती है।

गुरदे के दर्द को (६)

स्प्रिट क्लोरोफार्म २५ बूंद, ओपियम २ ग्रेन ओइलपिपरमेंट १० बूंद, पानी १ औंस।

बनाने की विधि—ओपियम को इन दोनों पदार्थों में मिलालें. और फिर पानी को मिलावें, यह एक खुराक है, इससे गुरदे का दर्द फौरन दूर होजाता है। रोगी का पेशाब रुक गया हो पेट फूल गया हो और दर्द से रोगी बहुत ही कुछ ड-कराता हो तो इसकी एक खुराक देने से फौरन ही दर्द बन्द होकर नींद आने लगती है। एक बार हरदुआगञ्ज के नज़दीक कलाई गांव में एक रोगी को देखने मुझे बुलाने को सवारी भेजी, मैं रोगी की चिकित्सा को जारहा था लेकिन फिर भी रा-स्ते में रोगी का दूसरा हरकारा मिला और बोला कि वैद्य जी हमने कितनी ही दवा की हैं कोई भी कामयाब नहीं हुई आप इस तेज़ दौड़ने वाले घोड़े पर सवार होकर भगाइये, रोगी की हालत बहुत ख़राब है, घर वाले भी सब बेचैन हैं, मुहल्ले वाले आपका बड़ा भारी इन्तजार कर चुके हैं। मैं ज्यों ही पहुंचा तो सब स्त्री पुरुष हकीम जी आगये, हकीम जी आगये कहने लगे ? मैंने जाकर हालत देखी तो बड़ी व्याकुलता थी, रोगी को धीरज देकर उपरोक्त दवा की एक ख़ुराक दी। बस दवा देते ही झोंक सा लग गया, एक दम दर्द बन्द होगया और रोगी को ४ घंटे तक बड़ी गहरी नींद आई। तब से गुरदे के रोगियों को मैं यही दवा देता हूं, और तत्क्षण दर्द बन्द होजाता है।

बच्चे को दस्त कराना (७)

नीम के तेल का फाया गुदा में लगाने से थोड़ी देर में ही दस्त होजाता है। अंग्रेजी की दवा "ग्लिसैरीन सपोजैटूरी" से कहीं अच्छा काम देता है।

बच्चे के पेट का दर्द (८)

एक मनुष्य एक रोगी बच्चे को मेरे पास लाया, बच्चा दर्द से रोता और चिंघाड़ता था, मैंने बच्चे को देखा तो पहले तो कोई रोग नहीं मालूम पड़ा जब पेट पर हाथ डाला तो और अधिक चिल्लाने लगा इस प्रकार बार२ पेट दबाने से उसको पेटदर्द मालूम पड़ा, मगर पेट में मल नहीं था। ऐसी हालत में मैंने बच्चे को असली ओइल औफ टरपैनटाइन (तार पीन का तैल) २ बूंद, सौंफ के अर्क १ तोले के साथ दिलवा दिया बस ? फिर क्या हुआ कि, चन्द मिनटों में ही दर्द बन्द हो गया, और बच्चे को बड़ी गहरी नींद आई यदि अन्दर पेट में नस सूज गई हो तो भी बड़ा फायदा करता है। खिलाने के साथ लगाना भी मुफीद है।

सर्वांग का दर्द- [९]

ऐसपाइरन टेबलेट अंग्रेजी दवा है। इसकी दो टिकी पूरे जवान रोगी को आधपाव गरम दूध अथवा गरम पानी के साथ निगल जाना चाहिये, और बिछा ओढ़ कर सो जाना चाहिये, थोड़ी देर पीछे इतना पसीना आवेगा कि सब कपड़े भीग के

जावेंगे, ओढ़ने के अन्दर ही अन्दर पसीना पोंछ लेना चाहिये, दर्द दूर हो जावेगा। *

हाथ, पैर, पेट, छाती, गला, शिर आदि के दर्द से रोते हुये रोगियों का दर्द बन्द हो गया है, यदि बहुत दिनों का रहायसी दर्द हो तो १—१ टिकी शाम सुबह खाना चाहिये।

पेट के केंचुए की दवा- (१०)

कास्टर ओइल	१ तोला
ओइल टरपेन्टाइन	१ तोला

एक शीशी में कर के बच्चों को १०—१० बूंद माता के दूध या १ तोले पानी में मिला कर शाम सुबह तीन दिन तक देने से केंचुए मर कर दस्त से निकल जाते है। जिस समय यह दवा देवें तब बच्चे की माता अपना दूध पहले पिला लेवें फिर तत्क्षण ही इस दवा की खुराक दे देना चाहिये।

जो बच्चे रोते चिंघाड़ते दम न लेने देते थे गुदा पक गई थी, बदन में गीलापन आने लगा था, ऐसों को भी फ़ायदा हुआ है।

कै कराने को (११)

सल्फेट आफ़ कोपर अर्थात् तूतिया को १॥ माशे फांक कर ऊपर से भर पेट पानी पिला दें, खूब कै-उल्टी होती हैं, सब मल वमन द्वारा निकल जाता है

नये सुजाक को (१२)

कलमी शोरा १। तोला, शीतल चीनी १। तोला कूट पीस कर ४—४ माशे की पुड़िया बनाले रोग को देख कर दिन में २ या ३ पुड़िया ताजी जल के साथ फांकें जल भर पेट होना चाहिये, तीन ही दिन में अवश्य लाभ होगा कितने ही रोगियों पर परीक्षित है।

सन्निपात को (१३)

वायविड़ंग, सोंठ, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, वच, गिलोइ, शुद्ध भिलाये, शुद्ध सींगिया सबको समान भाग लेकर कूट छान गोमूत्र में खरल करके १ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे गरम जल के साथ ४ गोली देने से त्रिदोष के लिये बड़ा लाभ होता है। रोग की अधिकता पर २—२ घंटे बाद अदरक के रस के साथ देनी चाहिये। कितने ही रोगी तो ऐसे आराम हुये हैं कि जिनकी जिन्दगी का आसरा छोड़कर घरवाले सब रो रहे थे, यह वैद्यक की सुप्रसिद्ध सजीवनी-गुटिका है।

दन्त मंजन (१४)

मौलसिरी की छाल	एक छटांक
दालचीनी	१। तोले
नमक लाहौरी	१। तोले
हीरा दोखी	१। तोले

कूट पीस कर रखलें, इसको शाम सुबह २—२ मिनट तक दातों पर मलने से मसूड़ों से खून जाना, दर्द होना, हिलना दूर हो कर दांत साफ़ रहते हैं। बहुतों पर परीक्षित है।

* अन्य कई ऐलोपेथिक औषधों के समान ही "एस्पिरिन" भी हृदय की गति पर अवरोधक प्रभाव करती है—अतः सावधानी से प्रयोग करें।　　—सम्पादक

अनुभूत एकविंशति प्रयोग

लेखक—पं० प्रभूदयाल जी शर्म्मा वैद्यभूषण सम्पादक हितचिन्तक
अध्यक्ष—शर्म्मन एन्ड को० इटावा।

क्लीवत्व रोग पर—१

आजकल युवकों में हस्तमैथुन जनित क्लीवता रोग का प्रकोप बढ़ता जा रहा है, विशेषतया स्कूल और कालेजों के विद्यार्थियों में। उनके ही कारण यह सभ्य समाज के नवयुवकों पर भी अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। यह दुष्ट रोग नवयुवकों में उत्तरोत्तर वृद्धि पा रहा है और उस का परिणाम बहुत ही भयानक होता जा रहा है। इस दुष्ट रोग से छुटकारा पाने के लिये नीचे एक शतशोनुभूत प्रयोग लिखा जाता है। इस के सेवन से हस्त-मैथुन जनित क्लीवता नष्ट हो कर पुनः पुरुषत्व उत्पन्न हो जाता है, जिससे मनुष्य आनन्द-पूर्वक गृहस्थ-धर्म पालनकर सकता है.



श्रीमान् प० प्रभूदयाल जी वैद्य

प्रयोग—सफेद कनेर की छाल १ छटांक, हरिताल तबकी आधी छटांक, कुचिला आधी छटाक, आक का दूध आध पाव, संखिया ६ माशे मीठा तेल १। तोले, सफेद गुंजा आध पाव, अकरकरा १ छटाक, इन सब औषधियों को दर दरी कूट कर एक हल के कपड़ा में रख पोटली बांध कर, २ सेर भैंस का दूध और २ सेर पानी दोनों को कढ़ाईमें डाल उसमें पोटली डाल धीरे २ अग्नि लगावें, जब दूध मात्र शेषरहे तब उतार उस दूध का दही जमा दें, और पोटली को फेंक दें। दूसरे दिन उस दही को मथ कर घृत निकाल लें। इस घृत को इन्द्री पर कुछ दिन मालिश करने से टेढ़ापन कमजोरी आदि नष्ट हो पुरुषत्व शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

कोष्ठ बद्धता—१

आज कल अधिकांश पुरुषों को कोष्टबद्ध(कब्ज) की शिकायत रहती है और यहरोग अनेक रोगों को उत्पन्न करने वाला है, इस से बचने के लिये लाखों रुपयों की औषधियां विलायत से आती है और देश का धन विदेश जाता है इसलिये अपने दो सरल प्रयोग, जो अनुभूत है, यहां लिखे जाते हैं।

१ प्रयोग—सौंफ २ तोला, कालादाना भुना हुआ ४ तोला, सनाय ४ तोला, काला निमक ३ तोला, शुद्ध गधक १ तोला, सोंठ ३ तोला कूट

छान कर चूर्ण बनालें। मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक गरम जल के साथ। रात्रि को सोते समय सेवन करने से प्रायः दस्त हो जाता है। ×

२ प्रयोग—देशी साबुन ६ माशे को चाकू से कतर कर बारीक कर लें और खरल में डाल कर थोड़े पानी के साथ दो दो रत्ती की गोली बना छांय में सुखा कर रखलें *

ज्वर नाशक गोलियां—

सत्व गिलोइ, वंशलोचन, इलायची छोटी जहर मुहरा खताई, श्वेत अभ्रक भस्म, गौदन्ती हरिताल भस्म, प्रत्येक एक एक तोला, कुनैनसल्फ ६ माशे, समाअर्वी के लुआव में २॥ रत्ती (४ ग्रेन) की गोलियां बना सुखालें, ताजी पानी के साथ सेवन कराने से सर्व प्रकार के विषम ज्वरों (मैलेरिया फ़ीवर) में पूरा लाभ होता है, चढ़े हुये ज्वर की दशा में देने से ज्वर उतारती है। और ज्वर को रोकती हैं, ज्वर से उत्पन्न निर्वलता दूर करती है।

खांसी नाशक—

खाकसीर, भोजपत्र, स्याह मिर्च, खुलजान, नमक स्याह, प्रत्येक बराबर लें, चूर्ण करलें। सुबह और शाम एक एक माशे सोंफ के अर्क के साथ सेवन करने से खांसी दूर होती है।

वाजीकरण प्रयोग—

१—८ माशे सफेद प्याज का रस, ६ माशे अद्रक का रस ४ माशे, शहत ३ माशे, घृत, चारों चीजें मिलाकर ६० दिन तक सेवन करें तो नामर्द भी मर्द हो जाता है।

२—एक बतासे में बरगद का दूध भर कर नित्य सवेरे सेवनकरे तो वीर्य्य बढ़ेगा तथा पुष्टता होगी।

३—मैथुन के बाद दूध, मलाई, मक्खन, या पुराना गुड़ खा लेने से बल बढ़ता है, घटता नहीं।

४—नागौरी असगंध १ पाव, विधारा एक पाव, दोनों को कूटपीस कर चूर्ण करलें। १ तोला चूर्ण ६ माशे घी और तीन माशे शहत के साथ सेवन करने से बल वीर्य्य बढ़ता है और रति में खूब आनन्द आता है।

५—बबूल की नरम २ कोंपल एक तोला लाकर सिल पर पीस कर छान लो बराबर की मिश्री मिला कर खालो, ऊपर से पानी पीलो, २१ दिन के सेवन से सब प्रकार के प्रमेह दूर हो जाते हैं।

६—दो माशे कबाबचीनी को शहतमें मिला कर चाटने से स्तम्भन होता है, स्वप्नदोष भी नष्ट होता है।

७—बबूल की कच्ची फली छाया में सुखा कर पीस कर बराबर की मिश्री मिला कर दोनों समय दूध से एक एक तोला चूर्ण सेवन करने से बल बढ़ता है तथा वीर्य्य गाढ़ा होता है।

× लेखक ने यह प्रयोग "प्रमेह नाशक" शीर्षक के नीचे लिख दिया था और यह प्रमेह नाशक न होने से हमने कोष्ठबद्धता में छापा है। —सम्पादक

* लेखकने इसकी व्यवहार विधि नहीं लिखी पर अनुभव से जाना जाता है कि गरम जल के साथ सेवन होता होगा, प्रयोग भी महत्व पूर्ण नहीं है। —सम्पादक

अनुपम अनुभूत प्रयोग

लेखक—श्रीमान् पंडित कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी, आयुर्वेदाचार्य्य बी. ए.
अध्यक्ष-श्रीकृष्ण औषधालय हिंगनघाट

संधिवात पर—

कबीला ६ माशा, नीलाथोथा ६ माशा, चिकनी सुपारी १ तोला, रसकपूर २ माशा, और घी १० तोला। विधिः—

घी को छोड़ प्रथम चार द्रव्यों का महीन चूर्ण करे। फिर घी में अच्छी तरह मिला कर किसी मोटे कागज़ पर सबको चुपड़ देवे। पश्चात् उस कागज़ को गूड़ या लपेट कर पुंगली सी बना लेवे। नीचे एक थाली (यह थाली फूल या कांसेकी हो तो अच्छा नहीं तो पीतल की भी ठीक है) या कटोरा रख उस कागज़ की पोंगली में एक सिरे से आग लगा देवे। उसमें से घृत जो नीचे पात्र में गिरेगा उसे एक शीशी में भर कर रखदेवे। शरीर में जहां कहीं वात वेदना हो, विशेषतःसंधिगत वात पर यह अव्यर्थ औषधि है। इस घृत की मालिश से वात वेदना शीघ्र दूर होती है।



वैद्य कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी

नहरुवे पर—

स्नायु या नहरुआ यदि बाहर नहीं निकलता हो, या बाहर निकलकर टूट गया हो तो रुई (कपास) की एक छोटी सी गद्दी बनावे। इस गद्दी पर दही (भैंस या गाय का) अच्छी तरह चुपड देवे ऊपर से नीलाथोथा का महीन चूर्ण बुरका देवे। पश्चात् इसी गद्दी को धीरे से नहरुवे के मुख पर बांध देवे। एक या दो बार इस प्रकार बांधने से नहरुवा अन्दर ही अन्दर गलकर पानी हो बह जाता है। फिर उसका नामोनिशान भी नहीं रहता।

शोथ पर—

श्वेत पुनर्नवा की जड़ का चूर्ण जवकुट किया हुआ २ या ३ तोला को जल आधपाव मेंखूब मंदाग्नि से पकावें जब क्वाथ ५ तोला शेष रहे तब उतार कर उसमें चिरायता और सोंठ का महीन

चूर्ण एक २ माशा और कलमीशोरा ६ से ८ रत्ती तक मिलाय कर पीवे। बाहर से सूजन पर केवल उक्त पुनर्नवा की जड़ घिस कर या कुचलकर तथा थोड़ा गरम कर लेप करे और ऊपर से कपड़ा कस कर लपेट देवे।

चमत्कारिक मलहम—

गूलर की कोमल पत्ती २ सेर, कूट पीस कर ४ सेर जल मिला कढ़ाई में डाल आग पर चढ़ा देवे। बीच२ में करछली से चलाता जावे, जब कुछ गाढ़ा होने को आवे तब दूसरे किसी पात्र में छान लेवे। खूब निचोड़ कर चोथा फेंक देवे। इस धुले हुए जल को फिर उसी कढ़ाई में डाल,१ तो० रार और १ तोला मोम उसी में मिलाय कर चूल्हे पर चढ़ा देवें। मदाग्नि से पकावे जब खूब गाढ़ा होजाय तब निकाल कर डिब्बा में या चौड़े मुख की शीशियों में भर रक्खें यह काले रंग का चमत्कारिक मलहम तैयार हो जावेगा। इससे घाव, चोट,जख्म,मोच,आदि पर लगाने से शीघ्र फायदा होता है।

पीनस पर—

सब्जा (मञ्जरिको या बबई तुलसी) का रस १ तोला में कपूर १ माशा, खूब घोटकर रोज सवेरे और सायकाल ४।५ बूंद नाक से खींचे। ६-७ दिन में नासिका की दुर्गन्ध, पपडी जमना, रक्त का गिरना आदि बन्द होकर, पीनस, दुष्ट प्रतिश्याय दूर होजाता है।

वीर्य विकृति पर—

सफेद मुसली, काली मुसली गोखरु, रूमी मस्तगी, बसलोचन, पलास का गोंद, और शुद्ध शिलाजीत लेवे। प्रथम ६ द्रव्यों का महीन चूर्णकर उसमें शिलाजीत मिलाय, उत्तम गुलाबजल (आज कल बाजार में उत्तम गुलाबजल नहीं मिलता,पानी में केवल गुलाब का नकली, विलायती सेंट डालकर शीशियों में भर कर बेचा जाता है। अतएव पाठकों से निवेदन है कि उत्तम गुलाबजल गंगाजल पर बना हुआ कहीं मिले तो काम में लाना चाहिये। बाजारू नकली कदापि नहीं लेना उससे उल्टे हानि होती है) में खरल कर चना बराबर गोलियां बना लेवे। रात्रि में सोने के पहिले १ पाव गौदुग्ध में सालम मिश्री २ तोला, मिश्री १ तोला, और घृत १ तोला मिलाकर गरम कर लेवे। पश्चात् उक्त १।२ गोली खाकर ऊपर से यह दूध पी लेवे। यह शक्तिदायक उत्तम पौष्टिक योग है।

आंकडी रोग पर—

अकरकरा ३ तोला, जवकुट करे, उसमें पानी ३२ तोला डालकर अष्टमांश क्वाथ तैयार कर लेवे। इसे वस्त्र से एक सराव (मिट्टी का चकले मुख का पात्र विशेष) ले छान लेवें। चोथा फेंक देवें। इस क्वाथ जल में नवीन वच ३ तोला, जरा पत्थर से कुचल कर डाल देवे और धूप में रख देवें। इस प्रकार ६ बार सूर्यपुट देवे। यह सिद्ध की हुई वच बच्चों के अपस्मार आंकडी-पर परमौषधि है। इसे मीना के दूध में थोड़ी घिसकर पिला दीजिये या चटा दीजिये। लगभग तीन दिन में इसका असर मालूम होजाता है।

अनुभूत चमत्कारक प्रयोग

लेखक—साहित्यरत्न श्रीमान् डा० रामजीवन जी त्रिपाठी वैद्यशास्त्री.
ऐल०ऐम०ऐस० (Natl) ऐम०बी० (Homoeo) M. R. A. S.
मडिकल-औफिसर-नेवटिया हौस्पिटल—और
मेडिको-लीगल-ऐडवाइजर-सीकर स्टेट।



वैद्यक शास्त्र में असख्य ऐसे ग्रन्थ रत्न है। जिनमें उत्तम, उपादेय और सरलता पूर्वक रोग नाश, करनेवाले प्रयोग (नुस्खे) भरे हुए हैं। हमारे पूर्वज ऋषियों ने प्रत्येक रोग के लिये अगणित प्रयोगों की व्यवस्था की हैं। आयुर्वेद समार के आचार्यों ने भिन्न२ रोगों के लिये भिन्न भिन्न औषधियों का निर्णय किया है। इस प्रकार इस अद्भुत रत्नाकर में अपरिमित रत्न हैं किन्तु उन्हें ढूंढ़ निकालना और अपनी आवश्यकता के अनुसार उनका प्रयोग करके सफलता प्राप्त करना साधारण वैद्य का काम नहीं। गुरु परम्परा से हमें जो प्रयोग प्राप्त होते हैं, उन्हीं के सहारे हम अपनी आवश्यकता पूर्ण करने का प्रयत्न करते है। परन्तु इस सम्बन्ध में हमारे एतद्देशीय वैद्य बन्धुओं के विचार इतने सकीर्ण हैं कि देख कर बड़ा दुख होता है। जिस प्रकार पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति (Allopathy) से कार्य्य करने वाले वैद्य गण (Doctors) को अपनी औषधों का मिश्रण Combination प्रकट कर देना अनिवार्य है वैसा इस देश में नहीं। कुछ इस प्रकार और कुछ हमारी सकीर्णता के कारण, हमारे असख्य प्रयोग Formulae हमारे वैद्य-बन्धुओं के साथ ही भस्मसान् हो जाते है।



डाक्टर रामजीवनजी त्रिपाठी वैद्यशास्त्री

मैं स्वय एक एलोपैथिक चिकित्सक हूं, पर आयुर्वेद की औषधियों का चमत्कार देख कर इनका भक्त हुआ हू और इसलिये ऐसे प्रयोगों को खोजता रहता हूं। मैंने स्वय देखा है कि एक वृद्ध वैद्यराज एक ऐसा प्रयोग जानते थे जिससे जलोदर Ascites का रोगी केवल एक सप्ताह में ठीक होजाता था, जिसको हम लोग शायद वर्षों मे भी ठीक नही कर पाते। एक दूसरे महानुभाव-जोवैद्य भी नही थे—यहा एक ऐसे सुरमे का प्रयोग करते थे, जिसको एक सींक से केवल तीन दफा लगा देने ही से मोतियाबिन्द (Cataract) बिलकुल ठीक हो जाता था जिसे हम लोग विना अस्त्र क्रिया Operation के सर्वथा असभव समझते हैं। परन्तु अब वह कहां है? बहुत पूछने और देने का विश्वास दिलाने पर भी उन्होंने नहीं बतलाया। अब वह नुसखा उन्हीं के साथ स्वर्ग में है।

इनके अतिरिक्त प्रायः ८० वर्ष पहिले स्थानीय जैन मन्दिर में पांडेय नाम के एक वैद्य रहते थे। वे रोग का परिणाम Prognosis बताने में सिद्ध हस्त थे। उनके सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि उन्होंने एक मास पूर्व ही अपने मरण काल की तिथि और समय प्रकट कर दिया था। वे एक हस्तलिखित पुस्तक रख गये हैं जिसके देखने से ज्ञात होता है कि वे व्याकरण के विद्वान तो नहीं थे, पर उनके लिखे हुए प्रयोग इतने अद्भुत और चमत्कार पूर्ण हैं कि यदि रोग का निदान Diagnosis ठीक हो तो लाभ अवश्यम्भावी है। अस्तु

उसी अमूल्य पुस्तिका के कुछ प्रयोग धन्वन्तरि के पाठकों को दिखाना चाहते हैं। इनको हमने स्वयं आजमाकर देखा है और सर्वत्र चमत्कार पूर्ण पाया है। यदि मेरे वैद्य-बन्धु इ आजमावें और भविष्य में इच्छा प्रकट करें त उस समस्त पुस्तिका के प्रयोग क्रमशः उन सेवा में उपस्थित करूंगा।

---

(१)-जलने का घाव(Ulcer Due to Burns)

केशर	१ तोला
सफेदा	२ तोला
अहिफेन	३ रत्ती

सब को बारीक पीसकर घाव को साफ करके बुरकादे, इससे पांच मिनिट में जलन शान्त हो जायगी और घाव भी शीघ्र ही भर जायगा परन्तु प्रति दिन घाव को किसी जन्तु नाशक वस्तु जैसे नीम के तेल आदि से साफ करके दवा छिडकना चाहिये।

(२)-प्रदर Leucorrhoea

पीपल की लाख	१० तोले
प्रवाल भस्म	१ तोला
मिश्री	११ तोला

इन्हें कूट-पीस कर दोनों वक्त एक एक तोला धारोष्ण दूध के साथ दें।

(३)-योषापस्मार Hysteria

जटामांसी	१ तोला
सींध (आककी जड़ के पास की)	१ तोला

दोनों को कूटकर ४ पुड़िया बनावें और एक पुड़िया का क्वाथ बनाकर ऊपर आधा रत्ती कपूर की प्रतिवास देकर दोनों वक्त पिलावें।

(४) तारुण्य पिटिका Acne—

(मुहांसे)

खर्पर शुद्ध आधा तोला

गुलाबजल १० तोले ।

दोनों को मिलाकर रखदें, जब खर्पर नीचे बैठ जाय तो ऊपर का जल निथारकर, सुबह शाम तौलिये (अंगोछे) पर डालकर मलें।

(५) श्वास (दमा) Asthma—

धत्तूरा (धतूरा) पञ्चाङ्ग एक तोले

इसे छाया में सुखाकर कूटले और पीछे एक सेर जलमें कलमी शोरा खूब मिलाकर (Saturated Solution) उस जल में धत्तूर चूर्ण को मिलादें और सुखाकर रखे। दमे के प्रकोप में इसमें से आधा तोला लेकर उसे दियासलाई से जलाले और जो धूंआं उठे, उसे श्वास के साथ निगल जाय। यह औषधि जादू की भांति अपना प्रभाव दिखाती है। अब तक हम विलायती औषधि(Himrods Cure For asthma) का उपयोग किया करते थे, और हमारे होस्पिटल में प्रति वर्ष प्रायः ५०) रु० इसमें व्यर्थ खर्च होते थे। परन्तु जब से हमें यह नुसखा प्राप्त हुआ है हम बराबर इसीका व्यवहार करते हैं और सभी में सफलता मिलती है

(६) दमा Asthma (द्वितीय प्रयोग)

ऊपर दमे के लिये सूंघने की औषधि हुई, इसीके लिये हमारे एक परिचित मन्त्र-शास्त्री दूसरा प्रयोग किया करते हैं।

धतूरे के कच्चे बीज और पत्ते सम भाग लेकर, उन्हें कूट कर लोंदा Mass बनालें और उस में जगह जगह चने gram (एक प्रकार का अनाज)थोब दें। जब लोथड़ा सूख जाय तो चनों को निकाल लें। दमे के रोगी को एक एक चना, अभिमन्त्रित कहकर, सुबह शाम मुंह में रखने को दें। आराम हो जाता है।

(७) शिरः शूल Headache—

Supra-orbital Neurelgia

or

Hamicrania

वांसा के फूल एक तोला

(यह एक प्रकार का पौधा है जो राजपूताना में प्रसिद्ध है) लेकर छाया में सुखाले और गुड़ में ४ गोली बनाले, दौरे के वक्त एक गोली दे, तत्काल अपना प्रभाव दिखायगी, जहां पर एलोपैथिक औषधि "फिनासेटिन" Phenacetin फेल होजाती है, वहां इस का प्रभाव देखने में आया है। इस औषधि का अद्भुत स्थायी प्रभाव देखकर लखनऊ मेडिकल कोलेज के अध्यापक हमारे एक मित्र ने कहा था "वाकई यह एक नायाब चीज है"।

(८) दन्त पीड़ा Toothache—

केवल एक काली मिर्च लेकर एक छोटे चम्मच में (Tea Spoon) दो माशे जल के साथ औटावें, जब पानी खूब खौलउठे तब जितना गर्म बर्दाश्त होसके कान में छोड़दें। तत्काल लाभ दायक सिद्ध होगा।

इस नुस्खे को पढ़कर हमारे एक परिचित संस्कृत के दिग्गज विद्वान और आयुर्वेद के उत्तम चिकित्सक वैद्यराज ने प्रयोग के लेखक को मूर्ख, उजड्ड, नीम हकीम और न जाने किन किन विशेषणों से याद किया था। पर उन्हें ज्ञात नहीं था कि इसमें शरीर शास्त्र Anatomy का कैसा गूढ़ रहस्य है, हमने उन्हें समझाया कि दन्तबन्धन की छोटी नस का एक सिरा कान के भीतरही है, उस की जड़ पर सेंक Fomantation होने से आराम होना ही चाहिये। तब से वे इसी का उपयोग करते हैं, पर यदि दांतमें गड्ढा Cariage Tooth होगया हो तो उसे खुरच कर, और किसी जन्तु नाशक पानी Antiseptic Lotion से धोकर साफ कर देना चाहिये।

(६)कर्ण पिटिका Boil in the Ear—

जाल की जड़ का छिलका	१ माशा
सरसों का तेल	५ तोला

छिलके टुकड़े टुकड़े करके तेलमें औटालें और एक दो बूंद कानमें डाल कर ऊपर सेंक करें। हमने इसे एलोपैथी की "ग्लिसेरीन कार्बोलिक" Glycerine Carbolic और "आयोडीनग्लिसेरीन" Iodine Glycerine से अधिक मुफीद पाया है।

(१०)रक्तातिसार Dysentery—

झांट (एक प्रकार का दरख्त है जिस में सैंगरी लगती हैं)के सुर्ख वकल सहित आधा सेर छिलके लेकर, कूट कर छोटे२ टुकड़े बनालें और दो सेर पानी में डालकर उबाल लें। अब आधा-पाव बढ़िया चावल लेकर एक पतले मलमल के वस्त्र में ढीली पुटली बनाकर उसमें छोड़ दें और धीरे धीरे जोशदें,इस प्रकारबनायाहुआ भात मिश्री और दही के साथ खिलावें। यदि रोग नया है तो सिर्फ दो ही बार में ठीक हो जायगा, नहीं तो दो तीन दिन तक चालू रखना चाहिये। अवश्य फायदा होगा। परन्तु रोग यदि बहुत पुराना है तो पहिले अरंड का तेल "कैस्टरऑइल" Castor Oil देकर पीछे इस का प्रयोग करना उचित है।

इसे अन्यान्य रोगियों के अतिरिक्त मैंने स्वयं अपने शरीर पर आजमाया है और केवल एक बार लेने ही से लाभ होते देखा है।

अनुभूत योग

लेखक—श्रीमान् आयुर्वेद मार्तण्ड पंडित रघुवरदयाल जी भट्ट वैद्य शास्त्री, काव्यतीर्थ
मंत्री—युक्त प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन कार्य्यालय—कानपुर ।



सी भी देश में किसी प्रकार के साहित्य की सत्ता तथा उन्नति तभी सम्भव है जब तद्देशीय उस विषय के विशिष्ट विद्वान अपने अनुभवों एवं नूतन आविष्कारों से उसके साहित्याङ्ग की पुष्टि सदैव करते रहें। आयुर्वेद के ह्रासका एक यह भी कारण है कि इस के वृद्ध विद्वानों ने आयुर्वेद साहित्याङ्ग की पुष्टि की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। वर्तमान शताब्दी में जो ग्रंथ आयुर्वेद सम्बन्धी बने हैं उनमें अधिकांश प्राचीन ग्रंथो के सङ्कलन स्वरूप हैं। कुछ प्रमुख विद्वानों ने ऐसे भी ग्रंथांकी रचना की है जिनकी समयानुसार बड़ी उपयोगिता प्रमाणित हो रही है।

अनुभूत योगों के प्रकाशन से भी आयुर्वेद की बहुत उन्नति हो सकती है। इसी धारणा को दृष्टि पथमें रखकर दो चार योग विद्वन्मण्डलो के समक्ष सुविचार एवं अनुभव के लिये उपस्थित करता हूं।

१. खूब सूरत होने की दवा—



वैद्यशास्त्री पं० रघुवरदयाल जी भट्ट

गौर एवं सुन्दर सन्तान पैदा होने की सब किसी को उत्कट आकांक्षा रहती है इसी लिये एक प्रयोग इसी विषय का है। जिसके अनुभव करने की प्रार्थना है। यह प्रयोग जो पूज्यपाद मालवीय जी से मुझे ज्ञात हुआ है, पाठकों के समक्ष रखता हूं।

जिस स्त्री की सन्तति श्याम—वर्ण पैदा होती हो उस स्त्री को गर्भ रहने के ३ मास के उपरान्त इस औषधि को नियमित रूप से सेवन करना चाहिये।

बबूल वृक्ष को हरी कोमल पत्तियां छायामें

सुखाकर उनका चूर्ण पावभर लें और ५/- कमलगट्टा की मिंगी, जिसमें भीतर का हरा भाग न रहे,खूब महीन पीस कर दोनो मिलालें और दोनों के बराबर मिश्री मिलाकर रखें और प्रति दिन प्रातः३माशे ५। पावभर दूध के साथ खायें इससे गर्भ रक्षा के साथ सुन्दर और गौर सन्तति उत्पन्न होगी।

२.सुजाक को सुरमा—९)

मैं यह बहुत दिनों से सुनरहा था कि सुर्मा के लगाने से सुजाक चला जाता है। अभी हाल में एक प्रयोग मुझे एक साधारण मनुष्यसे ज्ञात हुआ है, कि जिसे मैं अनुभव करने तथा उसे पूर्ण रूप से सफल बनाने के विचार से सर्व साधारण के सामने रखता हूं, जोसज्जन इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी रखते हों, वे उचित प्रकाश डालने की उदारता करें।

भैंसे के सींग को मोडे तेल में मिला कर उसे जलायें और उसके काजल का आंख में लगाये तो सुजाक अच्छा हो जाये।

३.शुष्क कासारि—९)

सिताद्धं पिर्चु यष्ठिका पाणि माणि-

र्चंट किङ्किरातस्य निर्यासमात्रः।

वटार्धा सुपुष्पा तथा चन्द्रवाला

मरीच सुवर्णं महत्कास नाशि ॥ १ ॥

अर्थ—मिश्री २) तोले मुलहठी १), बबूल गोंद ॥), इलायची छोटी ।). मिर्च काली =) भर

इन सब को महीन पीस कर, शहद से सेवन करने से वातकास शीघ्र दूर होता है।

४.विषम-ज्वर पर—९)

कर्ण. करंजस्तुलसी-दलानि,

बब्बूल पत्राणि पलं च कृष्णम्।

अत्र विमर्द्याथ जलेन वर्त्तिः,

कृताऽशिता हन्त्यसमान ज्वरांश्च ॥

अर्थ—कंजा की मिंगी १), तुलसी-दल, ४) बबूल की पत्ती ४), काली मिर्च १)तोला।

इन सब चीजों को महीन पीस कर, जल के साथ पीस कर,चने बराबर गोली बनाकर दो २ गोली, दिन में तीन बार, सेवन करने से विषमज्वर शान्त होता है। जल से गोली खानी चाहिये।

५.खाज खुजली पर—८)

शुक्ति जाती तैल, कर्षः सर्ज रसो रसो हिधरणः

उषित तुत्थ धान्य, शत जल धौत हन्ति पामाम्

अर्थ—चमेली का तेल २), राल १), पारा १)तोले, भुना तूतिया १ माशे।

इन सब को खरल में डालकर घोटे। एक में मिल जाने पर स्वच्छ जल से १०० बार धोयें। इसके लगाने से खुजली और उसके फोड़े अच्छे होते हैं।

६.द्वितीय प्रयोग—

पलमरिष्ट फल मज्जा शुद्धो गन्धस्तत्समो मरीचः
कर्ष जलेन वटिका गुंजा समा स्यात् पामारिः॥

अर्थ—निमकौरी ४), शुद्ध गंधक ४) मिर्च १)तोले

इन सब को पीस, जल में गुंजा समान गोली बनाकर सेवन से खुजली अच्छी होती है।

७.सुजाक पर—

अस्थन्निर्मल जीवन गुणनिधि मब्बूलनिर्यासकं
युक्तिं तत्र विनिक्षिपेद्धरणकं श्रीखण्ड तैलशुभम्
एकीभूयमिति प्रबुद्ध सुधिया पेय सुवर्ण प्रमम्
तस्मान्नश्यति पूयबिन्दुगमनं शिश्नात् प्रमेह व्रज।

अर्थ—स्वच्छ जल ʃ॥, बबूल का गोंद २), चन्दन का तेल ४ माशे।

इन सब को खरल मे डाल कर घोटे। सबके मिलजाने पर एक एक तोला सेवन करने से सुजाक अच्छा होता है।

८.पीड़ा नाशक—

पल तारपीनस्य तैलं विशुद्धम्।
हिमांशु पिचु माष माद्याहिफेनम्॥
नृसार द्विशाण समं मर्दयित्वा।
द्वियामं नरः स्थापयेत्तीक्ष्ण घर्मं॥
अभ्यङ्ग मात्रेण वरेण्य चार।
पार्श्वास्थि कट्यूरुषु तीव्र पीड़ा॥
फिरङ्ग रोगाखिल सन्धि पीड़ा।
वातोत्थ पीड़ा च विनाश मेति॥

अर्थ—तारपीन का तेल ४), कपूर १), अफीम १ माशा, नौसादर ८ माशा,

इन सब को मिलाकर घाम में दो पहर रक्खें। पीछे इसको मालिश करे तो पसली कमर आदि की पीड़ा तथा गठिया रोग शान्त होता है।

९.उपदंश पर—

वितुत्थक शिवाद्वयं, पल मतं कपर्दिका।
चतुर्थिका चतुष्टयम्,सुनिम्बुना सुमर्दितम्॥
चण प्रमाण वर्तिका, विहन्ति आशु भक्षिता।
फिरङ्ग रोग सन्तति, मरीच तैल सेवनात्॥

भुना तूतिया ४), हड़ छोटी ४), हड़ बड़ी ४), कौड़ी भस्म १६), इन सब को नीबू के रस में घोट कर चने बराबर गोली बना कर सेवन करें। इन गोलियों को खा मिर्च और तेल भी खाना चाहिये इस से आतशक अच्छी होती है।

१०. रक्तशोधक अर्क—

कैरातः पिचुमर्द वल्कलफल प्रासून पत्रादिकम्,
श्रीखण्ड शरपुङ्ख पूतिफलिके द्राक्षा वरा कासनी।
कार्मुको मधुक मृपार्ह तगरे द्वीपान्तरस्था वचा,
शुशांड मरुदेशफेनिल फल मण्डूकपर्णी पलम्॥

पलाशिशपा धायसी नीलकंठी।
तथा नाग चम्पाभया ब्रह्मदन्डी॥
मिसिर्धान्यक वासकं सोमवल्ली।
शटी नाग पुष्पोञ्जलिः पीतमूली॥
रेणोः सरावः सितशादि पाया।
मुण्ड्यञ्जलिर्विस्फपिज मकुन्दः॥

कश्मीर जन्मात्वमिदं प्रकुट्य ।
चतुर्गुणे वारिणि तन्निदध्यात् ॥
भारत्रयान्ते विधिना विधिज्ञः ।
समाहरेदर्कमतीव शुद्धम् ॥
पामोपदंशे विविधास्त्र रोगे ।
संयोजयेदर्कं विडाल पादम् ॥

अर्थ—चिरायता ४), नीमका पञ्चांग ४) सफेद चन्दनका बुरादा ४), शरफोको ४), बकुची ४), मुनक्का ४), त्रिफला ४), कासनी ४), वकायन की छाल ४), मौरेठी ४), अगर ४), तगर ४), चोबचीनी ४), भटकटैया ४) उन्नाव ४), मजीठ ४) शीशम का बुरादा ४), मकोय सूखी ४), नील कंठी ४), मेंहदी ४), हर्ड़ छोटी ४), ब्रह्मदंडी ४), सोंफ ४), रुसाह ४), धनियां ४), गुर्च ४), कपूरकचरी ४), नागकेशर ४), रेवन चीनी १६), शाहतरा ३२), उशवा ३२) मुन्डी १६), बिस्फैज ४), केशर १), इन सब को कूट कर चौगुने जल में ३ दिन भिगो कर अर्क निकाले। इस अर्क के सेवन से खुजली रक्त-विकार और उपदंश, विकार दूर होता है।

नोट—इसमें जो अशुद्धियां हों उन के लिये क्षमाप्रार्थी हूं।

नीरक्षीर विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषेचे।
विश्वस्मिन्नधुनान्य, कुलव्रतं पालयिष्यति कः ॥

चमत्कारक परीक्षित योग रत्न

लेखक—श्रीमान् कविराज ब्रह्मानन्द जी चन्द्रवंशी, जमींदार, वैद्यमार्तण्ड
अध्यक्ष-श्रीकौर्मि-क्षत्रिय, औषधालय बरौदा।



कविराज ब्रह्मानन्द जी चन्द्रवंशी

रक्तपित्त पर—

अडूसा (बांसा) के पत्ते ऽ१ लेकर साफ करके ऽ४ सेर जल में मन्दी अग्नि द्वारा पकावे, जल ऽ१ सेर शेष रह जावे तब मल कर क्वाथ को वस्त्र से छान ले पश्चात् उस में ऽ१ शक्कर मिला कर शर्बत तैयार करले चाशनी ठीक होनेपर पुनः वस्त्र से छान कर बोतलों में भर ले। करीब १॥बोतल शर्बत बन जायगा।

मात्रा—१ से २ तोला तक शर्बत में,६ माशे शहद मिला कर, आध पाव या ३ छटांक पानी में मिला कर सवेरे. शाम सेवन करना चाहिये। बालकों को अवस्थानुसार कम मात्रा में देनी चाहिये। एक बालक को ३-४ वर्ष की अवस्था से ही रक्तपित्त की बीमारी थी, बारह वर्ष की आयु में

शर्मा पेन बाम—

१ सत पिपरमेंट	३॥ तोला	Z iv
२ कपूर (काफूर)	१। तोला	"
३ तेल लोंग	३॥ माशे	Z 1
४ तेल दालचीनी	३॥ माशे	"
५ तेल लोबान	३॥ माशे	"
६ तेल यूकलेप्टस	३॥ माशे	"
७ तेल जायफल	३॥ माशे	"
८ तेल इलायची बड़ी	३॥ माशे	"
६ मौम देशी असली	२॥ तोला	OZ 1
१० तेल बादाम	४ तोला	Tola iv
११ गाय का शुद्ध घी	४ तोला	" "

वनानेकी विधि—पहिले न० १, २ की औषधियों को किसी शीशी में डाल कर सख्त डाट लगा कर धूप में रखदें, जव पानी के समान तरल हो जावे, न० ३ से ८ तक की औषधियां इसमें मिला दें, और शीशी की डाट लगा कर फिर धूप में रखदें। और किसी चीनी या कलईदार पात्र में गाय का घी डालकर आग पर रख दें, जब पकने लगे तो मोम भी डाल दें, जब मोम भी खूब हल हो जावे तो नीचे उतार कर फौरन् बादाम का तेल, न० १ से ८ तक की औषधियां जो कि शीशी में हैं, इसी घी में मिला कर खूब हल कर दें, फिर साफ कपड़े में डाल कर दूसरे किसी कलईदार पात्र में छान दें, और ठन्डा होने पर शीशी में भर कर कड़ी डाट लगा कर सुरक्षित रक्खें, तथा समय पर काम में लावें।

नोट—यह दवा केवल बाहरी तौर पर लगाने के ही काम में आती है।

गुण—निमोनिया में छाती, हसली के दर्द को तत्काल दूर करती है शिर दर्द, चोट, मोचके दर्द, वायका दर्द, पट्ठों आदि के दर्द पर भी अत्यन्त गुणकारी है, आप भी परीक्षा कर देखें।

उपदंश रिपु रस—

शुद्ध गंधक आंवलासार	२॥ तोले	Z i
शुद्ध सखिया सफेद	२॥ तोले	"
शुद्ध " लाल	२॥ तोले	"
शुद्ध हरताल तबकी	२॥ तोले	"
शुद्ध सिंगरफ खानिज़	२॥ तोले	"
शुद्ध पारा	२॥ तोले	"
शुद्ध मुर्दा संग	२॥ तोले	"
शुद्ध रस कपूर	२॥ तोले	"
शुद्ध दार चिकना	२॥ तोले	"
शुद्ध नीलाथोथा	२॥ तोले	"
अर्क लीमू कागजी(नीबू)	१ सेर	2 lbs

वनाने की विधि—पहिले गंधक, पारे की कज्जली करें (खूब खरल करें) जब पारा बिल्कुल हल हो जाये तो बाकी सब औषधियां डालकर खूब खरल करें, फिर नीबू का अर्क डाल कर खरल कर के छाया में सुखा लें, और एक मट्टी के प्याले को उस पर ढांप दें तथा कपरोटी गिल हिकमत से मजबूत करदें ताकि धुआ न निकल सके, इसके बाद चूल्हे पर रक्खें (इस तरह से- कि औषधि वाला प्याला आग पर नीचे रहे और खाली प्याला ऊपर) फिर बेरी की एक लकड़ी की हलकी २ आंच चूल्हे में करें, और ऊपर के प्याले पर एक कपड़ा पानी में भिगो कर रख दें,

और सूखने पर वार २ उसको भिगो कर रखते रहें इस प्रकार करीब २,छः घन्टे की आंच देकर प्याले को ठन्डा करलें और ऊपर वाले प्याले से रस को खुरच कर शीशी में भर कर रक्खें तथा समय पर काम लावें।

मात्रा—इस की साधारण तया १ चावल से २ चावल (आधो ग्रेन) तक है।

मुनक्का के बीज निकाल कर उस के बीच में इस दवा को खूब लपेट दें और इस तरीके से निगल जावें, कि दवा रोगी के मुह और दांतों में न लगे और ऊपर से निम्न-लिखित रक्त-शोधक अर्क आध पाव पिला दें।

समय दिन में दो वार। *

रक्तशोधक अर्क—१

नीम के पत्ते	१० तोले
नीम की छाल	१० तोले
बकायन की छाल	१० तोले
बकायन के पत्ते	१० तोले
कचनार की छाल	१० तोले
मोलसिरी की छाल	१० तोले
छोटी दूधी घास	१० तोले
भङ्गरा काला	१० तोले
जवासा	१० तोले
गूलर की छाल	१० तोले
मह्दी के पत्ते	१० तोले
मुंडी	१० तोले
शाहतरा	१० तोले
अफ़तीमून	१० तोले
खस	१० तोले
सरफ़ोका	१० तोले
विजेसार	१० तोले
नीलोफर	१० तोले
गुलाब के फूल	१० तोले
धनियां	१० तोले
चन्दन सफेद	१० तोले
कासनी के पत्ते	१० तोले
कासनी के बीज	१० तोले
कासनी की जड़	१० तोले
मजीठ	१० तोले
खेद के पत्ते	१० तोले
शीशम का बुरादा	१० तोले
नीम की निबौरी	१० तोले
गिलोय हरी	१० तोले
उन्नाव	१० तोले
उसवा　(बीस)	२० तोले
जल-पानी (सब से पांचगुना)	२० सेर

विधि—सब औषधियां कूट कर, जल में २४ घन्टे भीगने दें, फिर अर्क खींचने की विधि से, अर्क खींच कर बोतलों में रखलें।

गुण—यह अत्यन्त रक्त शोधक है, बड़े २

---

* नोट—यदि इसके खाने से कुछ गर्मी प्रगट होवे तो हर एक मात्रा के साथ एक चावल या दो चावल शुद्धफिटकरी और मिलादिया करें। जख्मों में दूसरा प्रयोग उपदश-रिपु-मरहम लगा दिया करें, खाने में बेनमक की, रोगनी (घृतयुक्त) खुराक दें। और मिर्चलाल, तेल, खटाई, गुड़ मिठाई आदि से परहेज करा दें।

सारसापरेले Sarsaparilla भी इस के आगे हार मानते हैं।

उपदंशरिपु मरहम–

केलोमेल	१० ग्रेन	Calomel	gr x
जिंकऔक्साइड	१ ड्राम	Zinc Oxide	z i
आइडोफार्म	१० ग्रेन	Idofarm	gr x
वैसलीन यैलो	१ औंस	Vaseline Yellow	Oz i

विधि–सबको एक साथ मिला कर खूब रगड़ें बस मरहम तय्यार है, इस को आतशक के जख्मों में भरकर ऊपर से साफ कपड़ा बारीक चिपका दिया करें, और रोजाना कार्बोलिक साबुन से धो कर फिर इसी प्रकार मरहम को लगा दिया करें। अति शीघ्र जख्मों को भर देता है। अवश्य परीक्षा करें।

Psilosis cure साइलोसिस क्योर

(संग्रहणी रिपु)

१ गिलोइ का स्वरस	पाव सेर
२ सतावर को स्वरस	पाव सेर
३ कासनी का स्वरस	पाव सेर
४ कागज़ी नीबू का रस	एकछटांक
५ शुद्ध काफ़ूर (१। तोले)	चार ड्राम
६ सत पोदीना असली	चार ड्राम
७ सत अजवान असली	" "
८ लौंग का तेल असली	एक "
९ सोंठ का तेल असली	" "
१० सौंफ का तेल असली	" "
११ दालचीनी का तेल	" "
१२ लाल मिर्च का सत असली	आधा "
१३ अदरक का सत असली	एक "
१४ नौसादर का फूल	एक ड्राम
१५ शुद्ध अफीम	चार "
१६ देशी खांड की मिश्री (८८ तोले)	एक सेर

बनाने की विधि—नं० ५ की औषधियों से नं० १४ तक की औषधियों को लेकर किसी मजबूत कार्क वाली शीशी में भर कर और कड़ी डाट लगा कर एक दिन धूप में रख दें, सब एक साथ मिल कर पानी हो जावेंगी। फिर आध पाव गिलोइ के स्वरस में चार ड्राम शुद्ध अफीम खूब खरल करके अलग तय्यार रक्खें। उस के बाद सब स्वरसों में मिश्री मिलाकर धीमी २ अग्नि पर पाक-रीति से शरबत की चाशनी बनावे, जब चाशनी तय्यार होने को होवे तो उसमें खरल की हुई शुद्ध अफीम और वह स्वरस मिलादें, और धीमी २ अग्नि दें, जब शरबत की चाशनी उम्दा आजावे जोकि न पतलीहो और न कड़ीहो, रवा न पड़ सके तो नीचे उतार लें, जब कुछ शीतल हो जावे तो बाकी औषधियां जो कि शीशी में मिली हुई तय्यार रक्खी हैं (शीशी खूब हिला कर) इस तय्यार चाशनी में मिला दें, और मजबूत कार्क दार शीशियों में भर कर सुरक्षित रक्खें। बस औषधि तय्यार है, समय पर काम में लावें।

मात्रा—बलानुसार युवक के लिये ३० बूंद से एक ड्राम तक, बच्चों के लिये ५ बूंद से २० बूंद तक, बालकों के लिये २० बूंद से ३० बूंद तक।

अनुपान–स्वच्छ भवके का पानी(एक्वाडिस्ट०)

गुण—संग्रहणी के लिये अमृत तुल्य महौषधि है इस के अलावा अतिसार, वमन, शूल, अजीर्ण, अग्निमन्दता, कास, श्वांस, विसूचिका तथा अन्य संक्रामक रोगों पर अत्यन्त लाभ कारी है।

प्राचीन अनुभूत योग

[धन्वन्तरि के प्रयोगांक के लिये ।]

लेखक—श्रीमान् आयुर्वेदोपाध्याय पं० गिरिजादत्त जी पाठक, काव्यतीर्थ
अध्यक्ष श्री कालिकेश्वर औषधालय बक्सर ।

देश-दशा-बल-काल-सुद्रव्य-सुयोग फलाफल की मति होती।
कारण[1] लक्षण[2] सात्म्य[3]-सुजाति[4] यथादि[5] परीक्षण की गति होती॥



भेषजतत्व गुणागुण ज्ञान सुशास्त्र सु-धारण की रति होती।
विज्ञ सु "दत्त" सुयोग विलोकत मोहित होत ज्यों पोहित मोती॥

श्रीमान् पं० गिरिजादत्त जी पाठक

शुचिता—सरिता मन मन्दिर में,
बहती तो कदापि न दूषित होती।
शुभ भाव तरंग उमंग भरी,
अनुराग-प्रसून सों पूजित होती॥

उपकार उदार विचारन सों,
शुभ धी चित में नित शोभित होती।
"गिरिजा" तव दिव्य सुयोग विलोकन,
मोहित होत ज्यों पोहित मोती॥

---

१ निदान; २ रूप; ३ उपशय, ४ सम्प्राप्ति; ५ नाड़ी।

योग की उत्तमता गद हारिणी,
रोग-विशेष में लक्षित होती।
औषधि सो अनुपान विधान से,
जो विविधामय को नित खोती॥
शुद्ध सयोग सुदिव्य प्रभाव,
सुवीर्य्य विचार से सेवित होती।
विज्ञ त्यों 'दत्त' सुयोग विलोकत,
मोहित होत ज्यों पोहित मोती॥१॥
मोती की माला गले न लसै;
विलसै श्रुतिशास्त्रसुयुक्ति की * सोती।
सोती न सज्जन की सुमती,
मन मन्दिर में सुजगावति जोती॥
जोती जगै उमगै + सुरती,
प्रिय भाइन पै ममता तब होती।
होती तबै अनुभूत प्रयोग की,
माला मनोज्ञ ज्यों पोहित मोती॥२॥
मोती की सीप को कांजी में डाल के,
स्वेद दिये पर शुद्ध है होती।
होती सु उत्तम भस्म के योग्य;
अनेक गुणों की है होती × उदोती॥
दो अथवा कुमारी में मर्दि के,
भस्म किये बहु रोगहि खोती॥
सोती सु ताप ज्वरादिक को,
बल वीर्य्य बढ़ावे सुसीप की मोती॥३॥
अति उत्तम लेहु अतीस उसे,
करि चूर्ण अनेकन रोग में दीजे।
ज्वर ताप घटे, अतिसार हटे,
श्रम लावे पसीनो न शक्तिहु छीजे॥
कुइनाइन की समता इसमें,
बहु वार परीक्षित है यश लीजे।
शिशु रोगन को तुलसी मधु सों,
यह नाशति शीघ्र न संशय कीजे॥४॥
जब शूल उठे तब शंख की भस्म को,
दीजे हिंग्वष्टक मेलि यथामति।
वह नाशै तुरन्त अनेकन शूल को,
उष्ण सुवारि सों नाहि ?? अत्यूकति॥
यह दिव्य सु औषधि, नाशन में,
उदरामय के न कहीं कभि चूकति।
बहुवार परीक्षित है हमरी,
बहु रोगिन की हुई रोग से !! मूकति॥५॥
बालक तरुण वृद्ध क्षीण होगये हों,
वात-कफ के विकार लक्ष होता जो अनेक हो।
दूध में भिगोय अश्वगंध को सुशुद्ध करि,
आतप सुखाइ चूर्ण कीजे सविवेक हो॥
देशी चीनी मेलि समभाग प्रात-साय फांकि,
माशा छव, पीजे दूध पाव इक टेक हो।
सकल विकार मिटे शक्तिहु ना रंच घटे,
तेज. बल. बुद्धि बढ़े, सुगुण अनेक हो॥६॥
हैजा में मुरतादि वटी प्याज रस मेलि दीजे,
प्याज के अभाव में आर्द्रा रस देता हूं।
रोग के बलाबल में समय विचार कर,
पांच सात गोली दे उत्तम यश लेता हूं॥
खल्ली को मिटाइवे में खल्लीहरतैल दीजे,
प्यास बढ़े लौंग जल देके मैं विजेता हूं।
हँस-कर्ण-मल मेलै नाभि में, सुशीघ्र खोलै,
मूत्र-अवरोध इसी भांति स्वास्थ्य देता हूं॥

* नदी झरना, + प्रीति, × प्रगट करने वाली, ?? अत्युक्ति, !! मुक्ति,

प्रमेह में स्वर्णवंग, लौह-क्षीणता में, रक्त
वृद्धता विनाशिबे को अभ्रक खिलाइये।
विषम ज्वर नाशिबे को गोदन्तीताल दीजे,
फुफ्फुस हृदय शूल देखि श्रृंग लाइये॥
स्वर्ण मालतीवसन्त जीर्ण ज्वर नाशे शीघ्र,
च्यवनप्राश्य खांसी में प्रेम से खिलाइये।
प्लीहा में प्लीहार्णवको संशय विहाय दीजे,
नीचे लिखे अनुपान "दत्त" चित्त लाइये॥
क्रमसों गनाउं अनुपान अनुभूत अब,
माक्षिक गुडूचीसत्व सङ्ग स्वर्ण वङ्ग है।
मधु घृत साथ लौह, अभ्रक सहत सङ्ग,
तुलसी मधु गोदन्त,घृत सो सुश्रृङ्ग है॥
मधु से सितोपलादि, पिप्पली सु माक्षिक से,
मालती वसन्त दिये ज्वर में अभङ्ग है।
क्षीर से च्यवनप्राश्य प्लीहार्णव मधुसंग,
शेफाली रस साथ यो अनुपान अङ्ग है॥

प्रिय मित्रो! उपरोक्त प्रयोगों का स्पष्टीकरण किये जाने की आवश्यकता समझ कर नीचे उसे लिख देते हैं।

खल्ली हर तैल

दाल चीनी २ माशे	तेज पात २ माशे
रासना असली २ माशे	अगर काला २ माशे
साहिजन की छाल २ माशे	कूट असली२ माशे
वच २ माशे,सोंवा के बीज २माशे,	चूक ४माशे
तेल कडूआ ॥ सेर	जल ॥ सेर

तेल पाक विधि से तेल सिद्ध करें।

प्लीहार्णववटी	रसेन्द्रसार संग्रह ४६७ पृष्ठ में
स्वर्ण मालिनी वसन्त	भैषज्यरत्नावली में
हिंग्वाष्टक चूर्ण	भावप्रकाश भैषज्यरत्नावली में
मुस्तादि वटी	भैषज्यरत्नावली में
च्यवन प्राश्य अवलेह	चरकसंहिता में
स्वर्ण वंग	भैषज्य रत्नावली में

सब प्रयोग प्रायः शास्त्रीय हैं। शंका होने पर पूर्ण समाधान किया जायगा।

सुलभ अनुभूत प्रयोग

लेखक—श्रीमान् प्रोफेसर प० बालकराम जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य
आयुर्वेदविज्ञानाचार्य एम डी एच. शास्त्राचार्य
आयुर्वेद विद्यालय ऋषिकेश ।

शीत-ज्वरघ्न वटी—

कल्पनाथ की पत्ती १ छटांक काली मिर्च १ तोला, सींगिया शुद्ध ६मा० विधि- इनको जल से पीसकर चना बराबर गोली बना लेवें। ज्वर आने से ४ घंटे पूर्व १ गोली देवे। फिर दो घंटे बाद गोली जल से खिलावे। इससे शीत ज्वर नाश होता है।

वैद्य विवेचना शीत ज्वर में विशेष ध्यानदेने की बात यह है कि रोगी के मलाशय की शुद्ध कर लेवे दोष परिपक्व होजाने पर सोंठ, सौंफ, सनाय, हरीतकी, सेंधानमक, इनको समान भाग ले कर चूर्ण बना ले वे, फिर इस चूर्ण को १ तोला मात्रा में लेकर गरम जल से देवे। इससे एक या दो पाखाना हो जायेगे फिर इसगोलीका प्रयोग करें। इससे जादू के समान असर होता है हमारे औषधालय में प्रति दिन इस का प्रयोग ४० वर्ष से होता आया है।

(नोट) कल्पनाथ (यवतिक्ता अथवा



श्रीमान् प्रोफेसर बालकराम जी शास्त्री

शङ्खिनी) बंगला भाषा में कालमेघ कहते हैं यह प्रवाहिका, आमातिसार, उदर कृमि (Worms) प्रभृति व्याधियों में अत्यन्त लाभ दायक है। केवल पांच पत्तियां का स्वरस निकाल कर उसमें ढाई मिरच का चूर्ण मिलाकर के ज्वर आने के पहले पिलावे तो ज्वर नहीं आता है।

शीतज्वरघ्न द्वितीय गुटिका—

शुद्ध सफेद संखिया	१ तोला
सफेद मिर्च	३ माशा
शुद्ध गेरू	१ माशा

विधि—इन औषधियों को करेला के स्वरस में घोटकर सर्सप के बराबर गोली बनावें। ज्वर आने के ३ घन्टा पहिले १ गोली बतासा में रख कर देवे। १ घन्टा के बाद १ गोली फिर १ घन्टा अवशिष्ट रहने पर १ गोली दे देवे। हाथ पैर में आकाश बल्ली कूट कर बांध देवे।

प्रमेहघ्न वटी—

मलाई दार शिलाजीत १ तोला, कान्तीसार-भस्म ६ माशा, वंगभस्म १ तोला, शुद्ध गूगल १तो, अजमायन १ तोला, तुरंजवीन २० तोला, त्रिफला ५॥ तोला, गुलाब अर्क १० तोला, तुरंजवीन को गुलाब अर्क में भिगोकर मलकर छान लेवे। फिर सब औषधियां खरल करके एक एक माशा की गोली बनावें। प्रातःकाल और सायकाल गोली का सेवन करें ऊपर से किञ्चिदुष्ण दूध पीवें।

अपथ्य मिर्च, तेल, खटाई, औरन।

पथ्य-यव, मूंग, चावल, लघु भोजन, व्यायाम।

प्रदरदारिणी गुटिका—

कान्तीसार की भस्म ३तोला, रजतभस्म४माशा, वंगभस्म ४माशा, वराटिका भस्म ४ माशा, शंख-भस्म ४ माशा, शुद्ध पारा ४ माशा, शुद्ध आंवला सार गन्धक, संगजराहत की भस्म ४ माशा, राल ४ माशा।

विधि—इन सब औषधियों को लेकर घृतकुमारी के रस में तीन दिन खरल करे। और गोली मूंग के बराबर बांधे। एक गोली खिलाकर बला (वरि-यरा) का स्वरस २॥ तोला पिलावे। प्रातःकाल और साय काल। इससे सब प्रकार के प्रदर अच्छे हो जाते हैं और सोम रोग भी अच्छा होजाता है यह परीक्षित प्रयोग है।

अर्शोघ्न वटी—

महानिम्ब (बकायन) के बीजों की गिरी	ऽ=
निबौली	ऽ=
शुद्ध भिलाया	ऽ=
काले तिल	ऽ=
हरीतकी का छिलका	ऽ=
पुरानो गुड़	ऽ=

विधि—उपरोक्त औषधियों को लेकर पीसे। फिर गुड़ मिलावे। कुकुरौंधा के रस में तीन दिन घोटें फिर छोटे बेर के बराबर गोली बांधे। एक २ गोली उष्णोदक के साथ प्रातः सायकाल सेवन करे, इससे वादी अर्श नष्ट होता है।

कासान्तक वटी—

केशर ६ माशा, कस्तूरी ६माशा, अफीम घन ६माशा

लौंग ६ माशा, बहेड़े के छिल्के ६ माशा, कांकड़ा सिंगी ६ माशा, काली मिर्च ६ माशा, पीपल६मा० इलायची ६माशा, मुलेठी ६ माशा,कुलिजन ६मा० कत्था १ माशा, शुद्ध सिंगरफ ६माशा

विधि-तीन दिन अदरक के रस में घोटे। फिर तीन दिन बंगला पान के रस में घोटे। इसके बाद मूंग के बराबर गोली बांधे। लगे हुए पान में गोली रखकर गोली का रस चूसे। (कफ की खांसी को उत्तम है)

संग्रहणी नाशनी वटी-१

अभ्रक भस्म,कान्तीसारभस्म, शुद्धगन्धक,शुद्ध पारद, जायफल, बेलगिरी, मोचरस, अतीस,सोंठ काली मिर्च, पीपल, सिंहीमुहरा,अजमोद,चित्रक अनारदाना, इन्द्रजव, धतूरे के बीज, धाईके फूल, घी में भुनी हुई हरीतकी, कापित्थ की गिरी, अदरकके स्वरस में २१ वार घोटी हुई अफीम, पहले पारा गंधक की कज्जली बनावे। फिर पोस्त के छिल्के के स्वरस में मिर्च बराबर गोली बांधे मठा के साथ खिलावें इससे संग्रहणी, अतिसार, बन्द हो जाता है। और केवल मठा ही पिलावें।

लोचन सुधा—१

हरितनख	६ माशा
ममीरी	६ माशा
शुद्ध कपूर	५ तोला
टाटरी	१ पाव
चूना	१ पाव
सैंधानमक	१ पाव
फिटकरी	१ पाव
कल्मी शोरा	१ पाव
नवसादर	१ पाव

विधि—प्रत्येक औषधि को पृथक् २ बारीक पीस लेवे। और श्वेतवस्त्र में बांधकर खूंटी में टांक देवे और उसके नीचे कांच की प्याली अथवा, पत्थर, कांसे की कटोरी, रख देवे। एकान्त स्थान में रक्खे किसी प्रकार उसमें धूलि कण आदि न पड़ने पावे। तीन सप्ताह में उपरोक्त औषध द्रव होकर प्याले मेंटपक आवेगी फिर इसको कांच की शीशी में बन्द करके रखे। सब प्रकार के नेत्र रोगों में सलाई से प्रातःकाल और सायंकाल लगावे।

नेत्रों की दृष्टि कमजोर हो जाती है, नेत्रों से पानी बहने लगता है उसको तथा रतौंधी फूला, आदि को अमोघ द्रव सुधाहै विशेष कर छात्र गणों के लिये विशेष उपयोगी है, कारण यह है कि आज कल ८० फीसदी विद्यार्थियों की आंखे कमजोर हो जाती है।

(नोट)—यदि ममीरी न मिले तो ताजी हल्दी की गांठ लेकर बकरी के दूध में उबाल लेवे। फिर उसको कागजी नीबू में छेदकर रक्खे जब नीबू सूख जावे तब गांठ को दूसरे नीबू में रक्खे। इस भांति पांच नीबू में रक्खे। ममीरी की प्रतिनिधि में इसको डाले। खाली इस हल्दी की गांठ को घिस कर आंख में लगाने से आंख का फूला कट जाता है। ममीरी आज कल अल्मोड़ा में पीली जड़ी से मिलती है।

सर्वोपयोगी परीक्षित प्रयोग

लेखक—श्रीमान् पंडित हरिनारायण जी शर्म्मा, आयुर्वेदाचार्य्य, काव्यतीर्थ
आयुर्वेदाध्यापक-बी० एन० मेहता संस्कृत विद्यालय।

आर्तव निरोधनिवारक-

लौंग २ माशे, जमालगोटा १ अदद, मुसब्बर ३ माशे, गुजराती साबुन १ तोला, सब दवाओं को पानी में पीस कर साफ कपड़े की अङ्गुली बराबर मोटी वत्ती में लपेटे, सूखने पर तिल के तैल में डुबोदे। इस वत्ती के गर्भाशय मार्ग में रखने से बहुत जल्दी मासिक धर्म्म होने लगता है इतनी दवा में ३ वत्ता तैयार होती है।

दद्रुनाशक योग-

(क) पालकजुही की जड़, जगी हरड़ सम भाग लेकर बासी पानी में १ माशे की गोली बनावें फिर पानी से घिस कर लगाने से दाद की जड़ जाती रहती है।

(ख) गन्धक १ तोला, पारा १ तोला, नीलाथोथा १ तोला, मुरदाशङ्ख १ तोला, समुद्र फेन १ तोला, कत्था १ तोला पारदगंधक को घोट कर कज्जली बनाले। बाद सब औषधियों को चूर्ण मिला कर पानी के साथ घोटे। इसे के लगाने से दाद जल्दी अच्छा होता है।

(ग) तूनिया, नेनुवा गन्धक, चौकिया सुहागा, राई, शेवारी शक्कर, सब दवायें समान भाग ले पानी में पीस कर गोली बनाले दाद पर लगाये, इसके लेप से दाद जड़ से चलाजाता है।



प० हरनायण जी शर्म्मा
आयुर्वेदाचार्य्य

अपस्मार पर-

प्याज का बीज, नक छिकनी, दोनों चीजें समान भाग लेकर चूर्ण करले। वेग के समय और वेगाभाव में भी १ वार नित्य सूंघने से अपस्मार शीघ्र चला जाता है।

विरेचन वटी-

रेवतचीनी का सत १ तोला मुसब्बर १ तोला, रूमी मस्तगी ६ माशा, सबका चूर्ण कर महीन कपड़े में छाने, बाद दो चार बूंद पानी डाल कर खरल में लोढ़ा से सानें, हाथ में घी लगा कर मटर के बराबर गोली बनाले। १ रात में सोते समय पानी या

दूध से निगल जाने से प्रातः १ दस्त साफ होता है। अधिक पानी से दवा पानी हो जाती है। घी न लगाने से दवा हाथ में चिपट जाती है।

कुष्ठ पर—

शुद्ध तबकी हरताल ५ तोला, कुक्कुटांड की सफेदीमें खरल कर टिकिया बना कर सुखालें ताम्रपात्र में १ सेर गा घृत में टिकिया डाल कर मन्दाग्नि से तब तक पकावे जब तक घी का रङ्ग काला न हो। बाद घी छान कर रख दे।

मात्रा—॥) भर दोनों समय। भोजन चना की रोटी और घी, इस प्रयोग से गलित्कुष्ठ भी अच्छा हो जाता है। *

श्वास पर—

१ इङ्गुदी-हिंगोट (इङ्गुवा) की गिरी का चौथाई हिस्सा, मिर्च ५ दाना, दूध १ पाव में पीस कर ७ दिन पीने से श्वास रोग चला जाता है।

महासुलेमानी नमक—

(१) काला नमक, (२) सेंधानमक, (३) सांभर नमक, (४) खारी नमक, (५) जवाखार (६) सफेद जीरा, (७) नौसादर, (८) कलमी सोरा (९) नीबू का सत, (१०) अमलबेत, (११) सोंठ, (१२) मिर्च, (१३) पीपल, (१४) सफेद सज्जी, (१५) हींग, सब का चूर्ण कर महीन कपड़े में छान कर रखदे। फायदा—पेट के सब रोगों में।

प्रमेह पर—

कुचिला शुद्ध ५, छोटी इलायची २ तोला, पिपरामूल २ तोला, लौंग २ तोला, सब का चूर्ण आंवले के रसमें घोट कर चना बराबर गोली बनायें। एक गोली सुबह शाम दूध के साथ निगल जाय—अतीव गुणकारी है।

रक्तार्श पर—

छोटी दुधिया, २ तोला, रीठा का छिलका २ तोला, माजूफल २ तोला, आम की पत्ती का डंठल २ तोला, सबको पानी से या कुकुरौंधा के रस से पीसकर झरबेर बराबर गोली बनावे दूध के साथ खाने से रक्तार्श जल्द आराम होता है। अनुभूत है।

आमातिसार पर—

१ छटांक घी गरम करके १ माशा अफीम १ तोला जल में घोल कर डाल दे और १ तोला मिश्री पीस कर डाल दे, और खूब चलावे—

मात्रा—३ माशा। आम बिल्कुल गिर जाने पर इस दवा को देना चाहिये।

वातार्श पर—

भांगरे का झाड़ २ तोला, काली मिर्च ११ दाना, दूध १ पाव, सब चीज पीसकर दूध में पीये बादी बवासीर में बड़ा ही फायदेमन्द है।

अंजन—

छोटी इलायची १ तोला, ममीरा १ तोला

---

*मात्रा—अधिक है। लेखक ने स्पष्ट न लिखा कि घृत सेवन करना या हरिताल।

—सम्पादक

फिटकिरी १ तोला, नौसादर १ तोला, सब दवा बारीक पीस कर रख दे सुर्मा की तरह लगाये। नेत्र के सब रोगों पर फायदा करता है।

उपदंश पर-१

रस कपूर ४ तोला, कल्मी सोरा २ तोला, गुलाब जल १ बोतल दोनों चीजोंमें खरल करतेर सुखादें। बाद टिकियो बना कर सुखा कर डमरूयन्त्र द्वारा बेर की लकड़ी की आंच देकर उड़ाले।

खुराक—१ चावल (चौथाई ग्रेन)

अनुपान—मक्खन, भोजन घी रोटी। नमक, खटाई, मिर्च से परहेज। इन्द्रिय विशीर्ण हुई हो तब भी इस प्रयोग के सेवन से आतशक अच्छा हो जाता है।

श्वास पर--१

शङ्ख भस्म १ तोला, गुलाबी फिटकिरी कच्ची ३ माशा दोनों खरल करके रख दे।

मात्रा—१ रत्ती। घी का सेवन कुछ अधिक करे। बहुत लाभदायक है, दमा तुरन्त दबाता है।

ज्वर-जूड़ी--१

गोदन्ती हरताल भस्म, तपकी हरताल, वंशलोचन, छोटी इलायची, कुनैन, मिश्री, सब दवाओं को चूर्णकर सहदेवी के रसमें ८ पहर तक घोटे। खुराक १ चावल। पथ्य दूध। यह दवा खास कर मलेरिया और सब विषमज्वरों को हित-कर है।

सुख विरेचक--१

गुलाब का फूल ३ तोला ४ माशा, सनाय २ तोला, आंवला २ तोला, हरड़ बड़ी २ तोला, हरड़ छोटी २ तोला, हरड़ जर्द २ तोला, पीपल २ तोला, सोंठ २ तोला, मिर्च २ तोला, निसोथ ३ तोला ४ माशा, शुद्ध जमाल गोटा २ तोला ८ मा०, छोटी इलायची १ तोला, रेवन चीनी १ तोला २ माशा, शहद १ सेर, मिश्री आध सेर, अर्कगुलाब १ छटांक, केशर ३ माशा, सब दवायें चूर्ण कर शहद में मिला कर आध घन्टा तक घोटे। केशर को गुलाब जल में घोट कर मिलावे।

मात्रा ॥) भर तक। अनुपान दूध।

गुण—कोष्ठ शुद्धि और अर्श, ऊर्ध्वग रक्तपित्त वात व्याधि-मन्दाग्नि, प्लीहा-यकृत, उदर रोग रक्त वैगुण्य, प्रतिश्याय, जीर्णज्वर, कृमिरोग, कास-श्वास, हिक्का, भगन्दर, मूत्रकृच्छ्र-आतशक इन रोगों को शीघ्रता से नष्ट करता है।

जलोदर पर---१

५०० नीबू का रस, जवाखार ८ तोला, सोंठ सफेदा ३॥ तोला, सुहागा फुलाया हुआ २ तोला, नौसादर २ तोला, गुड़ पुराना ५ सेर, पठानी लोध २ तोला, नकछिकनी २ तोला, सिरस का बीज, चोवा का तेल. पहले नीबू के रस में गुड़ का पाक करे बाद सब दवाओं का चूर्ण डाल कर लोहे की कढ़ाईमें लोहेकी कलछी से चलावे। हलुवे की तरह गाढ़ा होने पर चिकने बरतन में रख दे। मात्रा—सवेरे १ पैसा भर, सांझ को दो पैसा

भर खाय—जलंधर, भगन्दर, बदहजमी सब रोग जाय।

ताम्रभस्म विधि--

एक पैसा ताँबा का लेकर शुद्ध करै बाद उस पर थूहर के दूध में खरल किया हुआ पारा लपेटे। उसके ऊपर ६ माशा रांगा लपेटे। बाद ५ तोला फिटकिरी पीस कर एक सम्पुट में नीचे ऊपर पैसे को रख कर १६ सेर कन्डे की आग दे, पैसा फूल जायगा। इस से कोढ़ भी चला जाता है। यह प्रयोग पंजाब की लिखित पुस्तक से लिया गया है।

ख—तांबे को नीबू के रस और गोमूत्र में शुद्ध कर गन्धक नीचे ऊपर रख कर फूंक दे। बाद उस फूंके हुए तांबे को जायफर रख कर फूंक दे। शीतल होने पर निकाल कर जायफर सहित पान के रस में घोट कर चने बराबर गोली बांधे। अत्यन्त पुष्टिकारक है।

पलित रोग पर-

हरैजनी का छिलका १ तोला, अनार का छिलका १ तोला, काला तिल १ तोला, भिलावा १ तोला, बबूल का गोंद २ तोला, कतीरा गोंद १ तोला, भांगरा का रस १ सेर, सब चीजों का चूर्ण कर लौह पात्र में रख कर १ गज गहरे गढ़े में घोड़ा की लीद के अन्दर ७ दिन तक गाड़ दे फिर दूसरी जगह उसी तरह ६४ दिन तक गाड़े, फिर तीसरी जगह २१ दिन गाड़े। १पाव काले तिलों के तेल में डाल कर मन्दी आंच से पकावे। पानी जल जानेपर तेल छानकर रखदे, मुहमें चावल रख कर तेल सफेद बालों में लगावे जब चावल काला हो जाय तब बालों को आंवला से धोवें। इस से बाल काले होजाते हैं और काले ही निकलते हैं।

अर्श रोग पर-

हरमल १६ तोला, नीम की गिरी १६ तो॰ सफेद सोंठ १ तोला, केशर ६ माशे, किशमिश ६६ तोला, भुने चने की दाल ८ तोला, चांदी के वरक ८ अदद, सोने के वरक ६ अदद, इन सब चीजों को कूट पीस कर गोलियां ३ माशे की बनावे। हर रोज १ गोली १ माशा भांग के शर्बत के साथ खाय। बवासीर जल्दी चली जाती है। खूब परहेज से रहे।

प्रदर रोग पर-

बारासिंहा के सींग टुकड़ा करके ७ दिन तक गो मूत्र में भिगो दे रोज नया नया मूत्र डाले और पुराना गिरा दे, बाद सरफोंका के रस में हड़िया में रख कर गजपुट में फूंक दे। काली भस्म होगी। उस में चतुर्थांश शुद्ध मीठातेलिया विष डाल कर घोटे और टिकिया कर सुखा दे। इन टिकियों को शराव सम्पुट में रख फूंके सफेद भस्म होगी। माशा–२ चावल शहद के साथ, ऊपर से चावल का पानी पिलावें। इस के सेवन से बहुत जल्दी प्रदर रोग नष्ट होता है।

हैजा पर—

लाल मिरचा का छिलका १॥ तोला, हींग तालाब भुनी १ तोला, कपूर १ माशा, अफीम १ माशा, सब दवा प्याज के रस में घोट कर मटर समान गोली बांधे अनुपान इलायची पोदीना में घिस उसी रस में गोली दे।

दाल का मसाला

जीरा भुना २ छटांक, धनियां भुना २ छटांक, अजवाइन देशी २ छटांक, मिर्च सफेद २ छटांक, काला नमक ४ छटांक, चीनी देशी ८ छटांक, हींग भुनी १ तोला, नीबू का सत्त ४ छटांक। सब दवा कूट कपड़ छन करले। यह मसाला दाल शाक में डाल कर खाय, खाने में स्वादिष्ट और पेट के सब रोगो को दूर करनेवाला है।

रक्तार्श पर—

नारियल के ऊपर का छिलका जला कर बराबर अकरकरा का चूर्ण मिलावे। मात्रा–६ माशा, ४–५ मात्रा से ही लाभ होता है।

पथ्य–मूंग की दाल का बरा बना कर घी में।

सुजाक पर—

गधा विरोजा का तेल १॥ तोला, शीतल चीनी का चूर्ण १॥ तोला, दोनों को घोट कर भरबेरी बराबर गोली बनावै। १ गोली सन्ध्या सवेरे पानी के साथलें। बहुत लाभ होता है।

प्रदर पर—

लाही एक छटांक, सफेद कोहड़े के गूदे का चूर्ण लाही का क्काथ विधि से क्काथ करले। कोहड़े के गूदे का चूर्ण करे, फांक कर ऊपर से काढ़ा पिलावे १५ दिन तक। खु० १ पैसा भर।

विच्छू–विष पर—

अमलतास का बीज पीस कर जहां बिच्छू डंक मारे लेप करदे फौरन् विष उतर जायगा।

रजो—निरोध—

इनारून के बीया को पीस कर ५ काली मिर्च डाल कर गर्म कर पिलाने से मासिक धर्म साफ उतरे।

मलावरोध पर—

भुनी सनाय की पत्ती १ पाव, आंवला २ छटांक, अनार दाना १ छटांक, सेंधा नमक २ तो० सब का चूर्ण कर रात को सोते समय जल के साथ खाने से प्रातःकाल साफ दस्त आता है। खु० ३ माशा।

अधकपारी पर—

तम्बाकू को मदार के दूध की ४ भावना दे बाद सूखने पर चूर्ण करले। इसके सुंघाने से अधकपारी जल्दी अच्छी हो जाती है।

बच्चों के हाबो डाबा की दवा—

मुसब्बर ३ माशा, रेवत चीनी ३ माशा, कुटकी ३ माशा, अमलतास की गुदूदी ३ माशा,

रैंड़ी की गुद्दी ३ माशा, सेंधा नमक ३ माशा, कसूस का फूल ३ माशा, ब्रह्मी ३ माशा, इन आठों दवाओं को पीस कर गरम कर पेट पर लेप करदें ऐसे करने से बच्चों के पेट में उठे हुये डब्बा शूल हैकरा मारना आदि सब दूर हो जाते हैं बच्चा दूध पीने लगता है परन्तु घन्टे २ पर गंधकवटी भी देवे छः या सात वटा देने से बच्चाका हाजमा ठीक हो जाता है दो चार दस्त भी होते हैं। अति विकलता होने पर एक या दो खुराक चन्द्रोदय भी देवे।

बरवट की दवा-

नवसादर २ तोला, मिश्री २ तोला, घीकुवार का पट्टा ४ तोला, पट्टा को छील कर पत्थर या काठ के बरतन में टेढ़ा कर के रख दे घाम में। ऊपरसे दोनों चीज का चूर्ण चौथाई भाग भुरभुरा दे, बाद अर्क बह जाने पर बरतन में डाल कर फिर भुरभुरावे इस प्रकार पट्टे के अर्क उतर जाने पर छान कर शीशी में भर कर रखदे। मात्रा–२० बूंद। सुबह-शाम। बच्चो को आधी मात्रा। इससे बरवट बहुत जल्दी दूर होती है। बताशा में दे। कई बार का अनुभूत है।

तिला नपुन्सकता पर—

कूट ७। तोला, बडी पीपरि १२॥ तोला, देवदारु १२॥ तोला, गदहपूरना की जड़ १२॥ तो० मड़भांड़ की जड़ ६। तोला, चम्पाकी पत्ती १२॥ तोला, गज पीपर १२॥ तोला, मैंनसिल ५ तोला, जायफल १२॥ तोला, जावित्री १२॥ तोला, लहसन १ पाव, वच १२ तोला, हरमल १२ तोला, जोंक सूखी ६। तोला, मालकांगनी १ पाव, चिरचिड़ा की जड़ १२॥ तोला, मुरगी के अन्डा की ५० की जरदी, प्याज १२॥ तोला, सब दवा को कुचल कर पाताल-यन्त्र से तेल निकाल ले इन्द्री के अग्र भाग को छोड़ कर १५ मिनट तक इसे मले बाद बङ्गला पान गरम कर बांध दे इस से बहुत फायदा होता है और फफोला भी नहीं पड़ता। बहुत उत्तम तिला है।

सुजाक पर—

मलयागिरि चन्दन का तेल १ तोला, बबूल का गोंद १ तोला, गोंद का चूर्ण कर तेल में दो घन्टा घोटे बाद तीन पाव पानी छोड़ कर घोटे और बोतल में भर कर रख दे। खुराक ३ तोला। सुबह-शाम। बहुत जल्दी सुजाक दूर होता है।

अण्ड वृद्धि पर—

जायफल १ तोला, जावित्री १ तोला, मैनशिल १ तोला, मैनफर १ तोला, गाय के दूध में दो पहर घोटे लेप कर के रेंड़ का पत्ता बांधे।

खांसी पर—

अकरकरा १ तोला, मिर्च १ तोला; केंवाच का बीज १ तोला, हरदी २ तोला, आदी ६ तोला, छोटी हरें १ तोला, वैतार सोंठ १ तोला, सज्जीखार १ तोला, पान अदद ७ सब का चूर्ण कर और पान को पीस कर घिउकुवार के लुआब में गोली १ माशे की बनावे। इस को मुंह में रखने से तुरन्त अच्छी होती है। खास कर रात को आनेवाली खांसी जल्द अच्छी होती है।

परीक्षित प्रयोग पुष्पाञ्जली

लेखक—आयुर्वेद महा महोपाध्याय, राज वैद्य डाक्टर प० रामगोपाल जी मिश्र
आयुर्वेदाचार्य्य. एच. एम. बी. गोंदिया



प्रिय पाठक गण !

आज हम जिस पुष्पाञ्जली को आपकी सेवा के लिये लेकर उपस्थित हुये हैं वह पुष्पाञ्जली हमारे अनेकों वार परीक्षित प्रयोग पुष्पों की होकर आतक ग्रसितातों की कल्याणदायिनी है। यद्यपि यह सत्य है तथापि हम यह कहने का साहस नहीं कर सकते कि आप ज्ञाता जन भी केवल हमारे इस कथन से उसे स्वीकृत कर प्रसन्न होंगे, प्रत्युत हम यह चाहते हैं कि आप हमारी इस क्षुद्र भेंट को प्रेम पूर्ण हृदय से स्वीकृत कर उसके प्रत्येक पुष्पों को सुगन्धि रूप गुणों की प्रथकर परीक्षा समय समय पर करके कुछ



श्री प० रामगोपाल जी मिश्र

लाभ उठाने बाद इसे अपनाने का प्रयत्न करके और सत्प्रेमाकिन् हृदय से प्रसन्न हो हमें कृतार्थ करेंगे तब ही हम हमारी क्षुद्र भेंट से अपने को सफल समझेंगे। सम्पूर्ण वैद्यक शास्त्र का मूल तत्व चिकित्सा पर ही निर्भर है और वह चिकित्सा अनुभूत प्रयोगाश्रितहै अतएव विना प्रयोगानुभूति के कोई भी वैद्यक-शास्त्रवेत्ता यश कीर्ति-दायिनी सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता अतएव अनुभूत प्रयोगो की वैद्यक संसार के लिये कितनी वड़ी आवश्यकता है उसके निर्णयका भार दयालु पाठकों पर ही छोडते हैं कारण आधुनिक काल में रोग समूहों का भारत में कैसा प्रचार है उसे देखते हुए समना क्षुद्र

व्यक्ति अनुभूत प्रयोगों की पूर्ति कर देने के लिये पर्याप्त नहीं हो सके केवल अन्यान्य वैद्यराजों के समान यथाशक्ति लोक कल्याण को विचार कि वे भी अनुभूत प्रयोगों को जनहित के लिये अपनी अपनी शक्ति अनुसार समर्पित कर सकते हैं इसी न्याय को ले हमने भी यह परीक्षित प्रयोग पुष्पाञ्जली पाठकों को भेंट करने का साहस कियाहै। आशा करते हैं कि प्रिय पाठक इसे बड़े प्रेम और आदर से अपनावेंगे ।

शीत ज्वर पर-(१)

(क) कटक करंज की मींगी (सागर गोटी के भीतर का श्वेत भाग) आठ भाग, काली मिर्च एक भाग, लेकर कूट पीस जल योग से उस को घोट चने प्रमाण गोलिया बना सुखा ले और ज्वर चढ़ने के २ घन्टे पहिले, आध २ घन्टे का अन्तर देकर जल से ३ गोली रोगी को खिला देवे, ईश्वर की कृपा से उसी दिन ज्वर रुक जायगा, अन्यथा इसी क्रम से दो तीन दिन तक देना चाहिये। तीसरे दिन अवश्य लाभ होगा शीत ज्वर छूट जाने पर भी ८-१० दिन सुबह, दुपहर, शाम, को एक २ गोली रोगी को ज्वराश निकल जाने और शक्ति प्राप्त होने के लिये देते रहना चाहिये इस गोली को ज्वर न रहने पर देना ठीक होता है, इस के सेवन से एकतरा, तिजारी, चौथिया और रोज आने वाला बुखार नष्ट होता है इसे वैद्य लोग पकट्ठो बनाकर चिकित्सार्थ निकाल जन समुदाय का और अपना परम हित सम्पादन कर सकते हैं।

(ख) अतीस (अतिविष) इसे कूट कपड़ छन करके इसके चार भाग चूर्णमें एक भाग कालीमिर्च का चूर्ण मिला जल योग से बटाने बराबर गोली बना छाया में सुखा नम्बर १ के समान उसी क्रम विधि से रोगी को देवें इस से भी उसी के समान पूर्ण लाभ होगा । इसे भी वैद्य लोग तैयार करके डबियों में भर लाभ उठा सकते है।

(ग) ज्वर केशरिका-शुद्ध पारा, विष, त्रिकुटा, गन्धक, त्रिफला, और जमाल गोटा इन सबको समभाग ले भागरे के रस में खरल कर रत्ती रत्ती की गोलियां बना देवे इसे नारियल के जल से सम्पूर्ण ज्वर में, मिश्री के साथ पित्तज्वर में, मिर्च के चूर्ण के साथ सन्निपात ज्वर में, पीपल और जीरे के साथ तरुण ज्वर, दाह ज्वर, विषमज्वर में देने से पूर्ण लाभ होता है, हम इसे खास कर जूड़ी बुखार में तुलसीके पत्ता के रस, मधु पीपल से देते हैं, पित्त ज्वर में मनुके का कषाय या स्वरस मिश्री में अथवा अनारके रसमें देते है कफ ज्वर में अद्रक रस मिश्री मिर्च और मधु से अथवा पान का रस, मिर्च और मधु से, वात ज्वर में तुलसी का रस मिश्री से, या तुलसीका रस मिश्री मधु से या तुलसी का रस मिश्री पीपल से देते है, हमने इस "ज्वर केशरिका" को ज्वर मात्र पर राम बाण पाया है इसे हरएक वैद्य बनाकर रखें।

अग्यू फीवर पिल्स-किनाईन एक भाग प्रवाल भस्म पांच भाग अथवा किनाईन एकभाग सत्व गिलोय पांचभाग अथवा किनाईन एक भाग निम्ब सत्व पांच भाग अथवा किनाईन २ भाग, प्रवाल २॥ भाग, सत्व गिलोय २॥ भागलेकर नीबू रस में खूब घोट दो दो रत्ती की गोलिया बनालें। जूड़ी बुखार वाले को ज्वर आने के पूर्व एक २ घन्टे के अन्तर से एक एक गोली जल योग से निगला देवे ज्वर रुक जायगा अन्यथा तीसरे दिन

तो ज्वर को यही विधि करने से भागना ही होगा ज्वर छूटने पर भी तीनों समय एक एक गोली देते रहना चाहिये यह क्रम ४-६ दिन रखने से ज्व रांश दूर होकर रोगी पूर्ववत् शक्ति सञ्चय कर लेगा। यह दवा जाड़े के समस्त बुखार को खोने में रामबाण हुई है यह हमारी पेटेंट है। इस पर गर्मी मालूम होने पर दूध देना चाहिये। हर एक वैद्य इसके इच्छित नाम रख कर द्रव्योपार्जन और जन हित कर सकते हैं।

अतिसार ग्रहणी विशूचिका पर—

केशर १ तोला, जायफल १ तोला, धोई हुई भांग १ तोला, कपूर १ तोला, को अदरख के रस में खूब घोट उडद प्रमाण गोली बनावे रोगी को दो समय गुड़ जल से एक एक गोली निगला देवे इससे ज्वरातिसार, अतिसार, संग्रहणी, हैजा रोग दूर होता है संग्रहणी में छाछ का पथ्य देना और और हैजे में जबतक के दस्त बंद न हों तब तक एक एक घन्टे के अन्तर से एक एक गोली देनी होती है।

केशर १ तोला, जायफल १ तोला, कपूर १ तोला, अफीम, १ तोला, को अदरख रसमें घोट उड़द प्रमाण गोली बांधे और उपरोक्त विधि से संग्रहणी हैजा अतिसार में देवे।

भांग १ भाग, जायफल एक भाग, इन्द्र जौ २ भाग, इन्हें महीन पीस शहद मिला अवलेह बनावे। हम इसे इस प्रकार बनाते हैं (विजया अवलेह) भाग को प्रथम धोकर साफकर महीन पीस लेते है और उसमें जल डाल छान लेते हैं बाद इसमें मिश्री या चीनी डाल आग पर चढ़ा चासनी करते हैं जबवह शहद के समान होजाती है तब उसमें जायफल और चूर्ण के अतिरिक्त केशर और बारीक सुखे, बेल की गिरी का चूर्ण भी डालते हैं विशेष गाढ़ा न हो चाटने लायक रहे इस लिये कुछ प्रमाण का मधु मिलाते हैं इस अवलेह से सैकडों अतिसार रोगियों और संग्रहणी वालों ने जीवदान पाया है हर एक वैद्य अनुभव लेकर देखें उचित समझें तो बनो बनाकर धन धर्म दोनो कमा सक्ते हैं।

बेलगिरी, मोचरस, लोध, धायके फूल, आमकी गुठली, अतीस, इनका अवलेह विधि से अवलेह तैयार करलें इसके सेवन से घोरातिघोर अतिसार संग्रहणी नाश होती है इसमें हम जायफल, केशर कुछ प्रमाण में अहिफेन भी देते हैं एवम् पुराने गुड़ पर तैयार करते हैं, यह भी रामबाण ही है, इसे हर एक वैद्य बनाकर लाभ और यश पासके हैं।

अर्श रोग पर—

(क) भिलाये, छोटी हरड़ें, मिहीन कूट कर इन दोनों के बराबर का ले तिल मिलाओ और बाद में पुराना गुड़ डाल अच्छी तरह मर्दन करो और आंवले बराबर १४ गोली बनावो शीत काल के मौसम में एक गोली सुबह १ गोली शाम को खाने को दो, सात रोज तक। गोली हाथसे छूनेसे रोगी को बचाओ—पथ्य में चौदह रोज गेहूं की रोटी तुवरकी दाल सेंधा नमक और खूब घी गाय का दूध खाने को दो, चौदह रोज बाद पथ्य बन्द करा चाहे सो खाने की आज्ञा दो—इसके प्रताप से खूनी बादी बवासीर नष्ट होजाती है मस्से गिरते नहीं पर। फिर जन्म भर तकलीफ नहीं देते खून गिरना, पीड़ा, खुजली बन्द हो जाती है किसी

प्रयोग रत्न

लेखक—आयुर्वेद बिशारद डा० बी०सी०शुक्ला L, C. P. S.
Ph, D. Sc. C. D. S. E. M. D; E. R. C.H.
प्रिंसिपल—दी प्रिंस होमियो पैथिक ऐन्ड
आयुर्वेदिक ट्रेनिंग कौलेज-मेरठ।

पागल बनाने वाला दवा—१

ऊट का रस जो जाड़ों में ऊट की गद्दी पर काला २ मदसा टपका करता है उसे लेलेवे या उस जगह के बाल काट कर पानी में पकाले बाद उस पानी को छानकर खुश्क करले और शीशी में रक्खें। जिसे पागल करना हो या अगर इस दवा से पागल कर दिया गया हो और आपको पता लग जाए तो इससे अवश्य आराम हो जायगा। मात्रा १ रत्ती पानमें रख कर खिलादें तो २४ घन्टे के बाद पागल हो जायगा या पागल को आराम हो जायगा। यदि इस दवा से पागल नहो हुआ है और, और हो क़िस्म का पागल है तो उसे अच्छा करने के लिये केले का रस दिन में २ बार ३ दिन तक पिलाने से कतई आराम हो जाता है।

अनुभूत।



डा० बी. सा. शुक्ला

शक्तिघृत—१

सर्प व सापिन जब जुफ्ती खाते हो उसी समय दोनों को मारले और दूध में डालकर अग्नि पर चढ़ादें जब सर्प जल जाये तो उस दूध को जामन लगाकर जमादें। बाद उस दही को बिलोकर मक्खन निकाल ले और उसको तपाकर घी निकालले। इस घृत की १ बूंद नित्य २-३ दिन तक खिलाने से गलित कुष्ठ शर्तिया आराम होता है।

अनुभूत।

मृगी नाशक—१

जदवार खताई—फादजहर हैवानी बन्फशी बरकी, आम्लाम्सार गन्धक शुद्ध और मनुष्य की जली-हुई खोपड़ी—समस्त समभाग लेकर खरल कर के चने समान गोली बनाकर एक २ गोली प्रातः शाम जल से दें। और ग्रीष्म ऋतु में गुलाब अर्क से दें। २१ दिन में अवश्य मृगी रोग नष्ट होता है।

सिद्ध योग।

केले की गोभ का स्वरस निकाले ॥१ उसमें नौशादर ।– डालकर रक्खे और रोगी को ५-६

डालकर निगल लिया करें। २० दिन ऐसा ही करें या नित्य एक बटी रात्री को यह खावें और प्रातः काल इसको सेवन करें। योग—

मदन कामदेव रस—)

(हस्त लिखित प्राचीन पुस्तक से) शुद्ध पारा ५) को तीन पुट अरण्ड के स्वरस की देवें और ३ पुट घीकवार के रस की देवें और खरल करें और फिर ३ पुट अदरख रस की देवें फिर चित्रक ५) तो० गन्धक आम्लासार शुद्ध ५) दोनों को पीस इनके बीच पारा रख कर मिट्टी के बर्तन में रख कर और गुलहिकमत करके ७ कपरोटी करें। और २२ दिन व रात बराबर मर्म२ आंच देते रहें। बाद में सर्द होने पर दवाको निकाल लें। माशा आधे चावल पानके साथ प्रातः दें। गिजा गेहूं की रोटी चावल मूंग की दाल दूध व मिश्री मक्खन आदि। परहेज स्त्री—प्रसंग व प्याज से खास तौर पर रक्खें।

इन्द्री वर्धक तिला)

इसके सेवन से इन्द्री के समस्त विकार नष्ट होकर पुष्टाई एवं सख्ती खूब आजाती है।

टिंचर मुश्क	१५ बूंद
आइलआफ क्लोवज़	२ ड्राम
आइल फास्फोराईड	२ ड्राम
आइल क्रोटन	२ ड्राम
ओइल केन्थाइडस्	१ ड्राम
वेस्लीन	४ ड्राम

सबको मिलाकर बन्द शीशी में रक्खे। रात्री को सोतेसमय चने समान लेकर नीचे की सीवन और ऊपर का सुपारा छोड़कर शनै २ मलें ताकि सब जज़्ब होजाय, तब भोजपत्र या बङ्गला पान पर तैल चुपड़ कर गर्म करके बाँधदें और ऊपर कपड़ा लपेट दें नित्य रात्री को ऐसा ही करें ठण्डा पानी न लगने दें। जब ज्यादः जीर्णरोग होजाता है तो छोटी २ फुन्सियां निकलने लगती हैं ऐसी हालत में यदि कुछ तकलीफ होतो एक २ दिन को तिला का सेवन बन्द करके १०१ बार का धोया मक्खन कपूर मिलाकर लगावें, वरना जारी रक्खें। इस प्रकार २० दिन तक करें। यदि बे अहतियाति से सुपारी और सीवन पर तिलो लगजाय तो जलन पैदा होगी ऐसी हालत में वैसलीन में काफूर और जिंक ऑक्साइड मिला॰ कर लगायें ठण्डक पड़ जायगी। अनुभूत है॥

अर्श)

कमसे कम २ हजार वर्ष की पुरानी ईंट को पानी में घिसकर मस्सों पर लगाने से शर्तिया २० दिन में आराम होता है।

सर्प काटने की अव्यर्थ महौषध)

तैलन एक जानवर है जो आम तौर पर वर्षा ऋतु में जङ्गलों खेतों में पाया जाता है। नीचे से लाल और ऊपर से काला होता है उसे लेकर समभाग चने की दाल एवं रेंट वृक्ष की छाल मिला॰ कर गोली चने समान बनालें और आधी गोली गर्म पानी में पीस कर पिलादें और आधी दंश स्थान पर चिपकादें। यदि रोगी न पी सके तो उसकी नाक में डालदें और देखें कैसा अद्भुत असर होता है। फौरन रोगी उठ बैठेगा कभी नाकामयाबी न होगी। हजारों रोगियों पर परीक्षा हो चुकी है आप एकबार जरूर इससे लाभ उठावें।

अद्भुत मन्त्र

गर गर गर गर बादल आए । हमरी भक्ति हमरे गुरू की शक्ति दुहाई हजरत सुलेमान नबी पैगम्बर की ॥

विधि—इसको सूर्य्य ग्रहण में सिद्ध करना ग्रहण से थोड़ी देर पूर्व किसी कुए पर चले जाना जब ग्रहण शुरू होवे उसी समय एक टांग कुए में लटका कर एक बाहिर रखकर जप आरम्भ करना जब तक ग्रास रहे तब तक जप करता रहे मोक्ष होने पर बन्द करदें । उतने काल में जितना जप होसके उतने ही में मन्त्र सिद्ध होजाता है ।

जब सर्पदंश वाले रोगी का दूत बुलाने आवे उस वक्त मन्त्र पढ़ कर दहने हाथ पर फूंक मारना ऐसे सात बार पढ़ पढ़ कर फूंक मारना । वही हाथ जोर से दूत के गाल पर मारना । उसका विष दूत को असर करेगा रोगी ठीक होजायगा । फिर दूतको सामने बिठलाकर स्वयम् हाथसे पानी लेकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर के खुद कुरला करना इस प्रकार मन्त्र पढ़ २ कर कुल्ले करते रहना जब तक विष न उतरे । थोड़ी देर में वह भी ठीक होजायगा यदि दूत को विष न असर करे तो जानलो कि रोगी मरगया या फिर ठीक होचुका है ।

अनुभूत—एक हमारे मित्र ने इसे बड़ी तारीफ करके हमें लिखा है पर हमने परीक्षा अभी नहीं की है मन्त्र अच्छा है जो सज्जन परीक्षा करें गुणागुण से कृपया सूचना देदें ।

नासूर पर—

भैंस के कलेजे की तरफ एक पत्थरी होती है उसे लेकर पानी में घिस कर नासूर पर लेप कर दें । उसीसे चन्द बार के लेपों में नासूर अवश्य ठीक हो जायगा—अनुभूत है ।

उदर रोग नाशक—

घी कवार का गूदा (रस) ʃ।, मूली का रस ʃ।, नीबू का रस ʃ।, अदरक का रस ʃ- भुना सुहागा १), नौसादर १) त्रिकुटा २), भुना जीरा १), अजमाइन देशी १), तारफौलाद १), भुनी हींग १ तोला, इन सबको बोतल में डाल दें, सूखी दवायें कपड़ छन कर के डालें । ३-४ दिन में धूप में रख दें, बाद में छान कर बोतलों में भरलें । मात्रा—३ माशे से १ तोला तक समस्त उदर व्याधि नष्ट करने में अद्वितीय है ।

सुरमा मोतिया बिन्द—

नीला थोथा ʃ१ शहद खालिस नीम का ʃ४० विधि—नीले थोथे को कढ़ाईमें डालकर ऊपर से थोड़ा शहदडाले, नीचे मध्यम अग्नि प्रज्वलित रहे जब इसी प्रकार तमाम शहद जल कर खाक स्तर होजाए तो खुश्क होने पर इस में ३ पाव सुरमा शुद्ध स्याह (त्रिफला और बकरी के दूध में २१-२१ बार बुझाया हुआ) सप्तपदि कर्पूर ʃ- मिला कर खूब बारीक खर्ल करें और नित्य प्रातः सायङ्काल चांदी की सलाई से नेत्रों में लगावें तो ज्योति खूब बढ़ जाय, चश्मा लगाने की बान छूट जाए और दूसरी तमाम बीमारियों के साथ ही मोतियाबिन्द तक नष्ट हो जाता है ।

परीक्षित दश प्रयोग

लेखक—श्रीमान् आयुर्वेद महोपाध्याय पं० भागीरथ जी स्वामी, शर्म्मा
रसायनशास्त्री, आयुर्वेदाचार्य्य, कलकत्ता

वंगभस्म—७

हिरणखुरा रांग को गलाकर गोमूत्र, में सरसों के तेल में, त्रिफला के काथ में, भृ गराज के स्वरस, में २१ वार बुझाकर भांग, नकछिकनी, आंवा हल्दी प्रत्येक पांच पांच तोला चूर्ण कर वंग के पत्रों को टाट के टुकड़ों के ऊपर धर कर उक्त चूर्ण बिछाकर उस पर नागयन्त्र धर कर टाट को लपेट कर बांध कर निर्वात स्थान में अग्नि देना। स्वांग शीतल होनेपर निकालना। यह रांग की भस्म श्वेत मक्का की खील की भांति निकलती है।

इसकी मात्रा आधे चावल से १ चावल तक प्रमेह काम्य श्वास, कम जोरी, प्रमेह में सहत मक्खन, मलाई पाक आदि उचित अनुपान से खाना चाहिये।



पं० भागीरथ जी स्वामी

माजून चोपचीनी—८

चोपचीनी लाल उत्तम ५॥ रूमी मस्तगी ४) तोला, वालछड़ ४॥ माशा ३॥ तोला, दारचीनी २॥ तोला, सुरंजानशीरी २॥ तोला, साजहिंदी २॥) अगर तुर्की २॥ तोला, बूजीदान२॥ तोला, जुन्दवेदस्तर २ तोला, अनेसून २ तोला, कुलिंजन २॥तोला, बहमनलाल २॥ तोला, बहमन सफेद २॥ तोला, गुलाब के फूल २॥ तोला, जीरा २॥ तोला, केशर २॥ तोला, कस्तूरी १॥ माशा, सहत उत्तम तिगुना, चिलगोजा की मिंगी ३ तोला, छुवारा ३ तोला, पिस्ता ३ तोला, शर्करा सम भाग कूट छानकर चासनी करके मिलाकर चांदी के वर्क १ तोला, मिलाना चाहिये।

इसकी मात्रा १ तोला से १॥ तोला तक, गाय के दूध के साथ खाने से वात-व्याधि कफ अशक्तता रुधिर विकार मिटता है तथा स्त्री पुरुषों को, खाने से सन्तति देता है।

उपदंशारि वटी—९

रस कपूर ३॥ माशा, सफेद कत्था ३॥माशा छोटी इलायची के दाने ३॥ माशा।

विधि—भृंगराज के रस में ४ दिन घोट कर मूंग के बराबर गोली बनाकर, मक्खन में या मलाई में, या घृत में लपेट कर दो, गोली सायंकाल १४ दिन तक खाना चाहिये और उड़द की चना

की दाल, बेसन की रोटी घृत से चुपड़कर खाना और दाल में घृत विशेष खाना चाहिये।

इससे आतशक, कुष्ठ रक्त-विकार, स्याह सफेद दाग मिटते है।

शक्तिप्रद घृत—(९

गंधक आमलासार १ तोले, शिंगरफ १॥तोले, तबकी हरताल २ तोला, राल २ तोला, हाथीदांत का बुरादा २॥ तोला, लोबान कौड़िया १ तोला, संखिया सफेद १ तोला, संखिया लाल १ तोला, गूगल १ तोला, केशर ६ माशा, जुन्दवेदस्तर २ मा०, शिलाजीत ६ माशा, कपूर १ तोला, कुम्बा की मिगी १ तोला, नीम की मिगी १ तोला बुरादा बारह सिंघा १ तोला, कस्तूरी २ रत्ती अम्बर २ रत्ती गाय का दूध आठ सेर।

विधि—सब कूट कर गाय के दूध में मिला कर जल ऽ। मिलाकर क्वाथ करना, जल जल जानेपर दही जमाकर उससे घृत निकाल कर सीसी में रख कर दो से पांच बूंद तक पान में रख कर खाना और ऊपर से दूध पीना और न्यूमोनिया में थोड़ा सेक कर एरण्ड पत्र बांधकर ऊपर से रुई बांध देना।

लिंग की कमज़ोरी पर ४ बूंद ११ दिन तक सीमन बचा कर लगाना। ऊपर से पान बांधकर सो जाना, प्रातःकाल गर्म जल से धोना।

नासूर की अनुभूत दवा—

चूना, कत्था सफेद, संखिया सफेद सम भाग, सुरमा के सदृश पीस कर नासूर के भीतर पहुंचावे, जब घाव चौड़ा हो जाय तब चूना न डाल कर केवल दो ही दवा डालना थोड़े दिनों में आराम हो जायगा।

अर्शो हरद्राव—(९

हरताल तबकी १ तोला, कुचला १ तोला, अफीम १ तोला सब महीन पीसकर एक सेर जल में घोलकर क्वाथ कर डेढ़ छटांक बाकी रहने पर निथार कर रख लेवे।

क्रिया—प्रथम दिवस जुलाब देकर मस्से को घोड़े के बाल से खूब बांध कर ऊपर से मस्से की जड़ में निथरा हुआ पानी लगा देवे तीन दिन तक। लगाने से जलन नहीं होती है। चौथे दिन लोहे की खूंटी से देखना चाहिये कि मस्सा मुर्दा हुवा या नहीं। यदि मुर्दा हो गया हो तो चिमटी से खेंच लेना चाहिये। यदि मुर्दा नहीं हुआ हो तो वही अर्क फिर दो चार दिन लगाकर मुर्दा कर खेंच कर पृथक कर पीछे व्रण पर यशदका सफेदा मक्खन में मिलाकर जब तक घाव अच्छा नहीं हो जाय तब तक लगाना चाहिये और तबतक घूमना फिरना नहीं चाहिये।

नकली पोदीना सत्त—(९

पोदीना हरे का रस ऽ। सोरा कलमी ऽ। कपूर १ तोला नौसादर २ तो० मिलाकर मट्टी के शराव में रखकर ऊपर दूसरा शराव ढककर कपड मिट्टी करके १ घन्टे कोयलों की नरम अग्नि देने से सत ऊपर आ जायगा। यदि इसको चावल की सदृश बनाना हो तो बीच में छिद्रदार चलनी देकर सम्पुट बनाकर अग्नि देना चाहिये।

गुण—यह पाचक है शिरदर्द भृकुटी की पीडा या शंख शूल, दन्त पीड़ा, सन्निपात; दाद गठिया खाज आदि में मरहम बनाकर लगाने से कास श्वास (दमे)में यथानुपान खाने से फायदा करता है।

यूनानी तजुर्बा किये नुसखे

लेखक—श्रीमान हकीम तुलसीप्रसाद जी अग्रवाल
अध्यक्ष आर्यवर्त्ती औषधालय अलीगढ़।

चन्दनका शर्बत—१

श्वेत चन्दन का चूरा आधपाव को आध सेर उत्तम गुलाब जल में रात को भिगो, सवेरे हलका सा जोश दें। जब डेढ़ पावके अनुमान शेष रह जाय, मल कर छान ले और उस में आध सेर कन्द सफेद या मिश्री मिला कर शर्बत की चाशनी पकालें और ठन्डा होने पर बोतलों में भरलें।

सेवन विधि— दो तोले सवेरे और सायम् थोड़े ताजी पानी में मिला कर पीवें।

गुण—इस के सेवन से प्यास का अधिक लगना शरीर में जलन होना, पेशाब पीला या जलन युक्त होना। नाक मुख में खुश्की रहना नकसीर फूटना तथा गरमी के दिनों में होने वाले पित्त के विकारों को नष्ट करता है। गरमी प्यास लूं बेचैनी सब से रक्षाकरने वाला है

हकीम तुलसीप्रसाद जी अग्रवाल।

सफ़ूफ मुलैयन—१

सनाय, फ़सली गुलाबके फूल, बड़ी हरडकावकुल, वहेडे का वकुल, आमले सूखे, यह सब तीन तीन तोला, बादाम के बीज, कुलफा के बीज एक २ तोला शुद्ध जमाल गोटा की मींग तीन मासे सब को कूट कर चलनी में छान लें, और इस में से, डेढ़ माशेसे दो माशे, एक तोला गुलकन्द या दो ३ माशे मिश्री वा बूरा म मिला कर रात को सोते समय गरमपानी या गरम दूध के साथ खावें। सवेरे को दस्त खुब खुल कर

होगा। कभी कभी एक आध दस्त अधिक भी हो जाता है।

गुण—नवीन या पुराने कब्ज के दूर करने और आंतो तथा आमाशय को दूषित मल से शुद्ध पवित्र बनाने के लिये यह चूर्ण अत्यन्त ही लाभ दायक है। इस के सेवन से न जी घबराता है। और न दस्त होने से निर्बलता होती है, कोमल चित्त वाले पुरुष भी इस का सेवन कर सकते हैं।

हबूब जदवार मुश्की—

सत्व शिलाजीत, अनविंधे मोती, कस्तूरी असली, असली अम्बर, अशहब, लोहवान का सत्व, केशर असली, सोने चांदी के वर्क मोम याई, अबरेशम कतरा हुआ, एक एक माशे, शुद्ध अफीम २ माशे, बादाम की मींग छिली १ तोला, जदवार एक तोला, इन सब को सुरमा की तरह बारीक पीस ले और आवश्यकतानुसार शहद खालिस मिला कर घोटे और चने बराबर गोली बना कर सुखाले इन गोलियों में से एक २ गोली प्रातः और रात्रि को सोते समय गरम दूध या २ घूंट पानी के साथ निगल लें। इन गोलियों का सेवन कराव कफ प्रकृति वाले और नजला व जुकामके रोगियो के लिये अत्यन्त लाभदायक है।

सफूफ कुलाआ—

गंजवा के पत्ते जले, शीतल चीनी, छोटी इलायची के दाने सफेद कत्था, सेलखरी छोटी हरड़, सोरा कलमी, यह सब छः २ माशे, जीरा-गुलाब, सूखा धनियां, वशलोचन चार २ मासे। इन सब को बारीक पीस कर कपड़े में छान लें, और इस में से थोड़ा २ सुबह और शाम या जिस समय मन चाहे मुख के छालों और फलकों पर उङ्गली से लगावें और नीचे को मुख करदें यदि इसका पानी पेट में भी चला जायगा तब भी कुछ हानि न होगी।

कांच निकलने को—

पुराने जूते या पुरानी चलनी का चमड़ा जला कर पीस लें और जब कांच निकल आवे तब आब दस्त लेकर तथा कपड़े से पोंछ कर इस में से थोड़ी सी दवा कांच पर बुरके और हाथ से उसे दबा कर भीतर को कर दे इसे थोड़े दिन करने से कांच का निकलना बन्द हो जायगा। बालकों को काच निकलने पर विशेष लाभ देती है

अपूर्व तिला—

सखिया सफेद आध पाव की एक डली को आक के दूध में भिगो दें। आठवें दिन इस डली को दूध से निकाल कर एक पाव गौ के घी में मिला कर तीन दिन बराबर घोटें। चौथे दिन इस को छोटी सी कढ़ाई या किसी और गहराई लिये हुये चौडे पात्र में डाल कर हल्की सी अग्नि पर रख दें। जब देखें कि घी स्वच्छता के साथ निनर कर ऊपर को आगया है, और सखिया सारा पूर्ण रूप से तल भागमे बैठ गया है, तो इस को बड़ी शांति के साथ अग्नि से नीचे उतार लें

और छूने योग्य ठन्डा होने पर घी को हाथ की हथेली से हल्के २ उठा कर किसी कटोरी या कटोरा में पोंछ ले और इस प्रकार इस में से ऐसी सावधानी के साथ कि सखिया परमाणु नाम को भीन आवें। तीन चार तोले के लगभग स्वच्छ और उज्वल घी निकालें। शेष जो बचे उसको उसी समय जमीन खोद कर दबादें और इस घी में प्रति तोले के हिसाब से केशर, कस्तूरी दो दो रत्ती जाविश्री, जायफल, लौंग, वीरबहुटी एक २ माशा बारीक पीस कर मिलादें, और इस को दो तीन दिन बराबर मक्खन के समान चिकना घोट कर किसी चौड़े मुख की शीशी या डिबिया में भरलें। सेवनविधि—इस प्रभाव शाली तिला-ये बेनज़ीर की इस प्रकार है कि यदि इस में से एक २. आधे २ चने बराबर रात्रिको सोते समय बांधने-बंधने व पान आदि लपेटने की कुछ भी झंझट न करते हुए केवल यौंही काम इन्द्री पर उस के अग्रभाग अर्थात् सुपारी को छोड़ कर उङ्गली से मल दिया जायगा, तो यों तो वह युवक व नवयुवक चाहे कोई हो प्रत्येक को काम शक्तिकी प्रबलता और विषय भोग की रसिकता के वह चमत्कार दिखलायगा जो कभी देखने में न आये होंगे। किन्तु चालीस साल की अवस्था रखने वाले सज्जनों के लिये तो निःसन्देह सप्ताह दो सप्ताह इस का सेवन कर लेना अमृत तुल्य सिद्ध होगा, जो कुछ निर्बलता तथा कमजोरी, सुस्ती, आयु बढ़ने व विषय भोग की अधिकता आदि और दूसरे उचित अनुचित व्यवहार करने के कारण उनकी नस नाड़ियों में उत्पन्न हुई होगी, वह सब नष्ट होकर ठीक तरुणाई की सी अवस्था हो जावेगी। हस्तमैथुन और गुदा मैथुन से उत्पन्न हुई शोचनीय नपुंसकता तथा सुस्ती, नामर्दी के लिये इसको इस प्रकार सेवन करें कि प्रातः और रात को सोते समय प्रथम चने, आधे चने बराबर तिला काम इन्द्री पर उस के अग्रभाग अर्थात् सुपारी को छोड़ कर उङ्गली से मले और इस पश्चात् उसी समय एक टुकड़ा पान या अरण्ड का पत्ता या भोज पत्र तनिक अग्नि पर गर्म करके उस पर लपेटें और ऊपर से कपड़े की पट्टी लपेट कर डोरे से बांध दिया करें किन्तु यह यादरहे कि इस प्रकार सेवन करने से चौथे पांचवे या छठे सातवें, दिन काम इन्द्री पर बिना दुख के छोटी २ फुसियां निकलेंगी इनका कुछ विचार न करें और जिस समय भली भांति फुन्सियां निकल आवें तिला का सेवन छोड़ कर काम इन्द्री पर दिन रात में तीन, चार बार घी चुपड़ दिया करें और जिस समय घी चुपड़ने से फुन्सियां नष्ट हो जावें फिर से दूसरी बार और इसी प्रकार तीसरी बार तिला का सेवन आरम्भ करें। निःसन्देह इस के तीन बार के सेवन से हस्त मैथुन के निराश से निराश व आशाहीन रोगियों को चिरस्थायी लाभ हो जावेगा।

काम किलोल—९

जायफल, दालचीनी, मालकांगनी, अकर करा, भीमसेनी कपूर, जाविश्री, लौंग, रेगमोही एक २ माशे लें और इनको कूट पीसकर बारीक कपड़े में छान लें और इसमें एक माशे इत्र गुलाब अव्वल दरजे का डाल कर खूबअच्छीतरह मिला दें और इसको शीशी में भर कर सावधानी

से रक्खें। जिस दिन किसी को प्रसंग आनन्द का तमाशा दिखाना चाहें या स्वयम् देखना स्वीकार हो उस दिन इसमें से एक माशे के अनुपान से लें और उस को दो डेढ़ माशे शहद खालिस में मिलाकर प्रसंग से घंटे पहले इन्हीं पर उङ्गली से हलका २ लेप करें और सूखने पर मैथुन प्रारम्भ करें। फिर आनन्द का तमाशा देखें, सभ्यता इस का व्यौरे वार वृतान्त लिखने से हम को रोकती है, अतः इतना ही लिखना पर्याप्त है कि यह रसिक नायक लोगों और विशेष कर मन चले लोगों के लिये जो यह चाहते है कि हम पर कोई आसक्त हो प्रथम श्रेणी की आनन्द वर्धक और स्तम्भन करने वाली दवा है।

आतशक पर—९)

बड़ी हर्र का बक्कल, काबुली हर्र का बक्कल, छोटी हर्र, अजवाइन देशी, अजवाइन खुरासानी, कत्था सफेद, लोंग फूलदार, पीली कौड़ी जली हुई सेलखरी, मुरदासङ्ग, कालीमिर्च बड़ी इलायची के दाने, अकरकरा, सुपारी के फूल, दो २ तोले नीला थोथा भुना ६ माशे इन सब दवाओं को कूटकर कपड़े में छानलें और लोहे की कड़ाही में डाल कर उसमें आध सेर कागज़ी नीबू का रस मिलावें और उसको नीम की लकड़ी के उस सोटे से जिसके मुंह पर तांबे का मोटा पैसा लगा हो घोटना प्रारम्भ करें अब घोटते २ गोली बनाने योग्य होजावे उसकी जङ्गली बेर के बराबर गोलियां बनाकर धूप में सुखालें, और इन गोलियों में से एक २ गोली सवेरे शाम दो तीन घूंट ताज़ा पानी के साथ चौदह दिन बराबर खावें यदि इन गोलियों के सेवन से पहले मुनज़िज व मुसफ्फी खून (रक्त शोधक) नुसखे उसकी नियत अवधि तक पीकर इच्छाभेदी रस द्वारा दो तीन जुलाब ले लिये जावेंगे तो बहुत ही अच्छा प्रभाव होगा। इन गोलियों के सेवन काल में लाल मिर्च, गुड़, तैल, खटाई, मछली, शराब, मांस आदि हानिकारक वस्तुओं से परहेज़ करें। भोजन, गेहूँ, चनेकीदाल लौकी तोरई आलू, अरबी, गाजर आदि का साग छटांक आधी छटांक वा जितना भी पच सके घी मिलाकर खावें, मूंग की दाल से बिलकुल परहेज़ करें क्योंकि यह इस रोग में अत्यन्त हानिकारक है। इन गोलियों के १४ दिन के सेवन से हरप्रकार की नई पुरानी आतशक (गरमी) बिना मुंह आये सदा केलिये दूर होजाती है, घावतो सेवन करतेही सूखने लगजाते और शनैः शनैः और सारी व्याधियां भी बिलकुल नष्ट होजाती हैं। बड़ी भारी उत्तमता इन गोलियों में यह है कि अगर इनको एक बार सेवन करलिया जावेगा और फिर दुबारा इस भयङ्कर रोग के लौटने का भय न रहेगा, और न आने वाली सतानपर उसका कुछ प्रभाव होगा।

अनुभूत योगावली

लेखक—श्रीमान् वैद्य मदनमोहन लाल जी मिश्र आयुर्वेदाचार्य्य

ज्वर के लिये—

अनुभूत योग

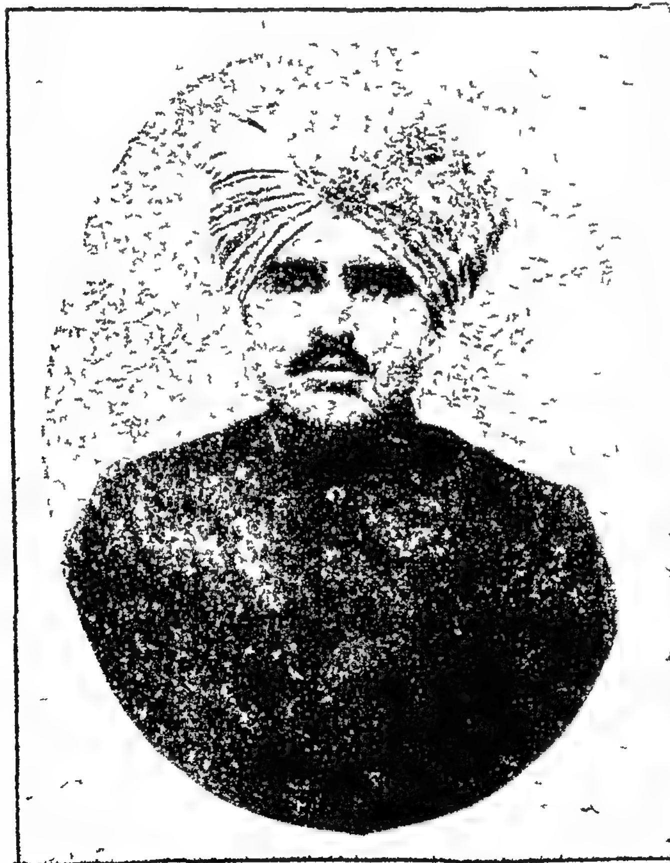
गुलावी फिटकरी फुला कर दो दो रत्ती ज्वर आने के समय से ३ घन्टे वाद लेने से सब प्रकार का ज्वर, विषमज्वर दूर होजाता है।

अतिसार पर—

छोटी हरड, सोफ पोस्त के डोडा, सोंठ समान भाग लेकर सब के बरावर मिश्री मिलाकर ३-३ माशे प्रति दिन प्रातः साय तक्र के साथ फाकने से ३-४ दिन में दस्त वन्द हो जाते हैं।

रक्तार्श पर—

शीतलचीनी १॥ तो रेवन्दचीनी १॥ तोला रसौत १॥ तोला चन्दन सुर्ख १॥ तोला, वकायन के फल ु॥= इन सब औषधियों को जौकुट करके सात पुडिया बनावे। इनमे से एक पुड़िया छः६ छटाक जलमें भिगो देनी दूसरे दिवस प्रात: काल पीस कर उसी जल में छान कर दो रत्ती अफीम थोड़े जल मे घोल कर छान कर उपरोक्त जल में मिलाकर पी लेनी फोक बचे उसे एक नई पुड़िया के साथ उसी कुलड़े में उतना ही जल डालकर भिगो देनी दूसरे दिवस उसी क्रम से घोट छान कर अफीम का जल मिलाकर पी लेनी इसी क्रमसे ७ दिनले। पथ्य-अलोनी गेहू की रोटी और घृत।



वैद्य मदनमोहन जी मिश्र

फुफ्फुस ज्वर पर—

लोवान कौड़िया कपड़ छनकरके एक२ माशे, अरदक के साथ ज्वर आने के तीन घंटे पहले से एक २ घन्टे वाद तीन पुड़िया लेनी चाहिये यदि समय नियत न हो तो तीन तीन घन्टे वाद दिन भर मे तीन पुड़ियाँ लेनी चाहिये। दिन भर धूप मे और रात्रिभर चांदनी में रखने से साधारण जल ही अरदक वनजाता है। इस योग से फेफड़े की खरावी से पैदा हुआ ज्वर दूर होता है।

अनुपम अव्यर्थ अनुभूत प्रयोग

लेखक—स्वर्गीय श्रीमान् रसायनशास्त्री प० श्यामसुन्दराचार्य्य वैश्य
लेखक—रसायनसार, अध्यक्ष—रसायनशाला, काशी।

दाम्पत्य सुखपालन—

आजकल प्रायः देखा जाता है कि युवक लोग अपनी बद्-चलनी से क्लीव हो बैठते हैं। तब उनकी धर्म-पत्नियों को अनेक दुःख उठाने पड़ते हैं। अथवा छोटी अव-स्था में ही दो चार बा-लक होने से पतिका सुख नष्ट होजाता है तब "बुभु क्षितः किं न करोति पाप" इस न्याय से उसको अन्या-य में दृष्टि करनी पड़ती है। उनके उपकारार्थ कुछ योग लिखता हूं।



स्वर्गीय पं० श्यामसुन्दराचार्य्यजी वैश्य

योनि सङ्कोचन—

बबूरके पत्तों का चूर्ण एक छटांक माजू फल का चूर्ण आध पाव वङ्ग भस्म एक तोला मोती भस्म तीन मासे इन चारों चीजोंको क-पड़छन कर-के शीशी में रख छोड़े। ४ रत्ती चूर्ण को योनि में रखकर नि-धुवन करेतो दश बालक की माता क्यों न हो प्रथम सयोग के समान आनंद आ-वेगा।

यदि लिङ्ग को तैलाक्त कर लिया जाय तो दम्पती

को और भी अधिक सुख रहेगा। यदि इस चूर्ण को दो दो माशे रोज खाया करे तो भी भग-संकोचन होता है, और रक्त श्वेतादि संपूर्ण प्रदर, छांछ पड़ना, पसीजना, अवर निकलना, दुर्गन्ध आना आदि योनि के अनेक रोग नष्ट होते हैं।

द्वितीययोनि संकोचन—८

छोटीमाई माजूफल, समुद्रसोख, फिटकरी धतूरे के बीज, अजवायन, पलुयेके बीजकी गिरी कनेर की कली, इन सब को कपड़छन करके सेम्हर के रस में दो दो पहर घोट कर तीन वार सुखाले इसमें भी वही गुण है जो पहले में कहे गये हैं। परंतु यह खाने के काम का नहीं है। जब जब दाम्पत्यधर्म (मैथुन) सेवन करे तब तब ही इसमें से एक चोंहट भरकर पूर्ववत् प्रयोग किया करें।

तिला—

जमालगोटे की मिंगी, सफेद कनेर की जड़, लौंग, दालचीनी आधो आधा तोला जायफल एक तोला, वीरबहूटी, केंचुआ तोला तोला भर, बड़ी इलायची, मालकांगनी, आध आध तोला इन सब को कूट पीस कर कपड़े में पोटली बांध कर गऊ के अढ़ाई सेर दूध में, महुए की शराब आध पाव डालकर इस दवा की पोटली को डाल दे। फिर मंदी मंदी आंच से औटावे आधा दूध जलजाने पर पोटली को निकालकर दही जमादे इसको बिलो कर घी निकाल ले। सोने के समय इस घृत की लिंग पर मालिश करके ऊपर से बंगला पान लपेट कर सूत से बांध दे। पंदरह दिनतक इस प्रकार करते समय ब्रह्मचर्य से रहे।

स्तभनवटी—

छाया में सुखाये हुये भटकटैया (कटेरी) के बीज, नकछींकनी के पञ्चांग का चूर्ण बहेड़े की मींगी, केशर, अफीम, रूमीमस्तगी, जावित्री, जायफल, अकरकरा, सफेदराल उटंगन के बीज, एक एक तोला कस्तूरी एक मासे इन सब को एक पहर तक सहत के साथ घोंट कर झर बेर के समान गोली बनाले। एक गोली खाकर एक घन्टे बाद गार्हस्थ्यधर्म का पालन करे। पद्रह बीस मिनट स्तभन रहेगा।

मेढ्रस्थूलीकरण—

समुद्रफल, दारुहल्दी, बिनोले की मींगी कूठ समान समान भाग लेकर चूर्ण करले इस चूर्ण को भेड़के ताजे दूध में डाल दे जब दूध स्वयं फट जाय तब पानी को तो फेंक दे और दहीके समान गाढ़े भाग को खूब बारीक पीस कर कांच के बरतन में रख छोडे। प्रातःकाल सायकाल मालिश करने से स्थूलता आवेगी—ये चार प्रयोग मुझे श्रीमान् वैद्यराज राधाकृष्ण जी क्वार्टर सतपुला जबलपुर ने दिये हैं।

योषापस्मार (हिस्टीरिया)—९

मुझे हिस्ट्रीया रोग की चिकित्सा का कभी अवसर नहीं मिला था। अपने छात्र रत्न महाराज बुद्धिसागर सूरिजी से मिलने को मैं पेथापुर मही-कांठा गुजरात गया था। वहां के नगरसेठ फतेहचन्द रविचन्द की भतीजी मणीबाई और उनके भतीजे की बहू फूलीबाई दोनों को दो वर्ष से हिस्ट्रीया रोग था। प्रातःकाल के ६ बजे से १०

बजे तक और चार बजे से रात के आठ बजे तक वेग (दौरा) होता था। रोगियों को चार चार आदमी पकड़ कर दबाते थे। तो भी शरीर धनुष के समान दो तीन मिनट के लिये तन जाता था उस समय वे लड़कियाँ बेहोशी में लम्बे स्वर से तीन चार बार चिल्लाती थीं। जिस चिल्लाहट को सुन कर पड़ोस के मनुष्यों को भी बहुत त्रास था; फिर दो चार मिनट को वेग शान्त हो जाता था परन्तु रोगी निःसंज्ञ (बेहोश) पड़ी रहती थीं। वेग उठते समय यदि उपचारक लोग रोगी के शरीर को साध न सकते थे तो रोगी के शरीर के अवयव गर्दन हाथ पैर कमर वगैरह वेग के समय जितने टेढ़े हो जाते थे, वेग उतर जाने पर सीधे नहीं हो सकते थे, यदि वेग के समय कोई आदमी हाजिर न हो तो रोगी का शरीर अवश्य टूट जाय। इस लिये कुटुम्बी लोग नौकर चाकरों में से दो चारों को वेग के समय उपस्थित रहना ही पड़ता था। कुटुम्ब-वत्सल सेठ साहब ने अनेक डाक्टर वैद्यों से इलाज भी कराया परन्तु रोग दिनों दिन बढ़ता गया। इन के इलाज करने के लिये सेठ ने मुझ से कहा और महाराज सूरिजी ने भी अनुमोदन किया परन्तु वहां के डाक्टरों का मुझ से कहना था कि इन रोगियों का यदि आप इलाज करेंगे तो आप सफल प्रयत्न नहीं होंगे। तथापि मैंने दो दो रत्ती मल्लचन्द्रोदय की मात्रा सायंकाल प्रातः काल दो दिन तक दी परन्तु कुछ भी आश्वास नहीं हुआ यह देख कर मुझे बड़ा शोक और आश्चर्य हुआ कि इतनी कीमती औषधि की चार खुराक ने कुछ भी हुकुम क्यों न उठाया? इसी चिन्ता में मुझे निद्रा आई। स्वप्न में ख्याल हुआ कि कोई वृद्ध वैद्यराज मुझ से कह रहे हैं कि अनेक प्रकार की औषधियों से तथा रोग से रोगी का कोठा इतना मलिन हो रहा है कि ऐसी दशा में आपका मल्ल-चन्द्रोदय फल-प्रद नहीं हो सकता। कम से कम छः सात दस्त अवश्य कराने चाहिये। बस, प्रातःकाल उठ कर मैंने दो दो गोली इच्छा भेदी जुलाब की दी। फूलीबाई को सात दस्त हुये मणिबाई को एक भी नहीं। गोली बढ़ाते २ जिस दिन चौदह गोली दीं उस दिन ६ दस्त हुये। फिर चार रत्ती मल्ल-चन्द्रोदय की सहत के साथ देने से एक समय का वेग तो बिलकुल नष्ट हो गया परन्तु सायंकाल के वेग ने अपने समय को छोड़ कर रात्रि के आठ बजे आध घन्टे के लिये दर्शन देना प्रारम्भ किया। दूसरे दिन दो खुराक देने से एक मिनट के लिये भी नहीं आया। वेग का आरम्भ हाथ पैर की अङ्गुलियों की जड़ से होता था, इस लिये वहां पर तीन दिन तक रसायनसारोक्त संखिया का तेल चुपड़ा गया। उस स्थान पर घाव होने पर मुरदासङ्ख, रस-कपूर (बजारू) और कपूर को घी में घोट कर उसी मलहम को चुपड़ने से तैल की गर्मी (जलन) और घाव शान्त हो गये। तब तो सम्पूर्ण गाव में खुशी हुई। वहां के चिकित्सक लोग कहने लगे कि शास्त्री जी ने किसी उग्र औषधि से रोग को रोका तो अवश्य है परन्तु इस का निर्मूल होना असंभव है। मैं दोनों बाइयों को चार दिन और देख कर १ तोला मल्लचन्द्रोदय खाने को दे आया था। आज इन बातों को दो वर्ष हुए अभी तक उनको उस रोग ने नहीं सता-

या। जिस दिन से वे बाई अच्छी हुई उस दिन से ग्राम के पचासों रोगी रोज आने लगे। उसी ग्राम में ठेकेदार के सात वर्ष के बच्चे को सन्निपात हुआ, बचने की आशा किसी को भी नहीं थी हलक में पानी भी जब नहीं उतरे फिर दवा की तो बात ही क्या? मैंने उसे मूर्छान्तनस्य से (जो रसायनसार में लिखी है) जगा कर एक रत्ती वही मल्ल चन्द्रोदय दिया। तीन खुराक में चङ्गा हो गया। इसके बाद गुजरात में इस रोग से पीड़ित कई स्त्रियां अच्छी हुईं। यह रोग गुजरात देश में अधिक होता है। और स्त्रियों के ही होने से हमारी वैद्य मण्डली ने इस रोग को योषापस्मार निश्चय किया है। जब मैं पेथापुर से चला, सम्पूर्ण ग्राम के प्रतिष्ठित मनुष्यों ने उक्त मन्त्रिजी की अध्यक्षता में सभा करके मुझे द्रव्य से और मानपत्र से अधिक सन्तुष्ट किया।

विशूचिकांत वटी—

लाल मिर्च के छिलकों का कपडछन किया हुआ चूर्ण दो तोला, हींग २॥ तोला, कपूर द। माशे (भीमसेनी कपूर हो तो और भी अच्छा) एक माशे अफीम और तीन माशे चन्द्रोदय। (यदि चन्द्रोदय नहीं हो तो भी काम चल सकता है) इन पांचों चीजों को प्याज के रस में सोलह पहर घोटकर मूंग के समान गोलियां बनाकर छाया में सुखा कर रखले। जिस रोगी को हैजा हुआ हो पांच २ मिनट में एक २ गोली आगे लिखे हुए क्वाथ के साथ देने से पांच चार गोलियों में ही वमन दस्त शरीर का ऐंठना प्यास घबराहट इत्यादि हैजे की कुल शिकायत दूर होजायगी। सौ में नब्बे रोगी अवश्य बचेंगे। काढ़े की विधि यह है—पांच तोला सूखा पोदीना पांच तोला खस के तन्तु, पांच तोला इलायची बड़ी, तीनों को पांच सेर पानी में डालकर काढ़ा बनावें। सवासेर पानी रहजाने से कपड़े में छानकर मिट्टी के पात्र में भरले और छानी हुई छूछ में पांच सेर पानी और डालकर क्वाथ बनाने को अग्नि पर रख दे। इसमें से एक तोला क्वाथ के साथ गोली निगलवादे। और रोगी को जब २ प्यास लगे इसी में से दो तोला पिलाता रहे। यह क्वाथ बीत जाय तो दूसरे में से पिलाने लगे।

शूलवटी—

पारद, वङ्ग, गन्धक, नौसादर इन चारों की कज्जली करके जो मृगाङ्क रस तैयार किया जाता है वह तो शीशी के तल भाग में मिलता है और गले पर गन्धक पारद नौसादर का मिलकर एक विलक्षण क्षार बन जाता है, उसी को होशियारी से निकाल कर अमलबेत के रस में या आर्दा के रस में घोट कर उड़द प्रमाण गोलियां बनाले और इनको मट्टी की थाली में अर्धशुष्क (अधसूखी) करके इनके ऊपर मृगाङ्क बुरक कर हिलावें। ऐसा करने से गोली भी सुवर्ण के समान सुन्दर चमकने लगेंगी, और निगलते समय गले में क्षार भी असर नहीं करेगा, और मृगाङ्क से गुण कुछ बढ़ जायगा। कैसाही शूल क्यों न हो एक गोली से तीन गोली तक पानी के साथ साबित निगल जाने से पेट का, नाभि का, पेडू का, हृदय का, पांसुओं का, शूल अवश्य नष्ट हो जायगा, और भूख भी लगेगी। अन्न में रुचि भी होगी।

क्षुधावटी—

पत्ते निकाल कर फेंकने पर जिस मूली का वजन सेर सवासेर हो उसके पेंदे में एक गड्ढा करके नौसादर को पीस कर भरदे। और एक लोहे की सलाई से दो तीन जगह आर पार छिद्र करदे। उस मूली को सुतली से बांध कर खूंटी में लटकादे। मूली के नीचे कांच का, पत्थर का, अथवा चीनी का एक कटोरा रखदे। आठ पहर में नौसादर के सम्बन्ध से मूली का सार स्वरूप पानी टपक टपक कर कटोरे में संग्रहीत हो जायगा। इस पानी को लोहे की कड़ाई में चढ़ा कर इतना जलाकर गाढ़ा करले कि जिसकी गोली आसानी से बन सकें। मूंग के प्रमाण गोलियां बना कर सुखा कर रख छोड़े। भोजन के आदि अन्त और मध्य में एक गोली एक तोला पानीके साथ साबूत नील जाने से खाये पीये अन्न को हजम कर देती है। यदि कुछ दिन तक सेवन करे तो पुराना अजीर्ण और संग्रहणी नष्ट हो जाय परन्तु इस क्रिया के द्वारा अधिक परिश्रमसे थोड़ी गोली हाथपड़ती है। इतनी गोलियों से बड़ी संस्था वाले वैद्यराज का काम नहीं चल सकता, जहां पर सैंकड़ों रोगी नित्य आते हैं। इस लिये वैद्यलोग ऐसा किया करें एक सेर छोटी हरड़ें मिट्टी के चिकने पात्र में रख आक(मदार का इतना दूध भर दें जिसमें हरड़ें डूब जांय। महीना पन्द्रह दिन के बाद हरड़ों को छाया में सुखा दे। पतली मोटी जिस प्रकार की मूली मिलें पत्तों को फेंक कर एक मन पक्का तौल ले। ओदे की रास में कूट कर मट्टी की नांद में भरकर एक सेर पक्का (८० तोले) नौसादर पीस कर डाल दे। एक अहोरात्र के बाद सब रस को कपड़े में छान कर दूसरी नांद में भर ले। छनने पर जो मूलियों का छूंछ रहे उनको भी कूट कर कपड़े में निचोड़कर जहां तक निकल सके स्वरस निकाल ले। उस रस को लोहे की कढ़ाई में डाल कर पकाना शुरू करे। जब विलेपी (पतली दलिया) के समान गाढ़ा हो जाय तब उसमें पूर्वोक्त छोटी हरड़ों का कपड़छन चूर्ण मिला कर मूंग के समान गोलियां बना लें। अन्दाज डेढ़ सेर गोली बनेगी कैसे ही मन्दाग्नि रोगी या नशिष्ठ-भोजी धनी लोग क्यों न मिलें सौ में नव्वे आदमी का तो सार्टीफिकेट वैद्यराज महाशय को मिल ही जायगा। यदि किसी वैद्यराज को पूर्वोक्त हरड़ें बनाने का भी सुभीता न होवे तो हरड़ें न डाला करें। गोली कुछ ही न्यून गुणवाली बनेगी। "अजीर्णप्रभवारोगाः" इत्यादि न्याय से जठराग्नि के मन्द होने से ही संग्रहणी कुष्ठादि अनेक व्याधियां हुआ करती हैं। इस लिये जठराग्नि को इन गोलियोंके द्वारा सर्वदा तमंचा के समान बनाये रक्खे।

पावभर उपर्युक्त गोली(क्षुधावटी) पांचसेर गौमूत्र, दशसेर उष्ट्रमूत्र मिलाकर एक चीनी के पात्र में रख छोड़ें। प्लीहा वरवट वाले जितने रोगी मिलें दो दो तोला पीने को प्रतिदिन दिया करे दस्त भी न लगेंगे और पिलहीभी कटकट के दस्त के द्वारा बिना तकलीफ निकल जायगी। इन गोलियों से विष्टम्भ शूल अरुचि आध्मान मिट जाते हैं।

अनुभव सिद्ध योग

लेखक—श्रीमान वैद्य वीरभान जी ओहरी आयुर्वेद विशारद
मालिक ओहरी आयुर्वेदिक फार्मेसी, पठानकोट।

खूनी ववासीर को—१

माजू सब्ज ३॥ माशे, गेरू ३॥ माशे, कनीरा गोंद ३॥ माशे, रसौत शुद्ध १॥ तोला, सङ्ग जराहत ३॥ माशे, विधि—सब दवा कूट छान करके जल साथ चनेबराबर वटी बनावे सेवन विधि—२ वटी से ४ वटी तक प्रातः बासी पानी से सेवन करें। गुण—खूनी ववासीर (रक्तार्श) के लिये लाभ दायक है।

सुजाक को—१

तवासीर ६ माशे, सत बरोज़ा ६ माशे, मिश्री २ तोला, दाना इलायची ६ माशे, कबाब चीनी ६ माशे, तेल सदल २ तोले। विधि—शुष्क दवाओं को कूट कर तेल में मिला देवें।

मात्रा—दो माशे प्रातः दो माशे सायकाल दूध ताज़ा के साथ सेवन करें।

गुण—मूत्राघात, मूत्र-कृच्छ सुजाक के लिये अनुभूत है।



वैद्य श्री वीर भान जी ओहरी

दांत दर्द को—

Ti. Opn टिंचर अफीम आध ड्राम, Cresetive Pure करें-ज़ेटिव पिओर आध ड्राम, Chloro form क्लोरोफार्म आध ड्राम Ti. Banzovin. Co. टिंचर बेनज़ोविन को आधा ड्राम।

विधि—सब को खूब मिला लेवें।

सेवन विधि—दरद दांत पर रुई का फाया भर कर लगा देने से दांत का दर्द बन्द हो जाता है।

क्षुधावटी—

पत्तें निकाल कर फेंकने पर जिस मूली का वजन सेर सवासेर हो उसके पेंदे में एक गड्ढा करके नौसादर को पीस कर भरदे। और एक लोहे की सलाई से दो तीन जगह आर पार छिद्र करदे। उस मूली को सुतली से बांध कर खूंटी में लटकादे। मूली के नीचे कांच का, पत्थर का, अथवा चीनी का एक कटोरा रखदे। आठ पहर में नौसादर के सम्बन्ध से मूली का सार स्वरूप पानी टपक टपक कर कटोरे में संग्रहीत हो जायगा। इस पानी को लोहे की कढ़ाई में चढ़ा कर इतना जलाकर गाढ़ा करले कि जिसकी गोली आसानी से बन सकें। मूंग के प्रमाण गोलियां बना कर सुखा कर रख छोड़े। भोजन के आदि अन्त और मध्य में एक गोली एक तोला पानीके साथ साबूत लील जाने से खाये पीये अन्न को हजम कर देती है। यदि कुछ दिन तक सेवन करे तो पुराना अर्जीण और संग्रहणी नष्ट हो जाय परन्तु इस क्रिया के द्वारा अधिक परिश्रमसे थोड़ी गोली हाथपड़ती है। इतनी गोलियों से बड़ी संख्या वाले वैद्यराज का काम नहीं चल सकता, जहां पर सैंकड़ों रोगी नित्य आते हैं। इस लिये वैद्यलोग ऐसा किया करें एक सेर छोटी हरड़ें मिट्टी के चिकने पात्र में रख आक(मदार का इतना दूध भर दें जिसमें हरड़ें डूब जांय। महीना पन्द्रह दिन के बाद हरड़ों को छाया में सुखा दे। पतली मोटी जिस प्रकार की मूली मिलें पत्तों को फेंक कर एक मन पक्का तौल ले। लोहे की खरल में कूट कर मट्टी की नांद में भरकर एक सेर पका (८० तोले) नौसादर पीस कर डाल दे। एक अहारात्र के बाद सब रस को कपड़े में छान कर दूसरी नांद में भर ले। छनने पर जो मूलियों की छूंछ रहे उनको भी कूट कर कपड़े में निचोड़कर जहां तक निकल सके स्वरस निकाल ले। उस रस को लोहे की कढ़ाई में डाल कर पकाना शुरू करे। जब विलेपी (पतले दलिया) के समान गाढ़ा हो जाय तब उसमें पूर्वोक्त छोटी हरड़ा का कपड़छन चूर्ण मिला कर मूंग के समान गोलियां बना लें। अन्दाज डेढ़ सेर गोली बनेंगी कैसे हो मन्दाग्नि रोगी या गरिष्ठ-भोजी धनी लोग क्यों न मिलें सौ में नब्बे आदमी का तो सार्टीफिकेट वैद्यराज महाशय को मिल ही जायगा। यदि किसी वैद्यराज को पूर्वोक्त हरड़ें बनाने का भी सुभीता न होवे तो हरड़ें न डाला करें। गोली कुछ ही न्यून गुणवाली बनेंगी। "अजीर्णप्रभवारोगाः" इत्यादि न्याय से जठराग्नि के मन्द होने से ही संग्रहणी कुष्ठादि अनेक व्याधियां हुआ करती हैं। इस लिये जठराग्नि को इन गोलियोंके द्वारा सर्वदा तमचा के समान बनाये रक्खे।

पावभर उपर्युक्त गोली(क्षुधावटी) पांचसेर गौमूत्र, दशसेर उष्ट्रमूत्र मिलाकर एक चीनी के पात्र में रख छोड़ें। प्लीहो वरवट वाले जितने रोगी मिलें दो दो तोला पीने को प्रतिदिन दिया करे दस्त भी न लगेंगे और पिलहीभी कटकट के दस्त के द्वारा बिना तकलीफ निकल जायगी। इन गोलियों से विष्टम्भ शूलअरुचि आध्मान मिटजाते हैं।

अनुभव सिद्ध योग

लेखक—श्रीमान वैद्य वीरभान जी ओहरी आयुर्वेद विशारद
मालिक ओहरी आयुर्वेदिक फार्मेसी, पठानकोट।

खूनी बवासीर को—

माजू सब्ज ३॥ माशे, गेरू ३॥ माशे, कतीरा गोंद ३॥ माशे, रसौत शुद्ध १॥ तोला, सङ्गजराहत ३॥ माशे, विधि—सब दवा कूट छान करके जल साथ चनेबराबर वटी बनावें सेवन विधि—२ वटी से ४ वटी तक प्रातः बासी पानी से सेवन करें। गुण—खूनी बवासीर (रक्तार्श) के लिये लाभ दायक है।

सुजाक को—

तबासीर ६ माशे, सत बरोज़ा ६ माशे, मिश्री २ तोला, दाना इलायची ६ माशे, कबाब चीनी ६ माशे, तेल सन्दल २ तोले। विधि—शुष्क दवाओं को कूट कर तेल में मिला देवें।

मात्रा—दो माशे प्रातः दो माशे सायंकाल दूध ताज़ा के साथ सेवन करें।

गुण—मूत्राघात, मूत्र-कृच्छ्र सुजाक के लिये अनुभूत है।

वैद्य श्री वीर भान जी ओहरी

दांत दर्द को—

Tr. Opii टिंचर अफीम आध ड्राम, Creseteve Pure करैज़ेटिव पिओर आध ड्राम, Chloro form क्लोरोफार्म आध ड्राम Tr. Banzovin. Co. टिंचर बेनज़ोविन को आधा ड्राम।

विधि—सब को खूब मिला लेवें।

सेवन विधि—दरद दांत पर रुई का फाया भर कर लगा देने से दांत का दर्द बन्द हो जाता है।

दाद हर वटी—

कज्जली(पारे गन्धक की)१ तोला, नौसादर ६ माशे, गुग्गल ६ माशे, सुहागा सफेद ६ माशे, सुहागा काला ६ माशे, नीला थोथा ६ माशे, हड-ताल पीली ६ माशे, राल ६ माशे, कत्था ६ माशे शोरा ६ माशे, कवीला ६ माशे, फिटकरी भुनी हुई ६ माशे, बाकुची ६ माशे, मुरदासङ्ग ६ माशे,

विधि—सब वस्तु कूट छान कर नींबू के रस में खरल करके चार रत्ती की वटी बनावें।

सेवन विधि—जिस जगह दाद हो उस को उपले से रगड़ कर और गोलीको थूक में रगड़ कर दाद वाली जगह लेप करें, दिन में एक बार ही दवा लगानी चाहिये, पुरानी से पुरानी दाद दो तीन दफा लगाने से हर जावेगी बहुत आज़-मूदा है और हमारा खानदानी नुसखा है।

अमृत (हयात)—

जौहर नवसादर ६ माशे, सत पुदीना १॥ तोला, सत अजवाएन १॥ तोला, कपूर भीमसैनी १॥ तोला, सत लोहवान १ तोला, सत सोंफ १ तोला, सत इलायची १ तोला,

विधि—सब चीजोंको बोतलमें डाल कर थोडी देर धूप में रख दें। तो सब तेल रूप हो जावेगा।

यह नुसखा इस वक्त के सब नुसख़ों से बह-तर है। यथा अमृतधारा पीयूषसिन्धु आदि आदि।

योषापस्मार पर—

काफूर १माशा, कुनेन सलफास १ माशा, हींग १ माशा, जुन्दवेदस्तर १ माशा, छलगुड्डी १ माशा।

विधि—सब चीजों को बारीक पीस कर शीशी में रक्खें।

मात्रा—दो रत्ती प्रातः दो रत्ती शाम को सेवन करावें।

अनुपान—मग़ज़ बादाम छिले हुये ११ दाने पानी में घोट कर मीठा मिला कर दवाई खालें और ऊपर से घुटे हुये बादाम पीलें।

मंजन—

निमक खुरकी २० तोले, फिटकिरी स-फेद २० तोले, सिरका ४० तोले, सब वस्तु कूट कर पीतलके बरतनमें डालदें, और बरतनको आग पर चढ़ा दें, जब सब चीज़ें जल कर राख हो जायं तो उतार कर ठन्डा कर लेने पर पीस लेवें।

मात्रा—४ रत्ती दांतों से रोज़ मलना चाहिये, और थोड़ी देर के बाद कुल्लाभी करलेना चाहिये।

रोग—प्रायः दांतोंके सभी रोग दूर करता है, दांत दर्द को शीघ्र बन्द करता है।

उपदंश पर—

रस कपूर २ तोले, काफूर २ तोले।

विधि—दोनों को केले के पानी के साथ एक दिन खरल करके फिर शराब बरान्डी १ बोतल में खरल करें, सूख जाने पर डमरू यन्त्र से जौहर ले लेवें, लेकिन याद रहे कि जौहर घी के चिराग से उडाना चाहिये लकडियां जला कर नहीं।

मात्रा—१ चावल से १ रत्ती तक मक्खन में रख कर खानी चाहिये।

रोग—आतशक, सुज़ाक दोनों कितने ही कष्ट साध्य रोग क्यों न हो ७ दिन में अच्छा हो जाता है कितनी ही बार का आज़मूदा है।

परीक्षित योग

लेखक—श्रीमान् डोक्टर प्यारेलाल जी गुप्त रस शास्त्री
एम. बी. ई. एच. मुङ्गेर।

स्त्री रोग पर—

एक रोगिणी-जिसे ५—६ वर्ष से निम्न-लिखित उपद्रव होते थे वर्ष भर में कभी ३-४ बार, कभी महीने में ३-४ बार चक्कर आता तथा मासिक धर्म कभी बराबर होता कभी न होता, चक्कर से पहले हाथ, पैर और शिर में दर्द होता प्रदर के कारण चक्कर आता था। चक्कर से ५-४ मिनट तक बेहोशी रहती थी। मैंने उस रोग को मस्तिष्क निर्वलता और प्रदर समझ कर प्रातः सायं अस्वगन्धारिष्ट ६ माशे में १ तोला जल मिला कर ४ बजे सायङ्काल को रात्रि में सोते समय कनकसुन्दर आसव ६ माशे में ६ माशा जल मिला कर ऊपर से दुग्ध का पान कराया इससे पूरा लाभ हुआ ऐसे ८—१० रोगियों को मैंने इसी चिकित्सा से, ईश्वर की कृपा हुई, आरोग्य किया है जिन को आराम हुए आज १-१॥ वर्ष होते हैं।



डा० प्यारेलाल

छोटे २ बच्चों के लिये चूर्ण-

बायविडङ्ग १ तोला, कुटकी ६ माशा बड़ी हर्र १ नग इन सब को चूर्ण कर काथ कर छान ले

मात्रा-१ रत्ती से १ माशे अवस्थानुसार।

अनुपान-दूध,मक्खन,शहद या दही का तोड़,

गुण—अजीर्ण, कृमि, सर्दी, दांत निकलने के समय कष्ट होना तथा बवाई रोगों से भी बचाती है, देखा जाता है बच्चों की नाक से पानी गिरना आंख आना, दुर्बल होना आदि २ बहुत से उपद्रव होते हैं वह अक्सर कृमि से ही होते हैं। उन के लिये अद्वितीय है। डब्बा रोग होने पर इसी चूर्ण में थोड़ासा अजवाइन फूल मिला कर देनेसे बड़ा लाभ होता है। खासी में बंशलोचन या पीपल मिला दें।

कृमि रोग पर—

कृमि रोग को छत्तीसगढ़में पटील कहते हैं, वह कृमि ४ इञ्चसे लगाकर ३ फुट तक रहता है मैंने अपनी आंखों से देखा है इस कृमि से तरह २ के रोग होते हैं। जैसे—पेट दर्द, भूख न लगना, दस्त न होना, शिर में दर्द आदि २। चिकित्सा—टेसू के बीज, इन्द्र-जव, नीम, चिरायता, इन के चूर्ण मे गुड़ मिला कर सेवन करने से लाभ होता है।

इस औषधि से कई एक रोगियोंको चिकित्सा

की गई उसके फल स्वरूप दो तीन रोगियों का कृमि गिर पड़ा वह कृमि लग भग २॥-३ फुट लंबा था, इतना लम्बा कृमि गिरा अतः उसके पैरों में १०-१५ दिन तक ज्यादा कमजोरी रही, सिर्फ कमर के नीचे का भाग बहुत कमजोर रहा। बाद को अच्छा हो गया।

बच्चों के बढ़े हुए कृमि पर-पलाश के क्वाथ में गुड़ डाल कर तीन दिन देना चाहिये।

रक्तज गुल्म पर—

पारा, नीला थोथा, गन्धक, जमालगोटा, पीपरि, अमलतास की गिरी इन सब को आमले के रस में खरल कर उरद की बराबर गोली बनाले प्रातः साय १-१ गोली तिल के क्वाथ में देवे ग्रन्थ में आमले के स्थान पर थूहर का दूध मिलाना लिखा है, परन्तु आमलों का रस यह मेरा खास अनुभव है।

सिरके के क्वाथ में त्रिकटु हींग और भारङ्गी डाल कर पीने से भी रक्त गुल्म नष्ट होता है।

सुजाक रोगपर—

गुर्चका स्वरस, हल्दी का स्वरस, आमले का स्वरस, इन दोनों को ३-३ माशा या ६—६ माशा लें उस में ६ माशा शहद मिला कर प्रातः साय सेवन करना यह सुजाक रोग के लिये अनुभूत है। *

ज्वर रोग में—

ज्वर में जिससमय कि पेटमें मल इकट्ठा हो गया हो गोट बध गया हो जुलाब काम न देता हो उस समय यह फाहा (कम्प्रेस) अवश्य लाभ दिखाता है।

चूल्हे के नीचे की मिट्टी, नमक, अरण्डी का तैल, श्वेत जीरा इन सबों को एक में मिला कर नाभी में मोटा लेप कर दे। इस लेप को प्रात. से लेकर १२ -१२ बजे दिन तक रखना चाहिये बाद में निकाल दे इस से एक दस्त होगा जिस से पुराना मलगोट आदि भी सब निकल जायगा और ज्वर भी दूर होगा दस्त हो जानेके बाद रोगी को हवा न लगनी चाहिये, अन्यथा सर्दी हो जावेगी।

निद्रा आने के लिये—

(क) सन्निपात्त दोषी ज्वर आदि में रोगी रात दिन तड़फता रहता है नींद नहीं आती इस के लिये औरतों के शिर के गूथने की कंघी में काजल पारे और वही काजल रोगी के नेत्रों में लगा दे। ध्यान रहे कि इसबातका पता रोगीको न लगने पावे। इस प्रयोग को मैं १० वर्ष से काम में ला रहा हूं।

(ख) पीपलामूल गुड में मिला रात्रि को बड़े बेर के बराबर खिलाये।

(ग) भांग को बारीक पीस कर हाथ और पांव के तलुवों पर रगड़ना चाहिये।

*नोट—हल्दी तथा आंवले कच्चे लें।

अनुभूत पांच प्रयोग रत्न

लेखक—स्वर्गीय परमपूज्य श्रीमान् लाला नारायणदास जी वैद्य शिरोमणि
संस्थापक—श्री धन्वन्तरि कार्य्यालय विजयगढ़

जम्भीरीद्राव—१

जभीरी का रस २॥ सेर, हींग भुनी २ तो०, अजमायन ५ तोला, सोंठ धार की ५ तोला, पीपल छोटी ५ तोला, काली मिर्च ५ तोला, सेंधा निमक २५ तोला,, वायविडग ५ तोला, लोंग ५ तोला, शोराकलमी ५ तोला, हरड़ छोटी ५ तोला, राई १० तोला, सव औषधियों को दरदरी कूट कर जभीरी के रस में डाल १ महीने रक्खा रहने दे वाद एक एक तोला भोजनोपरान्त सेवन करने से दस्त साफ होता है-भूक खुल कर लगती है,पेट का भारीपन, अफरा, अजीर्ण पेट का दर्द दूर होता है।

रिगड़ा—

एक गज टुकरी को नीम के पत्तो के रस में भिगोकर छांय में सुखालें इस तरह ११ वार डोव लगाकर सुखावें वार २ नया नीम के पत्तो का रस लें, और २१ डोव त्रिफला के क्वाथ के लगावें फिर इस कपड़ा की वत्ती वना शुद्ध सरसों के तेल में डाल काजल पारें, यह काजल १० भाग लें और छोटी हरड़ १ भाग,कालीमिर्च १ भाग,फिटकरी का फूला १ भाग शुद्ध रसौत १ भाग, रतनजोत देशी १ भाग, सोना मक्खी १ भाग, शोरा कलमी एक भाग, समुद्र फेन १ भाग, पोढ़ा १ भाग, भीमसेनी कपूर १ भाग, सफेदा (जस्त का फूला) १० भाग, सव को कांसे की थाली में डाल कांसे की कटोरी से गुलाबजल के साथ घिसे यदि सूखा वनाना हो तो खुश्क होने पर रखलें और, गीला वनाना हो तव १०१वार का पानी से धुला सरसों का तेल मिला गोला कर रखलें । इसके आंखो में लगाने से आंखो की रोशनी तेज़ होती है, आंखों का चिमचिमा पन जाता रहता है तथा आंखो का वार२ दुःखना वन्द होता है,आंखो से पानी वहना,धुध जाला, सुरखी दूर होती है तथा आंखो के साधारण सव रोगों को लाभकारी है एक वार परीक्षा करने का अनुरोध करते हैं।


स्व० ला० नारायणदास जी वैद्यराज

कर्णमूलपर—९

कत्था, मैनफल, गूगल, रेवतचीनी, समान भाग ले पानी डाल सिलपर वारीक पीस गरम करे जव लेह वत होजाय तव उतार कर्णमूल के वरावर कपड़ा काट उस पर लेप करदे और

इस कपड़ा को कर्णमूल स्थान पर चिपकादे पानी न पड़ने पावे। यह कपड़ा कर्णमूल को शान्तकर स्वयं छूट जायगा।

ग्रहणी-हर अर्क—८

पोदीना ८० तोला, त्रिकुटा ३० तोला, सौंफ ८० तोला, त्रिफला ३० तोला, जीरे दोनों १० तो० चीते की छाल ५ तोला, वायविड़ग ५ तोला, अजमायन ६० तोला, इन्द्रजौ ५ तोला, कुड़ा की छाल ५ तोला, अतीस ५ तोला, वेलगिरी ५ तोला, दालचीनी ५ तोला, इलायची छोटी ५ तोला, लौंग ५ तोला, तालीसपत्र ५ तोला, जायफल ५ तोला, जावित्री ५ तोला, पाढा ५ तोला, मोथा ५ तोला, काकड़ासिंगी ५ तोला, भारगी ५ तोला, धनिया ५ तोला, नेत्रवाला ५ तोला, मकोय ८० तोला, नागकेशर ५ तोला, अमरवेल ४० तोला, कटेरी छोटी के फल २० तोला, तज ५ तोला, बड़ी इलायची २० तोला, तेजपात ५ तोला, कचलौना ५ तो० दाख २० तोला, गिलोय ४० तोला, पीपरा मूल ७॥ तोला, सब औषधियो को जौ कुट कर अठगुने पानीमें २ दिन भिगोकर भवका में अर्क खींच लेना और निम्न औषधियों को जौ कुट कर ३२ सेर पानी में डाल १ वर्तन में भर मुख वन्द कर १ महीने रक्खा रहने देना उसके बाद घोल कर और साफ कर, अर्क भवका में खिंचे में मिला-कर रखना। मूली की जड़ ८० तोला, गुड़ पुराना ८० तोला, शहत ४० तोला जौ ४०० तोला, राई ५ तोला, कलौंजी ५ तोला, संधानमक ५ तोला, कालानमक ४ तोला, हींग १ तोला, चव्य ५ तोला इन सब को जौ कुट कर १६ सेर पानी में डाल १ वर्तन में रख तथा उस का मुख बन्द कर १ महीने रखना उसके बाद छान कर और साफ कर ऊपर के भवका द्वारा खिंचे अर्क में मिलाकर रख लेना।

व्यवहार विधि—मात्रा १ तोला से ५ तोला पर्यंत प्रातः साय जल थोडा २ मिलाकर रोगी को पिलाना। इससे पित्त की, वायु की गृहणी में विशेष लाभ होता है अग्नि बढ़ती है भोजन अच्छी तरह पाचन होता है दस्त जो पतले होते है वह बंध जाते हैं तथा दस्तों का दौड़ा रुक जाता है। एक वार परीक्षा कर इस अमूल्य औषधि के गुण देखें और फलाफल धन्वन्तरि में प्रकाशित करावें

मैलेरिया पर—९

सोड़ा (बाजार में जो शिरधोने और रंग में मिलाने के लिये विकता है) १ तोला, विना बुझा चूना १ तोला, दोनों को पीस कर रखलें। जूड़ी आने से १ घन्टे पहिले पुरुष के सीधे हाथ की, और स्त्री की बांये हाथ की तरंजनी उंगली पर पानी लगा यह दवा २ रत्ती के अनुमान लगाकर ऊपर से पानी से भीगा कपड़ा लपेट दें और बराबर पानी डालते रहे जिससे वह सूखने न पावे तथा नाखून पर न लगे। इससे जूड़ी का आना बन्द होजाता है। जो सुकुमार स्त्री पुरुष बालक औषधि सेवन न करसके उन सबको, तथा गर्भवती स्त्री को बड़ी लाभ प्रद है।

प्रयोग पुष्पावली

लेखक—आयुर्वेदाचार्य श्रीमान् पं० रामेश्वरप्रसादजी द्विवेदी वैद्य-मार्तण्ड
अध्यक्ष श्रीगणेश औषधालय गौतौना ।

—(:)—

बालामृत घुटी—

वायविरङ्ग ६ माशे, अनीस ३ माशे, काकड़ासिंगी १॥ माशे, नागरमोथा १॥ माशे, सोंठ १॥ माशे दुधवच ३ माशे, सनाय ३ माशे, छोटी हर्र ३ माशे,, समुद्रफल २ अदद जौकुट कर ऽ॥ पानी में औटा कर क्वाथ बनाले ऽ। होने पर छानले २० तोला देशी मिश्री मिलाकर चाशनी बना कर उतार ले बाद को चौकिया सुहागा भूना ६ माशा, रूमी मस्तङ्गी ३ माशा बारीक पीस कर मिला दे, ४ रत्ती रतन जोति पीसकर डाल दे और हिलादे उत्तम सुर्ख लाल रङ्ग की दवा बनेगी । बालकों के सर्व रोग नाशक सहस्रों वार की परीक्षित है मात्रा ३ मास के बालक को १ माशा दिनमें दो वार अन्यों को वला बल अनुसार मात्रा योजितकरें ।

कमलवायु पर—

देवदाली को पानी में पीस कर नाक द्वारा खूब नस्य लेवे और ऊपर को सुड़कले उसी दिन कमलवायु नष्ट होजायगी परन्तु मस्तिष्क से पानी खूब टपकेगा घवरावे नहीं वह स्वतः बन्द होजायगा ।

शीतल लवण—

पाचोंलवण ऽ१, सिरका ऽ२ हांड़ी में घोलकर मुख मुद्रा कर १५ मन उपलों में फूंकदे, ठण्डा होने पर निकाले लवण, शेष मिलेगा । पश्चात् काली मिर्च अमलवेत, सोंठ, जीरा, दोनोंटाटरी, सब दो २ तोले अजवायन भुनी १तोला, हींग तलाव भुनी १तो, ताली सपत्र, पीपरि बड़ी १ २ तोला सब को कूट पीसकर जामुनके सिरके की भावना दे सुखाले खुराक १॥ माशा जलके साथ सर्व प्रकारके उदर संबंधी कष्ट दूर होगे मेरा अनुभूत है ।

वैद्य रामेश्वरप्रसाद जी द्विवेदी

शीतज्वर पर-९)

वरकी हरताल १ तो०, तूतिया १ तो० विना बुझा चना १ तो०, तीनो धतूर स्वरसमें खरलकर गज पुट में फूंक देवे श्यामवर्ण की उत्तम भस्म होगी। मात्रा दो रत्ती ज्वर आने से प्रथम ४ घन्टे से मिश्री के साथ दे, बच्चों को १ रत्ती १ दिवस के सेवन से, एकाहिक, द्वितीयक, तृतीयक, चतुर्थिक प्रभृति सभी ज्वर, समूल नष्ट होजांयगे। मेरा २५ रोगियों पर का अनुभूत है।

कर्ण-रोग-नाशक धूम्र—९)

वेंगन की जड़ का धूम्र कान में देने से सब प्रकार की कर्ण पीड़ा अत्यन्त शीघ्र शांत होती है।

सर्व ज्वर नाशक(आसव)-९)

उत्तम देशी सुरा १ वोतल में बृहद सुदर्शन चूर्ण ऽ= मिला वोतल में कार्क लगाकर रख छोड़े २१ दिन पीछे छानले बस तैयार है। मात्रा ५ बूंद से १० बूंद तक बलाबल अनुसार सर्व प्रकार के ज्वरों में दीजिये शीघ्र ज्वर शमन होगा मेरा अनुभूत है।

ज्वर नाशक वटी—९)

दिन में ३ वटी तक दी जासकती है। गूमा के पञ्चाङ्ग; के स्वरस; में चिरायता का चूर्ण भिगोकर सात भावनायें देले पश्चात् पीपरि समभाग मिलाकर एक २ रत्ती की वटी बनावे आठों प्रकार के ज्वरों में अवश्य लाभ होगा।

आधा शीशी पर—९)

रीठा का स्वरस तथा सेंधव—लवण सम भाग मिलाकर छानले उत्तम सुर्ख रङ्ग का तैयार होगा इसका नस्य दे और जलेबी घृत की खानेको दे अवश्य लाभ होगा।

पीत—रस—९)

उसारे रेवन, तथा सफेद कत्था सम भाग लेकर जलसे एक २ मासा की वटी बनावे कोष्ट बलानुसार १ से ४ वटी तक सेवन की जासकती है गर्म जलसे, इच्छानुसार दस्त होंगे अनुभूत है।

सर्प-विष नाशक—९)

सहदेवी बूटीके स्वरस को कांच के बरतन में ४० घन्टे ढक कर छोड़दे, बादको १०१ से १०३ तक की हरारत दे तब स्वरस फटजायगा। उसे कपड़े से छान कर फिर ६ घन्टे रखदे ताकि पानी निथर जाय तब निथरे हुए पानी को छानकर शीशियो में भरकर मजबूत डाट लगादे, इसकी मात्रा १० बूंद तक सर्प काटे को इन्जेक्ट करे अधिक विष ३ बारमें काफूर होजायगा, जैसा विष का वेग हो वैसेही समयान्तर से प्रयोग करें।

प्लेग विष नाशक—९)

पूर्वोक्त रीति से बनाया लाजवन्ती बूटीका इन्जेक्शन, तीव्र सन्निपात युक्त प्लेग रोगी को १० बूंदकी ही मात्रा से ४ बारमें शर्तिया अच्छा करता है। आवश्यक होने पर एक २ वार अधिक भी प्रयोग किया जासकता है परन्तु लाभ निस्सन्देह होगा।

उपदंश विष नाशक—९)

सत्यानाशी बूटीके स्वरस का पूर्वोक्त रीति से बना इन्जेक्शन दश बूंद की ही मात्रा में असाध्य उपदंश रोगी को ६ वार में साध्य बनाता है।

अनेक बार के परीक्षित प्रयोग

लेखक— कविराज डाक्टर श्रीमान् पं० वेद व्यास दत्तजी शर्म्मा शास्त्री
डी० एस-सी, एम-बी०(कल०) एम-डी- (वाशिंगटन)
आयुर्वेदाचार्य्य, वैद्य वाचस्पति।

क्षय-कास पर—

शुद्ध पारा १ तोला, गंधक शुद्ध १ तोला, सुहागा १ तोला, मोती, मूंगा, सख, प्रत्येक दो २ तोला स्वर्ण भस्म ६ मासे।

विधि— इन सब को नीम की छाल के रस में मर्दन कर गोली बनावें और मिट्टी के दो प्यालों में रख कपरोटी कर गज पुट में रख फूंक दे ठन्डा होने पर निकाल कर, लोहभस्म ३ मासे, हिंगुल ३ मासे डाल मर्दन कर रखलें

सेवन विधि—दो दो रत्ती औषधि पीपल के चूर्ण और मधु के साथ सेवन कराने से सब प्रकार का क्षय कास नष्ट होता है।

स्तम्भन वटी—

शुद्ध कुचला १ छटांक, अकरकरा, लोंग, जायफल, वंग भस्म, प्रत्येक एक एक तोला, केशर ३ मासे, अहिफेन ४ मासा, सौ पान के रस में सब को मिला कर खूब घोटे फालसे के बराबर गोली बनालें प्रातः सायं दुग्ध के साथ सेवन करने से नपुन्सकता दूर होती है स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।



डाक्टर वेद व्यास दत्तशर्म्मा

संखिया का तेल

सफेद संखिया १ तो० आमलासार, गंधक चार तोला अलग २ पीस कर सात अण्डों की जर्दी में मिला कर धीमी २ आंच से आध घन्टा तक जलावें, फिर कड़छी से ऊपर तैल की बूंद जो मालूम हो उस को उतार कर शीशी में रखलें

खुराक— १ बूंद पान में, ऊपर से दूध पान करना चाहिये लिंगेन्द्रिय पर लगाने के लिये भी ७ बूंद तैल चमेली के तैल में मिला कर लगावें इस से नपुन्सकता दूर होती है।

मदन मंजरी गुटिका—

वंगेश्वर रस तीन भाग, लौंग, जायफल, जावित्री

लौंग, नागकेशर तेजपात, प्रत्येक दो दो तोला सोंठ, मिरच, पीपल छः ६ तोला, शितावर १५ तो० घी ४० तोला, मिश्री २० तोला, शहद २० तो० स्वर्ण भस्म ६ माशे, मल्ल चन्द्रोदय १ तोला यथा क्रम उपरोक्त वस्तुओं को कूट छान और वङ्गेश्वर रसादिक औषधियों को मिला कर रखलो और घृत मधु और मिश्री को पीछे से मिलाओ। इसकी मात्रा ६ माशे के अनुमान समझो, इसे खाकर पश्चात् गौ का दुग्ध पियो यह वलवर्धक रामवाण औषधि है।

डाक्टरी नुस्खा—

सतकुचला	६ ग्रेन
डेमियाना	४ ड्राम
फास्फ़ोरस	६ ग्रेन
कुनैन	१ ड्राम

सब को मिला कर सौ गोली बनालें एक गोली प्रातः व सायंकाल दूध या मक्खन व मलाई के साथ खाया करें। इस से वल वढ़ता है, नपुंसकता दूर होती है।

यौवन बहार—

सुरवाराद, वहमन सफेद, वड़ी इलायची, चिलगोजा की गिरी, दालचीनी, मिर्च काली, सोंठ, लौंग, नारियल, सकवीनज़, साज़जहिन्दी, जोज़बोया प्रत्येक एक २ दिरम, केशर आधी दिरम सबको कूट छान कर शहद मिलाकर काच की बड़े मुख की शीशी में रखले। स्त्री पुरुष दोनों खायें (कितनी ?) इससे धातुयें पुष्ट होकर बलवीर्य की वृद्धि होती है।

अर्श पर—

पारा २ तोला, कबीला ६ माशे, मुरदासंग ६ माशे, मस्तङ्गी ६ माशे, खुरमा ६ माशे, जिंकऑक्साईड ६ माशे, बोरिक ६ माशे, गाय का घी १ छटांक सौ बार धोये हुए में मिलाकर बवासीर के मस्सों पर लगाना चाहिये।

(२) गोलियें खाने की—नीमकी गिरी, कपूर, रसौत, मूली के बीज, समभाग लेकर वारीक पीसकर गोलियां बनालें, जल के साथ खाने से खूनी वा वादी दोनों प्रकार की बवासीर को आराम होगा, मस्से अपने आप सूख जावेंगे इनमें त्रिफला मिलाकर अर्क सत्यानासी आवश्यकतानुसार डाल कर गर्म करके भी गोलियां बना सकते हैं। इस सूरत में कपूर न मिलावें।

परहेज—तेल, खटाई, अचार, शराब, बेंगन, बाजरा, लालमिर्च, तम्बाकू, मोंठ, मसूर, प्याज, लसून, अधिक विषय, परिश्रम, घोड़े की सवारी, कूदना, गर्म मसाले आदि सब मने हैं।

कास पर शतशोनुभत प्रयोग—

अफीम १ माशा, हिंङ्गुल १ माशा, काली मिर्च १ माशा, सत मुलेहठी ३ माशा, यवक्षार १ माशा, अपामार्ग क्षार १ माशा, सोंठ १ माशा, इन सबको कूटकर २५ गोली बनालें जब तक आराम न हो तब तक सुबह शाम सेवन करे। पथ्य यथा विचार कर रखवादें।

(१) श्वास (दमा) पर योग

शुद्ध सोहागा १ तोला, खालिस ऐलुवा १ तोला दोनों को एक लौहे की कढ़ाही में भून

कर रखले। अभ्रक २०० पुटी ३ माशे, मुलहठी का चूर्ण १ तोला, पुराना १० वर्ष का गुड़ १ तोला (अभावे सादे गुड़ को १० घंटे तेज धूप में पड़ा रहने दे तो १० वर्ष के पुराने गुड़ के अनुसार उसमें भी वैसे ही गुण आजायेंगे) इन सब वस्तुओं को लेकर कूट पीस कर ३ तीन रत्ती की गोलियें बना, कर निम्न प्रकार से सेवन करायें। वात-पैत्तिक स्वभाव वाले को अडूसे के शर्बत में चटावे। और कफ-वात प्रकृति वाले को मधु और अदरक के रस में खिलाये। पथ्या पथ्य-श्वास में वही साधारण पथ्य है-दिनको पुराने चावल का भात, मूग, मसूर, और चने की दाल का जूस, परवल, पक्का सफेद कोहड़ा और करेले की तरकारी, बकरी का दूध, खजूर, अनार, सिंघाड़ा, किसमिस, आंवला, मिश्री, रात को गेहूं या जौ के आटे की रोटी साथ पूर्वोक्त तरकारी। सूजी, चने का वेसन, घी और कम मीठे का बनाया पदार्थ खाने को देना, गर्म पानी ठंडा कर पिलाना।

निषेध द्रव्य—तीक्ष्ण वीर्य द्रव्य, गुरुपाक, रूक्ष पदार्थ, दही, लाल मिर्च, अधिक क्षार-युक्त पदार्थ, आलू, खट्टा, अचार, उरद, मलमूत्र का वेग धारण, व्यायाम, जोर से बोलना, मैथुन, रात्रि जागरण, अधिक भोजन आदि इस रोग में सर्वदा परित्याग करना चाहिये।

(२) संग्रहणी पर योग

बिल्वगिर १ तोला, आम की गिरी १ तो०, जामुन की गिरी १ तोला, सोंठ १ तोला, अहिफेन ३ माशे, केशर १ माशे, जावित्री ३ माशे, जायफल १ तोला, इन सबको कूट कर रखले। १ तोला कुचले को अष्टांश घृत में तलना, जब रङ्ग काला हो जाये खस्ता टूटने लगे, तब अग्नि के ऊपर से उतार के पीसे, उसमें ३ माशे करञ्ज की गिरी अजवायन ३ माशे, छोटी अतीस ३ माशे, सब वस्तु डालकर बारीक पीस छान कर जल डाल के दो रत्ती प्रमाण गोली बनावे १ गोली से २ गोली तक बलाबल देखकर दोनों समय ठंडे जल से या छाछ के सङ्ग से खिलाये। अति क्षीण मनुष्य को एक २ गोली दोनों वक्त साथ में दही छाछ का अधिक प्रयोग करावे। पथ्य में मूंग की धोई दाल वा सूजी का फुलका खाय, बेल का मुरब्बा या सेब फल का मुरब्बा, केला, आलू का रायता सेंधव-लवण भूना हुआ डालकर दे सकते हैं जीरा काली मिर्च भी डाल सकते हैं, सठी के चावल भी दही के साथ खिला सकते हैं।

निषिद्ध द्रव्य—अन्य सब वस्तुयें त्याज्य हैं।

(३) प्रमेह व प्रदर पर योग—

चिकनी सुपारी, माजूफल, धाये के फूल, मोचरस, सोना गेरू, रसौत, चौलाई की जड़, यह औषधे एक २ तोला, सेलखड़ी ३ तोला, शतावरी ३ तोला मोती अनविंधे सच्चे ६ माशे स्वर्णवर्क ३ माशे, शुद्ध सिंगरफ ६ माशे, शुद्धविष (मीठा तेलिया-विच्छनाग) १ तोला, छोटी पीपल १ तोला ३ माशा जिन औषधियों के नीचे लाइन दी गई हैं उनको जंभीरी निम्बु के रस में ६ दिन खरल कर सुखाले। पश्चात् ऊपर की दवाओं को कूट पीस कपड़छन कर मिलाले, फिर एक माशे से तीन माशे तक बलाबल विचार कर खिलावे। प्रमेह के रोगी को आमले के मुरब्बे में

५० दिन खिलावें। प्रदर वाली स्त्री को केले पके हुये की फली ५० दिन तक सेवन करावें। कमजोर मनुष्य को ४० दिन मलाई में सेवन करावें।

पथ्यापथ्य—दिनको पुराने चावल का भात, मूंग, मसूर, चने की दाल, परवल सैंजन (सुरजने) की फली, केले का फूल, नरम कच्चा केला, राम तोरई (गिलकी) सोवा पालक आदि की तरकारी, चौलाई का शाक, कागज़ी नीबू खाना, प्रमेह वा प्रदर रोग में हितकर है। रातको रोटी और ऊपर कहा हुआ शाक आदि देवे। तथा थोड़ा सा मीठा मिलाया हुआ धारोष्ण गौ दुग्धभी पी सकते हैं।

अहितकर पदार्थ (त्याज्य) मैथुन, मद्यपान, कफ वर्धक भोजन, दही, गुड़, लाल मिर्च, तेल के बने पदार्थ, उरद की दाल, खट्टे द्रव्य अचार, चटनी आदि मछली, मठा, अधिक दूध धूप में फिरना, मूत्र मल का वेग धारण आदि इसरोग में अनिष्ट कारक हैं।

(४) श्वास पर रासायनिक योग

शुद्ध संखिया, सहस्त्रपुटी अभ्रक, स्वर्णवंग, चौकिया सुहागा एक २ तोला लेकर अद्रक के रस में घोट कर बाजरे के समान गोलियां बनाकर रक्खें प्रातः सायं मक्खन के साथ सेवन करें। घी दुग्ध का अधिक सेवन करें। इस योग से श्वास रोग नष्ट होकर शारीरिक बल बढ़ता है। पथ्यापथ्य पूर्व योग के अनुसार ही रक्खें।

(५) श्वास नाशक सिगरेट

धतूरे के सूखे पत्ते, भांग सूखी, आंम (अमरूद के पत्ते) ये तीनों पत्ते बराबर वजन में लेकर कूटकर सिगरट की तरह पर भरलें जिस समय श्वास का दौरा हो उस समय इसको पीयें इससे श्वास का दौरा नष्ट होजाता है। पथ्यापथ्य श्वास रोग पर पूर्वोक्त योगों की तरह पर है।

फकीरी चुटकुले

लेखक—श्रीमान् कविरत्न नयनचन्द्रजी (नयन)



बन्ध्या के लिये

फूल कराई श्वेत की,
　जड को जल में पीस।
कई बार देना पिला,
　रोग हरें जगदीश ॥

पुत्र के लिये

गर्भ धार कर गर्भिणी,
　दूध गाय के सङ्ग ।
कोमल पत्ता ढाक का,
　पीवे अपने अङ्ग ॥

शीघ्र प्रसव कारी योग

नीबू की जड़ साथ ले, मिला मुलहठी पीस ।
　घी देकर देना पिला, विधि की हो बख़शीस ॥

काम ज्वर पर

जिह्वा को ऊँचा करो,
　तालू द्वार समीप ।
काम कला की ताप का,
　बुझ जावेगा दीप।

वायु गोला पर

लीद अश्व की छान कर,
　नमक मिला तत्काल।
सकल वायु गोला विषय,
　यह प्रयोग है काल ॥

रजो-निरोध-मासिकधर्म खोलने को

अपामार्ग की मूल कुछ, रख योनी के बीच ।
　रुका हुआ मासिक सभी, ले आवेगा खींच ॥

दमा-विनाशक

शीत सूत्र से दमा हो,
　करो चरस की राख ।
थोडा रखकर पान पर,
　खाओ करके साख ॥

चर्म-रोग-नाशक

एक साल तक गरम जल,
　नित्य नग्न स्नान ।
चमड़े के सब रोग का,
　मेंटे नाम निशान ॥

लाभदायक केश तैल

सरसों का तैल गरम करके, फिर पीस इलायची जग मिलाओ।
कुछ पीस कपूर मिला उसमें, उस तैल को गरमी दूर हटाओ ॥
तब छानके रूह गुलाब मिलाय, सकल घर इस्तैमाल कराओ।
सब तेल बिसारो बाजारी, इस तेल की ओर स्वभाव लगाओ ॥

दृष्टि तेज करने को

प्रातः थाली फूलकी,
पानी भर, रख याम।
सूरज की छाया लखो,
बन जावेगा-काम ॥

नेत्र जलन हरने को

जल भर थालो फूल की,
परछांहीं लख चन्द ॥
जलन दूर हो नेत्र की।
ज्योति न होगी मन्द ॥

पौष्टिक पदार्थ

गधक शुद्ध लो पारद शुद्ध, बराबर दोनों को कर लीजे।
हाथी शुण्डी के रस मध्य, खरल दिन सात बराबर कीजे ॥
रस आमले का तब डाल सखे, दिन सात बराबर भावना दीजे।
रख पारो में सम्पुट करके, फिर रेत भरी हांड़ी धर लीजे ॥

फिर हांड़ी के नीचे आँच जले, अरनी कण्डो की गरमी दीजे।
हो पारद भस्म, रङ्ग पीला, एक रत्ती पान मध्य रख लीजे ॥
बलवान करे वह वीरज को, निखरेगा बदन ह्रास छीजे।
हो साफ़ उदर, अति भूख जगे, ज्वर दाह मिटे, अजमाइश कीजे ॥

तपेदिक पर

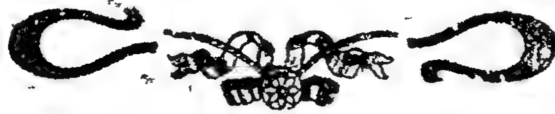
कण्ठ डुबाकर हो खड़े,
गहरा हो तालाब।
जल खींचो निज नाक से,
मुख में छोड़ो-आब ॥

धतूरे के नशे पर

बैंगन की जड़ जल सहित,
पीस पिलादो लाय।
अच्छा होगा नशा सब,
लिया धतूरा खाय ॥

चमत्कारक-मुक्तावली

लेखक—विद्यारत्न, भिषगाचार्य्य, कविराज श्री० उमेशचन्द्रदेव, आयुर्वेद-शास्त्री विद्या वाचस्पति



(१) पीनस पर तैल—

पीनस या दुष्ट प्रतिश्याय में जब नासिका में शोथ होजाता है, नाक से दुष्ट कफ कृमि-युक्त निकलता है, श्वेत लम्बे कृमि रेंग २ कर बाहर टपकने लगते हैं, स्वर मिनमिना होजाता है इस अवस्था में नासिका के दोनों स्वरों में दस दस बूँद इस तैल के प्रातः सायँ टपकायें।

पथ्य—मूँग की दाल और रोटी खिलायें तो इतनी शीघ्र चमत्कार युक्त तथा आश्चर्य्य दायक लाभ होता है कि जितना किसी योग द्वारा देखने में नहीं आया। कृमियाँ मर कर झड़ जाती हैं। स्वर शुद्ध होजाता, है और फिर यावज्जीवन इस रोगका दर्शन नहीं होता। योग यह है—

काले तिल का तैल	ऽ।
भृंग राज का स्वरस	ऽ।
सैन्धव लवण	२ तो०

कढ़ाही में डालकर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर शीशी में रखले। इसकी नस्य से कितनी ही भयङ्कर दशा को प्राप्त पीनस रोग अवश्य आराम होजाता है। लेखक ने पचासों रोगियों पर अनुभव किया है।

(२) अर्श पर चमत्कार—

करञ्ज के बीज छिलके—युक्त पके-हुये लेकर रखले। प्रातः निहारमुँह एक बीज निगलवा दिया करें, ऊपर से एक छटांक देशी कच्ची शक्कर फंकादे। पानी न पिलायें। मूँग की दाल रोटी पथ्य में दें। केवल सात दिन यह प्रयोग करने से अर्श रोग सदैव को पीछा छोड़ देता है। कई रोगियों को यन्त्रणा-मुक्त कर चुका है।

(३) शोथ शार्दूल—

भयङ्कर सर्वाङ्ग शोथमें "पुनर्नवाष्टक क्वाथ" के साथ नीचे लिखे मलहम को समस्त शरीर पर चहरा छोड़कर मालिश करने से इतना आश्चर्य्य दायक लाभ होता वे कि कहते नहीं बनता। योग यह है—

काली बकरी की चर्वी	ऽ।
पारा	ऽ

प्रथम पारा और दो तोला मात्र चर्वी खरल में डालकर नीम के सोटे से धूप में रखकर खूब घोटे। जब काला रङ्ग होजावे तब थोड़ी २ चरबी डाल कर घोटता जावे। जब पारा हल होजावे तब डिबियों में रखलें। धूप में लिटाकर ३ घन्टा मालिश करना, कई रोगियों पर अनुभूत है।

(४) विशूचिकान्तक वटी—

विशूचिका में इन गोलियों ने इस ओर बहुत यश पाया है। योग देखने में अत्यन्त साधारण है, परन्तु इसका चमत्कार प्रयोग करने पर ही प्रकट होता है। मेरा विश्वास है कि यदि रोग असाध्यावस्था तक न पहुंचा हो तो इन गोलियों से शत प्रतिशत रोगी बचजाते हैं।

शुद्ध गन्धक	चीते की छाल
हींग तलाव का फूला	सफेद जीरा
काली मिर्च	अजमोद
वायविडङ्ग	सफेद नमक

सब समान भाग लेकर नीम के पत्तों के रस में घोटकर बेर बराबर गोली बनाकर छाया में सुखा लेना। हैजा के प्रारम्भ में एक गोली गर्म पानी से देना पश्चात् १-२ घन्टा के आधी गोली और देता जावे। जब वमनातिसारणबन्द होजावे आधी गोली और खिलावे। यदि सर्वाङ्ग में स्वेद निकले तो भुनी हुई अरहर पीस कर मालिश करवादे। पानी -पोदीना, सौंफ तथा लौंग डाल कर उबाला हुआ देना चाहिये।

(५) विशूचिका पर—

यदि विशूचिका के रोगी का पानी बंद कर के बारम्बार शुद्ध काले तिल का तैल ही पिलाया जावे तो वह कदापि नहीं मरेगा। यह प्रयोग सर्वोत्तम है।

(६) संग्रहणी पर—

यदि स्वर्णपर्पटी आदि बहुमूल्य औषधियां फेल होगई हों और पुरानी संग्रहणी को लाभ न होता हो, रोगी निर्बल होगया हो तो इस प्रयोग को कीजिये आश्चर्य्य जनक लाभ होगा।

आरूआ वृक्ष (जिसे अरलू या श्योनाक भी कहते हैं) की छाल लेकर साँठी चावल के पानी में पीसले। पश्चात् पुटपाक विधान द्वारा इसका रस निकाल कर मोटे कपड़े से छानकर बोतल में रखले। जीर्ण संग्रहणी वाले रोगी को १-१ तोला प्रात दोपहर व सायं को पिलावे। पथ्य में केवल घी की पूड़ी व मूली का शाक देवे। एक सप्ताह में ही पूर्ण लाभ होजावेगा। यह प्रयोग अत्यन्त गोपनीय है परन्तु सम्पादक महोदय के आग्रह पर प्रकाशित करना पड़ रहा है।

(७) अपस्मार पर—

सफेद आक के फूल १ माशा, पुराने गुड़ ३ माशे के साथ ४० दिन खिलावे। अनुभूत है।

(८) अपस्मार पर द्वितीय-प्रयोग—

काली कसौंदी का फूल	१ माशा
गुलकन्द	२ माशा

मिलाकर खिलावे और उसी का रस नाक में डाले अपस्मार को बहुत शीघ्र निर्मूल करता है।

(९) बालशोष पर चूर्ण—

यदि बच्चे को सूखा का रोग हो तो निम्नांकित चूर्ण से बड़ी जल्दी लाभ होता है। एक सप्ताह में ही सूखा के उपद्रव, कान खुलजाना, हरे व फटे हुये दस्त होना. मूत्र कम आना आदि नष्ट होजाते हैं और बच्चा हरा भरा व हृष्ट पुष्ट दीखने लगता है।

योग यह है —

सफ़ेद इलायची के दाने	३ माशा
केशर असली	६ माशा
बंशलोचन नीली डेलीका	६ माशा
मोती बसरई	४ रत्ती

एक छटांक शहद की चाशनी बनाकर उपर्युक्त औषधियों को डाल कर रखले। और प्रातः काल ४ रत्ती की मात्रा से दिया करें। साथ में निम्नाङ्कित तैल की भी मालिश करावे।

(१०) बाल शोष पर तैल—

कछुये की पीठ	३ माशा
केशर	१ माशा
अफीम	२ माशा
तिली सफ़ेद का तैल	एक छटांक

बिना पानी के तैल में सब औषधे जला कर रखले और बच्चे के सम्पूर्ण शरीर पर मालिश किया करे। बड़ाही गुणकारी है।

(११) प्रमेह-हारी वटी—

कस्तूरी नेपाली	६ माशा
जावित्री	१॥ तोला
जायफल	२ तोला
अकरकरा	२ तोले
कपूर	६ माशा
सोने के वर्क	१० अदद
अनविधे मोती	१ तोले
केशर	२ तोला
छोटी इलायची के दाने	२ तोला
कंकोल मिर्च	२ तोला
स्ट्रिकनिया (Strychnia)	४ चावल
चांदी के वर्क	२० ताव

मोती को गुलाब जल में घोट कर पिष्टी कर लेवे। पश्चात् सब औषधियों का चूर्ण डाल कर गुलाब जल व शहद २ तोले में घोटले। मटर समान गोली बनाकर छाया में सुखा लेवे।

मात्रा—आधी से १ गोली तक शाम को भोजनोपरांत दूध मिश्री के साथ देवें।

इससे बहुत दुर्बल प्रमेही व मधुमेही बहुत शीघ्र मोटा ताजा व तन्दुरुस्त हो जाता है। प्रमेह की सब औषधियों से यह बढ़कर है। शीतऋतु में इसका सेवन अधिक गुणकारी होता है। औषधि सेवन-काल में अंगूर, सेब, गन्ना, आदि तथा अनार अवश्य सेवन कराना चाहिये। जो प्रमेह सैंकड़ों औषधियों से न गया हो उस पर इन्हें खिलाइये फिर देखिये कितना शीघ्र आपको यश प्राप्त होता है।

(१२) रतिवल्लभ चूर्ण—

जो रोगी बहुमूल्य औषधि नहीं खा सक्ते वह इसे सेवन करें इससे स्वप्न-दोष व प्रमेह बहुत शीघ्र नष्ट होकर वीर्य गाढ़ा व पुष्ट होता है। कई वार का परीक्षित है।

ताल मखाने के बीज ﾉ।

लेकर किसी नारियल के गोले में छिद्र कर के भर देवें। ऊपर से बड़को दूध भर देवें

और सुखालें। सूख जाने पर कूट कर कपड़छन करलें। यदि तीन वार दूध भर कर सुखालें तो और भी अच्छा बनेगा।

पश्चात् कुछ छुआरे लेकर उनका पेट चीर कर उपर्युक्त चूर्ण में से ३-३ माशा प्रत्येक में भर देवें। ऊपर से कच्चे धागे से लपेट दें।

प्रथम ४ छुआरों से प्रारम्भ करें। चार छुआरे लेकर आधसेर गौ दुग्ध में इतना ही पानी डाल कर उबालें जब पानी जल जावे तब छुआरे निकाल कर खालें और ऊपर से मिश्री मिलाकर दूध पी जावे। धीरे धीरे इसे बढ़ाते जावें यह औषधि जीर्णातिजीर्ण शरीर में भी बहुत शीघ्र वीर्य सञ्चार करके सन्तान के योग्य बनाती है। जिनके वीर्य की बहुत कमी हो वह इस के प्रयोग से बहुत शीघ्र लाभान्वित हो सकते हैं। पाठक! इसे परीक्षा करिये फिर तो आप भी हमारी सम्मति अवश्य अनुमोदन करेंगे। कई निराश वीर्य रोगियों ने इसे अजमाया है।

(१३) श्वेत प्रदर पर—८

यदि आप औषधि करते करते थक कर बैठ रहे हों और चिपचिपाहट दूर न हो तो इसे भी अजमाइये मैं विश्वास दिलाता हूं कि आपको कभी निराश न होना पड़ेगा।

शकर कन्द ऽ।

रतालू ऽ।

छीलकर साया में सुखाले। समानभाग मिश्री मिलाकर ३,३ माशा की मात्रा प्रातः साय मिश्री युक्त दूध ऽ= के साथ पिलाइये। देखिये कितनी जल्दी लाभ होता है।

(१४) द्रवामृत रसायन—९

यह श्वेत प्रदर की अव्यर्थ दवा है। धातु जाना, श्वेत पानी जाना, सोमरोग व प्रमेह पर रामबाण है। स्त्रियों को खिलाने से अक्षत योनि की तरह सन्कोच कर देती है। क्यों कि उग्र सन्कोचक है। अत्यन्त स्तम्भक व वाजी करण है।

श्वेत मुर्गे के अण्डों के छिलके लेकर नमक युक्त जल में भिगोदें। पश्चात् झिल्ली आदि दूर कर चांगेरी के रस में घोट कर गजपुट में फूंक दे। यदि ठीक भस्म न हो तो एक पुट और देदें ऊपर से २ पुट नीबू के रस की देदें। भस्म हो जायगी।

मात्रा—१,२ रत्ती शहद के साथ देवें।

(१४) लाल गुड़ा—

बच्चों के ज्वर पसली-अतिसार-श्वास पर सर्वोत्तम प्रयोग है।

रस सिंदूर	शुद्ध हिंगुल
टंकण खील	इन्द्र यव
त्रिकुटा	नागर मोथा
नीम की छाल	लाल चन्दन
सफेद सरसों	कुटकी

कूठ सब २-२ तोला लेकर।

चूर्ण बनाना आधी रत्ती की मात्रा से सितोपलादि चूर्ण के साथ मिलाकर या केवल शहद से चटाना। बहुत ही गुणकारी है।

हृदय का प्रतिबिम्ब

लेखक—श्रीमान् कविराज हेमराज जी,विशारद; वैद्य, एम. ए. एम. लाहौर।



विद्वान्, अनुभवी, विचक्षण महोदयों की सेवा मे हृदय का प्रतिबिम्ब रखने की प्रेरणा श्री सम्पादक धन्वन्तरि की ओर से जो हुई है, उस का पालन करने के लिये हम नवीन भाव से उपस्थित होते हैं। सम्पादक महोदय जी ने लिखा है, कि हमारे प्रयोगाङ्कके लिये अपने अनुभूत प्रयोग भेजो भेजो तथा साथ ही अपना फोटो भेजो ताकि धन्वन्तरि क पाठक वैद्य गणो का परस्पर विशेष परिचय हो जाय। आप का यह भाव बहुत ही उच्च है परन्तु हमारी सम्मति में वैद्य महोदयों के वास्तविक फोटो का प्राप्त करना कठिनतर है, बाह्य फोटो तो बहुत से वैद्य सज्जन भेज देंगे। किन्तु हार्दिक फोटो जो वास्तविक रूप में वैद्यों का फोटो है वह तब ही प्राप्त हो सकता है जब सच्चे भाव से परस्पर के उपकार उदार व विशाल हृदयसे अपने २ अनुभूत योग लिखे जिस से सर्व साधारण वैद्यगण, अन्य अनुभवी विद्वान वैद्य महोदयों के अनुभव से लाभ उठाते हुए जनता में आयुर्वेद के गौरव को उज्ज्वल करने में समर्थ हो तथा यश को प्राप्त कर सकें। और निष्कपट भाव से हृदय का प्रतिबिम्ब वैद्यभ्राताओं के सन्मुख रक्खें।

ये शब्द प्रकाशित करने से हमारा प्रयोजन यह है कि हमारा जहां तक अनुभव है वैद्य लोगों की अभी तक वह अवस्था बहुत दूर है जो दूसरे भ्राताओं की उन्नति में अपनी उन्नति समझें यहां तो स्वार्थ की अग्नि हृदयों में हर समय बनी रहती है और यह ही भावना होती है कि संसार भर की लक्ष्मी और यश हम ही प्राप्त करलें। दूसरे बैठे आकाश की ओर झांका करें, बड़ी भारी कृपा करेंगे तो रोगियों के सन्मुख एक दूसरे की निन्दा तो अवश्य ही कर देंगे। हमें स्मरण है कि जब मैडीकल कालेज में ऐनाटमी सीखने के लिये प्रविष्ट हुए तब वहां जाकर देखा कि वहां के विद्यार्थी एक दूसरे को हर एक कठिन से कठिन बात ऐसे प्रेम व सच्चे भाव से बताता था कि जिससे हम चकित हो गये और संस्कृत के विद्यार्थियों की अवस्था पर रोना आता था, विशेष कर वैद्यों की अवस्था पर जो मरते दम तक भी अपने सिद्ध योग दूसरों को नहीं बतायेंगे और अपने साथ ही ले जायेंगे।

जब मथुरा में आयुर्वेद सम्मेलन हुआ हमें वहां पर भारत के प्रसिद्ध व धुरन्धर वैद्य महोदयों के पास विशेष रूप से जाने का विचार हुआ। हम बहुत से महोदयों के पास गये और अपनी न्यूनता को पूर्ण करने के लिये प्रत्येक से प्रार्थनाकी कि अपने हृदयस्थ कुछ सिद्ध योग बताएं किसी भी सज्जन ने एक भी योग ऐसा न बताया जो हमारे ज्ञान की वृद्धि का कारण होता हमें अत्यन्त शोक हुआ। जो पुराने अनुभवी चिकित्सक हैं, वे

बहुधा शास्त्रीय योगों द्वारा चिकित्सा करते हैं हमारा अनुमान है कि कोई भी वैद्य ऐसा नहीं होगा जो आयुर्वेदीय योगों को छोड़ कर चिकित्सा करता हो इस लिये ऐसे वैद्य सज्जनों के सन्मुख शास्त्रीय लागों का उपस्थित करना सूर्य्य को दीपक दिखाने के समान होगा इस लिये हम कुछ प्रात सिद्ध योग जो हम सैंकड़ों वार अनुभव कर चुके हैं वे कुछ एक आप के सम्मुख रखते हैं। इस तुच्छ भट को स्वीकार कर सफल करें ।

जहां तक हमारा परिचय वैद्य महोदयों से है हम जानते हैं कि वे व्रण आदि की चिकित्सा बहुत ही कम करते हैं। और इस चिकित्सा को अनपढ़ नापितों को सौंप कर आप निश्चिन्त हो रहे हैं। यह तो स्पष्ट है कि शस्त्र क्रिया की अनभिज्ञता के कारण हम लोग अपरेशन नहीं करते किन्तु मरहमों व लेप आदि द्वारा जो चिकित्सा हो सकती है हम उसे भी छोड़ चुके हैं इस न्यूनता को देख कर हमें बहुत ही दुःख हुआ करता है, हमें जहां औरोग चिकित्सा का ध्यान है वैसे ही व्रण चिकित्सा का भी है। हम चाहते हैं कि हमारे सब वैद्य महोदय व्रण चिकित्सा में कुशल हों और जहां एलोपैथी विना आप्रेशन कुछ न कर सके वहां पर हम मलहम व लेप आदि से रोगियों को शीघ्रतर स्वस्थ कर दें, तो हमारा बहुत भारी यश होगा, इस लिये हम आप की सेवा में विशेष कर इसी विषय के अनुभूत योग अर्पण करते हैं। आप निर्भयता से घृणा को छोड़ कर इस चिकित्सा को कर आप सिद्ध हस्त हो कर बहुत ही लोकोपकार कर सकते हैं, और यथेष्ट धनोपार्जन भी ।

हमें यह पूर्ण विश्वास है कि आप हमारी विधि के अनुसार इन योगों को तय्यार करा कर अवश्य ही लाभ उठावेंगे, जब इन योगों को कार्य्य में लाकर रोगियों को कष्ट से विमुक्त करें, तब हमें भी आशीर्वाद दे छोड़ना जी ।

आवश्यक विचार— १

हमारे बहुत से वैद्य महोदय आयुर्वेदिक योगों के अतिरिक्त दूसरी चिकित्साओं की औषधियों से घृणा करते हैं, परन्तु हमारा विचार जो है इस को अवश्य ही विचारें, हम देखते हैं इस समय वैद्य लोग सैंकड़ों प्रकार की ऐसी औषधियां काम में लाते हैं जिन का वर्णन हमारे निघन्टुओं में नहीं है वे यूनानी हैं, कई प्रकार का शर्बत खम्बीरे इतरीफल आदि अनुपान रूप में काम में लाये जाते हैं ऐसी अवस्था में प्रश्न उत्पन्न होता है कि जो एलोपैथिक ऐसी औषधियें हैं जो वास्तव में लाभ कारी हैं उन २ को आवश्यकता के अनुसार हम लोग भी काम क्यों न लावें ।

जो छिपाकर काम लाते हैं पाप करते हैं इस ने विशाल हृदय से हमें जिस औषध से विशेष लाभ की सम्भावना हो अथवा जो औषधियें शुद्ध रूप में मिलती हैं उन्हें हमें अवश्य ही स्वीकार करना चाहिये, यह विचार हम एक दो पंक्तियों द्वारा ही उपस्थित करते हैं विशेष विचार पुनः कभी आप के सन्मुख रखने का यत्न करेंगे।

कण्डू नाशक—८

शुद्ध आमला सार-गंधक व शुद्ध-स्वर्ण गैरिक दोनों तुल्य-जल से पीस कर ४ रत्ती के

एक माशा तक की गोली बनानी प्रातः सायं एक एक मात्रा जल द्वारा या अर्क चिरायता गिलोय व पित्त पापड़ा ५ तोला से दोनों ७ दिन तक।

ख—कत्था भुना हुआ ३ तोला, (मट्टी के कूले में ऊपर नीचे दूध डाल कर सम्पुट कर लघु पुट देनी।) कृष्णा हरड़ ६ तोला, इन को दो सौ (२००) नींबू के रसमें खरल कर, मात्रा—१ रत्ती बना कर दूध की मलाई में लपेट कर दोनों काल एक २ रत्ती निगल जानाइन दिनों में घृत का सेवन बहुत कराना इस से हर प्रकार की कण्डू उपदंश के विपले व्रण दूर हो जाते हैं।

ग—आमलासार गन्धक व सुहागा दोनों तुल्य बहुत सूक्ष्म बट कर। मात्रा—१ तोला को सरसों के तेल २॥ तोला में मिलाकर कण्डू पर सहज २ मलनी इस से हाथ पांव व वृषण कोष की कण्डू विशेष तया शीघ्र दूर होती है ७ से १४ दिन तक लगनी चाहिये।

घ—रस कपूर १ तोला, काफूर १ तोला, कज्जली १॥ तोला, इन सब को ६ घन्टा तक खरल करना पुनः इन्हें घृत ५ तोला सरसों का तेल ५ तोला, इन दोनोंको इकट्ठे मिलाना और उपरोक्त औषधि मिला कर ३ घन्टा खरल करना पीछे गला कर सहज २ से मलना इस से कुष्ठ, शरीर-पाक, उपदंशज शरीर-पाक व व्रण व हर प्रकारका कण्डू दूर होते हैं।

सर्व व्रण हर मलहम—(१)

साफ किया हुआ गन्दा वरोजा २० तोला, मोम २ तोला, रत्न जोत १ तोला, रेवत चीनी, अकराकरा, केशर, पारद भस्म (रस सिन्दूर—या कैलोमेल) छः २ माशे, इनमें गन्धा बरोजा व मोम को धीमी आग पर पिलघाना, इन शेष औषधियों को कपड़ छन कर मिलानी नीचे उतार कर चीनी की डिब्बी में रखना, हर प्रकार के दुष्ट व्रण पर लगावें मलहम लगाने से पहले व्रण को नीम पत्ता क्वाथ से, या रस कपूर १ रत्ती को पीस कर एक बोतल जल में मिलाना, इस से साफ कर लिया करें।

राल की मलहम—

राल १० तोला, श्वेत कत्था ४ तोला, मुरदा सङ्ग २ तोला, इन को अलग २ पीस ले पुनः राल में २॥ तोला सरसों का तैल मिलाना और इस को चपटे पत्थर पर डाल २ कर दूसरे किसी पत्थर से रगड़ते जाना जब इतनी चेप छोड़ दे कि पत्थर परस्पर चिपकने लगें और मक्खन की प्रकार आकृति हो जाय तब दूसरी दोनों औषध मिला कर खूब रगड़ना अब, जल डाल कर धोना नहीं, जब सब एक जीव हो जावें तब चीनी या पत्थर की डिब्बी में डाल रखनी यह मलहम हर प्रकार के पैत्तिक व्रणों के लिये अमृत तुल्य है। चूतड़ों या अन्ड कोष की बीस पच्चीस वर्ष की पुरानी कन्डू को जड़ से निकाल देती है, हमने देखा है आधइञ्च तक गहरी जड़ों को निकाल कुछ दिनों में स्वय ही इन घावों को पूर्ण कर देती है। शिर पर जलन उत्पन्न करने वाली हर रङ्ग की फुसियों को दो चार बार लगाने से ही शान्ति हो जाती है, अग्नि दाह को हाथ पांव की फूट को शीघ्र आराम कर देती है।

हरित वर्ण की मलहम—६

गन्दा बरोज़ा साफ १० तोला, ज़ङ्गाल १ तोला, बरोज़ा को धीमी आग पर पिलघाये(तेज-अग्नि पर जल जाता है ।)और ज़ङ्गाल को बारीक पीस कर डालना और नीचे उतार कर भली प्रकार से मिलाना, चीनी की डिब्बी में रखना, हर प्रकार के साधारण व्रणों पर लगाना । इस को व्रणों पर लगावें तो स्वयं परिपाक करके पूय निकालती है । यह मलहम ऐसे चिपकती है जो उतारने से भी कठिनता से उतरती है,कई बार तो एक बार लगाई हुई, व्रण को भरोपन कर के ही छूटती है, यह तो प्रत्येक वैद्य को विना मूल्य बांटनी चाहिये ।

कारबकल(अदुष्ट व्रण)की मलहम—७

कारबङ्कल उस व्रण को कहते हैं, जो ग्रीवा से लेकर कटि स्थान तक पृष्ठ वंश पर ही होता है, हमारी परिभाषा में तो दुष्ट-व्रण ही है। यह व्रण ऐसी तीव्र पीड़ा व जलन उत्पन्न करता है जो असह्य होती है इस से रोगी को ज्वर हो जाता है मूर्च्छित अवस्था तक पहुंच जाता है। कई रात्रियों तक नींद भी नहीं आती, तीव्र पीड़ा व घबराहट के कारण बहुधा डाक्टर लोग अपक को ही काट देते हैं जिस से इस का विष समग्र शरीर के रुधिर में व्याप्त हो जाता है । जो रोगी की मृत्युका कारण बनता है हमने देखा है कि ऑपरेशन से कोई २ रोगी बचता है, बहुत से तो यमलोक को ही सिधार जाते है।

नीचे लिखे योग को हमने जितने रोगियों को सेवन कराया है सब ईश्वर कृपा से निरोग हुए।

पारद २ तोला, गन्धक आमलासार २ तोले, मुरदा सङ्ग ४ तोला, कबीला ८ तोला, तुत्थ २ माशा ।

पारा और गन्धक खरल कर इन की कजली बना पुनः सब को मिला कर इतना खरल करना जिस से सम्पूर्ण कृष्ण हो जाय इस को जब बर्त्तना हो तब (चौगुना) १ तोला में ४ तोला घृत मिलाकर लगाना इस के लगाते ही जलन व पीड़ा दूर होजायगी, रोगी पहले ही दिन सो जायगा, यह योग व्रण को स्वयं ही परिपाक कर लेगा अन्दर से पूय ,रुधिर व जमी वसा के टुकड़े निकलेंगे, मृत मांस जीवित मांस से अलग होता जाता है इस को तेज़ कैंची से साथर काटते जायें,इस औषधि के लगाने में वैद्य अपनी चातुर्य्यता को काम में लावें क्योंकि यहां इस का ठहराना कठिन होता है, थोड़े दिनों में रोगी ठीक हो जाता है ।

रक्त—मलहम—८

हिंगुल ३ माशा, कत्था ३ माशा,
कम्पिल(कमीला) ३ माशा, राल ३ माशा,
मोम ६ माशा, गाय घृत २॥ तोला,

घृत में मोम डाल कर थोड़ी सी अग्नि पर रखना जब मोम पिघल जाय तब शेष औषधियें बहुत ही सूक्ष्म कर के इस में डालनी और सब को भली प्रकार से मिलाना जब तय्यार हो जायं तो चीनी की डिब्बी में रखना ऐसे व्रण जिन में से पूय बहुत निकलता हो अथवा जिन व्रणों में पीड़ा बहुत हो उन पर लगावें शीघ्रतर ठीक होजायेंगे ।

दुष्ट व्रण—७

इसे लाहौर सोर या लोकलसोर अर्थात् दुष्ट व्रण कहते हैं, और पञ्जाबी में मोगलो फोड़ा या जड़ों वाला फोड़ा भी कहते हैं। यह पहले रक्त वर्ण की छोटी सी फुन्सी की प्रकार होता है। इस में पीड़ा या पूय नहीं होती एक दो वर्ष तक बना रहता है। एलोपैथी में इस का कोई विशेष उपाय नहीं, वे तो इसको खुरच देते हैं या सी० ओ० टु गैस से दो २ मास तक जलाते रहते हैं फिर भी कोई २ दूर होताहै, आप जब विना पीड़ा के रक्त-वर्ण का ऐसा व्रण देखे जिसके किनारे चारो ओर से ऊंचे हों और पूय न हो तो नीचे लिखा योग वर्ते यह योग बहुत ही उत्तम है इस के लगाने से कुछ जलन होती है, जो रोगी को सहन करनी चाहिये।

नारियल के टुकड़े बिना गिरी १० तोला,
निशादर (नौसादर) २ तोला, शोरा २ तोला
शिंगरफ „ सखिया „
रस कपूर „ मुरदासङ्ग „
आमलासार गन्धक २ तोला

सब दो २ तोला इस का अन्ध-मूशा यन्त्र द्वारा तैल पातन करना और रुई से व्रण पर लगाना दश पन्द्रह दिन में आराम हो जायगा।

अन्ध-मूशा यन्त्रकी विधि—एक मट्टी के पात्र के अन्दर एक ईंट रखनी इस पर एक पात्र रखना और ईंट की चारो ओर छिलका नारियल को अर्ध कूट कर तथा शेष औषधियां कूट कर मिलाकर डालें इस बर्तन के मुख पर पीतल का इतना बर्तन जो उस के बराबर आजावे रखें, फिर दोनोंकी सन्धि गीले आटेसे भली प्रकार बन्द कर देवें ऊपर के पात्र में जल भर दें इस को चूल्हे पर रख कर नीचे अग्नि जलावें जब ऊपर का जल गरम हो जाय तब समझें तैल भीतर के पात्र में आगया है नीचे से अग्नि को शान्त करदें पात्र के शीतल होनेपर ऊपर का पात्र उतार अन्दर का पात्र सहज से निकाललें इस में जो तैल हो, इसे शीशी में डाल कर रक्खें और काम में लावें।

शरीर पाक पर—७

जलन व दाह युक्त फुंसियें शरीर में हों या भिन्न २ स्थान में, विशेष कर शिर में हों जिन का रक्त वर्ण हो या श्वेत मुख की रक्त वर्ण की हों, कई वार तो ऐसी जलन उत्पन्न कर देती हैं जिस से रोगी क्षण मात्र भी चैन नहीं पा सकता इन को दूर करने के लिये नीचे का योग सेवन करायें

कत्था, काला सुरमा, मुश्क-काफूर तीनों तुल्य पीस कर और मक्खन में मिला कर लगावें या-गेरू, मुलतानी मृत्तिका, जहरमोहरा, कृष्ण जीरा ये चारों तुल्य पीस कर अर्कसौंफ में मिला कर लगावें, इन के सेवन करने से दो चार दिन में ही आराम हो जायगा, पूय निकल जायगा, नीचे से निरोग-त्वचा निकल आयेगी।

कायिक फुन्सियें—९

मेंहदी ४ तोला, कबीला, मुरदा सङ्ग, नस्याला (अनार का छिलका) ये सब तोला २, तुत्थ ३ माशा, मरिच ६ माशा, कत्था १ तोला इन सब को कपड़ा से छान कर और फुंसियों पर सरसों का तैल या घृत लगा कर ऊपर इस चूर्ण को धूर देना अर्थात् खुश्क ही लगा देना, दो चार दिन में पूय खुश्क हो जायगी और छिलके आजायेंगे जो इस औषधी के सेवन करते २ ही साफ होजायेंगे

शिर पाक हर—

विशेष कर शिर पाक और शरीर पाक भी जो और कई प्रकार की औषधियों से आराम न हो तो नीचे लिखा योग काम में लावें इस से उपदंशज व कुष्ठ से पूर्ण होने वाली भी फुसियाँ थोड़े दिनों में दूर हो जाती हैं :—

मट्टी के कच्चे पात्र (जो अग्नि में पकाया न गया हो।) में आक के फूल मुख तक भर देने, पुनः मुख बन्द कर गढ़े में १० या १५ सेर उपलों की अग्नि देनी,स्वांग शीतल होने पर निकाल कर उस में से अर्क-पुष्प-भस्म निकाल और कटु तैल (सरसों का तैल) में मिला कर लगानी एक दो सप्ताह में सर्वथा निर्मूल हो जाती हैं, गलित कुष्ठ के आरम्भ में बहुत ही लाभ होता। है

अगड—माला—

एक ऐसा सांप जो बिलकुल कृष्णवर्ण का फन दार हो नीचे से भी श्वेतवर्ण का न हो कोई श्वेत बिन्दु भी न हो, मृत हो उसके मुख में संखिया १ तोला, जायफल १ नग, डाल कर किसी से बांध देना फिर सम्पुट कर के खुशक कर लेना गजपुट उपलों की अग्नि ऐसे स्थान में देनी जहां समीप कोई मनुष्य न हो, स्वांग शीत होने पर भस्म को सम्भाल कर निकाल लेना पीस कर शीशी में रखना। मात्रा—१ चावल, दूध की खांड (मिल्क शूगर) में मिला कर या मक्खन मलाईमें रख कर देनी ७ से २१ दिन तक देने से गलितगलगण्ड खुश्क हो जाते हैं, कच्चेद्रवित हो कर बैठ जाते हैं यदि इस के सेवन के दिनों में नीचे लिखे लेपों में से कोई एक का सेवन भी साथ किया गया तो गल गन्डसर्वथा नष्ट हो जायेंगे, हम इस योग को भिन्न २ कई प्रकार से रोगी को सेवन कराते हैं। जो पुनः कभी लिखेंगे साधारण रीति यह ही है।

गल गण्ड हर लेप—

मनुष्यकी शिरास्थि को बहुत बारीक कर के तुल्य मक्खियों का विष्ठा मिला कर खरल करना पीछे इस को मनुष्य के मूत्रमें खरल करना जब खूब चेपदार हो जाय तब कपड़े पर लगा कर गांठ पर लगाना दो तीन वार लगाने से गन्ड गुम हो जायगी इस योग से ऐसे का ऐसे ही हर प्रकार की गिलटियों पर लाभ पहुंचता और कई बार तो ऐसा सद्य विचित्र फल दीखताहै कि आप चकित हो जायेंगे।

लेप—

बहुत मोटी हरड़, का तेल, पठानीलोध कृष्ण जीरा, गेरू, व कुचला सम तुल्य पीस कर गो मूत्र में पका कर लेप लगाना थोड़े ही दिनों में बहुत ही लाभ पड़ जाता है इस को भी हर प्रकार की गिलटियों पर लगाया जाता है, नित्य १ तोला लेप को १० तोला गो मूत्र में पकाना जब पक कर लेई की प्रकार हो जाय तब लगाते हैं १० या १५ दिन तक लगातार लगाते जायें।

सर्व व्रणनाशक खाने की—औषधि

दाल चिकनी, रस कपूर, संखिया, मुरदासङ्क, शिगरफ रूमी, मुश्क काफूर सब तुल्य लेने

पीस कर अद्रक रस में खरल कर खुश्क होने पर दो प्यालों में सम्पुट कर चूल्हे पर रखना नीचे धीमी २ अग्नि जलानी ऊपर के प्याले पर मोटे कपड़े जल से भिगो २ कर रखना ऊपर के प्याले को जो जौहर लगे वह सम्भाल कर निकाललें।

मात्रा—४ चावल तक दूध की मलाई में २१ दिन तक दें, घृत मक्खन अधिक खाने को दें, तैल, खटाई, मिर्च, आदि खाने से वर्जित कर दें, इससे उपदंश व उपदंशज सर्व व्रणभी दूर हो जाते हैं।

सीहा पर

कलमी शोरा, देशी राई, दोनों तुल्य पीस कर कुमारी के रस में खरल कर, मात्रा—२ रत्ती दोनों समय एक २ मात्रा बासी जल से लेनी ७ से २१ दिन तक वातिल व काफिक पदार्थों का सेवन नहीं करना।

विरेचक घृत—

शतमल्ल, (संखिया) हिङ्गुलु, ताल सब शुद्ध १-१ तो०, शुद्ध जायफल १० तो०, इन को दूध में तीन घन्टा तक खरल करना, पुनः इसके १० सेर दूध में डाल कर अग्नि पर पकाना, पीछे दही डाल कर रात्रि भर रखना, प्रातः जब दही जम जाय तब इसे बिलोउन कर नवनीत निकाल कर घृत तैयार कर के कांच की शीशी में रखना। मात्रा—२ बूंद खांड में मिला कर देनी ऊपर से गरम २ दूध पिलाना, इस से सर्व वात रोग नष्ट हो जाते हैं तथा विरेचन भी होता है। जब व जैसे चाहें रोगी को दें बहुत ही विचित्र औषधि है।

वृद्ध युवा हों—

शुद्ध शतमल्ल, कत्था, लजुरजा का दाना, पीपल सब तोला २ सब को इकट्ठे लोह—पात्र में कूट कर पुनः खरल में डाल कर अर्क बेदमुश्क की दो बोतल सहज २ से डालतेजाना और खरल करना जब तय्यार हो जाय तब सरसों के समान गोली बनानी वृद्धों को कुछ दिन तक १ मात्रा दूध से देनी, पीछे दो मात्रा दोनों समय भोजन के पश्चात् देनी, घृत खूब खिलाना, चालीस दिन में वृद्ध भी युवा हो जाते हैं, मुख का वर्ण रक्त हो जाता है। वृद्धों के लिये विशेष कर लाभ दायक है।

शर्बत स्वर्ण पत्रिका—

कासनी १५ माशा, फूल गुलाब १७ माशा, गाओजवां १६ माशा, बनफशा १८ माशा, गिरी खरबूजा १ तोला, सनाय के पत्र ६ तोला आलू-बुखारा १५ नग, उन्नाव ३० नग, लजुड़ियां ४० नग, तुख्म बीज ४ तोला. खांड ६० तोला, खांड के बिना औषधियों को अर्ध कुटा कर दो सेर जल में २३ घन्टे भिगोना पीछे अग्नि पर क्वाथ करना, अर्ध जल रहने पर खूब मलना पुनः छान कर और खांड मिला कर पकाना, उस समय गिरी खर्बूजा को जल में घोट कर इस में मिलाना, जब पक जाय तब बोतल में डाल रखना, बलानुसार मात्रा देनी, इस से शौच खुलासा होगा मल के साथ सब कफ निकल जायगा उदर के रोग, कोष्ट बद्धता, कास आदि दूर हो जाते हैं। यह बहुत नरम विरेचक है, सारक है, बालकों व वृद्धों को भी हानि या घबराहट नहीं करता है।

आज़मूदा मेज़ीन

लेखक—शफ़ा-उद्दौला कविराज श्री शान्तिप्रकाश चन्द्र जी
वैद्य शास्त्री आयुर्वेद कालेज, हरिद्वार।

उपदंश किलोल वटिका—

शुद्ध जमाल गोटा, शुद्ध तूतिया, कुटकी, इन तीनों चीजों को समान भाग लेकर पानी की मदद से खरल करता हुआ एक एक माशे की वटी बना लेवे।

चाहे जितना भी उपदंश का भयङ्कर रोगी क्यों न हो उसको एक दिन दूध चावल खिला कर अगले दिन ताज़े पानी के साथ १ वटी सुबह सेवन करा देवे, तीन चार विरेचन तथा एक दो वमन होंगी शाम को सिर्फ दूध चावल देवें। यदि बलवान रोगी होवे तो अगले दिन भी एक वटी देदेवे अन्यथा अगले दिन दोनों समय दूध चावल का पथ्य देकर उससे अगले दिन दूसरी वार उपरोक्त विधि से सेवन करादे। इस प्रकार सिर्फ़ तीन ही वटी तीन मर्तबा में देनी चाहिये।

तीसरा मर्तबा के बाद दो दिन तक दूध चावल का पथ्य देता रहे, फिर कोई ख़ास पथ्य नहीं है।

व्रणों के ऊपर—

पपड़िया कत्था खील, तूतिया, जली सुपारी इन तीनों को समान भाग ले चूर्ण बना लेना चा- फिर नीम के क्वाथ में १०१ मर्तबा गाय के घी को धोकर चूर्ण मिलाकर मर्हम बनालें। लगाते समय अंगुली से खूब फेंट कर व्रणों पर लगाना चाहिये उपरोक्त गोली सेवन करते ही व्रणों पर खुश्की आती है। और मरहम लगाते २ सात दिन में व्रण दूर होते हैं। यह प्रयोग निःसंदेह उपदंश पर बहुत लाभदायक है।

रक्त शोधक अर्क—

शाहतरा, चिरायता, गोरखमुन्डी, शरपुखा, दोनों चन्दन, छोटी हरड़, मेहदी के पत्ते, निर्गन्ध, आलू बुखारा, उन्नाव, बनफ्सा, नीलोफ़र, गाजवां सौंफ, कासनी, उसवा, विजयसार, अमल बेत, मकोय, गुलसुर्ख, मजीठ, शीशम का बुरादा:नीम के पत्ते, नीम की छाल, नीम के फल, शीशम के पत्ते, बकायन के पत्ते, बकायन की छाल, बकायन के फल, जवासा, दुद्धी, ब्रह्मदण्डी, खस, सनाय, गिलोय, बावची, जलनीम, शखाहुली, इन सब दवाओं को समान भाग लेकर अर्क विधान से अर्क खेंच लेवें।

दो तोला अर्क पानी में मिलाकर शरबत उन्नाव डालकर पीने से खून साफ होता है।

पथ्य—गेहूं चने की रोटी घी डालकर खानी चाहिये।

चातुर्थिक ज्वर पर—७

भीमसेनी कपूर	५ रत्ती
अम्बर	१ रत्ती
गिलोयसत्व	४ माशे
भस्म हरताल पीली	२ माशे
सेल खड़ी	२ माशे

इन सब को खरल करले मात्रा १ रत्ती पान में रख कर सुबह व शाम इस्तेमाल कराने से चन्द रोजों में ही फायदा होता है।

निनाई की हुकमी दवा—८

घोड़े की ताजी लीद का अर्क निकाल लेवे, ५ काली मिर्च डाल कर घोट लेना चाहिये, ५ बूंद एक स्वर में (नथुने में) इसही प्रकार दूसरे स्वर में (नासिका में) टपकावे, तीन रोज टपकाने से लाभ होता है।

मसान की दवा—९

इलायची सफेद, वंशलोचन, नागकेशर, कमलगट्टा, चन्दन सफेद, दालचीनी, शीतलचीनी सत्व गिलोय, मुलहटी, ये सब दवायें १-१ माशे ले लेना चाहिये। शर्बत आंमला, २ तोला, और उपरोक्त दवाइयों का चूर्ण १ माशा, आमला १ अदद इनको शर्बत आंवला में चटा देना चाहिये। मसान पर अच्छा फायदा करता है।

बालरोगों पर जन्म घुटी—१०

हरड़, पीपल, बिजौरा अजमायन, इन्द्रजौ बच, सिरस के बीज, सनाय, सौंफ, सुहागा, एलुवा ढाक के पत्ते, लोध, अमलताश, इन सब दवाओं को समान भाग लेकर क्वाथ करे, अष्टांश बाकी रहने पर मल छान कर बाल मात्रानुसार गर्म गर्म बालक को पिला देवे।

मकड़ी फिर आने पर—११

केंचुआ (भूनाग) के छेद की मिट्टी का लेप करने से बहुत जल्द फायदा होता है।

आधा-सीसी—१२

आक के पके पत्तो को जरा गर्म कर अर्क निचोड़ लेवे। जिधर की तरफ दर्द होता हो उधर के स्वर (नासाद्वार) में अर्क की ५ बूंद डालनी चाहिये। तीन चार दिन में फ़ायदा दिखाता है।

अम्लपित्त पर—१३

दालचीनी २ माशे, इलायची ५ माशे, अनार दाना २ माशे, पोदीना खुश्क ३ माशे, आंवला ३ माशे, ज़ीरा स्याह १ माशे, मुनक्का ५ माशे, पानी ८ तोला, गुलकन्द २ तोला, उपरोक्त सब दवा पानी में पीसकर तथा गुलकन्द को मल छान कर पिला देना चाहिये। अम्ल पित्त तथा छर्दि पर लाभ करता है।

पामा (खुजली)—१४

पारा, गन्धक, मनशिल, दोनों ज़ीरे, दोनों हल्दी, मिर्च स्याह, इन सबको खरल कर घी में मिला मरहम बनालें। लेप करने से खुजली पर तीन दिन में फ़ायदा पहुंचता है।

अश्मरी (पथरी) पर—१५

जिस रोगी को पथरी के कारण मूत्र बन्द हो गया हो तथा पीड़ा के साथ होता हो उसको तात्कालिक पीड़ा रफ़ा करने वाला आज़मूदा नुसख़ा आगे लिखते हैं—

कदली क्षार गेंदे के अर्क के साथ देना चाहिये तथा पलाश के फूलों को पका कर उसकी पोटली बांध लेवे उस पोटली से रोगी के मसाने पर गरम गरम सेक करना चाहिये। कितनी भी भयंकर पथरी क्यों न हो फ़ौरन निकल जावेगी।

नोट—कदली क्षार की मात्रा चिकित्सक रोगी की अवस्था देखकर निश्चित करे।

फिर पथरी के रोगी को तिलाक्षार, गोखुरु के क्वाथ के साथ कुछ दिन सेवन करा देना चाहिये। इसके प्रभाव से पथरी के रोगी की हमेशा की शिकायत रफ़ा हो जाती है।

यहां पर भी रोग की अवस्था देखकर ही तिलाक्षार की मात्रा चिकित्सक निश्चित करे।

वृक्क शूल (दर्द गुर्दा) पर—

यदि गुर्दे में भयङ्कर पीड़ा होरही हो तो आध २ माशा बुझा हुआ चूना, १ तोला, पुराने गुड़ में मिला कर २ वटी बना लेवे। पहिले १ वटी गरम पानी के साथ सेवन कराना चाहिये ५ मिनट के अन्दर ही दर्द दूर हो जायगा। यदि दर्द बन्द न होवे तब दूसरी वटी का प्रयोग करा देवें। अवश्य पीड़ा शान्त होतीहै।

नोट—दैववशात् किसी रोगी की पीड़ा इस विधि से शान्त न हो तब चिकित्सक को अन्य विधियों का अवलम्बन करना चाहिये।

श्वेत प्रदर पर—

अशोक की छाल २ तोला, १६ तोला पानी में जोश करे जब ४ तोला पानी बाकी रह जाय तब इसको छान लेना चाहिये। फिर इस क्वाथ के पानी को पाव भर दूध में डालकर जोश करे जब दूध मात्र शेष रह जाय तब इस दूध के अनुपान से (चक्रदत्तोक्त) पुष्यानुग चूर्ण सेवन कराना चाहिये। सुबह व शाम।

दोपहर को अशोकारिष्ट पिलाना चाहिये। थोड़े ही दिन सेवन से लाभ करता है।

रक्त प्रदर पर—

एक सेर गूलर के पके फल लाकर कूट लेना चाहिये। फिर इस गूलर के कल्क को एक कांसे की थाली में रक्खे, ऊपर से पाव भर चीनी बुरका देवे। थाली टेढ़ी करके कुछ समय के वास्ते रखदे, इसमें से नीचे को जो पानी बहकर इकठ्ठा होवेगा, उसको निकाल कर शीशी में रख लेना चाहिये। २ तोला सुबह, २ तोला शाम को रक्त प्रदर की रोगिणी को सेवन कराना चाहिये। जब वह पानी समाप्त होजावे तब फिर उपरोक्त विधि के अनुसार बना लेना चाहिये। ४० दिन सेवन से रक्त प्रदर पर शर्तिया काम करता है।

मासिक श्राव रुकने पर—

(वर्ती प्रयोग)

जिन स्त्रियों का मासिक श्राव ६ मास से या अधिक या कम दिनों से रुक गया है, और श्राव रुकने के कारण अनेक उपद्रव उपस्थित हैं या, जिन स्त्रियों को मासिक श्राव होते समय पीड़ा होती है उन स्त्रियों को नीचे लिखी विधि का अवलम्बन करना चाहिये।

अनुभव-सिद्ध योग-रत्न

लेखक—श्रीमान् कविराज पं० धर्म्मानन्द जी शर्म्मा आयुर्वेदाचार्य्य शास्त्री
प्रोफेसर-आयुर्वेद विद्यालय, हृषीकेश।

संखिया के दूषी विष पर—

किसी ने संखिया खाया हो या अधिक मात्रा में पिचकारी द्वारा शरीर में प्रवेश किया गया हो उस की तात्कालिक चिकित्सा करने पर जो अंश शरीर में रह जाता है वह कालान्तर में जा कर कुपित होकर शरीर में अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न कर देता है। थोड़ीसी गरम चीजों के खाने से शरीर में किसी स्थान पर खाज आती व वहां पर खुजाने से ददोड़े से हो जाते हैं। फिर उस स्थान से पानी (लेसदार) निकलने लगता है वह पानी जहां २ लगता है। वहीं सूजन हो कर जल गिरने लगता है अर्थात् एकजीमा का रूप धारण कर लेता है ज्वर और कब्ज हो जाता है। शोथयुक्त स्थान की खाल (बाहरी) सूख कर गलने लगती है। ऐसी दशा में साधारण स्वेद देकर-निम्न लिखित योग देना चाहिये।

नीम की छाल १ तोला, उसवा १ तोला, हरड़ २ तोला, सनाय २ तोला, मुण्डी १ तोला, चिरायता १ तोला, कालो सफेद, दोनों सारिवा २ तोलो, पित्त पापड़ा १ तोला, लाल चन्दन १ तोला, गुलाब के फूल १ तोला, नीलोफर १ तोला, मजीठ १ तोला, खिरेटी १ तोला, गिलोय १ तोला, अडूसा १ तोला, मेहदी के पत्ते १ तोला, सब जौ कुट करके दो २ तोले की पुड़िया बनाले। प्रति दिन एक पुड़िया को शाम के समय ॥ सेर जल डाल कर कलई या मिट्टी के बरतन में भिगोदे। सुबह मन्द २ अग्नि से पकावे, जब आध पाव जल बाकी रहे उतार छान कर गुनगुना पिलावे इस से दस्त खुल कर आता है और भीतरी धातु गत खराबी निकल बीमारी का जोश कम पड़ता है, १५ दिन पीने से सब विकार शान्त होजाते हैं। यदि यह योग पुराने उपदंश वाले को देना हो तो इस में पुरानी सड़ी सुपारी २ तोला और मिला देनी चाहिये। इस के बाद निम्न लिखित पौष्टिक योग देना चाहिये।

मालतीवसन्त ३ माशा, लोह-भस्म ३ मा० अभ्रक-भस्म ३ माशा, स्वर्ण-भस्म ३ माशा, प्रवाल-पिष्टी ६ माशा और रजत-भस्म ३ माशा सबको खरल में बारीक पीसकर एक २ रत्ती की पुड़िया बना लेवे। इसमें एक पुड़िया सुबह को व, १ शाम के चार बजे शर्बत अनार या बनप्सा शर्बत में खिलावें, दिन में भोजन करने के १॥ घन्टे बाद दो तोला पुराना द्राक्षासव पिलावे। इस तरह एक महिना सेवन करने से दूषी विष तथा उपदंश के पुराने विकार नष्ट होजाते हैं। अरहर की दाल, तैल, मिर्च, खटाई आदि गरम चीजें न खावे। यह प्रयोग कई बार का अनुभूत है।

आर्तव की अधिक प्रवृत्ति में—

बहुत सी स्त्रियों को मासिकधर्म के समय खून जाना बन्द नहीं होता है। और स्त्री का शरीर बिलकुल कमज़ोर होजाता है ऐसी दशा में निम्न लिखित योग देने से शीघ्र लाभ होता है।

पित्तपापड़ा, खिरैटी, अडूसा, छाल पद्माक्ष, नीलोफर, लाल चन्दन, नीम की छाल और दसमुल खवायन प्रत्येक ३ तीन माशा, लेकर ऽ॥ सेर जल में भिगोदे और घन्टे बाद हाथ से अच्छी तरह मसल कर छानले इसमें तीन तोला जल दो दो घन्टे बाद पिलाने से आर्तव की अधिक प्रवृत्ति शीघ्र ही बन्द होजाती है।

गोली इजराकी Nerves system—

शुद्ध कुचला ऽ॥ सेर, केशर असली एक तोला, दालचीनी ४ तोला, जावित्री ४ तोला, सुरंजानशीरी ६ तोला, सोंठ ऽ। भर बड़ी इलायची छः नगके बीज ले।

विधि पहिले कुचले को १५ दिन तक घी ग्वार के रस में भिगोदें १५ दिन के बाद उसको ऊपर से छील कर साफ करले और चीर कर भीतर से जीभ को निकालदे फिर इनको अदरख के रसमें १५ दिन तक भिगोदें बाद निकालकर सिल पर पीसले इसकी पिठीसी बनजाती है इस प्रकार शुद्ध किये हुये कुचले की पिठी में अन्य औषधियों का कपड़छन चूर्ण मिलाकर खूब खरल करें जब अच्छी तरह खरल होजाय तब उसकी झरबेरी के समान गोली बनाले। एक अथवा दो गोली सुबह ठण्डे जल या दूध के साथ खावें। इससे हमेशा का क़ब्ज़, पाचन शक्ति की ख़राबी (मेदे का रोग) जिगर तथा दिमाग़ के रोग, मैथुन शक्ति की कमी, खून की कमी के रोग दूर होते हैं और शराब के छोड़ने से उत्पन्न हुये सम्पूर्ण रोग इसके सेवन से अवश्य दूर होते हैं।

ध्वजभङ्ग की वटी—

शुद्ध रूमी सिंगरफ १ तोला, कालीमिर्च ६ माशे, शुद्ध मीठा तेलिया ३ माशे।

विधि—पहिले तेलिया मीठे के छोटे २ टुकड़े कर तीन दिन तक ताजे गौमूत्र में भिगो देवें बाद निकाल कर धूप में सुखालें। इसी तरह सिंगरफ को काग़ज़ी नीबू के रस में एक दिन घोट कर सुखाले फिर तीनों को पीस कर चूर्ण करलें और फिर एकदिन तक निरन्तर, ताज़ी नकछिकनी के रस में खरल कर सुखाकर रखलें। मात्रा—१ चावल भर पान में रखकर कमसे कम तीन दिन और अधिक सात दिन तक सेवन करें। इसके सेवन करने से नामर्दी दूर होकर मैथुन शक्ति बढ़ती है और खूब भूख लगती है।

उदावर्तघ्न—वटी—

पाचन शक्ति की खराबी से या धातु दौर्बल्य अथवा स्त्रियों के श्वेत प्रदर से वायु कुपित हो कर आंतों में खुश्की पैदा कर देता है और दस्त साफ नहीं होता है। ऐसी दशा में १५।२० दिन में भीतर सुद्दे पड़कर एकाएक शूल पैदा होता है। जिसमें आमाशय के ऊपर से यकृत की ओर दाहिनी तरफ नीचे के भाग में बड़ा भारी दर्द उठता है और वमन (सूखा) होना शुरू हो जाता है। रोगी का दम निकलने लगता है ऐसी दशा में निम्न लिखित योग से बहुत जल्द उपकार होता है

किन्तु शूल के समय रोगी की गुदा में पिचकारी अवश्य लगा देनी चाहिये। अमलतास का गूदा २ तोला कुटकी २ तोला, हरड़ २ तोला, बहेड़ा १ तोला, आंवला १ तोला, इन्द्रायन की जड़ ३ तोला, एरण्ड बीज गिरी ऽ᠆ भर, दन्ती छाल, नील अमलबेत, मुनक्का दो दो तोला, निशोथ सफेद ३ तोला, एलुवा ३ तोला, गुलाब के फूल १ तोला सौंफ १ तोला लेकर जौ कुट करके ४ सेर पानी में मन्द २ अग्नि से पकावें जब सेर भर क्वाथ बाकी रहे तब उतार छान कर दूसरे पात्र में डाल कर फिर पकावें जब पकते २ गाढ़ी चटनी सी हो जाय उसमें बदामगिरी की मींगी १ तोला, जलापा १ तोला और ककुष्ठ (उसारे रेवन) छःमाशे डाल कर घोटकर मटर प्रमाण गोली बनालें। प्रतिदिन शाम को सोते समय एक या दो गोली गरम दूध के साथ खाने से उदावर्त्त शूल नष्ट हो जाता है। और दस्त साफ होकर आंतो की खुश्की भी जाती रहती है।

प्लीहा पर—

भुना सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, नौसादर, कलमीशोरा सेंधा नमक, कालानमक, सौंचल नमक, आक का खार, शुद्ध आंवलासार गन्धक चित्रक छाल, सौंठ, पीपल, अजमायन, भुनी हुई हींग, इन सबको एक २ तोला, लेकर ग्वार पाठे के रस में घोट कर झड़बेरी के समान गोली बना कर छाया में सुखालें। एक गोली प्लीहा वाले को मट्ठे (पावभर) में जीरा सेंधानमक हींग भुनी हुई और कालीमिर्च मिलाकर प्रातः साय खिलावें साधारण उदर विकार में सुबह दोपहर और शाम को एक २ गोली ठन्डे ताजे जल के साथ खिलावें। इससे सम्पूर्ण उदर विकार और बढ़ी हुई तिल्ली नष्ट हो जाती है।

प्रदर रोग—

प्रदर रोग वाली स्त्री को पहिले साधारण एक विरेचन देकर माजूफल, सूखे हुए सीमल के फूल और मिश्री समभाग में लेकर चार माशे की मात्रा में फकी लगाकर ऊपर से दो तोले सूखे आंवलो को चार तोले पानी में भिगोकर चार पांच घन्टे बाद मसल छान कर १ तोला शहत मिलाकर पिलावें इससे श्वेत तथा रक्त दोनों प्रकार के प्रदर रोग शान्त हो जाते हैं। रक्त प्रदर वाली स्त्री को हर समय अपने स्तनों को ऊपर मुख करके किसी कपड़े से कस कर बांधे रहना चाहिये। जिस से वे नीचे को लटके न रहें, और सीमल के फूलों का ही शाक खिलाना चाहिये।

नपुंसक तिला—

शेर की चरबी, रीछ की चर्बी, सांड़ की चर्बी सर्प की चर्बी, सूअर की चर्बी और मछली का तेल धतूरे का तेल, केंचुये का तेल, वीरवहोटी, मालकांगनी, जायफल, पीलीसरसो, जावित्री. लजवन्ती के बीज, ऊँट के कीड़े, आकके फूलो के कीड़े, बिनोलीकी मिगी, शृंगिक बिष, अफीम सब एक २ तोले लेकर घोट कर, कुछ सुखा कर, इस का पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकाल कर उस को सुपारी और सीवन को छोड़ कर मालिश करके ऊपर बङ्गला पान बांध देवे, इस तरह २५ दिन करने के कैसी भी इन्द्रिय की कमजोरी, टेढ़ापन, नसों का पामी आदि सब विकार नष्ट हो जाते हैं।

अनुभव-मंजरी

लेखक—आयुर्वेद विशारद पं० सत्येश्वरानन्द जी शर्मा,
वल्लभ पदक-प्राप्त, आयुर्वेद विद्यालय खाचरौद



मय समय पर वैद्य बन्धुओं तथा सर्वसाधारण की हितकामना की दृष्टि से अपने नये प्रथित प्रयोगों को धन्वन्तरि में प्रकाशित करता रहा हूं। मालूम नहीं इन प्रयोगों को बनाकर और व्यवहार कर किसी वैद्यराज महोदय या अन्य सज्जनों ने लाभ उठाया है, या नहीं ? पाठकों की इस उदासीनता और अनुदारता के कारण ही अपने ऐसे अनुभवों को प्रकट करने में संकोच होता है। फिर भी सम्पादक जी का बार २ का आग्रह बाध्य कर रहा है।

अतः निम्नांकित दो परीक्षित प्रयोग पुनः पाठकों की भेंट करता हूं।

(१) बालकों के सूखा या मसान पर—

चाकसू १ पाव लेकर, उसके दानों को साफ़ छिटक कर, तथा साफ़ कपड़े की पोटली में बांध कर एक चौड़े मुख की हांडी में सेर पक्की गधे की लीद और आध सेर गधे का मूत्र भरकर उसके बीचों बीच इस पोटली को दोलायन्त्र की तरह लटका कर चूल्हे पर चढ़ाके पकाना, जब मूत्र सूख जाय, तब हांडी को आंच से उतार कर ठंडी होने देना। हांडी के ठन्डे हो जाने पर पोटली में से चाकसू के बीजों को निकाल कर बीजों के छिलके हाथ से मसल २ के बिल्कुल अलग उतार कर साफ़ कर लेना। फिर उन बीजों को खरल में डाल कर खूब बारीक रगड़ लेना, जब खूब बारीक रगड़ जाय, फिर १ सेर काली तुलसी के पत्तों का रस थोड़ा २ करके उस में डाल कर घोट २ के सुखा लेना। जब गोली बांधने लायक लुगदी हो जाय, तब उसकी जुआर के दाने बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा के रखना।

<u>सेवन विधिः</u>—१ मास से १ वर्ष तक के बालकों को आधी से १ गोली तक अवस्था के अनुसार उसकी माता का दूध, सौंफ का अर्क, गुलाब का अर्क, या कब्ज अधिक रहती हो, तो अमलताश के काढ़े के साथ दो बार सेवन करानी चाहिये। रोग की प्रबल दशा में कभी २ दिन में तीन बार भी दी जा सक्ती है।

१ वर्ष से ऊपर आयु वाले बालकों को २-२ गोली तक एक एक बार में दी जा सक्ती हैं। कभी कभी इन गोलियों के सेवन कराने के दर्मियान बालक को हरे पीले दस्त आने लग जाते हैं। परन्तु इससे भयभीत न होना चाहिये। दवा बराबर सेवन कराते रहना चाहिये। दस्त अपने आप

रुक जायगे। इन गोलियों के सेवन कराने से बालक का वजन (यदि बीच में कोई दुर्घटना न हुई तो) १ महीने के भीतर तिगुना बढ़जाता है

गुणः—इससे बालक को पाचन शक्ति बढ़ कर जो कुछ दूध वह पीता है, या अन्न खाता है, उसका अधिकांश विशुद्ध रस रक्त बनकर शरीर को विगतप्राय पोषण क्रिया पुनर्वार प्रबल वेग से होने लगती है। शरीर में पूर्व सञ्चित अशुद्ध रक्त शुद्ध होकर पेट और चेहरे के ऊपर दिखाई देने वाली पीली २ नसें शुद्ध रक्त से पूर्ण होकर रक्त-वर्ण धारण करती हैं। मांस आदि धातुओं का निर्माण व पोषण पुनर्वार आरम्भ होकर बालक का कङ्काल प्रायः शरीर थोड़े दिन में ही सुडौल गठित और लावण्ययुक्त हो जाता है।

इससे बालकों के ग्रहदोष और भूत-बाधा आदि भी दूर हो जाते हैं।

यदि यह औषधि ठीक तरह से व्यवहार कराई जाय, तो निस्सन्देह १०० में ९८ बालक अच्छे हो सकते हैं।

(२) पारद शोधन की सरल विधि—

आज कल बड़े २ नगरों में बसे हुए वैद्य-राजों को आमतौर पर षोडश संस्कार पूर्वक पारद शोधन करने का सुभीता नहीं रहा है। और मजदूरी बढ़ जाने से इस प्रकार शुद्ध किया हुआ पारद इतना महंगा पड़ता है कि सर्वसाधारण उसको उपयोग में नहीं ला सकते।

हमारी इस नीचे लिखी विधि से पारद षोडश संस्कारों जैसा ही शुद्ध और स्वच्छ रहेगा, और जब चाहें मनों पारद ३-४ घन्टे के भीतर शुद्ध किया जा सकेगा। वैद्यराजों को इस आविष्कार से लाभ उठाना चाहिये।

विधिः—१ सेर शुद्ध पारद करना हो, तो इसके लिये २ सेर शुद्ध आमलासार गन्धक लेकर गन्धक का अमामदस्ते में खूब बारीक कूट कर २० सेर समाये इतनी बड़ी कड़ाई में इस गन्धक को डाल कर आग पर चढ़ा देना, जब गन्धक पिघल जाय, तब उसके बीचो बीच वह सेर भर पारद डाल देना, पारद उड़ेगा नहीं, बल्कि वह बीच में ही रहेगा, और उसके चारों ओर गन्धक का कोट चढ़ जायेगा, इस प्रकार जब गन्धक और कड़ाई के थल्ले का रंग लाली पर आजाय, तब कड़ाई को आग पर से उतार कर ठन्डा होने देना। फिर आस्ते से गन्धक के कोट को तोड़ कर बीच में चमकते हुए शुद्ध पारद को निकाल कर व्यवहार करना चाहिये। यह पारद सब दोषों से मुक्त और सब प्रयोगोंमें निस्सन्देह व्यवहार करनेयोग्य, होता है।

नोट—ध्यान रहे कभी २ साधारण सी असावधानी से पारद गन्धकके बोज में मिल कर कज्जली जैसे बन जाता है। पर इस पर घबराना नहीं चाहिये। क्यों कि पारद एक माशा भी इधर उधर नहीं हुआ होता। डमरू-यन्त्र या कपड़े की लीरों द्वारा सिंगरफ से पारद निकालने की विधि से उस (गंधक) में से पारद को अलग कर लेना चाहिये। और इसको निस्संकोच सब प्रयोगों में व्यवहार कर सकते हैं।

अनुभूत-योग-पञ्चक

लेखक—वैद्यवर श्री०चुन्नालालजी गुप्त, कलक्टर गञ्ज, कानपुर

(१) ज्वर नाशक योग—

हरताल गोदन्ती-भस्म	१॥ माशे
करञ्जुवा की गिरी	५ तोला
नीम के पत्ते	१ तोला
चिरायता	४ तोला
पीपल छोटी	३ तोला
हरड़ छोटी	२ तोला
फिटकरी भुनी	१॥ तोला
जीरा	१॥ तोला

नागरमोथा, पित्तपापड़ा, कुटकी यह १-१ तोला, इन सबका चूर्ण बनाकर तुलसी के पत्तों के स्वरस से वटी करें, मात्रा—१ माशा, बलाबल विचार कर दें, वातादिक एक व दो दोषज, इकन्तरा, तिजारी आदि विषमज्वर को तत्काल नाश करती हैं। ईश्वर कृपा से कभी फेल नहीं होती हैं। अनुपान—तुलसी के पत्तों से, शहद से, चिरायता के क्वाथ से या हालत देख कर स्वयं अनुपान की कल्पना करें।

(२) ज्वर नाशक द्वितीय योग—

विष २ तोला, गंधक २ तोला, सिंगरफ १ तोला प्रत्येक शुद्ध होवे, मिर्च ७ तोला ताम्बे की भस्म १२ तोला सबको खरल में पीस अर्क के पत्तों के रस से १ रत्ती प्रमाण वटी बनावे और अनुपान भेद से सब ज्वरों में देवे, सन्निपात की अमूल्य औषधि है।

अनुपान-दूध, मिश्री, छाछ, दही, शीतल जल, अनार, अङ्गूर आदि रोगी की इच्छा विशेष होने से दे सकते हैं। क्योंकि यह पथ्य हैं।

(३) संग्रहणी-पर—

आमले के पापड़ पोटली में बांध कर गर्म पानी में डुबा २ कर नर्म करलें। उसमें, शुद्ध पीली कौड़ी की भस्म ४ रत्ती रख कर खावें प्रातः सायं दोनों समय ले। भस्म की मात्रा नित्य १—१ रत्ती बढ़ाते आवें। २० रत्ती होजाने के बाद नित्य १—१ रत्ती घटाते आवें। अन्न का आहार कम करें।

पथ्य—तक्र (छाछ) है। इससे संग्रहणी अवश्य निर्मूल होगी।

(४) प्रदर पर उत्तम योग—

दारुहल्दी, रसोत, (रसाञ्जन) नागरमोथा बेलगिरी, शुद्ध भल्लातक, अडूसा का पत्ता, चिरायता समान भाग ले जवकुट करके रख लेवें।

मात्रा २॥ तोला का क्वाथ बनाकर, मोती की भस्म १ रत्ती, प्रवाल १ रत्ती, शहद में मिलाय कर चाट लेवे और ऊपर से वह क्वाथ पीवे तो घोर रक्त-प्रदर दूर होवे।

(५) रेचक वटी—

एलुवा, उसारे-रेवद, हींग, सुहागा, हरड़ सोंफ, सोंठ, सैंधानमक, इन सबका चूर्ण कर पानी से खरल कर गोली करें।

मात्रा—१ मा० तक, अनुपान—गर्म जल गुण—पेट दर्द शूलादि उदर-व्याधि, इस वटी को सायंकाल पानी के साथ खाने से, प्रातः दस्त साफ हो जावेगा, रेचक योगों में अत्यन्त श्रेष्ठ है।

अव्यर्थ परीक्षित योग

लेखक—श्रीमान् रसवैद्य स्वामी परमेश्वरानन्द जी शर्म्मा
अध्यक्ष विलास औषधालय ।

सारस्वत चूर्ण—

कूट मीठा, असगन्ध, सेंधानिमक, अजमोद, दोनों जीरे, सोंठ, सफेद मिर्च, लघु पीपल, पाढ़ शङ्ख पुष्पी इन औषधियों का चूर्ण एक २ तोले और मीठी वच का चूर्ण सब के बराबर लेकर २१ भावना ब्राह्मी के स्वरस की दे, और छायामें सुखा ले बस ! सारस्वत चूर्ण बन कर प्रस्तुत हो गया । ५ माशे चूर्ण एक तोले मक्खन और ६ माशे मधु में मिला नित्य प्रति सेवन करने से बुद्धि स्मृति कान्ति बल और वीर्य की वृद्धि होती है, तथा वायु जन्य विकार उन्मादादि को भी विशेष लाभप्रद है ।

खांसी पर—

भीमसेनी कपूर १ तोला, लवङ्ग १ तोला, काली मिर्च २ तोले, पिप्पली २ तोले, बहेड़े की छाल २ तोले, पान की जड़ २ तोले, अनार के फल की छाल १ तोले, और सब औषधियोंके सम भाग खदिरसार कत्था ले सबको सूक्ष्म कूटपीस वस्त्रपूत करके कीकरकी छालके क्वाथ की २१ भावना देकर एक २ रत्ती की वटी बनाले और भयङ्कर कास में एक गोली मुख में रख कर रस चूसे खांसी अवश्य नष्ट हो जायगी ।

विशूचिका वटी—

एक पुलिया रसोत जीरा, शुद्ध गन्धक, शुन्ठी, सेंधव लवण, काली-मिर्च, पोदीना-शुष्क, पीपल लघु, हींग, घृत में भुनी हुई, लाल मिर्च, अर्क पुष्प का जीरा सब २—२ तोले,

निर्माण प्रकार—सर्व औषधियों को सूक्ष्म कूट पीस वस्त्रपूत करके ५० भावना नींबू के स्वरस को दे छाया में सुखा ले, और २-२ रत्ती की गोलियां बना पुनः छाया शुष्क कर शीशी में रक्षित कर दे और विसूचिका हैजे में एक २ घन्टे के अन्तर से एक २ गोली पोदीना के साथ सेवन कराना चाहिये । अव्यर्थ है ।

अपस्मार पर—

पुष्य नक्षत्र के दिन कुत्ते का पित्ता ग्रहण कर के आंखों में अञ्जन लगावे या घृत में मिला कर धूनी देवे तो तत्काल अपस्मार सदैव के लिये विदा हो जाता है । इति

गोक्षुरादि अवलेह—

१०० सौ तोले भर गोखरू का पञ्चाङ्ग कूट कर ८०० सौ तोले भर जलमें क्वाथ करके चतुर्थांश शेष रहने पर वस्त्रपूत करलें और ५० तोले मिश्री मिला कर चाटने योग्य चाशनी बनावे तदनन्तर

सोंठ १ तोले, पिपली १ तोला, लघु एला बीज १ तोला, जवाखार १ तोला नाग केशर १ तोले, महुवे वृक्ष की छाल १ तोला, वंशलोचन ८ तोला, ले ।

इन सब को पीस छान कर चूर्ण बना कर खण्ड चाशनी में मिला कर नित्य प्रति एक तोला सेवन करनेसे मूत्र-कृच्छ्र,सुजाक, प्रमेह नष्ट होता है।

भगन्दर पर—

बिल्ली और कुत्ते की अस्थिकी भस्म मिला कर गौ घृत में मिला लोहे के पात्र में मर्दन करके लेप करने से भगन्दर बहुत शीघ्र आराम होता है।

ज्वर पर—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, सौ १०० पुटी अभ्रक भस्म, तामेश्वर, सुन्ठी, श्याम मिर्च, लघु पीपल, बड़ी हर्र की छाल, आमला, जयपाल सब एक एक तोला, लेकर प्रथम गन्धक और पारे को अच्छी तरह घोट कर कज्जली बनालें। तदनन्तर काष्ठादि सर्व औषधियों का सूक्ष्म कूट छना हुआ चूर्ण मिश्रण कर के पुनः एक दिवस पर्यन्त द्रोहणपुष्पी के स्वरस से मर्दन करके एक २ रत्ती की वटी बनावे और आठ प्रकार के ज्वरों में योग्य अनुपान से व्यवहृत करें, आशुफल कारी है।

बिच्छू के विष पर—

५ तोले नवसादर को १० तोले नीबू के स्वरस में मिश्रण कर शीशी में भर काग लगा कर रख दो समय पड़ने पर दंश स्थान से डङ्क को निकाल कर फुरेरी से १० दश मिनट के अन्तर से लगावो और देखो कि बिच्छू का विष कितनी जल्दी दूर होता है।

मदनानन्द रस—

अकरकरा ,जातिफल चूर्ण, जाति पुष्प चूर्ण, लघु एलाबीज चूर्ण, काश्मीरी केशर, उत्तम कस्तूरी, विशुद्ध धत्तूर बीज, चूर्ण, विशुद्ध विषमुष्टी चूर्ण, भङ्ग बीज चूर्ण, अम्बर, स्वर्ण-पत्र, सिद्ध-चन्द्रोदय, शुद्ध अहिफेन, शुद्ध हिंगुल। सब एक एक तोले, प्रथम हिङ्गुल और अहिफेन को वटवृक्ष के दूध से एक दिन पर्यन्त मर्दन करके छुहारों की अस्थि अर्थात् गुठली निकाल कर भरदे, और कच्चे सूत से लपेट ऊपर से गेहूं का आटा लगा कर घृत में पाक करें, अच्छी प्रकार पूरी कचौरी के सदृश पाक होने पर कढ़ाईमें से निकाल आटा आदि पृथक कर छुहारे के सहित औषधि को खरल में डाल कर मर्दन करें, पुनः उपर्युक्त औषधियों को मिश्रित करके सात भावना अफीम के फल के अर्क की दे और सात भावना बंङ्गला पान के स्वरस की दे तदन्तर एक भावना बट दुग्ध की देकर यहां तक मर्दन करे कि वटी बनाने योग्य हो जाय तत्पश्चात् १-२ रत्ती की गोलियां बना छाया शुष्क कर शीशी में रक्षित कर दे, बस यही मदनानन्द रस है। १ वटी से ३ वटी तक बलाबल देख कर मिश्री युक्त सुखोष्ण आध सेर दूध से प्रातः सायङ्काल सेवन करने से आशुपातन धातु-तारल्य स्वप्नदोष वीर्यस्राव नपुन्सकता आदि समस्त वीर्य विकार नष्ट हो कर पुंसत्व शक्तिका अच्छी प्रकार सचार होताहै इस औषधि का सेवन उन्हीं महानुभावो को करना चाहिये, जिन के घर में तन्दुरुस्त और आरोग्य स्त्रियां हों अन्यथा अनर्थ होना सम्भव है। क्यो कि इस के सेवन कर्त्ता को कम से कम दश (?) स्त्रियों का होना नितान्त आवश्यकीय हैं।

मल्लभस्म और मल्लवटी का अन्वेषण

लेखक—श्रीमान् पण्डितवर महावीरप्रसादजी मालवीय "वीर" वैद्यराज
भूतपूर्व सम्पादक मनोरमा, अध्यक्ष—स्वदेशबन्धु औषधालय
ज्ञानपुर—बनारस स्टेट

(०)

मल्लवटी नं० १—

संखिया श्वेत	१ तोला
मोम देशी	२ तोला

संखिया को महीन चूर्ण कर उसमें मोम मिलाकर दो दिन तक कूटते रहें। जब दोनों एक जीव हो जावें तब आधी आधी रत्ती की गोली बनालें। भोजन के उपरान्त रात में एक गोली गुनगुने दूध वा पानी के साथ खावें। घी दूध का सेवन अधिक करें। इससे पुरुषत्व की वृद्धि होती है (सुधानिधि वर्ष १५ पृष्ठ १६४; डाक्टर रामकृष्ण वर्मा का अनुभूत)

परीक्षा से साधारण गुणकारी सिद्ध हुई है, और दो सप्ताह से अधिक सेवन न कराना चाहिये।

मल्लवटी नं० २—

श्वेत संखिया	१ तोला
वंशलोचन	५ तोला
लहसुन का स्वरस	१० तोला

दोनों का चूर्ण कर लहसन के रस में खरल करे। जब घोटते घोटते सब रस सूख जाय तब एक एक रत्ती की गोली बना छाया में सुखाले। भोजन के पश्चात् एक एक वा दो दो गोली दूध अथवा पानी के साथ खाने से बलवीर्य की वृद्धि होती है (सुधानिधि वर्ष, १६ पृष्ट ३३३ डाक्टर रामकृष्ण वर्मा का अनुभूत)

केवल दो मनुष्यों पर परीक्षा की गई, सामान्य गुणकारी पाया गया।

मल्लवटी नं० ३—

संखिया श्वेत	२ तोला
खदिर श्वेत	२ तोला
सिंघाड़ा	२ तोला
सोने का वर्क	१ माशा
कस्तूरी	३ माशा
अम्बर	३ माशा

पहिले २ तोले वाली तीनों औषधियों का चूर्ण कर नीबू के रस में घोटे १०० नीबुओं का रस सूख जाने पर सोने के वर्क आदि डाल अच्छी तरह घोट कर अरहर बराबर गोली बनाले। भोजन के एक घन्टे पीछे दूध वा पानी के साथ एक गोली निगल जावे और गरमी मालूम होने पर मिश्री के रस में पांच चार बुन्द बादाम का तेल डाल कर पीयें अथवा मक्खन के साथ बादाम की पीजी और मिश्री फेंट कर चाटें। एक सप्ताह के पीछे एक सप्ताह को अन्तर देकर फिर सेवन करें और दूध घी का अधिक सेवन करें तो नपुसकता दूर होती है। और शरीर में अत्यन्त बल-वीर्य तथा कान्ति की वृद्धि होती है (देशोपकारक ता-१ दिसम्बर १९२६ पृष्ठ ६ पर सम्पादक का अनुभूत)

परीक्षा से यह वटी गुणकारी सिद्ध हुई है परन्तु गरम अधिक है।

मल्ल वटी नं० ४

इसमें जो सखिया भस्म डाली जाती है उस को इस प्रकार भस्म करना चाहिये।

श्वेत संखिया १ तोला, दारचीनी २ तोला

पहले सखिया को पन्द्रह मिनट अर्क गुलाब में घोट टिकिया बना खूब सुखाले फिर शकोरे में एक तोला दालचीनी का चूर्ण बिछा उस पर टिकिया रख ऊपर एक तोला दालचीनी बिछा दूसरे शकोरे से ढक कपरौटी कर सुखा डाले। चूल्हे पर आठ अगुल की ऊंचाई पर सम्पुट रक्खे नीचे बेर की सूखी लकड़ी जो अगुली के समान मोटी हों दो दो लकड़ी की आंचदे अर्थात् दीपक की लौ के समान जब एक सेर लकड़ी खप जाय तब आंच देना बन्द करदे। शीतल होने पर सखिया की टिकिया निकाले छुरी से युक्ति पूर्वक दारचीनी की राख छुड़ाकर सखिया को बूक कर रखले गहरी खाकी रग की भस्म तैयार होती है यही भस्म वटी में डालना चाहिये।

वटी का योग तथा बनाने की रीति इस प्रकार है।

अफीम	८ माशे
शुद्ध पारा	१ तोला
सखिया भस्म	१ तोला

पहले तीन माशा अफीम आध-पाव पानी में घोल कर पकावे। जब ढाई तीन तोले पानी रह जाय तब नीचे उतार छान ले। फिर अफीम पारा सखिया भस्म काले पत्थर के खरल में डाल अफीम का पानी थोड़ा २ डाल कर घोटे अफीम का पानी समाप्त होने पर उत्तम अर्क गुलाब थोड़ा थोड़ा डालकर घोटे लगभग ६ दिन की घुटाई से पारा मिल जाता है। जब पारे की चमक मिट जावे तब मसूर की बराबर गोली बना छाया में सुखाले। मात्रा, एक गोली प्रातःकाल अथवा रात्रि में सोते समय आधपाव घी के साथ खावे। इसकी शक्ति का अनुभव इसके खाने वाले ही को हो सकता है। बन्धेज की सारी औषधियां इसके सामने तुच्छ हैं यह ऐसी उत्तम वस्तु है कि जिसको एक बार सेवन करादो तो जिन्दगी भर के लिये वह दास बन जायगा। सात दिनमें इतनी अधिक शक्ति उत्पन्न होती है कि चित्त प्रसन्न हो जाता है। जितने इश्तिहारी औषधालयों का विज्ञापन आप पढ़ते हैं इसके गुणों के सामने वे कोई चीज़ नहीं है (देशोपकारक ता० १५ नवम्बर व १५ दि० सन् १९११ शर्मण-सिद्धयोग पृष्ठ ८ पर सम्पादक का अनुभूत)

अभी ये गोलियां हाल ही में तैयार हुई हैं अतएव परीक्षा नहीं हो सकी आजमाने योग्य हैं।

मल्ल भस्म नं० १

संखिया श्वेत १ तोला, फिटकरी १० तोला

दोनो को अलग अलग चूर्ण करके, पहले शकोरे में पाच तोले फिटकरी का चूर्ण बिछाये उस पर बीचोंबीच सखिया का चूर्ण रख शेष पांचों तोला फिटकरी का चूर्ण ऊपर बिछा हाथसे दबाकर दूसरा शकोरा लगा कपरौटी कर सुखा डाले फिर सेर, ५ पाव कन्डो के बीच फूंक दे और शीतल होने पर सम्पुट से निकाल महीन बूक कर शीशी में रक्खे, मात्रा आधी रत्ती से एक रत्ती पर्यन्त मिश्री के साथ ज्वर आने से एक घड़ी पहले एक मात्रा देने से विषम ज्वर, आंतरिक. चौथैया, आदि दूर, होता है। अदरक के रस के साथ देने से दमा श्वास में लाभ होता है। तेल, मिर्चा, खटाई

हींग, आदि से परहेज (सुधानिधि वर्ष १५ पृष्ठ ३३८ उमाशङ्कर वैद्यका अनुभूत प्रयोग बहुत अच्छा और अनुभव सिद्ध है)

परीक्षा से गुणकारी पाया गया, पर अभी चार ही मनुष्यों पर परीक्षा हो सकी है।

मल्लभस्म नं० २ और ४—१)

नोट—अभी तैयार की जा रही हैं इससे नहीं भेजी जासकीं।

मल्लभस्म नं० ३—१)

संखिया श्वेत १ तोला, चूना की डली १ तोला (पत्थरका), घी कुवार के रस से दोनों को घोट टिकिया बनाकर सुखा डाले। शकोरे में रख सम्पुट कपरौटी कर सूख जाने पर चार सेर उपलों के बीच रख फूक देने से भस्म तैयार होती है।

मात्रा—एक चावल भर घी-मधु के साथ देने से विषमज्वर, खांसी, श्वास, और चर्म-रोग नष्ट होते हैं (सुधानिधि वर्ष १५ पृष्ठ ३३८ पर वैद्यराज गोकुलचन्द का अनुभूत)

दो मनुष्यों पर परीक्षा की गई है लाभकारी पाया गया है।

मल्लभस्म नं० ५—१)

कलमी शोरा, चूना-सीपी, संखिया श्वेत, सोहागा पक्का, सब २-२ तोला नौसादर, १६ तोला

सब को महीन पीस कर आठ तोले मदार के दूध से घोटे। जब घोटते घोटते टिकरी बनाने लायक हो जाय तब दो दो तोले की टिकिया बना सुखा डाले। सम्पुट कपरौटी का अच्छी तरह सुखाने के बाद ढाई सेर उपलों की आंच देने से भस्म तैयार होती है। मात्रा आधी से एक रत्ती पर्यन्त अदरक के रस आदि उपयुक्त अनुपान के साथ सेवन कराने से अर्द्धाङ्गवात, उपदंश, गठिया जीर्णज्वर, नवज्वर, वातव्याधि, सन्निपात, सूजाक, आदि को निर्मूल करने में अद्वितीय है। न्यूमोनिया रोग में खूब फायदा करती है स्वेद लाकर ज्वर को घटाती है। गलगंड और बवासीर के लिये लाभप्रद है [अनुभूत योगमाला वर्ष ३ संख्या १७ पृष्ठ ८ पर प० देवदत्त वैद्य गुरदास पुर का अनुभूत, और वर्ष ४ पृष्ठ ५६६ पर ठाकुर रघुराज सिंह वैद्य वडोखर ने इसकी प्रशंसा करते हुए अधिक गुणकारी बतलाया है]

सब चीज भस्म करने के पहले २४ तोले थीं किन्तु भस्म १३ तोले प्राप्त हुई थी। कलमी शोरा नौसादर अग्नि से अवश्य ही घटे होंगे यही कारण तोल के कम होने का जान पड़ता है।

एक पुराने ज्वर वाले रोगी को और एक खांसी के रोगी को दीगयी, लाभ किया है, अभी पूरी परीक्षा करने का समय नहीं मिला।

इसके अतिरिक्त कई प्रकार की मल्लभस्म तथा सिंगरफ भस्म तैयार की जा रही है उनके योग तथा भस्में कालांतर में भेजने का उद्योग किया जायगा *

* माननीय मालवीय जी आजकल मल्ल भस्म, और मल्लवटी का महत्व पूर्ण अनुसंधान कर रहे हैं। आपने इस उपकारी अन्वेषण को धन्वन्तरि में बराबर प्रकाशित कराने का वचन देने की उदारता भी आपने की है, जिसके लिये तथा इस सफल परिश्रम के लिये हार्दिक धन्यवाद देते हुए हम इस अनुभव को धारा-वाही रूप से धन्वन्तरि में प्रकाशित करने के विचार में हैं।

—सम्पादक

उत्तम योग मालिका

लेखक—श्रीमान् वैद्यराज योगीराज जी आयुर्वेदालङ्कार
स्नातक— आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल काङ्गड़ी।

वीर्य वृद्धि पर प्रयोग—

प्रायः निर्बल पुसत्व शक्ति वाले मनुष्यों को हमारे वैद्य महोदय साधारणतः अहिफेन, कर्पूर, धत्तूर और हिङ्गुल के तीक्ष्ण योग देते है। और यही नही, अपितु रोगी समुदाय भी इन्हीं प्रयोगो को एकदम जवानी हासिल करने के लिये मांग बैठते है।

यह ठीक है परन्तु क्या हम वास्तव में रोगियो को स्वस्थ कर रहे होते है या उन्हें अधिक उत्तेजना देकर, सदा के लिये अक्षमता की प्रतिक्रिया को पैदा कर देते हैं। यदि इसी चिंता-सन्तान–वितानाकुल मन से हम विचारें तो यह प्रतीत होगा कि आतुरों की शिकायत दूर नहीं होती है।

हमें क्या करना चाहिये यदि इसे दत्तावधान हो कर सोचें तो ध्यान में आवेगा कि अगर शीत स्तम्भक पदार्थ लघु मात्रा में निरन्तर प्रयोके लिये दिये जाय तो वे सर्वाङ्ग बल्य कर वीर्यवृद्धि भी करगे और उत्पादक शक्ति को भी बढ़ायेंगे। जैसे—

त्रिफला	१० रत्ती
शीतल चीनी	२ "
कीकर की भुनी गोंद	५ "
प्रवाल भस्म	५ रत्ती
वशलोचन	५ "
एला	३ "

निर्देश—३० रत्ती चूर्ण शहद से चटा दें और ऊपर से दूध, या उष्ण–जल पिला दें। प्रातः सायङ्काल इसे सेवन करायें।

इस का शनैः प्रादुर्भूत लाभ रोगी के लिये स्थायी और सुस्वास्थ्य का उन्नेता होगा। यह औषध वङ्गभस्म चन्द्रप्रभा और च्यवनप्राश से भी अधिक लाभकारक प्रभाव दिखायेगी। (!)

पूय मेह के लिये-

इस रोग में प्रायः कर मूत्रल तथा मूत्र शोधक औषध मुख के द्वार दी जाती है। यह मूत्र मार्ग से निकलती है इस प्रकार वहां की शोथ और दाह का शमन करती है।

उदाहरणतः शिलाजतु, निर्यास, चन्दन, क्षार तथा (Urotropin) युरोट्रोपिन नामक औषध दी जाती है।

निम्न लिखित मिश्रण बहुत उत्तम है—

चन्दन तैल	४ ड्राम
कबाब चीनी तैल	१ "
लाइक्वर पोटाश डिल०	१ "
गोंद का घोल	१ औंस

त्वक् तैल १० बूंद
मिश्री का शर्वत पर्याप्त ६ औंस

पहिले चन्दन के तेल और गोंद के घोल को धीरे २ मिला खूब खरल करलें इस के पश्चात् अन्य औषधी डालें अन्त में शर्वत डालें और अच्छी तरह मिला दें इस से दूध सा एक सफेद घोल बनेगा।

निर्देश– दो चमचे भर कर दिन में तीन बार दें। "लाइक्वर पोटाश" को हम ११० बूंद में २॥ ढाई रत्ती दाहक पोटाश जल में मिला कर बना सकते हैं।

फिरङ्ग रोगके लाभार्थ-१

फिरङ्ग रोग में २ मास से १ वर्ष तक रोगाक्रमण के पश्चात् प्रायः व्रण हो जाते हैं जो शरीर की सम्पूर्ण त्वचा पर प्राय ताम्र वर्ण के दीखते हैं, और वेदना शून्य लक्षित होते हैं, इन में पारद का प्रलेप अत्यन्त लाभ-दायक है, यह शतश परीक्षित है।

रसकपूर आधा तोला, कपूर आधा तोला मृदार श्रृङ्ग आधा तोला, सितखदिरसार ६ तो० तुत्थ १ मोशा, वैसलीन या मक्खन ८ गुणा मिला ये इस मलहम को अच्छी तरह स्लेट पर स्पैचुले से चला कर प्रलेप बनालें।

ख—किसी हकीम द्वारा यह भी विदित हुआ है कि वे तुलसी पत्र स्वरस के साथ पारद को शरीर के भुजा आदिक स्थान पर बालों को साफ़ कर मलते हैं। इस से शरीर में पारा किञ्चित प्रविष्ट हो कर प्रलेप से भी उत्तम प्रभाव करता है, परन्तु इस में रोगी के लिये घृत-भोजनों का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

आंत्र-कृमि-१

यह चार प्रकार के होते हैं:—

व्रध्न कृमि (Tape worms) टेप वर्म
गन्डूपद कृमि (Round worms) राउन्ड वर्म
अंकुर कृमि (Hook worms) हुक वर्म
गुद कृमि (Thread worm) थ्रैड वर्म

चिकित्सा—व्रध्न कृमियों का मुख्य इलाज आज कल दाडिम मूल-त्वक् है इस का जल में क्वाथ बना कर पिलाना चाहिये और २ घन्टे बाद (Mag.sulaph) मैग सल्फ का विरेचन दे देना चाहिये।

अथवा दाडिम मूल त्वक् का क्षारीय पदार्थ जिसे (Pelletierine Taunate) पैलीटिरीनटैनेट कहते हैं उसे ३ रत्ती की मात्रा में खिला कर २ घन्टे पश्चात् ऐरन्ड तैल का विरेचन दे देना चाहिये। इस से मल के साथ कृमि बाहिर निकल जायेंगे। कृमि प्रायः १०—१२ फ़ीट तक लम्बे होते हैं।

(मनुष्यों के सब से बड़े शत्रु)

गण्डूपद कृमि—नाशक–२

डाक्टर लोग प्रायः (Santonin) सैन्टोनिन नामक औषधि का व्यवहार करते हैं। परन्तु हमें चिन्ता करनी नहीं चाहिये क्योंकि इस पदार्थ का क्षुप पञ्जाबके कुल्लू प्रदेशमें बहुत होता है, परन्तु क्षुप की अपेक्षा ? सैन्टोनिन की एक दो रत्ती लेकर हरीतकी चूर्ण से मिला सायकाल को देनी चाहिये और दूसरे दिन प्रातः कोई जलीय विरेचक देना चाहिये। यह अत्यन्त अनुभूत है। यह कृमि ६ से १२ इञ्च लम्बे होते हैं।

अङ्कुर कृमि हर :—

आजमोदासत्व (Thymol) थाईमोल १५ रत्ती किसी बताशे में डाल प्रात: खिलायें रात्रि को विरेचन दें। पुनः प्रातः काल इसी प्रकार दोहरायें (यह कृमि तिहाई इञ्चलम्बा होता है।)

पुरीष कृमि (गुद कृमि)—

इस के लिये (Quassia) क्वेशिया नामक लकड़ी के टुकड़े लेकर पानी में डाल कर १ पाइन्ट (!)पानी की वस्ति देनी चाहिये। परन्तु वस्ति से पहिले त्रिवृत आदि द्वारा विरेचन करा लेना चाहिये।

क्वेशिया के स्थान पर मुसब्बर का प्रयोग या अन्य तिक्त पदार्थों को भी दे सक्ते हैं। यह कृमि आध इञ्च लम्बा होता है।

रक्ताऽतिसार—

यह साधारण सा योग है परन्तु अत्यन्त लाभ दायक है —

(Mag.sulph)मग्नेशिया	६०	रत्ती
शत पुष्पा तैल	१	बूंद
जल	२॥	तोला

यह घोल प्रति घन्टे दिन में ८ बार दें और जब तक श्लेश्मा तथा रक्त का आना बन्द न हो जाय-जारी रखें। जब रक्त आना कम हो जाये तब इन्हीं खुराकों को ३ या ४ घन्टे बाद दिन में दें। दिन में ऐसी ४ खुराक दें, यथा मति ग्राही और दीपक औषध भी मिला सकते हैं।

यदि मैग्नेशिया को वैदेशिक प्रयोग समझें तब लघु हरीतकीका भर्जन कर दिन में ३० रत्ती की मात्रा में समान भर्जित जीरक भी मिला कर (कुल ३० रत्ती रहे) इसे दिन में ६—७ बार दें। २—३ दिन जारी रखें और पिछले दिनों में मात्राओं का अन्तर बढ़ा दें। यह अत्यत ही चमत्कारिक और अक्सीर योग सिद्ध होंगे।

आन्त्र-शूल-हर योग—

आन्त्रशूल जिस के ३ भेद हैं उन्हें कभी २ चिकित्सक एक ही आमाशय-जन्य पीड़ा समझ कर शीघ्र विरेचनादि दे देते हैं परन्तु निम्न भेदों को समझ उन में उचित औषधि देनी चाहियें।

वातिक शोथ(Enterelgia) एन्ट्रेलिया
पैत्तिक शोथ (Enteritis) एन्ट्राइटिस
कफज शोथ (Intestinal Catarrh)

वातिक शोथ—

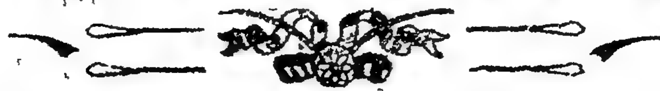
वातिक शोथ में एक सेर कुछ गरम जल कर उस में एक या दो चमचे एरन्ड तैल के डाल और साबुन घोल कर वस्ति क्रिया करनी चाहिये यदि आध्मान हो तब एरन्ड की जगह तारपीन तैल डालें।

पैत्तिक शोथ में—

यदि विदग्धाजीर्ण के कारण आन्त्रशूल हो तब आमलकी चूर्ण ३ बार दिन में ३० रत्ती मधु से चटावें और भोजन हलके साबूदाना दूध या आगरोट के रखें।

" नारिकेल खन्ड " भी उपरोक्त में अति लाभ कर सिद्ध हुवा है।

अनेक वैद्यों के परीक्षित प्रयोगों का संग्रह



प्रमेह नपुंसकता पर—

भीमसेनी कपुर १ तो०, कस्तूरी ३ मा०, केसर ६ मा०, अफीम ६ मा०, मुलहठी सत्व, गिलोय सत्व, शीतल चीनी, जावित्री, वंशलोचन इलायची, दालचीनी, नागरमोथा, प्रत्येक दवा चार चार माशे, असगन्ध १ तोला विधारा बीज १ तोला प्रथम काष्ठौषधियों को कूट कपड छान चूर्ण कर लेवे फिर उसी में रस भस्मादि मिलाय हल्दी स्वरस की १ भावना, ग्वारपाठे की १ भावना देकर, पान के स्वरस की दो भावना दे, मटर बराबर की गोलियां बना लेवे और दूध—मिश्री सहत से लेवे, या, त्रिफला क्वाथ और सहत से, या पान के रस और सहत से सेवन करे तो बल वीर्य और आयु की भी वृद्धि होती है। यह दवा बलकारी रसायन वीर्य वर्द्धक कामोत्तेजक वीर्य स्तम्भक और उत्तम वाजीकरण है। इसके सेवन करने वाले मनुष्य रोग रहित और तीव्र बुद्धि होते है। कम वीर्य वालो को और बूढ़ों को अमृतवत् है निर्बल युवकों को और बूढ़ों को भी प्रसङ्ग की शक्ति देता है। अर्थात् प्रमेह, नपुंसकता, ध्वजभङ्ग, श्वास, खांसी, अरुचि, मन्दाग्नि मलावरोध, अम्लपित्त, वातरक्त, सर्व वातरोगादि को नष्ट करता है।

—ले० वैद्य विशारद छत्रधारीलालजी सिनगौड़।

प्रदर रोग पर—

रक्त चन्दन, मोचरस, दारु हल्दी, मुलहठी कमलगट्टे, रसौत, गिलोय सत्त, बिधारावीज, नागकेशर, इलायची, दालचीनी, कटफल, हल्दी, कबाब चीनी, पठानी लोध, जीरा, कचूर, सोंठ, चन्दन, बेलगिरी, त्रिफला, सेंधानमक प्रत्येक दवा १-१ तोला, वङ्ग, लोह, अभ्रक, प्रवाल, सोनामाखी, सङ्ख, कौडी की भस्में प्रत्येक एक २ तोला प्रथम काष्ट औषधियों का कपड़छान चूर्ण कर लेवे फिर इसी में सब भस्में डाल अशोक छाल के स्वरस की और सात भावना आमलों के स्वरस की देकर १॥ मा० प्रमाण की गोलियां बना लेवे और बढ़िया अनुपान से दवा का सेवन करावे तो चारों प्रकार आ साध्य असाध्य प्रदर रोग, ऋतु रोग मासिकधर्म का ठीक न होना अर्थात् कुसमय होना-योनिशूल कटिशूल, कुक्षिशूल, हाथ पैरो का दर्द, गर्भाशय रोग, ज्वर, तृषा, शिथिलता, मदाग्नि, अरुचि, कब्जी मलावरोधादि रोगों को समूल नष्ट कर शरीर को हृष्ट पुष्ट बलवान बनाती है। मैं इस दवासे पच्चीसों स्त्रियों को आराम कर चुका हूं, अनुभूत है।

—वैद्य विशारद छत्रधारीलाल सिनगौड।

शूल और मन्दाग्नि—

सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों ३ तोले, निसोत १ तोला, काकडा शृङ्गी १ तोला, जीरा १ तोला, धनियां १ तोला, तज १ तो०, पत्रज १ तो०, अमल बेत १ तो०, इलायची १ तोला, इमली खार २॥ तो. हींग १ तोला, दालचीनी १ तो०, पांचों नमक ५ तो०, त्रिफला ३॥ तो०, पारा गन्धक की कज्जली २ तो०, सिंगी मुहरा १ तो०, शुद्ध-ताम्र भस्म १ तो०, सीप भस्म १ तो०, शङ्ख भस्म १ तो०, कौड़ी भस्म

१ तो०, निसोदर शुद्ध १ तोला, टाटरी ५ तोला, यथा विधि सब दवा मिलाय जल या नीबू रस की १ या २ भावना दे, १॥ माशा प्रमाण की गोलियां बना लें .जल या तक्र के साथ सेवन करने से आठों प्रकार के शूल रोग समस्त उदर रोग-मन्दाग्नि अरुचि अजीर्ण भूख का न लगना कब्जी मलावरोध दिशा साफ न होना और ज्वर आदि अनेक रोगों को नष्ट करने में रामबाण है।

— वैद्य विशारद छत्रधारीलाल सिनगोड़ ।

कुष्ठ नाशक तैल—(७)

सोमराजी बीज ५ तो०, माल कांगनी ५ तो०, त्रिफला ५ तो०. हल्दी, दारु हल्दी, सरसों, कूट, मिर्चि, उहर, करञ्ज, कर कचके पत्र, भृङ्गराज, देवदारु, पवाड़, सेंधानमक, निसोदर, सुहागा, मैनसिल, हरताल, गंधक, मीठा विष, नीलाथोथा, चदन, प्रत्येक १–१ तो० का कल्क कर कड़वा तैल ऽ१॥ आक दूध ऽ। पाव भर, गो मूत्र ऽ१॥ सेर, गोबररस ऽ१ सेर, सब एक में मिलाय एक दिन रात्रि पड़ा रहने दें बाद में यथा विधि औंटा कर तेल सिद्ध कर लेवे और ८—१० मिनट तक मालिश करे तो १८ हों प्रकार के कुष्ठ रोग, जैसे दाद, खाज, अपरस, छाजन से हुआ पामा फोड़ा, विचर्चिक, विसर्प वातरक्त आदि अनेक चर्म रोग आराम होते हैं,

—वैद्य विशारद छत्रधारीलाल सिनगोड़।

नपुंसकता के लिये—(८)

पारा शुद्ध १ तो०, शु० सिंगरफ़ १ तोला, संखिया शुद्ध १ तोला, इन तीनों को कनक पुष्प (काले धतूरा फूल) ११० नगके रसमें खरल करे प्रति दिन १० पुष्पों के रस में खरल करे ग्यारह रोज, और उसका फोग सम्भाल के रक्खें, बाद छोटी छोटी टिकिया बना के छाया में सुखालें। जब भली भांति सूख जावे तो एक शुद्ध तांबे की डिबिया में रक्खें तोला दो की डिबिया बनावे जिस में सब टिकिया आजाय अगर डिबिया में पानी भी भर देवें तो बाहर न निकल सके ऐसी संधि बंद हो। अब डिबिया में टिकिया बन्द करके उसी रक्खे हुए फोग (कनक पुष्प का नुगदा) में रख खूब कपरोटी करे अर्थात् ७ बार सुखा के रक्खें प्रत्येक कपरोटी सूख जाय तब दूसरी करें, फिर एक मन वन-उपलों की अग्नि गज पुट में दे अग्नी ध स्वांग शीतल होनेपर निकाले, वजन पूरा होगा या २ मा० कम, भस्म डिब्बी समेत पीसें अगर कुछ कमी रहगई हो तो फिर कनक पुष्प में तीन दिन घोट सम्पुट में रख पुनः एक मन उपलों में फूंक दें। उत्तम भस्म होगी।

अनुपान—मक्खन या मलाई में, मात्रा–दो चावल से एक रत्ती तक, बलाबल देख १५ दिन दें।

गुण—नपुंसकता कमजोरी स्वांस वात आदि, अनुपान भेद से, सर्व रोगों को हरती है, १५ दिनों में नामर्द का मर्द बना अद्वितीय गुण दिखाती है। जो एक बार आजमायेंगे फिर कभी यह न कहेंगे कि आयुर्वेदिक औषधालयों में कुछ राम नहीं, उनका मुँह तोड़ जवाब देती हैं।

— वैद्यराज मुन्शी किशनलाल जी वर्मा मकोर

श्वास रोग के लिये—(९)

गूलर फल, गूलर पत्र, छाल, प्रत्येक १ सेर बारह सेर पानी में भिगोदे उस में बांसा-पत्र ऽ॥

सेर डाल दे और ४७ घन्टे भीगने दे, बाद अर्क खींच कर एक सेर मिश्री जो खजूर की बनी हुई आती है, इस अर्क में एक तार की चाशनी कर शरबत बना ले रोज साय प्रातः २ तोला चाटा करे सब तरह के दमे को आराम करता है।

—वैद्य० मुन्शी किशनलाल जी वर्मा अकोट ।

प्रदर के लिये—९

गूलर फूल छाया में सुखा के रखें मात्रा—एक तोला चूर्ण रोज गाय के दूध के साथ मिश्री मिला के पीयें प्रदर १ महीने में निर्मुक्त होगा योग मामूलीहै परन्तु बड़ी २ मात्राओं व रसों को मात करता है, सेवन काल में पथ्य से रहें। और बाद में ३ माह तक पति सहवास न करें। अगर फायदा न करे तो खर्च हम से लेलेवें।

—वैद्य मुन्शी किशनलाल जी वर्म्मा अकोट ।

सरल प्रयोग—१०

क—सिंहजराव ५ तोला को गोरख मुन्डी के रस में घोट कर टिकिया बनाले। सुखा कर कन्डों की अग्नि में फूँक दे। इस भस्म को ४ रत्ती की मात्रा में मलाई के साथ खिलाने से खांसी के साथ मुँह से खून आना बन्द होता है, पैत्तिक खांसी अच्छी हो जाती है।

ख—एक माशा की मात्रा से शहद के साथ आमन की गुठली की माग खिलाने से मधु-मेह रोग मिटता है।

ग—५ तोला त्रिफलादि चूर्ण, १ तोला फिटकरी और तीन माशा माजूफल के चूर्ण कोएक सेर पानी में १२ घन्टा तक भिगो कर छान लेना, उस छने हुए पानी से पिचकारी या डुस के द्वारा योनि धोने से,प्रसव के बाद के योनि विकार श्वेत प्रदर आदि रोग दूर होते है। एक सप्ताह में ही इस से लाभ होना शुरू हो जाता है।

घ—६ माशा बबूल का गोंद एक छटांक पानी में भिगो देना, गल जाने पर कपड़ेसे छान कर और १ तोला शक्कर मिला कर प्रातःकाल पीना चाहिये, इस के प्रयोग से प्रमेह और श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

ङ—माजूफल के बहुत महीन चूर्ण को सलाई से सुरमे की तरह लगाने से आंखों में पड़ने वाले दाग, परवाल अच्छे होते हैं।

—ले०श्री०रामदेव जी त्रिपाठी कानपुर।

उकौना रोग की दवा—९

तूतिया भस्म १ तोला, मैनशिल १ तोला, डेला कपूर एक तोला, तीनों दवायें बारीक चूर्ण कर, ५ तोला गौ-घृत मिला लोह पात्र में नीम के डन्डे से १ पहर (तीन घन्टा) धीरे २ घोटे पश्चात् कांच के पात्र में उठा धर राखे। आवश्यकता पड़ने पर काम में लावे।

चिकित्सा :—पहले नीम्ब की पत्ती डाल जल गर्म करे, उसी समय जल से घाव को अच्छी तरह साफ कर धो डाले बाद कपड़े से पोंछ उपरोक्त मलहम दिन में २-३ बार इस्तेमाल करने से उकौता (छाजन) रोग दूर होता है।

—श्री चूल्हाय मिश्र वैद्य।

सुजाक की दवा—७

क—कत्था सफेद १ तोला, माजूफल १तो० वंशलोचन १ तोला बारीक पीस कर, ३ तोला असली मलयागिरी चन्दन का तेल डाल कर खरल करे पश्चात् ३६ गोली बनावे। मात्रा—१-१ गोली प्रातः साय। अनुपान:—मिश्री के शर्बत के साथ ले,दूध भात भोजन करै, तो अत्यन्त पुराना मवाद पीव बहने वाला भी सुजाक अवश्य मेव आराम होता है।

ख—नीम्ब पत्र ३ तोला, जाती(चमेली) पत्र ३ तोला, ८॥ सेर जल डाल कर क्वाथ करे आधा जल शेष रहने पर उतार उसी गुनगुने जल में पेशाव करें तो, ३ रोज में सुजाक छूटै।

—श्री०चूल्हाय मिश्र वैद्य

अर्श रोग पर—८

क—सोमल १ तोला को चौलाई की भाजी के रस में दोला यन्त्र द्वारा दो घन्टे तक शुद्ध करने के बाद सोमल को पीसकर उसमें सङ्ग जरा हत ६ माशा, कपूर, ३ माशा डाल पानी के साथ पीस कर वटी बनावे सूखने पर रख छोड़े। अर्श के रोगी को पाखाना फिरने के बाद मस्से धोकर वटी पानी में पीस मस्से पर टपकी लगावे। इस प्रकार तीन दिन लगाने से मस्से फूल कर वाहिर निकल आते है फिर उस पर दही भात की लपटी बांधनी, इस प्रकार ७ दिन करने से मस्से गिर पड़ेंगे। परन्तु इतना अवश्य ध्यान रखना कि प्रथम दिन जिस जगह टपकी लगाई हो उसी जगह रोज लगाना चाहिये दूसरी जगह नहीं, मस्से गिर पड़ने,पर, घाव भरने के लिये मलहम लगावे,

ख—घी ५ तोला, मोम १ तोला, सिन्दूर ६ माशा, पारा १ तोला, प्रथम घी गरम कर उस में मोम मिला इकट्ठा करना फिर एक तांबे की थाली में डाल उस में सिन्दूर तथा पारेको मिला कर तांबे की लोटी से ३ घन्टे घोटना चाहिये। इस तैयार मलहम को डिबिया में रक्खें। यह मलहम जखम पर लगाने से कुछ दिनों में जखम ठीक हो जाता है। यह प्रयोग कई बार का अनुभूत है इस से वातार्श, पित्तार्श, रक्तार्श आदि सर्व प्रकार के अर्श ठीक होते हैं।

ग—कड़वा सूरण ५ सेर लेकर उसे छील उस में १ सेर फिटकिरी मिला मटकी में भरना, उस पर ढकन ढांक कपड़ मट्टी कर बीस सेर कन्डों में फूंक देवे। इससे सफ़ेद रङ्गकी भस्म तयार होगी इस को कपड़ छन कर कांच के काग वाली शीशी में रखें, दही की मलाई के साथ लेना, इस से मस्से में से चाहे जितना खून जाता हो तुरन्त वन्द होगा। यह प्रयोग भी हमारा कई बार का आजमूदा है।

—वैद्य नाथूराम शालिग्राम "गोभुज"

कर्णमूल पर—७

नारियल के वकलों को लेकर जौ कुट करें और आकाश-पातन-यन्त्र से उसको तैल निकाल लें, उसको दिन रात्रि में ४ वार लगाने से और सेक करने से कर्णमूल शीघ्र अच्छा हो जाता है।

—वैद्यभूषण वी० पी० सक्सेना।

आमातिसार पर—८

उस समय में जब कि दस्त अधिक आते हों और पेंठन अधिक होरही हो,मकरोराई को खूब

बारीक पीस. घी में सान कर, चने प्रमाण गोली बनावे। और एक गोली शौच जाने से पहले और एक उस के बाद निगल जायें-तीन ही चार गोली सेवन करने से दस्त व पेंठन बिलकुल बन्द हो जाती है।

शर्तिया दस्त—

जलापा ६ माशे, गुलकन्द १ तोला, दोनों को पीस कर गरम जल से सेवन करने से कैसा ही कड़ा कोठा हो, एक दस्त खुल कर आता है।

—वैद्यभूषण वी० पी० सकसैना।

सर्प-विष पर—

कोदव धान्य (कोदों) का पुराना पयाल (एक साल के ऊपर का) जलाकर उसको भस्म ऽ- एक छटांक ऽ॥ आध सेर जल में घोल कर हाथ से खूब मल कर छोड़ दी जाय दो मिनट के बाद स्वच्छ जल, वस्त्र से छान उसमें २॥ काली मिर्च घोल कर मिला दे और रोगी को पिला दे। अगर तुरन्त ही पिला दें तो विष नष्ट हो कर उस को वेग (लहर) ही नहीं आयेगा, अगर वेग आ रहे हों तो सज्ञा होते ही पिलादें तुरन्त ही विष को नष्ट करता है और वेग नहीं आता, हमारा कई वर्षों से आजमूदा है। यह एक मात्रा है किसी को एक किसी को दो और किसी को तीन देनी पड़ती हैं, नीम की पत्ती चबा कर परीक्षा करलें जब करुआहट मालूम होने लगे तब औषधि पिलाना बन्द करदें वैद्यवरों से प्रार्थना है कि इस प्रयोग की परीक्षा कर धन्वन्तरि में छपाने की कृपा करें।

—प० कामेश्वर दीन जी शर्म्मा।

संग्रहणी पर—

कस्तूरी, केशर, नागर मोथा, वज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, हरड़, बहेड़ा, आंवला, अकरकरा, धनिया, अनारदाना, मिरच, पीपल, डांसरीया, हीगुल, कपूर, तुंबरु, तगर, लवग, जाबित्री, मजिष्ट, पोकर मूल, प्रियङ्गु, बंसलोचन कचूर, तालीस पत्र, चित्रक,छड,जायफल उसीर पिरहरी, गंगेरण की जड़ की छाल, पींपला मूल, यह सब दवा समान भाग लेकर कूट कपड़ छन कर इन सबके बराबर मोचरस डालना, फिर ये सब एक जीव करके, इस सब दवा के बराबर मिश्री डालना, फिर बोतल में इस सब दवा को एक जीव करके कांच की बरनी में भर कर रखना। आवश्यकताऽनुसार जल से तथा अन्य योग्यानुपान से आधा तोला की फांकी लेने से संग्रहणी के लिये जादू का सा काम करता है। यह चूर्ण वीर्य वर्धक भी है तथा हर एक व्याधि पर अनुपान भेद से देने पर बहुत फायदा करता है सब वैद्य राजों से प्रार्थना है कि एक बार बनाकर परीक्षा अवश्य करें

हिक्कारोगे धूपम्—

मैनसिल, और हल्दी, समान भाग पीस-कर शरीर पर धूनी देने से हिक्का रोग तत्काल शांत होता है।

—दाधीच पं० रामप्रसाद जी शास्त्री

उष्ण-वात के लिये—

शर्दचीनी, लोबान, संदलचूरा सफेद, तीनों समान भाग ले कर बारीक पीस कूट रखे।

मात्रा १-१॥ माशे की एक दफा में देनी

अनुपान-कच्ची लस्सी दूध की, दिन में चार खुराक दे इससे पेशाब की नाली में जलन शांत हो के पेशाब फौरन खुल कर आता है, अनुभूत है।

—वैद्य इन्द्रलाल जी।

उपदंश के लिये—

मलमल कच्ची ४ अंगुल चौड़ी १॥ फुट लम्बी ले के आर्क के दुग्ध में २१ दफा भिगो २ करके सुखाले फिर सम्पुट करके फूंक रखे।

मात्रा—राख की १ चावल पान में रख के दे ७ मात्रा ७ दिन में देने से उपदंश नष्ट हो जाता है। घी खाया जाय, मिर्च मसालों से परहेज, यह दवा कब्ज कुशाभी है, मामूली आतशक के जख्म तो ३ खुराक में ही ठीक हो जाते हैं।

—श्री० वैद्य इन्द्रलाल जी।

तृतीय ज्वर नाशक वटी—

आक के बीज और धतूर के बीज दोनों को सम भाग ले के पीस के पानी के साथ मूंग प्रमाण वटी बना के रखे बारी से पहिले १ गोली गर्म पानी से खिलादे तो ज्वर न चढ़ेगा।

—श्री० वैद्य० इन्द्रलाल जी

चतुर्थ ज्वर नाशक वटी—

बिना बुझा चूना, गेरू, स्वेतकनेर की जड़ की छाल, सफेद संखिया चारों चीज ३-३ माशे ले कर मूंग से भी छोटी गोली बना रखे बारी से १ प्रहर पहिले एक गोली और दूसरी घन्टे पहिले दें।

अनुपान जल

—श्री० वैद्य इन्द्रलाल जी।

खांसी को—

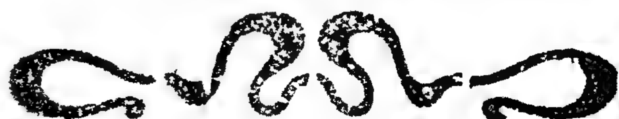
मुलेठी, छोहारा, मुनक्का, दो दो भरी और तेजपात, बड़ी इलायची, पीपर, चीनी (मिश्री) ये १ एक भरी कपड़छान कर मधु में गोली बांध मुख में रखने से शुष्क कास का दौड़ा रुक जाता है, यह १५ वर्षों की आजमाई है।

—श्री० लालजी शरण पांडेय वैद्यशास्त्री

नष्टार्तव को—

मुरब्बर-चौकिया, सोहागा, कबूतर की वीट को तिल के पानी में मटर की बराबर गोली बना, तीन बार सेवन करा, बल के अनुकूल केले का पानी ऊपर से पिलाने से, मासिक धर्म जारी होजायगा।

—श्री० लालजी शरण पांडेय वैद्यशास्त्री।





सर्प विष चिकित्सा

लेखक—श्रीमान् रसायनाचार्य कविराज प्रताप सिंह जी, ए०बी०एस०
मैम्बर आयुर्वैदिक फैकल्टी, ओरियेन्टल फैकल्टी, (बी०एच०यू०)
एन्ड, बोर्ड ऑफ इंडियन मेडीसिन यू०पी०गवर्नमेन्ट,
सुपरिन्टैन्डैन्ट आयुर्वैदिक फार्मेसी।
हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस

दधि मधु नवनीतं पिप्पली शृंगवेरं।
मरिचमपि वचस्यान् चाष्टम सैन्धवच॥
यदि भवति सरोषो तक्षको वासुकिर्वा।
यम सदन गत वा आनयेत्तत्क्षणेऽपि॥

दधि ३ तोला, मधु ३ तोला, नवनीत मखन) तीन तोला, पिप्पली, सुंठी, मरिच, वच, सैन्धव। इन सबको समान भाग ले कपड़-छान चूर्ण करलें और उक्त तीनो द्रव्यों में मिलाकर १२ तोले का एक मिश्रण तैयार करलें, सर्प काटे हुए को इस मिश्रण में से ४ तोला पिलादे, पिलाने के बाद यदि १० मिनट तक वमन या विरेचन न हो तो ४ चार तोला मिश्रण फिर

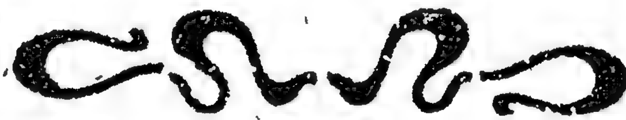
पिलाई, यदि इतना पिलाने पर भी वमन, विरेचन न हो तो शेष मिश्रण भी पिलावें। इतनी मात्रा पहुंचने पर अवश्य ही वमन विरेचन, होकर रोगी स्वस्थ्य हो जायगा, अन्यथा रोगी को असाध्य समझ ले या सर्प विष न समझ कर अन्य विष की चिकित्सा प्रारम्भ करें। इस प्रयोग का जब मै ऋषिकेश में था तब अनेक सर्पविष के रोगियों पर निश्चित अनुभव प्राप्त कर चुका हूं। इस प्रयोग के बनाकर रखने में प्रायः सिद्धि कम होती है क्यों कि काष्ठौषधि होने के कारण यह योग चिरकाल तक रह नहीं सकता और तत्क्षण बनाने से रोगी की चिकित्सा में विलम्ब होता है। सर्प चिकित्सा में विलम्ब करना रोगी की हत्या करना है। इस कठिनाई का अनुभव कर और रोगिया की अधिकता देख कर ऋषीकेश में ही मुझे इस दूसरे योग के अनुभव करनेका अवसर मिला तब से इस योग को बनाकर सदा अपने पास रखता हूं, और विश्वविद्यालय में आने के बाद भी मैंने इसका तीन चार वार प्रयोग कर लाभ उठाया है, यह योग पत्र-ताल का सत्व है, ताल सत्व प्रायः सखिया ही होता है, सखिया यह महा भयकर मारक विष है इस लिये इस का प्रयोग निश्चित सर्प विष में सावधानी और सतर्कता से करना चाहिये। मात्रा ४ चार चावल से १ रत्ती तक, विष लक्षण दूर होने पर्य्यन्त १५ पन्द्रह मिनट बाद देता रहे यदि गर्मी मालूम हो तो दूध में घृत मिलाकर पिलावें, रोगी को चेतन्य रखने के लिये उसके ऊर पर बराबर शीतल जल छिड़कते रहें और बीच २ में रोगी को हिलाकर उसका नाम



श्रीमान् कविराज प्रतापसिंह जी रसायनाचार्य्य

आदि पूछ कर उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करते रहें और यदि चेतन्य हो तो शीघ्र आरोग्य होने का बार २ आश्वासन दिलाते रहें।

प्रयोग बनाने की विधि—पांच तोला, तपकी शुद्ध हरिताल लेकर चावल सदृश उसके कण बनाले इन कणों को कपडमिट्टी की हुई छोटी सी हान्डी में रख कर, हान्डी के मुख पर एक निश्छिद्र कागज का टोप लगाकर ऐसा चिपकावे कि जो हान्डी के मुख को अच्छी तरह ढक दे। इस टोप की शकल ऐसी होनी चाहिये, जैसी नौकीली टोपी पजाबी सिपाही अपने साफे के अन्दर लगाते हैं। यन्त्र तैयार होने पर छोटे से चूल्हे पर इस को चढ़ा कर सावधानी पूर्वक चार प्रहर की मन्द अग्नि देवे और देखता रहे कि कागज के टोप में कहीं धुवां तो नहीं निकलता है। धुवां निकलने का स्थान तत्क्षण बन्द करदे अन्यथा सब सत्व निकल जायगा, स्वाग शीतल होने पर बड़ी सतर्कता से यन्त्र को कैंची से काट कर प्रथक् करे, हान्डी के गले में और कागज-टोप के नीचे के भाग में रवादार चमकता हुआ श्वेत सत्व मिलेगा उसे सावधानी से खुरच ले, और टोप के ऊपर के भाग में जो पीला सा भाग मिलेगा उसको अलग निकाल ले। यह पीला भाग विशुद्ध गन्धक है और अनेक रक्त रोगों में उचित मात्रा से प्रयोग किया जा सकता है, कुष्ठ उपदंश में भी लाभ करता है।





रसप्रकाश सुधाकर—गुजराती टीका सहित श्री पद्मनाभ पुत्र जूनागढ़ निवासी श्री यशोधर विरचित और रस-वैद्य जीवराम कालीदास आयुर्वेदाचार्य्य द्वारा गुजराती टीका युक्त, प्रकाशक—रसशाला ग्रन्थ भंडार गोंडल (काठियावाड़) मूल्य २) दो रुपये। साइज १८। २२ अठ पेजी के १८३ पृष्ठ।

इसमें पारद के १८ संस्कार, पारद बन्धन की अनेक विधियां, पारद भस्म की विधिया, धातुओं का शोधन मारण तथा अनेक रस प्रयोगों का विशद वर्णन है। पुस्तक प्रत्येक रस-वैद्य के पढ़ने योग्य है। टीका बड़ी अच्छी हुई है जो गुजराती जानने वालों के बड़े काम की है।

मंत्र खंड—राजवैद्य जीवराम कालीदास शास्त्री आयुर्वेदाचार्य द्वारा संशोधित और रस-शाला ग्रन्थ भंडार गोंडल—कठियावाड़ द्वारा प्रकाशित। १८। २२ अठपेजी साइज के १४४ पृष्ठ मूल्य दो रुपया।

श्री पार्वती पुत्र नित्यनाथ सिद्ध विरचित रस रत्नाकरांतर्गत पांचवाँ मंत्र-खंड है। इसमें वशीकरण, आकर्षण, स्तम्भन, मोहन आदि के मंत्र और उनकी क्रिया संस्कृत पद्य में वर्णन है साथ ही साथ संशोधक महोदय ने टिप्पणी भी करदी है जिससे पुस्तक की उपयोगिता विशेष बढ़ गई है।

रसेन्द्र मंगल—संशोधक और प्रकाशक रसवैद्य जीवराम कालीदास शास्त्री गोंडल काठियावाड़। १८। २२ अठपेजी के ६८ पृष्ठ मूल्य ॥।)आ०

यह पुस्तक भी नागार्जुन विरचित मूलमात्र है। इसमें पारद के ८ संस्कार धातु उप-

धातु का शोधन मारण तथा रस प्रकरण अच्छे ढङ्ग से वर्णित है। पुस्तक संस्कृतज्ञ वैद्यों के संग्रह योग्य है।

योग समुच्चय- श्री व्यास गणपति कृत और रसवैद्य जीवराम कालीदास शास्त्री रसशाला औषधाश्रम गौंडल—काठियावाड़ द्वारा गुजराती टीका युक्त। साइज २०। २६ अठपेजी ८० पृष्ठ मूल्य ॥) आना।

इसमें अनेक उपयोगी प्रयोगों का वर्णन है। गुजराती जाननेवाले वैद्यों के संग्रह योग्य है

रस कामधेनु- श्री चूड़ामणि विरचित। संशोधक-प्रकाशक-रसवैद्य जीवराम कालीदास शास्त्री रसशाला औषधालय गोंडल-काठियावाड़ १८। २२ अठपेजी के ४१७ पृष्ठ मूल्य ४)

यह रस कामधेनु का चतुर्थ पाद (चिकित्सा खण्ड) है। इसमें प्रत्येक रोग पर अनेकानेक सिद्ध प्रयोग वर्णित हैं, जो वैद्यों के बड़े काम के हैं। हम धन्वन्तरि के पाठकों से इसकी एक एक प्रति खरीदने का अनुरोध करते हैं।

अनङ्ग रङ्ग—अर्थात् कामशास्त्र। प्रकाशक-मैनेजर नवलकिशोर प्रेस लखनऊ मूल्य २॥)

यह प्राचीन समय की लिखी कामशास्त्र की उत्तम पुस्तक है, टीका हिंदी सरल और अच्छे ढङ्ग से की गई है। भूमिका बहुत ही विवेचना पूर्ण है। प्रस्तुत पुस्तक में कामशास्त्र सम्बन्धी अनेक विषय वर्णित हैं। कामशास्त्र सम्बन्धी कोई महत्वपूर्ण बात छूट नहीं पाई है। पुस्तक प्रत्येक स्त्री पुरुष के पढ़ने योग्य है। जो कामशास्त्र की खोज में रहते हैं और नकली रद्दी काम शास्त्र खरीद अपना धन और स्वास्थ्य नष्ट करते हैं उनके ऊपर प्रकाशक ने यह पुस्तक प्रकाशित कर बड़ा अनुग्रह किया है हम अपने ग्राहकों से इसकी एक २ प्रति खरीदने के लिये अनुरोध करते हैं।

मोतीज्वर चिकित्सा— लेखक—वैद्यराज जगन्नाथप्रसादजी विद्याश्रमी, वैद्य वाचस्पति। प्रकाशक-वैद्यराज फार्मेसी आगरा २०। ३० सोलहपेजी २१३ पृष्ठ मूल्य १) एक रुपया।

इस पुस्तक में मोती ज्वर की व्यापकता, परिचय, इतिहास, शास्त्रीय विचार, डाक्टरी-मत नाम करण, कीटाणुवाद, सम्प्राप्ति, भेद, लक्षण, चिकित्सा आदि मोती ज्वर सम्बन्धी सब ही विषयों का विस्तार पूर्वक विवेचन है। लेखनशैली उत्तम, छपाई साफ़। पुस्तक प्रत्येक वैद्य के संग्रह योग्य है।

मंथर ज्वर की अनुभूत चिकित्सा

लेखक—प्रकाशक—श्रीमान् स्वामी हरिशरणानन्दजी वैद्य, पञ्जाब आयुर्वेदिक फार्मेसी अमृतसर। साइज २०। ३० सोलहपेजी, पृष्ठ संख्या १७० मूल्य १) एक रुपया।

इस पुस्तक में मोती ज्वर—मन्थर ज्वर का कारण, इतिहास, कीटाणु लक्षण, चिकित्सा आदि सबही बातों का विस्तृत वर्णन है। वर्णन शैली नवीन एलोपैथी के समान है। भाषा उत्तम, छपाई साफ, कागज़ ग्लेज। पुस्तक अच्छी लिखी गई है। ऐसे वैद्यों को जो नवीन ढङ्ग में रंगे हुये हैं इसे देख हर्ष होगा। पुस्तक संग्रह करने योग्य है।

क्षयरोग निवारण--लेखक—श्रीमान् वैद्य जटाशङ्कर जैशङ्करजी दुवे । प्रकाशक-वैद्य रविशङ्कर जटाशङ्करजी त्रिवेदी वैद्य कल्पतरु कार्य्यालय, रीचीरोड-अहमदावाद। साइज २०। ३० सोलहपेजी पृष्ठ सख्या १५३ मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

इस पुस्तक में गुजराती भाषा और लिपि में क्षय रोग का विषदरूप से वर्णन् है । क्षय सम्बन्धी कोई विषय जो आवश्यकीय है छूटने नहीं पाया है। पुस्तक प्रत्येक गुजराती भाषा जानने वाले वैद्य के पढ़ने योग्य है। यह पुस्तक वैद्य कल्पतरु के ग्राहकों को उपहार में बांटी गई हैं हम ऐसी उत्तम पुस्तक को उपहार में देने के लिये प्रकाशक महोदय को धन्यवाद देते हैं।

व्रण-बन्धन लेखक—श्रीमान् कविराज शिवशरणजी वर्मा वैद्यरत्न, भिषगाचार्य्य प्रकाशक-आचार्य धन्वन्तरि मण्डल-फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट) साइज २०। ३० सोलह पेजी पृष्ठ सख्या १३२ मूल्य १।=) एक रुपया छः आना ।

इस पुस्तक में शरीर के भिन्न २ स्थानों में होनेवाले व्रण (फोड़ा) के ऊपर पट्टी (वन्धन) बाँधने की विधियाँ हाफटोन अनेक चित्रों सहित सरल भाषा में वर्णित हैं। आयुर्वेद में भी पट्टी बाधने का विधान पाया जाता है यदि लेखक महोदय उनका वर्णन् मय प्रमाण के लिखदेते तब पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़जाती तथापि पुस्तक उपयोगी और सग्रह करने योग्य है ।

संतति निरोध रहस्य—लेखक—श्रीमान् कवराज डाक्टर रामनारायणजी वैद्यशास्त्री प्रकाशक-सन्तति रहस्य आफिस, बगिया मनीराम कानपुर मूल्य ॥) आठ आना।

इस पुस्तक में मैथुन करते हुए भी सन्तान न होने देने की विधियां सरल भाषा में लिखी गई हैं जिनके सन्तान अधिक है और अब वह उसे उत्पन्न नहीं करना चाहते उनके लिये उत्तम है।

प्राकृतिक आरोग्य विज्ञान—लेखक—श्री० नारायण गोविंद नावर प्रकाशक—आध्यात्मिक अन्वेषण सभा उज्जैन। मूल्य ।) चार आना।

पुस्तक का विषय नाम से ही प्रकट है प्राकृतिक उपायों द्वारा स्वास्थ्य होने के नियम अच्छी तरह वर्णित हैं।

हिस्टेरिया वात रोग दर्शन--लेखक प्रकाशक--श्रीमान् छगनलाल—लल्लूभाई देशी नामावाला पैलेसरोड वड़ोदा-साइज १८×२२ अठपेजी पृष्ठ संख्या १०२ सजिल्द मूल्य १।)

इस पुस्तक में वात रोगों और हिस्टेरिया का विषद रूप से वर्णन है, साथ ही धन्वन्तरि के हिस्टेरिया अङ्क की समालोचना भी है । भाषा लिपि गुजराती है। गुजराती जानने वाले वैद्यों के बड़े काम की है।

देशी नामु लेखक-प्रकाशक श्रीमान् छगनलाल लल्लूभाई शाह वड़ोदा। पृष्ठ संख्या १२२ मूल्य ४=) आना

यह पुस्तक गुजराती भाषा और लिपि में लिखी गई है । इस में व्यापारिक वहीखाते जमा खर्च वगैरह लिखने पढ़ने का वर्णन है। गुजराती के विद्यार्थियों के काम की है।

सिद्ध प्रयोग--लेखक-प्रकाशक—श्रीमान चिकित्सक प० विश्वेश्वरदयालु जी वैद्यराज बरालोकपुर (इटावा) मूल्य लिखा नहीं।

इस पुस्तक में अनेक प्रयोगों का मापाटी-का सहित वर्णन है, और यह पहले छपी सिद्ध प्रयोग का दूसरा भाग है, प्रयोगों का सग्रह उत्तम हुआ है। यह पुस्तक अनुभूतयोगमाला के वार्षिक उपहार में बांटी गई है।

आयर्लैंड का स्वातंत्र्य युद्ध

प्रताप-कार्यालय ओजस्वी ग्रंथों के प्रकाशन में अत्यत अग्रसर है और उसके प्रकाशित रत्न भाषा के गौरव-वर्धक होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी वैसी ही है, किताबी आकार के १०० पृष्ठों की यह सचित्र पुस्तक आद्योपांत ऐसी रोचक है कि प्रारम्भ करने के बाद अन्त कर देने पर ही छोड़ी जा सकी। आयर्लैंड को ब्रिटिश पजे से छुड़ाने वाले देशभक्त नवयुवकों में अग्रणी श्री० डेन-ब्रीन ने स्वय ही यह कथा लिखी थी और लिखी ऐसे उत्तम ढग से कि इसे आत्मकथा-उपन्यास और इतिहास भी भली भांति कही जा सकती है। अनुवादक "श्री० बलवन्त जी" भाषा भाव और कौतूहल युक्त सरलता लाने में खूब सफल हुए हैं। मूल्य ।=) पुस्तक को देखते हुए कुछ भी अधिक नहीं हैं।

मेरी रूस यात्रा—

किताबी साइज—१४४ पृष्ठ मूल्य ॥=)

लेखक—सुप्रसिद्ध वीर " शौकत उस्मानी "

प्रकाशक—प्रताप कार्यालय, कानपुर।

प्रताप-पत्र-पुष्प की इस अष्टम कलिका में लेखक महोदय ने अपनी "हिजरत" समय की यात्रा के स्थानों और घटनाओं का बड़े रोचक ढग से चित्रण किया है। उससेभी अधिक पुस्तक का महत्व, इसके लेखक की योग्यता, ज्वलन्त देशभक्ति और निर्भीक कार्य-तत्परता से ही जाना जा सकता है। वे मातृभूमि के उज्वल रत्नों में से एक हैं, और विरले ही मुस्लिम भ्रातृ भारतवर्ष में आपकी समानता के होंगे। जननी जन्म-भूमि को आप यथार्थ में "जननी" मानते हैं। और उसके उद्धार के लिये प्राण-पण से प्रयत्न-शील हैं। योग्यता इसी से प्रगट होती है कि इंग्लेंड वालों ने, शाही कमीशन के अध्यक्ष सर जोन साइमन के मुकाबिले में आपको पार्लियामेंट की मेम्बरी को खड़े किये । इस पुस्तक में अफगानिस्तान फ़ारिस-तुर्की व रूस की राजनैतिक परिस्थितिओं और घटनाओं का बड़ा रहस्य-पूर्ण पता मिलता है और मिलता है कार्य करने के लिये पाठ। पुस्तक इतनी रोचकहै कि उत्तम उपन्यास के समान आनद आता है हम इन दोनों पुस्तको को भारत माता के प्रत्येक हितचिन्तक के पढ़ने और बालकों को उपहार देने योग्य समझते हैं।

काशी नागरी प्रचारणी सभा

२६ वां वार्षिक विवरण सामने है। बड़ा भारी हल्ला न मचाते हुए भी, हिंदी भाषा का बड़ा भारी काम कर दिखाने में यह संस्था सब से अग्रणी कही जाय तो तनिक भी अत्युक्ति नहीं। सभा के द्वारा—"हिन्दी शब्द सागर" के समान विशाल कार्य का पूर्ण होना सुन किसे परम हर्ष न होगा। अदालतों में और रियासतों में देवनागरी प्रचार भी यथेष्ट आल्हाद-जनक है इसी प्रकार

कचहरी-कोश, वैज्ञानिक-कोष भारी अभावों की पूर्ति करेंगे। साथ ही, सात उच्चकोटि की ग्रंथ मालायें भी सभा द्वारा प्रकाशित हो रही हैं। प्रति वर्ष ४ पुरस्कार तथा २-३ पदक भी सभा की ओर से बराबर दिये जाते हैं। इन सब से यह सभा मातृ भाषा नागरी की जो सेवा कर रही है वह स्थायी और अत्यत सराहनीय है। नागरी प्रचारिणी पत्रिका भी अत्यत उच्च कोटि की प्रकाशित होती है प्रत्येक हिन्दी हितैषी को उसके ग्राहक बनकर और "सभा" के सदस्य होकर तथा जिस प्रकार भी होसके ऐसी उपयोगी सस्था को पूर्ण सहायता पहुंचानी चाहिये। जगदीश्वर ऐसी सभाओं को उन्नति का पूर्ण अवसर प्रदान करें यही हमारी कामना है।

गिलोइ का सत्व—गुरुराज फार्मेसी जामनगर काठियावाड़—द्वारा प्रेषित।

उक्त फार्मेसी ने हमें गिलोइ का सत्व परीक्षार्थ भेजा है। गिलोइ का सत्व साधारणतः उत्तम और लाभदायक है। मूल्य जरा अधिक है।

प्लेग-रक्षक--श्रीमान प० रघुनाथप्रसाद जी शास्त्री लिखित, रसायन शाला बिजनौर से प्रकाशित। करीब २ किताबी आकार के १३ पृष्ठ की अच्छी पुस्तिका है। मूल्य ०

चाय-विज्ञान-डिमाई में	८ पृष्ठ	मूल्य	-)
मनुष्य और मस्तिष्क	१६ "	"	=)
संस्कार-विमर्शन-	२४ "	"	≡)

तीनों के लेखक—प्रकाशक श्री० वैद्य भूषण श्यामलाल जी सुहृद, बरानदी, पो० बुढ़ासी ज़िला अलीगढ़।

निबन्ध माला अङ्क २ और ४ हरियाणा शेखावोटी ब्रह्मचर्याश्रम-भिवानी द्वारा प्राप्तव्य। प्रस्तुत अङ्कों में १८×२२ के १२ व ८ पृष्ठ हैं इस में सिद्ध भैषज्य मणि-माला-पुस्तक जो जयपुर के आयुर्वेदाचार्य्य के पाठ्य विषय में निर्धारित है उस की समालोचना और प्रत्यालोचना है। समालोचना और प्रत्यालोचना बड़ी मार्के की है। विद्वान वैद्यों के पढ़ने और विचार करने योग्य है।

संक्षिप्त भाषण--कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा। "अमृतधारा" लाहौर का प्रथम सिन्ध आयुर्वेदिक सम्मेलन, हैदराबाद के सभापति पद से सुनाया हुआ भाषण। कई बातों पर अच्छा प्रकाश डालता है, हिन्दी, उर्दू, सिंधी इंग्लिश, जैसा चाहें, म गा सकते हैं।

वैद्यसम्मेलन पत्रिका--अङ्क ३-सम्पादक-आयुर्वेदाचार्य श्री० जगन्नाथ प्रसाद जी वाजपेयी, एव कविरत्न श्री० नारायण प्रसाद जी द्विवेदी। २०×२६ अठ-पेजी ४८ पृष्ठ। वार्षिक मूल्य ३) तीन रुपया।

नि० भा० आयुर्वेद महामण्डल कानपुर से प्रकाशित। पत्रिका के निबन्ध बड़े महत्व पूर्ण हैं, और सम्पादन शैली भी सराहनीय है। ऐसी उपयोगी पत्रिका सभी चिकित्सकों के पढ़ने योग्य और यथेष्ट ज्ञानवर्धक है।

वार्षिक रिपोर्ट-१९२५-२६-२७-

श्री ज्ञानसागर दिगंबर जैन औषधालय, बजार (ग्वालियर) का कार्य विवरण। औषधालय ८—१० हजार रोगियों की सेवा प्रति वर्ष उत्तम रूप से कर रहा है। ईश्वर इसे शीघ्र ही और भी उन्नत दिखावें।

वार्षिक रिपोर्ट- श्री जैन दि० औषधालय वीर का १ वर्ष का संक्षिप्त विवरण और औषधों की मूल्य सूची भी। प्रतीत तो धर्मार्थ औषधालय होता है परन्तु इस में तो कई बातें, व्यर्थ और कई विज्ञापन बाजी की हैं। जो विशेष परिचित हों वे प्रकाश डालने की कृपा करें।

वार्षिक रिपोर्ट—श्रीकृष्ण आयुर्वेदिक औषधालय भिवानी का प्रथम वार्षिक विवरण। संस्था अच्छा काम कर रही है, ईश्वर उन्नति करें।

षष्ठम वार्षिक रिपोर्ट—श्री संतोकीरामजी जगन्नाथ चंडक औषधालय, सोलापुर का कार्य विवरण, बहुत संक्षिप्त है, कोई हर्ज नहीं, काम तो खूब हो रहा है। इस वर्ष कोई ४२००० रोगियों की चिकित्सा हुई है। बड़े हर्ष की बात है जगदीश्वर और भी उन्नत करते जावें।

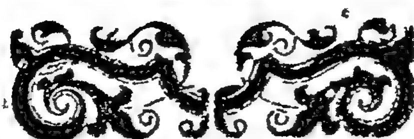
तृतीय वार्षिक रिपोर्ट—श्रीमद्दयानन्द आयुर्वेद महाविद्यालय लाहौर का कार्य विवरण। विद्यालय में ३१८ छात्र रहे। उत्तीर्ण संख्या भी संतोष जनक है। ऐसी संस्थाओं को पूर्ण सहायता मिलनी चाहिये।

विचित्र कला—शिल्प-कला-कौशल संबन्धी मासिक पत्रिका। १८×२२ डिमाई अठ-पेजी २४ पृष्ठ। वार्षिक मूल्य २) एक प्रति ।)।

श्री० लक्ष्मणप्रसाद जी वर्मा "कुशल" द्वारा कुशलता से संपादित, और शायद उन्हीं द्वारा अहारन (आगरा) से प्रकाशित। मार्च का अङ्क सन्मुख है। संग्रह इधर उधर से यथेष्ट किया गया है, परन्तु पृष्ठ संख्या और वर्णनों का विस्तार बढ़ने की भी गुन्जायश है। कला-कौशल--हितैषियों को अवश्य आदर करना चाहिये।

वायुमुक्त।

श्री० सी० पेल० शाह देशी नामावाला बरौदा ने- अपनी यह सुप्रसिद्ध पेटेन्ट औषधि परीक्षणार्थ भेजी है। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद है। परीक्षा कर रहे हैं। भली भांति फल देख कर सम्मति आगामी में प्रकट करेंगे। प्रेषक महोदय का कथन है कि "हिस्टीरिया, अपस्मार अर्धांग, धनुर्वात, शूल, शिरोभ्रम, गुल्म, और उन्माद की भी यह उत्तम औषध है।





पाषाण भेद पर मेरा अनुभव

लेखक—श्रीमान स्नातक योगीराज जी आयुर्वेदालङ्कार
आयुर्वेद विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी।

पाषाणभेद के विषय में कतिपय शास्त्रज्ञो की भिन्न २ सम्मतिया है। कुछ कहते है, कि बागो में गमलो के अन्दर जो छोटा सा स्नुही की तरह मोटे पत्ते वाला और खट्टा मिट्ठा पौदा होता है वही पाषाण भेद है। प्रायः बङ्गाली पडित इसी तरह की एक फर्न ( ) को इस नाम से पुकारते है। परन्तु हम आश्चर्य्य में थे कि इस बूटी से अश्मघ्न और कृच्छ्रहर आदि सज्ञाये सार्थक क्यो नहीं प्रतीत होतीं, अब जब से हमें पञ्जाब प्रान्त के कुर्म्माचल कूलू प्रदेश में रहने का सौभाग्य मिला है तब से सहज में ही भिन्न २ औषधिया का अनुसन्धान किया है उस के अनुसार हमें मालूम हुआ कि यह औषधि इतनी साधारण नही जैसा कि वैद्यजनो का विचार है। पाषाणभेद साढे छै हजार से आठ हजार फीट की ऊँचाई के पर्वतो पर मिलता है, और उन पर्वत श्रेणियोपर जहा कम से कम दो चार मास वर्फ अच्छी तरह गिरता हो। इस के साथ ही उस प्रान्त के निवासी गण इस औषधि को पठान वेग के नाम से पुकारते हैं। उधर इस का प्रयोग

अधिकतः ग्राही (Astringent) उद्देश्य के लिये होता है। और वे लोग सद्यः क्षत व्रण पर इस के पत्ते और गूदा बांधते हैं, डाक्टर लोग इस का प्रयोग (Indian jention इन्डियन जैनशन) औषधि की तरह करते हैं जिसे वे एक तिक्त बलकारक (Bitter tonic) और ग्राही कहते हैं। औषध के नाम से स्पष्ट है कि यह पाषाण को भेद कर निकलती है और साथ ही गुणों और उपयोगो में शिलाजीत की समता रखती है।

भिन्न भिन्न भाषाओं के नाम :—

स—पाषाण भेद, शिला भेद, अश्मघ्न, हिं. प. गु. म. आदि में पाखान भेद इसी तरह का मिलता हुआ नाम है।

बं. पाथर चुनी

लै. Coleus Aromatiens

· C. Amboinieus

इं. Country Borage

स्थान——पर्वतों पर ६००० से ८००० फीट में,

पहिचान—पत्ते अन्डाकृति से, टहनी के साथ ही जुड़े हुये, टहनी पत्थर से चिपटी खुरदरी और तोडने पर गुलाबी से गूदे वाली क्षुप सदा हरित, पुष्प में ४ या ५ रङ्गीन दल छोटेसे हरित दल और गुलाबी लम्बीडन्डी वाली निर्गन्ध होती है। यह पुष्प अगस्त से अक्टूबर तक आते हैं। पत्तों का स्वाद ग्राही शीतल और



* श्रीमान् स्व० योगीराजजी वैद्यराज *

गुण—पाषाणभेद—शीतल, किंचित कषाय, मधुर तिक्त, सारक और वस्ति शोधक है।

प्रयोग—१—इस का क्वाथ खिलाने से पेट की पीड़ा नष्ट होतीहै। २—बच्चो के पेटका शूल मिटाने के लिये इस के पत्तो के रस में शक्कर मिला कर पिलाना चाहिये। ३—इस के पत्तो का रस अधिक पीने से नशा आजाता है। ४—पत्तो का रस ग्राही होने से रक्त-प्रति-बन्धक और अतिसार हर है। ५—पत्तो के रस में सोंठ बुरक कर पिलाने से भी पेट की पीड़ा मिटती है। ६—अ-सव के घावों और पत्तो के रस का लेप करनेसे उस के सफेद भाग की पीड़ा मिटती है।

७—मूत्राशय के रोग, शोथ (Dropsy) अश्मरी (Calculus) में इस का क्वाथ कर पिलाना चाहिये

८—स्त्रियो के श्वेत प्रदर और मनुष्यों के मूत्र रोगो मे इस के क्वाथ में मधु डाल कर पिलाना चाहिये।

९—इसका क्वाथ पिलाने से मूत्र कृच्छ (Strangury) और पथरी में विशेष लाभ देखा गया है। १० इसके क्वाथमे मधु तथा शिलाजीत मिला कर देने से पित्ताश्मरी मिटती है। इस के पत्तो को मक्खन और रोटी के साथ भी खातेहैं। *

---

* आशा है कि वैद्य गण पाषाणभेद में यही यथार्थ औषधि प्रयोग करेंगे और इस के चमत्कारिक गुण देख मुग्ध होंगे। मगाने का पता—धन्वन्तरि औषधालय विजयगढ़ —लेखक।

अनुभूत चोबचीनी रसायन



चीन और जापान प्रदेश में होने वाली चोबचीनी एक लता की जड़ है, जो गठीली, दृढ़ तथा रङ्ग में कुछ पीलापन, हलकी गुलाबी लिये हुए सफेद होती है, और इसकी पत्तियां प्रायः असगन्ध की पत्तियों से मिलती जुलती हैं। औषधि कर्म्म में विशेष रूप से इसकी जड़ का उपयोग होताहै। आयुर्वेद में यह अग्नि दीपक, उष्णवीर्य, कड़वी, धातुपोषक निद्राजनक, पुष्टि कारक वर्ण-बल वर्धक, मल-मूत्र शोधक, रसायन, स्वेद कारक तथा अङ्ग मर्द, अपस्मार, अर्श, उन्माद, उपदंश(आतशक)कंठमाला, कुष्ठ, खाज, गठिया, गजचर्म, गृध्रसी, चर्मरोग जीर्ण-दद्रु, धातुक्षय, नेत्ररोग, पिडिका, वातरक्त, वात व्याधि, विसर्प, व्रण, भगन्दर, मन्दाग्नि, मलावरोध, मूत्रकृच्छ, रक्त-विकार, लकवा; शुक्र मेह, शूल, श्वेतकुष्ठ, सर्वाङ्ग वात. स्त्रियों का रजावरोध और क्षय आदि रोगों को दूर करने वाली मानी जाती है। केवल जलोदर रोग वालेको हितकर नहीं होती।

चोबचीनी की लकड़ी में कीड़ा (घुन) अधिक लगता है, और जिस में कीड़े लग जाते हैं वह-गुण हीन होती है । इसके अतिरिक्त सडी पुरानी, और वर्ण रहित, बे काम होती है। कपूर, कस्तूरी, चूना के साथ रक्खी हुई एवम् घाम, धुआं और शीत से भी इस के गुण नष्ट हो जाते हैं इस को मधु अथवा शक्कर के बीच में रखने से कीड़े नहीं लगते और न शक्ति ही नष्ट होती है । जिसका रङ्ग परिवर्त्तित न हुआ हो और जो पानी में डालने से डूब जाय उस चोबचीनी को श्रेष्ठ समझ कर औषधि कार्य में व्यवहृत करना चाहिये। चोबचीनी का सेवन आरम्भ करने से पहले पञ्चकर्म स्नेह, स्वेदन, वमन, विरेचन वस्ति, से शरीर को अच्छी तरह शुद्ध कर लेना आवश्यक है, जिस प्रकार मलीन वस्त्र को रङ्गने से उस पर वास्तविक रङ्ग नहीं चढ़ता, उसी प्रकार अशुद्ध शरीर में औषधि का यथोचित लाभ नहीं प्रत्यक्ष होता, यदि किसी कारण विशेष से पञ्च-कर्म नहो सके तो कम से कम उत्तम विरेचन से कोष्ठ शुद्ध कर के ही सेवन आरम्भ करना चाहिये।

अपथ्य—इस के सेवन से खटाई, बादी चीजें लवण, लाल मिर्चा, शीतल जल, क्षार पदार्थों को त्याग दे और क्रोध करना, घाम में रहना, चिन्ता, व्यायाम, शोक, स्नान तथा स्त्रीप्रसंग से बचना चाहिये। निम्न लेखानुसार पथ्य पूर्वक यदि ८० दिन पर्यन्त चोबचीनी-रसायन का सेवन किया जाय तो इस में कोई सन्देह नहीं कि शरीर का आश्चर्यजनक परिवर्त्तन (कायाकल्प) होजाता है। शरीर का वर्ण तपाये हुये कञ्चन के समान बना देता है। धातुपुष्ट कर के शरीर में बल-वीर्य की वृद्धि करता है। आतशक के उपद्रव, गलित कुष्ट, चर्म-रोग आदि इस प्रकार दूर भागते हैं, जिस प्रकार सूर्य्योदय से घोर अन्धकार का पता नहीं रह जाता। युवापन का स्थापन करने के लिये तो यह सिद्ध रामवाण के समान अचूक महौषधि है।

चोवचीनी के प्रयोग से हमने कई एक गलित कुष्ठ के रोगियों को आराम किया है, प्रथम वही योग पाठकों के सामने रखते हैं।

चोवचीनी का सेवन—दो तोले चोवचीनी को चने बराबर छोटे २ टुकड़े बना कर एलुमीनम तांबा पीतल के कलईदार वर्तन, चांदी अथवा मिट्टी के पात्र में एक सेर पानी डाल कर, ढकन देकर सन्धियों को आटा से बन्द करके चूल्हे पर चढ़ा धीमी आंच से पकावे। आधा पानी जल जाने पर नीचे उतार ले। प्रयोग विधि—

बेत की बनी हुई कुरसी अथवा बिना बिस्तर की चारपाई पर गले तक चादर ओढ़ कर बैठ जावे और नीचे पात्र का मुख खोल कर रख दे। भाप निकल कर सम्पूर्ण शरीर में लगेगी और उस से पसीना आवेगा। जब भाप का निकलना बन्द हो जाय तब पसीने को साफ़ वस्त्रसे पोंछ डाले किन्तु शरीर को कपड़े से ढांक रक्खे, शीतल वायु न लगने पावे। पात्र में से दो तोले क्वाथ छान कर गरमही पी जावे और शेष बचे हुये कषाय को हाथ मुँह धोने आदि के काम में लावे। इस क्रिया के अनन्तर दो घड़ी तक शीत से बचना चाहिये। इसी प्रकार प्रत्येक दूसरे दिन चोवचीनी तथा कषायपान की मात्रा डेढ़ २ माशे बढ़ाता जावे जिस में च्यालीस दिन पहुंचते २ पांच तोले तक मात्रा हो जाय इकतालीवें दिन से फिर पूर्वोक्त क्रमानुसार मात्रा घटाता जाय जिस में ८० दिन पहुंचने पर दो तोले मात्रा आजावे।

दूसरी विधि—६ माशे चोवचीनी को दो सेर पानी में डाल पात्र का मुख बन्द करके पकावे और चौथाई जल रह जाने पर नीचे उतार वर्तन का मुख खोल कर कषाय को छान ले। गर्मी के दिनों में शीतल कर के और शीत काल में उष्ण ही, आठ तोले क्वाथ में थोड़ी मिश्री मिला कर पी जावे। बचे हुये काढे को कुल्ली करने, हाथ पांव धोने और वस्त्रादि पोंछने के काम में व्यवहृत करें। इस में नित्य प्रति स्वेद देने की आवश्यकता नहीं, केवल सप्ताह में एक बार उपर्युक्त कथन की हुई रीति से रोगी को स्वेद देना पर्याप्त है। यदि इस प्रकार तीन सप्ताह के सेवन से रोग में विशेष परिवर्तन न दिखाई दे तो दो माशे चोवचीनी का चूर्ण प्रति दिन दो प्रहर में उसी क्वाथ के साथ सेवन करावे तो अवश्य ही लाभ दृष्टिगोचर होगा। क्रमशः रक्तविकारादि दोष शान्त होंगे और शरीर का वर्ण स्वच्छ होता दिखाई देगा,

पथ्य—छटांक या आधी छटांक चने मिट्टी के पात्र में आध पाव पानी डालकर सन्ध्या को भिगो दे और प्रातः काल शौचादि से निवृत्त हो पहले चना खा कर ऊपर से चने का पानी पी जावे। गेहूं और चने का आटा बराबर भाग मिला कर इस की रोटी पके हुए गाय के दूध से एक बार भोजन करे। हो सके तो किसी पत्र-पुष्प से परिपूर्ण उद्यान में कुटी बना कर शान्ति और प्रसन्नता के साथ सदा परमेश्वर का चिन्तन करते हुए निवास करे। सरदी के दिनों में शरीर को किसी समय में खुला न रक्खे, जिससे शीत-विकार की बाधा न उत्पन्न होने पावे। शौच के अनन्तर गुदा-प्रक्षालन, हाथ पाँव धोना, कुल्ली करना और भोजन बनाना आदि कामों में, चोवचीनी के साधारण क्वाथ (डेढ़ दो तोले चोवचीनी को दस बारह सेर पानी में मुख बन्द कर के पकावे,

और आधो जल रह जाने पर नीचे उतार कर छान ले, उस) का व्यवहार करना चाहिये। अपने ओढ़ने पहनने के वस्त्रों को भी इसी काढ़े में फींच सुखा कर ओढ़ना पहनना चाहिये। नियमित आहार-विहार से तपस्वी के समान समय बितावे इसका सेवन समाप्त होने के अनन्तर चालीस दिन तक उसी प्रकार पथ्य का निर्वाह करके फिर क्रमशः नमक आदि के खाने का थोड़ा २ अभ्यास बढ़ाना चाहिये।

सुधानिधि में प्रोफेसर कविराज रामकृष्ण शर्मा ने चोबचीनी के विषय में अपना अनुभव प्रकाशित करते हुये दूध का सेवन हानिकर बतलाया है। परन्तु हमने गलित कुष्ठ के रोगियों को दूध-रोटी का पथ्य देकर आरोग्य किया और उस से किसी प्रकार की हानि नहीं प्रत्यक्ष हुई प्रत्युत् लाभ ही देखा गया है। निघन्टु में गोदुग्ध का गुण—"गोक्षीर जीवन बल्यं रक्तपित्तानिलापहम्। आयुष्यम् पुस्त्वकृत्पथ्य मेध्य वृष्य रसायनम्—लिखा है। ऐसी अवस्था में उसको अपथ्य मानने में असमंजस होताहै पर प्रोफेसर महोदय ने नजाने किस आधार पर गोदुग्धका निषेध किया, है। चोबचीनी का अर्क, अवलेह, चूर्ण, पाक वटी और सत्व आदि अनेकानेक योग जो भिन्न २ रोगों में लाभकारी सिद्ध हुए हैं उन्हें यहां हम समयाभाव से नहीं दे सकते, किन्तु समयान्तर में धन्वन्तरि के पाठकों की सेवा में उपस्थित करेंगे।

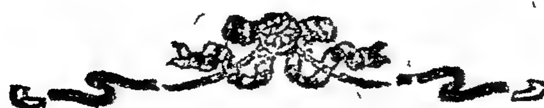
लेखक—पं० महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य।

पुनर्नवा का गुण—

पुनर्नवा एक झाड़ है, जिस समय किसी स्त्री के बालक जन्मने में कष्ट हो उस समय उस स्त्री के हाथसे थोड़ा चावल लेवे उस चावल को पुनर्नवा के झाड़ पर छोड़दे, फिर नमस्कार कर अपना अभिप्राय बतलाय खोदे तो जहां तक देखा गया है लड़का होना होगा तो जड़ी सीधी अगर पुत्री है तो टेढ़ी रहेगी। फिर उस जड़ी के दो टुकड़े कर लेवे, १ टुकड़ा दरवाजे में बांध दे, दूसरा टुकड़ा कमर में बांध दे। बच्चा हो जाने पर निकाल दे। जड़ी टेढ़ी सीधी रहेगी यह मैंने अनुभव नहीं किया है परन्तु एक मनुष्य मेरे सामने उस जड़ी को लाया जो सीधी थी, आते ही उसने कहा कि लड़का होगा, और ऐसा ही हुआ।

२—पुनर्नवा की जड़ को अध-कुट कर के ज्वर (एकतरा. तिजारी, चौथिया) वाले रोगी की दाहिनी नाड़ी में बांधदे, स्त्रियों की बायीं नाड़ी में बांध दे यह विधि ज्वर आने के १-२ घन्टा पहले करना चाहिये। इस जड़ी में ऐसे और भी कई अदभुत गुण हैं, वह क्रमशः प्रकाशित करूँगा।

—वैद्य प्यारेलाल गुप्त रस शास्त्री।





निवेदन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी इस पांचवे वर्ष के अन्तिम इस प्रयोगाङ्क में " वैद्यों से परामर्श " नहीं प्रकाशित किये गये हैं। कारण इस अङ्क के प्रकाशित परामर्श (प्रश्नों) पर सम्मतियां जो आवेंगी वह छटे वर्ष के अङ्क में ही प्रकाशित हो सकेंगी । जो नवीन ग्राहक होंगे और जिनके पास पांचवें वर्ष के अङ्क नहीं होंगे वह उन सम्मतियों से लाभ न उठा सकेंगे, तथा जो ग्राहक छठे वर्ष न रहना चाहेंगे उन्हें सम्मतियां ही देखने को न मिल सकेंगी। इसलिये प्रति वर्ष हम १२ वें अङ्क में परामर्श नहीं प्रकाशित करते, आशा है कि ग्राहकगण हमें क्षमा करेंगे।

—व्यवस्थापक-धन्वन्तरि ।



लेखक—श्रीमान् वैद्यराज पंडित महावीर प्रसाद जी मालवीय "वीर"
भूतपूर्व सम्पादक मनोरमा, ज्ञानपुर-बनारस स्टेट

सम्मति नम्बर २४१ क (पारद गुटिका)

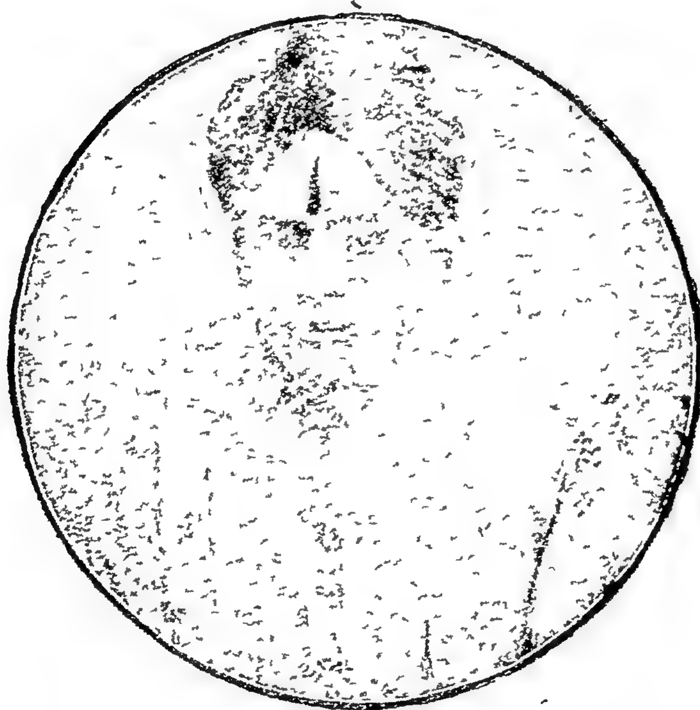
प्रश्न (परामर्श) संख्या २३ में प्रेषक का अभिप्राय उस गुटिका से है जो कटि में बांधने, मुख में रखने, वा हाथ में लेने से, वीर्य्य स्तम्भन शक्ति उत्पन्न करती है। परन्तु आपने मुझ से केवल पारे की गोली बनाने का प्रश्न किया था। पारद की गोली, गिलास, और कटोरा, आदि बनाने की रीति हिन्दी देशोपकारक लाहौर के ता० १ व २५ सितम्बर तथा ता० १ अक्टूबर सन् १९११ की संख्याओं में 'शर्म्मन सिद्ध योग, शीर्षक के नीचे सम्पादक का अनुभूत प्रयोग विस्तार पूर्वक अंकित है पाठकों के सुभीते के लिये उक्त विधि यहां देशोपकारक से उद्धृत की जाती है जिससे जिनके पास देशोपकारक न हो वह भी लाभ उठा सकें इस विधि के अनुसार विना किसी अन्य धातु के योग के आप पारे की गोली तैयार कर सकते हैं। इसमें किसी को कुछ इनाम देने की आवश्यकता नहीं हैं। हां धन्वन्तरि पत्र के सम्बन्ध में जो कुछ उदारता दिखायेंगे वह वैद्य समाज में प्रशंसनीय और आदर के योग्य समझी जायगी। निम्न योग के सम्बन्ध में यदि कोई बात समझ में न आवे तो उसके लेखक प० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्यभूषण अमृतधारा लाहौर के पते से पूछताछ कर सकते हैं "शर्म्मण सिद्धयोग" शिगरफ से पारा निकालने की विधि यह है—

" शिगरफ को आधा दिन नीबू के रस में और आधा दिन नीम के पत्तों के रस में खरल करें और टिकिया बनालें और शिगरफ से द्विगुणे चियड़े लपेट दें और एक चौडे बर्तन में रख कर दियासलाई से आग लगायें, और उसके

ऊपर एक मटका उलटा करके रखदें परन्तु ऊँचा रखने के लिये तीन ईंटों पर रक्खें ताकि वायु लगती रहे और अग्नि शान्त न होजाय, सारा पारा जुदा होकर मटके के ऊपर जा लगेगा, अथवा नीचे के वर्तन में रह जायगा। पानी से धोकर पारे को अलग करदें। शिङ्गरफ को विना खरल किये हुये रखदें तो भी पारा जुदा हो जायगा यह भेद की बात है जो आज सबके सामने रख दिया है आज तक सबने न तो ऐसी विधि की होगी न सुनी होगी।"

(नोट–यह विधि रसायनसार में भी लिखी है–लेखक)

"अब आपको गिलास, कटोरा, गुटिका, वनाने के लिये सब से प्रथम पारद को वद्ध करना चाहिये अतः उसकी सरल विधि इस प्रकार है–पारा आधसेर, नीलाथोथा, तूतिया आधसेर, लाहौरी नमक (सेंधानोन) अर्धसेर, इनको जुदा २ बारीक कूट कर आपस में मिलावे इस प्रकार पारे को लोहे की बड़ी कढ़ाई में डाले और उस पर नीले थोथे और लाहौरी नमक की परत जमावे उसके ऊपर एक पात्र औंधादे यह इस वास्ते है कि जल डालते समय तुत्थ तथा नमक पारे के ऊपर से हट न जावे फिर धीरे से कढ़ाई में पानी डाले, जो वर्तन कढ़ाई में रखा था हौले से निकाल ले तो पानी के अन्दर वह परत उसी प्रकार जमी रहती है, आग देने से फिर सारे पानी में घुल जाती है जल मन भर डालना चाहिये। यदि कढ़ाई छोटी हो तो पानी थोड़ा ही सही, फिर डाल देना। नीचे आग जला दें। जब सेर भर पानी रह जाय तो उतार लेवें और ठंडा होने पर उसे धो डालें। इसके धोने में समय बहुत लगता है। उतारने पर पारा कहीं दिखाई नहीं देता यों ही पत्थर मिट्टी सा प्रतीत होता है, ज्यों २ धोते जावें पारा शुद्ध चमकता हुआ निकल आता है जब तक पानी साफ न निकल आवे धोते जावें।



पं० महावीर प्रसाद जी मालवीय, वैद्य

धोने की विधि यह है—कि पानी को पारे में डालकर भली प्रकार मलें और नीचे ऊपर करें अथवा वट्टे से मलें जब पानी गदला हो जावे तो नितार कर और धालदें। जो कि नीला थोथा में तांबे का अंश होता है इस लिये जितना धोवें अच्छा है धोते २ पारा कुछ नरम हो जायगा परन्तु यदि फिर पानी में घन्टा भर पड़ा रहे तो

फिर कठोर हो जायगा यह पारे का मक्खन तैयार हुआ। जब पारे की चपलता जा चुकी तो अब गोली बनाने में क्या मुश्किल है उस मक्खन को पकड़ कर गोली बनाकर कठोर करने वाली खटाई में रखने से ग्रथि कठिन हो जायगी। वह पदार्थ जो ग्रथि को कठिन करता है नीचे लिखो जाता है तुलसो का पानी, नीबूकारस, आम्बचूर का पानी, आम्बचूर को पानी में भिगोकर रक्खे छान कर पानी निकाल ले, कांजी में पकाले, प्याज के पानी में, त्रिफला के पानी में।

याद रहे कि पारे को भली भांति निचोड़ के फिर निरे पानी में ही रखदे तो भी बहुत कठोर हो जाता है। निचोड़ने से पारा जो ग्रंथित होने से रह गया हो कपड़े में से छन जाता है और कठोर हुआ पारा शेष रह जाता है यदि प्याला वा गिलास बनाना हो तो उसकी विधि यह है कि जो कुछ जिस आकार का बनाना हो उसी आकार का वह कुम्हार से बनवाले। परन्तु कच्चा हो ग्रन्थित हुये पारे को जो कि मक्खन की नाई होगा उसके अन्दर या बाहर लेप करदे। बस उसी आकार का पारा तैयार है। इसमें उपरोक्त कठिन करने वाली चाजों में से कुछ डालदे तीन दिन में कठोर हो जायगा तो उस सब को पानी में रख दे। यदि बहुत कठोर ही करना हो तो आम्बचूर के पानी में रख कर नीचे आग जला दे इसमें बाहर का मिट्टी का प्याला तो पिघल जायगा और अन्दर का पारे का प्याला, गिलास, वा गोली आदि शेष रह जायगी।

एक भेद की बात—कतिपय महाशयगण किसी से प्याला बना बनाया मंगवा लेते हैं अथवा कोई उनको दे जाता है वह यदि टूट जावे या उसमें छेद हो जावे तो बस फिर किसी काम का नहीं रहता। हम अपने पाठकों को एक भेद बताते हैं जमा हुआ पारा चाहे कितनाही कठोर हो यदि चीनी वा मिट्टी के प्याले में डालकर नरम नरम आग पर रख कर हिलाया जावे तो थोड़ी देर में मक्खन-वत् नरम हो जायगा जैसा कि पहले था। अब फिर जो बनाना चाहो फिर बनालो।

(हिन्दी देशोपकारक से उद्धृत)

गोली बनाने की विधि—

सिङ्गरफ से निकाला हुआ पारा नकछिकनी के रस में एक पहर खरल करके, नकछिकनी की लुगदी में उस पारे को बन्द कर, मिट्टी को पियाली के बीच रख, कपड़ोटी कर सुखा डाले और पांच सेर उपलों में फूंक दे। शीतल होने पर पारे को निकाल, तीन घड़ी नीबू के रस में डुबो रखने से गोली आदि बना सकते हैं। इसकी गोली एक घडी दूध में रख छोड़े फिर गोली निकाल कर दूध पी जावे इसी प्रकार तीन सप्ताह करने से बहुत उत्तेजना आती है।

"योग लेखक—बालकृष्णजी वर्मा—भूपाल"

इसकी परीक्षा करके रामानन्द जी वैद्य ने ता० १ जुलाई १९१४ के देशोपकारक में प्रकाशित किया कि मैंने गुटिका बनाने का उद्योग किया पर योग ठीक नहीं निकला।

इसके बाद योग लेखक बालकृष्ण जी वर्मा ने ता० १ फरवरी सन् १९१५ पृष्ठ २४-२५ पर बड़ी दृढ़ता और जोरों के साथ उत्तर दिया है कि योग ठीक है आपकी परीक्षा ही भ्रम पूर्ण हुई है।

या तो मेरे समीप पधारने का कष्ट उठाइये अथवा मुझे ही अपने पास बुलाइये तो उक्तवर्णित रीति से ही पारे की गोली बनाकर में आपको दिखा दूंगा। विफल होने पर सारा व्यय भार मुझ पर रहेगा।

नोट—यह प्रयोग मेरा अनुभव किया नहीं है देशोपकारक से उद्धृत कर दिया है पाठक अनुभव कर देखें।

सम्मति नं० ४१ ख—

जैतून, यह एक सदाबहार है वृक्ष जो अरब, शाम आदि प्रदेश से लेकर यूरोप के दक्षिणी भागों तक सर्वत्र पाया जाता है। जैतून शब्द अरबी भाषा का है और अंग्रेजी में इसको ओलिव (Olive) कहते हैं। हिन्दी मराठी नाम प्रसिद्ध नहीं है। इस वृक्ष की ऊंचाई अधिक से अधिक ४० फुट तक होती है। इसका आकार ऊपर गोलाई लिये होता है और पत्तियां नरकट की पत्तियों से मिलती जुलती पर उनसे छोटी छोटी होती हैं। वे ऊपर की ओर हरी और नीचे की ओर कुछ सफेदी लिये होती हैं। फूल छोटे २ और गुच्छों में लगते हैं। फूल कचरी से होते हैं। इसके कच्चे फलों का अचार और मुरब्बा बनता है। फल पकने पर नीलापन लिये काले होते हैं और उनके बीजों से तेल निकलता है, यही जैतून का तेल है जो अरब आदि प्रदेशों से भारत में आता है तथा औषधि कर्म में व्यवहृत होता है पश्चिम की प्राचीन जातियां इस वृक्ष को पवित्र मानती थीं। रोमन और यूनानी विजेता इसकी पत्तियों की माला शिर पर धारण करते थे। अरब वाले भी इस वृक्ष को बहुत पवित्र मानते थे जिससे मुसलमान लोग अब तक इसकी लकड़ी की तसबीह (माला) बनाते हैं।

सम्मति नं० ४७—

अभ्रकभस्म शतपुटित, असगन्ध, आंवला, कमल केशर, कालीमिर्च, कुटमीठा, कंवांच के बीज, केशर मसली, खस, छोटीइलायची के दाने, जायफल, तेजपात, धान का लावा, नागकेशर, पीपर, वगभस्म, बड़ागोखरू, बिदारीकंद, भसींड़ महुवा का पुष्प, मुनक्का, मुलहठी, मूंगाभस्म, रससिन्दूर, रेणुका, लाल चन्दन, लोहभस्म, शतावरि, शीतलचीनी, शुद्ध कपूर, शुद्ध मोती, श्वेतचन्दन, श्वेतमुसली, सुगन्ध वाला, सेमर का मुसला, सोंठ और स्याह मुसली, एक एक तोला, गुर्च का सत्त्व ६ तोला, सोने के वर्क ११ ताव, चांदी के वर्क २५ ताव, समस्त औषधियों का कपड़छन चूर्ण करके भस्म तथा वर्क डाल अच्छी तरह खरल कर एक जीव करके बोतल में रखलें। मात्रा २ माशे से ३ माशे पर्यन्त घी-मधु के साथ थोड़ी मिश्री मिलाकर दिन में दो वा तीन बार चटावें।

पथ्य—मूंग की दाल, जौ वा गेहूं की रोटी, लौकी परवर का शाक, शुद्धजल, और पीपर, मुनक्का, डालकर पकाया हुआ गाय का दूध पिलावें तो एक मास में आरोग्यता प्राप्त होगी।

अनुभूत है।

सम्मति नं० ४८—

रोगी को मन्यास्तम्भ है। सजाक तो था

ही किन्तु गुप्तेन्द्री के ऊपर कभी कभी घाव होना उपदंश के लक्षण हैं। अधिक समय से रोग ग्रस्त होने के कारण व्याधि कष्ट साध्य होगयी है, फिर भी निम्न प्रयोगों का व्यवहार करने से बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो सकती है।

केशर असली ६ माशे, अफीम ६ माशे, कालीमिर्च, पीपर, रतनजोत, रासना, सोंठ, और हल्दी एक एक तोला, कूट, गुर्च, जायफल, जावित्री, तेजपात, मेउड़ी, (संभालू) की पत्ती, लवंग और सिंगिया दो दो तोले, धत्तूर के बीज, और हरमल तीन तीन तोले, मालकांगनी ४ तोले भिलावां और मदार के पत्तों का स्वरस पांच २ तोले. गौ मूत्र दो सेर और काले तिल का तेल ४ सेर, सम्पूर्ण औषधियों को महीन कूट कर गौ मूत्र के साथ सिल पर पीस कल्क बनाले, फिर कल्क, स्वरस और तेल आदि कड़ाही में डाल- मन्द आंच से पचावे और सिद्ध हो जाने पर नीचे उतार छान लें। इसी तेल का सर्वाङ्ग में मर्दन करके पीछे चोबचीनी का स्वेद देवें (दो तोले चोबचीनी कूटकर डेढ़ सेर पानी में पात्र का मुख बन्द करके पकावें और खूब भाफ इकट्ठी हो जाने पर रोगी को बेन से बिनी हुई कुरसी अथवा बिना बिस्तर की खाट पर बिठा कर शरीर बड़े कम्बल से इस प्रकार ढांक रक्खें कि कुरसी चार पाई भी ढकी रहे जिससे भाफ बाहर न निकलने पावे किन्तु मुख-नासिका खुली रहनी चाहिये) स्वेद की क्रिया बन्द मकान में करें और शीतलवायु से आधी घड़ी तक बचावें। गरदन पर बड़ के पत्ते कडुतेल चुपडे हुए गरम करके बांध दें, एक घड़ी के बाद खोल दिया करें।

पथ्य—गेहूं चना के आटे की रोटी और पकाया दूध घी के साथ खावें। नमक, खटाई, तेल, लालमिर्च, शाक, स्त्रीप्रसंग, आदि से बचे रहें। इसी प्रकार ८० दिन नियमपूर्वक उपचार करने से वात-व्याधि नष्ट होगी और रक्तदोष, नपुंसकता आदि विकार निर्मूल हो जायगे। शरीर में कान्ति और बल वीर्य की अतिशय वृद्धि होगी। इस रसायन के सेवन से अपरिमित लाभ होता है।

सम्मति नं० ४९—

प्रथम उस महिला के ज्वर दूर करने का उपचार करना चाहिये। जब ज्वर मुक्त होकर निर्बलता जाती रहे, और शरीर में पर्याप्तरक्त- वृद्धि होने पर भी ऋतुधर्म न प्रकट हो तब उसके लिये प्रयत्न करना उपयुक्त हो सकता है। अभ्रकभस्म शतपुटित और शुद्ध शृङ्गिक विष छै छै माशे, गुर्च का सत्व, छोटी इलायची का दाना, और गोदुग्ध में शोधी हुई छोटी पीपर डेढ २ तोला, सबका महीन चूर्ण कर नीबू के रस से एक प्रहर घोंट दो दो रत्ती की गोली बनालें। घंटे घन्टे के अन्तर से ज्वर आने के पहले तीन बार एक एक गोली गुर्च के अर्क के साथ सेवन करावें और शरीर पर दश ग्यारह बजे दिन में एक बार हिमसागर तेल का मर्दन करें तो निस्सन्देह ज्वर छूट जायगा।

सम्मति नं० ५०—

रोग दुस्साध्य है आध्मान, प्रत्याध्मान, वातष्ठीला, और तूनी आदि संयुक्त वातव्याधियों का प्रकोप है यही व्याधि हमारे एक सम्बन्धी

फो हो गयी थी और इक्कीस वर्ष तक बनी रही डेढ़ वर्ष में प्रायः वेग आता था और वह महीनों बना रहता था। आयुर्वेदीय और डाक्टरी बहुत सी औषधियों का प्रयोग हुआ पर किसी से कुछ लाभ नहीं। अन्त में एक वैद्यराज ने वमन-विरेचन कराकर समीर गज केशरी का सेवन कराना आरम्भ किया और शरीर पर महा- नारायण तेल का एक मास पर्यन्त मर्दन कराया जिससे रोगी सर्वथा स्वस्थ होगया, परन्तु समीर-गज-केशरी का एक वर्ष तक गरम जल के साथ सेवन कराया गया था। इस औषधि सेवन के अनन्तर बीस वर्ष वह मनुष्य जीवित रहा किन्तु पुनः रोग का आक्रमण कभी नहीं हुआ।

सम्मति नं० ५१—

महाशय! आप धन्वन्तरि प्रेस में छपी हुई "कामिनीकर्णधार" पुस्तक के पृष्ठ ३० से ४८ पर्यन्त विषयों को ध्यानसे अवलोकन कीजिये तो आपके प्रश्नों का यथोचित समाधान हो सकता है और उसमें वन्ध्यत्व नाशक अनेकों अनुभूत योग मिलेंगे जिससे अभीष्ट सिद्ध होने में सन्देह नहीं है।

सम्मति नं० ५२—

बकरा, भेड़ा, तथा शूकर के बच्चों आदि की ऐसे समय में हत्या करना अन्धविश्वास और मूर्खता से खाली नहीं है। इससे हानि के सिवा कदापि किसी प्रकार का लाभ नहीं हो सकता। परन्तु जहां कहीं यह जन-विध्वन्स-कारी रोग फूट पड़ता है वहां की अधिकांश अशिक्षित जनता और कुछ कच्ची बुद्धिवाले पढ़े लिखे मनुष्य भी मिथ्याडम्बरों का सहारा लेने को दौड़ पड़ते हैं। उनके कृत्यों से ऊबना अथवा रोष प्रकट करना व्यर्थ है। चतुर चिकित्सक को सावधानी के साथ अनुभूत चिकित्सा द्वारा निःस्वार्थभाव से गरीब रोगियों का सहानुभूति पूर्वक उपचार करना चाहिये, यदि चिकित्सक को अपने उद्योग में काफी सफलता प्राप्त होगी तो झूठे ढकोसले आप ही आप शान्त होते दिखाई पड़ेंगे।

—श्री० महावीर प्रसाद जी मालवीय वैद्य "वीर"

सम्मति नं० ५३—

प० राजेश्वरी जी, आप निम्न लिखित औषधि सेवन करें, कम से कम ७ दिन में पूर्ण फल मिलेगा। योग मेरा ५—६ बार का अनुभूत है। हिंगु, शुंठी का भय नहीं कम मात्रा से आरम्भ कर क्रमशः बढ़ाना। अर्श ग्रहणी, मन्दाग्नि, अम्ल० पित्त सब थोड़े समय में नष्ट हो जायगा।

पथ्य—हलका और मट्ठा उत्तम लें, हिंगाष्टक चूर्ण २ भाग, शुद्ध आवला सार गन्धक १ भाग खरल कर कागदी नीबू के रस में ३ घन्टा भिजाये रहें बाद खरल कर छाया में सुखा कर शीशी में रख ले।

अनुपान–गरम जल या शीतल ताजा जल

समय–प्रातः साय।

मात्रा–१॥ रत्ती से ८ रत्ती तक।

अर्क में करील मूल का पाताल यन्त्र द्वारा अर्क निकाल कर उसी अर्क में रुई भिगो कर दिन में ४-५ बार अर्श पर रखें निश्चय ७ दिन में समूल

नष्ट होगा। गुणागुण धन्वन्तरि में छपा दें।

—वैद्य यमुना प्रसाद कांदू।

सम्मति नं० ४१ —

क—पारदकी गोली तूतियासे बनानेकी विधि-हम प्रकाशित कर सके हैं यदि प्रश्न कर्ता सज्जन ५) रु० हमें और ५) धन्वन्तरि को भेट करने का निश्चय लिखें धन्वन्तरि को मनिआर्डर द्वारा भेजदें हम विधि वी० पी० द्वारा भेजदेंगे। विधि—बहुत ही सरल और उपयोगी होगी।

—आयुर्वेद विशारद प० दाऊदयालु शास्त्री।

सम्मति नं० ४७ —

आप रोगी को सुबह-शाम पुट-पक्व "विषम ज्वरांतक लोह" १–१ गोली खिला कर २–२ तोला "अर्क सुदर्शन" ३ वार का निकाला हुआ पिलावें, और भोजन के बाद १ तोला से २ तोला तक "द्राक्षासव" में १॥ माशा "यवक्षार" मिला कर पिलावें, रात्रि को सोते समय १ तोला "च्यवन प्राश अवलेह" गो दूध के साथ सेवन करावें, इन प्रयोगो से ज्वर, प्रतिश्याय आदि नष्ट होंगे और यकृत की क्रिया भी ठीक हागी यह औषधियां उपरोक्त विकारों में अनेक बार लाभदायक सिद्ध हो चुकी हैं। कम से कम १ मास तक इन का सेवन कराना चाहिये और प्राप्त फल अवश्य सूचित करना चाहिये।

—आ० वि० आ० प० दाऊदयाल शास्त्री।

सम्मति नं० ५१ —

आप रोगिणी के लिये सुबह-शाम, "अशोकारिष्ट" १–१ तोला पिलाइये। और मासिक धर्म के समय पीड़ा होने पर "सोमनाथी ताम्र भस्म" १—रत्ती को ॥ सेर गाय के दूध और २ तोला गाय का घी मे खुब मिला कर पिलाइये। "अशोकारिष्ट" कम से कम १ मास सेवन कराइये और "सोमनाथी ताम्र भस्म" मासिक धर्म के प्रारम्भ दिवस से अन्त तक दीजिये। यह कई बार का अनुभूत योग है। प्रयोग करने के बाद जो फल हो सूचना करें।

—पं० दाऊदयालु शास्त्री।

सम्मति नं० ४६ —

आपने रोग का पूरा लक्षण नहीं लिखा है। सिर्फ ऊपरी लक्षण लिख देनेसे ही रोग का निर्णय होना असम्भव है।

इसे विषम ज्वर हो गया है ज्यादा दिन ज्वर रहने पर क्षय रोग का होजाना कठिन न होगा इस हेतु ज्वर आने के पूर्व विषम ज्वरातक लोह १ गोली, पीपरि, लौंग, सेंधानमक के अनुपान से दीजिये। प्रातः सायं स्वर्ण मालती वसंत गुरुच के स्वरस में अथवा शहद से चटा कर कुछ समय अशोक घृत का सेवन कराइये। या यशद भस्म दीजिये। भोजनोपरांत अजीर्णघ्न चूर्ण खिलाइये।

—डा० प्यारेलाल गुप्त रस-शास्त्री।

सम्मति नं० ५१—

इसकी डिम्बग्रन्थिमें प्रदाह पैदा होगया है इस लिये प्रातः साय अशोक घृत ६—६ माशा, भोजनोपरांत शङ्ख वटी, दर्द के स्थान में कपूर १ तोला अजवाइन का सत ६ माशा, पिपरमिंट का सत, शुद्ध तारपीन तैल ५ तोला में मिला कर लगायें।

—डा० प्यारेलाल गुप्त रस-शास्त्री।

सम्मति नं० ५३—

हताश होने की कोई बात नहीं, जहां पर मूर्खलोग बसते हैं, अक्सर वहां अपना मन माना काम किया करते हैं, उन के साथ पंडित लोग भी अपना स्वार्थ निकालने के लिये हांमेंहां मिलादेते हैं।

इसके लिये विद्वज्जनों को अपनी ओर आकर्षित करके दुर्गा जी का पाठ और हवन करना चाहिये। अच्छा (शुभ) कार्य के करते हुए, कई एक कठिनाइयां उपस्थित होती हैं, परन्तु इन सबो की तरफ ध्यान न देकर शांति पूर्वक धैर्य से करना चाहिये।

—डा० प्यारेलाल गुप्त रस-शास्त्री।

सम्मति नं० ५८—

ऐलेक्ट्रो होमोपैथिक कालिजों की डायरेक्टरी अभी तक कोई नहीं प्रकाशित हुई है।

—डा० रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी।

सम्मति नं० ५५—

सम्मदा यह शब्द गुर्जर प्रान्त का सा जान पड़ता है हिन्दी में इसे "बन गोभी" कहते हैं, यह जड़ी वर्षा ऋतु में बहुतायत से खेतों में मिलती है यह पृथ्वी पर फैलती है हरे रङ्ग की लम्बी पत्ती होती हैं दूध निकलता है, हवा लगने पर पीला पड़ जाता है। फूल भी पीले होते हैं :—

अस्तु इस का कल्क पूर्वोक्त औषधियों के सङ्ग कामला वायु को जीतता है। तथा भृङ्गराज का स्वरस शिर में मलने से कामला नष्ट होता है।

—डा० रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी।

सम्मति नं० ५२—

जो कुछ कहते हैं करने दीजिये परन्तु उन से कहिये कि निम्नांकित बातें और बढ़ादें अवश्य लाभ होगा।

१—मकान तथा वस्त्र की स्वच्छता पर पूर्ण ध्यान रहे।

२—सायं प्रातः खुले मैदान में लोग टहलने जावे रात्रि को साफ हवा में सोवें।

३—सुगन्धित पदार्थों से हर मकान में थोड़ा बहुत हवन होता रहे।

४—अजीर्ण में भोजन न करें।

५—निर्भय रहें डरें नहीं।

६—सजीवनी वटी या अग्निकुमार रसायन अजीर्ण कटक रस सदैव निरोग दशा में सेवन करते रहें।

७—बीमार होने पर अर्क कपूर तथा लशुनादि वटी का सेवन करें और जब तक चित्त स्वस्थ न हो जाय अन्न जल का परित्याग करें। आवश्यकता होने पर थोड़ा गुलाब जल पियें।

—डा० रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी।



पञ्जाब प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन—

तारीख ४।५।२६ को पजाब प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन रावलपिंडी में श्रीमान् प० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य-भूषण अमृतधारी लाहौरके सभा पतित्व में बड़े समारोहके साथ समाप्त हुआ-सभा पति महोदय का भाषण बड़े मार्के का था । उस में अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया था, पर हम उसे स्थानाभाव से नही प्रकाशित कर सके। जिन पाठकों को पढ़ने की इच्छा हो उक्त सभापति महोदय से मगा कर पढ़ने की कृपा करें।

आरोग्यदर्पण मुफ्त में—

आरोग्य और वैद्यक विषय का त्रैमासिक पत्र आरोग्यदर्पण-सार्वजनिक लायब्रेरी और धर्मार्थ औषधालयों को शीघ्र ही मगाने से मुफ्त मिलेगा।

पता—मैनेजर आरोग्य दर्पण
रीचीरोड अहमदाबाद।

धर्मार्थ औषधालय—

सवाई माधोपुर में औषधि भन्डार नामक १ धर्मार्थ औषधालय है और उस के सचालक बड़े योग्य वैद्य है उन्होंने अनेक कष्ट साध्य रोगी रोग मुक्त किये हैं अतः मैं २००) उनकी सहायता के लिये देता हूं। और सर्व साधारण से अनुरोध करता हूं कि वह इस से लाभ उठावें। बाहर के रोगी सिर्फ पोस्ट व्यय दे औषधियां मगा आरोग्य लाभ प्राप्त करें।

नगर श्रेष्ठ कुवर श्यामलाल जैन रईस।

शोक समाचार—

आयुर्वेद के प्रचारक, चिकित्सा शास्त्र के मर्मज्ञ, दीनों के रक्षक, आयुर्वेदीय पत्रों के सहायक, ववियाला-अम्बाला निवासी श्रीमान् पं० परशुराम जी शास्त्री का असमय स्वर्गवास हो गया ।

भगवान धन्वन्तरि से प्रार्थना है, कि वे उन की आत्मा को शान्ति प्रदान करें, और कौटुम्बियों को धैर्य्य ।

उत्फुल्लिका—

इस रोग से अनेक शिशु अकाल में भी काल कवलित होते देख हम ने उत्फुल्लिका (नेनुआ-डिब्बा) रोग की औषधियां बिना मूल्य बांटनेकी योजना की है, जिन्हें आवश्यकता हो ≈) की टिकट भेज मगालें ।

पता—वैद्य भगवती प्रसाद शुक्ल
डि० बो० औ० मलकपुर-डिलारी ।

प्रोफ़ेसर—

हरदुआगंज निवासी श्रीमान् वैद्यराज प० हरिशङ्कर जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य्य, हरद्वार ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालिज में सीनियर प्रोफेसर नियुक्त हुए हैं । बधाई ।

नाशिक वैद्य-सम्मेलन—

अखिल भारत वर्षीय वैद्य सम्मेलन का १८ वां वार्षिक अधिवेशन श्रीमान् वैद्यराज-कैप्टेन जी० श्री निवास मूर्ति महोदय बी. ए. बी एल.एम. बी. सी. एम. के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ समाप्त



* ॥ स्वर्गीय प० परशुराम जी शास्त्री ॥ *

हो गया सम्मेलन में और प्रदर्शनी में अब की बार कई विशेषतायें थीं पूरा विवरण आगामी अङ्क में प्रकाशित करेंगे।

सिन्धु प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन—

सिन्धु प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन का प्रथम वार्षिकोत्सव-हैदराबाद में श्रीमान् प० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्यभूषण अमृतधारा लाहौर के सभापतित्व में बड़े समारोह पूर्वक हो गया। स्थानाभाव से सम्मेलन सम्बन्धी पूरे२ समाचार नहीं दे सके पाठक क्षमा प्रदान करें।

धर्मार्थ औषधालय—

जावरा स्टेट (मालवा) के माननीय नवाब साहिबने जावरा स्टेट में यूनानी और अंग्रेजी हॉस्पीटल होते हुए भी प्रजा की इच्छा और उसकी भलाई के लिये एक आयुर्वेदिक औषधालय भी स्थापित कर दिया है और उसमें श्रीमान् प० स्वामिदत्त जी शर्मा राजवैद्य नियुक्त हुए है। हम माननीय नवाब साहब को धन्यवाद देते है जिन्होंने प्रजाहित और आयुर्वेद के प्रचार के लिये उक्त औषधालय खोल आयुर्वेद के साथ न्याय किया है।

वैद्य सम्मेलन—

गुजरात-कच्छ-कठियावाड़ वैद्य सम्मेलन का चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन बड़ोदा में श्रीमान् वैद्यराज लक्ष्मीशङ्कर नरोत्तम जी भट्ट भावनगर निवासी के सभापतित्व में सफलतापूर्वक होगया, अनेक प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

रौप्य पदक—

डा० के० सी० गोहिल० एल० एम० एस० एच० एन्ड० एल० एम० ई०(सिद्ध रसायनशास्त्री) ने कविराज प० हरिवल्लभ जी सिलाकारी आयुर्वेद रत्न को इस वर्ष प्रमाणपत्र सहित रजत पदक प्रदान किया है। बधाई।

—अध्यापक-पं० सीताराम वैद्य

वैद्य की आवश्यकता—

जावरा स्टेट के औषधालय में १ वैद्य की आवश्यकता है, जो जाना चाहें उन्हें प० स्वामीदत्त जी राजवैद्य जावरा स्टेट सी० आई० (मालवा) से पत्र व्यवहार करना चाहिये।

वैद्य की आवश्यकता—

एक ऐसे हिन्दू चिकित्सका की आवश्यकता है जो आयुर्वेद शास्त्र की ज्ञाता हो तथा स्त्रियों की चिकित्सा में निपुण हो। प्रसूत, प्रदर, योनि-रोग आदि की चिकित्सा कर सकती हो तो अपने प्रमाण पत्र आदि भेज वेतन निम्न पते पर ते करलें।

—मैनेजर-श्री परमार्थ औषधालय, नसीराबाद।

सूचना—यह प्रकाशित करते हर्ष है कि हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद कालेज सम्बन्धी सर सुन्दरलाल आयुर्वेद अस्पताल में गरीब और अमीर रोगियों को रख कर चिकित्सा करने की पूर्ण व्यवस्था हो गई है गरीब रोगियों को औषधि भोजन, वस्त्र आदि भी धर्मार्थ दिया जाता है। देश में इस प्रकार की एक मात्र यही संस्था है, काशी

और गङ्गा का पुण्यलाभ और देशी चिकित्सा का पूज्य मालवीय जी महाराज के शब्दों में धर्म और स्वास्थ्य लाभ, 'धर्म रहे अरु धन बचे रोग समूल नशाय, एते लाभ उठाइये, देशी औषधि खाय।

पत्र व्यवहार का पता—

सुपरिन्टेन्डेन्ट कविराजप्रतापसिंह
रसायनाचार्य,

आयुर्वेद औषधालय

काशीविश्वविद्यालय।

शङ्का समाधान—(१)

धन्वन्तरि वर्ष ५ अङ्क ७-८ पृष्ठ ३३० सम्मति नं० ३६ ग में मदन मञ्जरी गुटिका जुल्हाई मिश्र वैद्य लिखित देखी। इस में पारद डालना लिखा है। पारद खिलाने से पारद का दोष होगा या नहीं? बिना गन्धक के पारद नहीं खिलाया जाता। उक्त योग में गन्धक का नामो निशान नहीं है, चूँकि बिना गन्धक के पारद औषधि में नहीं मिलाया जाता, आपने जो मदन-मञ्जरी-गुटिका लिखा है। क्या वह आप का अनुभूत है। या उसे आपने किसी पुस्तक से उल्था कर भेजा है?

यों तो इस संसार में उल्था कर प्रकाशित करनेवाले लोग बहुत से हैं। पर कमी है अनुभव द्वारा जांच कर प्रकाशित करने वालों की। यह योग " योग तरंगिणि " का है ऐसा आप लिखते हैं पर बात यह नहीं है। आपकी यह योगतरङ्गिणि किस प्रेस की है? कृपया उस का पाठ लिखें, साथ ही आपने औषधि की मात्रा ५ टङ्क लिखी है। क्या आपने किसी भी रोगी को उक्तमात्रा में गुटिका दी है?

मैं आयुर्वेद का अभी अध्ययन कर रहा हूं, मुझे इस में भ्रम हुआ है। कृपया लेखक महोदय तथा वैद्य—गण मेरे इस भ्रम को दूर करने की कृपा करें।

भवदीय——

एक आयुर्वेद का विद्यार्थी "केशव"

आयुर्वेद महामण्डल, विद्या पीठ के
मन्त्री महोदय जवाबदें।

नियमानुसार मैंने दो भिषक परीक्षित्सु छात्रों का आवेदन पत्र मय ६) रु० फीस के भेजा। परन्तु वह स्वीकृत नहीं किया गया।

१—यहां से कार्य बाहुल्य के कारण १५—२-२६ को दो आवेदन पत्र और फीस ६) रु०भेजा गया। नियमानुसार १५ को यहां से तो भेज दिया ही गया। उसे स्वीकृत कर लेना चाहिये था। अक्सर कई बार अन्तिम तिथि को गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस को भी व्याकरण परीक्षा के आवेदन पत्र भेजे गये और स्वीकृत हो गये। क्या आप को ऐसा करना उचित है।

२—अस्तु! यदि १५-२ के बाद रुपया पहुंचा और स्वीकृत नहीं करना था तो मनिआर्डर का रुपया क्यों लिया गया? वापस क्यों नहीं कर दिया?

यदि लेने में भूल मानी जाय, तो फिर २३-२-२६ को, प० रामेश्वर मिश्र वैद्यशास्त्री के हस्ताक्षर से भिषक् परीक्षा के लिये ६) रु० स्वीकृत मज़मून की रसीद क्यों भेजी गई? उस रसीद को देख कर कोई नहीं कहसकता कि आवेदन-पत्र स्वीकृत नहीं हुए।

३—ता० ८-३-२८ को पं० किशोरी दत्त शास्त्री जी का पत्र आया। जिस में लिखा था कि परीक्षाय ११ मार्च को होगी। विद्यार्थी शीघ्र भेज दें। गयादीन और राधावल्लभ के समय के अन्दर रु० न पहुंचने से आवेदन-पत्र स्वीकृत न हुए।

मेरे दो ही छात्र तो परीक्षार्थी थे फिर किसे भेजने के लिये लिख रहे हैं? इस में दो ही बातें हो सकती हैं। (१) कार्यालय के रजिस्टर की ठीक देख भाल न करना। (२) पत्र लिखने में असावधानता।

४—इतने दिनों तक आवेदन पत्र की अस्वीकृति की बात क्यों छिपा रक्खी गई? तुरन्त मुझे इसकी सूचना क्यों न दी गई?

५—विद्यापीठ कार्यालय से आये हुये छपे पत्र में परीक्षा तिथि १२ मार्च दर्ज थी। बाद आये हुए "सुधानिधि-पत्र" में मन्त्री महोदय के नाम से परीक्षा तिथि १४ मार्च लिखा हुआ था प्राय. परिवर्तित नये नियम को लोग साप्ताहिक या मासिक पत्र में प्रकाशित कर देते हैं और उसी आधार पर विश्वास भी किया जाता है। यह चाल है।

यदि ११ मार्च को ही परीक्षायें होने को थीं तो सुधानिधि में १४ मार्च क्यों प्रकाशित कराया गया?

ऐसा तो हो नहीं सकता कि मन्त्री महोदय के पत्र के पाये बिना ही सम्पादक महोदय ने अपने मन से सुधानिधि में १४ मार्च लिख दिया हो।

६—छात्रों का हर्जाना कौन देगा?

७—ता० २३-२-२८ का भेजा हुआ ५३३ नम्बरी जो स्वीकृति पत्र आया है, उस में साफ लिखा है कि सन् २८ की भिषक् परीक्षा का शुल्क ६) रु० धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत किया जाता है। कारण नहीं जान पड़ता कि फिर क्यों अस्वीकृत होने की सूचना मुझे दी गई। ऐसी अव्यवस्था क्यों?

—हरिनारायण शर्मा वैद्य प्रधानाध्यापक

श्री एन्. मेहता संस्कृत विद्यालय

प्रतापगढ़ (अवध)

तथा—आयुर्वेद महामन्डल के सदस्य।

प्रयोगांक और अनुभूत प्रयोग

धन्वन्तरि का सम्पादन करते हुए हमें पांच वर्ष पूर्ण हुए पर हम अपनी अयोग्यता और अनुभव हीनता से धन्वन्तरि को स्थाई रूप न दे सके और इसे छोटी ही अवस्था में मृत्यु की गोद सोंपने को मजबूर हुए इसका हमें बड़ा शोक है।

हमें धन्वन्तरि कार्यालय के बढ़े हुए कार्य्य को सम्भालने में बड़ा समय देना पड़ता है फिर हम अपने आराम की परवाह न कर जब समय मिला, दिन या रात्रि, इसका सम्पादन करते रहे और यह वैद्यक पत्रों में विशेष महत्वपूर्ण प्रकाशित हो, यह सर्वाङ्ग सपूर्ण प्रकाशित हो, यह सब वैद्यक पत्रों में सर्वश्रेष्ठ और मान्य हो, इसका क्षेत्र विशाल हो, यह आयुर्वेद का प्रचार कर देश का हित साधन करे ऐसे २ ही विचार करते रहे और उसका निरन्तर ४ वर्ष तक प्रयत्न करते रहे उसका फल यह हुआ कि जब यह प्रकाशित हुआ था तब अति छोटी और हीन अवस्था में था हमारे प्रयत्न और ग्राहकों एवं लेखकों की सहायता से इसका कलेवर मोटाताज़ा और सुन्दर होने लगा तथा चौथे वर्ष से इसका आकार भी बढ़गया बीच २ में विशेषाङ्क भी प्रकाशित हुए। इसको वैद्यों में आदर मान भी होने लगा लेकिन सच कहे बिना भी न रहा जायगा कि ग्राहकों को प्रसन्न करने और उनकी संख्या बढ़ाने को सामर्थ्य के बाहर कार्य किया और इसका नतीजा यह हुआ कि हमें बराबर धन-हानि उठानी पड़ी और इसे मृत्यु के गोदमें सोंपना पड़ा।

धन्वन्तरि के लिये सब कुछ करते हुए और ग्राहक पाठकों को सन्तुष्ट करते हुए भी हमारी मनोकामना पूरी न हुई। जिस शान शौकत ठाट—बाट से प्रकाशित करना चाहते थे वह न कर सके। विशेषाङ्क निकाल भी हमने उस अपने आदर्श को पाठकों के सामने रक्खा था हमारी इच्छा थी कि इसके प्रत्येक अङ्क मलावरोध विशेषाङ्क के समान प्रकाशित हों पर हमें ग्राहकों ने पूरी २ सहायता न दी और हम इस प्रयोगाङ्क को प्रकाशित कर धन्वन्तरि को बन्द करने के लिये लाचार हुए।

धन्वन्तरि ने जो भी प्रतिष्ठा और ख्याति प्राप्त की है उन सबका कारण हमारे मित्र और लेखक है जिन्होंने समय २ पर अपनी बहुमूल्य रचनायें और परामर्श दे इसके संपादन में हमें बड़ी सहायता पहुंचाई है, उन्हें हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं तथा उनके आभारी है साथही उनसे सानुरोध प्रार्थना करते है कि अपनी कृपा उसी भांति बनाए

रक्खें और धन्वन्तरि के स्थान पर आयुर्वेद समाचार को अपनावें। साथ ही उन ग्राहकों को भी धन्यवाद देते हैं जिन्होंने धन्वन्तरि के ग्राहक बना २ कर हमें उत्साहित किया है हम स्थानाभाव से उन श्रीमानो, के शुभ नाम प्रकाशित नहीं कर सके जिन्होंने अपनी २ शुभ सम्मतियां दे हमें धन्वन्तरि को उच्च बनाने में सहायता दी है और न हम अपने प्रिय लेखकों के ही शुभ नाम दे सके जो कि धन्वन्तरि के जन्म से ही अपनी रचनायें भेजते रहे है और न उन ग्राहकों का ही नाम दे सके है जिन्हों ने ग्राहक संख्या बढ़ा हमारी मदद की है पर हम उन सबके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते है। साथ ही अपने सहयोगियों को भी धन्यवाद देते हैं जिन्हों ने धन्वन्तरि की उत्तम समालोचना कर ग्राहक बढ़ाने और हमें उत्साहित करने के अतिरिक्त अपने अमूल्य पत्र परिवर्त्तन में देने की कृपा की है।

यह प्रयोगाङ्क जैसा हम प्रकाशित कर सके हैं ग्राहकों के सामने है यदि हमें ग्राहकों से दो दो ग्राहक भी बना देने की सहायता मिलती तो हम इसे और भी उत्तम प्रकाशित कर सकते रङ्गीन चित्र उत्तम कागज़ भी लगा सकते तथा और भी प्रसिद्ध २ वैद्यो के प्रयोग भी चित्र सहित देने का प्रयत्न करते फिर भी हमने अनेक प्रसिद्ध २ वैद्यो से अनुरोध किया और कुछो ने हमें प्रयोग चित्र दे कृतार्थ भी किया। साथ ही हमें खेद है कि जो प्रसिद्ध हैं जिन का कार्य सुचारू रूप से चलता है जो अनुभवी हैं जिन्हें जनता प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखती है वह इस तरफ ध्यान नहीं देते उन से बार २ प्रार्थना करने पर भी इधर ध्यान देना तो पृथक उत्तर देना भी मान हानि समझते है, जो इस आयुर्वेद के प्रताप से ही मोटे ताज़े और धनवान बने हुये है वह इस आयुर्वेद के प्रचार में कुछ भी सहायक नहीं होते यह देख उनकी प्रति हमारी और जनता की कैसी श्रद्धा आगे होगी पाठक विचार लें।

हमने इस प्रयोगाङ्क में जो प्रयोग प्रकाशित किये हैं उनमें अनेक प्रयोग बड़े महत्व पूर्ण है और अनेक साधारण भी, पाठक उन्हें अपने अनुभव पर रख कर तोलें और उनसे लाभ उठावें।

आज कल अनुभूत प्रयोगों की बड़ी मांग है और प्रत्येक वैद्यक पत्र में अनुभूत प्रयोग प्रकाशित होते हैं पर उनसे जैसा लाभ होना चाहिये वैसा नहीं होता इसके २ कारण है। एक कारण तो यह है कि अनेक नवीन वैद्य अपने नाम पते के छपने और प्रसिद्ध होने के लिये इधर उधर के अट सट प्रयोग लिख देते है। दूसरा कारण है कि उन अनुभूत प्रयोगों से काम लेने वाले उनका समुचित रूप से ज्ञान नहीं रखते। एक उत्तम शानदार तलवार भी विना अभ्यासी मनुष्य के हाथ से रण में अपना पूरा काम नहीं देती और एक तलवार चलाने वाले सिद्ध हस्त मनुष्य से बेकार पड़ी हुई

और शानरहित तलवार भी रण में अनेक मनुष्यों को मौत के घाट उतार देती है। इसही प्रकार उत्तम प्रयोग होने पर भी अयोग्य वैद्य के द्वारा प्रयुक्त होने पर वह अपना चमत्कारिक गुण न कर हानि कर बैठती है और अनुभव पूर्ण वैद्य उस ही प्रयोग का व्यवहार कर रोगी को मौत के मुख से खींच लाता है।

एक बार हमने अपनी आखो से देखा कि एक रोगी जिसे विशूचिका थी उसे एक वैद्य ने विशूचिका-विध्वन्स रस अधिक मात्रामें दे उसे शीघ्र ही मौत के घाट उतार दिया। जिस विशूचिका विध्वन्स रस से अनेक अनुभवी वैद्य रोगी के प्राण बचा कर कीर्ति-लाभ करते हैं उसही अनुपम औषधि से एक अनुभव हीन मनुष्य रोगी को मृत्यु के घाट उतार उस औषधि की और अपनी बदनामी प्रकट करता है अतः मैं पाठकों से प्रार्थना करता हूं कि वह प्रथम अपने अनुभव पर प्रयोग को तोल कर पश्चात् रोगी को दे जिससे आपकी कीर्ति फैले।

पाठकों और मित्रों के आग्रह से मैं उनकी आज्ञा को पालन करता हुआ पाठकों के मनोरंजनार्थ अपने कुछ प्रयोग जो अव्यर्थ हैं, निष्फल होने वाले नहीं हैं, प्रकाशित करता हूं।

प्रयोग नं० १—(१)

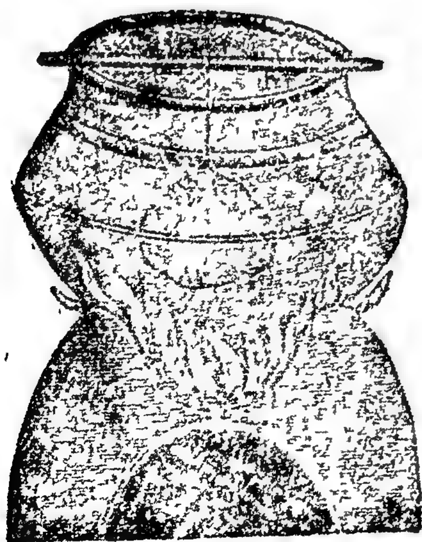
हरिताल गोदन्ती २० तोला, सीप (जिसे शुकला और कोई देशीसीप कहते है) २० तोला, सखिया सफेद ६० तोला, ग्वार पाठे को स्वरस ४ सेर। विधि— प्रथम हरिताल-गोदन्ती और सीप तथा सखिया इन तीनों की पोटली हलके कपड़ा में बांध १० सेर गोमूत्र को दोला यन्त्र में डाल उसमें पोटली लटका २ पहर की धीमी २ अग्नि दे, पश्चात पोटली निकाल कपडा से पोंछ साफ करलें उसके पश्चात एक मट्टी की हांडी लें उसमें गोदन्ती हरिताल सीप और २० तोला सखिया तथा १ सेर ग्वार पाठा डाल मुख बन्द कर गजपुट की अग्नि दे जब स्वांग शीतल होजाय तब निकाल एक खरल में डाल उसमें २० तोला सखिया तथा १ सेर ग्वार पाठे का रस डाल घोटें जब टिकिया बनने योग्य हो जाय तब टिकिया बना सुखा हांडी में बन्द कर पुनः गजपुट देदें इस प्रकार ४ अग्नि देने पश्चात खरल कर कपडा में छान शीशी में भरकर रखलें। यह "प्राकृत ज्वर हरिरस" बड़ा प्रभावशाली है।

गुण—मेलेरिया जिसको विषमज्वर अथवा प्राकृत ज्वर कहते हैं उसके लिये यह रस बड़ा ही प्रभावशाली है। जूडी इकतरा, तिजारी चौथय्या, सब के लिये कुनेन से भी अधिक लाभ कारक है जो वैद्य इन में से किसी ज्वर के लिये डाक्टरी औषधियां प्रयोग करते हैं उन्हें एक बार इसका अवश्य अनुभव करना चाहिये। मात्रा—आधीरत्ती से २ रत्ती तक, एक मात्रा प्रातः और,एक ज्वर के वेग होने से २ घन्टे पूर्व, तथा एक वेग के १ घन्टे पूर्व देनी चाहिये, ज्वर के वेग होने पर यह नहीं देनी चाहिये।

अनुपान—मिश्री में मिलाकर गुनगुने पानी से फाकना अथवा ग्वार पाठे के साथ गोली बना गुनगुने पानी के साथ निगल जाना या मधु में

मिलाकर चटाना। अनुभव—यह औषधि वात अथवा, कफ प्रकृति वाले रोगी को लाभकारक है जिनकी पित्त प्रकृति है जिन्हें ज्वर के वेग के समय वमन या दस्त होते हों उन्हें यह हानिकारक है तथा जो स्त्री गर्भवती हों उन्हें भी इसे नहीं देनी चाहिये तथा छोटे २ बालकों को चावलों की मात्रा दें साधारणतः बालकों को उग्र औषधि देना ही नहीं चाहिये जब साधारण से रोग नष्ट न हो तब उग्र औषधि अति स्वल्प मात्रा में देना।

दोला यन्त्र की विधि—एक बड़ी हांडी ले उसके पैंदे पर मट्टी का लेप कर सुखाले और उसके मुख पर १ लकड़ी रखदे और उस लकड़ी में, कपड़ा में औषधि की पोटली बांध लटका दें और हांडी में गौमूत्र भरदें। नीचे चित्र देते हैं उससे स्पष्ट समझ में आजावेगा।



* दोला यन्त्र *

प्रयोग नं० २—

सेंधा निमक, कन्जा के पत्ता, जीरा सफेद समान भाग। विधि—जीरे को प्रथम कपड़-छन अलग रखले उन के पश्चात् खरल में या सिल पर निमक और पत्ता डाल मर्दन करे जब खूब बारीक हो जाय तब जीरा भी मिला दे और १ पहर मर्दन कर झरबेरी के बराबर गोली बना छाया में सुखादे। मात्रा—एक वटी प्रातः और १ वटी ज्वर के वेग से ३ घन्टे या एक २ घन्टे पूर्व गुन गुने पानी के साथ सेवन करें। गुण—यह भी मैलेरिया ज्वर के लिये है। पर यह पित्त-प्रकृति वाले के लिये उत्तम है। जिस ज्वर जूड़ी के साथ वमन अथवा दस्त होते हों उस के लिये रामबाण है गर्भवती स्त्री जिसे २-४ महीने का गर्भ हो उसको भी दे सकते हैं हमारी हजारों बार की अनुभूत और अव्यर्थ है यह १-२ महीने की रक्खी हुई काम नहीं देती ताजी ही बना कर देने से विशेष गुण करती है।

प्रयोग नम्बर ३—

शुद्ध पारद १ तोला, स्वर्ण वर्क १ तोला, मोती ३ तोला, गधक शुद्ध ४ तोला, सुहागा१मा०

विधि— प्रथम मोती खरल में डाल गुलाबजल के साथ मर्दन करे जब खूब बारीक मेंदा के मुआफिक हो जाय तब उन्हें खुश्क करलें और निकाल कर चिकने कागज में रखलें पुनः उस खरल में स्वर्ण वर्क और पारद डालकर मर्दन करे जब स्वर्ण की चमक न रहे तब उसमें सुहागा और गधक डालकर मर्दन करे, जब वह चूर्ण हो

जाय तब उसमें कागज वाले मोती डालकर कचनार की छाल के स्वरस के साथ ३ दिन मर्दन कर टिकिया बनालें उस टिकिया को धूप में रखदें जब अच्छी प्रकार सूख जाय तब उसे २ सरवा मट्टी के ले उसमें बन्द कर सात कपरौटी मलमल के कपड़ा की मुलतानी मट्टी के साथ चढ़ा कर सुखादें अब अच्छी तरह सूख जाय तब १ लोह की छोटी नांद या पुराने ढङ्ग का लोह का डोल जिसमें पैंदा न हो पैंदे में गोल हो ले और उसके पैंदे पर मट्टी का लेप जौ बराबर करदे और सुखाले उसके बाद उस लोह के पात्र में आधे हिस्से में सामर निमक भरदे और उस सामर पर वह सरवा रखदे और ऊपर से पुनः निमक डाल पात्र को भरदें (इस यन्त्र का नाम " सामर यन्त्र" है) उसे मट्टी पर रख १६ घन्टे मन्दाग्नि दे और १६ घन्टे तेज (तीक्ष्ण) अग्नि दे और १६ घन्टे पुनः साधारण अग्नि दे, छोड़दें जब शीतल हो जाय तब उस सरवा के अन्दर से टिकिया निकालले यह सफेदी लिये गुलाबी रंग की स्वर्ण मोती की मिश्रित भस्म बहुत ही उत्तम मृगाङ्क पोटली-रस बन कर तैयार हो जायगी।

मात्रा—१ चावल से ४ चावल तक पूर्ण मात्रा ४ चावल है और एक दिन में २ मात्रा से अधिक नहीं देनी चाहिये।

गुण—किसही प्रकार से चाहें निर्बलता क्यों न उत्पन्न होगई हो इसके सेवन से अवश्य नष्ट हो जाती है। यक्ष्मा, ज्वर, संग्रहणी, रक्त पित्त, अर्श, आदि रोगों के साथ यदि निर्बलता हो तब यह निर्बलता को भी दूर करता है तथा रोग को भी न्यून करता है।

अनुपान—क्षय में सितोपलादि चूर्ण के साथ, ज्वर में ६४ पहरा पीपल अथवा गिलोइ के सत्व के साथ, संग्रहणी में भांग घुली और काली मिर्च के साथ, अर्श में त्रिफला के चूर्ण के साथ, खांसी श्वास में पीपल छोटी के साथ मिलाकर मधु के साथ चटाना चाहिये।

प्रयोग नं० ४—

मोती भस्म १) तोला, मकरध्वज १॥ तो० गंधक शुद्ध ६ माशा, सोंठ १ तोला, काली मिर्च १ तोला, पीपल छोटी १ तोला, पांचों निमक ५ तोला, अजमोद १ तोला, जीरे दोनों २ तोला, हींग उत्तम और भुनी ६ माशे, भांग घुली ६॥ तो०

विधि—मोती, मकरध्वज, गंधक, हींग छोड़ कर शेष औषधियां खरल में कूट कर कपड़ छन करलें और १ पत्थर के खरल में प्रथम मकरध्वज और ५ तोला गुलाब जल डालकर १ पहर मर्दन करें उसके बाद मोतीभस्म, गंधक, हींग डाल खरल करे जब चूर्ण हो जाय तब वह कपड़ छान चूर्ण भी इसमें मिलादे और निरन्तर ५-६ दिन घोटे (रात को बन्द रक्खें) और शीशी में भर कर रखलें यह ग्रहणीरिपु नामक रस है।

मात्रा—२ रत्ती से १ माशे तक। दिन में दो बार से अधिक न दे तथा गर्भवती स्त्री को भी न दे।

अनुपान—गौ का मठा (तक्र) पावभर में सेंधा निमक, कालीमिर्च, जीराभुना, अपनी रुचि के अनुसार मिलाले और ४ रत्ती चित्रक छाल कपड़छन कर मिलादे।

गुण—संग्रहणी, मन्दाग्नि, पुराना अतीसार, अमलपित्त, आदि रोगों में लाभदायक प्रयोग

है सैकड़ों ही नहीं हजारों कष्ट साध्य रोगी आरोग्य हुए हैं, दस्त होना, भूक लगना, पेट भारी होना, आदि अग्नि सम्बन्धी सबही विकार इससे नष्ट हो जाते हैं भूक लगने लगती है दस्त बन्धकर साफ होने लगता है। एक बार परीक्षा प्रार्थनीय है।

प्रयोग न० ५—

समुद्रलवण ८ तोला, साँभर नमक ५ तो० काला निमक. सेंधा निमक, धनिया, पीपलछोटी, पीपरामूल, काला जीरा, तेजपात, नागकेशर असली, तालीसपत्र असली, अमलवेंती यह प्रत्येक दो दो तोला मिर्च काली, जीरा सफेद भुना, सोंठ, यह एक एक तोला, अनारदाना ४ तोला, दालचीनी, इलायची छोटी छः छः माशे, विधि—सबको कपड़छन कर चूर्ण करलें यह लवण भास्कर चूर्ण है हम अपने निजके रोगियों को इस में ३ माशे भुनी हींग और ४ माशे सुहागे का फूला तथा ६ माशे धुली भांग और कपड़छन कर मिलवा देते हैं जिससे और भी लाभ प्रद हो जाता है मात्रा—डेढ़ माशे से ३ माशे पर्य्यन्त दिन में ३-४ वार तक देना चाहिये बालको को चार चार रत्ती देना। अनुपान—ताजा जल, गुनगुना जल या गौ के दूध का तक्र। गुण—मन्दाग्नि, स ग्रहणी, अतीसार, क्षुधानाश, अरुचि, अफरा, अमलपित्त को लाभदायक है।

प्रयोग न० ६—

पारद शुद्ध ४ तोला, गन्धक शुद्ध ४ तोला स्वर्ण भस्म १ तोला। विधि-प्रथम पारद, (हिंगुल का निकला) लेकर उसे शुद्ध करले (विधि शुद्ध करने की आगे लिखेंगे) उसके पश्चात् उसमें स्वर्णभस्म डाल खरल में दोपहर मर्दन करे और उसके बाद गन्धक डालकर ३ पहर मर्दन कर कज्जली कर रखले और गौ के गोबर को लेकर एक जगह रक्खे और केला के पत्ता भी अपने पास रखले तथा एक पात्र भी भारी सा रखले उसके बाद लोह के पात्र में बेर की लकड़ी की अग्नि से उस कज्जली को गरम करे जब कज्जली पिघल कर पतली होजाय तब उसे गोबर के ऊपर केला के पत्ता को रख उस पर उसे ढाल दे और ऊपर से फिर केला का पत्ता रख उसे किसी भारी पात्र से दबा दे। इस तरह पर्पटी बना अपने पास रखले जो कज्जली लोह के पात्र में रह जाय उसे फेंक दे।

मात्रा—४ चावल से ४ रत्ती पर्य्यन्त दिन में दो वार से अधिक न सेवन करावें। बालकों और गर्भवती स्त्री को भी न सेवन करावें

अनुपान—जीरा सफेद १ माशे चूर्ण कर उस में उक्त पर्पटी १ मात्रा मिला खरल में मर्दन कर, शहद माशे ६ में मिला कर सेवन करावे।

गुण—मन्दाग्नि, अतीसार, सग्रहणी, अम्ल-पित्त रोग के लिये परीक्षित और चमत्कारिक औषधि है।

पारद शोधन की विधि–ग्वार पाठे (घी-कुमार) का रस, त्रिफला का काथ चित्रक के पत्तों का रस, प्रत्येक के रस में सात २ बार हिङ्गुलोत्थ पारद को मूर्छित कर फिर अरनी के पत्तो का रस, अन्डी के पत्तो का रस, अदरख का रस, मकोय के पत्तों के रस में एक एक बार मर्दन कर पारद के साफ कर रखले इस ही पारद को डालें।

गन्धक शुद्धि की विधि—गन्धक आंवला सार को घी में गरम कर दूध में बुझादें, इस तरह ७ बार करने से गन्धक शुद्ध हो जाता है, फिर उसे भांगरे के रस में मर्दन कर रखलें। यही गन्धक इस पर्पटी के योग में काम में लावें।

संग्रहणी–हसने अतीसार, सग्रहणी, मन्दाग्नि, अमल–पित्त, क्षय, जीर्णज्वर, नासूर, श्वास कास, जलन्धर, वातव्याधि, उपदश, सुजाक, नपुंसकता प्रदर, प्रसूति, वन्ध्या आदि रोगों पर विशेष अनुभव किया है एक एक रोग के सैंकड़ों कष्ट साध्य रोगी जो अपने जीवन से निराश हो चुके थे। घरवाले तथा अनेक वैद्य डाक्टर, हकीम, जिन्हें असाध्य समझते थे, उन्हे निरोग कर धन यश प्राप्त किया है। आज हमने प्रिय ग्राहकों को विदाई के रूप में सग्रहणी नाशक ४ अलभ्य प्रयोग जिनसे हमने हजारों और यश प्राप्त कर अनेक रोगियों को रोग मुक्त किये हैं भेट करते हैं, और आशा करते हैं कि वैद्य जन इन का प्रयोग कर धन यश प्राप्त करेंगे।

अनुभव—हम इन चार प्रयोगों को उस अवस्था में व्यवहार करते हैं जब कि रोगी को पुराने दस्त हो, दस्त पतले या फूले उदरा के होते हो अथवा १०-११ दिन तो होतेहों और १–२ दिन को बन्द हो जाते हों, या १०–१२ दिन दो दो चार चार होते हों और २—१ रोज को दश पांच हो जाते हो जिसे दस्तों का दौड़ा कहते है दस्त के साथ आंव आती हो भूक न लगती हो पेट बोलता रहता हो शरीर दिन प्रति दिन निर्बल हो जाता हो अथवा खट्टी २ डकारें आती हों पेट में दर्द हो गले में जलन हो पेशाव में रस जाता हो, थूक अधिक आता हो आदि २ अग्नि सम्बन्धी कोई भी विकार हो तब भी यह औषधियां अपना अचूक फल देती हैं। सेवन क्रम निम्न प्रकार से रख कर दें।

सेवन विधि-

१–प्रात काल–मृगाङ्क पोटली रस चावल ४, भांग धुली रत्ती १, काली मिर्च रत्ती १, शहद माशे ६ में मिला कर चटावें।

२–प्रातः ६ या १० बजे–ग्रहणीरिपु रत्ती ४ अथवा ६ फंका ऊपर से गौ का तक्र (छाछ) पाव भर में सेंधा निमक भुना जीरा, काली मिर्च अपनी रुचि के अनुसार मिलावे और चित्रक छाल कपड़ छन कर २ रत्ती मिला पिलावे।

३–भोजन के बाद–भास्कर लवण माशे ३ जल के साथ फंकावे।

४–सायङ्काल ३ बजे–प्रातः के अनुसार मृगाङ्क-पोटली रस सेवन करावें।

५–सायङ्काल ४ बजे–प्रातः ८ बजे की भांति ग्रहणीरिपु सेवन करावे।

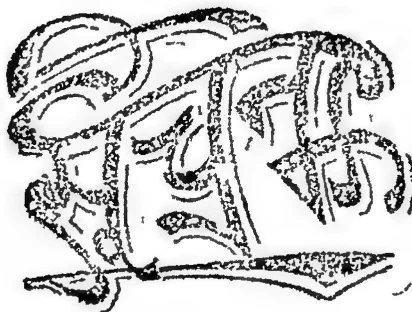
६–रात्रि को सोते समय—स्वर्णपर्पटी रत्ती १, जीरा सफेद चूर्ण कर १ माशे शहद ६ माशे, मिला कर चटाये।

इस प्रकार सेवन करावें। लाल मिर्च खटाई, तैल, दूध, खोवा (मावा) के पदार्थ, नहीं सेवन करावें। हलके और पाचन पथ्य खाने को दें, गेहूं की रोटी, दलिया, मूंग, मसूड़ की दाल, लोका, तोरई, परवल, मसूड़े बथुआ, सेंगरी, मूली की जड़ इन का शाक सेवन करावें। दाल भात भी दे सकते है।

नोट—यदि धन्वन्तरि प्रकाशित होना निश्चित रहा तब १ विशेषाङ्क संग्रहणी रोग पर प्रकाशित करेंगे और उस में संग्रहणी रोगमें केवल तक्र ही सेवन करा, अन्न जल बन्द करा, रोग को दूर करने की विधि तथा संग्रहणी रोग पर अब तक हमें जो अनुभव प्राप्त हुआ है, सब विस्तार पूर्वक लिखेंगे।

—सम्पादक।

आवश्यक—





मरणासन्न' और "प्रयोगाङ्क तथा अनुभूत-प्रयोग" शीर्षक पढ़ कर पाठकों को यह तो विदित हो ही गया होगा कि कैसी कैसी कठिनाइयों के कारण आपका धन्वन्तरि यह, वह दर्शन दे रहा है जो कदाचित इसकी अंतिम झांकी हो।

हम इसको इसी प्रकार का सर्वांग सुंदर निकालना चाहते हैं, और वर्षों से चाह रहे हैं, परन्तु जितने ग्राहक वर्त्तमान में हैं उन्हें देखते हुए-ऐसा होना हमारी सामर्थ्य से बाहर और असम्भव है। किसी दैवी प्रेरणा और आप सभी सज्जनों के प्रयत्न करने से- यदि प्रत्येक ग्राहक पीछे-२-२ ग्राहक भी और बढ़ जांय तो हम इसे इसी प्रकार सुन्दर निकाल सकते हैं और निकाल सकते हैं उस उच्च कोटि का जिसकी तुलना, संसार का कोई गिना चुना पत्र ही कर सके हम समय पर भी इतना नियमित निकाल सकते हैं कि ठीक उसी तारीख को आपके पास पहुंच जाया करे। परन्तु यह तभी जब कम से कम

तिगुने ग्राहक तो हों। वेतनादि पूरा न सही पर इसकी निजी लागत तो भली भांति आजाय। अभी तो जब आया हुआ मूल्य ५-६ अङ्कों में ही समाप्त होकर-आगे-अन्य विभागो द्वारा सहायता लेकर गाड़ी चलाते हैं, तब तो इसके मिलने पर ही–जैसा,तैसा अवेरी,सवेरी--निकालने में भी जोर२ कठिनाइयां आती है उसे विज्ञ पाठकवृन्द स्वय समझते है।

आयुर्वेदामृत-विधायक श्री भगवान धन्वन्तरि के पुण्यश्लोक नाम का प्रतिदिन ध्यान कराने वाला, अन्य अदूरदर्शी परन्तु वैचित्र्य रजित चिकित्साओं की ओर न ललचाकर, अदम्य उत्साह से उसी कल्याणकारी प्रणाली का पृष्ठ पोषण करने वाला- " धन्वन्तरि " का प्रकाशन, हमारे हृदय से सबधित होगया है। हमें वारम्वार मार्मिक वेदना होती है, जब हम इसके एकाकी अन्त का स्मरण करते है। हमारे प्रत्येक पाठक की भांति, हम इसे जीवित देखना चाहते है, और चाहते हैं इसे यथा सभव उन्नत रूप में देखना। परन्तु परमेश्वर की क्या इच्छा है, कुछ भी मालुम नहीं होती।

जब से इसके बद होने की आशका प्रगट हुई है-तब से निरन्तर हमारे अनेको उत्साही ग्राहकों ने बड़े २ मार्मिक पत्र लिखे है। उन्हें हम देखते है कि, हमसे भी अधिक दुःख होरहा है। कई तो यहां तक लिखते हैं कि हम २-३-४ग्राहक अवश्य ही बढ़ायेंगे-और न बढे तो हम स्वय दूना चन्दा देकर भी इस कोटि के इस पत्र का आते रहना चाहेंगे। ग्राहक बढ़ाने की लिखी है! एक ने तो ५०

हमारी मुरझाई हुई लालसा—इन शुभ सदेशों से पुनः हरी होकर, " उन्नत धन्वन्तरि का स्वप्न देखने लगती हैं।

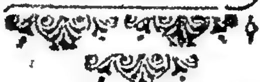
हमारे कुछ कृपालु ग्राहक ऐसे भी हैं जो कभी २ यहां तक लिख देते हैं कि यदि धन्वन्तरि इसी प्रकार देरी से आवे तो हम ग्राहक नहीं रहेंगे। बात भी वास्तव में ठीक है। यह त्रुटि हमारी असमर्थता के कारण सीमा को ही पहुंच चुकी है। हमारे उन कृपालु ग्राहकों को भी यद्यपि और कोई शिकायत नहीं, तथापि, " लेट " पहुंचने को भी वे सहन नहीं कर सकते, और हमभी यह देख दुःखी होते है कि किसी तनिक सी भी शिकायत के कारण हमारा कोई ग्राहक असतुष्ट है।

अतः हम बड़े असमंजस में पड़े हैं कि क्या करें, इस प्रकार जैसा-जैसा-और अवेरी सवेरी निकालने को तो अब हम किसी प्रकार तैयार नहीं। चाहे इसे वद करने को मजबूर होना पड़े। हां यदि पाठक चाहें, तो हम इसे फिर उसी शान शौकत और गभीरता पूर्ण उपयोगी उत्तम ढग से निकाल सकेंगे।

ग्राहक न बनने में जहां अन्य कारण रहे तहां इसका समय पर न निकलना भी प्रधान बाधा रही। इसी लिये अब हमने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि चाहे अधिक व्यय पड़े-और चाहे २ पृष्ठ कम रह जांय मगर ठीक समय से १ दिन पहिले ही अवश्य प्रकाशित होजाय यदि निकालेंगे, तो इसी तरह। अन्यथा नहीं

एक शंका यह भी उठती है कि इतना उचा बढ़ाते हुए जो मूल्य ४) है, उसको न दे सकने के कारण ही ग्राहक न बढ़ते हों। यद्यपि उपहार में ४) की अति उत्तम और उपयोगी पुस्तकें दे देने के बाद वह कुछ भी नहीं है, और फिर भी ऐसे पत्र के लिये जिसके विशेषांक ही ३-४, के हो जाते हैं। तथापि ४) रु० का नाम तो कुछ अधिक है ही। यही सोचकर हम निम्नांकित-तीन स्कीमें आप सभी सज्जनो के सन्मुख रखते हैं। इनमें से जिस विधान-जिस ढग-को आप सब बातों पर विचार करते हुए-उत्तम समझें उसकी सम्मति देने की कृपा कीजिये। इसके लिये एक फार्म इसी अङ्क के साथ प्रेषित है। उस पर उचित खाना पूरी करके)॥ की टिकटों में ही भेज सक्ते हैं। "धन्वन्तरि" आप ही सज्जनों का सेवक, साथी-सखा और सहायक तथा आपकी ही सम्मति-सहायता का इच्छुक है। आप ही उसका परिवार हैं और आपकी ही पूर्ण आशा है। अतः प्रार्थना है कि निम्नांकित बातों और ढगो पर गभीरता से पूर्ण विचार करके आप शुभ सम्मति अवश्य दीजिये और साथ ही और जो सज्जन अब से ठीक समय पर प्रकाशित होने वाले—धन्वन्तरि के ग्राहक बनने को प्रस्तुत हों उनके शुभ नाम पते फार्मों पर लिखा कर भेजने की कृपा कीजिये। दो तीन ढङ्गों पर भी सम्मति दे सकते हैं, परन्तु यदि उन में कोई न्यूनाधिक पसन्द हो तो वैसा चिन्ह करदें। हम आप की शुभ सम्मतियां एकत्र कर उन पर पूर्ण विचार कर के जैसी बहु सम्मतियां होंगी वैसा ही धन्वन्तरि निकालेंगे और प्रथम अङ्क आप की सेवा में अवश्य भेजेंगे। हमें पूर्ण आशा है कि आप उस सब से सस्ते-या-सब से उत्तम स्वरूप का सहर्ष स्वागत करेंगे। और इस प्रकार आप की कृपा से, बच गया तो "धन्वन्तरि" जो सेवा करेगा वह कहने की आवश्यकता नहीं।

प्रथम कोटि—१



प्रतिमास १०० पृष्ठ के उत्तम २ विषय और १ रङ्गीन तथा २-३ सादा चित्रों से सुसज्जित रहेगा। उत्तम लेखो पर प्रति मास ही पदक और पुरस्कार दिये जायंगे, समत समय २-३ विशेषाङ्क भी बड़े सुन्दर निकलेगें। ऐसे सर्वोत्तम ढङ्ग के बढ़िया कागज पर बढ़िया स्याही से छपे पत्र का मूल्य ४) वार्षिक रहेगा। अभी जो ग्राहक हैं, उन से कुछ अधिक तो बढ़ ही जायगे। यदि ग्राहकों की कृपा से उन की सख्या तिगुनी हो गई तब उपहार में ४) रु० की उत्तम २ पुस्तकें भी भेट कर देगें। अन्यथा पत्र स्वय ही इस ४) रु० में तो बहुत अच्छा ही होगा।

२. द्वितीय कोटि—१



पृष्ठ ७०—८० प्रति मास रहेंगे और सादा चित्र भी प्रति मास रहेंगे हां, रङ्गीन चित्र हर तीसरे—चौथे महीने दिये जा सकेंगे। कभी २ विशेषाङ्क भी निकलेंगे। आज कल जितने अच्छे से अच्छे आयुर्वेदिक पत्र हैं, उन सब से अच्छा ही रहेगा। मूल्य केवल ३) वार्षिक यदि ग्राहक तीन चार गुणे हो जायगे तब उपहार में ३) रु० की पुस्तकें भी भेट कर सकेंगें।

अन्यथा केवल पत्र ही इस मूल्य में बहुत अच्छा रहेगा।

३.तृतीय कोटि—(लाचारी)—७

वार्षिक मूल्य २) रु०

यदि आप अपने २-३ इष्ट मित्रों को भी नये ग्राहक न बना सकें परन्तु वर्तमान सब ग्राहक कृपा बनाये रखें, ग्राहक रहे आवें और जो बढ़ा सकें वह बढ़ावें, तो इतने पर ही हम उसे जीवित रख-और फिर अवसर आने पर उन्नति करेगा इस आशा और इच्छा से २) वार्षिक मूल्य में ही निकालते रहेंगे। ५०—६० पृष्ठ तो उत्तम विषयों से भरे प्रति मास रहेंगे हां,साथ ही हम समय २ पर चित्र भी देते रहेंगे। यह " सस्ता और अच्छा " होगा।

अब आप के ही आधीन है, अपने साथी, सखा, सहायक सेवक धन्वन्तरि को चाहें " राजा " बनाइये या मामुली सिपाही, जैसे रखेंगे उसी दशा में, जहां तक हो सकेगा वह सदा सच्ची सेवा करता रहेगा, और आप की सरचा में भी यदि इस का अन्त ही हो, तो इस का स्मरण प्रेम पूर्ण हृदय से करते रहियेगा-यही विनय है।

आपका—

मैनेजर—धन्वन्तरि

आयुर्वेदिक साहित्य के अनुपम रत्न

चारु चिकित्सा [पूर्वार्द्ध]—इसमें आयुर्वेद के गूढ़ सिद्धान्तों को बड़ाही स्पष्ट, और सरल किया गया है बल्कि रहस्यों को प्रकट किया गया है । त्रिदोष सिद्धान्त, नाड़ी विज्ञान और पदार्थ विज्ञान का वर्णन अपने ढङ्ग का निराला ही है । नाड़ी विज्ञान का रहस्य जानना हो तो इसे अवश्य पढ़िये । पञ्चकर्म, जलौका (जोंक) लगाने की विधि, आदि का वर्णन इतना स्पष्ट और व्यवहारिक है कि मामूली समझ का आदमी भी रोगी को बड़ी अच्छी तरह पञ्च-कर्मादि करा सकता है । किस समय क्या और किस तरह करना चाहिये यह सब बातें खुदही मालूम हो जाती है । मूल्य ॥।) बारह आना ।

मनुष्य का स्वाहा—खान, पान का आयुर्वेद और डाक्टरी मत से बड़ा उत्तम वर्णन है । इस विषय पर आज तक हिन्दी में इससे अच्छी पुस्तक न होने के कारण इस पर काशी नागरी प्रचारिणी सभा बनारस ने पदक दिया है । मूल्य १) एक रुपया ।

नेत्र रोग—बम्बई के एक बहुत ही और सिद्ध हस्त नेत्र चिकित्सक (आंखके खास डाक्टर) की लिखी हुई अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है । आखो के साधारण रोगों का बड़ा ही उत्तम वर्णन और चिकित्सा है । वैद्यों और सर्व साधारण के लिये समान उपयोगी है । मू० १) एक रुपया ।

दूध का वर्णन ।-)

वैद्यक शब्द कोष ।)

स्वराज की कुञ्जी ले० महात्मा गांधी मू० ।)

प्लेग (बाँटने योग्य पुस्तक है) मू० -)

और बांटने वालों से ४) रुपया सैकड़ा

अर्श (बवासीर) कीमत ।=)

चारु चिकित्सा—उत्तरार्द्ध इसमें देहली वाले अद्वितीय यूनानी हकीम अजमलखां साहब के गुप्त प्राइवेट २०८ अकसीर और जादूअसर नुस्खों का संग्रह है एक-२ नुस्खा अनमोल व बेलता है मू० ॥।) बारह आना ।

भारत भैषज्य रत्नाकर—यह आयुर्वेद का एक अपूर्व ग्रंथ है, श्रीयुत स्वामी लक्ष्मीरामजी जयपुर आचार्य्य श्री पं०यादवजी त्रिकमजी बम्बई, कविराज प्रताप-सिंहजी हिंदी यूनिवर्सिटी बनारस आदि गण्य मान्य विद्वानों और सभी प्रसिद्ध २ पत्रों की संमति है कि यह एकही ग्रन्थ एक बड़ी लाइब्रेरी का काम देसकता है ।

इसमें प्राचीन और नवीन प्रामाणिक ग्रन्थों से १००० प्रयोगों का अकारादि क्रम से संग्रह किया गया है । सब प्रयोग क्वाथ, चूर्ण, रस आसवादि के प्रकरणों में पृथक २ लिखे गये हैं क्रम इतना अच्छा है कि जो प्रयोग चाहिये वह चाहे जिस ग्रन्थ का हो तुरन्त निकल सकता है । मूल संस्कृत के साथ ग्रन्थो के नाम तथा हिंदी टीका बड़ी ही उत्तम दी गई है । वर्तमान समयोपयोगी मात्रा, प्रयोग निर्माणविधि आदि भी लिखी गई है । एक २ प्रयोग जितने पाठ भिन्न २ग्रथो में मिलते हैं वह सब एक ही जगह लिखे गए हैं एक चिकित्सा पथ प्रदर्शिनी भी दी गई है जिससे बड़ी ही आसानी से यह मालूम होजाता है कि किस रोग में किन उपद्रवों और किन लक्षणों में क्या औषधि देनी चाहिए । दो भाग छप चुके हैं । प्रथम भाग का मू० ४॥) दूसरे भाग का ६॥) एक साथ दोनों का ९) नौ रुपया

पता—स्वास्थ्य-सदन हल्दौर, [बिजनौर]

प्रमेह शीघ्रपतन आदि को नष्ट कर बल-वीर्य्य बढाने वाली-

काम कल्पद्रुम वटी

इस वटी के विधि पूर्वक सेवन करने से प्रमेह,स्वप्नदोष, वीर्य का पतला पड़ जाना आदि सम्पूर्ण धातुरोग समूलनष्ट होते हैं क्लीवत्व शिथिलता और शीघ्र पतन को दूर करने में यह सिद्ध रामबाण महौषधि है। हाथ पांव में जलन होना, शिर में चक्कर आना, नत्रों के सामने अकस्मात अंधेरा सा छा जाना, प्यास की अधिकता,स्मरण शक्ति की न्यूनता और थोड़े परिश्रम से अधिक थकावट मालूम होना, इत्यादि इससे अवश्य ही निर्मूल हो जाते हैं। शरीर पुष्ट होकर बल वीर्य की अतिशय वृद्धि होती है। अधिक प्रशंसाकरना व्यर्थ है परीक्षा प्रार्थनीय है। मूल्य ६० गोली की शीशी का केवल १) रुपया।

अग्नि दीपक चूर्ण

यह चूर्ण पाचन शक्ति को बढ़ाता है और समस्त उदर रोगों को शमन करता है। जिनको सदा मलावरोध की शिकायत रहाकरती है उनके लिये अत्यन्त लाभकारी है। विरेचनीय औषधियों के निरन्तर सेवन करनेसे आमाशय निर्बल पड़ जाता है परन्तु इससे किसी प्रकार का विकार कोठे में नहीं उत्पन्न होता। मलावरोधको नष्ट करके जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। क्षुधा उत्पन्न होती है और अरुचिनिर्मूलहोता है मलावरोध से उत्पन्न होने वाले अजीर्ण,उदरपीड़ा और खट्टी डकार आना तत्काल दूर होता है। ज्वर मुक्त रोगीके लिये इसका सेवन अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। मूल्य आधपावकी डिब्बी का ॥) आठ आना।

कुन्तल विहार तैल

इस तेल को शिर पर मलने से पित्त जनक पीड़ा तत्काल दूर होती है। बालों का भूलनाशिर में चक्कर आना, रुक्षता, गरमी और दिमाग की कमजोरी नष्टहोती है। स्मरणशक्ति बलवानहोती है। आंखों में तरावट आती है और ज्योति बढ़ती है। बाल बढ़ते और मुलायम रहते हैं। जिनको पढ़ने लिखने सोचने विचारने का काम करना पड़ता है उन्हें इस तेल का व्यवहार अत्यन्त उपयोगी है। इस में विदेशी द्रव्यों का मेल नहीं है, केवल तिल के तेल और देशी जड़ी-बूटियों द्वारा तैयार किया जाता है। लगाते ही चित्त प्रसन्न होता है और चौबीस घड़ी तक सुगंधि बनी रहतीहै। मूल्य चार औंस की शीशी का ॥।)और दो औंस का छोटी शीशी का ।=) आना मात्र है।

इसके अतिरिक्त विविध रोगनाशक अवलेह, आसव, चूर्ण, वटी, भस्म आदि उत्तमोत्तम आयुर्वेदीय औषधियां इस औषधालय में सदा प्रस्तुत रहती है।

औषधियों के मिलने का पता पं० महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य,

स्वदेशबन्धु औषधालय, ज्ञानपुर बनारस स्टेट

वैद्यामृत

संस्कृत व भाषाटीका सहित

मूल्य ।।=) दस आना डाक खर्च ।)



मंगाने का पता:——

बूटी प्रचार कार्यालय इंगलिशिया लाइन

बनारस छावनी

निरोग रहने के लिये और सिद्ध वैद्य बनने के लिये

अनुभूत योगमाला

मासिक पत्रिका प्रत्येक को पढ़नी चाहिये नमूना मुफ्त मगा कर देखो।

मैनेजर अनुभूत योगमाला

ऑफिस बरालोकपुर (इटावा) यू० पी०

वैद्योंके लिये

सिद्ध आयुर्वेदीय औष-धियां पुस्तकें, वनौषधियां तथा चिकित्सा सम्बन्धी यन्त्र आदि उपकरण हमारे यहां सब से उत्तम और सस्ते मिलते हैं।

यदि आप वैद्य हैं

तब एक बार पूरा पूरा पता-अवश्य लिखिये तब आप को मालूम हो जायगा कि हमने वैद्योंके लिये कहां तक सुभीता और लाभदा-यक प्रयत्न किया।

पता—वैद्य बांकेलाल गुप्त

धन्वन्तरि कार्यालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)

कुमार-कल्याण

कुमार कल्याण क्या है !

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान से बनी हुई बालकों के समस्त रोगों की एक मात्र दवा है।

कुमार कल्याण से क्या होता है ?

कमज़ोर बच्चे हृष्ट पुष्ट बलवान बन जाते हैं।

कुमार कल्याण किन रोगों को विशेष लाभ करता है

बच्चों के हरे पीले दस्त, कफ, खांसी, पसली चलना ज्वर, दूध का न पचना, दांत से रोकना, सूखा रोगादि

कुमार कल्याण का स्वाद कैसा है

मीठा, जिसको बच्चे बड़े चाव से पीते हैं।

कुमार कल्याण का रखना –

[illegible]

कुमार कल्याण का मूल्य ।-) मात्र, बड़ी शीशी ।।=) दस आना

पता–मैनेजर श्रीधन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ जिला अलीगढ़